JAIN LIBRARY

ANUBHOOTA CHIKITSA SAGARA

FIRST PART.



A Magazine

OF

WELL—TRIED

Ayurvedic Medicines

BY

PANDIT GANGA PRASAD

DADHICH TRIPATHI

Ayurveda-Panchanan

and

Member of the Ayurveda Vidya—Pitha.

---o---

AJMER,

VEDIC PRESS.

FIRST EDITION

1908

To be had of the author, Ajmer

Price 3 Rupees only

॥ श्रीः ॥

आपदामपहर्त्तारं, दातारं सर्वसंपदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं, भूयोभूयो नमाम्यहम्॥



आयुर्वेद पञ्चानन पण्डित गंगाप्रसाद त्रिपाठी, आयुर्वेद
विद्यापीठस्थ सभ्य, अनुभूत चिकित्सासागर
प्रणेता, अजमेर

PREFACE.

The Almighty God, with his infinite power created this Universe and placed in it beings of all kinds Man He made the noblest of them all and endowed him with intellectual powers of such a degree that with their aid he might be able to make this life as well as the next happy In order to teach him, He produced Shastras (authoritative works) in all topics, by the study of which he might get knowledge of all sorts, material as well as spiritual, and be in a positian to attain happiness in this world and beatitude hereafter But all these blessings depend on a person's health In proportion as he is healthy he is able to attain the four great objects viz Dharma, wealth, prosperity and salvation A sanskrit couplet has well put it "The body is the root out of which grow धर्म, अर्थ, काम and मोक्ष, and it is in a position to attain these, only if it is free from disease "

2 The Almighty God was, therefore, in his infinite mercy, pleased to ordain the introduction, among other Shastras, of the Ayurveda, (Medical science) as a guide for the preservation of health The Ayurveda forms a subordinate part of one of the four vedas, according to the author of 'Bhao Prakash', that of the Atharva Veda, and according to 'Charanavyúha' that of the Rigveda The Ayurveda has again been subdivided into five different parts viz — that dealing (1) with Men, (2) with Elephants, (3) with Horses, (4) with Cows and (5) with Trees and Plants

3 The Narayurveda or the medical science relating to man was first taught by the Almighty to Surya. Surya in his turn taught

compiled this book for the good of the public after referring to m works on the medical science An attempt has been made to give, far as possible, the names of the medicines obtaining in other count and languages, together with the properties they possess and the pl where, and the season in which, they are produced.

12 The author has done his best to make the book useful every respect Nevertheless it is possible that there may be m shortcomings For, " to err is human ", and the author of this w is no exception It is, therefore, hoped that my medical brethren accord this work an indulgent treatment and if any inaccuracies co to their notice or if they have any suggestions to offer, they greatly oblige the author by communicating the same to him Su corrections or suggestions will be duly availed of with due acknowle ment of the author's thankfulness, when the book passes into a seco edition

इस ग्रन्थ के ग्राहक, वैद्य और सज्जनों से सविनय निवेदन है कि इस मित्र दृष्टि से आद्योपान्त पढ़ के इस में लिखी हुई औषधियों को काम में ला उनका पूर्ण अनुभव करें और एक वर्ष पीछे अपनी अनुभव की हुई औषधि का यथार्थ विवरण हमारे पास लिख भेजें हम उस को द्वितीयावृत्ति में हार्दि धन्यवाद के साथ उन्हीं के नाम से प्राचीन शैली के अनुसार प्रगट करेंगे कि अमुक २ महाशय ने इन २ औषधियों के इन २ प्रयोगों का अनुभव करलिया है

PANDIT GANGA PRASAD

Dadhicha Tripathi

Near Jangichabootara,

Ajmer

श्रीगणेशाय नमः ॥

भूमिका ॥

परमेश्वरने अपनी पूर्णशक्तिसे जगत को बनाकर इसमें नाना प्रकार के देहधारी उत्पन्न किये उनमें सबसे श्रेष्ठ मनुष्यको पैदा किया और इसको इस प्रकार का ज्ञान दिया कि जिससे यह इस लोक और परलोक सुधारने का यत्न करसके इसकी शिक्षाके लिये कई प्रकार के शास्त्र बनाये कि जिनके पढ़ने से सांसारिक और पारमार्थिक सब प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर और तद्द्वारा संसार का सुख भोगकर परमेश्वर के लोकमें प्राप्त होजावे परन्तु ये सब बातें शरीर की आरोग्यता के आधीन हैं आरोग्यता रहने से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त कर सकता है जैसा शास्त्र में कहा है कि "धर्मार्थकाममोक्षाणां मूलमुक्तं कलेवरं। तच्च संसिद्धये शक्तं भवेत्यादि निरामयम्" अर्थात् शरीर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों का मूल कहा गया है और वह जो निरोग रहे तो सिद्धिके लिये समर्थ होय इसीलिये परमेश्वर ने सब पर कृपा करके आरोग्यता के लिये आयुर्वेद का प्रचार किया यह आयुर्वेद चारों वेदोंमें से एक वेद का उपवेद है भावप्रकाशकारने तो लिखा है कि अथर्ववेद का उपवेद है और चरणव्यूह के मत से ऋग्वेद का उपवेद है। यह आयुर्वेद पांच प्रकार का है — नरायुर्वेद, गजायुर्वेद, अश्वायुर्वेद, गवायुर्वेद और वृक्षायुर्वेद इनमें से नरायुर्वेद को प्रथम ही प्रथम ब्रह्माने सूर्य को पढाया, सूर्य ने धन्वतरि, दिवोदास, काशीराज, अश्विनीकुमार, नकुल, सहदेव, यम, च्यवन, जनक, बुध, जावाल, जाजलि, पैल, करथ, अगस्त्य इन सोलह शिष्यों को पढ़ाया और इन सोलहों हीने अलग अलग ग्रन्थ बनाये जैसे कि धन्वन्तरि ने-'चिकित्सातत्वविज्ञान' दिवोदासने —'चिकित्सादर्पण' काशीराज ने—'चिकित्साकौमुदी', अश्विनी कुमारों ने—'चिकित्सासारतंत्र' और 'भ्रमघ्न', नकुल ने—'वैद्यकसर्वस्व,' सहदेव ने—'व्याधि

सिन्धुविमर्दन' यमने-'ज्ञानार्णव', च्यवन ने 'जीनदान', जनक ने 'वैद्यसन्देह-भञ्जन', बुधने-'सर्वसार', जावाल ने-'तन्त्रसार', जाजलिने 'वेदाङ्गसार', पैलने-'निदान', करथने- सर्वधर', अगस्त्य ने-'वैद्यनिर्णयतन्त्र', और पूर्व समय में जब २ देवता रोगग्रस्त हुए हैं जैसे कि चन्द्रमा के "राजयक्ष्मा" हुआ, ब्रह्माका 'शिर' भैरव ने काटा, देवता और दैत्योंकी लड़ाई में देवता घायल हुए, इन्द्र का "भुजस्तम्भ" हुआ, पूषा के 'दांत' टूटे, भगदेवता के नेत्र' जाते रहे, तब तब इन सबको अश्विनीकुमारों ने आयुर्वेद से चिकित्सा करके अच्छे किये यह आयुर्वेद अश्विनीकुमारों ने इन्द्र को दिया, इन्द्र ने आत्रेय आदि ऋषियों को पढ़ाया आत्रेयने 'आत्रेयसंहिता' बना के अग्निवेश, भेड, हारीत आदि को पढ़ाया, अग्निवेश आदि ने भी अपने अपने नाम से संहिता बनाई और जब समय के परिवर्तन से यह विद्या नष्ट होने लगी तो शेषजी महाराज ने प्राणी-मात्र पर दयाकर चरक नाम से अवतार लेकर इसी नाम से चरक नाम ग्रन्थ बनाया और सुश्रुत, वाग्भट आदि ऋषियों ने भी अपने अपने नामों से 'सुश्रुत, वाग्भट' आदि ग्रन्थ बनाये इनके पीछे बहुत से आयुर्वेदज्ञ पण्डितों ने भी 'शार्ङ्गधर, 'भावप्रकाश' आदि पुस्तकें बनाई है और वे प्रचलित है परन्तु उनमें निदान चिकित्सा आदि का तो वर्णन है औषधियों के नाम गुण और अंगों के गुण आदि का वर्णन विस्तार के साथ पूरा पूरा नहीं है और जबतक वैद्य औ-षधियों के नाम, गुण आदि को अच्छी तरह नहीं जानेगा तब चिकित्सा कैसे कर सकेगा, दूसरे सब औषधियां सब देशों में नहीं मिल सकतीं कोई कहीं मिलती हैं और कोई कहीं मिलती है और एक यह भी कठिनता है कि प्रत्येक देश में औषधि यों के नाम अलग अलग हैं जो दूसरे देश में मिलनेवाली औषधि की इस देश में आवश्यकता हुई तो उस देश में बोले जाते हुए नाम से वह औषधि आ सकेगी इसलिये सब देशों में प्रचलित नामों का ज्ञान होना भी आवश्यक है, तीसरे जो योग में बतलाई हुई औषधियोंमें से कोई औषधी नहीं मिल सकी तो उस अधूरे योग से जैसा चाहिये वैसा लाभ नहीं हो सकता, इसलिये चाहिये कि एकही औषधि के जुदे जुदे अंगों को जुदे जुदे रोगों पर काम में लावें जिससे योग पूरा करने की आवश्यकता न रहे, इन बातों को विचार

कर पूर्वोक्त हानियों को मिटाने के लिये मैंने बड़े परिश्रम से अनेक ग्रंथों को देखकर संसार के लाभ के लिये यह ग्रंथ बनाया है और जहांतक मुझको और और भाषाओं के नाम मिल सके सब इसमें लिख दिये हैं और औषधियों के नाम पूरे २ गुण, स्थान और किस समय में वे उत्पन्न होती हैं इत्यादि सब बातें लिखी गई हैं परन्तु फिरभी जो कहीं कोई बात की न्यूनता रह गई होय तो सज्जन विद्वान् लोग क्षमा करेंगे क्योंकि ईश्वर के अतिरिक्त कोई सर्वज्ञ नहीं है तथापि जो कोई सज्जन कृपा करके उस न्यूनता की पूर्ति के लिये अपनी सम्मति लिख भेजेंगे तो द्वितीयावृत्ति में धन्यवाद पूर्वक उसको प्रकाशित करूंगा।

इस ग्रंथ के बनाने में मुझ को जिन २ महाशयों ने सहायता दी है उन के नाम हार्दिक धन्यवादसहित प्रकाशित करता हूं:—

श्रीयुत पण्डित शिवनारायण जी शास्त्री विद्यावारिधि हेड पण्डित राजकुमार मेओकालेज अजमेर।
,, पण्डित भवदत्तजी शास्त्री जूनिअर प्रोफेसर आफ संस्कृत गवर्नमेण्ट कालेज अजमेर।
,, पं० नारायणदासजी सबडिवीजनल आफिसर अजमेर।
,, डाक्टर नंदलालजी साहब असिस्टेण्ट सिविलसर्जन विक्टोरिया हास्पिटल अजमेर।
,, डा० वृन्दावन चन्द्रसूर असिस्टेण्ट हास्पिटल मेओकालेज अजमेर।
,, डा० शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय एल० एम० एस० प्राइवेट प्रेक्टिशनर अजमेर।
,, हकीम बहाउद्दीन साहब मुलाजिम दरगाहशरीफ ख्वाजेसाहब अजमेर।
,, हकीम अहमदहुसैन साहब मुलाजिम म्यूनिसिपिल कमेटी अजमेर।
,, बाबू नानमलजी साहब कन्सरवेटर आफ फारेस्ट अजमेर मेरवाडा।
,, सरदार हीरासिंहजी साहब फारेस्ट आफिसर अजमेर।
,, लाला हरस्वरूपजी साहब फारेस्ट आफिसर अजमेर।
,, मु० मिट्ठनलालजी साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट कमिश्नर आफिस अजमेर।

श्रीयुत पं० कृष्णानन्दनजी साहब हेडक्लर्क असिस्टेंट कमिश्नर आफिस अजमेर ।
,, सेठजी धनजीशाहजी दीनशाहजी जैनरल मैनेजर कोर्ट आफ वार्डस अजमेर।
,, पं० पुरुषोत्तमदासजी दीवान भिणाय ।
,, आबा गणेश देवधर हेडक्लर्क रेल्वे पुलिस अजमेर ।
,, सेठजी लक्ष्मीनारायणजी मैनेजर मसूदा ।
,, पं० श्रीवल्लभजी लोअर कालेज अजमेर ।
,, पं० प्रयागदत्तजी त्रिपाठी अकाउण्टेण्ट आबकारी अजमेर ।

जिन २ प्राचीन और नवीन ग्रन्थों से इसमें सहायता ली गई है उनके नामों का प्रगट करना भी आवश्यक समझ कर नीचे लिख दिये हैं:—

सुश्रुत, वृन्दमाधव, वृद्धवाग्भट्ट, भावप्रकाश, मदनपाल निघण्टु, निघंटसंग्रह, निघंटशिरोमणि, निघंटरत्नाकर, शब्दकल्पद्रुम, अमरकोष, मगजनउल अदविया, बुस्तानुलमुफरदात, आदि ।

Flora of North western Provinces Bombay Materia Medica by Dr R N Khory, Hindu Materia Medica by W C Dutt, Beeton's Medical Dictionary, List of trees and plants of mount Abu by Miss Macadam, List of trees and plants of Jaipur State, List of trees and plants in Udaipur garden etc, etc.

सूचना ॥

इस ग्रन्थ के पढ़नेवालों पर यह भी विदित हो कि श्वेत, कृष्ण आदि पुष्पों के कारण जो वृक्षों के भेद है उन सब का वर्णन एक ही स्थान पर कर दिया गया है, इसी भांति गोंद, बीज आदि अंगों के जो प्रयोग हैं उनका भी सविस्तर वर्णन वहीं कर दिया गया है इन के अतिरिक्त कई औषधियां जिन के नाम अलग २ होने पर भी एक जाति की है यद्यपि वे अकारादि क्रम से लिखने के कारण अलग २ लिखनी चाहिये थीं, परन्तु वे एक ही ठौर लिख दी गई हैं जिस से पाठकगण उनको एक ही जाति की समझें ।

प्रकट हो कि हमारे यहां निम्न लिखित औषधियों के अतिरिक्त और भी बहुतसी औषधियां शास्त्रोक्त रीति से बनाईहुई (प्रस्तुत) तय्यार है।

नाम औषध	तोल	मूल्य	नाम औषध	तोल	मूल्य
सुवर्ण भस्म	१ तोला	६०)	अभ्रकभस्म	१ तोला	५) २)
रूपरस	,,	३)	शुद्ध हिंगलू	,,	I)
जड़ी से जलायाहुआ ताम्र	,,	६)	शुद्ध गंधक	,,	=)
धातु से जलायाहुआ ताम्र	,,	१)	शुद्ध शिलाजीत	,,	II)
हरताल का बंगेश्वर	,,	२)	मोती की सीप की भस्म	,,	II)
पारे का बंगेश्वर	,,	५)	मोती की सीप पीसीहुई	,,	I)
सुवर्णवंग	,,	२)	प्रवालभस्म	,,	II)
वंगभस्म	,,	१)	प्रवाल पिसाहुआ	,,	II)
यशदभस्म	,,	१)	गिलोय सत	,,	II)
शतपुटी नागेश्वर	,,	४)	अद्रकसत्व	,,	I=)
नागेश्वर	,,	१)	जोखार	,,	≡)
सार	,,	४) २)	साजीखार	,,	-)
शंकर लोह	,,	२)	थूहर का खार	,,	≡)
मंडूरभस्म	,,	१)	पलाश का खार	,,	I)
कांस्यभस्म	,,	१)	अपामार्गक्षार	,,	≡)
पित्तलभस्म	,,	१)	इमली का खार	,,	I)
त्रिधातुपीली	,,	२)	आकड़े का खार	,,	≡)
त्रिधातु श्वेत	,,	१)	तिलक्षार	,,	I)
सुवर्ण माक्षिक भस्म	,,	१)	नींबू का खार	,,	I=)
छ गुणा गंधक जलायाहुआ पारा	,,	२५)	भंग का खार	,,	I=)
मकरध्वज (चंद्रोदय)	,,	८०)	केले का खार	,,	I)
चन्द्रोदयवटी	,,	५)	मूली का खार	,,	≡)
सूर्योदय	,,	१२)	पीपल (अश्वत्थ) का खार	,,	I)
हरगौरी	१२)	४)	कल्पतरु	,,	I)
अभ्रकभस्म ७२५ आंच की	,,	१५)	दुर्जलजेता	,,	I)
			कालज्वरांकुश	,,	१)

नाम औषध	तोल	मूल्य	नाम औषध	तोल	मूल्य
श्वेतज्वरांकुश	१ तोला	।)	पंचामृतरस	,,	॥~)
भूतभैरव	,,	१)	सूतशेखर	,,	४)
मारणकरस	,,	१)	कफकेतु	,,	॥)
वसंतमालती	,,	१२)	गर्भपाल	,,	१=)
लघुवसंत मालती	,,	१)	प्रतापलंकेश्वर	,,	१॥)
वृहद्गगनसुंदर	,,	२॥)	अमरसुंदरी	,,	=)
पंचामृतपर्पटी	,,	=)	योगराजगूगल	,,	=)
अग्निसूनु	,,	।=)	सधातु योगराज गूगल	,,	१)
ग्रहणीकपाट	,,	॥—)	अश्वकंचुकी	१ तोला	॥)
ग्रहणीगजकेशरी	,,	१॥)	आनन्दभैरव	,,	॥)
मार्कंडेय गुटी	,,	॥।	महोदधिरस	,,	॥)
अजीर्णारि	,,	।)	ब्राह्मी गुटी	,,	१)
आदित्य	,,	।)	संजीवनी गुटी	,,	।)
वृहच्छखवटी	,,	॥=	पित्तारि	,,	॥)
अग्नितुंडवटी	,,	।)	रसकपूर के फूल	,,	॥)
स्वर्णपर्पटी	,,	९)	अभयादि मोदक	,,	=)
हेमगर्भ	,,	५०)	कामेश्वर मोदक	,,	=)
स्वयमग्निरस	,,	॥)	दंतमंजन	,,	—)
श्वासकुठार	,,	।=)	स्नायुक निवारकचूर्ण	,,	।)
शूलकुठार	,,	॥)	(इस के लेने से सालभर तक		
वज्रसार	,,	~॥)	नारू नहीं निकलता है।)		
पुनर्नवादिमंडूर	,,	१)	मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) नाशक चूर्ण		=)

नपुंसक संजीवनी गुटी।

रजस्वला से संभोग करने से, हस्तकर्म से, पुरुष मैथुन से, अतिमैथुन से, बहुत समय तक प्रमेह रहने से, स्नायु जाल की निर्बलता से, अथवा वीर्य कम करनेवाले कई रोग और कारणों से जो नपुंसक हो जाता है उसकी नपुंसकता मिटाने के लिये यह वटी अत्युत्तम है। इसकी ३२ गोलियों की कीमत १) रुपया है।

विज्ञप्ति।

सब ग्राहकों पर विदित हो कि इस ग्रंथकी रोग और प्रयोगानुक्रमणिका (Classification of diseases and drugs) बन रही है छपजानेपर ग्राहकों को सूचना देदी जायगी जो महाशय उसको मोल लेना चाहेंगे उनको वी॰ पी द्वारा अथवा मूल्य भेजने पर भेजदी जायगी, छप चुकने के पीछे उसका मूल्य नियत किया जावेगा।

इस पुस्तक में हरेक रोग के अकारादिक्रम से संस्कृत नाम, और यथा प्राप्त उनके हिंदी और अंग्रेजी नाम लिखे गये है उनको मिटानेवाली जो जो औषधियां हैं उनकी संख्या और उन औषधियों के जिन जिन प्रयोगों में उन रोगोंको मिटाने की विधि लिखी है उनकी संख्या, उन औषधियों की संख्या के आगे लिखी गई है। ऐसे एक रोगको मिटानेवाली जितनी औषधिया है उनकी और उनके प्रयोगों की संख्या उस रोग के सामने लिखदी गई है जिससे वैद्यको किसी रोग की सब औषधियां और उनके प्रयोगों को ढूंढने के लिये सब पुस्तकका पाठ नहीं करना पड़े।

जैसे संस्कृत 'ज्वर' हिंदी 'बुखार' और अंग्रेजी 'Fever' फीवर, इसको मिटानेवाली औषधियां ये हैं ५-११, १३, ६-२, १-, १७-१४, २१-२१, इन में पहिली संख्या औषधी की और दूसरी प्रयोग की है। ज्वर के जितने भेद है उन हरेक के आगे भी उनकी औषधियां और प्रयोगों की संख्या लिखदी है ऐसेही भेद सहित हरेक रोग, उनकी औषधियां और प्रयोग लिखेहैं।

निम्न लिखित तैल हिन्दुस्तान मे कई ठोर निकाले जाते हैं परन्तु औषध की रीति पर काम में नहीं लाये जाते हैं, मैं इन को कई रोगों में काम में लाचुका हूं, और लाताहूं।

(१) रोगान्तक तैल—यह तैल ज्वर के वेग को कम करने में, शीत ज्वर या वारी के ज्वर को रोकने में, फोड़े, फुन्सी, घाव, पित्ती, दाद और खाज आदि-कई प्रकार के रोगों के दूर करने में अद्वितीय है। मूल्य आधे औंस की शीशी के ≈) दो आने।

(२) वातारितैल—इस तेल के मर्दन करने से वायु की सब प्रकार की पीड़ा,

विसूचिका में होने वाले और सर्दी के प्रभाव से होनेवाले मरोड़ मिटते है। मूल्य आधे औंस की शीशी के ≈) दो आने।

(३) सुपत्र तैल—यह तैल पित्तसम्बन्धी व्रण, सुजाक और अग्निदग्ध को शीघ्रता से मिटाता है। मूल्य आधे औंस की शीशी के।) चार आने

(४) ज्वालामुखी तैल—यह तैल अबतक भारतवर्ष में कहीं भी नहीं निकाला गया है पूर्व इस को मैंने ही निकाला है। इस तैल को लगाने से पित्तसम्बन्धी बाहर के फोड़े, फुन्सियों को और पिलाने से भीतर के घाव (अर्थात् सुजाक आदि) को तुरन्त मिटाता है। मूल्य आधे औंस की शीशी के ॥) आठ आने।

इन सब औषधियों का डाक व्यय पृथक् लगेगा।

उक्त औषधियों में से बहुतसी औषधियों को काम में लाने की रीति अनुभूतचिकित्सासागर में लिखी हुई है और कई औषधियां ऐसी हैं कि जिनको वैद्य की सम्मति से लेनी चाहिये, अथवा जो कोई उनको काम में लाने की रीति हम से पूछना चाहेंगे तो आध आने का टिकट या जवाबी कार्ड भेजने पर हम उनको लिख भेजेंगे॥

विदित हो कि हमने बहुत समय तक परिश्रम और बहुतसा द्रव्य व्यय करके पारद के संस्कार कर चन्द्रोदय (मकरध्वज) हेमगर्भ आदि उत्तम २ रस बनाये हैं। हमारे यहां ४ प्रकार का मकरध्वज बनाया जाता है, एक अन्तर्धूम, दूसरा बहिर्धूम, तीसरा कठोर और चौथा मृदु। जो महाशय पारद के संस्कार करना और उक्त रसादिक का बनाना हम से सीखना चाहें वे इस विषय में हम से पत्र व्यवहार करें क्योंकि उन को हमारे पास रह के इनकी सब क्रिया हमारे सामने करनी पड़ेगी।

वैद्य गंगाप्रसाद दाधीचत्रिपाठी,
ठि० जंगी चबूतरा
अजमेर।

॥ श्री दधिमथ्यै नमः ॥

संस्कृतशब्दानुक्रमणिका ।

——:※:——

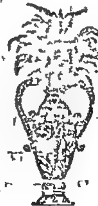
शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अ—		अञ्जीरम् +	१४	अमृणालम्	७२
अङ्कोल्लकः	४६	अटरूपः	१५	अमृतफलम्	२३
अक्षोटः	२	अतसी +	१६	अमृतवल्ली	१७६
अगदः	३	अतिविषा	१७	अमृता	१७६
अगस्तिः	४	अत्यम्लपर्णी	१८	अमृताह्वम्	२३
अगुरु	५	अद्रिकर्णी	२०	अमृतोपहिता	२१
अग्निमन्थः	६	अनम्नासम्	२६	अम्बुप्रसादः	९२
अग्निशिखा	११८	अनलः *	२०९	अम्लफला	१०४
अग्निशेखरम्	१२७	अनलप्रभा	२३०	अम्लिका	२५
अङ्कोलः	८	अपराजिता	२०	अरणिः	७
अङ्गसुन्दर	३	अपशोकः	३२	अरण्यजीरकः	२२८
अङ्गारः	९	अपाकशाकम्	५९	अरण्यार्द्रिका +	५६
अजगन्धिका	३४८	अपामार्गः	२१	अरितमञ्जरी	२६
अजमोदा	१०	अफल	२३२	अरिमर्दः	१३०
अजाक्षी	७०	अफेनम्	४०	अरिमेदक	१६७
अजाजी	२९	अभयम्	७२	अरिष्ट	२७
अजान्त्री	१९	अभ्यञ्जनम्	२६२	अरुणा	६४
अञ्जनम्	१३	अभ्रकम्	२२	अर्क	२८
अञ्जनवृक्षः +	१३	अमरवल्लरी	४२	अर्कचन्दनम्	१६६

* इसको २ नम्बर की संख्या में कालमूल के स्थान में समझो ।

* कालमूल २०५ की संख्या में जो छप गया है उसको २०६ की संख्या में समझिये

* २०६ संख्या में शब्द के स्थान में चित्र [illegible]





॥ श्रीदरिमध्यै नमः ॥

मारवाड़ीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका।

मारवाड़ी शब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ।





॥ श्रीदधिमथ्यै नमः ॥

हिन्दीशब्दानुक्रमणिका ।

—⊰:-*:-⊱—

हिन्दी शब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ।



श्री दधिमथ्यै नमः ॥

गुजरातीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

गुजरातीशब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ॥



॥ श्रीदधिमथ्यै नमः ॥

मरहठीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

श्री दयिमध्यै नमः ॥

वंगाली शब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

वंगालशब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ॥

॥ श्रीदधिमथ्यै नमः ॥

पंजाबी शब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

पञ्जाबीशब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ।

श्री दधिमथ्यै नमः ॥

तैलङ्गीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकरकरमु	४१	अरुडोंड	१३५	एलुकचेविवेरुडु	४२
अक्रोलनु	१	अलसित्रित्तु	१६	कंचु	१३४
अगरु	५	अल्लम्	५५	कड्कुरोगनि	८७
अगिसे	४	अल्लिआकु	१२	कनुमु	९३
अग्निवेंदपाकु	१४५	अवासि	४	कन्दुल	४५
अग्निवेंदपाकु *	१७०	अव्वगुड्डग्गडु	६५	काम्पल्लु	१०१
अंकोलमु	८	अशोकमु	३२	करपुप्	५६
अजमोदा	१०	अ.कुपत्रो	१४१	करुअल्ल	५६
अञ्जनमु	१३	आभिदचरूडु +	७६	कर्काटकशृंगी	१०८
अडविजिलकरं	२९८	आरेचरूडु	९३	कर्पूरमु	११३
अडवीमुलंगी	१३६	आलु गोकारा	५८	कर्पूरवल्लि	११४
अडोंड	१३५	इट्टिको [illegible]	१७६	कलवःः	१९१
अडुसरमु	१५	इसगोलवित्तु	६६	कलिव	१०४
अतिवस	१७	ईश्वरवेरु ×	३०	कलगानगु	२६३
अदित्यालु	२००	उन्टि	६	कल्हारमु	६७
अनासपडू	१६	उत्तरेनु	२१	कवंची	५६
अन्तरद्दामर	१४२	उलवलु	१४६	कसिवेंद	१३२
अभ्रकमु	२२	उसरिकाय	४७	काकरा +	१२६
अंबालमु	५२	ऊटलैगड्डा	५७	काचि	१२१
अरटाचरूडु	९४	एनुगपल्लेरु	१८१	कानुगचरूडु	२४०

* यह नाम गण्डकी का नहीं है   × ईश्वरवेरुके स्थान में दूगमाले चाहिये।

श्री दधिमथ्यै नमः ॥

द्राविड़ी शब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

* यह गट्टी का नाम नहीं है ।

श्री दधिमथ्यै नमः ॥

द्राविड़ी शब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

* यह गई का म नहीं है ।

द्राविडीशब्दानुक्रमणिका-समाप्त-हुई ॥



॥ श्रीदधिमथ्यै नमः ॥

कर्णाटकी शब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
नेज्जुलुमुल्लु	१८२	मज्जिगे	२३७	श्यामेगड्डे	८९
नेनेग्रक्किसोप्पु।-	२७१	माविनकायि	५०	श्रीगंध	१६८
नेपालदबीजा	२६७	मुल्लुचिरगुल्ल -।-	६०	संजमल्लिगे	१५४
नेरले	२१७	मोसरु	१६९	सम्पिके	२०१
नेल्लिकायि	४७	यकदगिड	२८	सम्पिगे	२०१
परंगिचके	२११	येरणे	२६२	सुरणद् -।	२१०
परंगिपपाया-।-	७८	येलुवासंदि	१२०	सुरसुरके	८१
पिलालु	१२५	रक्तचंदन	१९९	सेकिनगड्डे	११९
पिपल	१२५	लवंगपट्टे	१७८	सौते	११२
पुल्लंपुलुचे	२०४	लवंगपत्र (त्रे) -।-	२४१	हलुगिड	७६
बलावु	१६५	लामंच	७२	हसिशोंठि	९५
बसले	७१	लिंबटोलि	१२	हागला	१२६
बालेमर	२४	लोल्सरै -।-	१९१	हार्के	१५६
बिल्लीपापाण	४४	वटार्टे	५७	हालु	१७०
बिलीयकदगिड+	२१	वन्निमर	६	हालुमड्डि	१५६
बूदिकुंबलकायि-।-	१५२	वाल्लि	७	हालेमर	१६४
बूरग	३७	वाल्लिहरुहे	४१	हावुमेकेकायि	१६४
बूरगा	३७	वालेमर	२४६	हिरीमद्दु	३५
बेट्टतावरे	६८	विलीमत्ते	३४	हिरीयालाक्कि	८०
बेट्टदगेनुमर -।-	१	विषमुष्टिबीज	२५०	हीरे	१६१
बेट्टदमावु *	५१	वेण्णेवेदुरु ।-	११८	हुणिशेहरणु	१२५
बेरणे +	१६०	वोमा	१०	हुर्लि -।-	१४६
बेलिगार	२३४	शंखपाषाण	४४	हुलगत्ति	२४८
बेल्ला	१७७	शामन्तिहुव्वु	२४३	हेग्गोलि	१८
ब्यालदमरा -।-	२८	शिमेअगसे	३	होंगेसोप्पु	२४६
मंगरवल्लि	३६	शिल्काजोरि	६७	होंगेमरा	२४०
				होन्नेमर	१२८

* यह कर्नाटकी का शब्द है भूल से द्राविडी के कोष्ठ में छपगया है।

॥ ३० श्रीदधिमथी जयति ॥

अरबी शब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

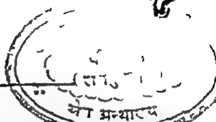
INDEX TO LATIN WORDS

INDEX TO ENGLISH WORDS.





॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



। अनुभूतचिकित्सासागरः ।

श्रीरामो रावणारिर्दशरथतनयो लक्ष्मणस्याग्रजन्मा ।
सीताप्राणाधिनाथोऽतुलबलनिचयो वायुपुत्रस्य सेव्यः ॥
कोदण्डं वै सवाणं दधदहितकुलध्वंसकर्त्ता समन्तात् ।
सर्वान् पायादपायादखिलसुरपती राघवो लोकभर्त्ता ॥ १ ॥
दाधीचान्वयपुण्डरीकमिहिरः श्रीमान् गणेशाभिधः ।
विप्रोऽभूदजमेरुनाम्नि नगरे साक्षाद् गणेशाकृतिः ॥
सूनुस्तस्य बभूव वैद्ययमुनादासो दयालु सुधीः ।
धर्मिष्ठो गुणवान् स्वकर्म निरतोऽभूवंस्त्रयस्तत्सुता ॥ २ ॥
नासिकतीर्थसभास्थायुर्वेदाभिज्ञकोविदप्रवरैः ।
दत्वायुर्वेदपञ्चानन इति पदवी भूपितोधीमान् ॥ ३ ॥

सोऽयं गंगाप्रसादस्तेषां ज्येष्ठो भिषग्वरो विद्वान् ।
स्वयमनुभूतचिकित्सासागरमद्भुतनिबन्धमातनुते ॥ ४ ॥
यं दृष्ट्वात्वरचाऽचवोऽपि हि जनास्तत्स्था गदानां गुणान् ।
नामानि ह्यखिलाः क्रियाश्च सततं ज्ञात्वा भवेयुर्विदः ॥
तस्मात् संस्कृतगुर्जरादिसुगिरां शब्दांस्तथा सत्क्रियाः
सङ्गृह्यात्र करोति वै श्रममिमं सम्यग् यथासम्भवम् ॥ ५ ॥

संख्या (१)

(सं०) अक्षोटः, फलस्नेहः, रेखाफलः, वृत्तफलः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अखरोट	अखरोट	अखोड	अक्रोड	आक्‌रोट	अखरोट	अक्षोलमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अक्रोडु	वेट्टदगोनुगर	जोज़ेहिन्दी	गिर्देगां	Juglans tegia Juglans arguta	Walnut

अखरोट दो प्रकारके होतेहैं जिनमें एकका वर्णन नीचे लिखतेहैं और दूसरे का दूसरी संख्यामें लिखेंगे ।

स्थान--इसके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे लेकर मनीपुर आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान--यह दो प्रकारका होताहै, एक बोया हुआ और दूसरा अपने आप उगनेवाला । बोयेहुएका छिलका पतला होताहै. उसको कागज़ी अखरोट कहतेहैं. अपने आप उगनेवालेका छिलका मोटा होताहै । यह वृक्ष १०० से १२० फुटतक ऊंचा होताहै. इसके पेड़की गुलाई १२ से २८ फुटतक होताहै,

गु० अक्रोड । म० अक्रोड । बं० आख्रोट् । तै० कोंडगोंगुनु । अ० जोज । फ़ा० चारमग्ज.

इसके पत्ते गोल और कुछ २ लम्बाई लियेहुए मोटे होतेहैं वे शीतकालमें गिर-जातेहैं और माघसे चैततक नवीन निकल आते है। इसके सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं जिनका आकार मींढल (मदनफल) के पुष्पों जैसा होताहै। यह वृक्ष जब ३०–४० वर्षका होजाताहै तब इसके फल आनेलगतेहैं फलोंको इकट्ठे करनेके तीन महीने पीछे उनमेंसे तेल निकाला जाताहै क्योंकि उस समय तक उनमें दूध जैसा एक पदार्थ रहता है पीछे वही, जमकर गिर बन जाता है।

फूलने फलनेका समय—चैत वैशाखमें इसके पुष्प लग जातेहैं और आषाढसे आसोज तक फल पकजातेहैं।

तेल निकालने की दो रीतियां हैं—(१) इसकी गिरीको महीन कूट गाढे कपडेकी थैलीमें भर यंत्रमें दबानेसे तेल निकलता है वह सफेद पतला और स्वादिष्ट होताहै पीछे उस खलको पानीमें उबालनेसे जो तेल निकलता है वह हरे रंगका होता है। इसमें जलाने और फफोला उठानेकी शक्ति होतीहै। अलसी के तेलकी अपेक्षा इसमें फफोला उठानेकी शक्ति अधिकहै. ताजी गिर से निकाले हुए तेलके मिठासकी अपेक्षा पुरानी गिरके तेलमें मिठास कम होताहै और उसमें दुर्गंध होतीहै यह तेल ज्यों २ पुराना होता जाता है त्यों २ इसमें फफोला उठानेकी शक्ति बढती जाती है।

(२) जैसे दश सेर गिरीमें से तेल निकालना चाहें तो पहिले आठ सेर गिरीको घाणी (कोल्हू) में डालके पेरें जब वह महीन पिसकर तेल छोड़ने लगे तब बाकीकी दो सेर गिरी डाल देवें, जब वह अधपिसी हो जाय तब सेरभर मिश्रीके बड़े २ टुकड़े कर घाणीमें डालके पेरने से उसकी खल जम कर तेल अलग हो जाताहै, इसको छानकर चीनी या कांचके बरतनमें कुछ दिन तक पड़ा रखने से वह निर्मल हो जाताहै और कांसी या पीतलके पात्रमें रखनेसे नीला पड़ जाता है।

प्रयोग—(१) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे आंतोंके कीडे मरते हैं (२) घाव और फोडोंको साफ करने के लिये उनको इसके क्वाथसे धोना चाहिये (३) इसके पत्ते ग्राही और बल बढानेवाले है (४) पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे कीड़े मरते है (५) इसके पत्तोंका क्वाथ पीने और उसीसे गालको

धोनेसे कंठमाला मिटतीहै (६) अखरोट की गिरी खानेसे रुधिर शुद्ध होकर गठिया मिटती है (७) गिरी खाने और लगानेसे विष उतरता है (८) खलको पानीके साथ पीस उष्ण कर स्नायुक (नहरुवा) की सूजन पर लेप कर पट्टी बांधके तपानेसे सूजन उतर जाती है ऐसे १५-२० दिन तक नित्य प्रयोग करनेसे नारू गलके बह निकलता है (९) अखरोटकी ताजी गिरीको पीस उसका लेप कर ईंटको गरमकर उसपर जल छिड़क कपड़ा लपेट उस ठौर पर सेक करनेसे बादीकी पीड़ा तुरंत मिटती है (१०) प्रातःकाल हाथ मुंह धोये पहिले दांतोंसे गिरीको महीन चाबकर लेप करनेसे दाद मिटता है (११) छालका दांतुन करनेसे दांत साफ रहते हैं और उनमें कीड़े नहींपड़ते (१२) सर्दी लगनेसे या विसूचिका में जो बांइटे चलने लगजाते है उनको मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन करना चाहिये (१३) पावभर गोमूत्रमें १ से ४ तोले तक यह तेल मिलाके पिलानेसे सब शरीरकी शोथ उतर जाती है (१४) बादीसे फूले हुए अर्शपर इसका तेल लगानेसे सूजन कम होकर पीड़ा मिट जाती है (१५) अर्दित में इसके तेलका मर्दन करके बादी मिटानेवाली औषधियोंके क्राथका बफारा लगानेसे बहुत लाभ होता है (१६) भिलावेको इसकी गिरी के साथ खिलानेसे उसके विषका उपद्रव नहीं होता है (१७) इसकी गिरी खिलानेसे अहिफेनका विष उतरता है और भिलावेके विषके उपद्रव भी मिटते है (१८) मोमको बराबर मीठे तेलमें गला उसमें इसकी पिसी हुई गिरी मिलाके लेप करनेसे नाड़ीव्रण (नासूर) मिटता है (१९) २ अखरोट ३ हरड़की गुठलीको जला उनकी भस्मके साथ ४ कालीमिरचको खरल करके अंजन करने से नेत्रोंकी ज्योती बढती है (२०) अखरोटके छिलकेको ओटाकर पिलानेसे विरेचन लगता है (२१) इसके छिलकेकी भस्मको किसी विष्टंभी औषधिके साथ खिलानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होता है (२२) इसकी पुरानी गिरी खानेसे खांसी पैदा होती है। इसकीछाल और फलके छिलके रंगतके काममें आते है। इसकी ताजी गिरि खानेके काममें आतीहै और सड़ी हुई गिरीको खानेसे रोग पैदा होने है।

संख्या (२)

दक्षिणी (जंगली) अखोट ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जंगली अखरोट	जंगली अखरोट	अखोड	जाफल अखाड	वन आक् (खू) रोट		नाट् अक्रोट विट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नाट्ड अक्रोड कोट्टै	नाट अक्रोड्डु	जोज़बर्री		Aleurites triloba A moluccana	The Belgaum or Indian Walnut

स्थान—यह वृक्ष मलाया टापूमे हिन्दुस्थानमें लाया गया है अब यह दक्षिण हिन्दुस्थानके सब प्रान्तोंमें और कलकत्तेके आस पास भी पैदा होने लगा है परन्तु मद्रास प्रान्तकी पृथ्वी इसको बहुत अच्छी मानती है।

पहिचान—इसके पत्ते और छोटी शाखाओं पर कुछ भूरे रंगके छोटे २ रुँए होते हैं, शाखाओंके अंतमें सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं।

फूलने फलनेका समय—यह ग्रीष्म ऋतु (गर्मीकी मौसिम) में फूलता है और श्रावणभादोंमें इसके फल लगते है इनकी मध्य रेखा दो इञ्च लम्बी होती है।

गोंद—इसकी छोटी शाखाओं (टहनियों) और फलोंके ऊपर गोंद लगता है फलोंपर का गोंद बहुधा खाने के काम में आता है।

तेल—इसकी गिरीमेंसे आधा तेल निकलताहै और वह पहिले लिखी हुई दोनों ही रीतियों से निकाला जासक्ता है इसका रंग कहरुवे जैसा होता है इसमें सुगन्ध नहीं होती है यह साबुन जैसा जमजाताहै और जल्दी सूख जाता है।

प्रयोग—(१) सवा तोलेसे ५ तोले तक इसका तेल पिलानेसे विरेचन लगता है (२) इसका तेल व्रण का उत्तमशोधक है (३) इस के पीनेके पीछे ३ से ६ घंटोंमें अवश्य विरेचन लगता है (४) यह दस्त

लानेमें एरण्डके तेलसे अच्छा है क्योंकि इससे पेट में जलन शूल और मरोड़ी नहीं होती और जी नहीं मिचलाता है इसका स्वाद अखरोटकी गिरी जैसा होता है (५) इस के तेल या मींगीमें बंबूलका गोंद मिलाके पेट और नलोंपर लेप करनेसे किसी गरिष्ठ पदार्थ के भोजन से पैदाहुई गांठ के कारण जो बद्धकोष्ठ हुआ हो वह मिट जाता है (६) इसका तेल खाने और जलाने के काममें आता है (७) इस के फल की मींगी खानेसे आरोग्यता बढ़ती है और शरीर पुष्ट होता है (८) इसकी खल भी अच्छी रेंचक है ।

संख्या (३)

(सं०) अगदः, दद्रुमर्दी, कीटारिः, अङ्गसुन्दरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	दाद मर्दन		दाद मर्दन	दाद मर्दन		सिमाअविस्त

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शिमेअगाति वडुकोलि	शिमे अगसे			Cassia alata	

स्थान—यह बंगालके नीचेके भाग, पश्चिमी मायद्वीप और ब्रह्मा आदि देशोंमें होता है ।

पहिचान—इसका झाड़ छोटा होता है और शाखें बहुत मोटी और अन्त में रूंएदार होती हैं, यह मनुष्यों की वस्ती से बहुत दूर नहीं होता है ।

इस की छाल रङ्गत के काम में आती है ।

प्रयोग—(१) सोहागा और हरड़के साथ इसकी जड़को पीसके लेप करनेसे दाद मिटता है । (२) इसके ताजे पत्तोंको पीसके लेप करनेसे दाद मिटता है । (३) इसके ताजे पत्तोंको दिनमें दो बेर कुछ दिनों तक दाद पर रगड़नेसे दाद मिटजाता है परन्तु मिटनेके पीछे भी कुछ दिनों तक लगातार

पत्तोंको उस ठौर पर रगड़ने रहना चाहिये नहीं तो दाद पीछा होजाता है। (४) इसके पत्तोंको नमकके साथ पीसके लेप करनेसे दाद तुरंत मिट जाता है। (५) पत्तों के क्वाथ के गंडूष करनेसे मुखपाक या मुखके छाले मिटते हैं (६) इसके और अरडूसेके पत्तोंको चूसनेसे सूखी खांसी मिटती है। (७) इसके पत्तोंके चूर्णको मधुके साथ चाटनेसे बल बढ़ता है। (८) इसके पुष्पोंका पुल्टिस बांधनेसे दाद मिटता है। (९) इसके पत्तोंको पीसके विषैले जीवोंके दंश पर लेप करना चाहिये। (१०) इसके पत्तोंका रस निकालके लेप करनेसे उपदंश सम्बंधी टांकियां मिटतीहैं और वह ठौर पकी हो जाती है। (११) इसके पत्तोंको ओटाके बफारा देनेसे उपदंश सम्बंधी टांकियां मिटती हैं. (१२) त्वचा सम्बंधी रोगोंको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका प्रयोग बहुत अच्छा है। (१३) इसके पत्तोंका लेप करनेसे वे फुंसियां मिटती हैं जो पास २ बहुतसी होती है और फैलती जाती है। (१४) इसके पत्तोंको नींबूके रसमें पीसके उन फुंसियों पर लेप करनेसे भी अधिक लाभ होता है। (१५) इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटता है। (१६) इसके पत्तोंको सनायके साथ ओटाके पिलानेसे विरेचन लगता है। (१७) सूखे पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे भी विरेचन लगता है। (१८) यह पुराने रोगोंकी अपेक्षा नवीन रोगोंको शीघ्रता से मिटाता है।

संख्या (४)

(सं०) अगस्तिः, मुनिद्रुमः, शीघ्रपुष्पः, वंगसेनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अगत्यो	अगथिया	अगथियो	अगस्ता	बक	हथिया	अगिसे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेजी
आति	अगचे			Agati Grandiflora Sesbania G	Large flowered Agati

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थान के दक्षिण और पूर्वीय प्रान्त, अंतर्वे
और राजपूताना आदि देशोंमें होते हैं।

पहिचान—यह पुष्पोंके रंगके कारणसे ४ प्रकारका होताहै इसकी ऊंचा
२०-३० फुट तक होती है, इसकी लकड़ी कोमल होतीहै, इसके पत्ते आकार
में इमलीके पत्तोंके जैसे होते हैं परन्तु उन से बड़े होतेहैं. वे एक दूसरेके सामने
जोड़ेमे लगते हैं एक सींकपर २०-३० तक पत्तोंके जोड़े लगा करते हैं। इसके
३ इंच लम्बे पुष्प लगते हैं जो अन्तमें मुड़े हुए होते हैं उनकी पंखड़ियां दल
दार होती हैं। इसके एक फुट लम्बी और गोल फलिया लगती है। यहवृक्ष
७-८ वर्षका होके सूख जाता है।

फूलने फलनेका समय—इसके वर्षाऋतुमें पुष्प आने लगते हैं जो
अगस्त्योदय तक बने रहते हैं और आश्विनमें फलियां लगती हैं।

गोंद—इस की टहनियोंपर लाल गोंद लगता है जो सूखनेपर कुछ काला
पड़ जाता है, यह बहुत ग्राही या संकोचक होता है।

प्रयोग—(१) इसके कोमल पत्ते पुष्प और फलियां शाकके काममें
आती हैं-परंतु बहुत दिनोंतक लगातार और अधिक खानेसे अतिसार पैदा
करतीहै (२) इसकी छाल बहुत ग्राहीहै, (३) छालके चूर्णकी फकी देनेसे
अतिसार मिटताहै, (४) मसूरिका (चेचक) के और दूसरे ऐसे ज्वरोंमें (कि
जिनमें फोड़े फुन्सियां हो जाया करती हैं) छालका हिम या फांट पिलाना चा-
हिये (५) इसके पत्ते और पुष्पोंका रस सुंघानेसे रुद्ध प्रतिश्याय (बंधजु-
काम) मिटताहै, (६) इसके पत्ते या पुष्पोंका रस सुंघानेसे नासिका द्वारा
सिरसे बहुतसा दूषित जल बहकर मस्तकपीड़ा और उसका भारीपन मिट-
जाताहै, (७) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै, (८) चोटके
ऊपर पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे सूजन उतरके पीड़ा मिटजातीहै। (९) पुष्प

मा० अगथ्यो। हि० अगस्तिया, हथिया। गु० अगथीओ, अगथीयो। म० हदगा।
ब० बक फूलेरगाछ। प० हदगा। तै० अवसि। द्रा० अहचि कर्ना० अगसे, अगिचे।

या पत्तोंका रस सुंघानेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै। (१०) लाल पुष्पके अगथियाकी जडको पानीमें पीस गर्मकर लेप करनेसे गठियाकी सूजन उतरतीहै। (११) पुष्पोंके रसको आंखमें डालनेसे धुंधलापन मिटता है। (१२) पुष्पोंका शाक खानेसे रतोंधा मिटताहै। (१३) इसके पत्ते सारकहैं। (१४) इसके रसका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै।

—०००—

संख्या (५) *

(सं०) अगुरु, वंशिकं, राजार्हं कृमिजं,।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अगर	अगर	अगर(रु)	अगर(रु)	अगरु काष्ठ	अगर	अगरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अहिल् कट्टे	अगर	ऊद(हिंदी)	ऊदखाम	Aquilaria Agallocha	Calambic Aloewood

स्थान — अगरके वृक्ष गिलहट, मलाबार, मलयाचल, और मनीपुरआदि देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह पांच प्रकारका होताहै इसका वृक्ष बहुत बड़ा होताहै इसके पत्ते बडे २ होतेहैं और पतझडमें नहीं गिरतेहैं उनमें और इसकी लकडीमें बहुधा कीड़े लग जातेहैं. इसकी लकडी सफेद कुछ पीलापन लियेहुए खरदरी और तन्तूदार होतीहै. जब यह बिगडने लगतीहै तब काटकर उसके टुकडे गीली जमीनमें गाड़ रखनेसे वे काले, भारी, तेलिया और सुगन्धयुक्त

* पृष्ठ न० ८ में जो नोट रक्खा गया है वह सं० न० ४ का समझें।

व० अगरु चंदन. द्रा० अहरु कट्टै. अहरु कट्टई. फा० ऊदेहिंदी.

Agallochum, Eagle wood, Lignum, aloes, Algia, Akyaw

होजातेहै । सिलहटमें पैदा हुआ अगर सबसे उत्तम होताहै उसको गरकी ऊद कहतेहै यह औषधिके प्रयोगमें अच्छाहै इसका स्वाद कडवा कसेला और तेलिया होताहै दूसरी जातिके अगर हल्के गिने जातेहै ।

फूलने फलनेका समय– इसके फूल और फल नहीं लगतेहै ।

गोंद—इसकी टहनियोंमें गोंद जैसा एक पदार्थ लगताहै उसमें बहुत अच्छी सुगंध होतीहै ।

प्रयोग—(१) हृदयका बल बढानेवाली औषधियोंमें इसका गोंद मिलाया जाताहै । (२) गठिया और छोटे जोडोकी सूजनपर इसके गोंद का लेप करना चाहिये । (३) हाथ पैर या किसी अंगका सूनापन मिटाने के लिये इसका लेप करना चाहिये । (४) अगर और सोठका क्वाथ पिलानेसे शरीरके हरेक अंगकी शून्यता मिटतीहै । (५) अगर और अतीसके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै । (६) अगर और सेकेहुए कमलगट्टोंकी सफेद गिरीके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे वमन बन्ध होतीहै । (७) भँवल (चक्कर) मिटानेके लिये उत्तम अगरकी लकडी सुघाना चाहिये । (८) इसका क्वाथ पिलानेसे ज्वरसे बढीहुई तृषा कम हो जातीहै । (९) इसको पीस गर्म करके लेप करने से पेटकी शूल मिटतीहै । (१०) इसका ठंढा लेप करनेसे शरीरकी दाह मिटतीहै । (११) अगर और शतावरका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै और उसके पीछेकी निर्बलता मिटजातीहै । (१२) इसके महीन चूर्णको शरीरपर मलनेसे बहुत पसीना आना बंध होताहै । (१३) इसके चूर्णकी फक्की देनेसे ज्वर छूटजाताहै । (१४) इसको पानीमें घिसके पिलानेसे पित्तकी वमन बंध होजातीहै । (१५) इसकी लकडीसे तेल बनाकर उसका मर्दन करनेसे वादीकी पीडा मिटतीहै । (१६) इसके चूर्णको मधुके साथ चाटनेसे हृदयका बल और पाचनशक्ति बढतीहै ।

—इसका इत्र ठंढा और बहुत अच्छी सुगंध युक्त होताहै । यह अगर अष्टगंध और कई प्रकारके धूपोंमें मिलाया जाताहै ।

—o—

संख्या (६)

(सं०) अग्निमन्थः, जया, तर्कारी, नादेयी,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अरणी	अरणी	अरणी	टाकली	गनिरि	अगेथु	तकिली चट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वन्निमरम्	वन्निमर			Premna integrifolia	

स्थान—अरणीके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन, बंगाल, बम्बई, अवध, गढवाल और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें पैदा होतेहै।

पहिचान - अरणी दो प्रकारकी होतीहै एक छोटी और दूसरी बडी तथा श्वेत और काले रंगके पुष्पोंके भेदसे भी दो प्रकारकी होतीहै। बडी अरणीका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै. इसके पत्तोंके किनारे कटेहुए कंगूरेदार होतेहैं. इसकी पुरानी शाखाओंमें आमने सामने मजबूत काटे होतेहै. छोटी टहनियोंके काटे नहीं होते. इसके कुछ नीले सफेद रंगके पुष्प लगतेहै. उनकी पंखडियें कुछ मोटी होतीहै और उनकी गंध अच्छी नहीं होतीहै. इसकी लकडी दृढ होतीहै इसका रंग सफेद होताहै और उसपर बैगनी रंगकी धारें होतीहैं. माघके महीनेंमें इसके पत्ते गिर जातेहै और माघसे चैततक नवीन पत्ते निकल आतेहै। जो वृक्ष तर जमीनमें होतेहै उनके पत्ते जल्दी निकलतेहै और जो सूखी जमीनमें होतेहै उनके कुछ देरीसे निकलतेहै।

फूलने फलनेका समय—चैत वैशाखमें इसके पुष्प लग जातेहै. उनके गिरनेके पीछे काले रंगके छोटे २ फल लगतेहै।

हि० अरनी, अगेथु (थू) गनियारी. म० टाकला, थोरऐरण। बं० आग्गान्त, गनियारि (री). पं० गनियार. तै० नरुपु, उटि, नरवलु. द्रा० तळुताळै, मुन्नै, फा० गनियार. लै० Premna serratifolia

प्रयोग—(१) इसकी जड कड्वी और अग्निवर्द्धकहै । (२) इसके प्रयोग से पेटकी शूल, ज्वर, जलोदर और सब शरीरकी ढीली पडी हुई सूजन मिटजातीहै । (३) इसकी जडको पानीमें पीस घीके साथ ७ दिन तक चटानेसे उदर्द रोग (पित्तीका एक भेद) मिटताहै । (४) इसका सवा छ तोला क्वाथ दिनमें दो तीन वेर पिलानेसे ज्वरवालेके आमाशयकी शूल मिटतीहै । (५) जड्को साटेकी जड्के साथ पीस गर्मकर लेप करनेसे सब शरीरकी ढीली पड़ी हुई सूजन उतर जातीहै । (६) इसके क्काथ पर सोंठ बुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै । (७) इस के पत्ते कड़वे होतेहैं । उनके प्रयोगसे पेटकी शूल और आध्मान मिटताहै । (८) इसके पत्ते और धनियेका क्काथ पिलानेसे हृदयकी निर्बलता मिटतीहै । (९) पत्तोंका उबाला मल छानके पिलानेसे आमाशयकी शूल मिटतीहै । (१०) पत्तोंका शाक बनाके खानेसे पेटकी बादीकी पीडा मिटतीहै । (११) पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसकर पिलानेसे सर्दीका प्रतिश्याय मिटताहै । (१२) पत्ते और कालीमिरचको पीसके पीनेसे ज्वर छूटताहै । (१३) पत्ते और हरड्की छालका क्काथ करके पिलानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै । (१४) पत्तोंको पीस पुल्टिस बनाके शोथयुक्त अर्श (बवासीर) पर बांधना चाहिये । (१५) इसके पंचांगका क्वाथ पिलानेसे गठिया और स्नायुकी वातपीड़ा मिटती है । (१६) इसकी जड़का चूर्ण घृतके साथ ७ दिन पिलानेसे शीतपित्त मिटताहै । (१७) इसकाक्वाथ पिलानेसे हस्तिप्रमेह मिटताहै । (१८) इस क्वाथके पीनेसे वसामेहभी मिटताहै. इसके पत्तोंका शाक खानेके काममें आताहै । अरणी दशमूलमें लीजातीहै ।

संख्या (७)

(सं०) क्षुद्राग्निमंथः; तपनः, अरणिः, रक्तांगः, ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
छोटी अरणी	छोटी अरनी	न्हानी अरणी	लघु ऐरण	छोट गनिरि		निल्लि, तल्लुकि

द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तलूदलेल	निल्लि,वल्लि			Clelerodendron phlomoides	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर मिलतीहै, विशेपकर पंजाब, सिन्धु, मेरवाड़ा; दक्षिण, विहार, बङ्गाल, अवध, मध्यप्रदेश, और लङ्का आदि देशोंमें पैदा होतीहै।

पहिचान—इसका झाड़ प्रायः २–३ गज ऊंचा होताहै इसकी जड़ मोटी होतीहै-उसका रंग भूरा और स्वाद कड़वा होताहै और उसमें कुछ २ सुगंधभी आतीहै। इसके पत्ते एक दो इंच लम्बे होतेहैं. इसके सुगंधयुक्त सफेद पुष्प लगतेहैं। इसके काले रंगके प्रायः सूखे फल लगतेहैं उनमें ४–४ मींगी निकलतीहैं। इसके बारह महीनेही पुष्प लगते रहतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी जड़के प्रयोगसे रुधिर शुद्ध होताहै। (२) यह बलवर्द्धकहै। (३) इसके प्रयोगसे योदरीके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै। (४) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होताहै। (५) पत्तोंका सवा तोला रस या इससे कुछ अधिक रस दिनमें दो बेर कुछ दिनों तक पीनेसे पुराना उपदंश मिटताहै। (६) चौपायोंका आध्मान मिटानेके लिये इसका पंचाग खिलातेहैं। (७) अतिसार, और पेटके क्रीड़े मिटानेके लियेभी इसका प्रयोग किया जाताहै।

म० टहाकळ, टाकळी। ब० छोट गनियारि, (री)। तै० कूरनिल्लि; द्रा० तलुदल. कर्ना० तक्लि.

संख्या (८)

(सं०) अङ्कोलः, निकोचकः, रेची, गुप्तस्नेह ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अंकोल	ढेरा, टेरा	अङ्कोल	अंकोल	आँकोड	ढेरा, टेरा	वूडुगु
द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अं०
अंकोलम्	अंकोले	अंकोल		Alangium Lamarckii		

स्थान—अंकोलके वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, संयुक्तप्रदेश, बंगाल, अवध, हिमालयकी घाटीसे गंगातक और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान— यह काले, लाल और सफेद पुष्पोंके भेदसे ३ प्रकारके होतेहैं। इसकी ऊंचाई ३०–४० फुटकी होतीहै इसका पेडड छोटा और सीधा होताहै और उसकी गुलाई २॥ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते एक दो अंगुल चौडे और ३ से ६ इञ्च तक लम्बे होतेहै वे पतझडमें गिरजातेहै परंतु सबके सब नहीं गिरते और चैत वैशाखमें नवीन पत्ते आजातेहै। इसके कच्चे फल नीले, पकते समय लाल और पकजानेपर बैंजनी रंगके होजातेहै वे झडवेर जितने बड़े और गिरदार होतेहैं उनका स्वाद खटमीठा और कसेला होताहै। इसकी लकड़ीके बीचका भाग भूरा और कठोर होताहै और छालके अंदरकी लकडीका रंग हल्का पीला होताहै। इनमें किसी वृक्षके कांटे होतेहैं और किसीके नहीं।

फूलने फलनेका समय— माघसे चैत तक इसके पुष्प लगतेहै। वैशाखसे श्रावणतक इसके फ़ल लगते रहतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी जड़की छालका चूर्ण खानेसे पेटके कीडे मरते है। (२) जडके चूर्णकी फक्की देने से विरेचन लगता है। (३) सफेद

हि० अंकोल. म० अंकोली. व० धला आँकोड
तै० अकोलमु क० अंकुले ॥ लै० A. hexapetalum.

पुष्पके अंकोलकी जडके ३ मासे चूर्णकी फक्की देनेमे निर्विघ्न वमन होतीहै. और इसकी पूरी मात्रा न देनेसे हल्लास होने लगताहै । (४) इस वृक्षकी छाल बहुत कडवी होतीहै. उसको पीसके लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं। (५) इसकी जड्की छालको कोढके प्रारंभमें, विचर्चिका (खीची) बढे हुए उपदंश और त्वचाके दूसरे रोगोंमें यथाकालतक रोगके बलके अनुसार काममें लानेसे बहुत लाभ होताहै। (६) सादे, मन्द, लगातार रहनेवाले और निरुपद्रव ज्वरको पसीना लाके उतारनेके लिये इसकी जडकी छालके ३ से ५ रती तक चूर्णकी फक्की देनी चाहिये। (७) इसकी जड उष्ण और चरपरीहै। (८) इसके चूर्णकी फक्की देनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै। (९) इसकी जडकी छाल, जायफल, जावित्री और लवंग-प्रत्येक दश दश रती पीसके फक्की देनेसे कोढ का बढना बन्ध होजाताहै। (१०) इसके २॥ मासे चूर्णकी गोली बनाके देनेसे काले सर्पका विष उतरताहै। (११) इसकी जड्की छालका तेल बनाके मर्दन करनेसे गठियाकी तीव्रपीड़ा मिटतीहै। (१२) इसकी जडके काथमें घी डालके पिलानेसे कुत्तेका विष उतरताहै। (१३) लाल पुष्पवाले अकोलकी जडकी छालका १० रती चूर्ण देनेसे सर्पका विष उतरताहै। (१४) इसके १० रती चूर्णकी फकी देनेसे विरेचन होके जलधर मिटताहै। (१५) रुधिर शुद्ध होनेके लिये इसका १ से २॥ रती तक चूर्ण मधुमें चाटना चाहिये। (१६) इसकी जडका लेप करनेसे शूल और शोथ मिटतीहै। (१७) इसका फल ठण्ढा, बलकारक और परिपोषकहै। (१८) शरीरकी दाह मिटानेके लिये फलोंको घोट छानके शरीरपर चुपड़ देना चाहिये। (१९) उनके चूर्णकी फकी देके ऊपर अडूसेका क्वाथ पिलानेसे खैन रोग मिटताहै। (२०) उनको मिश्रीके साथ पीस के पिलानेसे मुख आदिसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै। (२१) इसके पत्तोंका पुल्टिस बाधनेसे गठियाकी पीडा मिट जातीहै। (२२) इसके वीजोंका तेल लगानेसे व्रण (फोडा) भर जाताहै। (२३) इसकी जड़ सारक है। (२४) इसके फलोंका तेल तीव्र रेचकहै। (२५) इसके फलका गूदा खट्टा और ग्राही होताहै। (२६) इसके फलके गूदे को मधुमें मिलाके चांवलोंके पानीके साथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै।

(२७) इसको और तिलोंके खारको मधुमें मिलाके दहीके तोड़के साथ देनेसे मूत्राघात मिटताहै । (२८) इसकी जड़की छालके ३ से ५ रत्ती चूर्णकी फकी देनेसे पसीना आताहै । (२९) चूहेका विष उतारनेके लिये इसकी जड़के चूर्ण की फकी देनी चाहिये। इसके फल खानेके काममें आतेहैं. परंतु अधिक खाने से मुखमें ऊष्मा प्रतीत होने लगताहै ॥

संख्या (६)

(सं०) अङ्गारः अलातं, उल्मुकं ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोयला	कोयला		कोळसा	आंगार अंगार	कोला	

द्राविड़ी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अं०
		हैफम्	अनकिरत	Carbon	Coal Charcoal Carbon

प्रयोग—(१) लकड़ीका कोयला जहरीली छूत और दुर्गंधको मिटाता है। (२) वायु आदिको शुद्ध करताहै और दुर्गन्धि पैदा होनेको रोकताहै। (३) यह मंदाग्नि, अतिसार, रक्तातिसार और रुक २ कर आनेवाले ज्वरको अवश्य मिटाताहै। (४) इसका मंजन करनेसे दांत साफ रहतेहैं। (५) इसको पीसकर लेपकरनेसे विच्छू का विष उतरताहै। (६) बिगड़ेहुए घाव और सूजनपर इसका पुल्टिस बांधना चाहिये। (७) बडे२ स्थानोंकी हवा शुद्ध करनेके लिये कोयले काममें लाये जातेहैं। (८) पानीको शुद्ध करनेके लिये भी इनको काममें लातेहैं। (९) सुपारीका कोयला दांतोंके मंजनमें काम आता है। (१०) कोयलेको महीन पीसकर शर्बत या गुडके साथ देनेसे दुर्गंधयुक्त अतिसार मिटताहै। (११) कोयलेको महीन पीस तेलमें मिलाकर घावपर लगाते हैं। (१२) कोयले को महीन पीस घावपर बुरकानेसे रुधिरका बहना बंध होजाताहै। (१३) रुधिर शुद्ध करनेके लिये कोयले का प्रयोग करना चाहिये।

संख्या (१०)

(सं०) अजमोदा, वस्तमोदा, मर्कटी, कारवी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अजमोद	अजमोद(दा	अजमोद	अजमोद(दा	रान्धुनी	अजमोदा	अजमोदा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
आशामदा	बोमा	बखुलकरफ्स	करफ्स (श)	Carum Roxburghianum	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै परन्तु बंगालमें बहुत बोई जाती है ।

पहिचान—इसके क्षुप (-झाड) शीतकाल में बोये जातेहै । इसकी डालियों पर बडे २ छत्ते लगतेहैं उनमें से सफेद रंगके छोटे २ पुष्प निकलतेहैं पुष्प खिरनेके पीछे उनमें दाने पैदा होतेहैं उनको अजमोद कहतेहैं। इसके पत्ते कटे हुए होतेहैं और बीजोके गुच्छे लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) काले नमकके साथ अजमोद की फक्की देनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै, । (२) इसके चूर्णकी गुडमें गोली बनाके देनेसे पेटका अफारा मिटताहै । (३) इसको गुडके साथ ओटाके पिलानेसे पेटकी वादीकी शूल मिटतीहै । (४) पसलीकी शूल या हरेक अंगकी वादीकी पीड़ा मिटानेके लिये अजमोदको गरमकर जितनी दूरमें पीडा हो उतनी दूरमें विस्तरे पर विछा ऊपर हलका महीन कपड़ा ढकके उसपर रोगीको सुला देना चाहिये । (५) मूत्राशयकी वादीकी पीड़ा मिटानेके लिये अजमोद और नमकको कपडेमें बांध गरमकर नलोंपर सेंक करना चाहिये । (६) पीपल और नमकके साथ इसकी फक्की देनेसे भूख लगने लगतीहै । (७) जिसको भोजन करनेके पीछे हिचकी चलती हो उसको चाहिये कि अजमोदको चूंस२ के पीक निगला करे । (८) दांतोंकी पीडा मिटानेके लिये अजमोदकी धूनी देनी चाहिये । (९) अजमोद

की धूनी देनेसे वच्चोंकी गुदाके छोटे २ सफेद कीड़े (जिनको चुरणे कहते हैं) मरजातेहै । (१०) अजमोद और गुड़को तेलमें पकाके दिनमें तीन चार बेर बांधनेसे फोड़ा जल्दी पक जाताहै । (११) अजमोद और लवंगकी टोपी को मधुके साथ चटानेसे वमन वंध होतीहै । (१२) अजमोदको पानमें रख उसको चाव २ के पीक निगलनेसे सूखी खांसी मिटतीहै ।(१३) अजमोदको तेलमें ओटा उस तेलका मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै । (१४) मासे भर सोठके चूर्णमें इस तेलकी १० बूंदें डाल फक्की देकर ऊपर गर्म किया हुआ सौंफका अर्क पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै । (१५) अजमोद उत्तेजक और बलवर्द्धकहै । (१६) श्वासको मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है । (१७) इसको पीस गुडके साथ ७ दिन खिलानेसे उदर्दरोग (पित्ती) मिटताहै । (१८) ३ माशे अजमोद की फक्की देके ऊपर मूलीके पत्तोंका १ तोले रस पिलानेसे पथरी गल जातीहै । (१६) सुगंधयुक्त और स्वादिष्ट करनेके लिये इसका शाकादिक में छोंक (बगार) देते हैं ।

—— o o ——

संख्या (११)

(सं०) अजांत्री, छगलांत्री, मेषान्त्री, वृषपत्रिका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लताविशेष	बोकडी	पुगलवेल	पुगळी	छागल बेंटे		गाडिदगडपर-

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अडा-तीडापाळै	कुर-टिगेयभेद			Convolvulus argentens	

स्थान—यह बंगालमें होताहै ।

पहिचान—यह एक प्रकारका गुल्म है ।

प्रयोग—(१) इसके सेवनसे पुरुषका वीर्य्य बढता है। (२) इसके प्रयोगसे स्त्रीका वांझपन मिटताहै। (३) इसके सेवनसे खांसी मिटतीहै। (४) यह चरपरी होती है ॥

संख्या (१२)

अञ्जन (वृक्ष)

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अञ्जनवृक्ष		अजन	लिंब			अल्लि, आकु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
काशामर	लिबटेलि			Memecylon edule	The Iron wood tree

स्थान—यह वृक्ष हिन्दुस्थानके पूर्व दक्षिण और सीलोंन आदि बहुतसे देशोंमें होताहै।

पहिचान—इसके गिरदार कषैले फल लगतेहैं जो पकजानेपर खानेके काममें आतेहै। इसके पत्तोंमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै।

फूलनें फलनेका समय—इसके ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमें मोरलगके जामूनी या नीले रंगके पुष्प आने लगतेहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते ठंडे और संकोचकहै (२) इनको पीस छानकर पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै। (३) इनके क्वाथ या फाटसे धोनेसे नेत्रविकार मिटतेहै। (४) इसकी छाल, नारियलकी गिरी, अजवाण, जंगली हलदी और काली मिरच सब बराबर ले पीस गर्म करके चोटपर लेप करनेसे या इन सबको जलमें ओटाके बफारा देनेसे सूजन और पीड़ा मिटतीहै। (५) इसके पत्तोंका फाट पिलानेसे मूत्र कृच्छ्र मिटताहै ॥

संख्या (१३)

(सं०) अञ्जनं, यामुनं, कृष्णं, नादेयं ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सुरमो	सुरमा	काळो सुरमो	काळासुरमा	कालशुर्मा	सुरमा	अजनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अजनक्कल्	अजनदकल्लु	इसमद	सुरमाह	Antimonium	Antimony

स्थान—यह हिमालय और पंजाबकी कई खानोंमेंसे निकलताहै तथा कन्धार और इस्पहानसे भी आताहै । बहुधा गलीनेको सुरमेके बदले देतेहै क्योंकि वह भी आकार और रगमें सुरमे जैसा ही होताहै । इसलिये असली सुरमेको बंबईमें सुरमा इस्पहानीके नामसे बेचतेहै ।

पहिचान—कई ग्रन्थकार इसको दो प्रकारका और कई ३ प्रकारका लिखतेहै-काला सफेद और तीसरा वह सुरमा जिसको पत्थरपर घिसनेसे लाल रंगका होताहै यह पत्थर जैसा होता है-उसपर लोहेके रवेसे चमकतेहै उसको तोडनेसे भीतरसे काला निकलताहै और घिसनेसे लाल होजाताहै ।

काले सुरमेकी पहिचान—काला सुरमा, कठोर, भारी, चमकदार और बहुत पुडतदार होताहै इसकी चमक बहुत तेज और शीशेकीसी होतीहै ।

इसके गुण—यह मधुर, शीतल, कसेला, स्निग्ध, लेखन, ग्राही विपघ्न और नेत्रोंको हितकारीहै । हिचकी, वमन, रक्तपित्त, क्षय और कफ पित्त-नाशकहै ।

मा० कालोसुरमो हि० अंजन. गु० कासुरमो. म० फळचासुरमा ब० नीलसुरमा, श्वेतशुर्मा द्रा० कमुनिमिलई. अ० कोहल फा० तुतिया, संगे-सुरमाह

संख्या (१४)

(सं०) अंजीर, मृदुलं, वृत्तं, काकोदुम्बरिकाफलं ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अजीर	अजीर	अजीर	अजीर	अजीर	किमरी	मडिपण्डु

द्राविड़ी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	अंजरी	तीन	अजीर	Ficus Carica	Fig tree

स्थान–यह हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोया जाताहै परंतु संयुक्त प्रदेश, पंजाब, सिन्ध, मद्रास, बम्बई और राजपूताना आदिमें बहुत होताहै ॥

पहिचान–यह दो प्रकारका होताहै एक बोया हुआ जिसके फल और पत्ते बड़े होतेहैं। दूसरा जंगली या अड़क जिसके फल और पत्ते इससे छोटे होतेहैं। अंजीरका वृक्ष ६ से ६ फुट तक ऊंचा होताहै तोडने या चीरा देनेसे इसके हरेक अंगमेंसे दूध निकलताहै इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे अधिक खरदरे होतेहैं। इसके फलका आकार प्राय गूलरके फल जैसा होताहै कच्चे फलका रंग हरा और पके हुए का कुछ पीला या बैंजनी और भीतरसे बहुत लाल होताहै। इसकी गिरा बहुत मीठी और स्वादिष्ठ होतीहै इसके बीज कठोर, चन्दनिया रंगके, मीठे और चेपदार होतेहैं पतझड़में इसके पत्ते गिरजाया करतेहैं। यह देश और पृथ्वीके कारणसे मोटाई और रंगमें बहुत बदल जाताहै।

फूलने फलनेका समय––बोये जानेके पीछे यह चोथे वर्ष में फलता है इसके दो फाल आतेहैं पहिला फाल अषाढ और सावनमें दूसरा पोष और माघमें आते हैं, यह २० वर्षतक फलताहै और पीछे सूख जाताहै ॥

प्रयोग– (१) इसके सूखेफलको तीक्ष्ण (चरपरी) औषधियोंमें मिला देनेसे उनका चरपराहट कम होजाताहै। (२) इसका गिरीको शक्कर

बं० पेयारा, बडपेयारा क० मेडि पंडु,

और सिरकेमें पीसके पिलानेसे बच्चोंके श्वास नलिका सम्बन्धी रोग मिटते हैं। (३) अंजीरका सेवन करनेसे राजयक्ष्मा (क्षैनरोग) मिटताहै। (४) अंजीरके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै। (५) ताजा फल खानेसे रुधिर बढताहै (६) शरीरकी गरमी कम करनेके लिये अंजीरको खांडमें लपेटके खाना चाहिये। (७) फोड़ेको जल्दी पकानेके लिये अंजीरका पुल्टिस बांधना चाहिये (८) सफेद कोढके प्रारम्भमें अंजीरके पत्तोंका रस लगानेसे उसका बढ़ना बंध होके मिट जाताहै। (९) सूखी खांसीवालेको अंजीर खिलाना चाहिये। (१०) अंजीरके सेवनसे कृश पुरुषका शरीर पुष्ट होजाता है। (११) अंजीरके बीज और छिलकेको खानेसे मंदाग्नि और आध्मान (अफारा) होजाताहै। (१२) अंजीरको सिरकेमें भिगोके खानेसे दस्त लगके सूजन उतर जाती है। (१३) सूखे अंजीर खानेसे खांसी मिटतीहै। (१४) अंजीरको ओटाके कुल्ले करनेसे मसूड़ोंके रोग मिटते हैं। (१५) सूखे अंजीरका पुल्टिस बनाके बांधनेसे गुदा और स्त्रियोंके गुह्यस्थानके पीपवाले फोड़े मिटते है। (१६) अंजीरका मुरब्बा ठंढा और सारकहै इसके सेवनसे रुधिर और मांस बढताहै (१७) शरीरके कठोर भाग पर इसके पत्ते या फलों का पुल्टिस बांधनेसे वहांका कठोर पन मिट जाताहै। (१८) ताजे अंजीर कुछ दिनोंतक लगातार खाते रहनेसे स्वाभाविक बद्ध कोष्ठ मिट जाताहै। (१९) इसके पेड़की छालकी भस्मको सिरके या पानीके साथ पीसके मस्तक पर लेप करनेसे बहुत सोच करनेसे पैदाहुई मस्तक पीड़ा मिटतीहै। (२०) इसके दूधमें रूईका फाया भिगोके दांतोंके नीचे दबानेसे दंतपीडा मिटतीहै। (२१) सूखे या हरे अंजीर पीस जलमें ओटाकर गुनगुना २ लेप करनेसे फोड़े और गाठोंकी सूजन बिखर जाती है। (२२) इसकी लकड़ीकी राखको पानीमें घोलके गाद नीचे बैठजानेके पीछे उसका नितराहुआ पानी निकाल उसमें फिर राख घोल दवे ऐसे ७ वेर राख घोल २ के नितारा हुआ पानी पिलानेसे दूध या रुधिरका जमाव बिखर जाताहै।

अंजीर खानेके काममें आतेहैं। १०० तोले सूखे अंजीरमें ६०-७० तोले शक्कर होतीहै वह अंगूरकी शक्कर जैसी होतीहै॥

संख्या (१५)

(सं०) अटरूपः, वृषः, सिंहास्यः, वाजिदंतः, वासकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अ(र)डूसो	अरू(डू)से।	अरडु(डू)शी	अडुळमा	वासक	बासा	अड्डसरमु

द्राविडी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
आडादोडै	आडुसोगे	हूफारीनकून	-	Adhatoda vasica. Justicia A.	-

स्थान—अडूसेके पेड़ हिन्स्थानके बहुतसे भागोंमें उगतेहैं ।

पहिचान—सफेद और काले पुष्पोंके भेदसे अडूसा दो प्रकारका होताहै परंतु कोई २ इसको सफेद और लाल पुष्पोंके भेदसे भी दो प्रकारका लिखतेहैं । इसका पेड १० फुट तक ऊंचा होताहै इसके पत्ते थोडे चौडे और चौडाईसे दुगुने तिगुने लम्बे नोकदार और कोमल होतेहैं । इसका फल प्रायः एक इंच लम्बा जो आगेसे आधी दूरतक एकसा मोटा और पीछसे चढ़ी उतार कुछ चपटा होता है इसके पुष्प और फलका स्वाद कडवा और चरपरा होताहै ।

फूलने फलनेका समय—यह एक वर्षमें दोवेर फूलताहै पहिले शरद ऋतुमें और पीछे वसंत ऋतुमें ।

इसके पत्तोंको ओटाके पीला रंग निकालतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते और जडको सोंठके साथ ओटाके पिलानेसे सब प्रकारकी खांसी मिटतीहै । (२) पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै । (३) इसके पत्ते और काली मिरचके क्वाथको छान ठंडाकर मधु मिलाके पिलानेसे भी सूखी खांसी मिटतीहै । (४) अडूसेका अवलेह बनाके चटानेसे पुरानी खासी मिटतीहै । (५) अडूसेके पत्ते और पोखर मूलका क्वाथ बनाके पिलानेसे श्वास मिटताहै । (६) इसके ताजे

पुष्पोंको गर्म कर आंख पर बांधनेसे आंखके गोलेकी पित्त शोथ (सूजन) उतरतीहै । (७) इसके पुष्पोंको सोंठके साथ ओटाके पिलानेसे वांइटे मिटतेहैं । (८) इसकी जड पत्ते और पुष्पोंका क्वाथ या अवलेह, आक्षेपकवायु और वांइटे मिटताहै । (९)-इसके पुष्प और फलोंको तेलमें ओटा उस तेलका मर्दन करनेसे हाथ पैरोंकी ऐंठन मिटतीहै । (१०) ताजे पत्तोंको सुखा चिलममें रखके या बीडी बनाके पीनेसे श्वास मिटताहै । (११) प्रतिश्याय (जुखाम) मिटानेके लिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये । (१२) इसकी सूखी छालको चिलममें रखके पीनेसे श्वासका वेग मिटताहै । (१३) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै। (१४) इसके पत्तोंके क्वाथका बफारा देनेसे गठिया मिटतीहै । (१५) अडूसे और एरंडके पत्ते और एरंडके तेलको जलमें ओटाके बफारा देनेसे स्नायुजाल (रगों) की पीडा मिट जातीहै । (१६) हरेक अंगकी सूजन उतारनेके लिये भी यह बफारा अच्छाहै । (१७) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की देनेसे आर्त्तवज्वर (मौसमी बुखार) छूट जाताहै । (१८) अरडूसेके रसमें कलमी शोरा डालके पिलानेसे मूत्र बहुत लगकर पांडु रोग मिट जाताहै । (१९) जलंधरमें या जबकि सब शरीर सफेद होजाय उसमें इसके पत्तोंका स्वरस पिलानेसे मूत्र वृद्धि होके उक्त रोग मिटतेहैं । (२०) अरडूसेके पत्तोंका फांट पिलानेसे ज्वरमें बढी हुई तृषा कम होजातीहै । (२१) अडूसेके पत्तोंको मिश्रीके साथ ओटा छानके पिलानेसे ज्वरकी ऊष्मासे बढ़ी हुई घबराहट मिट जातीहै । (२२) अरडूसेके पत्तोंके क्वाथमें चन्दनके तेलकी २० बूंदें डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै । (२३) धानियां, सौंफ और अडूसेके पत्ते ओटा छानके पिलानेसे रक्तातिसार (खूनकी दस्तें) मिटताहै । (२४) अरडूसके पत्ते, चन्दन और हीरादक्खनके चूर्णकी फक्की देनेसे रक्तार्श (खूनी बवासीर) का रुधिर बन्ध होताहै । (२५) इसके पत्तोंका स्वरस पिलानेसे रक्तपित्त और रक्तातिसार मिटताहै । (२६) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बनाके तीन दिन नेत्रोंपर बांधनेसे नेत्र पीड़ा मिटतीहै । (२७) इसके पत्तोंको पीस लवण मिलाके बांधनेसे भगंदरकी सूजन उतरतीहै । (२८) पत्तोंके स्वरसमें मिश्री मिलाके

पिलानेसे रूक्ष कास मिटताहै । (२९) पत्तोंके स्वरसमें शंखका चूर्ण मिलाके लेप करनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटतीहै । (३०) कोमल पत्ते और हलदीको गोमूत्रके साथ पीसके ३ दिन लेप करनेसे पामा और खुजली मिटतीहै । (३१) पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै । (३२) नीमगिलोय और इसके पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाके चटानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै । (३३) इसके रसमें मधु मिलाके चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै । (३४) इसके पत्तोंके स्वरसमें मिश्री और मधु मिलाके चटानेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै । (३५) अडूसा, मुनक्का और मिश्रीका क्वाथ बनाके पिलाने से रूक्ष कास मिटताहै । (३६) इसके स्वरसमें तालीसपत्रका चूर्ण और मधु मिलाके पिलानेसे स्वरभग मिटताहै । (३७) इसके पत्तोंको पीस गर्भवती स्त्रीकी नाभि, नल और योनीपर लेप करनेसे बालक सुख से पैदा होजाताहै (३८) इसके पंचांगके रसमें मिश्री और मधु मिलाके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै । (३९) इसके पत्तोंका पुटपाक कर उनका रस निकाल मधु मिलाके पिलानेसे पित्तका कास और ज्वर मिटताहै । (४०) इसके पत्तोंको ओटाकर कुल्ले करनेसे मसूडोंकी पीड़ा मिटतीहै । (४१) इसके छोटे पेडके पचागको छायामें सुखा कपड छानकर नित्य एक तोलेभरकी फक्की देनेसे श्वास और कफ मिटताहै । (४२) इसका अवलेह बनाके सेवन करनेसे राजयक्ष्मा मिटताहै ।

संख्या (१६)

(सं०) अनसी, पिच्छला, उमा, क्षुमा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अलसी	अलसी	अळशी	अळशी(सी)	मसिना	अलसी	अलसि वित्तु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अलिसिविरै (६)	अलसी	बजुल्कत्तान		Linum-usitatissimum	Linseed

स्थान—अलसी हिन्दुस्थान में सब ओर खेतों मे बोई जाती है।

तेल—१०० तोले सफेद अलसीमें से ३५ तोले, लालमें से ३१ तोले और छोटे बीजोंमें से २६ तोले तेल निकलता है।

प्रयोग—(१) अलसीका पुल्टिस बांधनेसे फोड़े जल्दी पक जाते हैं। (२) अलसीके बीजों का क्वाथ पिलानेसे मूत्र नालीकी दाह मिटतीहै। (३) इसके बीजोंके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है। (४) अलसीके पुष्पोंको मधुमें चाटनेसे हृदयका बल बढताहै। (५) अलसीके बीजोंके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे वीर्य्य बढताहै। (६) अलसीके बीजोका तेल सारकहै। (७) आगसे जले हुएपर इसके तेलसे मिलाया हुआ लेप लगाया जाताहै। (८) इसके बीजोंको सेक, कूट मधुके साथ चटानेसे खासी मिटतीहै। (९) इसके तेलको कुछ गर्मकर कानमें डालने से कानकी पीड़ा मिटतीहै। (१०) इसके तेलकी ५ बूंद मूत्रनलिका (इन्द्रीकेछिद्र) में डालने से मूत्रकृच्छ्र (सोजाक) मिटताहै। (११) इसके तेलमें सोंठका चूर्ण डाल, गर्मकर मर्दन करनेसे पीठकी शूल मिटतीहै। (१२) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे खासी मिटतीहै। (१३) बीलगिरकी फकी देके ऊपर यह काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै। (१४) इसके तेलके मर्दन करनेसे शरीरके फोड़े फुन्सी मिटतेहैं। (१५) इसके बीजोंको खानेके काममें लानेसे अतिसार और खासी मिटतीहै। (१६) अलसीको प्याजके रसमें पकाके कानमें डालनेसे कानके भीतरकी सूजन मिट जातीहै। (१७) इसके बीजोका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है। (१८) अलसीकी भस्म बुरकानेसे गुदाका घाव भर जाताहै। (१९) अलसीको सेकके खातेहै। सफेद पुष्पों की अलसीके बीज खानेके काममें अधिक आतेहैं। इसकी खल चौपायोंके काममें आतीहै और कहीं २ इसकी खलको साफकर मनुष्य खानेके काममें लातेहै।

संख्या (१७)

(सं०) अतिविषा, भंगुरा, विषा, विश्वा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अ(प)तीस	अतीस	अतवम।	अतिविष	आतइच(च्)	अतीस	अतिवस

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अं०
अतिविष	अतिपर्जे			Aconitum heterophylum	

स्थान—अतीसके पौधे हिमालयमें कमाऊंसे हसोरा तक, शिमला और उसके आस पास और चुम्बाम बहुत होतेहैं ।

पहिचान- इसका पौधा एकसे तीन फुट तक ऊंचा होताहै । उसकी डंडी सीधी और पत्तेदार होतीहै, उसीमें या जड़से इसके शाखें लगती है इसके पत्ते दोसे चार इंच चौड़े और नोकदार होतेहै वे कुछ मोटे, चमकीले और ऊपरसे हरे और नीचेसे पीले रंगके होतेहैं । इसके पुष्प बहुत लगतेहैं वे एक या डेढ इंच लम्बे चमकदार नीले या पीले कुछ हरे रंगके बैंजनी धारीवाले होतेहैं । उसके चिकने छिलकेके नोंकदार बीज लगतेहैं । इसके नीचे जो डेढ दो इंच लम्बा और प्रायः आध इंच मोटा कंद निकलताहै उसको अतीस कहतेहैं उसका आकार हाथीकी सूंडके सदृश होताहै, जो ऊपर से मोटा और नीचेकी ओर पतला होता चला आताहै यह बाहिरसे खाखी और भीतरसे सफेद रंगका होताहै । इस का स्वाद कषैला होताहै ।

प्रयोग—(१) अतीसको लोहसार और सोंठके साथ देनेसे ज्वरके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै । (२) इसको शक्कर और दूधके साथ देनेसे पुरुषार्थ बढताहै । (३) ज्वरके वेगको रोकनेके लिये इसका १० से १५ रती तक चूर्ण तीन २ चार २ घंटोंके अंतरसे तीन चार वेर देना चाहिये । (४) चढेहुए ज्वरमें इसके चूर्णकी फकी देनेसे पसीना आके ज्वर उतर जाताहै । (५) पुराना अतिसार और आमातिसार मिटानेके लिये इसके दो मासे चूर्णकी फकी

दे आठ पहर भीगीहुई दो मासे सोंठको पीसके पिला देना चाहिये। जबतक अतिसार नहीं मिटे तबतक नित्य देना चाहिये। (६) इसके ५ रती चूर्णकी फकी देनेसे ज्वरकी गर्मी कम हो जातीहै। (७) इससे वमन और हृल्लास नहीं होताहै। (८) इसका चूर्ण २ मासेसे, ४ मासे तक देनेसे, तुरत फैलनेवाला ज्वर छुट जाताहै। (९) शरीरकी निर्बलता मिटानेके लिये गोली अतीसका सेवन कराना चाहिये। (१०) इसके चूर्णकी वायविडंगके साथ फंकी देनेसे बच्चोंके पेटके कीड़े मरजातेहैं या बाहिर निकल जाते हैं। (११) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे खासी मिटतीहै। (१२) अतीस और पोखरमूलके चूर्णको मधुमें मिलाके चटानेसे श्वास मिटताहै। (१३) इसके चूर्णको सोंठ या पीपलके साथ मधुमें चटानेसे पाचनशक्ति बढतीहै। (१४) ज्वर छुडानेके लिये इसके ५ रती चूर्णमें १॥ रती हीराकसीस मिलाके देना चाहिये। (१५) इलायची छोटी और वंशलोचनके साथ इसके १। मासेसे २॥ मासे तक चूर्णकी फकी देनेसे बल बढताहै। (१६) विषमज्वर छुडानेके लिये इसके एक मासे चूर्णमें आध रती कुनैन मिलाके इतनी २ मात्रा दिनमें तीन वेर देना चाहिये। (१७) एक तोले अतीस और १॥ रती संखियेको पीसके उसमेंसे चार २ रतीकी मात्रा दिनमें तीनचार वेर देनेसे बार २ आनेवाला ज्वर छूटताहै। (१८) दूषित जल, वायु आदिसे पैदाहुए ज्वरको रोकनेकेलिये इसके चूर्णकी पांच २ रती की मात्रा दिनमें तीनचार बेर देनाचाहिये। (१९) इसके चूर्णकी फकी देके ऊपर चिरायतेका अर्क पिलानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं। (२०) अतीसके दो मासे चूर्णको मुरब्बेकी हरड़पर लपेटके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै। (२१) नागकेशर और इसके चूर्णकी फकी देनेसे वमन बंध होतीहै। (२२) अतीस और कुडाछालके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे पुराना अतिसार और रक्तपित्त मिटताहै। (२३) एक मासेसे एक तोले तक अतीस पानीमें पीसके बलानुसार देनेसे अतिसार मिटताहै।

इसके काथकी अपेक्षा इसके चूर्णमें ज्वरनाशक शक्ति अधिकहै इसमें कोई प्रकारका विष नहींहै इसलिये इसकी मात्रा न्यूनाधिक भी दीजावे तो उससे कोई भारी उपद्रव नहीं होताहै॥ इसकी मात्रा पौने चार मासेसे पौने १०

मासे तक दिन भरमें देनेसे कोई विघ्न नहीं होताहै यह मात्रा जवान मनुष्यके लियेहै, इसीसे बच्चेको देनेके लिये अनुमान करलेना चाहिये।

संख्या (१८)

(सं०) अत्यम्लपर्णी, करण्डुला, वल्लिसूरणा, वनस्था।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रामचिणा	रामचना	खाटखटुवा	आंबटवेल	कुडचडचेनि		मंडलमारी

द्राविड़ी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	हेगोलि			Vitis pentaphylla	

स्थान–रामचिणेकी वेल हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें प्रायः सब ठौर होती है ॥

परिचान–यह एक प्रकारकी वेल होतीहै जो बहुधा थुहरपर फैला करती है इसके तीन २ पत्ते लगतेहैं वे कटेहुए कंगूरेदार किनारेके होतेहै। इसकी जड मे अनुमान ६ इंच लम्बा कंद निकलताहै इस कंदके ऊपरसे तन्तु निकलके पृथ्वीके भीतरके भीतर एक, दो हाथ लम्बा फैलकर उसके नीचे वैसाही कन्द लगता है इसी भांति ठौर २ आठ दस कन्द लग जातेहैं। इसके कुछ हरे सफेद छोटे पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं और गोंदी जितने २ बड़े हरे फलोंके गुच्छे लगतेहै वे पकनेपर वैंजनी रंगके हो जातेहैं इसके फलमें दोचार बीज निकलतेहैं।

फूलने फलनेका समय–यह वर्षा ऋतुमें फलती फूलती है ॥

प्रयोग—(१) रामचने बहुत खट्टे और संकोचक होते है। (२) इसके कंदको घिसकर लगानेसे विच्छूका विष उतरताहै। (३) इसके कदका पुल्टिस बांधनेसे फोडे जल्दी पकतेहैं। (४) इसके पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसके लगानेसे फुन्सियां मिटतीहैं। (५) जूडेसे जो बैलोंकी गर्दनपर

घाव पड़जातेहैं उनपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधाजाता है। (६) यह चरपरी, खट्टी और अग्निदीप्त करनेवालीहै और प्लीह, शूल, वात, अरुचि, गुल्म, कफ और खांसीको मिटातीहै। (७) इसके फलोंका शाक बनाके खानेसे अतिसार मिटताहै ॥

इसके फलोंमें से एकप्रकारका रंग निकाला जाताहै ॥

———०-० ०———

संख्या (१९)

(सं०) अनंनास, कौतुक, आम, धरवती ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अननास	अनन्नास	अननसा	अनानस	अनामसा		अनास पंडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अनाशपशम	अनानसूहन्नु			Ananas sativa	Pine apple

स्थान—यह हिन्दुस्थानके दक्षिण और पूर्वी प्रान्तोंमें बहुत पैदा होताहै। यह हिन्दुस्थानमें पहिले नहीं होताथा, परन्तु अमेरिकासे लाया गयाहै।

पहिचान—अनन्नासके पत्ते केवड़ेके पत्तों जैसे होतेहैं, पत्तोंके कांटे होते हैं। जड़ और पत्तोंके बीचके भागमें फल लगताहै, फलके ऊपर कटेहुए पत्तोंके आकारके छिलके होतेहैं, फलका रंग पीला या कुछ ललाई लिये होताहै। इसकी जड़ घीकुमारकी जड़ जैसी होतीहै। इसके कच्चे फलका स्वाद खट्टा, और पकेहुएका कुछ खटाई लियेहुए मीठा होताहै ॥

तैल—इसमेंसे एकप्रकारका तैल निकलताहै।

प्रयोग—(१) पत्तोंका रस पिलानेसे आंतोंके कीडे मरतेहैं। (२) पत्तोंके रसको शकरके साथ देनेसे हिचकी बन्द होतीहै। (३) इसके फलका

रस सीतादरोग (मसोड़ों) को मिटाताहै । (४) फलके रसको पिचकारीसे त्वचामें प्रवेश करनेसे विष जैसा प्रभाव पैदा होताहै । (५) फलके रसको पीनेसे पित्तकी वृद्धि होतीहै । (६) कच्चे फलको खिलानेसे स्त्रियोंकी छोड़ मिटजातीहै । (७) पक्केफलका रस पिलानेसे ज्वरमें उत्पन्नहुई पेटकी दाह मिटतीहै । (८) पक्के फलका रस पीनेसे पसीना आताहै । (९) मिश्री मिलाके पीनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै और चित्त प्रसन्न होजाताहै । (१०) फलको अतिशय काममें लानेसे गर्भाशयका बहुत संकोच होताहै । (११) बन्धहुए मासिक धर्मको फिर प्रवर्त्त करनेके लिये पके फलको लगातार खिलाते रहना चाहिये । (१२) इसके फलको भूनकर खानेसे उसका जहरीला असर मिट जाताहै । (१३) फलका मुरब्बा पौष्टिक और बलवर्द्धकहै । (१४) पके फलका रस कामला रोगमें हितकारीहै । (१५) ताजे फलोंके टुकड़ोंपर नमक या शक्कर लगाकर खाना चाहिये । (१६) इसके पत्तोंके सफेद भागके ताजे रसको शक्करके साथ देनेसे विरेच लगताहै और कीड़े मरतेहैं । (१७) विना समय जो मासिक धर्म होना बन्ध होजाताहै उसको फिर उत्पन्न करनेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये । (१८) इसके एकभाग रसमें दो भाग बूरा मिला शरबत बनाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै ।

संख्या (२०)

(सं०) अपराजिता, अश्वखुरा, अद्रिकर्णी, गिरिकर्णी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोयलीका बीज	नीलीकोयल	गरणी	गोकर्णी	अपराजिता	कोयल	दिंटेनविंतु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अं०
करप्पुका-कट्टानविरै	कटलेबल्लि	माजरियून	अशखीस	Clitorea Ternatea	Mugerin

स्थान—इसकी वेल हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर पैदा होतीहै ।

पहिचान—यह वेल, श्वेत और नीले फूलोंके भेदसे दो प्रकारकी होतीहै और नीले फूलोंकी वेलभी दो प्रकारकी होतीहै, एकके इकहरा और दूसरीके दुहेरा फूल लगतेहैं अर्थात् फूलमें फूल होताहै । इसके फलियां लगतीहैं । जिस वेलके नीले फूल लगतेहै उसकी फलियोंमेंसे उडदकी बराबर काले बीज निकलतेहैं उनके अंकुरकी ठौरके छिलकेका रंग सफेद और दोनों सिरे बिलकुल चपटे होते हैं । इसकी एक सीकपर सात पत्ते होतेहै । जिसके श्वेत पुष्प लगतेहैं उसके बीज, भूरे, धब्बेदार (छाटणेदार) रंगके, और स्वादमें कडवे और तेलिया होते हैं। ताजी जड़ सफेद, चूड़ीउतार और गिरदार होतीहै ।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीनेही पुष्प और फल लगते रहते हैं ।

इसके बीज रंगतके काममें आतेहै । बीज वेलपरही सूखेहुए लेना चाहिये क्योंकि पहिले तोड़ेहुए बीजोंमें गुण बहुत कम होजाताहै । इसके बीजोंकी मात्रा १५ से ३० रतीतक और जडके चूर्णकी ४ से ८ मासे तकहै ।

प्रयोग—(१) इसकी जड बहुत रेचकहै । (२) इसकीजड को दूसरी रेचक और मूत्रजनक ओषधियोंके साथ देनेसे बढीहुई तिल्ली और जलंधर आदि रोग मिटतेहैं (३) इसके सतकी २॥ से ५ रती मात्रा देनेसे अच्छा विरेचन लगजाताहै । (४) जडके प्रयोगसे मूत्राशयकी दाह मिटतीहै । (५) इसके ५ या ६ मासे बीजोंको लवण और सोंठके साथ पीसकर देनेसे विरेचन लग जाताहै । (६) बीजोंके रसको नाकमें टपकानेसे आधाशीशी मिटतीहै । (७) पत्तों का क्वाथ पिलानेसे फफोले मिटतेहैं । (८) बीज ठण्डे और विषघ्नहै । (९) इसकी जड वामकहै । (१०) जडके प्रयोगसे गठिया मिटतीहै । (११) बीज दृष्टिकी निर्बलता गले और त्वचाके रोग गांठ और कफके रोगोंको मिटातेहैं । (१२) पत्तोंके रसमें अद्रकका रस मिलाके देनेसे वह ज्वर मिटताहै कि जिसमें फोड़े फुन्सियां और पसीने बहुत होतेहै । (१३) ताजीजड या इसकी छालके देनेसे फुफ्फुस (फैफडे) के रोग मिटतेहै ।

(१४) २ वर्षके बच्चोंको एक जड, ३ से ६ वर्ष वालेको २ जड़ और जवानको ४–५ जड़ देनी चाहिये। ताजी जड़को देनेसे उल्टी और दूस्त होताहै। (१५) जडकी अधिक मात्रा जवानको देनेसे मूत्रकृछ्र और बार २ मूत्रका होना मिटताहै। (१६) यह चरपराट मिटानेवाली और मूत्रजनक है। (१७) पत्तोंके-रसमें-नमक मिलाके कानके चारों तरफ लेप करनेसे कानकी पीड़ा और आसपास की गाठों की सूजन उतर जातीहै। (१८) इसकी जड़से वमन करानेसे श्वासनलिकाओंकी पित्तशोथ मिटतीहै। (१९) इसका सत देनेसे पेट में काट और बार २ दस्तकी शंका होती है। (२०) बीजोंकी बहुत अधिकमात्रा देनेसे कीडे मरतेहैं। (२१) इसका सेवन करनेके समयमें रोगीका चित्त शांत नहीं रहताहै। (२२) बच्चोंके पेटके रोग मिटानेके लिये इसका प्रयोग करनाचाहिये। (२३) इसकी जड़ का काथ पिलानेसे विरेचन लगके गठिया मिटतीहै। (२४) ताजी जड़ या जड़की छालको ओटाके पिलानेसे बच्चोंके फुफ्फुसकी बीमारी मिटतीहै। (२५) कालीकोयलीकी जड़के प्रयोगसे सर्पका विष उतरता है। (२६) इसकी जड़के कल्कमें मधु घी और शक्कर मिलाके चटानेसे परिणाम शूल मिटतीहै। (२७) इसके बीज पीस चिलममें धरके धूम्रपान करनेसे हिचकी बन्द होतीहै। (२८) बीजोंको पीस गर्मकर लेप करनेसे अंडकोष की सूजन विखर जातीहै। (२९) इसके बीज और जड़को-जलकी साथ पीसके नस्य देनेसे आधाशीशी मिटतीहै। (३०) इसकी जडको कानके बांधनेसे आधाशीशी मिटतीहै। (३१) श्वेतअपराजिताको छालीके दूधमें पीस छान मधु मिलाके पिलानेसे गिरताहुआ गर्भ स्तम्भन होजाताहै। (३२) इसकी जडको तेल या छाछमें पीस लेप करनेसे स्नायुपीडा मिटती है। (३३) कांजीके साथ इसको पीसके लेप करनेसे फोड़े फूटकर मिटजातेहै। (३४) श्वेत कोयलकी जडको पीसके घृतके साथ सेवन करनेसे गलगंड मिटताहै। (३५) इसकी जडके चूर्णको तक्रके साथ पीनेसे कामलारोग मिटताहै। (३६) इसके पत्ताके रसकी नस्य देनेसे एकांतरा ज्वर छूटताहै। (३७) लाल सूतके ७ धागोंसे इसकी जडको कमरमें बांधनेसे तिजारीका ज्वर छूट जाताहै। (३८) इसकी जडकी भस्मको मक्खनके साथ लेप करनेसे मुखकी छाया मिटतीहै।

संख्या (२१)

(सं०) अपामार्गः, शैखरिकः, धामार्गवः, मयूरकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आधीझाड़ो	औंगा लटजीरा	अधेडो	आघाडा	आपाङ्	अपुठकडा	उत्तरेनु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नायुरवि	उत्तरणे उत्राणि	अटकूमाह	खारेवाज्यू	Achyranthus aspera	(1) The prickly chaff flower (2) Rough chaff Tree

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब जंगलोंमें पैदा होताहै ।

पहिचान—यह दो मकारका होताहै परन्तु कोई ग्रन्थकार ३ मकारका भी लिखतेहै । यह गजभर ऊंचा होताहै । इसके पत्ते गोल और नोकदार होते हैं उनके पीछे सफेद रोम होतेहैं । इसकी डंडी और शाखे गोल नहीं होतीहैं । इसके कांटेदार औंधी थैलियोंकी एक फुट लम्बी मंजरियां लगतीहैं। उन थैलियोंमें बीज रहतेहै। लाल आंधीझाड़के पत्तोंपर लाल धब्बे और डंडीपर भी कुछ ललाई होतीहै । इसके पत्ते सफेदकी अपेक्षा कुछ मोटे होतेहैं ॥

फूलने फलनेका समय—यह वर्षा ऋतुमें पैदा होताहै और तबही फलता फूलताहै । इसके फल पकजानेके पीछे यह सूख जाताहै ॥

इसकी भस्म रंगतके काममें आतीहै ॥

प्रयोग—(१) इसके पंचांगका क्वाथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै । (२) इसकी जड़के क्वाथको पिलानेसे प्रसव जल्दी होजाताहै । (३) इसकी मंजरी को गर्भाशयके मुंहपर छुआनेसे भी प्रसव तुरंत होजाताहै । (४) इसके पंचांगका क्वाथ सारकहै और प्रवाह बढाताहै ।(५) ढीली पड़ी हुई सर्वांगशोथ और जलंधरको मिटानेके लिये इन दोनोंको मिटानेवाली दूसरी औषधियों में इसको मिलाके देना चाहिये । (६) सूखे पत्तोंका चिलममें धरकर पीनेसे श्वास मिटताहै । (७) इसके २ रती चूर्णकी फकी देनेसे शोथ उतरतीहै ।

(८) यह अर्श और फुन्सियोंको मिटाता है। (९) इसके पत्ते और बीज वामक हैं। (१०) बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे या पत्तोंके रसको लगानेसे कुत्ते, सर्प, और विच्छू आदिका विष उतरताहै, (११) बीज और पत्तोंको घोटकर पिलानेसे छातीकी पीड़ा मिटतीहै। (१२) सूखे पत्तोंके चूर्णकी फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै। (१३) बच्चोंके पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके चूर्णमें सेकीहुई हींग मिलाके देना चाहिये। (१४) इसके पंचांगका रस गर्भाशयके मुंहपर लगानेसे प्रसववेदना बढ़तीहै। (१५) अपामार्गके सतको सफेद घूंघचीके सतके साथ देनेसे मूत्रकृच्छ्र और जलंधर मिटताहै। (१६) इसके क्षारको हरतालके साथ मिलाकर लगानेसे आटन और क्षत मिटतेहैं। (१७) इसके पंचागकी राखको तिल्लीके तेलमें ओटा छानकर कान में डालनेसे कानकी पीडा मिटतीहै। (१८) इसकी मंजरीके रसको विच्छूके दंशपर लगानेसे उसका विष उतरताहै। (१९) इसके बीजोंको पीसकर सूंघनेसे नाकमें से पानी टपककर मस्तकपीडा मिटतीहै। (२०) इसकी मंजरीके रसको दांतोंपर मलनेसे दांत दृढ होजातेहैं। (२१) इसके पत्तोंको कालीमिरच और लहसन के साथ घोट ५ गोली बनाके देनेसे सर्दीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै। (२२) कोमल पत्तोंको मिश्रीके साथ घोट, मक्खनमें मिला, अग्निपर तपा, गाढा करके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै। (२३) इसके बीजोंके खानेसे भूक बन्द होतीहै। (२४) इसके ताजे पत्तोंके रसको धूपमें रखनेसे गाढा होनेपर उस में थोड़ासा अफीम मिलाकर टांकीपर लगानेसे उपदंश मिटताहै। (२५) भस्मकरोगको मिटानेके लिये इसके बीजोंकी कांजी बनाकर खिलाना चाहिये। (२६) इसको पानीमें पीसकर लगानेसे भिड और मधुमक्खी आदि कीड़ोंका विष उतरताहै। (२७) इसकी जड शाखें और पत्ते २॥ तोले ले ५ छटांक पानीमें १५ मिनट तक बन्द बरतनमें ओटा छानकर १॥ तोले से ५ तोलेतक की मात्रा दिनमें दोबेर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके शोथ उतरतीहै। (२८) इसकी २॥ रत्ती जड़की छालको २॥ रत्ती कालीमिरचके साथ देनेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै। (२९) इसके बीजोंके चूर्ण और गाजरके बीजोंके चूर्णको ओटाकर गर्भवती स्त्रीको पिलानेसे सुखसे बालक पैदा होजाता

है (३०) इसके क्षारको मधुके साथ चटानेसे कफ और श्वास मिटताहै । (३१) इसके क्षारकी अजवायणके साथ फक्की देनेसे उदरशूल मिटताहै । (३२) यदि पीड़ा चलती रहे और बच्चा गर्भाशयसे बाहिर न निकले तो इसकी एक तोले जडको दो तोले पुराने गुड़के साथ ओटाकर पिलानेसे बच्चा तुरंत बाहिर निकल आताहै । (३३) इसकी जड़के चूर्ण को मधुके साथ चटानेसे कुत्तेका विष उतरताहै । (३४) इसकी जडको जलके साथ पीसकर पीनेसे विसूचिका मिटतीहै । (३५) इसकी जड़को छाछके साथ पीसके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै । (३६) जडको स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाताहै । (३७) गर्भवती स्त्रीकी नाभि बस्ति और भगपर जडका लेप करनेसे सुखसे बच्चा हो जाताहै, केवल नाभि और भगपर इसका लेप करनेसे भी यह प्रयोजन सिद्ध होजाताहै । (३८) इसकी जड़का टुकडा योनीमें रखनेसे योनीशूल और मासिकधर्मकी रुकावट मिटतीहै ।(३९) कन्याके कातेहुए सूतसे इसकी जड़को रविवार या पुष्यनक्षत्रके दिन बांधनेसे तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर छूटताहै । (४०) इसकी जडको कन्याके काते हुए सूतसे चोटीमें बांधनेसे इकांतरा ज्वर छूटताहै । (४१) इसकी जड़को लाल रंगके ७ धागोंसे रविवारके दिन कमरमें बांधनेसे तृतीयक ज्वर छूटताहै । (४२) इसके बीजोंके कल्कको चावलोंके पानीके साथ पीनेसे रक्तार्श मिटताहै । (४३) इसके बीजोंको पीस दूधके साथ खीर बनाकर खानेसे भस्मक रोग मिटताहै । (४४) बादीके नासूरको चीरके उसपर इसके बीज और तिलोंका लेप करना चाहिये । (४५) इसके पत्तोंको जलमें पीस उसमें कपड़ा भिगो बत्ती बनाके नाडीव्रणमें रखनेसे या उनका रस टपकानेसे नाड़ीव्रण भर जाताहै । (४६) इसके पत्ते और कालीमिरच बराबर ले घोड़ेकी लालके साथ पीसके अंजन करनेसे विसूचिका मिटतीहै । (४७) इसके खारके पानीसे सिद्ध किया हुआ तिलोंका तेल कानमें डालनेसे बहिरापन मिटताहै । (४८) इसके खारकी मात्रा एक रतीसे एक मासेतककी है परन्तु आवश्यकताके अनुसार अधिकभी बढाई जा सकतीहै । (४९) इसकी जडके रसकी २-३ दिन नस्य लेनेसे नारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै ।

संख्या (२२)

(सं०) अभ्रक बहुपत्रं, व्योमं, निर्मलं।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
भोडल	अबरक (ख)	अभ्रक	अभ्रक	अभ्र	अभ्रक अभ्रख	अभ्रकमु

द्राविडी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अभ्रक	अभ्रक	तलक	अबरक (तलक)	Mica	Talc

स्थान—अभ्रक हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमेंसे निकलताहै॥

पहिच्यान—इसके कई पड़त जुड़े रहतेहैं उनको जुदे २ खोलनेसे पतले कागजके जैसे पत्र अलग २ होजातेहैं और उनमें काचकी भांति पार दीखने लग जाताहै। इन पत्रोंकी चौडाई और लम्बाई डेढ फुटतक होतीहै॥

वैद्यकके कई ग्रन्थोंमें इसको चार और कइयोंमें आठ प्रकारका लिखाहै। और आधुनिक खनिजविद्या जाननेवालोंने भी इसको कई प्रकारका लिखाहै परन्तु वे लोग इसके रोगनाशक गुणोंको नहीं जानतेहै।

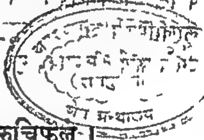
यह वैद्यकमें उपरसोंमें गिना जाताहै। इसकी भस्म करनेके पहिले इसको कई रीतियोंसे शुद्ध करते है। भस्म करनेके लिये केवल काले रंगका अभ्रक लेना चाहिये, क्योंकि दूसरे रंगके अभ्रकमें इतनी शक्ति नहीं है।

शुद्ध और भस्म करनेकी रीति—अभ्रकको कोयलोंमें डालकर दूध, चौलाईके रस और कांजीमें पांच २, सात २ बेर बुझा उसके पत्र अलग२कर गरम पानीसे धो साफकर महीन चूर्ण बना भस्म करनेके लिये आकडेके दूधमें खरल कर टिकिया बांध सुखा सराव संपुटमें कपड मिट्टीसे बन्धकर गजपुटकी आंचमें फूक देना चाहिये। स्वांग शीतल होनेके पीछे निकालकर अर्कदुग्धमें फिर खरलकर सुखा, संपुटमें धरकर उक्त रीतिसे ५—७ आंच देना चाहिये इसी भांति

बड़की जटाके काथमें खरल कर २ के ५--७ आंच देवें, हरेक बार दोदो दिन खरल करके आंच देना चाहिये, यहां तककि इसकी भस्मकी चमक बिलकुल जाती रहे. ऐसे भस्म किया हुआ अभ्रक लाल या ईटके रंगका होजाताहै । ऐसी भस्मको औषधिक प्रयोगमें लाना चाहिये ।

प्रयोग--(१) अभ्रकभस्मको लवंग और मधुके साथ चटानेसे वीर्य्य बढताहै । (२) इसकी मात्रा लेके ऊपर मिश्री मिला कच्चा दूध पीनेसे पित्तके विकार मिटतेहै । (३) पीपल और मधुके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै । (४) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै । (५) मिश्री और जोखारको पानीमें मिलाके उसपर अभ्रकभस्म बुरकाके पिलानेसे मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र मिटतेहै । (६) ६ मासेसे तोलेभर खमीरासंदलमें एक रतीसे ४ रतीतक अभ्रकभस्म मिलाके चटानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै । (७) इसके और मिश्रीके चूर्णमें चन्दनके तेलकी २० बूंद या गंधविरोजके तेलकी २० बूंद या दोनोंकी दस १ बूंद मिलाके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै । (८) अदरकके रसको गर्मकर ठण्डा होनेपर अभ्रकभस्म और मधु मिलाके चटानेसे श्वास और कास मिटताहै । (९) अडूसेके रस और मधुके साथ चटानेसे पित्तकी खांसी मिटतीहै । (१०) कटेरीके काथ के साथ देनेसे कफका कास मिटताहै । (११) लवंग और मधुके साथ चटानेसे वादीका कास मिटताहै । (१२) अभ्रक और सुवर्णभस्मको मधुके साथ चटानेसे राजयक्ष्मा और शोषरोग मिटताहै । (१३) रक्तपित्त मिटानेके लिये इसको छोटी इलायची और मिश्री के साथ या अडूसेके रस तथा काथके साथ या गिलोयके स्वरस तथा काथके साथ देना चाहिये । (१४) इसको और हरडकी छालको गुडमें मिलाकर गोली बनाके देनेसे या शतावर और मिश्रीके साथ फंकी देनेसे वातरक्त मिटताहै । (१५) इसको मधु, घृत और त्रिफलाके साथ देनेसे नेत्रविकार मिटतेहैं । (१६) शुद्ध शिलाजीत पीपल और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै । (१७) शूरणकंदको भूभल में सेक पीस सुखाके उसमें अभ्रकभस्म और गुड मिला गोली बनाके देनेसे वातार्श मिटताहै । (१८) शुद्ध भिलावे १ भाग, काले तिल १ भाग, साल उतार गुड २ भाग, अभ्रकभस्म १६ वां भाग मिला गोलियां

बना १ मासे से ४ मासे तक देनेसे पित्तार्श मिटताहै। (१९) अद्रकके काथ के साथ इसको देनेसे कफार्श मिटताहै। (२०) इसको काले तिल और मक्खन के साथ चटानेसे रक्तार्श मिटताहै। (२१) सोंठ के साथ फक्की देनेसे वातातिसार मिटताहै। (२२) बेल और मिश्रीके चूर्णके साथ या नागरमोथेके चूर्णके साथ फक्की देनेसे रक्तातिसार मिटता है। (२३) लोद और मिश्रीके चूर्णके साथ, या बीलगिर और मिश्रीके साथ फक्की देनेसे पित्तातिसार मिटताहै। (२४) अतीसके साथ या सोंठ मिरच और पीपलके साथ इसका सेवन करानेसे कफातिसार मिट जाताहै। (२५) मुरब्बे की हरडे या सौंफ और गुलकंदके काथके साथ देनेसे आमातिसार मिटताहै।



संख्या (२३)

(सं०) अमृतफलं, अमृताह्वं, रुचिफलं।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नासपाती	नासपाती		नासपात(ता)	नासपाति	नासपाती	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Pyrus Communis	pear

स्थान—इसके वृक्ष काश्मीर और हिमालयके उत्तर पश्चिम भागोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका कांटेदार छोटा वृक्ष होताहै। यह जंगली और बोये हुएके भेदसे दो प्रकारका होताहै, पहाड़ी (जंगली) का फल कठोर और स्वादहीन होताहै, इसके श्वेत पुष्प लगते हैं।

फूलने फलनेका समय—इसके फाल्गुन और चैत्रमें पुष्प लगतेहैं और वर्षाऋतुमें फल लगते हैं॥

प्रयोग—(१) इसका फल मीठा, कुछ खट्टा और पचनेमें भारीहै। (२) वायु और अरुचीको मिटाताहै। (३) वीर्यको बढाताहै। (४) इसके शर्वतमें बीलगिर या अतीस मिलाके चटानेसे रक्तातिसार मिटताहै। (५) रक्तकी वमन बंद करनेके लिये बेरकी मींजी बुरकाके चटाना चाहिये। (६) नासपातीके स्वरसमें शकर डालके पिलानेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै। (७) इसके मुरब्बेमें नागकेशर मिलाके खिलानेसे रक्तार्शका रुधिर बंध होताहै। (८) नासपातीका अधिक खाना हृदयको हानिकारकहै। (९) इसके उपद्रव को मिटानेके लिये अगरका सेवन कराना चाहिये। (१०) इसके रसमें पीपल बुरकाके पिलानेसे पित्तकी मंदाग्नि मिटतीहै। (११) इसमें सेंधा नोंन कालीमिरच और सेकाहुआ जीरा बुरकाके चाटनेसे अरुचि मिटतीहै। (१२) इसके फलोंका शाक, मुरब्बा और रसका शरबत बनाया जाताहै॥

संख्या (२४)

अम्बर।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अम्बर	अम्बर					

द्राविडी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		अम्बर	अम्बर	Ambergris	

स्थान—हिन्दुस्थान, आफ्रिका और ब्रजीलके आसपासके समुद्रमें इनके कनारोंके पास तैरता हुआ मिलताहै।

पहिचान—सफेदी लिये हुए कुछ पीले रंगका छींटेदार अंबर उत्तम होताहै, यह चरपरा स्निग्ध और उत्तम सुगंधवाला होताहै। हरा या काले रंगका अच्छा नही होता।

प्रयोग—(१) इसके सेवनसे मानसिक शक्तियोंका बल बढताहै। (२) पुरुषार्थ बढानेवाले पाक और अवलेहोंमें यह बहुधा मिलाया जाताहै । (३) इसकी मात्रा एक रतीसे चार रती तककीहै । (४) इसको पानमें रखकर खिलानेसे कफके रोग मिटतेहै। (५) सोनेके वरक पिसेहुए मोती और अम्बर को मधुमें मिलाकर चटानेसे पुरुषार्थ बढताहै । (६) लौंग, जायफल और अम्बरके सेवनसे बादीके रोग मिटतेहैं । इसको वातनाशक तेलमें मिलानेसे उसकी वातनाशक शक्ति बढ जातीहै । (७) इसको घृतके साथ चटानेसे विषका नाश होताहै । (८) ब्राह्मी और शंखावलीके साथ इसको मधुमें मिलाकर चाटनेसे उन्माद मिटताहै और स्मरणशक्ति बढजातीहै । (९) कस्तूरी, केशर और शुद्ध हिंगलूके साथ इसको पानके रसमें खरलकर गोलियां बनाके खिलानेसे शीत और पसीना मिटताहै । (१०) इसके उपद्रवोंको मिटानेके लिये धनियें की पंजीरी खिलाना चाहिये । (११) कपूरको सुंघानेसे इसका मद उतरताहै । (१२) वृद्धावस्थामें इसका सेवन बहुत लाभकारीहै । (१३) आंतोंके रोगवालेको इसका सेवन नहीं करना चाहिये ।

संख्या (२५)

(सं०) अम्लिका, चिंचा, तिन्तिड़ीका, सुक्ता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आमली	इम्ली	आमली	चिंच	तेंतुल	इम्ली	चिंता चिंतपण्डु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अं०
पुळि	हुणिशेहण्णु	तमरहिंदी		Tamarindus indica 1 Officinalis	Tamarind

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके जंगल और बागोंमें सब ठौर होतेहैं ।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होतीहै एकका बीज छोटा और लालरंगका

होताहै यह गुजरातमें होतीहै। और दूसरीके बीज कुछ बड़े होतेहैं यह सब ठौर होतीहै। इसकी ऊंचाई प्रायः ८० फुटतक और पेड़की गुलाई २५ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते २ इंच लम्बे, चौथाई इंच चौड़े, उनकी लम्बाईके दोनों ओर के कनारे गोल और पतझड़में नहीं गिरतेहैं। इसके पीले रंगके लाल २ धारीदार पुष्प लगतेहैं। इसका फल चपटा और ८ इंचतक लम्बा होताहै। कच्चे फलका स्वाद खट्टा और रंग भूरा होताहै पकनेपर खटमीठा होजाताहै इसमेंसे जामुनी रंगके बीज निकलतेहैं।

फूलने फलनेका समय—यह वर्षाऋतुमें फूलताहै भादवेमें इसके फल लगतेहैं और वसन्तऋतुमें पकतेहैं।

गोंद—इसके छालके भूरे रंगका गोंद लगता है।

इसके पत्तोंमें से लाल रंग निकाला जाताहै।

तेल—इसके १०० तोले बीजोंमेंसे २० तोले तेल निकलताहै वह गाढा और कहरुवे के रंग जैसा होताहै उसमें गंध और स्वाद नहीं होताहै। यह तेल सूखता नहीं है, इसके गीले बीजोंमेंसे पांचवां भाग तेल निकलताहै सूखे बीजोंमें से इतना नहीं निकलता॥

प्रयोग—(१) इसका फल पाचक, चित्तप्रसन्न करनेवाला और वातघ्न है। (२) इसके फलके सेवनसे विगड़े हुए पित्तसे पैदा हुए रोग मिटतेहैं। (३) शरीर की दाह और बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये इसका पकाहुआ फल खाना चाहिये। (४) यह धतूरे और मदिरा के नशेको कम करताहै। (५) इसके गूदेका लेपकरने से शोथ मिटतीहै। (६) कच्चे फलका गूदा शोषक है। (७) पकेहुए फलका गूदा सारक है। (८) यह पित्तकी वमन को रोकताहै। (९) इसके पानीसे कुल्ले और गरारा करनेसे गलेकी पीडा मिटतीहै। (१०) इसके बीज शोषक है। (११) इसके बीजोंका पुल्टिस बांधनेसे फुन्सियां मिटतीहै। (१२) इसके पत्तोंको पीस रस निकालके पित्तज्वरमें पिलातेहैं। (१३) मूत्रकी दाह मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये। (१४) पत्तोंका पुल्टिस बनाके शोथपर बांधनेसे उसकी

पीड़ा मिट जातीहै । (१५) पुष्पोंका पुल्टिस बाधनेसे आखकी सूजन उतरती है । (१६) पुष्पोंका रस पिलानेसे रक्तार्श मिटताहै । (१७) इसकी छाल शोषक और बलवर्द्धकहै । (१७) इसके फलके गूदेको पानीमें उबालकर शक्कर मिलाके पिलानेसे बचोंको रेच होताहै । (१८) दाह और पित्तविकार मिटानेके लिये इसके कोमल पत्ते और पुष्पोंका शाक बनाके खिलाना चाहिये । (१९) पत्तोंके क्वाथसे घावको धोनेसे बहुत दिनोंतक रहनेवाला व्रण मिट जाताहै । (२०) इसके बीजोंके छोटे २ टुकड़े कर रातभर पानीमें भिगो के खानेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै । (२१) पके हुए बीजके छिलके का चूर्ण ४ मासे ६ मासे जीरा और ६ मासा मिश्री इन सबको मिलाके तीन भाग करे एक भागको तीन २ घंटे बाद देनेसे पुराना आमातिसार मिटताहै (२२) इसकी छालकी भस्म पाचकहै । (२३) पत्तोंके रसमें ईंटी बुझाकर देनेसे आमातिसार मिटताहै । (२४) एक वर्षके पोधेकी जड और काली मिरच दोनों बराबर ले दहीके मठेके साथ पीस गोलियां बना दिनमें तीन बेर देनेसे कमसे कम दो जियादेसे जियादह २० और सरासरी ६ दिनमें आमातिसार मिट जाताहै । (२५) फलके गूदेको ठण्डे पानीमें पीस मुंडेहुए शिरपर लगाने से लूका असर और मूर्च्छा मिटतीहै, इसका शर्बत ठण्डा और सारक है । (२६) मिश्रीके साथ इसका शर्बत बनाके पिलानेसे हृदयकी दाह मिटतीहै । (२७) पकीहुई इमलीके गूदेको हाथ और पैरोंके तलवों पर मर्दन करनेसे लूका असर मिटता है (२८) पकी इमलीको पानीमें मल उस पानीमें कपड़ा भिगोके सिरकी तरफसे पैरोंतक शरीर पर फेर झड़का झड़का कर सात दफे फेरनेसे लूका असर मिटताहै । (२९) इसके गूदेके रसमें नोंन मिरच सेकाहुआ जीरा और शर्करा मिलाके पिलानेसे अथवा भोजनके साथमें खाने-से अरुचि मिटती है । (३०) इमलीके बीजोको जलमें भिगो उनके छिलके दूरकर सुरमे माफिक पीस दुगुनी मिश्री मिलाकर फक्की देके ऊपर दूध पिला-नेसे श्वेतप्रदर मिटताहै और वीर्य्य पुष्ट होताहै । (३१) इसके पत्तोंको पीस-कर लेप करनेसे नारूकी शोथ और जलन मिटतीहै । (३२) इसके पचांग के खारको मिश्रीके साथ देनेसे मंदाग्नि मिटतीहै । (३३) इसके छिलके

नीचे रहनेसे शरीरका स्वास्थ्य विगड़जाताहै । (३४) इस वृक्षके नीचे बहुत समयतक कपड़ा पड़ा रहनेसे गलजाताहै । (३५) वर्षा ऋतुमें इसकी छायामें रहना बहुत हानिकारकहै । (३६) इसके पत्ते कीड़े मारनेके काममें आतेहैं । (३७) छिलके दूरकिये हुए बीजोंके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै । (३८) इसके बीजोंके सवा तोले छिलके, ६ मासा जीरा और मीठा होजानेके लायक ताड़की शक्कर इन तीनोंको महीन पीस तीन भाग कर तीन २ चार २ घंटेके अंतरसे फक्की देनेसे पुराना आमातिसार मिटजाताहै। (३९) इमलीके बीजके लाल छिलके शान्तिकारक और थोडे ग्राहीहैं । (४०) इसके बीजोंको घिसके फुन्सियों पर लेप करतेहै । (४१) पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै । (४२) २॥ तोला इमली और २॥ तोला छिवारे सेरभर दूधमें ओटा छानके ज्वरवालेको पिलानेसे उसकी दाह और घबराहट मिटतीहै । (४३) पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे आमातिसार मिटताहै । (४४) औषधिके प्रयोगमें पुरानी इमली काममें लाना चाहिये । (४५) स्वाभाविक बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये १५–२० वर्षकी पुरानी इमलीका शर्बत बनाके पिलाना चाहिये । (४६) इमलीके पत्तोंके रसको थोड़ा गर्म करके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै । (४७) स्त्रियोंके दूध बढानेके लिये पुराने वृक्षका रस पिलाना चाहिये । (४८) कच्ची इमलीकी चटनी बनाई जातीहै । (४९) इसके बीज तीनचार दिन पानीमें भिगो, उनके काले छिलके दूर कर, पीसके बराबर चूग मिला, चने प्रमाण गोलियां बनाके दो गोली नित्य देनेसे प्रमेह मिटताहै और वीर्य पुष्ट होताहै । (५०) ६ मासे इमलीको २ सेर जलमें ओटा, आधा पानी रखकर उसमें तोलेभर गुलाब जल मिला छान के कुल्ले करनेसे कंठकी सूजन उतरतीहै । (५१) इसके बीजोंको पीसके भगमें मलनेसे संकोचन होताहै । (५२) इमलीका पानी पीनेसे उदरका बल और भूख बढतीहै और आंतोंके घाव मिटतेहै । (५३) पित्तकी छर्दी और गर्मीके ज्वर पर इमलीका शर्बत पिलाना चाहिये । (५४) इसके बीजोंकी १ से २ मासे तक भस्मको दहीके साथ चटानेसे रक्तार्श मिटताहै । (५५) इमलीको पानीमें भिगो मल छान थोड़ी शक्कर मिलाकर पीनेसे पित्तकी

मस्तकपीड़ा मिटतीहै । (५६) इमलीको पानीमें भिगो उस पानीके कुल्ले करनेसे पित्तका मुखपाक मिटताहै । (५७) इमलीके बीजोंको पानीमें भिगो उनके छिलके दूरकर पीस वत्ती पर लेपकर उस वत्तीको नासूरमें रखनेसे नासूर मिट जाताहै। (५८) इमलीकी छालके चूर्णको घीमें मिलाकर लगानेसे अग्निदग्धका क्षत मिटताहै । (५९) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे भिलावेके विषके उपद्रव मिटतेहैं। (६०) इसके बीजोंका पुलिस बांधनेसे फोडा पक जाताहै। (६१) दो तोले इमलीको रातभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उसके नितरे हुए पानीको छान उसमें थोडा बूरा मिलाकर ईसबगोलकी फक्की देके ऊपर पिलानेसे पित्तज्वर मिटतीहै । (६२) इमलीको नींबूके रसमें मसल छानके चटानेसे विसूचिका का शोष मिटताहै । (६३) इमलीके बीजोंकी मींगी और बावची दोनों बराबर ले पानीके साथ पीसके लकडीसे लगानेसे सफेद दाग मिटतेहैं ।(६४) इसके बीजोंको नींबूके रसमें पीसके लगानेसे दाद मिटताहै ।

संख्या (२६)

आरितमंजरी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	कुप्पी	वछिकाटो	खोखली	मुक्तजुरी		कुप्पिटाकु

द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कुप्पैमेनि	तुप्पकेरै.			Acalypha-indica A. spicata	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सडकोंके कनारे और बागोंमें सर्व ठौर होतेहैं।

पहिचान—इसका पेड १–२ फुट ऊंचा होताहै इसके बारह महीने पुष्प लगते रहतेहैं । बिल्लीको इसकी जड़ इतनी प्रियहै कि जितनी बालछड़ ।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते और लहसनका क्वाथ पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं, (२) बच्चोंके पेटके कीडे निकालनेके लिये इसके सूखे पत्तोंका चूर्ण देतेहैं, (३) बच्चोंके आमाशय और छातीमें जमे हुए गाढे कफको उलटी करा के निकालनेके लिये इसके पत्ते और कोमल डालियोंके स्वरसमें नीम के तेल की कुछ बूंदें मिलाके उनको जीभपर मलतेहैं । (४) इसका क्वाथ पिलानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै । (५) पत्तोंको पीस सादा नमक मिलाके मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै । (६) पत्तोंके स्वरसमें तेल मिलाके मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै । (७) इसकी जडके क्वाथसे विरेचन (जुल्लाब) लगताहै । (८) इसके पत्तोंका स्वरस बच्चोंको पिलानेसे तुरंत और विना उपद्रवसे उल्टी होतीहै (९) इसके प्रयोगसे न तो आंतोंमें विशेष गडबड होतीहै और न शरीरकी शक्ति घटतीहै परन्तु हृदयादिक यंत्रोंमेंसे दुष्ट रस बहने लगतेहैं । (१०) इसके सूखे पत्तोंके हिम या फांटमें तथा गीले वृक्षके सतमेंभी ये गुण बने रहतेहैं । (११) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे कर्णशूल मिटतीहै । (१२) उपदंशकी टांकियोंपर इसके पत्तोका पुल्टिस बांधनेसे लाभ होताहै । (१३) इसके पत्तोंकी टिकिया बनाके सर्पके दंशपर बांधना चाहिये । (१४) तीव्र उन्माद (पागलपन) के प्रारम्भमें इसका प्रयोग इसप्रकार किया जाताहै कि २॥ तोले ताजे स्वरसमें ३ रती सेंधा या सादा नमक गलाके प्रातःकाल दोनों नखथेडियोंमें डाल ठंडे पानीके फवारेसे स्नान करावे ऐसे लगातार ३ दिन तक करनेसे नाक टपने लगेगी और उससे मस्तकमें जमे हुए दुष्ट कफादिक निकलके पागलपन मिट जाताहै । (१५) ताजे पत्तोंको पीस बड़ी गोली बनाके गुदामें रखनेसे बच्चोंका आनाह मिटताहै (१६) कनखजूरेके काटनेसे जो दाह होतीहै उसको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस अथवा पत्ते पीसकर लगाना चाहिये (१७) ताजे पत्तोंके रसमें चूना मिलाके गाठियापर लेप करतेहैं (१८) पत्तोंके रसको दादपर लगाना गुणकारीहै । (१९) इनको नमकके साथ पीसके पिलानेसे अफारा मिटताहै (२०) मस्तकमें दुष्ट रसादिकके जम जानेसे जो पीड़ा होतीहै उसको मिटानेके लिये चौदहवा प्रयोग करना चाहिये अथवा पत्तोंके स्वरसमें रुई भिगोकर दोनों नखथोडियोंमें रखदेनेसे नाक टपकके

मस्तक शुद्ध होजाताहै। (२१) बिस्तरेपर लगातार लेटेरहनेसे टांकी होके उसमें जो कीडे पड़जातेहैं उनपर इसके पत्तोंके चूर्णको बुरकानेसे कीडे मर जातेहैं और उन-का घाव भर जाताहै। (२२) बच्चे और बड़ोंके श्वास,कासके रोगमें यह प्रयोग करना चाहिये कि ७॥ तोले पत्ते डालियां और पुष्पोंको २॥ पाव स्पिरिटमें बन्द बरतनमें ७ दिनतक भिगोके दिनमें दो तीनवार हिलादेवें अंतमें मल छानकर २॥ पाव में बाकीकी स्पिरिट और मिलाके बोतल भर रक्खें-इसकी २० से ६० तक बूंदें मधुमें मिलाके दिनमें दोतीन बेर देना चाहिये। (२३) बच्चोंके लिये पत्तोंके स्वरसकी ३॥ मासे तक मात्राहै और जवानके लिये १॥ से १ तोले तकहै। (२४) पौनचार मासेसे सवा तोले तक इसका ताजा रस पिलानेसे वमन और विरेचन होतेहैं। (२५) इसके पत्ते और चूनेको पास लेप करनेसे सुमली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं।

संख्या (२७)

(सं०) अरिष्टः, फेनिलः, रक्तबीजः, मंगल्यः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अरीठो	रीठा	अरीठा	रिठा रीठा	रीटा (ठा)	रेठा	कुंकुडु चेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पोनानु कोट्टै	कुकुट कायि	बंदक	रिठा	Sapindus-trifoliatus S emarginatus (S) Mukorobi	(3) Soapberry (4) Soap nut

स्थान—यह दो प्रकार का होताहै एक संयुक्त प्रदेश, बंगाल, आसाम आदि देशोंमें होताहै और दूसरा दक्षिण हिन्दुस्थान, संयुक्तप्रदेश और बंगाल में बहुत बोया जाताहै॥

पहिचान—यह एक भूरी छाल का सुंदर वृक्ष होताहै। इसके पत्ते पतझड़में गिर जातेहैं। इसके बीजों की गिर पहिले कुछ मीठी पीछे बहुत कड़वी लगतीहै॥

फूलने फलनेका समय—इसके आसोजसे मृगशिरतक पुष्प लगतेहै और माघसे चैत्रतक फल पकतेहै ॥

तेल—एकके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै वह साबुन की ठौर काममें आताहै । दूसरे के बीजोंकी मींगीमेंसे जो तैल निकलताहै वह आधा गाढा होताहै और औषधिके प्रयोगमें आताहै । इसका फल साबुनकी ठौर काममें आताहै ।

गोंद—इसके गोंद लगताहै ॥

प्रयोग-(१) इसका फल अधिक थूक गिरानेके लिये और संन्यास रोगमें दिया जाताहै । (२) इसके फलको चूसनेसे सूखी खांसी मिट जातीहै । (३) इसके फलके चूरण से हरित्पाण्डु (जिस रोगमें खून पीला पड़ जाताहै) मिटताहै । (४) मिरगीकी बारीके दिन इसके बीजोंको पानीके साथ पीसके सुंघाने और थोड़ासा मुंहमें रखनेसे उसका वेग रुकता है । (५) इसका फल बालकके गलेमें लटकानेसे हिचकी बन्द होतीहै । (६) ७ मासे अरीठा खानेसे श्वास मिटताहै ।

प्रयोग दूसरेके—(७) इसकी २ रत्ती गिरको शरबत या जलके साथ देनेसे शूल मिटतीहै । (८) इसकी ४॥ मासे गिरको पानी में मथके झाग पैदा होनेपर छानके पिलानेसे सांपका विष उतरता है । (९) अतिसार और विसूचिकावालेकी दस्तें बन्द करनेके लिये भी इसी जलको पिलाना चाहिये (१०) इसकी १॥ या २ रत्ती गिरको सुंघानेसे वे सब प्रकारके वेग मिटतेहै कि जिनसे मनुष्य अचेत हो जाताहै । (११) इसका बफारा या नास देनेसे स्त्रियोंके आवेश के रोग और मनका उदासपन मिटताहै । (१२) इनको सिरकेमें पीस विषैले जीवोंके दंश परा लगातेहैं । (१३) इनका गंडमाला की सूजन पर लेप किया जाता है । (१४) सूखी खांसीमें इसकी जड़के चूर्णकी फक्की दीजातीहै । (१५) समय पर बच्चा गर्भाशयसे जल्दी निकलनेके लिये और ऋतुधर्म के समयमें रुधिर का ठीक प्रवाह होनेके लिये इसके बीजोंकी मींगी की बत्ती बनाके योनीमें देनी चाहिये । (१६) तीव्र विरेचन करानेके लिये

इसकी ४॥ मासे मींगीमें आठवां हिस्सा सकमुनिया मिलाके देना चाहिये। (१७) इसकी मींगी श्वासरोगमें लाभकारीहै । (१८) इसकी थोड़ीसी मींगीको मुहमें रखनेसे मिरगीवालेको चेत होजाताहै । (१९) कृमिरोगमें भी इसका प्रयोग किया जाताहै। (२०) एकफलकी मींगीको स्त्री या गायके दूधमें पीसके नासदेने और अंजन करने से अचेतपन और प्रलाप मिटता है। (२१) इसकी गिरको पानीमें पीसके पिलानेसे वमन होतीहै। (२२) इसकी गिरीको पानीमें पीसके पिलानेसे विष उतरताहै। (२३) इसकी मींगी और कालीमिरच बराबरले चूर्ण बनाके २॥ मासेसे ३॥ मासेतक फक्की मिरगी वाले को देनी चाहिये। (२४) इसको पानीमें पीसके नस्य देनेसे आधा-शीशी मिटतीहै । (२५) बिच्छू और कनखजूरेके डंककी सोई पर इस का लेप करना चाहिये, या पुल्टिस बांधना चाहिये। (२६) हिम या फांटकी मात्रा यह है कि एक फलको २॥ या ५ तोले पानीमें भिगो मल छानके पिलाना चाहिये (२७) वमन करानेके लिये ३॥ से ७॥ मासे तक चूर्णकी फक्की देनी चाहिये। (२८) कफ निकालनेके लिये ५ से १० रत्ती तककी फक्की देनी चाहिये। (२९) इसकी १। मासेसे २॥ मासे तककी फक्की देनेसे उत्क्लेद होताहै। (३०) बीज गुठली और छिलके समेत अरीठे को पीसके मिरगी-वालेको नित्य सुंघानेसे मिरगी मिटती है। (३१) एक तोले अरीठेको रातभर पानीमें भिगोके उसका निताराहुआ पानी पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ॥

संख्या (२८)

(सं०) अर्कः, क्षीरदलः, खर्जुघ्नः, विकीरणः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आक (कहो)	अकौआ मदार	आकडो	रुई	आकन्द	आक	जिल्लेडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
येरिक	यक्कदगिड	उशर	खरक	Calotropis gigantea, Asclepias	Gigantic swallow wort

स्थान—यह हिमालयमें पंजाबसे दक्खेन हिन्दुस्थानतक और आसाम, सीलोन, सिंघापुर और राजपूताना आदि कई देशोंमें होताहै।

पहिचान—लाल और सफेदके भेदसे आक दो प्रकारका होताहै। इसके फलमें गिरी नहीं होती छोटे २ बहुतसे बीज होतेहैं उनमें हरेकके एक ओर प्रायः १ इंच लम्बी सफेद रंगके बारीक रूएकी कूंची लगी रहती है। जब फल पककर फट जाताहै तब बीज निकल जातेहैं और वह कूंची खुलके गोलाकार बन जातीहै॥

इसका पंचांग औषधिके काममें आताहै परन्तु दूध, या सुखायाहुआ दूध, ताजे पुष्प और जडकी छाल औषधिके प्रयोगमें बहुत आतेहैं॥

प्रयोग—(१) इसका दूध तीव्र रेचक और दाहकहै इस कार्यकेलिये थूहरके दूधके साथ बहुधा इसका प्रयोग कियाजाताहै। (२) इसके पत्तोंको नमकके साथ कूट मिट्टीके बरतनमें बन्धकर जला उस भस्मकी मट्ठेके साथ फक्की देनेसे जलंधर मिटताहै और तिल्ली आदि यंत्र जो पेटमें बढ जाया करतेहैं वे सब अपनी दशापर आजातेहैं, (३) जडकी छालको कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे पैर और फोतोंकी गज चर्मके समान मोटी पडी हुई चमडी पीछी पतली हो जातीहै। (४) इसके और थूहरके दूधमें दारु हलदके चूर्णकी बत्ती बनाके गुदाके नासूर और अस्थिव्रणमें देतेहैं। (५) इसके दूधको मधुमें मिलाके लगानेसे मुंहके छाले मिटतेहैं। (६) इसके दूधमें रूई भिगोके घीमें तलकर डाढमें रखनेसे उसकी पीडा मिटतीहै। (७) दूध लगानेसे जोडोंकी शोथ और पीडा मिटतीहै। (८) ताजे पत्तोंको उष्ण कर बांधनेसे भी जोडोंकी शोथ और पीडा मिटतीहै। (९) पत्तोंको तेलमें तल-कर उस तेलका मर्दन करनेसे अंगका शून्यपन मिटता है। (१०) सूखे पत्तोंके चूर्णको बुरकानेसे घाव जल्दी भरने लगताहै, । (११) इसके ताजे चोफूले और कालीमिरच दोनों बराबर ले, पीस २॥-२॥ रत्तीकी गोलिया बनाके दिनमें ४-या ६ बेर देनेसे श्वास, मिरगी और बांइटे मिटतेहैं, रुधिर शुद्ध होताहै और स्नायुजालकी शक्ति बढतीहै। (१२) इसकी जडकी छालको बकरीके दूधमें पीसके नाकमें टपकानेसे मिरगीका वेग रुकताहै।

(१३) इसकी जड़को बालकके मूत्रमें पीस लेप करके कडे की आगसें तपानेसे पसलीकी पीड़ा मिटतीहै । (१४) जड़को बराबर अद्रकके रसमें खरल कर चने प्रमाण गोलियां बनाके असाध्य विसूचिकामें भी देने से लाभ होताहै । (१५) जड़की छालका चूर्ण देनेसे उपदंशसे सब शरीर में पैदा हुए व्रण मिटतेहै । (१६) नवीन कोढको मिटानेके लिये इसके चूर्णकी फंकी देनी चाहिये । (१७) इसके प्रयोगमें त्वचाके कई प्रकार के रोग मिटतेहैं । (१८) इसके २॥ रती चूर्णकी फंकी देनेसे पसीना होके वे सब ज्वर उतरजातेहैं कि जिनसें शरीरमें अत्यन्त दाह अथवा दाह युक्त शोथ या स्नायु सम्बन्धी पीड़ा अथवा शरीरमें चमचमाहट हुआ करती हों । (१९) त्वचाके रोगोंमें मनुष्य बहुधा इसका दूध लगाया करतेहैं परन्तु जो चतके ऊपर दूध लगाया जाय तो बहुत दाह हो जाताहै और चत बिगड़ जाताहै (२०) इसके ताजे दूधमें नमक मिलाके चोट और मुरड़ पर लेप करना चाहिये । (२१) इसके दूधकी अधिक मात्रामें विष जैसा प्रभावहै । (२२) इसके २॥ से ५ रती दूधमें पाव रती अफीम मिलाके दिनमें दो तीन बेर देनेसे आमातिसार मिटताहै । (२३) इससे पेटमें ऊष्मा बढकर भूख लगने लगजातीहै । (२४) इसके ५ रती चूर्ण को चेपदार औषधिके साथ पानी में भिगोके पुरानी गठियावाले को देना चाहिये । (२५) २॥ से ५ रती इसकी जड़की छालकी फंकी देनेसे आमातिसार मिटताहै । (२६) ६ रती इसकी जड़की छाल और १२ कालीमिरच पीसके दिनमें २ बेर देनेसे कामला (पीलिया) मिटताहै । (२७) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे ज्वरमें बच्चोंका प्रलाप करना और हाथपर तालना बन्द होजाताहै । (२८) इसका लेप करनेसे नहरुवेकी शोथ मिटतीहै । (२९) इसके पत्ते गर्म करके बांधने से नहरुवेकी सूजन मिटतीहै । (३०) इसकी ७॥ रती छालमें आध रती अफीम मिलाके लगातार देते रहनेमें तीव्र आमातिसार मिटताहै । (३१) वमन करानेके लिये इसका चूर्ण १५ रती और पसीना करानेके लिये २॥ रती देना चाहिये । (३२) इसके पीले पत्तों को थोड़ा घृत लगाकर अग्निपर तपानेसे जब सगढ़ने लगें तब हथेलीमें मसलके

कानमे निचोदेनेसे कर्णशूल मिटतीहै। (३३) इसके पुष्प कफ निकालनेवालेहैं। (३४) इसके पुष्पोंकी चोफूली और कालीमिरच बराबर ले इन दोनोंके बराबर बंबूलकी अंतरछालके गाढ़े किये हुए क्वाथमें पीस गोलियां बनाके देनेसे खासी और रैन मिटताहै। (३५) बद्धकोष्ठवालेके पेट और नलोंपर इसके पत्तोंको गर्म करके बांधनेसे दस्त साफ लग जाताहै। (३६) इसकी जड़की, छालका धूआं पिलानेसे उपदंश मिटताहै। (३७) इसके पुष्पोंकी ४ रती कलियों के साथ कालीमिरच और नमक मिलाके देनेसे मंदाग्नि, दिलका धड़कना, वमन और विसूचिका मिटतीहैं। (३८) पत्तोंको काली मिरचोंके साथ पीसके मंजन करनेसे दांत साफ रहतेहैं। (३९) इसके दूधमें नमक मिलाके दिनके ३ बजे पीछे लेप करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै। (४०) इसकी छालका चूर्ण, हिम, फांट या क्वाथ पिलानेसे यथोचित मासिकधर्म्म होने लग जाताहै। (४१) इसके सूखे फूलका आध रती या एक रती चूर्णकी खांडके साथ फक्की देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै, इसमें दूध चांवलका पथ्य देना चाहिये। (४२) पत्तोंपर एरंडका तेल चुपड़कर फोतोंपर बांधनेसे पित्तशोथ मिटताहै। (४३) एक ईंटको गर्मकर, उसपर ६–७ पत्ते धरके, पैरको तपानेसे, पैरके फोड़े मिटतेहैं। (४४) पत्तोंका क्वाथ करके पिलानेसे गाठियाकी पीड़ा मिटतीहै। (४५) पुष्पोंका पुल्टिस बांधनेसे एड़ीकी पीड़ा मिटतीहै। (४६) इसकी जड़ या छालका क्वाथ पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै। (४७) इसके पुष्पोंके गुच्छेको तोड़नेसे जो दूध निकलताहै उसके लगाने से खुजली मिटतीहै। (४८) बालू रेतमें पैदाहुए पुराने वृक्षकी जड़ चैत्र वैशाख में ले, जलसे भली भांति धोकर छायामें इतने समय तक पड़ी रहनेदेवे कि उसके चीरा देनेसे दूधका निकलना बन्द होजाय फिर उसके ऊपरके छिलके को चाकूसे खुरचके अतर छालको जड़पर से उतार छायामें सुखा पीस कपड़छान करके डाटदार बोतलमें भरकर रखना चाहिये। (४९) बारीसे आनेवाले वेगको रोकनेके लिये और तीनों प्रकारके कुष्ठ, उपदंश, अतिसार, आमातिसार, पुरानीगठिया, पारेके विकार, त्वचाके रोग, कफ, जलंधर, सर्वांगशोथ (जिसमें जल पैदा होगया हो) और प्रारम्भके फोड़ोंको मिटानेके लिये

उसका प्रयोग करना चाहिये। (५०) इसकी जड़की छालके प्रयोगसे आंतोंके कीड़े मरतेहै। (५१) घटेहुए तिल्ली आदि यंत्रोंको अपनी दशामें लानेके लिये और उनके रसके रुकेहुए प्रवाहको फिरसे जारी करनेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये। (५२) इसके पुष्प पाचक और बल बढ़ानेवालेहैं। (५३) कफ, श्वास, प्रतिश्याय, मंदाग्नि और पेटकी शूल मिटानेके लिये भी पुष्पोंका प्रयोग किया जाताहै। (५४) इसका दूध कफको निकालनेवाला और रोगनाशकहै। (५५) इसका दूध, त्वचाके रोग, मस्तकके दाद, अर्श, कुष्ठ, जलंधर, यकृत् और प्लीहवृद्धिको मिटाताहै और आंतोंके कीड़ोंको मारता है। (५६) इस वृक्षके और इसके अंगोंसे बनेहुए गुटिका आदिके प्रयोगसे मात्र प्रकारके वेग, अपस्मार, स्त्रियोंका आवेशका रोग, स्नान करके या स्नानकरनेके पीछेही स्त्रीसंग करनेसे जो मांस पेशियों में एक प्रकार का तनाव और ऐंठन होजातीहै वह, और रगोंकी ऐंठन "जैसे हनुस्तंभ, बच्चोंकी धनुर्वात, किसी अंगका जकड़ जाना" ठंढे पसीने आना, विषैले जीवों के काटनेसे जो विष चढताहै वह और उपदंश आदि मिटतेहैं। (५७) इसके दूधको चौड़े पेंदेके मिट्टीके ठांवमें या प्यालेमें भरकर छायामें सुखा लेवे, यह सूखाहुआ दूध ठंढे या गर्म जलमें नहीं गलताहै, मधु और तेलमें पियल जाताहै। इस सूखे दूधकी २ रतीसे अधिक मात्रा देनेसे तीव्र वमन या विरेचन होतेहैं अथवा दोनोंही होके भयंकर दाह होजातीहै। औषधिके प्रयोगमें आधरतीसे धीरे २ बढाके १॥ रतीतक करदेना चाहिये। (५८) यह बांइटे मिटानेकी, शरीरके वेगको रोकनेकी, स्नायुजालकी शक्ति बढानेकी, श्वास, अपस्मार, अंगकी अकड़ और शून्यता मिटानेकी बहुत उत्तम औषधि है। (५९) पीड़ा मिटानेके लिये इसके पत्तोंको गर्मकरके बांधना चाहिये और उनको कुछ समय तक उष्ण बने रहनेके लिये उनपर सूखा सेक करना चाहिये। (६०) इसके दूधका लेप करनेसे नहरुवेकी सूजन उतरतीहै। (६१) आकके हरे २ बीस तोले पत्ते और १४ मासे हल्दी, इन दोनोंको पीस उड़दकी बराबर गोलियां बना नित्य ४ गोली ताजे जलके साथ देवे या एक गोली नित्य बढाता हुआ ७ गोली तक बढा देनेसे जलधर मिटताहै। (६२) आककी मुंह मुंदी

हुई कलियां जितनी चाहे ले उन सबमें एक २ कालीमिरच रख गारकी हांडीमें भर उसमें ऊपर नमक बिछा मुंह कपड़मिट्टीसे बन्दकर चूल्हे पर चढाके गलालेवें, स्वांगशीतल होनेपर उसमेंसे ४ रतीकी मात्रा देनेसे कफ और श्वास मिटताहै। (६३) आककी कोंपल पानमें रख शीतकालमें एक २ कोंपल तीन दिनतक खावे और चौथे दिनसे आधी २ कोंपल बढाता हुआ ४० दिनतक खानेसे कास और कफ मिटताहै। (६४) आकके दूधमें ४ तोले गेहूं तीन दिनतक भिगो उनको गारकी हांडीमें भर कपड़मिट्टीसे मुंह बन्दकर आरने कंडोकी आंचमें जला शीतल हुए पीछे पीस छान उसमें चार तोले गुड़ मिला १४ मासे प्रमाण गोलियां बना एक गोली प्रातःकाल नित्य लेनेसे कास और श्वास मिट जाताहै। (६५) आकके सूखे पत्ते २ से ४ तक जला उनकी भस्मको रातभर पानीमें भिगो उस पानीको नितारकर प्रात काल पीनेसे कफ और खांसी मिटतीहै। (६६) आककी जड़ पानीमें घिसकर अंजन करनेसे नाखूना दूर होताहै। (६७) आककी जड़की २ मासे भर छाल पानीमें भिगो दांतोंमें रखनेसे कीड़ेके कारणसे पैदा हुई दंतपीड़ा मिटती है। (६८) आकका पीलापत्ता बिना छिद्रका लेके अग्नि पर तपा उसका रस कानमें १५ दिनतक निचोड़नेसे बहिरापन मिटता है। (६९) आकके पत्तोंकी बराबर सेंधानोन ले दोनोंको कूट हांडीमें भर कपड़मिट्टी से मुंह बन्दकर जला उस भस्मकी फंकी देके ऊपर मट्ठा पिलानेसे तिल्ली मिटतीहै। (७०) इसके पत्तोंके क्वाथसे धोनेसे उपदंशके घाव मिटतेहैं। (७१) इसके पकेहुए पीले पत्तोंको दोनों ओरसे भलीभांति पोंछकर उनपर घी चुपड़ आगपर तपा कानमें निचोड़नेसे कानकी शूल और पीड़ा मिटतीहै। (७२) इसका खार खिलानेसे कफ और श्वास मिटताहै। (७३) इसकी जड़को कूट कड़वे तेलमें औटाकर उस तेलका मर्दन करके इसके या एरंडके पत्ते बांधनेसे हाथ पैरोंकी वादीकी पीड़ा मिटतीहै। (७४) इसके २१ पत्ते पावभर कड़वे तेलमें एक एक पत्ता जलाके उसको उतार थोडा मेनसिल पीस उसमें मिलाकर शीशी में भरके रख छोड़े, इसका मर्दन करनेसे खुजली आदि त्वचा के रोग मिटतेहैं। (७५) एक भाग कालीमिरच और दो भाग इसकी जड लेकर बकरीके दूधमें

पीस चने प्रमाण गोलियां बनाके एक गोली बारीके पहिले देनेसे शीतज्वर छूटता है। (७६) सर्पका विष उतारनेके लिये उसके दंशपर आकड़ेका दूध टपकाता रहे जबतक शरीरमें विष रहेगा तबतक दूध सुसता रहेगा जब विषका दोष शरीरमें नहीं रहेगा तब दंशपर भी दूध नहीं सुसेगा। (७७) इसकी जड़को चांवलोंके पानीमें घिसकर नस्य देनेसे कामलारोग मिटताहै। (७८) इसकी तीन कोंपल गुड़में लपेट खिलाके ऊपर घी पिलानेसे सांपका विष उतरताहै। (७९) बिच्छूके दंशपर इसका दूध लगानेसे उसका विष उतरता है। (८०) इसकी जड़ पानीकी साथ पीसके पिलानेसे सांपका विष उतरताहै। (८१) आकका दूध आधपाव और मधु आधपाव लेके कढाईमें लोहे के दस्तेसे इतना घोटेकि उनके चेपके कारणसे कढाई दस्तेके संग जमीनसे उठ आवे फिर उसमें चार मासे अफीम डालके घोटे जब अच्छी तरहसे मिलजाय तब उसको चीनी या कांचके बरतनमें रखछोड़े। इन्द्रीका सिर छोड़ इसका लेपकर ऊपर नागरवेलका पान लपेट गजीकी पट्टी बांधके एक पहरतक बैठा रहे फिर उस पट्टीको खोलकर २१ वेर धोया हुआ गायका घी इन्द्रीपर मर्दन करे ऐसे तीन दिन करनेसे कामकी निर्बलता मिटतीहै। (८२) कामकी निर्बलता मिटानेके लिये आकका दूध और गायका घी दोनों बराबर लेके १२ पहर खरल करके उसमेंसे एक रती प्रमाण इन्द्रीपर मर्दन करना चाहिये। (८३) दो भाग दूधमें एकभाग घी मिलाकर आंचपर चढाके लकड़ीसे खूब रगड़े जब दूध जलकर घी शेष रह जावे तब उताके रख छोड़े और कामकी निर्बलता मिटानेके लिये इन्द्रीका शिर छोड़कर उसका मर्दन करके ऊपर लिसोड़ेके पत्ते एकपहर बंधे रखकर फिर खोल डालना चाहिये। (८४) इसका एक पान और २५ कालीमिरचोंको पीसकर कालीमिरच बराबर गोलिया बना ७ गोली तरुणको और ३ गोली बालकको श्वासमें देना चाहिये। (८५) बावले कुत्तेके दंशपर आकका दूध लगाना चाहिये। (८६) इसका दूध छायामें सुखा जला कड़वे तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं। (८७) इसके दूधमें रूई भिगो छायामें सुखा बत्ती बनाके सरसोंके तेलमें उस बत्तीको जलाकर काजल पाड़के लगानेसे नासूर मिटताहै।

(८८) कोयलोंकी अग्निमें इसके पीले पत्ते जला ४ रती भस्म शहदके साथ चटानेसे ज्वर छूटताहै। (८९) इसकी जड़ पानीके साथ पीस गोली बनाके गुदामें रखनेसे खुलकर दस्त लग जाताहै। (९०) जडको पानीके साथ पीसकर पेटपर लेप करनेसे खुलकर दस्त लग जाताहै। (९१) इसकी सेरभर जड़को आठसेर पानीमें ओटावे जब दो सेर पानी शेष रहे तब उसमें सेरभर एरंडका तेल डाल देवे, फिर पानी जलकर तेल रहजावे, तब बरतन भरके रखछोड़े इसका मर्दन करनेसे वात-पीड़ा मिटतीहै। (९२) इसकी एक तोले जड़ और ५ मासे, कालीमिरच को पीस छान सवाचार तोले गुड़में मिला जवारके बराबर गोलियां बना नित्य दो गोली देनेसे उपदंश मिटताहै। (९३) इसकी जडको बालकके मूत्रमें पीस लेपकर धूपमें बैठनेसे अथवा अग्निसे तपानेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै।

संख्या (२९)

(सं०) श्वेतार्कः, शुक्लार्कः, तपनः, वृत्तमल्लिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धोलोआकडो	सफेद आक	धोलोआकडो	पादरी रुई	श्वेत आकद	सफेद आक	तेल्लजिल्लेडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वल्लेरिकं	बिळयक्कद-गिडे			Calatropisprocera C Hamiltonii	[illegible]

स्थान—सफेद आक हिमालयमें सिन्ध नदीसे झेलम तक और अवध मध्य और दक्षिण आदि हिन्दुस्थानके अधिक शुष्क भागोंमें होताहै।

पहिचान—इसके पत्ते ४ से ६ इंच तक लम्बे और मोटे होतेहैं। इसके कुछ बैंजनी या श्वेत पुष्प लगतेहैं। इसका वृक्ष बहुधा ६–७ फुट ऊंचा होताहै परन्तु पंजाब आदि देशोंमें १२ से १५ फुटतक ऊंचा होजाताहै।

फूलने फलनेका समय—माघसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं, शीतकालके प्रारम्भ तक फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी जड़को गर्म करके दांतुन करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै और दांत दृढ और निर्मल रहतेहैं। (२) इसकी जड़को पीस उष्ण कर लेप करनेसे स्नायुक (नारू) की पीडा मिटतीहै। (३) इसके दूधको गर्भाशयके मुखपर लगानेमे भ्रूण निकल पड़ताहै। (४) इसके दूधमें इतना विषहै कि बड़े कुत्तेको ४ मासे पिलानेसे १५ मिनटमें मरजाताहै। इसके विषसे मुखमें पहिले झाग आने लगतेहैं। (५) विसूचिकामें इसके पुष्पोंका प्रयोग किया जाताहै। (६) इसके दूधको चमड़ीपर कुछ देर तक मलके ऊपर बांधो लगानेसे वहां ऐसे काले चट्टे होजातेहैं कि जैसे रगड़ या चोट लगनेसे होजाया करतेहैं। (७) इसकी जड़ रविवारके दिन कानमें बांधनेसे सब प्रकारके ज्वर छूट जातेहैं। (८) इसकी जड़की छालको कांजीमें पीस लेप करनेसे पुराना श्लीपद रोग मिटताहै।

संख्या (३०)

(सं०) अर्कमूला, सुनन्दा, अर्कपत्रा, विषापहा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	ईशरमूल	अर्कमूल	सापसन	ईशेरमूल		ईश्वर बेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अं०
ईश्वरवेर	ईश्वरीवेरु	भिसभिक़ार	ज़रावंद	Aristolochia Indica	The Indian Birthwort

स्थान—ईसरमूल (अर्कमूला) हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर मिलतीहै विशेष कर बंगाल, कोकन, ट्रावनकोर और कारोमण्डलमें मिलतीहै।

पहिचान—इसकी जड़का स्वाद कड़वा होताहै उसमें कपूर जैसी सुगंध आतीहै।

प्रयोग—(१) अर्कमूल (ईसरमूल) की जड़ औटाकर पिलानेसे जोड़ोंकी सूजन मिटतीहै । (२) जड़को औटाके पिलानेसे बन्द हुआ मासिकधर्म फिरसे होने लग जाताहै । (३) इसको घिसके लगानेसे बिच्छूका विष उतरताहै । (४) जड़को गुड़के साथ उबाल कर पिलानेसे बच्चा पैदा होनेमें बहुत कष्ट नहीं होताहै । (५) यह बलवर्द्धक और उत्तेजकहै । (६) इसके प्रयोगसे ज्वर छूटताहै । (७) इसको सर्पके दंशपर लगानेसे और खिलानेसे सर्पका विष उतरताहै । (८) यह बच्चोंकी आंतोंकी बीमारीको मिटाताहै । (९) इसके पत्तोंका रस दंश पर लगानेसे विष उतरताहै । (१०) पत्तोंका रस पिलानेसे जलोदर मिटताहै । (११) पत्तोंके रसकी मात्रा २ मासेसे ७॥ मासे तकहै । (१२) इसके क्वाथकी मात्रा २॥ से ५ तोलेतक है ।

संख्या (२१)

(सं०) अर्जुनः, संबरः, इन्द्रद्रुः, ककुभः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलंगी
अर्जुन	कौह,	धाळोसोगढ	अर्जुन-सादडा	अर्जुनगाछ	कोह	येरमद्दि

द्राविड़ी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेलामद्दि	कस्पुमत्त			Terminalia Arjuna Pentaptera Arjuna	

स्थान—यह हिन्दुस्थान के संयुक्तप्रदेश, दक्खन, विहार, छोटिया नागपुर और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होताहै ॥

पहिचान—यह वृक्ष ८० से १०० फुटतक ऊंचा होताहै इसके पत्ते पतझड़में गिर जातेहैं परंतु सब के सब नहीं गिरते, इसकी पेंदख सीधी नहीं होतीहै और उसकी गोलाई १० से २० फुटतक की होतीहै और ४० से ५० फुट ऊंची

पड़ जानेके पीछे उसमें शाखा फूटतीहै, उसकी छाल हरापन लिये हुए श्वेत, खाखी, भूरी, या बजनी रंगकी और साफ होतीहै ॥

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं शीतलकालमें इसके फल पकतेहैं ॥

इसके एक प्रकारका साफ, सुनहरी, भूरा और पारदर्शक गोंद लगताहै वह खानेके काममें आताहै ॥

इसकी छालमें से खाखी रंग निकलताहै। इसकी लकड़ीकी राख रंगन के काममें आती है।

प्रयोग—(१) इसकी छालको दूधमें ओटाके पिलानेसे हृद्रोग मिटताहै, अथवा छालको जल दूध और गुडके साथ ओटाके पिलाना चाहिये। (२) दूधके साथ इसकी जडके चूर्णकी फकी देनेसे टूटी हुई हड्डी जुड जातीहै, (३) रगड़ आने या चोटके लग जानेसे जो नील जम जातीहै उसको मिटानेके लिये भी जड़के चूर्णकी फकी दूधके साथ देना चाहिये (४) इसके क्वाथ से फोड़े और विगलित व्रणोंको धोना चाहिये। (५) इसका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै। (६) इसके चूर्ण में तिल्ली का तेल मिलाके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै। (७) इसके पत्तों का स्वरस कानमें डालने से कर्णशूल मिटताहै। (८) विषैल जीवों के दंशपर इसकी छालका लेप करना चाहिये। (९) इसके फांट से रक्तातिसार मिटताहै। (१०) इसकी छालको पीस गर्म कर लेप करनेसे चोटसे पैदा हुई सूजन मिटतीहै। (११) टूटी हुई हड्डी पर भी यही लेप करना चाहिये। (१२) इसके फल खानेसे पेटके पवनोंके बहावकी रुकावट मिटती है। (१३) मूत्रके रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्तको मिटानेके लिये इसकी छालका क्वाथ पिलाना चाहिये। (१४) जलके साथ इसकी छालके चूर्णकी फक्की देनेसे पित्तके विकार मिटतेहैं। (१५) इसकी अंतर छालका मधुके साथ लेप करनेसे मुखकी झांयी मिटतीहै। (१६) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे मूत्राघात मिटताहै। (१७) इसकी छालसे बनाये हुए घीका सेवन करनेसे हृदयके रोग मिटतेहैं। (१८) इसकी अंतर छालके चूर्णको घृत या मक्खनके साथ

घटानेसे हृद्रोग मिटतेहैं। (१९) दूधके साथ अंतर छालके चूर्णकी फकी लेने से रक्तपित्त मिटताहै। (२०) गुडके शर्वतके साथ इसकी फकी लेनेसे जीर्णज्वर मिटताहै। (२१) वलकी जड़के क्वाथ साथ इसकी फक्की देनेसे हृद्रोग मिटताहै। (२२) इसके और मुलहठीके चूर्णकी फकी देकर ऊपर दूध पिलाने से हृद्रोग मिटताहै। (२३) गेहूं और इसकी अंतर छालके चूर्णको तेल, गुड और घीमें पकाकर चटाके ऊपर दूध पिलानेसे सब प्रकारके हृदयके रोग मिटतेहैं। (२४) गेहूं और इसकी अंतर छालको बकरीके दूध और गायके घीमें पका इसमें मिश्री और मधु मिलाकर चटाने से अतिउग्र हृद्रोग मिटताहै। (२५) इसकी और गांगरणकी जड़की छालके चूर्णकी फक्की देके ऊपर दूध पिलानेसे वादीके रोग मिटतेहै।

संख्या (३२)

(सं०) अशोकः, मधुपुष्पः, अपशोकः, मंजरी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आसोपालो	आसापाला	आशुपालो	अशोक	अशोक	अशोक	अशोकमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अशोकम्	अशोक			Saraca Indica Jonesia Asoca	

स्थान—यह वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बागोंमें बोया जाताहै।

पहिचान—आसेपालेका वृक्ष बहुत ऊंचा नहीं होताहै इसके पत्ते प्रायः १ फुट लम्बे होतेहैं, फली दो इंच चौड़ी और ६—१० इंच लम्बी होतीहै, उसमें ४ से ८ तक चिकने बीज निकलतेहै। इसके बैंजनी रंगके पुष्प लगतेहैं वे धीरे २ लाल होजातेहैं।

फूलने फलनेका समय—चैत्र और वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी छाल गर्भाशयके रोगोंमें बहुत काम आतीहै। (२) इसकी छालके काथमें दूध मिलाके पिलानेसे तीव्र रक्तप्रदर मिटताहै। (३) छालका काथ पिलानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्द होजाताहै। (४) इसकी छालके काथमें गंधकके तिजाबकी २ बूंद डालकर पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (५) इसके पुष्पोंको जलमें पीसके पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै। (६) इसके पुष्पोंको स्तनपर लेप करके चुखानेसे बालकको वमन होजातीहै। (७) इसकी छाल और रसौतको चांवलोंके पानीके साथ पीसके पीनेसे रक्तप्रदर मिटताहै। (८) यह मधुर, शीतल, कसेला, कडवा, ग्राही और हृद्यहै, पित्त दाह, भ्रम, गुल्म, उदररोग, कृमिरोग, शूल, आध्मान, विष, अर्श व्रण, अपची, शोथ, और रुधिरविकार को मिटाताहै और शरीरकी कान्ति बढाताहै।

संख्या (३३)

(सं०) अश्मन्तकः, इन्द्रकः, कुद्दालः, ताम्रपत्रकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कचनारका भेद	कचनारका भेद	आशोंदरो	आपटा	आवुटा		आरेचट्टु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Bauhinia towentosa	

स्थान—यह संयुक्त प्रदेश और हिन्दुस्थानमें सीलोन तक सब ठौर होताहै।

पहिचान—यह झाड़ सीधा होताहै। इसकी शाखाओं पर रुंए होतेहैं। इसकी छाल सफेद होतीहै। कचनारके पत्तोंके जैसे इसके पत्ते जुड़े हुए होतेहैं इसके पुष्प छोटे और श्वेत रंगके होतेहैं। इसकी फलियोंका स्वाद कसैला और मीठा होताहै।

इसके बीजोंमेंसे तैल निकलताहै।

प्रयोग—(१) यह कृमिरोग, यकृत्को रोग, प्रमेह, दाह, तृष्णा, छर्दी, विषम ज्वर, चातुर्थिक ज्वर, भूतबाधा, शर्कराश्मरी, कुष्ट, गुदभ्रंश, गंडमाला व्रण, कंठ रोग, रक्तविकार गलगंड, विष, अतिसार, और कफ पित्तको मिटाता है। (२) इसकी फलियां ग्राही, पचनेमें भारी, शीतल और रूक्षहैं, अतिसार वात और कफको मिटातीहैं और आध्मानको पैदा करतीहैं। (३) इसकी सूखी कलियोंके चूर्णकी फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै। (४) इसकी जडकी अंतर छालके काथसे यकृत्की पित्तशोथ मिटतीहै। (५) इसी काथ के कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै। और दांत दृढ होजातेहैं। (६) इसका फल मूत्रवर्द्धकहै। (७) इसके बीजोंको सिरकेमें पीसके विषैले जीवोंके दंशपर या विषसे पैदा हुए व्रणों पर लेप करना चाहिये। (८) इसके पत्तोंके चूर्ण की फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै। (९) इसकी अंतर छालका काथ पिलानेसे कीड़े मर जातेहैं।

संख्या (३४)

(सं०) अश्वकर्णः, दीर्घपर्णः, कौशिकः, जरणद्रुमः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तिलङ्गी
साल	सखुया	शालनुनझाड	सलराळ-चावृक्ष	शालगाछ	शाल, सखुया	तेल्लगड्डि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अं०
कुंगिलियम्	विलीमत्ते			Shorea Robusta Vitu Sal	The sal tree

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें सतलजसे आसामतक, मध्य हिन्दुस्थानके पूर्वीभाग, बंगालके पश्चिम विभाग और छुटियानागपुरमें बहुत होतेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी साधारण ऊंचाई ६० से ९० फुट और पेडकी

गोलाई ६ से ८ फुट और ऊंचाई २० से ४० फुट तक होतीहै। कहीं २ इस वृक्षकी ऊंचाई १०० से १५० फुट और पेड़की गोलाई २० से २५ फुट और ऊंचाई ६० से ८० फुटकी होतीहै (इसके पत्ते ४ से ८ फुट लम्बे और पूरे बढ़ने पर चमकदार होजाते हैं। इसके पुष्प कुछ पीले रंगके होतेहैं। इसके छोटे २ फल लगतेहैं। इसके सब पत्ते एक साथ नहीं गिरतेहैं और फागुनतक नवीन निकल आतेहैं।

फूलने फलनेका समय फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं और जेठतक फलपकतेहैं।

राल—इस वृक्षमेंसे एक प्रकारका द्रव पदार्थ निकलताहै उसको राल कहतेहैं।

रंग—इसकी लकड़ीमें से लाल रंग निकाला जाताहै।

तेल—इसके बीजोंको पानीमें ओटानेसे तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) सालकी लकड़ीके चूर्णकी बूरेके साथ फक्की लेनेसे आमातिसार मिटताहै। (२) १। मासे रालकी फक्की आधसेर उष्ण दूध के साथ लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै। (३) ५ तोले रालको गायके घीमें १० मिनटतक ओटाकर ठंढे पानीमें डालदेवे जब थोड़ी देर पीछे गाढा होकर तैरने लग जावे तब एकत्र कर कुछ देरतक पानीमें हिलाते रहनेसे मक्खन जैसा होजाने पर उसका पानी बिलकुल निकालके धर रक्खे उसमेंसे बड़े जायफल की बराबर प्रातःकाल और सायंकालके समय देनेसे मंदाग्नि मिटताहै। (४) वैसेही दोनों समयमें लेके ऊपर कच्चा दूध पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै। (५) इसमें एक रती से चार रती तक आवश्यकतानुसार भंग मिलाके देनेसे पुरुषार्थ बढताहै। (६) रोगीके पास रालकी धूप देनेसे (जलानेसे) बड़ा लाभ होताहै। (७) राल संकोचक है और फोड़े और घावोंको साफ करनेवाली है। (८) मिश्रीके साथ रालकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै। (९) यह बफारे और लेपके काममें भी आतीहै। (१०) राल और बंबूलका गोंद बराबर लेके ६ मासेकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै। (११) रालका मंजन बनाके मलनेसे दांत दृढ होजातेहैं। (१२) रालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाकर दश मासेकी फक्की नित्य १८ दिनतक लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै।

(१३) डेढ़ मासे रालकी फक्की मिश्रीके साथ देनेसे रक्तातिसार मिटताहै। (१४) रालको तेलमें पिघलाकरके अग्नि आदिसे जलनेके कारण चमड़ी सफेद रहजाय उसपर लगाना चाहिये। (१५) रालके चूर्णको सरसोंके तेलमें मिलाके धूनी देनेसे अर्शका रुधिरस्राव बन्द होताहै। (१६) राल—शीतल पचनेमें भारी, कड़वी, कषेली, स्निग्ध और ग्राहीहै। और पित्त, रुधिरविकार पसीना, विसर्प, ज्वर, व्रण, विपादिका, फफोले, खुजली, अतिसार, अग्निदग्धव्रण, मूत्रकृच्छ्र और पसीनेकी दुर्गंधको मिटातीहै। (१७) इसके बीज वर्षा ऋतुके प्रारम्भमें पक जातेहैं, तब उनको इकट्ठा कर लेतेहैं। इन बीजोंको लकड़ीकी बानीकी साथ दो तीन घंटेतक औटा खूब धो बानी बिलकुल निकाल साफ करके फिर महुवेके पुष्पोंके साथ औटा या सेक रखतेहैं पीछे इनको पका पाचन शक्तिके अनुसार पेट भरके खानेसे दो तीन दिन भूख नहीं लगतीहै और नैरोग्यता नहीं बिगड़तीहै।

***

संख्या (३५)

(सं०) अश्वगंधा, तुरगी, पीवरी, पुष्टिदा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आसगन्ध	असगंध	आ.स.स ध	आसन्ध	अश्वगंधा	असगंध	पेन्नेरगड्ड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अमुक, राकिइग्	हिरिमद्दु			Withania somnifera Physalisflexuosa	Winter cherry

स्थान—यह हिन्दुस्थानके अधिक सूखे भागोंमें होतीहै परन्तु बंगालमें कम होतीहै।

पहिचान—इसका बूटा १ या २ हाथ ऊंचा होताहै। इसके चनोठी या चने जितने बड़े लाल रंगके फल लगतेहैं। इसका बूटा ४-५ वर्षके पीछे सूख जाताहै। इसकी जड़ चेपदार और कुछ कड़वी होतीहै।

प्रयोग-(१) इसके पत्तोंपर इरंडका तेल चुपड़ गर्म करके अंदीठपर बांधतेहैं (२) दूधके साथ आसगंधकी फकी लेनेसे बल बढताहै। (३) बीजोंकी ठंडेजलके साथ फकी लेनेसे मूत्र साफ आताहै। (४) इसके बीजों को दूधमें डाल रखनेसे दूध जमजाताहै। (५) इसके पंचांगका २॥ से ५ तोलेतक रस पीनेसे गठिया मिटतीहै। (६) इसका पाक बनाके खानेसे बादीके मात्र विकार मिटतेहैं। (७) अरडूसेके क्वाथके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे क्षयरोग (खैन) मिटताहै। (८) इसके चूर्णमें वंग मिलाके गर्म दूधके साथ फकी देनेसे वृद्धावस्थाकी निर्बलता मिटतीहै। (९) इसके और चोबचीनी के चूर्णको मधुके साथ चटानेसे रुधिर शुद्ध होताहै। (१०) धोली मूसली आदि धातुवर्द्धक औषधियोंके साथ इसका सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढताहै। (११) इसकी फंकी लेके ऊपर अंगूर खानेसे या उनका रस पीनेसे शरीर मोटा होताहै। (१२) दूधके साथ इसके बीजोंकी फकी देनेसे निद्रा आने लगतीहै। (१३) आसगंधके चूर्णकी फकी ठंडे जलके साथ देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै। (१४) इसका गठियापर लेप करतेहैं। (१५)बातरक्तको मिटानेके लिये आसगंध और चोबचीनीका क्वाथ करके पिलाना चाहिये। (१६) आसगंध और बहेड़के चूर्णकी गुड़में गोली बना गर्मपानीके साथ देनेसे हृदय की वायुपीडा मिटतीहै। (१७) इसके चूर्णको शक्कर और घृतमें मिलाके चटानेसे कटिशूल मिटतीहै। (१८) इसके क्वाथसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे मासिक धर्मसे शुद्ध हुई स्त्री गर्भको धारण करतीहै। (१९) आसगंध का कल्क एकभाग, घी एकभाग और दूध ८ या १० भाग लेके अग्निपर चढा घृत सिद्ध करके उसका सेवन करानेसे बल और बुद्धि बढतीहै। और शरीर पुष्ट होताहै। (२०) छाछ या तेलमें इसको पीसके लेप करनेसे नहरुवा (नारू) मिटताहै। (२१) स्त्रीके गर्भ रहनेके लिये इसके चूर्णकी ३॥ से ७ मासे तक फंकी रजोधर्मके प्रारम्भके पहिलेसे देना प्रारम्भ करे और दूध चांवलका भोजन करावे। (२२) इसके चूर्णमें बराबर खांड मिलाके एक तोलेके प्रमाण फक्की जलके साथ देनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का जाना बन्द होजाताहै।

संख्या (३६)

(सं०) अश्वत्थः, बोधिद्रुमः, चलदल, पिप्पलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पीपलको पेड़	पीपर(ल)	पीपळो	पिपळ	अश्वत्थ	पीपल	राविचट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अरशम्मर	अरशेगर			Ficus religiosa Urostigma religiosum	The Peepul tree The holy fig tree Popular leaved fig tree

स्थान—इसके वृक्ष पहाड़ोंमें अपने आप उगतेंहैं और बहुत ठौर लगाये जातेंहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ८० से ६० फुट, पेड़की ऊंचाई २५-३० फुट, और उसकी गोलाई १५—१६ फुट और किसी २ की २५ फुटतक होतीहै। इसकी शाखें बहुत लंबी २ फैलतीहै, इसके पत्ते ऊपरसे साफ, नीचेसे खरदरे और थोड़ी लम्बी नोंकवाले डालियोंके लटकते रहतेहैं, पतझड़में दस पन्द्रह दिनतक इसके एकभी पत्ता नहीं रहताहै। माघ से चैत्रतक नवीन पत्ते निकल आतेहै। वे थोड़े दिनोंतक कुछ लाल रंगके रहतेहैं। पीछे हरे हो जातेहैं। इसके छोटे २ फल लगतेहैं वे पकजाने पर गहरे बैजनी रंग के होजातेहैं। उनको मारवाड़ीमें पीप्या कहतेहैं, इसकी छाल मोटी कुछ भूरी और साफ होतीहै। इसकी छाल रंगत के काममें आतीहै। इसके लाख लगतीहै।

प्रयोग—(१) इसकी छाल संकोचकहै। (२) इसकी छालका क्वाथ या फांट पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै। (३) फोड़ेको पकानेके लिये इसकी छालका पुल्टिस बांधतेहै। (४) इसकी छालका क्वाथ या फांट पिलानेसे कंडू (खुजली) मिटतीहै। (५) इसकी जड़की छालके क्वाथसे विसर्प रोग मिटताहै। (६) इसके फल खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै। (७) इसके सूखे फलोंको पीस १४ दिनतक जलके साथ फक्की देनेसे श्वास मिटताहै। (८) इसके बीजोंको पीसके पीनेसे अंतर्दाह मिटताहै (९) इसके पत्ते और

कोंपलोंका क्वाथ पिलानेसे विरेचन लगताहै (१०) पित्तशोथको मिटाने-के लिये इसकी छालका ठण्ढा लेप करना चाहिये (११) इसकी छालके कोयलोंको पानीमें बुझा उस पानीको पिलानेसे हिचकी बन्द होतीहै (१२) इसकी नरम कोंपलोंको जला कपड़ छानकर पुराने बिगड़ेहुए फोड़ोंपर बुरकाने से वे सुधरने लगतेहैं (१३) इसका दूध या रस लगानेसे बिवाई भर जातीहै (१४) इसकी सूखी अंतरछालके चूर्णको नलिका यंत्र द्वारा गुदा-के नासूरमें फूंक देनेसे वह मिट जाताहै (१५) इसके फल खानेसे पाचन-शक्ति बढ़तीहै (१६) इसके सूखे फलोंके चूर्णकी फक्की कच्चे दूधके साथ ऋतुधर्मसे शुद्ध होनेक पीछे १४ दिनतक देनेसे स्त्रीका वंध्यापन मिटताहै (१७) इसके पत्ते और छोटी कोंपलोंका क्वाथ पिलानेसे और उसीसे स्नान करानेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (१८) इसके बीजोंको मधुके साथ चटाने से रुधिर शुद्ध होताहै (१९) इसकी और बड़की छालको पानीमें औटा-कर कुल्ले करानेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (२०) पेटकी पीडा मिटानेके लिये पीपलके २॥ पान पीस गुडमें मिला गोली बनाके देना चाहिये (२१) इसके पत्ते गर्म करके सीधी ओर से बाधनेसे वद बैठ जातीहै (२२) इसकी छालके निर्धूम कोयलोंको पानीमें बुझा उस पानीको नितारके पिलानेसे वमन और तृषा मिटतीहै (२३) इसके और नीमके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे अर्श मिटताहै (२४) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे पित्तज और नील प्रमेह मिटताहै (२५) इसकी सूखी छालके चूर्णको बुरकानेसे व्रण मिटताहै (२६) इसके पत्तोंको तपाकर बाधनेसे स्नायुक गल जाताहै (२७) इस-के २१ पत्ते पीस गुड़में गोलिया बनाके ७ दिन खिलानेसे चोटकी पीड़ा मिटतीहै (२८) इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे फोड़े मिटतेहैं।

संख्या (३७)

(सं०) पारीषः, गर्दभाण्डः, कन्दरालः, कमण्डलुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
पारस पीपल	पारिस पीपल	पारसपिपलो	परोसा पिंपल	परश:पिपुल	पारिसपिपल	गंग्राणि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पूवरसु	बूरग (गा)			Thespesia populnea Hibiscus populneodes	The Portia tree The umbrella tree Tulip tree

स्थान—पारस पीपलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमे होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई साधारण होतीहै, इसके पत्ते पतझड़में नहीं गिरतेहै ।

रंग—इसके फल और पुष्पोंमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै ।

तेल—इसके बीजोंमेंसे लाल रंगका गाढा तेल निकलताहै ।

गोंद—इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

प्रयोग—(१) इसकी लकडीके बीचके हिस्सेको घिसके लेप करनेसे पित्तके विकार और छातीकी पीडा मिटतीहै (२) इसके फलके पीले रसका लेप करनेसे खुजली और त्वचाके दूसरे रोगभी मिटतेहैं (३) इसकी छालके क्वाथसे स्नान करनेसे खुजली मिटतीहै (४) इसके क्वाथको ७॥ से १० तोले तक दिनमें दो बेर पिलानेसे रुधिर शुद्ध होताहै (५) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की देनेसे शरीरका बल बढताहै (६) इसके पुष्पों को पीसकर मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (७) इसके पत्तोंको पीस गर्म कर के लेप करने से जोड़ों की शोथ और पित्त शोथ मिटतीहै (८) इसके ताजे पत्तों को तेलसे चुपड गर्मकर सूजेहुए अंग पर बाधनेसे पीड़ा मिटतीहै (९) इसके फलके रसका लेप करनेसे दाद मिटता है (१०) नारूसे पैदा हुए छाले और घाव को मिटानेके लिये इसके पत्तों पर तेल चुपड़ गर्म करके बांधना चाहिये (११) इसकी लकड़ी के गर्भका क्वाथ करके पिलानेसे शूल मिटतीहै ।

संख्या (३८)

(सं०) असनः, महासर्जः, बीजकः, प्रियकः, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बिजैसार	विजैसार	बीया, आसन	असाणा विबला	पियाशाल विजयसार	विजयसार	वेगि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेंगइमरम	होन्नेमर			Pterocarpus Marsupinm	The Indian kino tree

स्थान—बिजैसार के वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनसे संयुक्तप्रदेश के बांदा जिलेतक होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष बहुत बड़ा होताहै। इसकी पेड़ सीधी और उस की गोलाई ६ से ८ फुट तक होतीहै। इसके पत्ते पत्तभड़ में गिर जाया करते हैं। इसके छोटे पत्तों के दोनों ओर रूंए होतेहैं। जब पत्ते पूरे बढ जातेहैं तब वे गहरे हरे और चमकदार होजातेहैं। इसके १॥—२ इंच मोटी नोकदार फलियां लगतीहैं।

फूलने फलनेका समय—वैशाख और जेठमें इसके पुष्प लगतेहैं, मगसरसे फागुन तक फल पकतेहैं।

इसके एक प्रकारका लाल गोंद लगताहै, इसका गोंद और छाल रंगतके काममें आते हैं।

प्रयोग—(१) इसका गोंद रुधिर सम्बन्धी रोगोंको (जैसे रक्तप्रदर और रक्तातिसार आदि) मिटानेके लिये काममें आताहै। (२) इसके पत्तोंको व्रण और क्षतों पर बांधते हैं। (३) इसके पत्तोंको पीसके त्वचाके रोगों पर लेप या मर्दन करना चाहिये। (४) इसका गोंद या पत्ते मुंहमें रखनेसे दंत पीड़ा मिटतीहै। (५) इसके पत्तोंके क्वाथसे कुल्ले करनेसे मुखपाक और दंतपीड़ा मिटतीहै। (६) अतिसार मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि यह ग्राहीहै। बच्चे और कोमल प्रकृतिवाले मनुष्यों

के लिये यह बड़ी उत्तम औषधिहै। (७) इसकी लकड़ीको पानीमें घिसकर लेप करनेसे चोटकी पीड़ा मिटतीहै। (८) इसकी लकड़ीको जोकूट कर पानी में भिगो ४० दिनतक पिलानेसे कुष्ट मिटताहै।

संख्या (३६)

(सं०) अस्थिसंहारः वज्राङ्गः, ग्रन्थिमान, कोष्टघारिटका ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हाडजोड	हड़जोर हडजुडी	हाडसांकल(ख)	हाडसन्धी	हाडोच हाडभागा	हाडजोड़	नल्लेरु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
पेरडै (इ)	मंगरवल्लि			Vitis quadrangu-laris Cissus Q-	The Edible stemmed vine

स्थान–इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें हिमालयसे लंकातक उष्ण भागोंमें मिलतेहैं।

पहिचान—इसकी बेल होतीहैं, इसकी शाखा और डालियें चोखूंटी होतीहैं, पत्ते मोटे और गिरदार होतेहैं। पुष्प गुलाबी या पियाजी और श्वेत होतेहैं छोटे मटरके बराबर लाल रंगके फल लगतेहैं, उनमें एक बीज होताहै। इसकी डालियें पुरानी होनेसे खट्टी पड़जातीहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते और कोपलोंके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै (२) इसकी शाखाका रस कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है (३) इसकी शाखाके रसको नाकमें टपकानेसे निन्हाई मिटतीहै। (४) इसके पंचागको गर्मकर उसका २ तोले रस निकाल उसमें दो तोले घी एक तोला गोपीचन्दन और एक तोला शक्कर मिलाके चटानेसे मसूढोंकी सूजन और बिना समय मासिक धर्म होना मिटताहै। (५) इसकी शाखाको चूने के पानीमें उबाल कर पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै। (६) इसकी फक्की लेनेसे बल बढ़ताहै। (७) सोंठके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे मंदाग्नि मिटतीहै। (८) इसकी नरम कोपलोंको थोड़ीसी सेक चटनी बनाके

खिलानेसे पेटके रोग मिटतेहे और भूख लगतीहै (९) इसकी कोंपलोंके टुकड़ोंको मिट्टीके बरतनमें बन्दकर जला उस भस्मकी फक्की देनेसे अजीर्ण और मंदाग्नि मिटतीहै। (१०) इसकी कोमल शाखाओंका बिछौना करके उसपर सोते रहनेसे पृष्ठ वंश (रीडकी हड्डी) की पीड़ा मिटतीहै। (११) इसकी थोड़ीसी कोमल कोंपलोंको पकाके खिलानेसे बल बढताहै।

संख्या (४०)

(सं०) अहिफेनम्, अफेनम्, नागफेनम्, खसफलक्षीरम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अफीम आफू अमल	अफीम अफयून	अफीण	अफु, फू	आफिन्	अफीम	नल्लमंदु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अफिनि	अफिनि	अफियून		Papaver Somniferum	Opium, or white poppy opium

स्थान—यह हिन्दुस्थान में प्रायः सब ठौर बोई जातीहै।

तैल—खसखसके दानोंमेंसे तीसरे हिस्सेमें कम तेल निकलताहै, अर्थात् १० सेर में से ३ सेर तेल निकलता है।

प्रयोग—(१) अफीमके लेतेही पहिले तो शरीरका आलस्य और ढीलापन मिटके फुर्ती पैदा होतीहै और पीछे नींद आने लगतीहै (२) पांइटे और पीड़ा मिटानेके लिये इसकी थोड़ी २ मात्रा देनी चाहिये (३) इसके खानेसे शरीरके सब अंगोंपर स्नायु जाल द्वारा असर होताहै (४) यह त्वचाके सिवाय शरीरके सब रसोंको शोषण कर जातीहै (५) इससे पसीना पैदा होताहै (६) इसकी अधिक मात्रा देनेसे विषका काम देतीहै। (७) जिस रोगके अंतमें चैतन्यता जाती रहतीहै उस रोगमें इसको नहीं देना चाहिये (८) केवल इसीको अथवा रसकपूर और सुर्मेके साथ पीस लेप

करनेसे कोमल अगकी शोथ मिटतीहै (९) इसका लेप करनेसे हाथोंकी बादीकी पीड़ा मिटतीहै (१०) इसको सुर्मे और कपूरके साथ पीस कर देने से पुराना ज्वर छूटताहै (११) इसके लेनेसे घबराहट मिटतीहै। (१२) इसके लेनेसे नींद आने लगतीहै (१३) जिस रोगमें नेत्रोंकी पुतली सुकड़ी हुई हो उसमें इसको नहीं देना चाहिये (१४) इसकी अधिक मात्रा बार २ देनेसे बांइटे मिटतेहैं (१५) इसके तेलको मस्तक पर लगानेसे नींद आतीहै और मस्तिष्कमें बल बढताहै। (१६) इसके बीजोंमें मादकतत्त्व नहींहै। इन को सेककर खातेहैं और गर्मीके दिनोंमें ठंडाईकी साथ पीसके पीतेहैं। (१७) अफीमकी मात्रा १ बाजरेके दानेसे आवश्यकताके अनुसार ४ रती तक देना चाहिये पीड़ाके समयमें मात्रा नियत नहींहै जितनी मात्रासे पीड़ा मिटे, उतनी ही मात्रा देनी चाहिये परन्तु जिसके इसका व्यसन हो उसके लिये भी मात्राका प्रमाण नहींहै (१८) इसका असर मस्तिष्क और पृष्ठवंशमें जो काम करनेवाली रगें है उनके मूलमें होता है, वहांसे उन रगोंके द्वारा शरीरके पृथक् २ अंगोंपर होताहै। (१९) फेफड़े, दिल और आमाशय आदिपर एक प्रकारकी झिल्ली होतीहै उसकी सूजन उतारनेके लिये केवल अफीम या रसकपूर या सुर्मे या दूसरी औषधियोंके साथ लेप आदिमें बहुत काम आताहै। (२०) जिन रोगोंमें शरीरकी निर्बलतासे मृत्यु होतीहै, उनमें इसका लेपके काममें जियादा लाना चाहिये। (२१) जिस सोजिशसे या जिन रोगोंसे मनुष्य अचेत होके या गला घुटके मरजाताहै वहां इसको लेपके काममें नहीं लाना चाहिये। (२२) अमाशयकी झिल्लीकी सोजिश के रोगमें इसका लेप जरूर करना चाहिये। (२३) इससे रुधिर और नाड़ियों की तेजी कम होजातीहै। (२४) हनुस्तंभ या आक्षेपक वायु और गठिया की तेज पीड़ा और प्रलाप आदि रोगोंमें अफीमका खिलाना बहुत उपकारीहै (२५) आंखके दूखनेमें और आंखके दूसरे रोगोंमें इसका लेप बहुत उपकारी है। (२६) शरीरके अंगके निकम्मे होजानेसे जो फैलनेवाला व्रण होजाताहै उसपर इसका बहुत हल्का लेप करनेसे लाभ होताहै। (२७) स्नायु सम्बन्धी और बादीकी पीड़ा पर इसका लेप करनेसे बहुत लाभ होताहै। (२८) अफीम और नोसादर पीसके दांतके छिद्रमें रखनेसे दंत पीड़ा मिटतीहै। (२९) ४ रती अफीम और २ लोंग पीस गर्म कर लेप करनेसे बादी और सर्दीकी मस्तकपीड़ा

मिटतीहै । (३०) अफीम और हुक्केके कीटेकी वत्ती बनाके देनेसे नाडीव्रण मिटताहै । (३१) अफीमको सेककर खिलानेसे पक्वातिसार मिटताहै । (३२) थोडी अफीम खानेसे सर्दीसे पड़ाहुआ गला ठीक होजाताहै । (३३) अफीमकी ४ चावल भर भस्म गुलाबके तेलमें मिलाके कानमें टपकानेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै । (३४) अफीम और कोंदरु गोंद दोनों बराबर ले पानीके साथ पीसके सुंघानेसे नकसीर बन्द होतीहै । (३५) अफीम खिलानेसे गर्मीका होलदिल मिटताहै । (३६) अफीमको तिलोंके तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै । (३७) इसके डोडे और अजवायनको ओटाके कुल्ले करनेसे पडाहुआ गला ठीक होजाताहै । (३८) बच्चा होनेके पीछेकी गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके डोडोंका काथ पिलाना चाहिये । (३९) ४ से ६ मासे तक इसके डोडे पीसकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै । (४०) इसके १ डोडे और ७ कालीमिरचोंको कूट, ओटाकर पिलानेसे चौथैया ज्वर छूटताहै । (४१) बीजा सहित इसके६तोले डोडोंके क्वाथका छटछिटांक बूरेके साथ शर्बत बनाकर उसमेंसे ३ तोलेकी मात्रा पानीके साथ देनेसे प्रतिश्याय और खांसी मिटतीहै । (४२) डंडी दूर किये हुए इसके २ नग डोडे और २ मासे सैंधेनमकको २० तोले पानीमें ओटा १० तोले रखछान सोतेसमय पिलानेसे प्रतिश्यायकी खांसी मिटतीहै । (४३) कमरकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसके डोडे पानीमें भिगोकर इतना पिलाना चाहिये कि नशा न हो । (४४) इसके बीजोंको दूधके साथ पीसके लेप करनेसे केशोंका दारुणरोग मिटताहै । (४५) जोंकके डंक पकजावे तो इसके बीजोंको पीसके लेप करना चाहिये । (४६) एक तोले पोस्तके दानेमें बराबर मिश्री मिलाके फक्की देनेसे कमरकी पीडा मिटतीहै । (४७) अदरखके रसकी २१ वेर भावना देनेसे अफीम शुद्ध होताहै । (४८) मरनेके लिये जो अधिक अफीम खाजाताहै उसकी पहिचान यहहै—प्रारंभमें उसके शरीरमें कुछ उत्तेजना होतीहै, परन्तु पीछे तुरतही शरीरमें शिथिलता पैदा होजातीहै उसके पीछे शरीर शून्य होकर निद्रा आनेकी जैसे होके अत्यंतमूर्च्छित होजाताहै और आंखकी पुतलियें सुकड जातीहैं, इस अवस्था तक तो रोगीकी चिकित्सा होसकतीहै परन्तु जब गिलगिली और चोट आदिका ज्ञान नहीं रहताहै तब चैतन्य करनेवाली औषधियोंका प्रभावबहुत कम होताहै।

गिलगिलीका ज्ञान बंद होनेके पीछे शरीर ठंढा पड़ने लग जाताहै होठ और चहरा मुरझा जाताहै नाड़ी मन्द और निर्बल होजातीहै। श्वासकी नलिका सुकड जानेसे श्वासकी गति विगडके खरांटेसे श्वास लेताहुआ, मरजाताहै।

इसकी चिकित्सा—जो मनुष्य अफीम खागया हो उसको मैनफल, सैंधानोंन और पीपलसे या नीमके क्वाथसे या तमाखूके क्वाथ से या घी और नोंनको चटाकर या कोई वामक औषधियोंसे वमन कराना चाहिये, ३-४ वमन हो जानेके पीछे घी और दूध पिलाना चाहिये, जबतक दूध और घी पचने नही लगे अर्थात् वमन होतीरहे तबतक दूध और घी पिलाते रहना चाहिये और सोने नहीं देना चाहिये, और टहलाते रहना चाहिये। जो वमनसे किसी प्रकारका लाभ नहीं दीखे तो विरेचन कराना चाहिये, अथवा अफीमका विष उतारनेवाली दूसरी औषधियोंका प्रयोग करना चाहिये।

संख्या (४१)

(सं०) आकल्लकः, आकारकरभः, अकल्लकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अकलकरो	अकरकरा	अकलकरो	अक्कलकारा	आकरकरा	अकरकरा	अकरकरम्

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अकरकार	अक्कलकरे	आकरकरहा		Anacyclus Pyrethrum	The Pellitory of Spain Pellitory root

स्थान—इसके वृक्ष ऐफ्रिका देश के उत्तर के प्रान्तमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी जड़ उत्तेजकहै। (२) इसका लेप करनेसे चमड़ी लाल होजातीहै। और उस ठौर चरपराहट लगजातीहै। (३) मधुके साथ इसका लेप करनेसे जीभ का सुन्नापन मिटताहै अर्थात मुख में पानी छूटजाता है। (४) इसको चबाते रहनेसे मुखसे लाल गिरके डाढकी पीड़ा मिटजातीहै।

(५) इसको पीस गर्मकर ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै। (६) दांत तालुमूल और गलेके रोगोंमें इसके कुल्ले बहुत लाभकारी हैं (७) दस्त लगानेके लिये इसके ६ मासे चूर्ण की फक्की देनी चाहिये (८) इसको जैतून के तेलमें पका के शरीरपर मर्दन करनेसे बहुतसा पसीना होके ज्वर उतर जाताहै। (९) इसका क्वाथ करके पिलानेसे पुरानी सूखी खासी मिटतीहै। (१०) इसका चूर्ण देनेसे बच्चा जल्दी बोलने लगजाताहै। (११) इसके चूर्णका मजन करनेसे दांतका दर्द मिटताहै। (१२) सोंठ के साथ इसके चूर्ण की फक्की लेनेसे मंदाग्नि और अफारा मिटताहै। (१३) मूपली आदि धातुवर्द्धक औषधियों में मिला के दूधके साथ फक्की देनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै। (१४) कुलिजन, सोंठ और अकलकरे का क्वाथ करके पिलानेसे हृद्रोग मिटताहै। (१५) इसको लौंग के साथ देनेसे शरीर की शून्यता मिटतीहै। (१६) चिरायतेके अर्क के साथ इसकी फकी देनेसे निरन्तर रहनेवाला ज्वर छूटजाताहै। (१७) इसको बादामके लपटेके साथ खिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै। (१८) इसको पीपलामूल के साथ ओटाके देनेसे चहरेके बादीके रोग मिटतेहैं। (१९) आख के ऊपर इसका लेप करनेसे उसकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै। (२०) उशने के साथ इसका काथ करके पिलानेसे अर्द्धाङ्ग मिटताहै। (२१) ब्राह्मी और शंखावली के साथ इसका क्वाथ करके पिलानेसे मिरगी मिटतीहै। (२२) इसका क्वाथ पिलानेसे आलस्य मिटताहै। (२३) इसके प्रयोगसे जलोदर मिटताहै (२४) इसको अखरोट के तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे गृध्रसी मिटतीहै। (२५) इसका क्वाथ पिलानेसे मासिकधर्म ठीक होने लग जाता है। (२६) त्रिफला और बूरेके साथ फक्की देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटती है। (२७) इसके २॥ रत्ती चूर्णकी फक्की देनेसे शरीर में उत्तेजकता होतीहै। (२८) सोंठके साथ इसकी फक्की देनेसे आलस्य और शिथिलता मिटतीहै। (२९) इसको दांतोंके बीचमें दबाये रखनेसे प्रतिश्यायकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै। (३०) इसके और राईके चूर्णको मधुमें मिलाकर जीभ पर लेप करनेसे अर्द्धांग वायु मिटतीहै। (३१) इसको सिरकेमें पीस मधुमें मिलाके बिना नागेके दिन चटानेसे अपस्मार का वेग रुकताहै।

(३२) रती का पांचवा हिस्सा अकलकरा और एक-रती नौसादर और एक रती अफीम ले कीड़े-खाये हुए दांत की खोखलमे रखनेसे उसकी पीडा मिटतीहै। (३३) अकलकरा और कपूर दोनो बराबरले पीसकर मंजन करनेसे सब प्रकारकी दंतपीड़ा मिटतीहै। (३४) एकतोले अकलकरे को पांच तोले कांदेके रसमे पीसके लेप करनेसे इन्द्री मोटी होतीहै।

संख्या (४२)

(सं०) आकाशवल्ली, दुस्पर्शा, व्योमवाल्लिका, अमरवल्लरी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अमरबेल	अमरबेल	अमरवेल	अमरबेल	आलोकलता	निराधार	पौचफिगा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अं०
कोट्टन	अमरवाल्लि	(छोटा), अफतमून		Cuscuta reflexa Casytha filiformis	The dodder

स्थान—यह हिन्दुस्थानमे सब ठौर होतीहै।

पहिचान—यह बडी और छोटीके भेदसे दो प्रकारकी होतीहै। बड़ी अमरवेलकी बडी भारी पीले रंगकी बेल होतीहै, यह जिस वृक्षपर होतीहै उस की हरेक शाखा और पत्तोको पूरा ढकदेतीहै, यह पृथ्वीमे उगतीहै, परन्तु वृक्ष पर चढके पृथ्वीसे अपना सम्बन्ध तोड देतीहै। और उसीपर फैलती रहतीहै, इसके पुष्पोंमे मीठी सुगंध आती है। इसके बीज कडवे होतेहै। इसमेंसे एक प्रकार का रंग निकाला जाता है।

प्रयोग-(१) यकृत्की कठोरता मिटानेके लिये उसपर इसका लेप करना चाहिये। (२) यकृत् का बल बढानेके लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये। (३) इसका क्वाथ पिलानेसे तृषा बढतीहै। (४) उशबेके साथ इसको औटा छानकर मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होताहै। (५) इसके

बीजोंको उबालकर, पेटपर बांधनेसे अपशब्द और डकारें होके पेटकी पीडा और आध्मान मिटजाताहै । (६) यह रेचकहै । (७) इसका हिम पिलानेसे कोष्ठशुद्ध होजाताहै । (८) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे रुधिर शुद्ध होताहै । (९) वातोन्माद मिटानेके लिये इसके बीजोंका प्रयोग करना चाहिये । (१०) इसकी शाखाओंका क्वाथ पिलानेसे पित्तके रोग मिटतेहैं । (११) इसके चूर्णके लेनेसे जीर्णज्वर और अफारा मिटताहै । (१२) इसको पीस कर लेप करनेसे कंडू (खुजली) और पामा मिटतीहै ।

स्थान—छोटी अमरवेल हिन्दुस्थानमें समुद्रके कनारे हर ठौर होतीहै. परन्तु उष्ण प्रदेशोंमें भी घास और दोब पर हुआ करतीहै ।

प्रयोग—(१३) अमरवेल पित्तके विकार मिटातीहै । (१४) इसके चूर्णमें सोंठ और घी मिला लेप करनेसे पुराना घाव भरताहै । (१५) इसको तिलों के तेलमें मिलाकर लगानेसे वालों की जड़ें मजबूत होजातीहै । (१६) इसके रसमें शक्कर मिला आंखमें टपकानेसे आंखोंके वरोड़े और सूजन मिटतीहै । (१७) इसका क्वाथ पिलानेसे आंवल जल्दी गिरजातीहै । (१८) इसके क्वाथसे पसीना लिरानेसे जलोदर मिटताहै । (१९) यह बलवर्द्धक और रक्तशोधक है । (२०) यह वीर्यको बढातीहै और वीर्यको अधिक प्रवर्त्त करतीहै । (२१) रक्तार्शके रुधिरको रोकनेकेलिये अमरबेलका प्रयोग किया जाताहै । (२२) इसको बच्चों की गर्दन, भुजा और गुल्फोंपर बांधने से कई प्रकारके रोग मिटतेहैं ।

संख्या (४३)

(सं०) आखुकर्णी, मूषिकाह्वा, पत्रश्रेणी, सहस्रमूली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
उदरकन्नी	मूसाकर्णा	उदरकनी	उदीरकानी भोवनी	मूषाकानी	मूसाकन्नी	एलुकचेविचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	वल्लिहरुवे			Ipomaea reniformis Convolvulus reniformis	

स्थान—यह अधिक उष्ण प्रदेशों की आर्द्र भूमिमें और बिहार, राजपूताना, दक्षिण हिन्दुस्थान आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें उगतीहै ।

पहिचान—इसके छत्ते होतेहैं उनके गोल पत्ते जमीनपर चिपे रहतेहैं हरेक पत्तेके जड़ निकलतीहै । इसकी डंडी कुछ लालरंग की होतीहै और हरेक पत्तेके पास छोटे २ पीलेरंगके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) चूहेके दंशपर इसका स्वरस लगाना चाहिये । (२) इसका स्वरस कानमें डालनेसे कानके व्रण मिटतेहैं । (३) इसको काली मिरचोंके साथ घोट छानके पिलानेसे मूत्रका विरेचन होताहै । (४) प्लीहादिक यंत्रोंके द्रवके प्रवाह की रुकावट मिटानेकेलिये इसके पंचांगका क्वाथ पिलाना चाहिये । (५) इसके पञ्चांगको औटाके पिलानेसे बच्चोंके श्वास कास और पेटके रोग मिटतेहैं । (६) इसका रस पिलानेसे बालकोंके पेटके कीडे मरजातेहैं । (७) इसके पत्तोंको पीस आटेमें मिला पूरी बना, खिला ऊपर कांजी पिलानेसे कीड़े मरजातेहैं ।

——०० ——

संख्या (४४)

(सं०) आखुपाषाणः, मूषकपाषाण, गौरीपाषाणकः, शतमल्लः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सोमल	सोमल संखिया	शोमल	सोमल	शिमुलक्षार	सिम्मलखार	तेल्लापाषाणमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वल्लैपाषाण	शंखपाषाण	सम्मुलफार	मर्गेमूश	Arsenicum Album	White arsenic metallic arsenic Oxide of arsenic

प्रयोग—(१) शीत ज्वरको रोकनेके लिये इसकी एक रतीके साठवें हिस्सेसे आधरतीतक मात्रा देनी चाहिये । (२) धातुवर्द्धक पदार्थोंके साथ इसका प्रयोग करनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै । (३) बारीसे होनेवाले वेगको रोकनेके लिये

इसका प्रयोग बहुत लाभकारीहै। (४) इसका तेल मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै। (५) सड़े हुए फल-पुष्पादिक की या मलमूत्रादिकसे दुर्गंधयुक्त पृथ्वी की गंधसे पैदा हुए ज्वरको मिटानेके लिये इसकी बहुत कम मात्रा देना चाहिये। (६) रुधिरविकार में इसकी बहुत थोड़ी मात्रा देके ऊपर त्रिफले का क्वाथ मधु मिलाके पिलाना चाहिये (७) १ रती संखिया और १ तोले चावलोंको पीस काकदार शीशीमें धर रक्खें उसमेंसे १ रती चूर्ण सुंघानेसे आधाशीशी मिटतीहै। (८) इसके तेलका मर्दन करनेसे स्नायुजालकी पीड़ा मिटतीहै। (९) इसके तेलके मर्दनसे तथा तेलको पानपर चुपड़ कर खिलानेसे बांइटे मिटतेहैं। (१०) रुधिर शुद्ध करनेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करनेसे कुष्ठ रोगमें बड़ा लाभ होताहै। (११) इसको पानमें रखके खानेसे पुराना प्रतिश्याय मिटताहै। (१२) इसको घिसकर बिच्छूके दंशपर लेप करनेसे उसका विष उतरताहै। (१३) इसका लेप करनेसे मेदेकी गांठ मिटतीहै। (१४) एकरती संखिया और एक मासे सफेद कत्थेकी, मोठकी बराबर गोलियां बनाके १—२ गोली ठंड लगनेके पहिले देनेसे शीतज्वर रुकताहै। (१५) संखिये को जलभंगरेके रसमें ७ दिनतक खरल कर बाजरे जैसी गोलियां बना पहिले दिन एक एक गोली संध्या सवेरे देनी चाहिये यदि हवा शीतल हो और रोगी बलवान हो तो दो दो गोली और रोगी निर्बल हो या हवा उष्ण हो तो एक एक गोली दोनों वक्त देना चाहिये ऐसे १४ या २१ दिन देनेसे उपदंश मिटताहै। इसके खानेके समय वमन अधिक होतो नागरवेलके पान खिलाने चाहिये और भलीभाति पथ्य रखना चाहिये। (१६) संखियेको बैंगनमें रख उसपर कपड़मिट्टीदे भोभलमें भुरता करलेवे फिर इसीप्रकार बैंगन में ७ बेर पका उसको निकाल पीस लोहेकी कढ़ाईमें आधसेर जलके संगमें ओटावे जब पानी सूखजाय तब उसकी बराबर गेरू मिला खरल कर एक चांवल से रतीतक रोगीके बलानुसार देनेसे सब प्रकारके ज्वर छूटतेहैं। इसके सेवनके समय मूंगकी दाल और चावलोंका पथ्य देना चाहिये। (१७) संखियेका घी बनानेकी रीत—भैंसके १० सेर दूधमें ५ तोले संखियेके छोटे टुकडोंको पोटलीमें बांधके बीचमें लटका देना चाहिये ऊपरसे उसका मुख बन्धकर कपड़मिट्टी देके ऐसी मृदु आंच देना चा-

संख्या (४९)

(सं०) भूम्यामलकी, भूधात्री, दृढपादिका, हिमालया।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	भूँई आमला	भो आवली	भुय आवळी	भुँइ आमला	पाताल आंवला	नेल उसरिक

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कीडामूनेल्लि	किरिनेल्लि			Phyllanthus Niruri P Urinaria	

स्थान—भुँई आंवली के वृक्ष हिन्दुस्थान के अधिक उष्ण भागों में अर्थात् पंजाब से पूर्व की ओर आसाम तक और दक्षिण की ओर ट्रावन्कोर तक होते है।

पहिचान—इसका बूंटा प्रायः हाथ भर ऊंचा होताहै इसके इमलीके पत्तों जैसे महीन पत्ते होतेहैं। इसके पत्तों के नीचे हरे रंग के छोटे छोटे बीज लगते हैं।

फूलने फलने का समय—यह वर्षाऋतु में पैदा होतीहै और कार्ती तक फल फूल कर सूख जातीहै।

प्रयोग—(१) इसका दूधिया रस क्षत पर लगाने से जल्दी भर जाता है। (२) पत्तों के पुल्टिस में नमक मिला के लगाने से खजली मिटतीहै। (३) पत्तों को पीस कुचली हुई ठौर पर लेप करने से वहां की पीड़ा मिटती है। (४) १। तोले ताजी जड़ को दूध के साथ पीस छान कर दिन में दो बेर पिलाने से कामला मिटताहै। (५) इस के पत्ते और कोमल कोंपलों से घाव भरताहै, मूत्रवृद्धि होतीहै और पेट के यन्त्रों के बहाव की रुकावट मिटती है। (६) इसके पत्तों का क्वाथ पिलाने से पित्त का प्रकोप मिटताहै। (७) जड़ के चूर्णकी पानीके साथ फक्की देनेसे कामला मिटताहै। (८) कोमल कोंपलोंको मेथीके बीजोंके साथ देनेसे पुरानी संग्रहणी मिटतीहै। (९) इसके पंचांगका क्वाथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके जलंधर मिटताहै

इसकी जड़को चांवलोंके पानीके साथ देनेसे मासिकधर्म में प्रमाण से अधिक रुधिरका निकलना बन्ध हो जाता है। (११) इसके कोमल पत्ते और कालीमिरचोंके कल्ककी जायफलजितनी गोली बनाके देनेसे शीतज्वर और छोड़ २ के आनेवाला ज्वर छूटजाताहै। (१२) इसके पत्तों को मलकर लेप करनेसे खुजली मिटतीहै। (१३) पत्तोंको दूधके साथ मलकर पिलानेसे जलोदर और मूत्र सम्बन्धी रोग मिटतेहैं। (१४) पत्तों के क्वाथको तालु पर लगानेसे ऊष्मा कम होके घबराहट मिटतीहै। (१५) इसके पत्तोंकी मात्रा ३॥ मासेकी है। (१६) मिश्रीके साथ इसके पंचांगका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्र सम्बन्धी अंगोंके रोग मिटतेहैं। (१७) पत्तोंके हिमके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै। (१८) इसकी जड़के चूर्णको चांवलोंके पानीके साथ २—३ दिन देनेसे रक्तप्रदर मिटताहै।

संख्या (५०)

(सं०) आम्रः रसालः सहकारः कामवल्लभः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
आम, आंबो	आम	आंबो	आंबा, अंबा	आम्र, आम्	आम	मामिडिकाय्

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मांगाय्	माविनकायि	अम्बज	अम्बा	Mangifera indica M. domestica	The mango tree

स्थान—आमके वृक्ष हिमालयमें कमाऊंसे भूटान तक खासियापहाड़, अवध, मद्रास, विहार, पश्चिमी प्रायद्वीप खानदेशसे दक्षिणकी ओर और राजपूताना आदि हिन्दुस्थानके सब देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—हिन्दुस्थानमें आम कई प्रकारके होतेहैं। इसके वृक्षकी ऊंचाई ६०—७० फुट होतीहै। इसकी पेड़ सीधी और गुलाईमें १५ फुटकी होतीहै। इसके माघसे जेठतक ६ से ८ इंचतक लम्बे नोकदार पत्ते लगते रहतेहैं

वे प्रारम्भमें लाल, पीछे गहरे हरे रंगके होजातेहैं। इसके कुछ पीले रंगके उत्तम सुगंधवाले पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। इसका फल २ से ६ इंचतक लम्बा होताहै वह पकनेपर पीलेरंगका होजाताहै। ये देशभेदसे छोटे, बड़े, कई प्रकारके होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—इसके माघसे चैततक पुष्प लगतेहैं। वैशाखसे अषाढतक फल पकते रहतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै। इसकी छाल और पत्तोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै। इसकी कच्ची केरी रंगतके काममें आतीहै। इसकी मींगीमेंसे तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) आमका पकाहुआ फल पौष्टिक, बलवर्द्धक, स्निग्ध, सारक और मूत्रजनकहै। (२) इसके फलके छिलके, चूंसे और खट्टे कच्चे फल दस्तबंध करनेवालेहैं। (३) इसके कच्चे फलोंका अचार पाचक और क्षुधा लगानेवालाहै। (४) आमके मोर, गूदा और छाल—ठण्ढे, रूक्ष और ग्राहीहैं। इनके प्रयोगसे अतिसार मिटताहै। (५) इसके सूखे पत्तोंको चिलममें धर उनका धूंआं पीनेसे गलेके रोग मिटतेहैं। (६) विसूचिका और महामारी (प्लेग) के समयमें केरीका मुरब्बा खाने और लगानेसे उनका असर कम होताहै। (७) पत्तोंके बीचकी सलीकी राख को लगानेसे गुहांजनी मिटतीहै। (८) इसकी कच्ची गुठली कड़वी होतीहै उसके खानेसे आंतोंके कीडे मरतेहैं। (९) सेकीहुई गुठली की गिर खानेसे आंतोंका ढीलापन मिटताहै। (१०) आमके गोंदको नींबूके रस या तेलमें मिलाकर लगानेसे खुजली और त्वचा के रोग मिटतेहैं। (११) इसके पकेहुए फलोंका रस गर्भाशय फुफ्फुस और आंतोंमेंसे रुधिरके बहावको बन्ध करताहै। (१२) आमकी गुठलीकी गिरीका १०–१५ रत्ती चूर्ण देनेसे आंतोंकेकीडे, रक्तार्श और रक्तप्रदर मिटताहै। (१३) इसकी गुठलीकी गिरीका लपटा बनाके खिलानेसे कृच्छ्र साध्य अतिसार मिटताहै। (१४) गुठलीकी गिरी श्वासको मिटातीहै। (१५) अमचूरको मुखमें रखनेसे या जलमें भिगो उस जलसे गंडूप करनेसे शीताद रोग मिटताहै। (१६) आमके पापड़ खानेसे शीताद रोग मिटताहै। (१७) आमके पत्तोंका धूआं पीने से हिचकी मिटतीहै। (१८) केरीको भूभलमें सेक उसको पानीमें मल शक्कर मिलाके पीनेसे लू और घामका असर मिटताहै या सेकी हुई केरीकी गिरीका

शरीर पर मर्दन करनेसे भी उनका असर नहीं होताहै । (१९) पकेहुए आम की गुठलीकी गिरीके आटेकी रोटी बनाके खानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै । (२०) एक गुठलीकी गिरी दिनमें दो वेर काममें आसकतीहै। (२१) आमके सूखे पुष्पोंका काथ पीनेसे या उनके चूर्णकी फकी देनेसे अतिसार पुराना आमातिसार और पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै। (२२) बिवाईमें आम के गोंदका प्रयोग लाभकारीहै। (२३) आमकी गुठलीकी गिरी और गोंद और इन्द्रयव सब बराबर ले पीस एक मासे चूर्णकी फकी दिनमें दो तीन वेर देनेसे जवान मनुष्यके अतिसार और आमातिसार मिटजातेहै। (२४) इसकी गुठलीकी थोडी गिरीको थोड़े पानीमें भिगो पीस कुछ देर पीछे अग्निदग्धपर लगानेसे तुरन्त ठंढाई पडजातीहै। (२५) कैरीका शर्बत पिलानेसे पसीना आताहै। (२६) फटे हुए पैरों पर या अंगुलियोंके बीचके घावोंपर आमकी छाल या पत्तोंका रस लगाना चाहिये। (२७) बच्चोंका अतिसार मिटानेके लिये गुठलीकी अधरतीसे डेढरती तक गिरी इकली या बीलगिरके साथ देना चाहिये। (२८) इसकी कोमल कोपलोंको पानीके साथ पीस छान थोड़ी शक्कर मिला के पिलानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होताहै। (२९) कैरीको पीसके नेत्र पर बांधनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै। (३०) इसकी अंतर छालको पीस छान तुरंत ही पिलानेसे दस्तें बन्ध होतीहै। (३१) नित्य प्रातःकाल मीठे आम चूंसे ऊपरसे सोंठ और छुहारे डालके ओटाये हुए दूधको पीनेसे पुरुषार्थ बढताहै और शरीर पुष्ट होताहै। (३२) अमचूर और सैंधे नमकको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै। (३३) इसके और जामूनके पत्ते और छालके काथसे गुदाको धोनेसे अर्श मिटताहै। (३४) इसकी गुठलीकी गिरीके चूर्णकी नस्य देनेसे नकसीर बंध होतीहै। (३५) आमकी गुठली और बीलगिरके काथमें मधु और शक्कर मिलाके पिलानेसे छर्दी और अतिसार मिटताहै। (३६) इसकी गुठलीकी गिरीके रसके सुंघानेसे नकसीर बन्ध होतीहै। (३७) इसकी जड़ हाथमें बांधनेसे पित्तज्वर छूटताहै। (३८) गुठलीकी गिरीको कांजीके साथ पीस नाभिपर लेप करनेसे अतिसार मिटताहै (३९) अमचूरको पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका विष उतरताहै। (४०) गुठलीकी गिरी और हरडकी छाल दोनोंको बराबर ले दूधके साथ पीसके

लेप करनेसे दारुण रोग मिटताहै। (४१) इसके पत्तोंके रसको गुनगुना कर कानमें डालनेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै। (४२) इसका अचार खानेसे तिल्ली कम होती है। (४३) इसकी छालको दहीके जलके साथ पीस नाभि पर या उसके आस पास लेप करनेसे अतिसार मिटताहै। (४४) इसके और जामुन के पत्तोंको सवा सवा तोले स्वरसको या स्वरस न निकले तो थोड़े दूधके साथ रस निकाल पाव दूधमें मिला थोडा बुरा डालकर आठदिन तक पीनेसे रक्तार्श और वातार्श मिटतेहैं। (४५) आमके हरे पत्ते मलकर तमाखू की भांति हुके में पीनेसे अर्श मिटताहै। (४६) वर्ष भरके पुराने अचारका तेल लगानेसे गंज मिटतीहै। (४७) इसके और जामुनके पत्तोंके क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे वमन और तृषा बन्ध होतीहै। कैरी और आम कई प्रकारसे खानेके काममें आतेहैं।

———०———

संख्या (५१)

(सं०) कोशाम्रः, घनस्कंधः, वनाम्रः, जंतुपादपः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	कोशम्भ (म)	डुंगरी आंबो	लालरान, आंबा	केओडा	कोशाम	कोंड मामिडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अं०
वेद्दमावु				Mignifera sylvatica M Indica	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके, उत्तरके भागमें अर्थात् नैपाल सिक्कम सिलहट और खासिया पहाड आदि कई ठौर होतेहै।

गुण—इसका कच्चा फल ग्राही खट्टा पचनेमें भारी बादीको मिटानेवाला और पित्तको पैदा करनेवाला है। इसका पकाहुआ फल पचनेमें हल्का, उष्ण, रोचक और दीपन है। वात और कफके विकार, कुष्ट, शोथ, रक्तपित्त, व्रण और कफको मिटाताहै इसका खुसा फल औषधिके काममें आताहै। इसका फल स्वादिष्ट नहीं होताहै परन्तु खानेके काममें आताहै।

संख्या (५२)

(सं॰) आम्रातकः, पीतनकः, कपिचूतः, कपिप्रियः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अंबाड़ो	अम्बाडा आमडा	अंबेडा	अंबाडा	आमड़ा	अमरा अबडा	अबालमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
काट्टमा	अमटेगिड़			Spondias mangifera S amara	The hog plum (2) Sondias Hkmnut

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोये जातेहैं और अपने आपभी उगतेहैं ये बोयेहुए और जंगलीके भेदसे दो प्रकारके होतेहैं ।

परिचान—इसका वृक्ष २५ फुट ऊंचा होताहै इसके पेड़की गुलाई ४ फुट तक होतीहै । इसके पत्तोंका आकार जिंगनीके पत्तों जैसा होताहै इसके पत्ते एक शाखाके दोनों ओर बराबर लगे रहतेहैं ये पकनेपर हरे और चमकदार होजातेहैं और उनको मलनेसे एक विशेष प्रकारकी गंध आतीहै । इसके आम के मोर जैसे मोर लगतेहैं और फल कंदूरी जैसे छोटे२ होतेहैं उनके छिलकों पर पीले और काले दाग होतेहैं । छिलकोंके पासकी गिरी बहुत खट्टी होतीहै और गुठलीके पासकी गिरी बहुत मीठी और खानेके योग्य होतीहै ।

फूलने फलनेका समय—चैत्रमें इसके पुष्प लगतेहैं और शीत कालके प्रारम्भमें फल पकतेहैं । इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

प्रयोग—(१) इसके फलकी गिरी खिलानेसे पित्तकी मंदाग्नि मिटतीहै (२) इसके पत्तोंका चूर्ण और छालका क्वाथ आमातिसारमें दिया जाताहै। (३) इसका गोंद औषधिके स्वादकी चरपराहट कम करनेके लिये उसमें मिलाया जाताहै । (४) इसके पत्तोंका रस कर्णशूलमें कानके बाहिर लगाया जाताहै और भीतरभी डाला जाताहै । (५) इसके फलको पीसके विषमें बुझाये हुए तीरके घावपर लगाना चाहिये और उसके विषको उतारनेके लिये सूखा या गीला फल खातेहैं जो इसका फल न मिले तो उसकी ठौर फिटकड़ी

काममें लातेहैं, इससे यह सिद्ध होताहै कि-शरीर परके ऐसे घावोंको कषेली चीजें लाभदायकहै । (६)-शीताद रोग मिटानेके लिये इसके फलके क्वाथ, हिम या फांटसे गंडूष कराने चाहिये । (७) इसके फलकी चटनी बनाई जातीहै । इसका कच्चाफल खानेके काममें कम आताहै और दूसरे शाकोंमें खटाई देनेके काममें बहुत आताहै ।

संख्या (५३)

(सं०) आरग्वधः, व्याधिघातः, दीर्घफलः, हेमपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
किरमाळो	अमलतास, घनवहेड़ा	गरमाळो	बोहवा	सोंदाल, सोनालु	अमलतास	रेलचट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कोन्नेमरं शरक्कोनै	ककेमर	खियारशम्बर ख्यारशम्बर		Cassia fistula. Cathartocarpus F.	The Indian Laburnum (2) Purging Cassia (5) Pudding pipe tree

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—यह वृक्ष बहुत ऊंचा नहीं बढ़ताहै । इसकी पेड़ छोटी होतीहै और उसकी गुलाई ३ से ५ फुटतक होतीहै इसके एक डेढ फुट लम्बी एक सींकपर ४ से ८ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं फागुनमें इसके पत्ते गिरजातेहैं चैत्र-वैशाखमें नवीन निकल आतेहैं और उन्हींके साथ इसके पीले पुष्पोंकी प्रायः एक हाथ लम्बी मंजरी लगतीहै परन्तु पतझड़के दिनोंमें कभी २ पुष्पोंकी मंजरी दुबारा आजातीहै । इसके १-१॥ फुट लम्बी, गोल कुछ चपटी फलियां लगतीहैं वे शीतकालमें पकजातीहैं एक फलीमें कई खाने होतेहैं और अलग २ खानेमें एक एक बीज होताहै खानेके दोनों ओर गिरी चिपटी रहतीहै इसकी शाखाओं मेंसे एक प्रकारका लाल रस निकलताहै जो जमके गोंद जैसा होजाताहै । इसकी छालमें से हल्का लाल रंग निकलताहै ।

प्रयोग-(१)-इसकी फलीको गर्मकर उसकी गिरी निकाल उसको

बादाम के तेलसे चुपड़ ओटा छानकर पिलानेसे बच्चे और गर्भवती स्त्रियोंको निरुपद्रव विरेचन होताहै । (२) इसकी गिरीका काथ पिलानेसे लघुविरेचन होताहै । और श्वासकी रुकावट मिटतीहै । (३) इसके साथ इमलीके गूदेका फांट करके पिलानेसे बिगडा हुआ पित्त विरेचन द्वारा निकल जाता है । (४) इसके पुष्पोंके गुलकंदसे ज्वर छूटताहै । (५) इसके पत्ते और छालको पीस तेलमें मिलाके नाककी छोटी २ फुन्सियों पर लगावेंहं । (६) इनका लेप करनेसे स्नायुककी शोथ मिटतीहै । (७) इसके पत्ते और छालके क्वाथका मर्दन करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं । (८) इनसे बनाये हुए तेलका मर्दन करनेसे भी त्वचाके रोग मिटतेहैं । (९) इसके पत्तोंका फांट सारकहै (१०) इसकी जड़का क्वाथ तीव्र विरेचकहै । (११) इसके पत्तोंको सेक भोजनके साथ खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै । (१२) इसकी गिरका बच्चोंकी नाभिके चारों ओर लेप करनेसे उनका अफारा और पेटकी शूल मिटतीहै । (१३) इसके और इमलीके गूदेको भिगो मल-छान रातको सोते समय पीनेसे प्रातःकाल साफ दस्त आजाताहै । (१४) इसका १। तोला गुलकंद सोते समय खाके ऊपर गर्मदूध पीनेसे कोमल प्रकृतिवालेको प्रातःकाल साफ दस्त आजाताहै । (१५) इसके पत्तोंको उष्ण करके अथवा उनका पुल्टिस बांधनेसे त्वचाका सूनापन मिटताहै । (१६) यह प्रयोग अर्दित और गठियाको भी मिटाताहै । (१७) पत्तोंका क्वाथ घृतके साथ पीनेसे शरीरके हरेक अंगका सूनापन और मस्तक के रोग मिटतेहैं । (१८) छोटे जोड़ोंकी शोथ मिटानेके लिये उनपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये । (१९) इसके पत्ते जीभ पर मलनेसे मुखपाक मिटताहै । (२०) इसकी १॥ तोले गिरीको १० तोले पानीमें ओटा २॥ तोले रख छान उसमें ३ तोले घी मिलाकर खड़ा होके कुछ गर्म २ पीनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै । (२१) इसके नवीन पत्ते या कच्ची फलीकी गिरी पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै । (२२) इसके पत्तोंको कड़वे तेलमें तलकर चावलोंमें मिलाके खानेसे आमवात मिटतीहै । (२३) इसका ४ मासे तेल पिलानेसे गुल्म रोग मिटताहै । (२४) इसका काढा पिलानेसे हरिद्राप्रमेह मिटताहै । (२५) इसकी जड़को चावलोंके पानीके साथ पीसके सुंघाने या लेप करने से गडमाला मिटतीहै (२६) इसके पत्तोंको कांजीके साथ पीसके लेप

करनेसे खुजली, गजचर्म, कुष्ठ, पांव, बींची, और दाद आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (२७) इसका क्वाथ कानमें डालनेसे कानसे पूयका बहना बन्द होताहै (२८) इसको और नीमकी छालको पीस उबटना करनेसे पद्मिनीकंटक रोग मिटताहै (२९) इसके पत्तोंको सिरके के साथ पीस कर लेप करनेसे कुष्ठ और दाद आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं। (३०) इसके पत्तोंके काढेसे धोनेसे उपदंशकी टांकियां मिटतीहै॥ (३१) इसको मुंहमें रखनेसे कंठके रोग मिटतेहैं। (३२) इसका २ तोले गुलकंद खानेसे खुश्कखांसी तर होजातीहै॥ (३३) इसकी गिरी को पानीमें घोट उसमें तिगुना बूरा डाल गाढी चाशनी बनाकर चटानेसे शुष्क खांसी मिटतीहै॥ (३४) अमलतासके छिलके औटा उसमें शक्कर मिला छान के गर्भवती स्त्रीको पिलानेसे बच्चा सुखसे पैदा होजाताहै। इसके पुष्प खानेके काममें आतेहैं। फलीमेंसे इसकी गिरी निकाल रखनेसे कुछ दिनों पीछे बिगड़ जातीहै इसलिये जब आवश्यकता हो तब फलीमेंसे गिरी निकाल लेना चाहिये।

संख्या (६४)

(सं०) आरूक।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आडू	आडू			पीच	आडू	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
		खोख	शफ्तालू	Prunus Persica Amygdalus p	Peach

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत लगाये जाते हैं। कलकत्तेके पास के आडू बहुत उत्तम होते हैं॥

पहिचान—यह वृक्ष साधारण उंचाई का होता है। इसके गहरे हरे रंगके पत्ते लगतेहैं, वे गिरनेके पहिले लाल होजाया करतेहैं इसके गुलाबी रंगके पुष्प लगते हैं॥

फूलने फलने का समय—पोषसे वैशाख तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं वैशाखसे आसोजतक फल पकते है॥

इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै, इसकी जड़की छाल रंगतके काममें आतीहै, इसकी गिरीमें से एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै वह कडवे बादामके तेल जैसा होताहै और उसकी ठौर काममें भी आताहै, यह तेल भोजन बनाने, जलाने और बालोंके लगानेके काममें आताहै॥

प्रयोग—(१) इसके पुष्पोंका क्वाथ पिलानेसे विरेचन लगताहै (२) इसका फल औषधिकी चरपराहटको कम करताहै (३) इसके फलका रस लगानेसे शीतादरोग मिटताहै (४) इसके फलके रसमें अजवायनका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे आमाशयकी शूल मिटतीहै (५) इसके फलके रसमें सेकी हुई हींग बुरकाके पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहै (६) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे चुरने (कद्दुदाने) मिटतेहैं (७) इसके पत्तोंको पीस बगलमें मल गर्म पानीसे धोडालनेसे बगलगंध मिटतीहै॥

संख्या (५५)

(सं०) आर्द्रकं, शृङ्गबेरं, राहुछत्रं, अपाकशाकम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आदो अदरक	आदा अदरक(ख)	आदु	आलें	आदा	अदरक	अल्लम्

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
इंजि	हसि शोंठि,	जजबीलरतब	जञबीलतरन	Zingiber officinale Amomum zingiber	Fresh or green ginger

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाता है॥

पहिचान—इसका गुल्म प्रायः एक हाथ ऊंचा होताहै इसके पत्ते बांस के पत्तो जैसे होतेहैं, इसकी जड़में एक प्रकारका कन्द होताहै, उसको अदरक कहतेहै यह दो प्रकारका होताहै एक चूसेदार और दूसरा बिन चूंसेका यह चैत वैशाख में बोया जाता है॥

प्रयोग—(१) अदरकसे मंदाग्नि, गले मस्तक और छातीके रोग, अर्श, उदर्द, गठिया और जलोदर आदि कई रोग मिटतेहैं। (२) भोजनके पहिले अदरकके टुकड़ों पर नोंन बुरकाके खानेसे, अरुचि मिटतीहै। (३) अदरकके रसमें दूध मिलाकर सूंघने से मस्तकपीड़ा और दूसरे रोगभी मिटतेहै। (४) अदरकके रसमें मधु मिलाके लेनेसे मंदाग्नि, प्रतिश्याय और खांसी मिटतीहै। (५) अदरकके रसमें शकर मिला, उष्णकर पिलानेसे सर्दी और खांसी मिटतीहै। (६) इसके रसमें नींबूका रस मिलाकर लेनेसे पैत्तिक मंदाग्नि मिटती है। (७) इसके रसमें तुलसीका रस शहद और मोर की पंख के चंदवे की भस्म मिलाके देनेसे वमन बन्ध होतीहै। (८) इसके टुकड़ों पर नमक बुरकाके खानेसे जीभ और गला साफ होजाताहै। और क्षुधा बढ़तीहै। (९) इसके रसकी २—३ बूंदें आंखमें टपकानेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै। (१०) इसके रसकी नस्य देनेसे ज्वर में मूर्च्छा मिटतीहै। (११) अदरक, चरपरा और उष्ण है। इसकी चटनी से मुंह साफ होजाताहै। (१२) इसको हरेक समय मुंह मे रखनेसे, रोटी में मिलाके खानेसे या नमकके साथ थोडा२ सात दिनतक खानेसे सिंदूर के उपद्रव मिटतेहैं। (१३) अदरकके टुकडेको नमकमें लपेट कर दांतोंमें दबानेसे सर्दी की दंतपीड़ा मिटतीहै। (१४) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पीनेसे वातज अंडवृद्धि मिटतीहै। (१५) अदरक त्रिफला और गुडको एकत्र करके देनेसे कामला रोग मिटताहै। (१६) इसको मधुके साथ खानेसे अरुचि मिटतीहै। (१७) इसके रसमें मधु मिलाके चटानेसे श्वास, कास, प्रतिश्याय और कफ मिटताहै। (१८) इसके रसमें अजवायनको पीस के शरीरपर मर्दन करनेसे वातपीडा मिटतीहै। (१९) इसके स्वरसमें पुराना गुड़ मिलाकर पिलानेसे सर्वांगशोथ उतरताहै परन्तु इस प्रयोगके सेवन करते समय रोगीको केवल बकरीका दूध पिलाना चाहिये। (२०) इसका रस गुनगुना करके कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै। (२१) इसका रस, मधु, सैंधानमक और तेल इन सबको मिला उष्णकर कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै (२२) इसके एक सेर रसमें तिल्लीका आधसेर तेल सिद्ध करके धर रक्खे उसको गुनगुना कर मलनेसे जोड़ोंकी वातपीड़ा मिटतीहै। (२३) इस का अचार खानेसे भूख लगतीहै।

संख्या (५६)

(सं०) वनार्द्रकं, पेऊ, अरण्यार्द्रका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जगली अदरक	जगली अदरक	वनआदु	रानआलें	वनआदा	जगली अदकर	करुअल्लम् करपुप्पु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	केट्टाल			Zingiber Cassumunar Z. purpureum.	Zinger—Cassumunar ( ) Wild ginger

स्थान—यह हिन्दुस्थानके कई प्रान्तोंमें अर्थात् कोंकन, बिहार, बंगाल, कागेमंडल और सिलहट आदि देशोंमें होताहै ।

पहिचान—ताजे जगली अदरकमें कपूर जैसी तीव्र सुगन्ध आतीहै । इसका स्वाद, चर्परा और कुछ कडवा होताहै परंतु सूख जाने पर ये सब बातें कम होजातीहै ।

फूलने फलनेका समय—यह अषाढ-श्रावणमें फूलताहै, कार्तिक और मृगशिरमें फलताहै ।

प्रयोग—(१) यह उष्णहै । (२) स्त्रियोंके आवेशका रोग मिटानेके लिये इसके रसमें नमक मिलाके पिलाना चाहिये । (३) जिस अंग की चेष्टा जाती रहे उसपर कालीमिरचके साथ इसका लेप करना चाहिये । (४) इसको भूभलमें सेक छील नमक लपेटके खिलानेसे पेटका अफारा मिटताहै । (५) धनिये के साथ इसका क्वाथ करके पिलानेसे अतिसार मिटताहै । (६) विसूचिका में भी इसका प्रयोग किया जाताहै । (७) इसके रसमें गुड़ मिला के सुघानेसे अपस्मार मिटताहै ॥

संख्या (५७)

(सं०) आलुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आलू	आलू	बटाटा		आलु	आलू	ऊटलैगड्डा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वल्लैरकिडग	बटाटे आलु			Solanum tuberosum.	Potato

स्थान—आलू हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोये जातेहैं।

गुण—ये शीतल, मधुर, रूक्ष, पचनेमें भारी, मलको गाढ़ा करनेवाले, और शरीरमें आलस्य पैदा करनेवाले हैं। अग्नि दुग्ध, मूत्र, मल, कफ, वायु, बल, वीर्य्य और धातुओं को बढातेहै। और रक्तपित्त को मिटातेहैं। मंदाग्निवाला यदि इनको अधिक खाजावे तो अफारा आजाताहै। इनका शाक, हलुवा, पूरी आदि कई भोजन के पदार्थ बनाये जातेहै और फलाहार के काममें आतेहैं॥

संख्या (५८)

(सं०) आल्लुकं, आलूकं, भल्लूकं, रक्तफलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आलूबुखारा	आलूबुखारा	आलु आलुबुखार	आलुबुखार	आलुबोखार	आलूबुखारा	आलुबोकारा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
आलुबोकारा		इज्जास	आलू	Prunus Communis P. Bokhariensis	The plum Alucha Cherry plum Bokhara plum

स्थान—आलूबुखारा गढवालसे कश्मीर तक बहुत पैदा होताहै और अलमोडा सारनपुर और पश्चिमोत्तर प्रान्तोंमें भी होताहै।

पहिचान—यह साधारण उंचाई का वृक्ष होताहै। इसके फल बडे आंवलेके बराबर, कुछ ललाई और पिलास लिये हुए चमकदार होतेहैं। कच्चे फल खट्टे और पके फल खटमीठे और रसदार होतेहैं। यह दो प्रकार का होताहै, एकके फल अषाढमें और दूसरे के जेठमें पकतेहैं। इसके एक प्रकार का पीले रंग का गोंद लगताहै जो बंबूल के गोंद जैसा होताहै।

प्रयोग—(१) भोजन करनेके पहिले आलूबुखारे को खाने से पित्त के विकार मिटतेहैं। (२) यह पित्त को कम करताहै पाचन शक्ति बढ़ाताहै और सारक है। (३) इसकी जड़ शोषक है। (४) इसके गोंद के गुण बंबूलके गोंदके बराबरहैं और उसकी ठौर काममें आताहै। (५) आलूबुखारा बहुत खट्टा होताहै परन्तु शर्करा के साथ खानेसे रुचि पैदा करताहै और चित्त प्रसन्न करताहै। (६) इसके फल को गर्मपानीमें भिगो छानकर पिलानेसे पित्तज्वर की शान्ति होतीहै। (७) आलूबुखारे को मुखमें रखने से तृषा कम होतीहै। (८) इसके पानीमें गडूल का शर्बत मिलाके पिलानेसे कंठपीड़ा मिटतीहै।

संख्या (५६)

(सं०) आवर्त्तनी, आवर्त्तफला, दक्षिणावर्त्तकी, ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मरोड़ाफळी	मरोरफली	मरडाशिंगी	केवणीचाशेंग	आँतमोड़ा	मरोड़फली	कवची श्यामली

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वलुमेरी	कवर्गा	—		Helicteres Isora H Roxburghii	The East Indian screw tree ( ) Screw tree

स्थान—मरोराफली मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, जम्बूतकके सूखे जंगल, बंगाल, मेवाड, और अवध के जंगलों में होती है और सिवालिक पहाड की घाटी पर इसके वृक्ष अपने आप उगते हैं॥

पहिचान--इस का वृक्ष छोटा होता है। इसकी फली- पचलडी, आंटे दार और डेढ़ दो इंच लम्बी होती है चैत्र में इसके नवीन पत्ते निकलआते हैं।

फूलने फलने का समय—चैत से वर्षाऋतु के अन्ततक इसके पुष्प लगते रहते हैं, और शीतकाल में इसकी फलिया पक जाती हैं।

प्रयोग—(१) यह आंतोंके रोगोंमें काम आतीहै। (२) इसके चूर्ण को एरंडके तेलके साथ कान में डालनेसे कानका बहना बंद हो जाता है। (३) नये पैदा हुए बच्चेकी कमरमें मरोड़फलीका टुकड़ा बांध देनेसे आंतों के रोग मिटतेहै। (४) इसका काथ करके पिलानेसे बच्चोंके पेटकी शूल मिटतीहै। (५) वायविडंगके साथ इसका क्वाथ करके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं। (६) काले नमकके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे शूल और अफारा मिटताहै। (७) अतीस या इंद्रजवके साथ या दोनोंके साथ देनेसे अतिसार मिटताहै। (८) चिरायतेके साथ इसका क्वाथ करके पिलानेसे ज्वर छूटताहै। (९) इसकी पौने चारसे साढ़े सात मासे तक मात्रा दिनमें दो तीन वेर देना चाहिये। (१०) इसकी जड़ और छालमें भी वेही गुणहैं जो इसकी फलीमें हैं (११) इसको जलके साथ पीसके सापके दंशपर लगाना चाहिये। (१२) इसको वंगभस्मके साथ देनेसे मूत्रातिसार मिटताहै। (१३) डेढ़ तोला मरोड़फली को पानीमें भिगो मल छानके पिलानेसे कफ और रुधिरकी दस्त बंध हो जातीहै।

संख्या (६०)

(सं०) आहुल्यं, हुलुराख्यं, तरवटं, पीतपुष्पं ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आलूण	तरवड़ (२)	आवळ (ल) आवल्य	तरवड	—	—	तंगेडू

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
आविरै	तरवडगिटा			Cassia—auriculata. Senna. A	The Tanner's Cassia.

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके मध्य प्रदेश, दक्षिण, सीलोन और राजपूताना आदि कई भागोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष १॥–२ गज ऊंचा होता है। इसकी ३ से ५ इंच लम्बी सींकों पर ८ से १२ जोडे पत्तोंके लगते है, इसके पत्ते सहिजनेके पत्तोंके जैसे होते हैं। इसके आसोजसे फागुन तक पीले रंगके पुष्पोंकी मंजरियां लगतीहैं, इसके ३–४ इंच लम्बी और आधइंच चौड़ी फलिया लगतीहै उनमें ४ से ६ तक बीज निकलतेहै, इसके एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ लगता है, इसकी छालमेंसे एक प्रकार का रंग निकलता है।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंका लेप करनेसे आंखकी पीड़ा और पीपका बहना बंद होजाता है (२) इसकी छाल बहुत संकोचक है (३) इसके क्वाथके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है (४) इसके क्वाथकी पिचकारी देनेसे दस्त बन्द होती हैं (५) इसके पत्तोंके क्वाथ या फांटसे पित्तविकार मिटते हैं (६) इसके बीजोंकी गिरीको महीन पीसकर अंजन करनेसे नेत्रपीड़ा मिटती हैं (७) इसके पंचाग या इसके किसी अंगका क्वाथ करके पिलानेसे बहुमूत्रता मिटती है (८) इसकी कलियोंको चांवलोंके साथ पीसके स्नान करनेके पहिले शरीर पर मर्दन करनेसे शरीरकी दाह मिटजाती है (९) इसके पत्तोंको चाहकी ठौर औटाके पिलातेहैं (१०) इसके बीजोंका सेवन करनेसे शरीर कृश होजाताहै (११) इसकी छालके क्वाथके गंडूष करनेसे शीतादरोग मिटताहै। इसके बीजोंकी मात्रा ३॥ मासेतक की है।

संख्या (६१)

(सं०) इक्षु, गुडतृणः, असिपत्रः, महारसः,।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
साठो सेलड़ी	गन्ना, ऊख ईख, गाडा	शेरडी	ऊस	आक्, इक्षु	गन्ना, गंडा	चेरकु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अं०
करम्ब	कब्बु	कसबुस्सुक्कर	नए्शकर	Saccharum officinarum	The sugar cane

स्थान—गन्ना हिन्दुस्थानमें प्राय सब ठौर बोया जाताहै।

पहिचान—यह आठसे बारह फुट लम्बा होताहै हिन्दुस्थानमें कई प्रकार के गन्ने होतेहैं जैसे पौण्ड्रक, भीरुक, वशक, शतपोरक, कान्तार, तापसेक्षु, काण्डेक्षु, सूचीपत्रक, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, और कौशक आदि ये सब एक देशमें पैदा नहीं होतेहैं कहीं दो जातिके और कहीं चार जातिके ऐसे अलग २ देशोंमें अलग २ जातिके होतेहैं।

इसके साधारण गुण—यह स्निग्ध, शीतल, पचनेमें भारी, रस और पाकमें मधुर होताहै वात, कफ, बल, कान्ति पुरुषार्थ और मूत्र को बढाताहै कृमि पैदा करताहै। और बद्धकोष्ठ, रुधिरविकार और पित्त के विकारों को मिटाताहै।

प्रयोग—(१) कच्चे साठे का रस सूखी खांसी को मिटाताहै। (२) बादी और पित्त के विकार मिटाने के लिये पके (जवान) गन्नेका रस पिलाना चाहिये। (३) रुधिर की वमन बन्ध करनेके लिये वृद्धगन्ने का रस पिलाना चाहिये। (४) गन्ने को चूंसने से सूखी खांसी तर होजातीहै। (५) गन्ने का वासी रस पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (६) भोजन करने के पीछे गन्ने को चूंसने से आहार शीघ्रता से पचजाताहै। (७) शीघ्र विरेचन कराने के लिये गन्ने के रसमें जौ की डागी (बाल) के नीचेका डंठल मलके पिलाना चाहिये। (८) गन्नेके रसको ओटा ठंढा करके पिलानेसे आनाह वायु मिटतीहै। (९) गन्ने के रसमें अनारका रस मिलाके पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै। (१०) इसका रस पिलानेसे हिक्का बन्ध होतीहै। (११) पित्त दाह मिटानेके लिये केवल इसका रस या रसमें मधु मिला के पिलाना चाहिये। (१२) इसके और आंवले के रससे सिद्ध किये हुए घृतके खाने पीनेसे पित्त गुल्म मिटताहै। (१३) इसके और आंवलों के रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटजाताहै। (१४) इसके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होजाती है। (१५) इसके रसके साथ हरडे के चूर्णका सेवन करनेसे गलगंडादि गाठें मिटतीहैं। (१६) इसकी जडको कांजीके साथ पीनेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ताहै। (१७) इसको भूभलमें सेकके चूंसनेसे स्वरभंग मिटताहै।

———o o o———

संख्या-(६२)

(सं०) इङ्गुदी, हिंगुपत्रः, विषकण्टः, सुपत्रः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हिंगोटो (रो)	हिंगोट, गोंदी	इंगोरियो	हिंगणबेट	इंगोट, इंगुदी	इंगोट	गारचट्टु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
ननुजुडा	गारेगिड			Balanites Roxburghii Aegyptiaca	De H.

स्थान—हिंगोटे के वृक्ष कानपुर से सिक्किमतक, बिहार, गुजरात, खानदेश, दक्खन और राजपूताना आदि कई देशोंमे होतेहै ।

परिचान और फूलने फलनेका समय—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा और कांटेदार होताहै । इसकी पेड़ छोटी और खड़ी होतीहै उसकी गोलाई दो फुट या कुछ अधिक होतीहै। फाल्गुन मे इसके नवीन पत्ते निकलतेहैं। चैत वैशाख में श्वेत या कुछ हरे श्वेत, सुगंधयुक्त छोटे पुष्पों के गुच्छे लगतेहैं। इसके पकेहुए फलके छिलकेका रंग पीला और उसके भीतर मीठी परन्तु बेस्वाद गिरी गुठलीके चारों ओर लिपटी रहतीहै । फल मझोले आमके बराबर होतेहैं इसकी गुठली आतिशबाजी के काममें आतीहै ।

प्रयोग—(१) इसका पंचांग औषधिके काममें आताहै इसके बीजोंकी गिरीकी फक्की देनेसे कफ मिटताहै (२) इसकी छालकी फक्की देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (३) इसके कच्चे फलकी आधरत्तीसे १० रत्ती तककी मात्रा देनेसे दस्त लगताहै (४) एक रत्ती से १५ रत्ती तक इसकी गिरीकी फक्की देनेसे सूखी खासी मिटतीहै (५) एक फलकी आधी गिरी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (६) वायविडंगके साथ इसके पत्तोंके चूर्णकी फक्की देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं और विरेच होताहै (७) हिंगोटेकी मींगीको पानीमें घिसकर अंजन करनेसे आंखकी ज्योति बढतीहै (८) इसकी दोभाग मींगीमें एकभाग अमरा

मिलाके अंजन करनेसे मोतियाबिन्द मिटताहै (९) इसकी छालके एक तोले चूर्णकी फक्की नित्य १५ दिन पानीके साथ देनेसे कुष्ठ आदि रुधिर-विकार मिटतेहैं परंतु इस प्रयोग के सेवनके समयमें खटाई लवण और वातल पदार्थोंसे बचना चाहिये (१०) इसकी गुठली की गिरी में से तेल निकाला जाताहै। इसके तेलके गुण—यह स्निग्ध, शीतल और मधुरहै। कांति, बल, धातु, केश, कफ और नेत्रोंकी ज्योतिको बढ़ाताहै और पित्तनाशक है (११) इस तेलका शरीरपर मर्दन करनेसे कान्ति बढ़तीहै (१२) शिरमें लगानेसे बाल बढतेहैं (१३) दूधमें इसकी १० से ३० बूंदें डालकर पीनेसे पित्त शान्त होताहै (१४) व्रण पर लगानेसे उसकी दाह मिटजाती है ॥

संख्या (६३)

(९/०) इन्दीवरा, युग्मफला, दीर्घवृन्ता, उत्तमा ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	उतरन	चमारदुधेली	उतरणी	इन्द्रचिंभिटी		गुरुटीचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
उत्तामनि	हालकोर्रीगे			Daemia extensa, Asclepias echinata	Hairy flowered Cynanchum

स्थान—यह हिन्दुस्थानके उष्ण प्रदेशोंमें होती है ॥

पहिचान—यह एक प्रकारकी बेल होतीहै, इसके सफेद पुष्प और दो २ फल एकठौर लगतेहैं वे आकडेके फलके सदृश होतेहैं उनके ऊपर कांटे होतेहैं और उनमें रूई निकलतीहै फलको तोडनेसे इसकी डालीमें से दूध निकलता है इस बेलमें गंध अच्छी नहीं होतीहै ॥

प्रयोग—(१) इसके स्वरस की १० बूंद से मासे तक मात्रा देने से वमन होके बालकोंके पेटके रोग मिटजातेहैं (२) बच्चोंकी खांसी और श्वासमें इसके पत्तोंका ५ रत्ती स्वरस लाभदायकहै (३) बच्चोंको इसके पत्तोंका क्वाथ

पिलानेसे उनके पेटके कीड़ोंका उपद्रव मिटताहै (४) इसके पत्तोंके स्वरसमें चूना मिलाके लगानेसे हाथपैरोंकी गठिया की सूजन मिटतीहै (५) अदीठ पर इसके पत्तोंकी टिकडी बाधनेसे उसका घाव जल्दी भरताहै (६) इसके और काली तुलसीके पत्तोका रस निकालके पिलानेसे बच्चोंको विना परिश्रम वमन होजातीहै (७) इसके पत्ते और अजवायनको पीस गर्मकर गोली बनाके खानेसे खांसी मिटती है ॥

——००——

संख्या (६४)

(सं०) इन्द्रवारुणी, ऐन्द्री, अरुणा, विषघ्नी ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तसतूंबो	इन्द्रायन, फरफेंदु	इंदरवाणी	लघुकावडक	राखालशशा	तुम्मा फरफेंदु	येटिपुच्चकायि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
आत्तुमिडिकाय्	हावुमेकेकायि	हिंजल अलकुम	शिरग	Citrullus. Colocynthis Cucumis C	Colocynth

स्थान—इसकी वेलें पश्चिमोत्तरदेश, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होती है ॥

पहिचान—वर्षा ऋतुमें इसकी बेलें उगतीहै वे प्रायः २० हाथतक लम्बी बढजातीहै उनके २-३ हाथ बढनेके पीछे हरेक पत्तेके पास कुछ पीला पुष्प लगताहै उसके नीचे गोल फल लगताहै जो पहिले हरा और पक जाने पर पीले रंगका होजाताहै। इसकी बेल ज्यों २ बढती जातीहै त्यों २ इसके हरेक पत्तेके नीचे जड़ फूटके जमीनमें लग जातीहै और हरेक पत्तेमें पुष्प और फल लगता जाताहै फलकी गिरी कडवी होतीहै उसमें ठौर २ बीज गडे रहतेहैं।

इसके बीजोंमेंसे प्रायः आधा तेल निकलताहै, उसके निकालनेकी यह रीतिहै कि बीजोंको फलकी गिरीसे अलग करके सेक लेवें फिर उनको जलमें

मा० गरडूमो, च० राखालनाडु, तै० पापर, द्रा० आत्तुम्मट्टि ।

ओटा थैलीमें भर बन्दकर मलके घनके छिलके उतारकर मींगीका तेल निकाल लेना चाहिये।

प्रयोग—(१) इसकी जड तीक्ष्ण विरेचकहै जिन २ रोगोंमें विरेचनकी आवश्यकताहै उन सबकी औषधियोंमें बहुधा यह मिलाई जातीहै (२) स्त्रियोंके स्तनपाकमें इसकी जडका लेप करतेहैं या पुल्टिस बांधतेहैं (३) इसका जुल्लाब लेनेसे शरीरमें जहां २ आम और कफ होताहै वह निकल जाताहै (४) इसका वफारा देनेसे स्त्रीधर्म शुद्ध होने लगजाताहै (५) इसके फलमें छेद कर उसमें कालीमिरचें भर, छेदको बन्द कर ऊपर कपड मिट्टी चढाके भूभलमें आगके पास कुछ दिन तक गाड रखतेहैं पीछे उनको निकालके अफारा मिटानेके लिये दिया करतेहैं। इसीरीति से रेवन्दचीनीका भी प्रयोग किया जाताहै (६) जबकि वृक्कमें मूत्रका बनना बन्द होजाताहै अथवा मूत्र रुक जाताहै तो इसके गूदेमें रेवंदचीनी मिलाके देना चाहिये (७) इन्द्रायन इकल्ली काममें नहीं आतीहै परन्तु बहुधा रेचक और वातनाशक औषधियोंके साथ दीजातीहै इसको इकल्ली देनेसे पेटमें मरोडे होजातेहैं और अधिक मात्रा देनेसे आंतोंमें शोथ होजातीहै और कभी २ मनुष्य मर भी जाताहै (८) इसकी गिरीको पानीमें ओटा, मल छान गाढा करके उसकी गोलिया बना रखतेहैं, इनमेंसे १–२ गोलीको सोती समय ले ऊपर उष्ण दुग्धको ठंढा करके पीनेसे प्रातःकाल शुद्ध विरेचन लगजाताहै (९) इसकी सूखी जडकी फक्की देनेसे विरेचन लगताहै (१०) शरीर के किसी भागकी जलयुक्त शोथ को मिटानेके लिये इसका वफारा और विरेक देना चाहिये (११) यह श्वास की बहुत उत्तम औषधिहै (१२) बच्चोंके डब्बेके रोगमें इसकी जडके १ मासे चूर्णमें २ रत्ती सेंधानमक मिलाके उष्ण जलके साथ देना चाहिये (१३) तसतूवेकी गिरि और एलुवेको पीस गर्म करके लेप करनेसे अफारा उतरताहै (१४) इन्द्रायन (तसतूंबे) में साभरनोन और अजवायन भर उसका मुंह बन्द करके घाममें सुखा कर धर रक्खें, इसमेंसे उष्ण जलके साथ फक्की देनेसे दस्त लगके पेटकी पीडा मिटतीहै (१५) इसके ताजे फलकी गिरको उष्ण जलके साथ या सूखी गिरको अजवायनके साथ विसूचिकामें देना चाहिये।

(१६) इसकी जडको पानीके साथ पीस छानके पिलानेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१७) इस के पकेहुए फलको या उसके छिलकेको तेलमें औटाकर कानमें टपकानेसे बहिरापन मिटताहै (१८) इसकी जड़को पीस गौके घीमें मिलाके भगमें मलनेसे बच्चा तुरन्त सुखसे पैदा होजाताहै (१९) इसकी जड़को सिरकेमें पीस गर्म करके लगानेसे सूजन उतरतीहै (२०) इसकी जड़के टुकड़ोंको पांच गुने पानीमें औटावे जब तीन भाग पानी शेष रहजावे तब छानकर उसमें बराबर बूरा डाल शर्बत बनाकर पिलानेसे उपदंश और वातपीड़ा मिटतीहै (२१) इसके फलकी गिरीको गर्म करके पेटपर बांधनेसे आंतों के सब प्रकारके कीड़े मरजातेहैं (२२) इसको पानीके साथ पीसके प्रसूता स्त्रीके बढ़े हुए पेटपर लेप करनेसे उसका पेट पीछा अपनी योग्य दशापर आजाताहै (२३) इसकी जड़को योनीमें रखनेसे योनिशूल और पुष्पावरोध मिटताहै (२४) इसकी जड़ और पीपलके चूर्णको गुड़में मिलाके एक तोले प्रमाण नित्य दनसे संधिगत वायु दूर होतीहै (२५) इसके चूर्णकी नस्य देनेसे अपस्मार मिटता है (२६) इसके पके हुए फलकी धूनी देनेसे दांतोंके कीड़े मरजातेहैं (२७) इसके ताजे फलकी ७ मासे गिरी खानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२८) इसके रसमें रुईका फोया भिगोके योनीमें धरा रखनेसे बच्चा तुरंत सुखसे पैदा होजाताहै (२९) बीलपत्र के साथ इसकी जड़को पीसके सेवन करानेसे स्त्री गर्भ को धारण करतीहै (३०) इसकी जडको गायके दूध के साथ कई दिनोंतक सेवन करनेसे सफेद केश काले होजातेहैं परन्तु जबतक इसका सेवन किया जाय तबतक केवल दूधही पीना चाहिये (३१) १० तोले इन्द्रायन को २ सेर जल में औटा आधसेर रख मल छानकर उसमें आधसेर एरंडका तेल डालके औटावे जब केवल तेल शेष रहजावे तब उतारके शीशीमें भर रक्खे इसमेंसे डेढ तोला तेल गौके दूधमें मिलाके पिलानेसे उपदंश आदि रोग मिटतेहैं (३२) इसके बीजोंके तेलसे केश काले हो जातेहैं । बीजोंकी मींगी खानेके काममें आतीहै । इसके फलका मुरब्बा बनानेकी रीति यहहै कि इन्द्रायन को चाकूसे खूब गोद के पानीमें औटाके निकाल लेवें जबतक उसका कडवापन न मिटे तबतक उसको औटा २ के जल निकाल दिया करें पीछे उसका बूरेके साथ मुरब्बा बनालेना चाहिये । इससे पेट के विकार मिटते हैं ॥

संख्या (६५)

(सं०) महाकालः, काकमर्दः, किम्पाकः, उरुकालः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लाल तरतूंबो	लालइंद्रायन	चित्रो	कंवडल	माकाल रक्तमाकाल		अल्वगुडपण्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	अवगुड्हल्लु	हिंजलेअहमर	शिरंगसुर्खे	Trichosanthes palmata. Laciniosa.	

स्थान—यह हिन्दुस्थान के आर्द्र जंगलों में सब ठौर होतीहै ।

पहिचान—इसकी बडी भारी बेल होतीहै इसका फल गोल, चमकदार और लालरंग का होताहै उसके भीतर का भाग नारंजी रंगका और उसमें नीलेरंग के बीज होते हैं इस जंगली बेलका फल बहुत रेचक होताहै बोईहुई का फल जब अच्छीतरहसे उबाल लिया जाताहै तो नैरोग्यताद्दायक होजाताहै।

प्रयोग—(१) इसके फलको पीसके नारियल के तेल के साथ गर्म करके कानके भीतरके दुष्ट व्रणपर लगानेसे वह साफ होके भर जाताहै (२) सर्द गर्मी से जो नाक में ऐसे फोड़े होजातेहैं कि जिनमेंसे सड़ाहुआ पीप निकलताहो उन परभी उक्त तेलके लगानेसे लाभ होताहै (३) इसके फलको चिलममें रखके पीनेसे श्वास मिटताहै (४) इसकी और तरतूंबेकी जड़ बराबर ले पीसके अदीठ पर लेप करना चाहिये (५) इसकी जड, हल्दी, हरडकी छाल, बहेड़े और आंवले प्रत्येक बराबर ले इनका काथकर मधु मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (६) इसके फल के रस या जड़की छाल को तिलोंके तेलमें औटा उस तेलको मस्तक में मलने या लगानेसे मस्तकपीडा या वार २ होनेवाली मस्तकपीडा मिटतीहै (७) इसके और सुरयाली (कूकरड़ी) के बीजोंका तेल निकाल मस्तक के बाल मुंडवाके उसपर इस तेलका लेप करनेसे बाल काले उगने लगतेहैं ।

—o—

संख्या (६६)

(सं०) ईपद्गोलं, शैतबीजं, शौशिरीकं, स्निग्धजीरकम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ईसरबोल	ईपबगोल	उथमुंजीरू	इसबगोल	ईशप्गुल	ईसनगोल	इसपगोलवित्तु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
इस्कोल्विरै	इसमकोलु	भजरेकुनूना	अस्पगोल	Plantago ova a. P. Ispaghul	Ispaghul or spogel seeds

स्थान—इसके वृक्ष बंगाल, मैसोर, कारोमंडल के किनारा और पंजाब में बोये जाते हैं।

प्रयोग—(१) २ मासे ईसबगोल को १५—२० मिनट तक पानीमें भिगो के निगला देनेसे पुराना अतिसार और आमातिसार मिटताहै (२) आंतोंकी दाह शोथ और कांट को मिटानेके लिये साबत बीजों की या उनकी भुस्सीकी मिश्री के साथ फकी देनी चाहिये; या उनको थोड़े जल में भिगोके फूल जानेपर निगला देना चाहिये (३) इसका चेप निकाल बूरा डाल के पिलाने से पुराना आमातिसार और अतिसार मिटताहै (४) पित्त प्रकृति वाले के प्रतिश्याय में इसका चेप बहुत हितकारीहै (५) इसके चेपमें बूरा मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (६) बीजों को सेकके फकी देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (७) इसकी मात्रा ३ मासे से ६ मासे तकहै (८) बूरे के साथ इसका शर्बत बनाके पिलानेसे मूत्रमार्ग की दाह और मूत्रकी उष्णता मिटतीहै (९) जब मूत्रका पैदा होना बन्द होगया हो, या जलताहुआ मूत्र उतरता हो, या मूत्राशय में दाह होती हो तो इसका केवल शर्बत या उसमें मूत्रजनक दूसरी औषधियों मिलाके पिलाना चाहिये (१०) इसका शर्बत पिलानेसे रक्तार्श का रुधिर बन्द होजाताहै (११) बिगड़े हुए व्रण और घाव पर ईसबगोलका पुल्टिस बांधतेहै (१२) शीतल मिरच और कलमीशोरेके साथ इसकीफकी मूत्रकृच्छ्में बहुत लाभदायक है

(१३) १। तोले ईसबगोल को १। सेर जल में औटा आधा रख के दिन भर में पिला देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (१४) इसके क्वाथसे ज्वर की ऊष्मा कम होजातीहै (१५) गठिया और छोटे जोडों की गांठों पर इसका पुल्टिस बांधतेहैं (१६) पित्त की मस्तकपीड़ा में इसका चेप लगाना चाहिये (१७) कफ और प्रतिश्याय में इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (१८) इसको सिरके में पीसकर कनपटियोंपर पतला लेप करनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१९) इसका चेप लगानेसे पित्त की नेत्रपीड़ा मिटतीहै (२०) इसको गुलखैरा के पुष्पों के साथ पीसकर कनपटियों पर लेप करनेसे घामसे पैदा हुई मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२१) होंट या जीभ फटजाने पर इसके चेपमें कतीरा गोंद मिलाके लेप या कुल्ले करने चाहिये (२२) इसके चेपमें कादेका रस मिला कुछ गर्म करके कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (२३) इसको सिरकेमें भिगो दांतोंके नीचे दबा रखनेसे गर्मीकी दंतपीड़ा मिटतीहै (२४) इसके चेपमें गट्टलका शर्बत मिलाकर पिलानेसे तृषा मिटतीहै (२५) इसके चेपसे कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (२६) ३-४ महीने तक लगातार दिनमें दोबेर १ तोले ईसबगोलकी फकी लेते रहनेसे सब प्रकारके श्वास मिटतेहैं (२७) इसको सिरकेमें भिगो चेप निकालके पिलाने से मेंडकका विष उतरताहै (२८) १ तोले ईसबगोलका चेप निकाल उसमें बूरा मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (२९) इसको पीसके लेप करनेसे सूजन उतरतीहै।

संख्या (६७)

(सं०) उत्पल, रात्रिपुष्पं, हिमाब्जं, जलाह्वयम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गट्टूल	गट्टूल, नीलोफर	नहाना कमल, पोयणा	लहान कमल, चंद्रविकाशी	शुंदीफुल	नीलशुंदी	कलहारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अल्लितागरे	नयादलेहू	नीलूफ़र	नीलूफ़र	Nymphæa Lotus. Rubra.	Waterlily

स्थान—गहूल हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंके जलाशयोंमें होतेहै।

पहिचान—यह सफेद नीले और लाल रंगके पुष्पोंके भेदसे ३ प्रकारके होतेहै।

प्रयोग—(१) इसके पुष्प रूक्ष शीतल और संकोचकहैं (२) इनको ओटाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) इनका शर्बत पीनेसे हृदयका बल बढताहै (४) पित्तज्वरमें इसके पुष्पोंको बूं के साथ ओटाके पिलाना चाहिये (५) विसूचिकामें मूत्रकी रुकावट मिटानेके लिये इसकी जड या डंडीका काथ पिलाना चाहिये (६) यकृत् के पैत्तिक रोगोंमें इसकी डंडीका काथ अथवा शर्बत पिलाना चाहिये (७) इसकी जडके चूर्णकी फकी देनेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होताहै (८) इसकी जडको बीलगिरके साथ ओटाके पीनेसे आमातिसार मिटताहै (९) इसके बीजोंके चूर्णको मधुके साथ चाटनेसे पित्त संबंधी त्वचाके रोग मिटतेहै (१०) इसके पुष्प और डठलके चूर्णकी फकी लेनेसे आंतों और आमाशयसे रुधिरका बहना बन्द होताहै (११) इसकी जडोंको कच्ची अथवा उबाल कर खातेहै कच्चे फलका शाक बनाके खातेहै इसके बीजोंको सेककर खातेहै (१२) इसके बीज विषनाशकहै (१३) इनका लेप करनेसे कुष्ठकी दाह मिटतीहै (१४) इसका शर्बत पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (१५) पसलीकी सूजन मिटानेके लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (१६) गहूलके चूर्णकी नस्य देनेसें तृषा मिटतीहै (१७) इसको दूधमें मिला कर एक महीने तक जमीनमें गाड रक्खे फिर उसका घी निकालके लगानेसे केश काले होतेहैं।

संख्या (९८)

(सं०) द्रुमोत्पलः, परिव्याध, पीवरी, योपिनी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
			वृक्षकमळ(ल)	उलट्कुम्बल		गोंगु कोंडगोंगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	बेट्टतावरे			Abroma August.	

स्थान—यह हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण प्रदेशोंमें होताहै।

प्रयोग—(१) इसकी जड़की छाल और कालीमिरचके दो से ६ मासे तक चूर्ण देनेसे ऋतुधर्म ठीक होने लग जाताहै (२) इसकी जड़की छालमें एक प्रकारका चेपदार गाढा पदार्थ निकलताहै उसमें रजोधर्मकी रुकावटको दूर करनेका गुणहै (३) ऋतुधर्म प्रारम्भ होनेके एक सप्ताह पहिले इस औषधि को देनेका प्रारंभ करना चाहिये। जबतक ऋतुधर्म न हो तबतक देते रहना चाहिये जिस दशामें रजस्वलाका रुधिर जम जाताहै उस दशामें इसका प्रयोग करना बहुत लाभदायकहै (४) इसकी पांच तोले सूखी छालको २॥ पाव पानीमें ओटाकर दिनमें तीन वेर ढाई ढाई तोले पिलानेसे मासिक धर्म अपने उचित समयपर होने लगजाताहै और गर्भाशयभी अपनी योग्य दशामें होजाताहै (५) इससे पेटकी पीड़ा और आध्मानभी मिटताहै (६) मासिक धर्म होने के समय पीड़ाका होना या मासिक धर्मके विकारसे पैदा हुआ वंध्यापन इसके प्रयोगसे मिटजाताहै।

संख्या (६९)

(सं०) उदुम्बरः, जन्तुफलः, हेमदुग्धः, सदाफलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गूलर	ऊमर गूलर	उंबरो	उंबर	यज्ञडुमुर	गूलर	मेडिचेटटु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अत्ति	अत्ति	-	-	Ficus glomerata. Covella glomerata.	-

स्थान—इसके वृक्ष राजपूताना, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान हिमालय और आसाम आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसकी उंचाई ४० से १०० फुटतक होतीहै इसकी पेदड़की गोलाई ५ से १४ फुटतक होतीहै इसकी छाल भूरी और साफ होतीहै। इसके पोप

से चैत्रतक नवीन पत्ते निकल जातेहैं। इसका फल रूएदार होताहै वह पकजाने पर लाल या नारंजी रंगका होजाताहै। इसके लाख लगती है इसकी छाल में से काला रंग निकाला जाता है।

फूलने फलनेका समय—चैतसे अषाढतक फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके कच्चे फलोंका शाक होताहै और उनके चूर्णको आटेमें मिलाके रोटी बनाकर खातेहैं (२) इसकी छाल शोषकहै (३) छालके क्वाथसे क्षतको धोना चाहिये (४) बिल्ली और व्याघ्रके काटेहुए घावको इसके क्वाथसे धोतेहैं (५) आमातिसारमें इसकी जड़के चूर्णकी फकी देना चाहिये (६) इसकी जडमें छेद करके एक प्रकारका द्रव (मद) निकालतेहैं उसको बल बढानेके लिये बहुत दिनोंतक लगातार पिलातेहैं (७) पत्तोंको पीस मधुके साथ चटानेसे पित्तके विकार शान्त होजातेहैं (८) इसके पत्तोंपर जो फफोले जैसा आकार उठजाताहै उसको दूधमें भिगो मधुके साथ चटानेसे चेचकके फोडेमें जो ऊंडे गढे पडने लगतेहैं वे बन्ध होजातेहैं (९) इसके दूधको जलमें मिलाके पिलानेसे रक्तातिसार और रक्तार्श मिटताहै (१०) बहुमूत्र या और प्रकारके मूत्ररोग मिटानेके लिये पारा आदि धातुओंके रस बनाये जातेहैं उनमें इसके पके फलोंका ताजा रस डाला जाताहै (११) इसकी पेडमेंसे जो रस निकाला जाताहै वह बहुमूत्र रोगमें दिया जाताहै (१२) कर्णमूलके शोथपर या दूसरी पेशियोंकी पित्तशोथ पर इसके मदका लेप करना चाहिये (१३) इसका ४ तोले मद पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१४) क्षतपर इसके मदका लेप करना चाहिये (१५) इसके क्वाथके गंडूष करनेसे मसूड़े और दांत दृढ हो जातेहैं (१६) इसकी छालका हिम या फाट पिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है (१७) इसकी जड़का मद पिलानेसे मूत्रातिसार मिटताहै (१८) इसके फल संकोचक और ग्राही है (१९) इसके फलसे पेटकी पीड़ा और आध्मान मिटताहै (२०) चीतके शर्बतके साथ इसके फलके चूर्णकी फकी देनेसे रक्तप्रदर मिटाताहै (२१) कमलगट्टे और इसके फलोंके चूर्णको दूधके साथ देनेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै (२२) इसके सूखे या हरे फलोंको पानीमें पीस मिश्री मिलाके पिलानेसे

रुधिरकी वमन, रक्तातिसार रक्तार्श और मासिकधर्ममें अधिक रुधिरका जाना बन्ध होताहै (२३) इसकी पेडकी छालको पानीके साथ पीस तालू पर लगानेसे नकसीर बन्ध होतीहै (२४) इसका एक मासेभर दूध पिलाने से दस्तें बन्ध होतीहैं (२५) इसकी जडको कूटकर ओटाके पिलानेसे गर्भस्राव होना बन्ध होताहै (२६) इसके दूधमें फोया भिगोके नासूर भगंदर और घावपर नित्य नया बांधनेसे भर जातेहै (२७) मूत्रके रोग मिटानेके लिये इसका दूध दो बतासोंमे भरके खिलाना चाहिये (२८) इसकी छालको पीसके लेप करनेसे भिलावेके धुम्रसे पैदा हुई शोथ उतरती है (२९) इसकी जडकी छालके हिमर्में शक्कर मिलाके पिलानेसे तृषायुक्त पित्तज्वर छूटताहै (३०) इसके पक्के फलोंको मधु अथवा गुडके साथ खानेसे नकसीर बन्ध होतीहै (३१) इसके पकेहुए फलोंके रसमें शक्कर मिलाके पिलानेसे पित्तकी तृषा मिटतीहै (३२) इसके गोंद और शक्करकी फक्की पानीके साथ देनेसे पित्त-ज्वरकी दाह मिटतीहै (३३) इसका रस पिलानेसे श्वेत प्रदर मिटताहै (३४) इसके दूधमें बापची भिगो पीसके लेप करनेसे सब प्रकारकी पिटिका और व्रण मिटतेहै । (३५) इसकी अंतर छालको स्त्रीके दूधमें पीसके पिलानेसे बच्चेका भस्मक रोग मिटताहै (३६) इसकी छाल और लालाके बीजोंको बराबरले कूट छानके पानीके साथ ४० दिन फक्की लेनेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै (३७) गूलरके रसमें मधु मिलाके पिलाने से रक्तपित्त मिटताहै ॥

संख्या (७०)

(सं०) काकोदुम्बरः, अजाक्षी, फल्गुनी, मलयः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कठगूलर	कठूमर कठूम्बर	ढेढ उम्बरो	काळाउम्बर	काकडुमुर	फगवाडी कठूमर	ब्रह्ममेडि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पेयचि	काडचि	तीनेबरी	इंजीरेदस्ती	Ficus Hi ida F Oppositifolia	

स्थान—कठगूलरके वृक्ष चनाव नदीसे पूर्वकी ओर और बंगाल मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ६० फुट तक होजाती है। माह, फागुन में इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इसके पके हुए फलका रंग कुछ हरा होताहै। इसकी छाल पतली और खरदरी होतीहै उसका रंग भूरा या कुछ हरा होताहै, इसकी अंतर छालमें दूध निकलताहै ।

फूलने फलने का समय—चैत, वैशाख और जेठ तक इसके फल पक जातेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके फल, बीज और छाल, अच्छे थामक और थोडे रेचकभी हैं (२) इसकी छालके १ से २ मासे तक चूर्णकी दिनमें तीन चार वेर फक्की देनेसे वारीसे होनेवाले वेग मिटते हैं (३) इसकी ४ रती से १ मासे तककी मात्रा बलवर्द्धक हैं (४) इसके फलोंका पुल्टिस बनाके वद पर बांधते हैं (५) इसके फल खानेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (६) इनके सेवनसे गर्भपात होना बन्द होजाताहै (७) इसके पके हुए फलोंके बीजोंको छायामें सुखाके शीशीमें भर बन्दकर रक्खें जब वमन कराना हो उससमय ४ मासे पीसके उष्ण जलके साथ फक्की देना चाहिये (८) ऐसेही २॥ मासे से ४ मासे तक इसकी छालके चूर्णकी फक्की देनेसे वमन अधिक होतीहै और थोडे बहुत शौचके बेगभी होतेहै (९) इसके पके हुए ताजे फलकी मात्रा ४ से ८ मासे तकहै। इसके फल खानेके काममें आतेहैं (१०) इसके फलोंके चूर्णमें बराबर शकर और शहद मिला मोदक बांधकर खिलाने से प्रदर रोग मिटताहै (११) फलोंके रस में मधु मिलाके पिलाने से रक्तप्रदर मिटताहै (१२) इसकी जड और धतूरेके बीजों को चावलोंके पानीके साथ पीसके पिलानेसे कुत्ते का विष उतरताहै ।

देना चाहिये (१३) इसके ७॥ मासे चूर्णको २५ तोले पानीमें औटाके उस मेंसे २॥ या ४ तोले तककी मात्रा देनी चाहिये यह क्वाथकी मात्राहै (१४) इसका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) इसकी टट्टीकी हवासे दाह मिटतीहै (१६) खस और पीपलामूलको बराबर ले घीमें घटानेसे तीव्र हृद्शूल मिटतीहै (१७) इसके रसमें बूरा मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद (गर्मीका होल दिल) मिटताहै।

संख्या (७२)

(सं०) उष्ट्रकण्टकः, कण्टफलः, करभादन , वृत्तगुच्छः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ऊंटकटालो	ऊंटकटेरा	उंटकटो	उंटकटीरा	ठाकुरकाँटा	ऊंटकटाली	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		उस्तुरगार	उश्तुरखार	Echinops echinatus	Thistle

स्थान—यह मारवाड़में बहुत होताहै।

पहिचान—ऊंटकटारेका गुल्म पसेर कटेली जैसा होताहै परंतु पृथ्वीपर नहीं फैलताहै यह खडा होताहै। इसके गोल डोडे लगतेहैं उनपर छोटी, बड़ी तीखी शूलें लगी रहतीहैं।

प्रयोग—(१) इसकी जडकी छाल और गोखरू तीन तीन मासे और मिश्री ६ मासेकी दूधके साथ फकी लेनेसे प्रमेह मिटताहै (२) छुवारेकी गुठली और इसकी जडकी छाल बराबर ले पीस छानके फकी देनेसे मंदाग्नी मिटतीहै (३) इसकी जड़की छालके चूर्णको पानमें रखके खिलानेसे खांसी और कफ मिटताहै (४) इसकी जडकी छालको औटाके पिलानेसे बच्चा होते समय स्त्रीको बहुत कष्ट नहीं भोगना पड़ताहै (५) तालमखाने मिश्री और इसकी जडकी छालके चूर्णकी फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (६) इसकी जडको पीसके गर्भवती स्त्रीके पेटपर लेप करनेसे बालक सुखसे पैदा होजाताहै

(७) इसकी सूखी जडके एक एक तोले चूर्णको मधुमें मिलाके ७ दिन खाने से अधिक पसीना आना मिटताहै ।

संख्या (७४)

(सं०) एकवीरः, महावीरः, सकृद्वीरः, सुवीरकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
-	एकवीर	एकलफटो	एकवीरु	एकवीर		गुडेविंगुल

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेंगगरम	गडुविके			Briedelia montana.	Briedelia.

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें झेलमके पूर्वकी ओर, बिहार, ओडीसा और बंगालमें होतेहैं ।

पहिचान—यह एक साधारण ऊंचाईका वृक्ष होताहै इसके स्कंधमें मोटे तीखे और लम्बे कुछ २ दूरपर अणीदार कांटे होतेहैं इसके पत्ते पाकडके पत्तों के आकारके होतेहैं फल छोटे २ बेरके आकार झूमकोंमें लगतेहैं इसके कुछ हरे रंगके पुष्प लगतेहैं

प्रयोग—(१)इसकी छालको पानीमें भिगोनेसे बहुतसा चेप निकलता है (२) इसके चूर्णकी फक्की देनेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (३) इसके प्रयोग से कीडे मरतेहैं (४) बीलगिरके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै ।



संख्या (७५)

(सं०) एरका, गुंद्रमूला, शरी, शविः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
एरो	गोंद टेर	पान्य	मोथी तृण	होगला	एरकाडिभ	जम्मु गड्डे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Typha Angustifolia. T Elephantina.	The reed mace Lesser cat s tail or Elephant grass.

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें तालाब और नदियोंके किनारे होताहै।

पहिचान—इसके पत्ते बहुत लम्बे और इंच सवाइंच चौड़े होतेहैं ये एक ओरसे साफ और दूसरी ओर उनके बीचमें कुछ उठी हुई लंबी खड़ी रेखा होतीहै इसकी जड़मेंसे ही इसके पत्ते निकलतेहैं पत्तोंके बीचमें एक लंबी डंडी होतीहै उसके ऊपर एक फुट लंबा रूएदार सिट्टा होताहै।

प्रयोग—(१) इसके पकेहुए सिट्टेकी रूई क्षत और व्रण पर सांदी रूईकी भाति लगाई जातीहै (२) एरेको जलमें ओटाके स्नान करनेसे शीतपित्त मिटताहै (३) इसकी जड़को मिश्रीके साथ ओटा छान ठंडा करके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) यह शीतल पुरुषार्थ पैदा करनेवाला नेत्ररोग मिटानेवाला और वातलहै (५) यह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह और रक्तपित्तको मिटाताहै।

संख्या (७६)

(सं०) एरण्डः, आमण्डः, चित्रः, वातारिः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
एरड इरड	एरड अरड	एरडो एरड	एरंड	भेरेण्डा	हंडोला अरंड	आमिदट्ट

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
आमणक	हरलगिड	खिरवाअखि-यज	वेदअंजीर सुफद	Ricinus. Communis R enermis	Castor oil plant. (2) Palma, Christi.

स्थान—एरंडके वृक्ष हिन्दुस्थान में सब ठौर होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष दो प्रकार का होताहै एकके बीज बड़े होतेहैं उसका तेल जलानेके काममें आताहै और दूसरेके बीज छोटे होते हैं उसका तेल औषधिके प्रयोगमें आता है इसके बीजोंका तेल निकालनें में अग्नि का संस्कार या उष्ण जलका संसर्ग नहीं होने देना चाहिये ऐसे निकाला हुआ तेल जलाने में दूसरे सब तेलोंसे अधिक प्रकाश देताहै इसकी रोशनी ठण्डी और नेत्रोंको हानिकारक नहींहै । यह जलनेमें दूसरे तेलोंसे कम जलता है और इसका कज्जल कम होताहै ।

प्रयोग—इसका तेल विशेष करके विरेचन के काममें आताहै, इससे निरुपद्रव तीव्र विरेचन लगताहै रोगीकी आयु और शरीरकी शक्ति चाहे जैसे हो दाह और खुजली नहीं होताहै शौचके वेग अवश्य लगतेहैं परन्तु कभी २ किसीको विरेचन नहीं भी होताहै (२) बालक को जन्मदिनसे तीन सप्ताह तक लगातार इस तेलकी थोड़ी २ मात्रा देनी चाहिये (३) बादीकी तीव्रपीड़ा मिटानेवाली औषधियों के योग में इसका तेल पड़ता है (४) इसको गोमूत्र के साथ पेटके रोगोंमें देना चाहिये (५) सोंठके क्वाथ में मिलाके पिलानेसे भी बादी के रोग मिटतेहैं (६) दश मूलके क्वाथमें मिलाके पिलानेसे भी बादीके रोग मिटतेहैं (७) इसकी गुलीको पीस उष्णकर लेप करनेसे छोटे जोडोंकी और गठिया की शोथ मिटतीहै (८) स्त्री के स्तनोंकी

शोथ पर भी यही लेप करना चाहिये (९) इसके पत्तोंमें इसकी मींगी जितनी शक्ति नहीं है। (१०) अहिफेन आदि दूसरे मादक विषोंका विष उतारने के लिये इसके पत्तोंका स्वरस पिलाके वमन कराना चाहिये (११) इसके पत्तोंकी जोके आटेके साथ लूपरी बनाके बांधनेसे आंखोंकी पित्त शोथ उतरतीहै (१२) प्लीहादिक की पुरानी वृद्धि मिटानेके लिये इसकी जड़से विरेचन कराना चाहिये (१३) इसकी जड़का लेप करनेसे रुधिरविकार मिटते हैं (१४) इसके पत्ते उष्ण करके स्त्रीके स्तनों पर बांधनेसे दूध का संचार मिटताहै (१५) रुधिरकी ऊष्मा के कारण से शरीर पर खुजली और फोड़े फुन्सी होजाते हैं उन पर एरण्ड का तेल लगाना चाहिये (१६) इसके तेल की अपेक्षा इसकी मींगी में रेचक शक्ति बहुत तीव्र है अर्थात् २-३ बीजोंकी मींगीपे बहुत तीव्र विरेचन लगता है (१७) इसके पत्तोंका स्वरस पिलानेसे दूधका संचार अधिक होताहै (१८) इसके पत्तोंको पीसकर बिगड़े हुए घाव और व्रणों पर लगानेसे साफ होके मिट जाते हैं (१९) पत्तोंको उष्ण कर पेट पर बांधनेसे मासिक धर्म ठीक होने लगताहै (२०) इसके पुष्प सारकहैं (२१) इस के पत्तों को गर्म करके बांधने से नहरुवे की शोथ उतरती है (२२) इसकी सूखी जड़का क्वाथ ज्वरनाशक है (२३) इसकी जड़की छालका क्वाथ पिलानेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (२४) आंखके सफेद भागमें रगड़ लगनेसे उत्पन्न हुई पीड़ाको मिटानेके लिये उसमें इसके तेलकी बूंदें डालना चाहिये (२५) विरेचन करानेके लिये इसके तेलको तिगुने त्रिफलाके क्वाथ या दूध के साथ देना चाहिये (२६) इसकी जड़को पीस छानके पिलानेसे अफीम का विष उतरताहै (२७) इसके पत्तोंका रस गुदामें नित्य २-३ बेर मलने से पेटके कीड़े बाहिर निकल आतेहैं (२८) इसकी कोंपलोंको पीस छानकर पिलानेसे अफीमका विष उतरताहै (२९) इसकी कोमल कोंपलोंको पीस के लेप करनेसे नाड़ीव्रण मिटताहै (३०) इसकी जड़को सिरके या पानीके साथ पीसकर गुनगुना कर लेप करनेसे अंडकोषोंकी शोथ उतरतीहै (३१) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे कामिरोग मिटताहै (३२) इसकी दो सेर जड़ को ८ सेर पानीमें औटा २ सेर पानी रख उसमें सेरभर एरंडका तेल डालके औटाके उस पानीको छिजोदेवें इस तेलका मर्दन करनेसे हाथ पैरके जोड़ोंकी

वातपीड़ा मिटतीहै (३३) इसकी एक मींगी ऋतु स्नानके पीछे निगलानेसे एकवर्ष तक गर्भ नहीं रहताहै (३४) इसके पत्तोंको गीली जमीन पर बिछा उनको दाह युक्त ज्वर वालेके शरीर पर बांधनेसे दाह और ज्वरकी शान्ति होतीहै (३५) इसके रसमें पीपलका चूर्ण मिलाके नस्य देने या अंजन करने से कामला रोग मिटताहै (३६) इसकी जड़के चूर्णको मधुमें मिलाके चटानेसे कामला रोग मिटताहै (३७) इसके तेलको गोमूत्रमें मिलाके नित्य थोड़ी २ मात्रा एक महीने तक पिलानेसे गृध्रसी और उरुस्तंभ आदि रोग मिटतेहैं (३८) इसके बीजोंकी मींगीको दूधमें खीर बनाके खानेसे आम वात कटिशूल आदि वातपीड़ा मिटतीहै (३९) इसका तेल पिलानेसे वातकंटक रोग मिटताहै (४०) इसकी मींगी, सौंठ और शक्कर सब बराबर ले गोली बन के देनेसे आमवात मिटतीहै (४१) इसकी १ तोले जड़को आठगुने पानीमें ओटा चतुर्थांश रख उसमें थोड़ा जोखार मिलाके पिलानेसे पार्श्व हृदय और कफकी शूल मिटतीहै (४२) इसके तेलको सौंठके क्वाथमें मिलाके पिलानेसे कटिशूल मिटतीहै (४३) तेलको दूधके साथ पिलानेसे वातगुल्म मिटताहै (४४) वातवृद्धि मिटाने के लिये भी इसका सेवन दूधके साथ एक महीने तक कराना चाहिये (४५) गोमूत्रके साथ इस तेलका सेवन करानेसे पुराणी वातवृद्धि मिटतीहै (४६) बलके क्वाथ में सिद्ध किया हुआ इसका तेल दूधमें मिलाके पिलानेसे आध्मान और शूलयुक्त अंत्रवृद्धि मिटतीहै (४७) एरंडके तेलमें हरड़के चूर्णको मिलाकर पिलानेसे अंत्रवृद्धि और गृध्रसी आदि वातोंकी कई प्रकारकी पीड़ा मिटतीहै (४८) इसका ५ मासे तेल १० तोले दूध में मिलाके पिलानेसे पारे और हिङ्गलूके उपद्रव मिटतेहैं (४९) इसके और नीमके बीजोंको नीमके पत्तोंके रसमें गोली बना योनीमें रखनेसे उसकी शूल मिटतीहै (५०) इसके तेलमें समान भाग दूध मिलाके पिलानेसे अण्डवृद्धि मिटतीहै (५१) इसके तेलमें हरड़को सेककर गोमूत्रमें मिलाके पिलानेसे श्लीपद मिटताहै (५२) इसकी जड़का ६ मासे रस दूध में मिलाकर पिलानेसे कामलारोग मिटताहै (५३) इसके पंचांग को हंडीमें भर उसका मुंह कपड़ मिट्टीसे बन्दकर अग्निमें जला उसमेंसे एक तोले भस्म को चार तोले गोमूत्रमें घोलकर पिलानेसे प्लीहोदर मिटताहै (५४) इसके तेल

और गूगलको गोमूत्रमें मिलाके पिलानेसे पुरानी वातवृद्धि मिटतीहै (५५) इसकी मींगीको पीसकर गुनगुना लेप करनेसे गुर्देकी वातपीड़ा मिटतीहै (५६) इसकी मींगीके छिलकेकी भस्मको नाकमें फूंकनेसे नकसीर बन्द होतीहै (५७) इसकी मींगी खानेसे श्वास मिटताहै (५८) इसके पत्ते सिरकेमें पीसके लेप करनेसे स्तन कठोर होजातेहैं (५९) इसकी लकड़ीकी एक तोले भस्म खानेसे वातपीडा मिटतीहै (६०) इसके हरे पत्तोंको पीसकर गुदापर बांधनेसे बवासीर मिटतीहै (६१) इंडोलीकी मींगी बवासीरको मिटातीहै (६१) इसकी मींगी और मीठा तेल दोनों बराबर ले औटाके नित्य मलनेसे इन्द्रीकी निर्बलता मिटतीहै (६२) इसकी मींगी पहिले दिन एक फिर दूसरे दो ऐसे प्रतिदिन एक २ बढाता हुआ ७ तक बढाके वैसेही एक २ कम करता हुआ एकतक ले आनेसे वायुशूल, अजीर्ण और हाथपावका रह जाना मिटताहै (६३) एरंड और मेंहदीके पत्तोंको पीस गर्म करके लेप करनेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै (६४) इसकी मींगीको पीस बालउखाड़ उस ठौर परलेपकरनेसे बालदेरीसे उगतेहैं (६५) इसकी जडको पीसके घी या तेलमें मिला कुछ गर्मकर गाढा लेप करनेसे वात विद्रधी मिटती है।

संख्या (७७)

(सं०) रक्तैरण्डः, व्याघ्रः, रुबुः, करपर्णः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	उनरन	चमारडुधेली	उतरणी	इन्द्रचिर्भिठी		गुरुटीचेट्टू

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
उत्तामनि	हालकांसीगे				

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्राय सब ठौर लगाये जातेहैं।

प्रयोग—(१) यह कसेला, चरपरा, कडवा और पचनेमें हलका है (२) वात, कफ, श्वास, कास, कृमि, अर्श, वद, रुधिरविकार, पांडु, भ्रम और

अरुचिको मिटाताहै (३) इसके पत्ते वातपित्तको बढातेहै और मूत्रकृच्छ्र, वातकफ और कृमि रोगको मिटातेहैं (४) इसके अंकुर गुल्म, वस्तिकी शूल, कफ, कृमि, वात और सब प्रकारकी वृद्धिको मिटातेहै (५) इसकेपुष्प-वात, कफ, पित्त और मूत्र रोगको मिटातेहैं और रक्त पित्तको बढातेहैं (६) इसके बीजकी मींगी अतिउष्ण, चरपरी मधुर, स्निग्ध और सारकहै. मलकी गांठ को तोड़तीहै अग्निको बढातीहै, गुल्म, शूल, कफ, यकृत्के रोग, वातोदर, प्लीह और वातार्शका नाश करतीहै (७) इसका तेल मधुर, उष्ण, कसेला चरपरा, तीक्ष्ण और पचनेमें भारी होताहै (८) यह सूक्ष्म होनेके कारण से सब स्रोतों को साफ करदेताहै (९) यह तेल-योनी शूल, गुल्म, वातरक्त हृद्रोग, जीर्णज्वर, बद, कटि, पृष्ठ और कोष्ठकी शूलको मिटाताहै, बुद्धि, कान्ति, आरोग्यता, स्मृति, बल औरआयुर्दाको बढाताहै और हृदयको बलवान करताहै।

संख्या (७८)

(सं०) एरंडकर्कटीः. वातकुंभफलं, मधुकर्कटी, मध्वेरंडफलम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंङ्गी
एरंडकाकड़ी	अंड खरबूजा	पेपैया	पोपया			बोप्पायि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
पप्पालि	परंगियपाय			Carica papaya	The papaw or papawtree

स्थान—इसके वृक्ष देहलीसे सीलोन तक हिन्दुस्थानके सब बागोंमें लगाये जातेहैं।

पहिचान—इसके १२ महीने पुष्प लगा करतेहैं इसके उगनेके डेढ वर्ष पीछे फल लगने लगतेहैं इसके फलमें बहुतसे काले बीज होतेहै उनका छिलका मोटा और चमकदार होताहै इसका पका हुआ फल छोटे खरबूजे जितना बड़ा होताहै और उसकी गिर कोमल पीली और कुछ मीठी होतीहै इसका एक २ डंडीपर बहुत बड़ा एक २ पत्ता लगताहै इसके बीजोंका स्वाद राई जैसा होताहै इसका वृक्ष बहुत वर्षों तक नहीं रहताहै इसके राल जैसा श्वेत गोंद लगताहै।

प्रयोग—(१) इसके कच्चे फलका दूधिया रस कृमिनाशकहै (२) इसको पिलानेमें विचार रखना चाहिये क्योंकि यह आंतों को बहुत हानि पहुंचाताहै इसके देनेकी यह रीतिहै कि ताजे फलका १। तोले दूध या रसको १। तोले मधुमें भली भांति मिला उसमें ४–५ तोले ओटता हुआ जल मिलाके ठंढा होनेपर पिलादेवें फिर इसके दो घंटे पीछे एरंडके तेलमें नीबूका रस या सिरका मिलाके पिलादेवें आवश्यकता हो तो दूसरे दिनभी ऐसेही इतनी मात्रा पिलावें यह मात्रा जवान मनुष्यके लियेहै ७ से १० वर्ष तकके बच्चेके लिये इससे आधी और ३ से ७ वर्षके बच्चेको इससे चौथाई मात्रा पिलानी चाहिये जो इससे पेटमें मरोडी चलेतो गर्म जलमें शक्कर मिलाके गुदामें पिचकारी देना चाहिये (३) पेटके कीडे मारनेके लिये १। मासेसे ३॥। मासे तक दूधिया रस पिलाना चाहिये इसका असर आंतोंके लम्बे गोल कीड़ोंपर अधिक और लम्बे चपटे कीड़ोंपर कम होताहै (४) इसके बीजोंकी फकी देनेसे आंतोंके कीड़े मरजातेहैं (५) इसके बीज गर्भवती स्त्रीको थोड़े बहुत भी नहीं खिलाने चाहिये (६) इसका दूधिया रस गर्भाशयके मुखपर लगानेसे बालक सुखसे उत्पन्न होजाताहै (७) इसके कच्चे फलके छिलके उतारनेसे जो दूध निकलता है उसको एकत्र कर बालूरेतपर एक गाढा कपड़ा बिछा उसपर उस दूधको डाल देवें जब उसका पानी सूखके सफेद चूर्णसा होजावे तब उसको बोतलमें भर रखना चाहिये इसमेंसे जवान मनुष्यको भोजन करनेके पीछे आधी रतीसे रतीतक खाड या दूधके साथ देनेसे भोजन शीघ्रतासे पच जाताहै (८) बच्चे और सुकुमार स्त्रियोंके लिये इसके चूर्णका शर्बत बनाके देना चाहिये (९) उसका पकाहुआ फल रक्तशोधकहै (१०) बद्ध कोष्ठ मिटानेके लिये उसके पके हुए फलको कई दिनों तक लगातार प्रभातके समय खिलाना चाहिये (११) इसके सूखे फलके चूर्णमें अथवा फलके टुकड़ोंपर नमक लगाकर खिलानेसे बढी हुई तिल्ली नर्म होजातीहै (१२) इसका दूधिया रस लगानेसे ऑटन और वे फोड़े मिटजातेहैं कि जिन पर बारंबार खरूट आकर उतर जाया करताहै (१३) दूधको विच्छूके दंशपर लगानेसे विष उतरताहै (१४) इसके कच्चे फलके चूर्णकी फक्की देनेसे पुराना अतिसार मिटता है (१५) इसके पकेहुए ताजे हरे फलका शाक और आचार बनातेहैं । ये सारक और

मूत्रजनकहै (१६) इसका पका फल खानेसे पेटकी दाह मिटतीहै और मल ढीला पडजाताहै (१७) इसके हरे फलके रससे पेटकी पीडा मिटतीहै (१८) अर्शवालेके मलको ढीला करनेके लिये इसका पका हुआ फल खिलाना चाहिये (१९) कच्चे फलका दूधिया रस लगानेसे स्नायुककी शोथ बिखर जातीहै (२०) इसका दूधिया रस लगानेसे सफेद चाठे, उपदंशके व्रण और त्वचाके दूसरे रोग मिटतेहै (२१) इसका पका फल उष्ण और रेचकहै इसलिये रक्तार्श, बढी हुई तिल्ली और बढे हुए यकृत् वालेको खिलातेहै (२२) इसके पके हुए हरे या कच्चे फलका शाक खिलानेसे तुरंत दुग्ध बढताहै (२३) इसके पके हुए हरे फलको बनार सुखा चूर्ण बनाके २॥ रत्तीसे १। मासे तक्र की फक्की देनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (२४) इसके दूधिया रसका लेप करने से गांठ बिखर जातीहै (२५) इसके पत्तेको उष्ण जलमें डुबोके अथवा अग्नि पर तपाके बांधनेसे स्नायुसम्बन्धी पीडा मिटतीहै (२६) इसके बीज भी कृमिनाशकहै (२७) रुधिर विकारसे जो त्वचा मोटी पड़ने लगजातीहै उस पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे उसका मोटापन मिटकर फिर मोटा होना बन्द होजाताहै (२८) इसके पके हुए फलके खानेसे कोई उपद्रव नहीं होताहै और आरोग्यता बढतीहै (२९) इसके कच्चे फलके रसमें शक्कर मिला ३॥ मासेकी गोली बनाकर तिल्लीवालेको दिनमें ३ वेर देना चाहिये (३०) कई लोग इसके पके हुए फलको शक्करके साथ और कई कालीमिरच और नमकके साथ और कई इसके टुकडोंको पानीमें उबालकर नींबूके रस और शक्करमें मिलाके खातेहै। इसके हरे फलके टुकडोंको आटा, मीठे तेलमें छोंककर उनमें सिरका, नमक और कालीमिरच मिलाके खातेहै।

संख्या (७९)

(सं०) एला, सूक्ष्मैला, द्राविडी, त्रुटिः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
छोटीइला-यची	इलायची	नानीएलची	एलची	छोटएलाच	इलाय-चीछोटी	चिन्नएळकलु

द्रांविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
चित्रयेळं	किरीयाळकि	काकुलह सिगार	हीलखुर्द खिप्वाअी	Elettaria Cardamomum L. Alpinia C.	The lesser cardamom Malabar L.

स्थान—इसके बूंटे हिन्दुस्थानके पश्चिम और दक्षिण भागमें, कनारा, मैसोर, कुर्ग, ट्रेवनकोर, मदुरा और मलेबार आदिक पहाडी तरजंगलोंमें बहुत होतेहैं।

पहिचान—इनकी जड़में कंद निकलताहै इनके सफेद और लाल पुष्प लगतेहैं, उनमें इलायची दाने जैसी सुगन्धि आतीहै। उत्तम इलायचीके दाने काले रंग के होतेहैं।

इलायची दानोंका तेल जो भभकेमें निकाला जाताहै वह हल्के पीले रंगका होताहै और स्वाद और सुगन्धमें इलायची जैसाही होताहै २० तोले इलायची दानोंमें १ तोला तेल निकलताहै। इसके बीज हवा लगनेसे विगड़ जातेहैं इसलिये आवश्यकताके विना उनको छिलकोंमेंसे नहीं निकालना चाहिये।

प्रयोग—(१) इलायची दाने खाने से श्वास की दुर्गंध मिटजाती है (२) इनको महीन पीसके सूंघनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (३) इनको सेककर मस्तगीके साथ दूधमें फक्की देनेसे मूत्राशयकी दाह मिटतीहै (४) अनार के शर्करोदक (शर्बत) में इलायची बुरकाके तथा इसके तेलकी ५ बूंद डालकर पिलानेसे उत्क्लेद और वमन बन्द होतीहै (५) विसूचिकासे शरीरमें जो शिथिलता होजातीहै उसको मिटानेके लियेभी पित्तकी प्रबलता हो तो चौथा प्रयोग करना चाहिये और कफ वातकी प्रबलता होवेतो नहीं करना चाहिये (६) दूसरी चरपरी चीजोंके साथ इनकी फक्की देनेसे अफारा और पेटकी शूल मिटतीहै (७) पानबीडेमें इलायचीदाने डालकर चबानेसे मुखकी दुर्गंध मिटतीहै (८) थोडा २ करके तोले भर इलायचीका अर्क पिलानेसे नकसीर बन्द होवीहै (९) इलायचीदाने और पीपलामूलके चूर्णको घृतके साथ चटानेसे उपद्रव सहित कफका हृद्रोग मिटताहै (१०) इलायचीदानेके चूर्ण को गोमूत्र या केलेकेरस अथवा मदिराके साथ लेनेसे कफका मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) इलायचीदाने खानेसे मदाग्नि मिटतीहै (१२) इलायची के एक

या २ तोले छिलकोंको आधसेर पानीमें ओटा आधा रख के पिलानेसे विसूचिका मिटतीहै (१३) छोटी या बडी इलायचीका अवलेह बनाकर चटानेसे वमन बन्द होतीहै (१४) इनका क्वाथ पिलानेसे तृषा बन्द होतीहै।

संख्या (८०)

(सं०) स्थूलैला, पृथ्वीका, कायस्था, भद्रैला।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बड़ीइला-यची	बडीइला यची	मोटीएलची	एलदोड	बड़एलाच	इलायची बड़ी	पेद्दएळकुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
पिरियेळं	हिरीयालकि	काकलेह-किबार	काकलेह कलां	Am mum sul ulatum	The greater cardamom

स्थान—इसके वृक्ष नेपालमें होतेहैं।

परिचान—इसके बीज चरपरे और सुगंधयुक्त होते हैं। उनमेंसे तेल निकलता है वह चित्त प्रसन्न करने वाला उत्तेजक और पीले रंगका होता है यह सुगंध और स्वाद में बीजों जैसाही होताहै।

प्रयोग—(१) मिश्रीके साथ इसके बीजों के चूर्ण की फक्की लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (२) इनके चूर्णको धोली मूसली और मिश्रीके साथ लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (३) बीलगिरके साथ इनके चूर्ण की फक्की लेनेसे अतिसार मिटताहै (४ सोंठके साथ लेनेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (५) इनके २ मासे चूर्णको कुनैनके साथ देनेसे स्नायु जालकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसका ४ रत्ती चूर्ण लेनेसे यकृत् के व्रण मिटतेहैं (७) काले नमकके साथ इनके चूर्णकी फक्की लेनेसे पेटकाशूल और अफारा मिटताहै (८) मिश्रीके साथ इनके चूर्णकी फक्की लेनेसे विसूचिकासे या किसी दूसरे रोगसे पैदा हुई दाह मिटतीहै (९) इनके क्वाथके गंडूष करनेसे दांत और मसूड़ोंके रोग मिटतेहैं (१०) इलायचीदाने और खरबूजेकी मींगीको मिश्रीके साथ घोट छानकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटतीहै (११) आंतोंमेंसे

थोड़ा और गाढ़ा रस निकलनेसे जो मंदाग्नि होतीहै उसको मिटानेके लिये इनका प्रयोग बहुत लाभकारीहै (१२) इनकी फकी लेनेसे पित्तका प्रवाह बढ़ताहै (१३) राईके चूर्णके साथ इनकी फकी लेनेसे यकृतमें रुधिरका जमाव बिखर जाताहै (१४) इनके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाके २ मासेकी फकी गर्भवती को देनेसे उसकी क्षुधा बढतीहै ।

हि० बं० मोरंग इलायची ।

Latin —Amomum aromaticum Eng —The Aromatic cardamom plant

स्थान—इसके वृक्ष बंगालके पूर्वकी सीमाके ग्रामोंमें होतेहै । इनके फलोंको मोरंग इलायची कहतेहैं ।

पहिचान और फूलने फलने का समय—इनके डोडे बड़ी इलायची के डोडोंसे कम मिलतेहैं, परन्तु बीजोंका स्वाद और आकार मिलता हुआही है । इसके फल भादवे तथा आसोजमें पकतेहै ।

प्रयोग (१५)—ये बीज संकोचक, ग्राही और बलकारकहैं (१६) इन के चूर्णका मंजन करनेसे दात दृढ और उजले रहतेहै ।

हिन्दी इलायचीदाने । Latin —Amomum cantho-das

स्थान—ये इलायचीदाने चीन और सिंगापुरसे आतेहैं और दक्षिणके हरेक बड़े २ नगरमें मिलतेहै ।

पहिचान—ये बीज नोकदार कोई तिखूंटे कोई दबे हुए और कोई चिपटे होतेहैं और आकार में उनसे छोटे और पीले भूरे रंगके होतेहैं ये चित्त प्रसन्न करने वाले, उत्तम सुगंध वाले और स्वाद में कुछ चरके होते है मलेबारकी इलायचीके बीजोंसे इनकी सुगंधी और स्वाद अधिक तीक्ष्ण होने परभी इन के स्वादसे चित्त बहुत प्रसन्न होताहै ।

प्रयोग—(१७) ये उत्तेजक और वातनाशकहैं और उन सब रोगोंमें लाभकारी है कि जिनमें साधारण इलायची दाने काममें आतेहै (१८) इनके चूर्णको मक्खनमें मिलाके चटानेसे आंतोंकी ऐंठन, शूल, दस्तकी बार बार शंका होना, बार बार दस्तका लगना और आमातिसार मिटताहै (१९) इनका चूर्ण १। मासेसे २॥ मासे तक देना चाहिये ॥

संख्या (८१)

(सं०) एलावालुकं, कपित्थं, दुष्टवर्णं, त्वकूगन्धम् ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आलूबालू	एलुआ	एलवालुक	एलवालुक	एलवालुक	लालुको	कूतरुनुडमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	सुरसुरके	कासिया	आलूबाल आलूबालू	Prunus Cerasus. Cerasus Caproniana	The sour chury or Heart cherry

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके संयुक्तप्रदेश पंजाब और हिमालयमें होतेहैं कश्मीरमें इसकी कई जातें बोई जातीहैं उनके अच्छे फल लगतेहैं।

पहिचान—यह एक साधारण उंचाईका वृक्ष खट्टे और मीठे फलोंके कारणसे दोप्रकारका होताहै इसके सफेद पुष्प लगतेहैं इसकी पेड़ छोटी होतीहै जिसमें कूट जैसी गंध आतीहै इसकी छाल कैथकी छाल जैसी होतीहै इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने-फलनेका समय—इसके चैत-वैशाखमें पुष्प लगतेहैं और जेठमें फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) यह कसेला, शीतल, पचनेमें हल्का, पाकमें चरपरा और रोचकहै मुखके स्वादको सुधारताहै कफ, मूर्छा, बादी, दाह, ज्वर, कंडू, विष, वमन, तृषा, श्वास, हृद्रोग, पित्त, रुधिरविकार, वद, कृमिरोग और कुष्ठ आदि रोगोंको मिटाताहै (२) इसकी छाल कड़वी और ग्राहीहै (३) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) इसकी गिरीसे स्नायुजालका बल बढ़ताहै। इसके फलोंका मुरब्बा और आचार बनाया जाताहै। एलुआ इस नामसे जो पदार्थ मिलताहै वह एलावालुक नहींहै।

संख्या (८२)

(सं०) ओखराडी, भिस्सटा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	ओखराड्य	ओखराड ओखराड्य				

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Mollugo Hirta. Glinus lotoides	

स्थान—यह बूंटी तलाइयोंकी तलहटी और नदियोंके किनारेपर हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें सब ठौर होतीहै।

पहिचान—इसका पेड एक से तीन फुट तक ऊंचा होताहै इसमेंसे बैजनी नीलारंग निकलताहै।

प्रयोग—(१) इसकी जडकी भस्म बच्चोंको कफकी बीमारीमें दी जाती है (२) इसके पत्तोंके क्वाथसे धोनेसे घाव साफ होजाताहै (३) इसके बीजोंकी फकी देनेसे विरेच लगताहै (४ इसकी और करोंदेकी जडको कूट टिकडी बनाके बांधनेसे छाला उठजाताहै (५) इसके सूखे पेड़के पंचांगका क्वाथ कर उसपर थोडी राई बुरकाके पिलानेसे रुधिरशुद्ध होताहै (६) इसके पंचांगकी भस्म और कालीमिरचको पीस तेलमें मिलाके लगानेसे मस्तकके पुराने व्रण मिटतेहैं (७) जिसका मूत्र बन्ध होगयाहो उसको इसका पंचांग और कालीमिरचोंको ठंढाईकी भांति घोट छानकर पिलाना चाहिये॥

संख्या (८३)

(सं०) कंकोलं, कटुकं, कोलं, कृतफलम्॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कंकोलामिरच	शीतलचीनी	चणकबाब	कंकोळ	कांकला	कंकोलमिरच	तक्कोलालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	तक्कोल	कबाबह		Piper, Cubeba Cubeba Officinalis	Cubeba (?) Cubeb pepper (?) Tail pepper

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें कहीं २ बोई जातीहै ॥

पहिचान—असली, नकली तथा बड़ी और छोटीके भेदसेवं कोल मिरच दो प्रकारकी होतीहै-मोटे-बकलवालीको-कंकोल-और-पतले बकल-वाली-को शीतलचीनी कहते है। इसके एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ लगता है ॥

इसमें से पच्चीसवें से आठवें भाग तक तेल निकलताहै अर्थात् १०० तोलेमें से ४ से १२ तोले तक तेल निकलताहै, उसमें हल्की, चरपरी, सुगन्धि होतीहै और कपूर और प्येपरमिण्ट-जैसा उष्ण स्वाद होताहै ॥

प्रयोग—(१) यह पुरुषार्थ पैदा करनेवाली बहुत उत्तम औषधिहै (२) इसके चूर्णकी फक्की लेनेसे पेटका अफारा मिटताहै (३) इसको चूसने से खांसी की रूक्षता मिटतीहै (४) उष्ण वेसवार (गर्म मसाले) की यह बहुत उत्तम वस्तुहै (५) मिश्रीके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (६) शीतलमिरच, वच और कुलिंजनको नागरवेलके पानके रसमें पीस गोली बनाके चूसनेसे स्वरभंग मिटताहै (७) मुखके भीतरकी शोथ मिटानेके लिये इसको चूसते रहना चाहिये (८) इसको चूसने से गलेका भारीपन मिटताहै (९) अफीमके साथ इसकी गोलिया बनाके देनेसे आमातिसार मिटताहै इसपर-मूंग चावल और कच्चे केलेकी खिचडी देना चाहिये (१०) दूधके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) इसके चूर्णकी फक्की सोंठके साथ लेनेसे शरीरका आलस्य मिटताहै (१२) शोथविखेरनेवाली—औषधियोंके साथ इसका अथवा केवल इसकाही लेप करनेसे शोथ और गांठ बिखरजातीहै (१३) वीर्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंके रोग मिटानेके लिये शीतलमिरच, इलायची, वंशलोचन और मिश्री इन सबके एकतोले चूर्णकी—फक्की-पावभर दूधके-साथ-देना-चाहिये-(१४)-इसको चूसनेसे स्वरभंग मिटता है ॥

संख्या (८४)

(सं) कङ्गु, कङ्गुनी, प्रियंगुः, पीततण्डुलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कांगनी	कांगनी	कांग	कांगराळे	कांनिधान	कागनी-कगनी	कुरेलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	नवणे	दुखन	अरजन	Selaria italica Panicum italicum	Italian millet

स्थान—कांगनी हिन्दुस्थानमें बहुतठौर बोईजातीहै और अपने आप भी उगतीहै १०० तोले कांगनीमें ७२ तोले मैदा और मांडी तीनतोले तेल निकलताहै॥

प्रयोग—(१) कांगनी खानेका एक उत्तम पदार्थ गिना जाताहै परन्तु इसकी उष्ण प्रकृति होनेके कारण खानेके काममें कम लातेहैं जो यह इकल्लीही खाई जावेतो इससे कभी २ अतिसारहो जाताहै। इसकेनियूप, पूरी, कचोरी आदि कई प्रकारके पदार्थ बनाये जातेहैं। इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै। इसको दूधमें औटाकर निर्बल रोगीको पिलाना चाहिये (२) इसको औटाकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (३) इसका लेप करनेसे गठियाकी पीड़ा मिटतीहै (४) अतिसार वालेको इसकी फक्की देतेहैं (५) इसकी रज कानमें बुरकानेसे पूयकी बहनी बन्द होजाताहै।

संख्या (८५)

(सं०) कच्वी, कचुः, आलुकी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अरी, अरवी	घुइयां, अरुई		अरवी चमकुरा	कचुः	अरवी	चामगड्डा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
श्येमकलंग	श्यामेगड्डे	कुलकास	----	Colocasia antiquorum Arum C	Indian yam Taro

स्थान—अरुईके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतेहैं। यह सात प्रकारकी होतीहै। परन्तु हिन्दुस्थानमें तीन प्रकारकीही बोई जातीहै।

प्रयोग—(१) इसके कोमलपत्तोंमेंसे रस निकालके लगानेसे और पिलानेसे नाड़ियोंमेंसे या रक्त बाहिनी शिराओंमेंसे निकलता हुआ रुधिर बंध होजाताहै (२) इस रसके लगातेही सद्य और शुद्ध क्षतमेंसे रुधिरका निकलना बंध होजाताहै और कुछ देरमें घाव भर जाताहै (३) काली जाति की अरवीके पत्ते और उनकी डंडियोंका रस निकाल उसमें नोंन डालकर लेप करनेसे पेशियों (गिल्टियों) की और गांठोकी सूजन बिखर जातीहै (४) इसी जातिके कंदका रस निकालकर लेप करनेसे बालों का गिरना बंध होजाताहै और नवीन उगने लगतेहैं (५) इसके कंदका रस पिलानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (६) भिड़ या दूसरे विषैले जीवोंके दंशपर इसका रस लगानेसे विष उतरताहै (७) इसका रस पिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (८) यकृत्में जो रुधिर जम जाताहै उसको उबिखेरनेके लिये इसका रस पिलातेहैं (९) इसके पत्ते और कंदका शाक बनाया जाताहै।

संख्या (८९),

(सं०) कटभी, स्वादुपुष्पा, मधुरेणुः, कटम्भरा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	कालीकटभी	काळावापुगा	काळीकिन्ही	कटभी	कांटेवाला सिरस	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Careya—arborea.	Carey a tree

स्थान—काली कटभीके वृक्ष हिमालयमें जमुनासे पूर्वमें और बंगाल, ब्रह्मा और मध्य पश्चिम और दक्षिण हिन्दुस्थानमें होतेहै ॥

पहिचान—इसका वृक्ष ५० फुट ऊंचा होताहै। इसके पेड़की गुलाई ८ फुटकी और उसकी छाल १—२ इंच मोटी गहरी भूरी और या खरदरी होतीहै। इसके पुष्प खिरनेके पीछे ही फागुन और चैतमें नये पत्ते आने लगतेहैं और एक २ सींकपर १०-१२ जोडे पत्तोंके लगतेहैं, पत्ते कुछ लम्बे और

सुकड़े हुए होतेंहं वे शीतकालमें लाल पडजातेहैं । उष्ण कालमें इसके श्वेत और गुलावी, या पियाजी बडे २ पुष्पोंके गुच्छे छोटी डालियोंके अन्तमें लगतेहैं । इसका फल हरे रंगका होताहै उसकी मध्य रेखा ३ इंचकी होतीहै ।

फूलने फलनेका समय—उष्णकालमें इसके पुष्प आतेहैं और उनके ३–४ महीने पीछे इसके फल पक जाते है । इसके फल खाने और औषधि के काममें आतेहैं इसके वीजोमें थोडा वहुत विषहै । इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै । इसके भूरा या कुछ नीलापन लिये हुए गोंद लगताहै वह पानीमें लगजाताहै ।

प्रयोग—(१) इसकी छालसे अतिसार मिटताहै (२) इसको भिगोनेसे जो वहुतसा चेप निकलताहै वह मर्दन करनेकी जिन औषधियोंसे उपाड़ होताहै उनमें मिलानेसे उपाड़ नहीं होता (३) सर्पका विष उतारनेके लिये इसकी जडका क्वाथ पिलाना चाहिये (४) सांपके दंशपर इसकी जड़का लेप करतेहै (५) बच्चा होनेके पीछे वल वढानेके लिये इसके पुष्पोंका शर्वत पिलाना चाहिये (६) बच्चा होनेसे जो घाव होजाताहै वह इसके क्वाथसे धोनेसे मिटजाताहै (७) ताजी छाल के रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कफ और प्रतिश्याय मिटताहै (८) इसका फल ग्राहीहै (९) इसके फलका क्वाथ करके पिलानेसे पाचनशक्ति वढतीहै ॥

संख्या (८७)

(सं०) कटुकी, कृष्णभेदा, कांडरुहा, चक्राङ्गी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कुटकी कुटक	कुटकी	कडु	केदारकटुकी	कटुकी	कौड	कटुकुरोगनि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
कटुकरोहनि	टुरोहिणि(नि)			Picrorhiza kurroa.	Black Hellebore Christmas rose

स्थान—कुटकी हिमालयमें कश्मीरसे सिकम तक पैदा होतीहै ।

पहिचान—इसका पोधा छोटा होताहै उसके थोड़े बहुत रुए होतेहैं, इसकी जड़ पतली और जोड़दार होतीहै।

प्रयोग—(१) कुटकी कड़वी और चरपरी होतीहै इसकी अधिक मात्रादेनेसे साधारण विरेचन होताहै (२) ७॥ मासे कुटकीके चूर्णमें ७॥ मासे शकर मिलाकर उष्ण जलके साथ फकी देनेसे साधारण विरेचन होताहै (३) कुटकी और नीमकी अंतर छालको क्वाथ पिलानेसे पित्तज्वर और तृषा मिटतीहै (४) कुटकीके २॥ तथा ३ मासे चूर्णकी फक्की देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (५) इसके ५ रत्ती से १। मासे तक चूर्णकी फक्की देनेसे बल बढ़ताहै (६) जिस २ रोगमें इसका प्रयोग लिखाहै उस २ रोगको मिटानेवाली एक दो औषधि इसमें मिलाने से यह अधिक गुण करतीहै (७) ४ से ८ मासे तक इसके चूर्णकी फकी देनेसे तिल्ली मिटतीहै (८) काली मिरच के साथ इसकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटती है (९) सोंठ के साथ इसकी फकी देनेसे सब प्रकारकी मंदाग्नी मिटतीहै (१०) कुटकीका तेल बनाके आमाशय और अंतड़ियों पर मर्दन करनेसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (११) इसके चूर्णकी १ से २॥ मासे तक मात्रा बारीसे आनेवाले ज्वर में देना चाहिये (१२) तोले तोले भर कुटकी का क्वाथ दिनमें ३-४ बेर ३–४ दिन तक लगातार देनेसे जलंधरवालेको पानीकी गहरी दस्तें लगके जलंधर मिटता है परन्तु कभी २ सात दिन तक यह क्वाथ पिलाना पड़ताहै (१३) इसके ६ मासे चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाके उष्ण जलके साथ फकी देनेसे कफ और पित्तज्वर छूटताहै (१४) इसके चूर्णमें शक्कर मिला गरम जल के साथ एक तोले भरकी फक्की लेनेसे कामला रोग मिटताहै (१५) इसके चूर्णको मधमें मिलाके चटानेसे हिचकी बन्द होतीहै (१६) इसके और मुलहठीके चूर्णकी गर्मजलके साथ फकी लेनेसे जीर्णज्वर, रक्तपित्त और हृद्रोग मिटताहै (१७) इसके क्वाथमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे एकाहिक ज्वर, श्वास और कास मिटजातेहैं॥

संख्या (८८)

(सं०) कट्फलं, सोमवल्कः, श्रीपर्णी, कुमुदा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कायफल	कायफर(ल)	कायफळ	कायफळ कुंभा कुंभी	कट्फल	कायफल	पापूरवुड्म

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मरुधंपट्टै	किरुसिवृन्नि	ऊदुलवर्क	दारशीशान	Myrica Nagi & Sapida	The box myrtle

स्थान—कायफलके वृक्ष हिमालय में रावीसे पूर्वकी ओर, खासिया पहाड़ में सिलहट और दक्षिण की ओर सिंघापुर तक होते हैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेड़ड मोटी और खड़ी होतीहै । चैत वैशाखमें इसके नये पत्ते आजातेहैं उनको मलनेसे या तोड़नेसे मन्द सुगन्ध आतीहै इसकी डंडीके पत्तोंके जोड़ नहीं लगतेहैं । इसके फल छोटे और लम्बे होतेहैं उनमें लाल रंगकी थोड़ी गिर निकलतीहै । इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाताहै ।

फूलने फलने का समय—आसोजसे मृगशिर तक इसके पुष्प लगतेहैं, और वैशाखमें फल पकतेहैं ॥

प्रयोग—(१) इसकी छालको महीन पीसके सुंघानेसे रुद्ध प्रतिश्याय मिटताहै । (२) पसीने मिटानेके लिये सोंठ और कायफलको पीस कपड़छानकर मर्दन करना चाहिये, इस कामकी यह बड़ी उत्तम औषधिहै (३) मस्तकका भारीपन मिटानेके लिये कायफल और कालीमिरचको पीसके सुंघाना चाहिये (४) इसको सिरकेमें पीसके लगानेसे मसूड़े मजबूत हो जातेहैं और दांतोंकी पीड़ा मिट जातीहै (५) कायफलको तेलमें पका उसकी बूंदें कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसका काथ पिलानेसे श्वास रोग मिटताहै (७) कायफल और बीलगिरके क्वाथसे अतिसार मिटताहै (८) इसके काथमें जोखार डालके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (९) इसका चूर्ण बिगड़े हुए घावपर बुरकाना चाहिये या उसको इसके हिमसे धोना चाहिये (१०) इसके चूर्णकी पौनेचार मासेकी फकी देना चाहिये (११) इसके फूलोंका तेल बनाके उन सब रोगोंमें काममें लाना चाहिये कि जिनमें

इसकी छाल काममें आतीहै (१२) इसकी छाल उष्ण और उत्तेजकहै (१३) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे कफ और खांसी मिटतीहै (१४) इसके और काले नमकके चूर्णकी फक्की देनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (१५) इसको पानीमें पीस उष्ण कर लेप करनेसे गांठ बिखर जातीहै (१६) इसके और पीपलके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे कफ ज्वर छूटताहै (१७) इसको महीन पीस घृतमें मिलाके लेप करनेसे अर्शकी पीड़ा मिटतीहै (१८) इसको पानमें रख चाब २ के पीक निगलनेसे गलेके कफ सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (१९) इसके क्वाथके कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (२०) इसी क्वाथसे जिह्वाका भारीपनभी मिटताहै (२१) कायफल नकछीकनी और कटेरीके सूखेफल प्रत्येक छैछै मासे और चार तोले तमाखूको महीन पीस दो मासे नित्य सुंघानेसे अपस्मार मिटताहै (२२) इसको भैंसके दूधमें पीस रातको इन्द्री पर लेपकर प्रातःकाल धो डालना चाहिये ऐसे कई दिनोंतक करनेसे नपुंसकता मिटतीहै (२३) इसके कपड़छान किये हुए चूर्णमें बराबर बूरा मिलाकर मासिकधर्मसे शुद्ध होनेके पीछे एक तोलेकी फक्की नित्य ३ दिनतक देनेसे स्त्री गर्भ धारण करती है।

संख्या (८९)

(सं०) कटू।

मरवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कडू	कडू		कडू	कडू	नीलकंठ कमलफूल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Gentiana Kurroo Pneumonanthe K.	

स्थान—कडूके बूंटे कश्मीर और राजपूताना आदि देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसके सुन्दर नीले पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी जड़ बहुत कड़वी होतीहै और चिरायतेकी ठौर काममें आतीहै (२) इसको कालीमिरचके साथ पीसकर पिला-

फल के बीज निकाल पीस कर इन्द्रीपर मलके ऊपर एरंडके पत्ते बांधनेसे ध्वजभंगता मिटतीहै (२७) सफेद कटेलीकी जड़को पुष्य नक्षत्रके दिन लाकर कन्याके हाथसे पिसवाके गौके दूधके साथ ऋतु स्नानके पीछे स्त्रीको पिलानेसे वह गर्भको धारण करतीहै (२८) कटेलीको पीसके खिलानेसे सर्पका विष उतरताहै ।

संख्या (६१)

(सं०) बृहती, सिंहिका, क्रांता, वार्ताकी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ऊभीकटाली	बड़ीकटाई	ऊभीभोरिंगणी	डोरली	बृहती व्याकुल	मगोलीवड़ी	मुलक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	गुल्ला			Solanum indicum. S violarum.	

स्थान—ऊभी कटेलीके पेड़ हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पहिचान—इसका छोटा और खड़ा क्षुप होताहै इसके पत्ते और शाखाओंमें तीखे कांटे होतेहैं इसके फल आंवलेके बराबर बड़े चित्तले और पीले होतेहैं इसके पत्ते हरे और आकारमें बैंगनके पत्तोंके जैसे होतेहैं इसको बैंगन कटेरीभी कहतेहैं ॥

प्रयोग—(१) यह इकली काममें नहीं आतीहै परन्तु तबभी सूखी खांसी, कफ और प्रतिश्यायके रोगोंको मिटातीहै (२) हृदयकेरोग, श्वास, नपुंसकता, जीर्णज्वर, अफारा, शूल कृमिरोग और अतिसारको मिटातीहै (३) इसकी डोडीकी धूनी देनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (४) वृक्कके रोग और मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये इसका १२॥ तोले क्वाथ दिनमें दो बेर पिलाना चाहिये (५) समयपर बच्चा जल्दी पैदा होनेके लिये इसका क्वाथ पिलातेहैं (६) इसकी एक तोले जड़का क्वाथ पिलानेसे कफ और श्वास मिटताहै ॥

———(७०)———

संख्या (६२)

(सं०) कतकं, तोयप्रसादनं, अम्बुप्रसादः, तिक्तमरिचः॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
निर्मलीकाबीज	निर्मली	निर्मली (ळी) कतकफळ	निवळी चर्वी	निर्मलीफल	निर्मली जलनिर्मली	चिल्लगिंज

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तेत्ताकोट्टे	चिल्लदनीजा	—	—	Strychuos potatorum S Tettankotta	The cl.aring nut

स्थान—निर्मलीके वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान बंगाल और बिहारमें होतेहै।

पहिचान—यह साधारण उंचाईका वृक्ष होताहै, इसकी छाल धूमर के रंगकी होतीहै-उसमें गहरी दरारें पडजातीहै इसके सुगंध युक्त श्वेतपुष्प लगतेहैं, इसका फल पकनेपर काला पड़जाताहै उसमें गोल और एक ओर से चिपटा, गिरमें-लिपटाहुआ बीज निकलताहै॥

प्रयोग—(१) निर्मलीके बीजोंको पीस थोडे कपूर और मधुमें मिला आखमें अंजन करनेसे गीडोंका बहुत आना बन्दहोताहै (२) निर्मलीके बीज और सेंधेनमकको पानीमें घिसकर आखमें अंजन करनेसे अर्जुनरोग मिटता है (३) नेत्रके और कई रोगोंमें निर्मलीका बीज काममें आताहै (४) नेत्र की ज्योति बलवान करनेके लिये निर्मलीके बीजको पानीमें घिसकर अंजन करना चाहिये (५) निर्मलीके आधे या साबित बीजको पानीमें महीन पीस कुछ मट्ठेमें मिलाके सातादिन तक देनेसे बहुत दिनोंका पुराना अतिसार जो किसी औषधिसे नहीं मिटाहो, मिटजाताहै (६) निर्मलीके बीजोंको पीस दूधकी साथ फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (७) निर्मलीके बीजोंको पानीसे पीस पानीकी मटकीमें डाल देनेसे पानीका गदलापन मिटके पानी निर्मल होजाताहै (८) निर्मलीके ताजे बीज खानेके काममें आतेहैं इनका मुरब्बा बनाया जाताहै (९) निर्मलीके प्रयोगसे मूत्रातिसार मिटताहै (१०) इसके गूदेको मधुके साथ चटानेसे सूखी खासी मिटतीहै (११) निर्मलीके पकेहुए

फलकी साढे सात मासेकी मात्रा देनेसे वमन होतीहै (१२) निर्मलीकी भस्म में थोड़ा बूरा मिलाकर खानेसे रक्तार्श मिटताहै (१३) निर्मलीको मधुमें पीसकर अंजन करनेसे मोतियाबिन्दु मिटताहै (१४) इसके एकतोले बीजोंको छाछके साथ पीस मधुमें मिलाकर खानेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटतेहै ।

संख्या (६३)

(सं०) कदम्बः, वृत्तपुष्पः, सुरभिः, ललनाप्रियः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कदम	कदम्ब कदम	कदम्ब कलम	कळंब	कदम	कदम्ब कदम	कनुम

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Anthocephalus-cadamba Nauclea—cadamba.	

स्थान—इसके वृक्ष बंगालके उत्तर और पूर्व भागके जंगलोंमें बहुत होतेहै और हिन्दुस्थानके उत्तरके भाग, बंबई और पंचमहल आदि स्थानोंमें बोये जाते है ।

पहिचान—इसका वृक्ष बड़ा होताहै और बहुत शीघ्रतासे बढता है अर्थात् पहिले दो तीन वर्षोंमें हरवर्ष दश २ फुट बढताहै इसके स्कंधकी गुलाई हरमासमें एक इंच बढतीहै दश बारह वर्ष पीछे यह पहिले जैसी शीघ्रता से नहीं बढता अर्थात् थोड़ा २ बढने लगजाताहै कहीं कहीं बहुत ऊँचा बढजाता है इसके पत्ते वसंतऋतुमें गिरजातेहै उनका आकार नागरवेलके पान जैसा होताहै, परन्तु उनके तीखी नोक नहीं होती और छोटे होतेहै, इनके पीछेकी रेखा किरमिची रंगकी होतीहै इसके पुष्प झड़बेरसे कुछ बड़े और सफेद रंगके होतेहैं इसके फल छोटी नारंगी जितने बड़े और पीले रंग के होतेहैं । यह तीन प्रकारका होताहै कदम्ब, धाराकदम्ब और भूमिकदम्ब ॥

फूलने फलनेका समय—वैशाखसे श्रावण तक इसके पुष्प आतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह चरपरा, कड़वा, मीठा, कसेला, खारा, शीतल, रूखा,

और पचनेमें भारी है। दुग्ध वीर्य और शरीरकी कान्ति बढाताहै अतिसार रक्त-विकार, मूत्रकृच्छ्र, वात, पित्त, कफ, व्रण, विष और दाहको मिटाताहै (२) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (३) इसकी छाल बलवर्द्धकहै (४) इसके पत्तोंके क्वाथके कुरले करनेसे मुखपाक मिटताहै (५) इसके अंकुर कसैले, शीतवीर्य्य, अग्नि बढानेवाले और पचनेमें हल्केहैं। अरुचि रक्तपित्त और अतिसारको मिटातेहैं (६) इसके फल–रोचक, पचनेमें भारी, उष्ण वीर्य्य और कफकारकहैं और खानेके काममें आतेहैं (७) इसके पके हुए फल तीनों दोषोंको मिटातेहैं।

—— o ——

संख्या (६४)

(सं०) कदली, रंभा, मोचा, वृत्तपुष्पा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
केळा	केला, केरा	केल्य, केळ	केळ	कला, मोचा	केला, केरल।	अरटीचट्टू

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वाळैमरम्	वालेमर	गोज		Musa—sapientum. M paradisiaca.	Thebanaus or plantain

स्थान—केलेके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

पहिचान—केले-पहाड़ी, जंगली, छोटे, बड़े, हरी छालके, लाल छालके और कोकनी आदि भेदसे कई प्रकारके होतेहैं। इसका वृक्ष ८ से १८ फुटतक ऊंचा होताहै पत्ते २–२॥ गज लम्बे और एक या दो फुट चौडे होतेहैं पेड़ खम्भके समान होतीहै उसके बीचमें एक सफेद दंडा होताहै उसपर वकुलके कई पड़त लगे रहतेहैं सबसे ऊपरकी वक्कलका रंग हरा और चमकदार होताहै इसके पत्तेमें पत्ते निकलते चले जातेहैं सिवाय पत्तोंके कोई शाखा इसके नहीं होती केवल पत्तोंसेही वेष्टित होताहै। इसके बीचमें डंडी निकलतीहै, उसके नोकदार लालरंगका बडापुष्प लगताहै उसकी हरेक ...रहतीहैं, वेही समय पाकर कले होजातेहैं।

प्रयोग—(१) कच्चा केला ठण्ढा और आदी है। (२) पक्का केला खिलानेसे मूत्रातिसार मिटताहै। (३) स्त्रियोंका श्वेतप्रदर मिटानेके लिये पक्का केला खिलाना चाहिये। (४) मूत्रातिसारवालेको केलेका घी बनाके खिलातेहैं। (५) छातीकी दाह और अग्निसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये कच्चे केलेके पत्ते बांधने चाहिये। (६) जिस रोगमें गीली पट्टी बांधी जातीहै उसे गीली बनी रहनेके लिये उसपर केलेके पत्ते बांध देने चाहिये (७) दुःखती हुई आंखपर या आंखोंके दूसरे रोगोंमें आंखके ऊपर छाया रखनेके लिये केलेके पत्ते बांधने चाहिये। (८) विसूचिकामें तृषा मिटानेके लिये केलेकी पेदड़का रस पिलाना या उसके गंडूष कराना चाहिये (९) इसकी पेदडके रसके कुल्ले करानेसे शीताद रोग मिटताहै (१०) शरीरको पुष्ट करनेके लिये केला बहुत अच्छा फलहै (११) अग्नि से जलेहुएके ऊपर केलेका पुल्टिस बांधना चाहिये (१२) केलेको उबालकर बच्चोंके उपदंशके व्रणों पर बांधना चाहिये (१३) केलेकी जड़का कोथ पिलानेसे आतोंके कीडे मरतेहैं (१४) पित्त प्रकृतिवालेको केला बहुत गुण करताहै (१५) पक्का केला खानेसे आमाशय, फुप्फुस, हृक्क और मूत्रकी दाह मिटजातीहै (१६) छोटा पक्का केला खिलानेसे पुराना अतिसार और आमातिसार मिटताहै (१७) बड़ी जातिका सूखा केला खिलानेसे शीताद रोग मिटताहै (१८) केलेका खार बनानेकी रीति-केलेके वृक्षको जलाके उसकी राखको ६ गुने पानीमें घोलके ८ पहर धररक्खें पीछे उसको खूब मलकर गाढे कपड़ेमें छानकर स्वच्छ जल निकाल लेवें जब उसमें राखका लेश मात्र भी नहीं रहे तब उस पानीको मिट्टी या कलई चढेहुए बरतन में भरकर अग्निपर चढाके औटावें जब उसका सब पानी छीजकर चूने जैसा रहजावे तब उसको उतार सुखाकर चीनी या कांचकी डाट दार शीशीमें भरकर धर रक्खें यह अम्लपित्त को मिटाताहै और नमक की ठौर काममें आताहै (१९) हरे केलेको औटाकर दहीमें मथके रुचिके अनुसार शक्कर या नमक मिरच मिलाके खिलानेसे अतिसार और आमातिसार मिटतेहैं (२०) पुरानी आमली की गिरको थोड़े जलमें मसल उसका सार निकालकर उसमें पक्का केला और पुराना गुड़ या मिश्री मिलाके आमातिसार के प्रारम्भ में पिलाना चाहिये

(२१) हरे कच्चे केलेको धूपमें सुखा पीसके उसके आटे की रोटी बनाके मंदाग्निवालेको खिलातेहैं, इससे उसके अफ़ारा और खट्टी डकारें नहीं आतीहैं (२२) केलेकी सूखी रोटीको थोडे नमक के साथ खिलाना चाहिये, जल्दी पचनेके कारण से यह रोटी बच्चेके आमातिसार और अतिसारमें गुणकारी है (२३) इसकी कोमल जडोंके रसमें हीरा दकखन मिलाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (२४) केलेका खार और शक्कर पानीमें मिलाकर पिलानेसे हृदयकी दाह मिटतीहै (२५) कोमल केला खिलानेसे रुधिरकी वमन और मूत्रातिसार मिटताहै (२६) केलेमें नमक मिलाके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (२७) जडको पीसके पिलानेसे पित्तके विकार मिटतेहैं (२८) जिस रोगमें रुधिरकी ललाई जाती रहे अर्थात् पाडुरोगमें इसकी जडको पीसके पिलानी चाहिये (२९) केलेके पेड़का रस रक्तपित्त को मिटाताहै (३०) जिस बालकको मात्रासे अधिक अफीम दे दिया हो उसको केलेकी छाल और पत्तेका रस पिलाना चाहिये (३१) छालके २॥ तोले रसमें २॥ तोले घी मिलाके पिलानेसे तेज विरेचन होताहै (३२) जलाया हुआ सोहागा और कलमीशोरा इसकी जडके रसमें गलाके पिलानेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहैं (३३) इसके पुष्पोंके रसमें दही मिलाके खिलानेसे आमातिसार और रक्तप्रदर मिटताहै (३४) कच्चे केलेको सुखा, पीसकर उस चूर्णकी फक्की देनेसे बालकोंका कई प्रकारका अतिसार मिटताहै (३५) इस चूर्णमें खाड मिलाकर फक्की देके ऊपर दूधकी लस्सी पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३६) संखिये के विषको उतारनेके लिये इसकी जडका रस पिलाना चाहिये (३७) इसकी जडके रसमें घी और शक्कर मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३८) पुराना अतिसार मिटनेके पीछेकी मंदाग्निमें कच्चे केलेका शाक आदि बनाके खिलाना चाहिये (३९) सूर्यकी तेज किरणोंकी गर्मीसे बचनेके लिये टोपीमें केलेके पत्तेके टुकडे रख लेने चाहिये (४०) केलेको गायके दूधमें औटा कर खाते हैं। केलेके पुष्पोंका शाक बनाया जाताहै। (४१) इसके पत्तेकी डंडीकी गिरीको औटाके खातेहैं (४२) इसके पेडका रस सुंघानेसे नकसीर बंध होतीहै (४३) इसकी जडको मनुष्यके मूत्रमें पीस कुछगर्मकर कपडेपर लगा के बदपर बांधनेसे वह बिखर जातीहै (४४) रसके पत्तोंका स्पर्श करानेसे

पित्तकी मूर्च्छा मिटतीहै (४५) इसके पके फलकी २४ तोले गिर घीके साथ नित्य प्रातःकाल ४१ दिनतक खानेसे भस्मक रोग मिटताहै (४६) इसके फलको घीमें तलकर कालीमिरचके साथ खानेसे कफके विकार मिटतेहैं (४७) इसके कंदके रसमें बराबर मधु मिलाके पिलानेसे वमन बन्द होतीहै (४८) इसका रस पिलानेसे मदिराका वेग कम होजाताहै (४९) इसके पके फल और आंवलोंके रसमें मधु और शक्कर मिलाके सेवन करानेसे सोमरोग मिटताहै (५०) इसके खार और हल्दीका लेप करनेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै (५१) इसके पत्तोंकी राखमें थोड़ा नमक मिलाके फक्की देनेसे खाँसी और कफ मिटताहै (५२) इसकी पेदड़का रस पिलानेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (५३) इसके पीले पत्तोंको कड़वे तेलमें जला उसमें मुर्दासंग मिलाके लगानेसे श्वेतदाग मिटतेहैं ।

संख्या (९४)

(सं०) कपर्दिका, वराटः, चराचरः, बालक्रीडनकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोडी कवडी	कौडी कवडी	कोडी	कवडी	कडि	कौडी	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
					Cowries.

पहिचान—श्वेतरक्त और पीले रंगके भेदसे कौडिया तीन प्रकारकी होतीहै। पीठपर कुछ दानेदार पीलीकौडी, जो तोलमें ६ मासेभरहो, उसको औषधि के काम में लाना चाहिये।

कौडीको शुद्ध और भस्म करनेकी रीति—इसको एक पहरतक कांजीमें ओटानेसे शुद्ध होजातीहै। इसको कोयलोंकी अग्निमें रखके धूंकणीसे फूंकदेना चाहिये जब वह फूलकर बिखरनेलगे तब अग्निमें से निकाल स्वांगशीतल होनेपर पीसके धररखना चाहिये ॥

कपर्दिकाभस्म—शीतल, चरपरी और तिक्त होतीहै। नेत्ररोग, फोड़े,

रैन, कर्णस्राव, मंदाग्नि, परिणामादिशूल, संग्रहणी और वातकफ सम्बन्धी कई रोगोंको मिटातीहै (२) इसकी भस्म कानमें डालनेसे पूयका बहना बन्द होके उसका घाव भर जाताहै (३) इसको पानमें रखके खिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (४) फोड़े मिटानेवाली औषधियोंमें इसकी भस्म मिलाकर घीके साथ लेप करनेसे फोडे मिटतेहैं (५) इसको मक्खनके साथ चटानेसे क्षयरोग मिटताहै (६) पीपलामूलके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (७) कालीमिरच और इसकी भस्मको पीस नींबूकी फाकमें भर अग्निपर तपाकर चूसनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (८) सोंठके चूर्णके साथ इसकी फकी देनेसे संग्रहणी मिटती है (९) इसकी २ मासे भस्म, ७ मासे मधु और थोडा नमक मिलाके चटाने से संग्रहणी मिटतीहै परन्तु इसके सेवन करनेवालेको साठी चावल और दूधका पथ्य देना चाहिये (१०) पीली कौडी पीसकर नींबूके रसमें भिगो देवे जब रस सूखजाय तब खरल करके दोनों समय मुख पर मलनेसे मुहासे मिटते हैं (११) कंठी और पीली कौड़ीको जलाकर अलग २ महीन पीसकर मर्दन करनेसे हाथपावोंसे अधिक पसीना निकलना बन्द होताहै ॥

संख्या (९६)

(सं०) कपिकच्छुः, आत्मगुप्ता, कंडुरा, मर्कटी, ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
कोंचबीज	कोंच किवाच	कौच कउचा	कुहिरि (ली)	आलकुशी	कोंछ	पिल्लदूलगोवेल

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पूनैकाञ्जोरि	चिकनसुगुलि			Mucuna—pruriens Carpopogon P	The Cowage plant or

स्थान—कोंचकी बेल दक्षिण हिन्दुस्थान, मालवा और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै ।

पहिचान—इसकी बेल बड़ी होतीहै बीलकी भांति इसके तीन २ पत्ते लगतेहैं । इसके तीन, चार या पांच फलियोंके गुच्छे लगतेहैं, फलियों पर रुए

होतेहै, पकी हुई फलियोके रुँए का शरीर पर स्पर्श हो जानेसे अत्यंत दाह, खुजली और फुन्सियें हो जातीहै। फलियोंमें चॅवले जैसे बीज निकलतेहैं परंतु उनका रंग चॅवलों जैसा नहीं होताहै। इसके पुष्प शालोलके पुष्पों जैसे होतेहै।

प्रयोग—(१) कौंचके बीज, गोखरू और मिश्री के चूर्णकी गुनगुने दूधके साथ फक्की लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै (२) इसकी जड़ बल बढातीहै (३) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की स्नायुजालके रोगोंमें बहुत उपकारीहै (४) इसके बीजोंकी खीर बनाकर खिलानेसे अर्दित और अर्द्धांग आदि वातरोग मिटतेहैं (५) प्रमेहमें इसके बीजोंके साथ दूसरी पौष्टिक औषधियें मिलाके फक्की लेना चाहिये (६) ज्वरमें प्रलाप मिटानेके लिये इसकी जड़का क्वाथ पिलातेहै (७) इसकी जड़को पीसकर जलंधरवालेके पेटपर लेप करतेहैं और जड़का थोड़ा टुकड़ा टखने और कलाईपर बांधतेहैं (८) कौंच बीजको घिसके लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (९) इसकी फलीके रुओंको कीड़े मारनेके काममें लातेहै (१०) कौंचके बीजोंका पाक बनाके खानेसे वीर्य्य बढताहै और शरीर पुष्ट होताहै (११) कौंचकी फलीके रुएका लेप करनेसे उसस्थानपर उत्तेजना और छोटे छाले होजातेहैं (१२) दो ढाई मासे कौंच बीज खिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (१३) इसकी कची फलीका शाक खानेके काममें आताहै, इसकी जड़के क्वाथमें मधु मिलाकर पिलानेसे तीव्र विसूचिका मिटतीहै। (१४) कौंचबीजोंके ५ रत्ती चूर्णकी जलके साथ फक्की लेनेसे, मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१५) कौंचके कच्चे बीजोंको छायामें सुखाकर उनके १० मासे चूर्णको पावभर दूधमें ओटाकर पीनेसे शुक्रप्रमेह मिटताहै (१६) इसके बीजोंके चूर्णको मधु और घीमें मिलाकर चटानेसे श्वास मिटताहै (१७) इसका स्वरस पिलानेसे अपबाहुक रोग मिटताहै (१८) योनीका ढीलापन मिटानेके लिये उसको इसकी जड़के क्वाथसे धोनी चाहिये (१९) कौंचबीज और तालमखानेके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला फक्की लेके ऊपर धारोष्ण दूध पीनेसे वीर्य्य बढताहै (२०) इसकी दो मासे जड़को मुखमें रखनेसे वीर्य्य स्तंभन होताहै (२१) इसके एक तोले बीजोंको पीसकर ३ छटांग पानीके साथ प्रातःकाल ७ दिन पीनेसे उपदंश मिटताहै (२२) इसके छिले हुए ४ तोले बीजोंको पीस टिकिया बना १२ तोले कड़वे तेलमें जला

उस तेलको छान घाव या नासूरमें टपकानेसे भर जातेहैं।

संख्या (६७)

(सं०) दधिपुष्पी, खट्टाङ्गी, कृषा, काकांडी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	करियसेम	अडदवेल्य	गोडीकुहिरी			दूलगोंड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
काजोरिवेर	शिरुकाजोरि			Mucuna monosperma. Carpopogon monospermum	The Negro bean

स्थान—दधिपुष्पीकी वेल हिमालयके पूर्व भाग, खासिया पहाड़, आसाम चिटगांग, पश्चिम आय द्वीप और सीलोनके पहाड़ोंमें बहुत होतीहै।

पहिचान—इसकी फलियां कुछ गोल और रुए दार होतीहैं उनमें बड़ा चिपटा प्रायः गोल एक २ बीज होताहै।

प्रयोग—(१) यह कसेली और तिक्त होतीहै। योनिदोष और कोष्ठव्रण को मिटातीहै और रुधिर को शुद्ध करतीहै (२) इसका बीज सूखी खांसी में काम आताहै (३) इसका क्वाथ पिलानेसे श्वास रोगमें शांति होतीहै (४) इसके बीजोंको ओटाकर कुल्ले करनेसे जिह्वाके रोग मिटतेहैं (५) इनका लेप करनेसे रुधिरका संचार कम होजाता है॥

संख्या (६८)

(सं०) कपित्थः, दधित्थः, चिरपाकी, करटी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कैथ	कैथ	कोठ, कोठु	कविठ	कयेतगाछ	कैथ	वेलग

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वलामर	व्यालदमर			Feronia elephantum. Crataeva valanga.	Elephant or wood apple.

स्थान—कैथके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोयेजातेहैं और अपने आप भी उगतेहै ।

पहिचान—यह साधारण ऊंचाई का वृक्ष होताहै इसकी पेदड़ की गुलाई २ से ४ फुट तक होतीहै । इसके कांटे सीधे और बड़े दृढ होतेहै । इसके पुष्प हल्के लाल रंगके होतेहैं । इसके गोल बड़ाफल लगताहै, उसकी मध्य रेखा ३॥ इंचकी होतीहै, उसका छिलका कठोर, खरदरा और भूरे रंगका होताहै, उसके पकनेपर उसमें तीक्ष्णगंध आने लगतीहै । फलकी गिर बहुत खट्टी होतीहै, उसमें ठौर २ बीज जमे रहतेहैं । इसके फल पकनेके पीछे भी बहुधा वे बहुत समयतक वृक्षपर ही लगे रहतेहै । इसके पत्ते चरपरे होतेहैं और उनमें सोंफकीसी सुगंध आतीहै, इसके एक प्रकारका गंधरहित, श्वेत और पारदर्शक गोंद लगताहै वहबहुत चेपदार होताहै और पानीमें गलजाताहै।

फूलने फलनेका समय—मांघ से वैशाखतक इसके पुष्प लगतेहैं आसोजतक इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके पक्के फलकी गिरकी चिटनी बनाई जातीहै । इसकी कच्ची गिरमें शक्कर मिलाके खातेहै (२) इसकी गिरका टुकडा मुखमें रखनेसे शीताद रोग मिटताहै (३) बीलगिर और काठोड़ीका शर्बत बनाके पिलानेसे बच्चोंके पेटकी शूल मिटतीहै (४) इसका शर्बत भूख बढाताहै (५) इसका शर्बत पिलानेसे विष उतरताहै (६) काठोडीको ओटाकर कुल्ले करनेसे गले और मसूड़ोंके रोग मिटतेहै (७) इसका लेप करनेसे सांपका विष उतरताहै (८) विषैले जीवोंके काटनेसे जो पीड़ा होतीहै उसको मिटानेके लिये काठोड़ीका लेप करना चाहिये यदि काठोड़ी न मिलेतो कैथके फलके छिलके का लेप करना चाहिये (९) इसके कच्चे फलके गूदेके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (१०) इसका फल ठंढा, रूक्ष, ग्राही, चित्तप्रसन्न करनेवाला, बल वर्द्धक और हृदयका बल बढानेवालाहै (११) काठोड़ी मुंहमें रखनेसे मुंहसे पानीका गिरना बन्द होजाताहै (१२) इसके पत्ते ग्राहीहै (१३) इनका क्वाथ पिलानेसे या इनका चूर्ण मधुकेसाथ चटानेसे बच्चोंका अजीर्ण और अतिसार मिटताहै (१४) इसकी छालसे पित्तके विकार मिटतेहैं (१५) इसके गोंदमें बंबूलके गोंद जैसे गुणहैं (१६) इसके गोंदको पानीमें

पिघलाके पिलानेसे दस्तकी बार २ शंकाका होना मिटजाताहै (१७) दूसरी औषधियोंमें इसको मिलानेसे उनकी चरपराहट कम होजातीहै. (१८) इसको अङ्गरेजी में "फैरोनियागम" कहते हैं (१९) इसके बीजों का तेल लगानेसे खुजली आदि त्वचाके दूसरे रोग मिटतेहैं (२०) कोढ और दादपरभी इसका तेल लगातेहैं (२१) काठोडीको पीस तेलमें औटा-कर उस तेलके लगानेसेभी कोढ और दाद मिटताहै (२२) काठोडीको खानेके काममें बहुत लानेसे गठिया और छातीके रोग पैदा होजातेहैं (२३) इसके बीजोंको सेककर खानेसे पुराना अतिसार मिटताहै (२४) इसके स्वरस में मधु मिलाकर उसमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे वमन, हिचकी और श्वास मिटताहै (२५) इसके और बासके पत्तोंके कल्कको पानीमें छानकर पिलानेसे मदर मिटताहै (२६) इसके रसको सुनगुनाकर कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै। इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै। इसके पत्तोंको औटानेसे उनमेंसेभी तेल निकलताहै।

संख्या (९९)

(सं०) कमलं, पुण्डरीकं, कोकनदं, इन्दीवरम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पँवल कमल	कमल	कमल कमळ	कमळ	पद्म	कौलफल्ल कमल	तागर
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कमल	तावरेहुव्वु			Nelumbium speciosum. Nymphaea Nelumbo.	The sacred Lily or Lotus.	

स्थान—कमल हिन्दुस्थान में बहुत से तालाबों में होता है।

पहचान—इसके पत्ते गोल, बड़े २ और एक ओरसे साफ होतेहैं, उस ओर पर पानीकी बूंदें नहीं ठहरतीहैं, वे ऊपरसे हरे और नीचेसे कुछ सफेद हरेरंगके होतेहैं, इसके गुलाबी, लाल, नीले और सफेद पुष्प लगतेहैं इसकी डंडी खरदरी होतीहै उसको तोड़नेसे उसमें से तन्तु निकलतेहैं डंडीमें कई छिद्र होतेहैं इसकी जड़ सफेद होतीहै उसमें मोटे २ छिद्र होतेहैं। इसकी जड़का

मारवाड़ी भाषा में ढिस्सें कहते हैं ॥

फूलने फलनेका समय—उष्णकालमें इसके पुष्प आतेहैं और बरसात के अंतमें बीज पकते हैं ।

प्रयोग—(१) कमलकी केशर ग्राही और ठंढीहै (२) इसको मधुमें चटानेसे दाह मिटतीहै (३) कमलगट्टेको अग्निमें सेक, छिलका उतार, उसकी गिरके भीतर एक हरा भागहै उसको निकालकर उस सफेद गिरको पीसकर मधुमें चटानेसे उल्टी बन्ध होतीहै (४) इसको जलके साथ पीस छान बच्चोंको पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) इसके बडे २ पत्तोंको बिस्तरे पर बिछाकर उस पर रोगीको सुलानेसे ज्वरसे बढी हुई ऊष्मा और त्वचाकी दाह मिटतीहै (६) इसके पत्तोंका दूधिया गाढा रस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (७) कमलकी केशर, मुलतानी मिट्टी, और मिश्रीके चूर्णकी फक्की जल के साथ देनेसे स्त्रियोंका रक्तप्रदर मिटताहै (८) मक्खन और मिश्रीके साथ कमलकी केशर चटानेसे रक्तार्श मिटताहै (९) कमलकी छोटी पत्तियां ग्राही है (१०) कमलके पुष्पोंका शर्बत पिलानेसे शीतला कम निकलतीहै (११) जिन ज्वरों में फुन्सी फोड़े अधिक निकला करतेहैं उन ज्वरोंमें कमलका शर्बत पिलानेसे बहुत उपकार होताहै (१२) इसकी जड़का लेप करनेसे दाद और त्वचाके बहुतसे दूसरे रोग मिटतेहै कमलगट्टेकी मींगी कुछ मीठी होतीहै (१३) २॥ मासे कवलगट्टेकी मींगी और शकरकी फक्की जलके साथ देनेसे चित्त प्रसन्न हो जाताहै (१४) इसका काथ पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै (१५) इसके काथमें शक्कर डालकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि बहुत होतीहै (१६) कमलकी जड, पुष्प, डंडी और पत्ते ज्वरमें परंतु विशेष करके लूके ज्वर में अधिक उपकारीहै (१७) पद्ममधुको बंगालवाले आखोंके रोगोंमें बहुत काममें लातेहैं (१८) इसकी जड़को तिल्लीके तेलमें ओटाकर उस तेलको शिरमें लगानेसे मस्तक और आंखें ठण्ढी रहतीहैं (१९) इसकी जड़का रस निकालके लगानेसे भी वही गुण होताहै (२०) इसकी स्त्री केशरको कालीमिरचके साथ पीसके पीने और लगानेसे सर्पका विष उतरताहै (२१) स्नायुजालकी निर्बलता मिटानेके लिये कमलका प्रयोग करना चाहिये (२२) कमलकी डंडी और नागकेशरको पीस दूधके साथ पिलानेसे दूसरे महीनेमें

गर्भस्राव होना मिटजाताहै (२३) इसके बीजोंको पीस शकर मिलाके दूधके साथ एक महीनेतक सेवन करानेसे स्त्रियोंके स्तन कठोर होजातेहैं। (२४) इसके पत्तोंको शकरके साथ खिलानेसे कात्रका निकलना बन्द हो जाताहै (२५) कमलसे सुगंधित किया हुआ जल पिलानेसे पित्तकी दाह मिटतीहै (२६) श्वेत कमलको सब अंगपर लेप करनेसे दाह मिटतीहै (२७) कमलगट्टोंको कुटके पानीमें भिगोकर उस पानीको पिलानेसे बालकोंकी पित्तकी तृषा मिटतीहै (२८) कमलके और बड़के पत्तोंको जला तेलमें मिलाकर लगानेसे फैलनेवाले फोड़े मिटतेहैं (२९) इसकी जड़ या कंदका शाक और आचार बनातेहैं। इनको बनारकर सुखाके रखलेतेहैं जब चाहें तब शाक बनालेतेहैं। सूखे या गीले कमलगट्टे खानेके काममें आतेहैं।

संख्या (१६०)

(सं०) कम्पिल्लकः, रक्तांगः, रजनः, रेचनकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कपीलो	कम्बीला	कपीलो	कपिला	कमलागुंडि	कमीला	काम्पिल्लमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	कम्पिल्ल	किम्बील	कम्बेला	Mallotus philippinensis Rottlera tinctoria	The monkey face tree ( ) Kamela.

स्थान—कपीलके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे पूर्वकी ओर बंगाल और ब्रह्मा तक और सिन्धसे दक्षिणकी ओर सीलोनतक होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष २०—३० फुट ऊंचा होताहै। इसकी पेड़की गुलाई ३—४ फुटकी होतीहै। इसकी शाखें बहुधा जड़सेही निकलतीहैं। इसकी छाल चौथाई इंच मोटी होतीहै। इसके पत्ते सबके सब एक साथ किसी ऋतुमें नहीं गिरतेहैं, डंडीपर एक २ अलग २ कुछ नोकदार पत्ते लगतेहैं। इसके श्वेत और पीले पुष्प लगतेहैं। इसके तीन ३ पडतके छोटे २ बीज लगतेहैं वे चमकीले लाल चूर्णसे गहरे ढके रहतेहैं।

फूलने-फलने का समय—इसके कार्तिक और पोषमें पुष्प आतेहैं और उष्णकालमें फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) कपीलेका लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (२) कपीलेको पिलानेसे कोढ मिटताहै (३) कपीलेसे मन्दाग्नि, ज्वर, भ्रम, पक्षाघात और यकृत् और फुप्फुसकी पीडा मिटतीहै (४) कपीलेके ८ मासेसे एकतोले तक चूर्णको मधुमें चटानेसे पिटार मरजातीहै (५) इसकी ८ मासे मात्रासे दस्तें लगतीहैं और तीसरी या चौथी दस्तेंम कीडा मरकर बाहिर आजाताहै (६) कपीलेको पानी या तेलमें पीसकर लगानेसे त्वचापर रूक्ष और ठंढी हवाका असर नहीं होताहै (७) ८ मासे कपीला और २ मासे हींगको दहीके तोडमें पीस चनेप्रमाण गोलियांवना १–२ गोली गर्म जलसे देनेसे पसलीकी पीडा और कृमिरोग मिटतेहै (८) तिलोंके तेलमें इसको पीसके लगानेसे अंडकोषकी टांकियां मिटतीहै (९) इसको बराबर कडुवे तेलमें खरलकर उसमें फोया भरके बांधनेसे घाव भरताहै (१०) ६ मासे कपीलेको गुडमें मिला गोली बनाके देनेसे पेटके कीडे सब बाहिर निकल जातेहैं (११) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे पित्त गुल्म मिटताहै परंतु इसका सेवन करानेके पहिले दिन थोडा घी पिलाना चाहिये। कपीला रंगतके काममें आताहै। इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै।

संख्या (१०१)

(सं०) करञ्जः, नक्तमालः, चिरबिल्वकः, पूतिकः।

मरवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
करज	कंजा, करंजुवा	करंज, कणझी	करंज	करंज, करमचा	करजुआ	गच्चकाइ

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कदुगोड़ि	गेज्जगे, गज्जुग			Pongamia glabra, Galedupa indica.	Smooth leaved Pongamia.

स्थान—करञ्जके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होतेहैं।

पहिचान—करञ्जका वृक्ष ५०–६० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेदड छोटी और गुलाइमें ५ से ८ फुटतक होतीहै। इसकी छाल एक इंच मोटी और चिकनी होतीहै चैतमें इसके पत्ते गिरजातेहैं और कुछ दिनों पीछे नवीन आजातेहैं, पत्ते, चमकदार और हरे रंगके होतेहैं और एक सींकपर २–३ जोड़े ३ से ४ इंच लम्बे पत्तोंके लगतेहैं इसके नीले, श्वेत और बैंजनीरंगके पुष्प लगतेहैं। इसकी फली मोटी, कठोर प्रायः दो इंच लम्बी और एक इंच चौडी होतीहै इसके बीजोंमेंसे लाल, भूरा, गाढ़ा, बीजोंका पांचवां भाग, तेल निकलताहै। इसकी राख रंगतके काममें आती है। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलनेका समय—बैशाख और जेठमें इसके पुष्प लगतेहैं और दूसरे वर्षके चैत में फलिया पकती है।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंका लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (२) इसके बीजोंको दबाके निकालेहुए तेलका मर्दन करनेसे त्वचाके रोग और गठिया मिटतीहै (३) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे घावके कीड़े मरतेहैं (४) इसकी जड़का रस बिगड़ेहुए घावोंपर लगातेहैं (५) इसकी जड़के रसकी पिचरकी देनेसे भगंदर मिटताहै (६) खुजली और त्वचाके कईप्रकारके दूसरे रोगोंको मिटानेके लिये इसका तेल बहुत प्रबलहै (७) उपदंश सम्बन्धी चट्टोंपर इसके तेलमें नीबूका रस मिलाके लगानेसे बहुत लाभ होताहै (८) इसकी डालीका रस, जड़ और तेलके प्रयोगसे व्रणपर दुर्गंध युक्त वायुका प्रभाव नहीं होताहै (९) इसके और चित्रकके पत्ते कालीमिरच और नमकको पीस दहीके साथ चटानेसे कोढ़ मिटताहै (१०) पेटके भीतरके यन्त्र बढ़जानेपर भी उक्त बीजोंका चटाना उपकारीहै (११) इसकी जड़का रस नारेलका दूध और चूनेका पानी मिलाकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१२) इसके और चित्रकके पत्तोंके रसमें कालीमिरच और नमक बुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि, अतिसार और अफारा मिटताहै (१३) इसके पुष्पोंका क्वाथ पिलानेसे मूत्रातिसार मिटताहै (१४) इसकी फलियोंकी माला बनाकर पहिनानेसे कुत्ताघांसी मिटतीहै (१५) इसके बीजोंको मधुके साथ चटानेमें कुत्ताघांसी मिटतीहै (१६) इसके बीजोंकी मींगीका लेप करनेसे कोढ़ मिटताहै (१७) इसके कोमल पत्तोंका पुल्टिस रक्तार्श पर बांधा जाताहै (१८) इसकी फलियोंकी गिरका चूर्ण

चटानेसे कुत्ताधासी मिटतीहै-(१९) इसकी जड़की छालके दूधिया रसकी पिचकारी देनेसे भगंदर जल्दी भर जाताहै (२०) इसकी जड़की छालके दूधिया रसमें बराबर तिलोंका तेल और कुछ नीलाथूथा मिलाके लगानेसे हड्डियोंके घाव भरजातेहैं (२१) अपस्मारमें इसके पत्तोंका प्रयोग बहुत उपकारीहै (२२ इसकी मींगीके चूर्णमें शक्कर मिलाकर फंकी लेनेसे अर्श मिटताहै परन्तु इस प्रयोगमें स्निग्ध भोजन देना चाहिये (२३) इसकी मींगीका एक मासे चूर्ण ३ मासे मधुके साथ पहिले दिन चटावे फिर नित्य एक एक मासे चूर्ण बढाता हुआ ११ दिनतक बढाके फिर वैसेही एक एक मासे कम करता हुआ तीन मासे तक ले आनेसे पथरी मिटतीहै (२४) इसकी कोंपलोंकी ७ मासे राख, दो तोले मधुकी साथ चटानेसे अश्मरी मिटतीहै (२५) इसकी लकड़ीका दांतुन करनेसे अरुचि मिटतीहै (२६) इसके कोमल पत्तोंको पीस सैंधा नमक मिलाके खानेसे वमन बन्ध होतीहै (२७) इसके बीजों को सेक जौ कूटकर कई बेर खिलानेसे दुस्साध्य वमन बन्ध होतीहै (२८) पित्त बढानेवाली औषधियोंमें इसको मिलाकर लेप अथवा सेक करनेसे वात पीड़ा मिटतीहै (२९) इसके बीजोंके चूर्णको पलासके पुष्पोंके रसकी कई भावना देकर उनकी सलाई बनाके नेत्रोंमें फेरनेसे फूला कटताहै (३०) इसके पुष्प और गुड़को पीस उष्ण जलके साथ नस्य लेनेसे आधाशीशी मिटतीहै (३१) इसके रसका लेप करनेसे व्रणके कीड़े मरतेहैं (३२) इसकी भस्ममें नोन मिलाके मलनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (३३) इसके एक बीजकी मींगी और एक रती नीलथूथेकी सरसोंके बराबर गोलियां बना नित्य एक गोली देनेसे पसलीकी पीड़ा मिटतीहै (३४) इसके पत्तोंके रसको हथेली और तलवोंपर मलनेसे वीर्य्य स्तंभन होताहै (३५) कुसुमके रंगसे रंगेहुए लाल वस्त्रमें एककंजा लालसूतसे बांधकर ६ मास पर्य्यंत स्त्रीकी कमरमें बंधा रखनेसे गर्भपात नहीं होताहै (३६) इसकी बीजोंकी मींगी दूधमें भिगो पीसकर मुखपर मलनेसे मुखकी कान्ति बढतीहै (३७) इसकी मींगीको जलमें पीसकर नाभिमें टपकानेसे कफज्वर छूटताहै (३८) इसकी ३ कोंपल और दो कालीमिरचें पानीके साथ पीसके लगानेसे कफज्वर छूटताहै (३९) इसका फल खानेके काम में आता है (४०)

संख्या (१०२)

(सं०) लताकरञ्जः, वज्रबीजकः, कुबेराक्षः, कण्टफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
किणगच कुळगच	कटकरजा फरंजवा	काकर, कांकच	सागरगोटा गजगा	लताकरज	करजवा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		अकतमकत	खायेइबलीस	Caesalpinia Bonducella. Guilandina B	Fever nut Physic nut Bonduc nut. Nickar

स्थान—किणगचकी बेल, हिन्दुस्थानमें सबठौर होतीहै परन्तु बंगाल और ब्रह्मामें बहुत होतीहै ।

पहिचान—यह एक प्रकारकी बेल होतीहै । इसके कुछ मुड़े हुए कांटे लगतेहैं इसकी शाखाकी एक सींक पर ६ से १० तक जोड़े पत्तों के लगतेहैं । इसके पीले पुष्पोंकी मंजरी लगतीहै । इसके दो तीन इंच लम्बी १-१॥ इंच चौड़ी फलियां लगतीहैं उन हरेकमें २-३ बीज निकलतेहैं और फलियों के छिलके पर कठोर, सीधे और तीखे छोटे २ बहुतसे कांटे होतेहैं । इसके बीज कुछ हरे, भूरे या शीशेके रंगके साफ और चमकीले होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—इसके वर्षाऋतुमें पुष्प और फलियां लगतीहैं।

प्रयोग—(१) किणगचकी गिर और कालीमिरच बराबर ले पीस, ८ से १५ रत्ती तक दिनमें दोबेर देनेसे वारीसे आनेवाला आर्तव ज्वर (मौसमीबुखार) छूटताहै (२) इसकी गिर उष्ण, रूक्ष और बहुत कड़वीहै (३) इसकी गिर श्वास रोगको मिटातीहै (४) इसकी गिरको पीसकर लेप करनेसे सूजन विखरजातीहै (५) इसकी गिर खानेसे कुष्ठ मिटताहै (६) इसको हुक्केमें पीनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (७) इसकी गिर और हींगको बिलोये हुए दूध में पीसके पीनेसे अजीर्ण मिटताहै (८) इसके और सुपारीके कोयलोंको फिटकड़ीके साथ पीस मंजन करनेसे मसूड़ोंका फूलना और मुंहके छाले मिटतेहैं (९) इसी चूर्णके खानेसे दिनमें दो बेर आनेवालाज्वर छूटताहै और उसकी निर्बलता मिटतीहै (१०) किणगचकी गिर रक्तस्रावको

रोकतीहै (११) इसकी गिर संक्रामक रोग (उड़कर लगनेवाले रोग) का असर नहीं होने देतीहै (१२) इसकी गिरको पीसकर लेप करनेसे गांठ, अंडकोषकी सूजन और वद विखरजातीहै (१३) इसकी गिरको एरंडके तेलमें पीस लेप करनेसे अंडकोषमें भराहुआ पानी सूखजाताहै (१४) इसके पत्तोंके प्रयोगसे हृद्रोग मिटताहै और रुकाहुआ मासिकधर्म जारी होजाताहै (१५) इसके पत्तोंका तेल और गिर—आक्षेपक और अर्द्धांग आदि वातव्याधियोंको मिटाते है (१६) पत्तोंको घी या एरंडके तेलमें तलकर उनका गाढा लेप करनेसे अंडकोषकी सूजन और पीडा मिटतीहै (१७) इसकी कोमल शाखा और पत्तोंका काथ पिलानेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (१८) इसकी गिर खानेसे कष्टसे प्रसव होना मिटजाताहै (१९) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाताहै (२०) चढेहुए ज्वरको उतारनेके लिये २॥ मासेसे ६ मासे तक इसकी गिरकी मात्रा देनीचाहिये (२१) गिरकी मात्रा ५ से १५ रत्तीतक देनेसे बल बढताहै (२२) इसकी गिरको पीसके विच्छूके दंशपर लगानेसे विष उतरताहै (२३) इसकी राखको घावपर बुरकातेहैं (२४) यकृत्के रोग मिटानेके लिये इसके कोमल पत्तोंका प्रयोग करना चाहिये (२५) इसकी छालके ५ रत्ती चूर्णकी फक्की देनेसे ज्वर या दूसरे रोग मिटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै (२६) इसकी गिर और बायविडंगके चूर्णकी फक्की देनेसे कांडे मरतेहैं (२७) इसकी मींगीके तेलका मर्दन करनेसे आक्षेपक और कफवायु मिटतीहै (२८) शरीरकी छोटी छोटी फुन्सियोंके चट्टे मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन करना चाहिये (२९) शरीरपर इसके तेलका मर्दन करनेसे त्वचा कोमल होजातीहै ॥

संख्या (१०३)

(सं०) करमर्द्दः, आविघ्नः, वीरफलः, दृढकण्टकः ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
केरूदा	करोंदा करौंदा	करमदा करमदा	करवन्दी करवन्दा	टककरमचा	करोंदा करमद	वाकलिवे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	कमारिकेहण्णिग्रगाड		ककरूंदह कुरुदा	Carissa Carandas (2) C Congesta.	Jasmine flowered carissa.

स्थान—करूंदके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं, अवध, बंगाल और दक्षिण हिन्दुस्थानमें अपने आप उगतेहैं पंजाब और गुजरातमें बाड़ोंके ऊपर लगातेहैं।

पहिचान—इसकी पेड़ ३–४ फुट लम्बी और गोलाईमें दो फुट होताहै छोटी शाखें कुछ लाल, भूरेरंगकी, साफ और कांटेदार होतीहैं। इसकी छाल आधइंच मोटी भूरी या श्वेत पीलेरंगके छींटेदार होतीहै। इसके १०–२० तक सफेद पुष्पोंके गुच्छ डालियोंके अन्तमें लगतेहैं, एक इंच लम्बा साफ, हरा और कहीं लालरंगका फल लगताहै वह पकनेपर काले रंगका होजाताहै उसमें से जो दूधिया रस निकलताहै उसमें बड़ा चेप होताहै।

फूलने फलने का समय—पोषसे चैत तक इसके पुष्प लगतेहैं और अषाढ़ और श्रावणमें करूंद पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसका कच्चा फल ग्राहीहै (२) पक्का फल ठंढा और खट्टा होताहै (३) इसके पक्के फल पित्त विकारको मिटातेहैं (४) इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (५) इसका लेप करनेसे मक्खियां नहीं बैठतीहैं (६) इसको नीबूके रस और कपूरके साथ पीसकर पांवपर लेप या मर्दन करतेहैं (७) इनका शाक या चटनी बनाके खानेसे मसूड़ोंके रोग मिटतेहैं (८) इसके कच्चे फलका रस लगानेसे चमड़ीपर चमचमाहट लगजातीहै और कभी २ छालेभी होजातेहैं (९) लगातार रहनेवाले ज्वरके प्रारम्भमें इसके पत्तोंका क्वाथ बहुत उपकारीहै (१०) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खासी मिटतीहै (११) पहिले दिन प्रातःकाल इसके पत्तोंका एक तोला रस पिलावें पीछे एक एक तोला रस नित्य बढ़ाता हुआ १० तोले तक बढ़ादेवें ऐसे प्रातःकाल नित्य पिलानेसे जलंधर मिटताहै (१२) इसके फलका शाक, चटनी, अचार और मुरब्बा आदि भोजनके कई पदार्थ बनाये जातेहैं।

आंके और नाक टपककर मस्तकपीडा मिटजातीहै (२२) इसके पत्तोंको औंटा पीस तेलमें मिलाके लेप करनेसे जोडोंकी पीडा मिटतीहै (२३) इसको सूखे पत्तोंके चूर्णको घावोंपर बुरकानेसे घाव भरजाताहै (२४) इसके पत्तोंसे बनाया हुआ तेल खुजली और पामको मिटाताहै (२५) इसके पत्तोंके क्वाथसे उपदंश के व्रणोंको धोना चाहिये (२६) इसकी जडको ठंढे पानीके साथ पीस कर दस्त जाते समय जो अर्श बाहिर निकल आतेहैं उनपर लगानेसे वे बैठ जातेहैं (२७) इसकी जडको कंडालीके रसमें खरल करके इन्द्रीपर लेप करने से नपुंसकता मिटतीहै और इन्द्री पुष्ट होजातीहै।

संख्या (९०)

(सं०) पीतकरवीरः, पीतप्रसवः, सुगंधिकुसुमः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पीलीकंडीर	पीलीकनेर	पीलाफुलनी कणर	पिवळीक-हेर.	पीतकरवीर	पीलीकनेर	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Thevetia neriifolia. Cerbera...	The exile or yellow oleander

स्थान—यह हिन्दुस्थानके जंगलोंमें बहुत होता है।

पहिचान—इसके बीजोंमेंसे साफ पीला तेल निकलताहै, वह जलनेमें धुआं कम देताहै और खानेमें नीरोग्यतादायकहै। १०० तोले बीजोंमेंसे ३५॥ से ४१ तोले तक तेल निकलता है।

प्रयोग—(१) इसके दूधिया रसमें बहुत विष होताहै (२) इसकी छाल कडवी, रेचक और ज्वर उतारनेवालीहै (३) इसका अर्क कई प्रकार के शीतज्वर आदि बारीसे आनेवाले ज्वरोंको रोकताहै (४) इसकी अधिक मात्रा देनेसे वमन और विरेचन बहुत होताहै (५) इसकी छालकी अधिक मात्रा विषका काम देतीहै (६) इसका क्वाथ बारीसे आनेवाले ज्वरको मिटाता है (७) इसके बीजोंकी मींगी बहुत कडवी होतीहै उसको चबानेसे जिह्वा

पर कुछ शून्यता और उष्णता प्रतीत होतीहै (८) इसके बीजोंकी गिरका तेल वामक और रेचकहै, किसी २ को इससे बहुत वमन और विरेच हो जातेहैं (९) इसके बीजोंकी गिरमें तीव्र विष होता है ।

संख्या (२०७)

(सं०) करीरः, गूढपत्रः, ग्रन्थिलः, शोणपुष्पः

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कैर	करील(र)(करेल,	केरडी केर	नेपती	करील	करीर, टींट कचड़ा	मौवरि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Capparis aphylla	Caper plant

स्थान—कैर के वृक्ष—पंजाब, संयुक्तप्रदेश, दक्षिण और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसके कोई २ वृक्ष २० फुट ऊंचे बढजातेहैं, इसकी छोटी खड़ी पेड़ होतीहै उसकी गुलाई ४-५ और कभी कभी ७-८ फुटकी होजातीहै, पेड़की छाल आधइंच मोटी, गहरे भूरेरंगकी और उसमें खड़ीदरारें होतीहैं । इसके बहुत डालियां लगतीहैं । इसके लाल पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं । कातिकसे फागुन तक इसकी कोमल डालियोंपर कुछ पत्ते लगतेहैं । इसके हरे रंगके छोटे २ गोल फल लगतेहैं उनका स्वाद कडुवा होताहै और जब वे पककर लाल रंगके होजातेहैं तब कसैले और कुछ मीठे होजातेहैं । इनको मारवाड़ी भाषामें "ढालू" कहतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—फागुन चैत्र और कभी जेठ तक इसके लाल रंगके पुष्प लगतेहैं और जेठ अषाढमें फल पकजातेहैं ।

प्रयोग—(१) इसकी कोमल कोंपल और कोमल पत्तोंको मीस टिकिया बनाके कलाईपर बांधनेसे जाला होकर ज्वर उतरजाताहै (२) इसकी कोंपलोंको मुखमें रखके चवाते रहनेसे दाढकी पीड़ा मिटजातीहै (३) इसकी छालके

चूर्णसे बद्ध कोष्ठ मिटताहै (४) इसकी छालको लेप करनेसे पित्तशोथ मिटतीहै (५) इसकी जड़का बफारा देनेसे हाथ पैरोंके जोड़ोंके रोग मिटतेहैं। (६) इसकी छाल कडवी होतीहै (७) केरका फूल उष्ण और सारक होताहै (८) इसकी लकडीको घिस कर गुनगुना लेप करनेसे सूजन उतरतीहै (९) इसके प्रयोग से विष उतरताहै (१०) इसकी लकडी की एक मासे राख देनेसे कफ मिटताहै (११) इसकी कोमल कोंपलोंको बिना जलसे पीस-कर २-३ दिन तक मलनेसे उस ठौर पर बाल जल्दी उग आतेहैं (१२) इसकी सूखी कोंपलोंके एक तोले चूर्णमें ६ मासे काली मिरच मिलाके प्रातः काल पानीके साथ फकी लेनेसे तिल्ली मिटतीहै (१३) इसकी एक तोले जड़को १ सेर पानीमें ओटा आधसेर रखकर दिनमें दोवेर ७-८ दिन पिलानेसे रक्तार्श मिटजाताहै (१४) इसकी लकड़ीकी भस्मको घीमें मिलाकर चाटनेसे जोडोंकी पीड़ा मिटतीहै (१५) इसके और एरंड के पत्तों को गर्म करके बांधनेसे शोथ उतरतीहै (१६) इसकी जड़को पीसकर बालोंकी जड़में मलनेसे बाल लंबे बढ जातेहैं। (१७) कच्चे केरों का शाक और अचार आदि बनाये जातेहैं और इनको तेल यापीमें तलकर मसाला (नोनमिरच) लगाके खातेहैं।

संख्या (१०८)

(सं०) कर्कटशृंगी, शृङ्गी, नताङ्गी, महाघोषा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कांकडासिंगी	काकडा शिंगी	काकडाशिंगी	काँकडाशिंगी	काँकडाशृंगी	ककड़ासिंगी	कर्कटकशृंगी

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कर्कोटकशृंगी	कर्कोटकशृंगी			Pistacia integerrima Rhus L.	

स्थान—काकड़ाशींगी सिन्धु नदीसे कमाऊं तक शिमलाके पास, पश्चिमोत्तर सीमा और पेशावरकी घाटीमें होतीहै।

पहिचान—यह असली और निकलीके भेदसे दो प्रकारकी होतीहै।

असली काकड़ा सिंगीका वृक्ष ४० फुट या इससेभी कुछ अधिक ऊंचा होताहै इसकी पेड़की गोलाई ८-६ और कभी कभी १२-१५ फुटतककी होजातीहै इसकी छाल सफेद रङ्गकी होतीहै। इसकी छोटी डालियें खाखी या कुछ लाल भूरे रंगकी होतीहै। इसकी ६ से ६ इंच लम्बी सींकपर ४-५ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं। इसके पुरुष और स्त्री जातिके भेदसे दो प्रकारके पुष्प लगतेहैं। माघ में इसके गहरे हरे पत्ते गिर जातेहैं और फागुनमें नये पत्ते निकल आतेहैं इसकी सिंगी पोली और कठोर होतीहै यह रंगतके काममें आतीहै।

फूलने फलने का समय—वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं और जेठसे श्रावण तक इसके फल पकतेहै।

प्रयोग—(१) यह बलवर्द्धक और कफनाशकहै (२) यह खांसी, रैन, श्वास, ज्वर, मन्दाग्नि और आमाशयकी जलनको मिटातीहै। इसकी साधारण मात्रा इन रोगोंकी औषधियोंके साथ १। मासेकीहै (३) बच्चोंके फुफ्फुसके पुराने रोगोंमें इसका सेवन बहुत उपकारीहै (४) इसके सेवनसे मंदाग्निकी वमन मिटतीहै (५) बीलागिरके साथ इसकी फक्की लेनेसे अतिसार मिटताहै (६) इसको और कायफलको मधुके साथ चटानेसे श्वास मिटताहै (७) इसको और कटालीको औटाके पिलानेसे खांसी मिटतीहै (८) इसको और पीपलको मधुके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (६) इसका लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहै (१०) इसके १। मासे चूर्णको मलाई केसाथ चटानेसे आमातिसार मिटताहै (११) इसको घीमें सेक पीस उसमें कुछ शक्कर मिलाके फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै (१२) इसके चूर्ण को मधुके साथ चटानेसे बच्चोंकी खांसी मिटतीहै (१३) इसका चूर्ण सहतके साथ थोड़ा २ चटानेसे बालक हृष्ट पुष्ट और बलवान होजाताहै (१४) इसकी कालीमिरचके बराबर गोलिया बनाकर मुहमें रखनेसे कफ और खांसी मिटतीहै।

नकली काकड़ा सिंगी।

स्थान—इसके वृक्ष कश्मीरसे सिकम और भूटानतक और खासिया पहाड़में होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै इसके छोटे पेड़की गोलाई ३ फुटकी होतीहै इसके पत्ते लाल होके आसोजमें गिरजातेहै इसकी डालियों

के अन्तमें ६ से १२ इंच लम्बी सीकोंपर ४से८ इंच लम्बे पत्तोंके २ से ६ तक जोड़े लगतेहैं इसके कुछ हरे पीले पुष्प लगतेहैं इसके एक प्रकारका खल जैसा पदार्थ लगताहै ॥

फूलने फलनेका समय—ग्रीष्मऋतुमें इसको पुष्प लगतेहैं श्रावण और भादवेमें फलपकतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके वृक्षका दूधिया रस बडा चरपरा होताहै उसके लगानेसे छाला होजाताहै (२) इसका फल खेम रोगकी मुख्य औषधियोंमें गिनाजाताहै (३) इसको असली काकिडा सिंगी के वदले में देतेहैं जापानवाले इसके फलों को निंबोलीके साथ कूट उबाल कर गर्म २ को सांचे में दबा कर उनमेंसे एक प्रकारका मोम निकालतेहैं उसको जापान वैक्स कहतेहैं उसकी मोम वत्तिया वनातेहैं।

संख्या (१०६)

(सं०) कर्कटी, कटुदला, मूत्रफला, लोमशकांडा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
फाकड़ी	ककड़ी(री)	फाकडी	काकडी	कांकुड़	तर ककड़ी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		क़िस्सा	खयारबाह	Cucumis utilissimus	Cucumber

स्थान—यह वंगाल, संयुक्तप्रदेश, पंजाब, राजपूताना, खानदेश, बंबई आदि कई देशों की तरज़मीन और नदियोंके किनारे ग्रीष्म और वर्षाऋतुमें बोईजाती है ॥

पहिचान—इसकी वेल लम्बी होतीहै, इसका पुष्प पीला होताहै । इसके फल गोललंबे कुछ मुडेहुए और रोवांवाले होतेहैं जब छोटी होतीहै तब बहुत कोमल और रूंएदार होतीहै और जब यह पूरी बढजातीहै तो २—२॥ फुट लम्बी होजातीहै जब यह पकजातीहै तब ऊपरसे चमकदार पीले नारजी रंगकी होजातीहै । यह ग्रीष्म ऋतुका उत्तम शाकहै ॥

गुण और प्रयोग—(१) यह मीठी, ठंढी, और रोचक होतीहै कफ, पित्त, रुधिरविकार, मूत्राघात, पथरी, पित्तकी वमन, दाह, तृषा और श्रमको मिटाती है और मूत्रवृद्धि करतीहै (२) पकीहुई ककड़ी पित्त और जठराग्निको बढ़ातीहै (३) इसके बीज ठंढे, पौष्टिक और मूत्रवर्द्धक हैं (४) जिसके मूत्रका बनना बन्ध होगयाहो उसको इसके ७॥ मासे बीजोंको पानीमें पीस छानके पिलानेसे अथवा उसमें कुछ नोंन डालकर पिलानेसे मूत्र अधिक आने लगता है (५) मूत्रकी दाह मिटानेके लिये इसके बीज और जोखारको पानीमें घोट छानकर पिलाना चाहिये (६) इसके बीजोंको मिश्री के साथ घोंट छानकर पिलानेसे शर्कराश्मरी मिटतीहै (७) पथरीवालेके लियेभी इसके बीजों का प्रयोग बहुत अच्छाहै (८) इसके सेकेहुए बीजोंका चूर्ण बहुत मूत्रवर्द्धक है। उष्णकालमें कच्ची ककडी खानेका बहुत उत्तम पदार्थहै। इसके बीजोंको सुखा पीसके खानेके काममें लातेहै जिससे शरीर बहुत पुष्ट होताहै। इसकी मींगीमेंसे जो तेल निकलताहै वह खाने और जलानेके काममें आताहै।

संख्या (११०)

(सं०) एर्वारुः, व्यालपत्रा, सुलोमशा, उर्वारुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
फूटकाकड़ी	फुट	मोटीकाकडी	थोरवाळुक	फुटीगाछ	फुट	बुडग

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
बुडगकाई				Cucumis Momordica	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सर्व ठौर बोई जातीहै।

पहिचान—यह ककड़ी बड़े नारियल जितनी बड़ी बहुत चिकनी और पकनेपर हल्के पीले रंगकी होके निकस जातीहै यह कर्नाटकमें शीतकालमें होतीहै।

गुण और प्रयोग—(१) यह शीतल, मधुर, रोचक, अभिष्यन्दी, रूक्ष और दीपनहै। पित्त, मूत्रके रोग, मूर्छा, दाह, रक्तपित्त और कफको मिटातीहै और

में किसी अंगमें पीड़ा होतो मिटतीहै (२०) पट्ठोंके दर्दपर कपूरका लेप करना चाहिये, (२१) एकरती एलुवा और १॥ या २ रती कपूर मिलाके लगानेसे स्नायुकी पीड़ा मिटतीहै (२२) यह उत्तेजक और कफ निस्सारक है (२३) पीड़ा और बांइटे मिटाने, पुरुषार्थ बढ़ाने और पसीने लानेके लिये इसकी मात्रा आधी रतीसे ५ रती तक है (२४) कफनाशक औषधियोंके साथ कपूर पुरानी खांसीको मिटाताहै (२५) कुनैन नोसादरके फूल और कपूरकी गोली देनेसे रक्तष्ठीवी सन्निपात अर्थात् गुजराती रोग मिटताहै (२६) दो तोले कपूरको २॥ पाव पानीमें पीसके उसमें हरेक वृक्षके बीजोंको भिगोकर या डुबोके बोनेसे वे बहुत जल्दी उगतेहैं जो वृक्ष कलम से लगाये जातेहै उनकी कलमको कपूरके पानीमें डुबोके जमीनमें रखनेसे बहुत जल्दी जड छोड देतेहैं (२७) मांसकी पेशियोंकी पीडामें कपूरका तेल मर्दन करना लाभकारीहै (२८) तीव्र खांसीमें खांसी मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ कपूरका संयोग करना चाहिये (२९) दांतकी खोखलमें कपूर भर देनेसे दांतकी पीडा और दांतका बिगड़ना बन्ध होजाताहै (३०) पित्तकी मस्तकपीडामें सिरके और ठण्डे जलके साथ कपूरका लेप करना चाहिये। (३१) अफीम और कपूरको राईके तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे मांसपेशियों या रक्तवाहिनी शिराओंकी गठियाकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (३२) कपूर और एलवेकी गोली बनाकर देनेसे मूत्रकृच्छ्रमें दाह खुजली और बार २ इन्द्रीका चैतन्य होना मिटताहै (३३) २॥ रती कपूर उत्तेजक पसीना लानेवालाहै और स्नायुसम्बन्धी मस्तकपीड़ाको मिटाताहै (३४) बिगड़े हुए घावपर कपूरका लेप करनेसे घाव सुधरने लगजाताहै (३५) साफकी हुई स्पिरिटमें गलाये हुए कपूरकी २ से ५ बूंद तक शक्कर पर डालके खिलानेसे अजीर्ण और शूल मिटतीहै (३६) विसूचिका के आरम्भमें इसका प्रयोग करनेसे वमन और विरेचन बन्ध होजातेहैं (३७) कपड़ोंमें कपूर रखनेसे कीडे नहीं लगतेहै (३८) प्रतिश्यायके कारण श्वास नलिकामें उपद्रव होतेही स्पिरिट कैम्फर देनेसे बडा लाभ होताहै, (३९) विसूचिका में हाथ पैर ठंढे हो जाने पर स्पिरिट कैम्फर से लाभ होताहै (४०) विसूचिका में हर चौथे घटे ५ रती कपूर देनेसे लाभ होताहै (४१) केले पर कपूर बुरकाके खिलानेसे बच्चा सुखसे

पैदा होजाताहै इस कामके लिये दश रत्ती कपूर बहुत है (४२) ५ से १० रत्ती तक कपूर उत्तेजकहै, बांइटे मिटाताहै, पसीना और नींद लाताहै और नपुंसकता पैदा करता है। दांतशूल, पुरानी गठिया, कष्टसे मासिकधर्म होना, प्रलाप, पानीजरा, ज्वरके पीछेकी निर्बलता, कूकरखांसी, फुप्फुसका सड़जाना, विसूचिका, कंपवायु, स्त्रियोंका आवेशका रोग, अपस्मार, प्रसूतीके बाइंटे, हृदय का धड़कना आदि रोगोंमें कपूरका प्रयोग लाभकारीहै (४३) कपूरको नित्य काममें लानेसे शरीर उत्तेजित रहताहै (४४) यह कृमिनाशकहै (४५) कपूर और मिश्रीको पीसके चुरकानेसे मुखपाक मिटताहै (४६) कपूर और चन्दन को घिसकर सूंघनेसे गर्मीकी मस्तकपीड़ा मिटती है (४७) कपूरको कीड़ोंके खायेहुए दांतोंमें रखनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (४८) कपूरको सिरकेमें मिलाके मर्दन करनेसे मक्खी और भिड़का विष उतरताहै (४९) बड़के दूधमें कपूरको खरलकर अंजन करनेसे फूला कटताहै (५०) कपूरकी धूनी देनेसे रक्तस्राव बंध होताहै (५१) एकभाग कपूर और ४ भाग सफेद कत्थेकी गोलियां बना एक रत्तीसे ४ रत्तीतक देनेसे पित्तज्वर छूटताहै (५२) एकमासे कपूरको कई तोले गुला-बजलमें घोटकर पिलानेसे संखियेका विष उतरताहै (५३) कपूरको सिरकेमें पीसकर दंशपर लगानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (५४) तारपीनके तेलमें कपूरको गलाकर मर्दन करनेसे विसूचिकाके बांइटे मिटतेहैं (५५) एकतोले कपूरको पानीसे भरीहुई बोतलमें डालकर उसके डाट लगाके २ घंटेतक पड़ी रक्खें, फिर उसमेंसे २॥ तोले पानी लें उसमें ३ मासे इमलीका गूदा और ३ मासे शकर मिलाके पिलानेसे दाहज्वर और लू मिटतीहै।

संख्या (११४)

(सं०) कर्पूरवल्ली।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	पजीरीका पात	अजमानुपाडु	कापुरली			कर्पूरवल्लि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
कर्पूरवल्लि	डोड्डपत्रे			Anisochilus carnosus	Thick leaved Lavender

स्थान—यह उत्तरी सर्कार और मलवारमें होतीहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे स्वरसम्बन्धी गलेके रोग मिटतेहैं (२) इस रसमें शक्कर और तिलोंका तेल मिलाके शिर पर लेप करनेसे, उसकी दाह और पित्तकी पीड़ा मिटतीहै (३) इसके पत्ते और डालियोंका काथ पिलानेसे विशेषकरके बच्चोंके कफके और ठंढके विकार मिटतेहैं (४) बच्चेकी खासी मिटानेके लिये उसकी माके दूधमें इसके पत्तोंका रस और शक्कर मिलाके पिलाना चाहिये (५) इसके पत्तोंके रससे प्रतिश्याय मिटताहै (६) इसके पंचांगमें से उड़नेवाला तेल निकलताहै इस तेलका मर्दन करनेसे शरीरकी शिथिलता मिटतीहै (७) इसके तेलकी १० बूंदें सोंठके १॥ मासे चूर्णमें मिलाके फकी देनेसे पसीना आताहै (८) अडूसेके काथमें इस तेलकी १० बूंदें डालके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै।

संख्या (१९५)

कर्मरङ्गः, कर्मारः, धाराफलः, मुद्गरकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कमरख	कमरख	कमरखमुदगर	कर्मर कमरेख	कामरांगा	कमरख	तमर्ता

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
तमर्तै (इ)	कमरक			Averrhoa Carambola	Carambola.

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर लगाये जातेहैं।

पहिचान—बंगालमें कमरख दो प्रकारकी होतीहै एक खट्टी और दूसरी खटमीठी। इसका वृक्ष १५—२० फुट तक ऊंचा होताहै इसकी डालियोंपर एक दूसरेके सामने पत्तोंके जोड़े नहीं लगतेहैं पत्तोंका नीचेसे चन्दनिया रंग होताहै

इसके छोटे २ श्वेत और वैजनी रंगके पुष्प लगतेहैं इसका पकाहुआ फल ती
इंच लम्बा कुछ हरे और पीले रंगका होताहै ।

फूलने फलनेका समय—वर्षाऋतुमें इसके पुष्प लगतेहैं मृगशिर औ
पौषमें फल पक जातेहैं ।

प्रयोग—(१) इसका कच्चा फल खट्टा और ग्राही होताहै-(२) क
फलको खानेसे ज्वर और छातीमें पीडा होजातीहै (३) इसका पकाहुअ
फल खटमीठा होताहै इसके शाक अचार मुरब्बे आदि भोजनके पदार्थ बना
जातेहैं (४) खटमीठा फल शीतल होताहै और उसको पित्त ज्वरमें तृ
मिटानके लिये देतेहैं (५) इसके पत्तोंको कालीमिरचके साथ घोट छानक
पिलानेसे अन्तर्दाह मिटतीहै (६) जडका फांट या हिम बनाकर पिलाने
ज्वर छूट जाताहै (७) इसके दोनों प्रकारके फल शीतादरोगको मिटाते
(८) इसके पत्ते, जड और फल शीतल होतेहैं (९) इसके कच्चे सूखे फल
का चूर्ण ज्वरमें देते० ।

संख्या (११६)

(सं०) कलम्बी, शतपर्वा, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	कलमीशाक,		कळंबी शाक,	कलमी शाक	कर्मेशाक	तोमेंवच्चलिचे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कोइलेंगु				Ipomaea aquatica [illegible]	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होतीहै, परन्तु बंगालमें जला-
शयोंकी तीरपर बहुत होतीहै मद्रास और सीलोनमें शाकके लिये क्रमपूर्वक
बोई जातीहै । जिन झीलोंमें या नादियोंमें बारह महीने पानी रहताहै उनमें
यह बारह महीनेही नर्म रहतीहै ।

पहिचान—इसके सफेद पुष्प लगतेहैं । इसकी डालियां खोखली (पोली)
होताहै और जड मोटी होतीहै ।

प्रयोग—(१) धोई हुईकी अपेक्षा स्वतः उत्पन्न हुईमें विषनाशक शक्ति अधिक होतीहै। संखिये और अफीमका विष उतारनेके लिये इसका स्वरस पिलाके वमन करातेहैं (२) इसके अर्कको सुखाके फकी देनेसे विरेचन लगताहै (३) इसके पत्तोंका शाक बनाके खानेसे अफीमका मद (नशा) उतर जाताहै (४) इसके पत्ते और डालियोंके टुकडे कर सुखा रखतेहैं उनको खटाईके साथ उवालके चांवलोंके साथ खातेहैं (५) इनको रातको उवाल रखके प्रातःकाल भोजनके पहिले खानेसे स्त्रियोंकी स्नायुजाल सम्बन्धी साधारण निर्बलता मिटतीहै और उनके दूध बढताहै। इसकी कोमल शाखा पत्ते और जड शाकके काममें आतेहैं।

संख्या (११७)

(सं०) कलायः, मुण्डचणकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलङ्गी
मटर	मटर	मटाणा	वाटाणे	मटर	मटरछोटा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	(लैटिन)	अंग्रेज़ी
		हुब्बुलबकर	फसग	Pisum Sativum (2) P. arvense.	Field pea. (The garden pea.)

स्थान—मटर हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोया जाताहै।

इसकी हरी फलियोंका शाक बनाया जाताहै या वैसे ही खानेके काममें आतीहैं इनमेंसे मटर निकालके कच्चे या उनका शाक बनाके खातेहैं पक्के मटर की दाल बनातेहैं या इसके आटेकी रोटियां बनातेहैं। दूसरी फलियोंकी अपेक्षा इसकी फलीको कम पसंद करतेहैं। क्योंकि इससे बहुधा पेटमें अफारा आजाताहै जो यह अच्छी तरह नहीं पकाई जावे या इसका छिलका ठीक नहीं उतारा जावे तो इसके खानेसे स्वास्थ्य बिगड़ जाताहै। पुनियाके जिलेमें बहुधा कच्ची फलियां खातेहैं जिससे उनके अतिसार और आमातिसार हो जाया करताहै।

१०० तोले मटरमें ५५ तोले आटा और सवा तोले तेल होताहै।

प्रयोग—(१२) मटरके खेतमें सोनेसे हाथपैर और शरीर शून्य होजाताहै। अथवा शरीर अकड़ जाताहै। (१३) मटरके आटेका उबटना करनेसे मुखकी श्यामता मिटतीहै (१४) मटरके खानेसे बादी, पित्त, और आम बढ़ताहै (१५) यह कसेला, मीठा, शीतल, रुचिवर्द्धक, शरीर पुष्ट करनेवाला, और दाह, कफ और रुधिरविकारको मिटानेवालाहै (१६) इसके काथसे फूलीहुई अंगुलियोंको धोनाचाहियेः॥

संख्या १९८

(सं०) कलिकारी, लाङ्गली, अग्निशिखा, हालिनी ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राजाराड	कलिहारी	कळलावी	कळलावी	ईशकागलो	कलेसर	पैसपेदुरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	बेनवेदुरु			Gloriosasuperba. Angulata.	Wolf's bane

स्थान—कलिहारी हिन्दुस्थानके बहुतसे जंगलोंमें पैदा होतीहै ॥

पहिचान—यह दो प्रकारकी होतीहै एकका कंद गोल होताहै उसको स्त्रीवृक्ष कहतेहैं और दूसरेका कंद लम्बा अथवा दो लम्बे टुकड़े ऐसे जुड़ेहुए होतेहैं कि जिनसे एक समकोन बनजाताहै उसको पुरुष वृक्ष कहतेहैं। इसके गोल कंदके ऊपर और लम्बे कन्दके समकोनपर इस वृक्षके उगनेका एक गोल चिह्न बना रहताहै और नीचेकी ओर छोटी २ महीन २ जड़ें लगी रहतीहैं। इसका छिलका पतला, ढीला, हलका और बादामी रंगका होताहै उसके भीतर सफेद रंगका कंद होताहै उसका स्वाद कुछ कड़वा होताहै और उसमें हलकी चरपरी सुगंध आतीहै ॥

फूलने फलनेका समय—वर्षाऋतुमें इसके बहुत सुंदर बड़े २ पीले और लाल अथवा पीलेलाल पुष्प लगतेहैं ॥

प्रयोग—(१) यह सात उपविषोंमें गिनीजातीहै (२) गर्भवतीकी पीड़ा बचानेके लिये इसके कंदको पीसके उसकी, नाभि और योनिके होटों

और बालोंपर लेप करतेहैं (३) जो आंवल नहीं निकलेतो इसके कंदको पीसके हथेली और पगथलियोंपर लेप करना चाहिये, या कलोंजी और पीपलको मदिराके साथ पीसकर पिलाना चाहिये, अथवा इसकी बत्ती बनाके योनिमें रखना चाहिये (४) इसकी मात्रा प्रारम्भमें आधरत्ती देनी चाहिये पीछे बढाकर एक(एक)मासेभर दिनमें दो तीनबेर देसक्तेहैं (५) इसको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि जब इसके पुष्प आजावें तब पुरुषवृक्षके कंदको जिमीनमें से निकाल उसके पतले २ कपे बनार कर उनको कुछ नमक डाले हुए मट्ठेमें रातभर भिगोरक्खें और दिनमें उनको निकालकर सुखा लेवें ऐसे ४—५ दिनतक करनेसे इनके विषका प्रभाव कम होजाताहै, अंतमें इनको पूरा सुखाके भररक्खें, काले सापके काटे हुएको इनमेंसे २ से ४ रत्ती तक अथवा आवश्यकतानुसार न्यूनाधिक मात्रा देनेसे काले सांपका विष उतर जाताहै (६) इसके कंदको ठंडे पानीमें पीस कनखजूरे या बिच्छूके दंशपर लगाके तपानेसे उनका विष उतरजाताहै (७) त्वचाके कृमिरोगपर इसका लेप करना चाहिये (८) इसके कंदको कूट पानीमें भिगो मलके छाननेसे जो मैदा निकलताहै उसके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (९) इसकी २॥ से ६ रत्ती तक की मात्रा दिनमें २ बेर देनेसे पुरुषार्थ और पराक्रम बढताहै (१०) इसको सोंठके साथ फंकी देनेसे भूख बढतीहै (११) इसको गुडके साथ खिलानेसे आंतोंके कीडे मरतेहैं (१२) इसका चूर्ण बुरकानेसे घावके कीडे मरजातेहैं (१३) इसके पत्तोंके चूर्णको छाछके साथ देनेसे कामला रोग मिटताहै (१४) इसकी जड योनिमें रखनेसे योनिशूल मिटताहै (१५) बच्चा होनेके समय इसकी जडके तन्तुओंको हाथ पैरोंमें बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाताहै (१६) इसके कंदको पानीमें पीसके सुंघानेसे सर्पका विष उतरताहै (१७) इसके कंद और निर्गुंडीके रससे सिद्ध कियेहुए तेलकी नस्य देनेसे फैलीहुई गंडमाला शीघ्रतासे मिटजातीहै (१८) इसके कंदको कांजीमें पीस गर्भवती स्त्री के पैरोंपर लेप करनेसे बालक तुरंत पैदा होजाताहै ।

संख्या (११६)

(सं०) कसेरुः, गुण्डकन्दः, सूकरेष्टः, गन्धकन्दकः

मरवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कसेरु	कसेरू	कसेरु	कचरा फुरव्या	केसुर	कसेरु	इट्टिकोत्ति

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तुंगगड्ड	सेकिनगड्डु			Scirpus kysoor	

स्थान—कसेरू हिन्दुस्थानमें तालाब और नदियोंके किनारे होतेहैं।

पहिचान—यह छोटे और बडेके भेदसे दो प्रकारका होताहै। छोटा कसेरू हल्का और आकारमें मोथे जैसा होताहै उसको "चिचोड" कहतेहैं और बडेको "राजकसेरू" कहतेहैं वह जायफल जितना बडा होताहै इसके काले रंगका कुछ रुएदार पतला छिलका होताहै इसकेंदरका रंग सफेद होताहै शीतकालमें जमीनमेंसे कसेरुके कद निकालेजातेहैं, उनके ऊपरका काला छिलका अलग करके कच्चेही खातेहैं।

प्रयोग—(१) कसेरु मीठे, ठण्डे, शरीर को पुष्ट करनेवाले, कुछ कसैले और पचनेमें भारीहै रक्त पित्त, दाह, नेत्ररोग, अतिसार और अरुचिको मिटानेवालेहै। वीर्य्य, वात, कफ और दुग्धको बढानेवालेहै (२) कसेरु खानेसे विष उतरताहै (३) कसेरू और मुलहठीके चूर्णकी पोटली बना आकाशसे झेले हुए पानीमें भिगो २ के आंखमें फेरनेसे रक्ताभिष्यन्द मिटताहै (४) कसेरूके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे वमन बन्ध होतीहै (५) कसेरु खानेसे अतिसार मिटताहै (६) औषधि के खाने पीनेसे जो मुखका स्वाद बिगड जाताहै वह इसके खानेसे मुंहका स्वाद सुधर जाताहै (७) कसेरूके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै।

संख्या (१२०)

(सं०) काकजंघा, काकाह्वा, वायसी, सुरङ्गी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कागलहर	काकजंघा	अघेडी, काग	धाउसेंकी	काकजंघा	काकजंघा	चलमंता भ

और बालोंपर लेप करतेहैं (३) जो आंवल नहीं निकलेतो इसकेकंदको पीसके हथेली और पगथलियोंपर लेप करना चाहिये, या कलोंजी और पीपलको मदिराके साथ पीसकर पिलाना चाहिये, अथवा इसकी बत्ती बनाके योनिमें रखना चाहिये (४) इसकी मात्रा प्रारम्भमें आधरती देनी चाहिये पीछे बढ़ाकर एक(एक)मासेभर दिनमें दो तीनबेर देसक्तेहैं (५) इसको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि जब इसके पुष्प आजावें तब पुरुष वृक्षके कंदको जमीनमें से निकाल उसके पतले २ कत्ले बनार कर उनको कुछ नमक डालेहुए मट्ठेमें रातभर भिगोरक्खें और दिनमें उनको निकालकर सुखा लेवें ऐसे ४—५ दिनतक करनेसे इनके विषका प्रभाव कम होजाताहै, अंतमें इनको पूरा सुखाके भिररक्खें, काले सांपके काटे हुएको इनमेंसे २ से ४ रती तक अथवा आवश्यकतानुसार न्यूनाधिक मात्रा देनेसे काले सांपका विष उतर जाताहै (६) इसके कंदको ठंडे पानीमें पीस कनखजूरे या बिच्छूके दंशपर लगाके तपानेसे उनका विष उतरजाताहै (७) त्वचाके कृमिरोगपर इसका लेप करना चाहिये (८) इसके कंदको कूट पानीमें भिगो मलके छाननेसे जो मैदा निकलतीहै उसके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (९) इसकी २॥ से ६ रती तक की मात्रा दिनमें २ बेर देनेसे पुरुषार्थ और पराक्रम बढ़ताहै (१०) इसको सोंठके साथ फंकी देनेसे भूख बढ़तीहै (११) इसको गुड़के साथ खिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं (१२) इसका चूर्ण बुरकानेसे घावके कीड़े मरजातेहैं (१३) इसके पत्तोंके चूर्णको छाछके साथ देनेसे कामला रोग मिटताहै (१४) इसकी जड़ योनिमें रखनेसे योनिशूल मिटताहै (१५) बच्चा होनेके समय इसकी जड़के तन्तुओंको हाथ पैरोंमें बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाताहै (१६) इसके कंदको पानीमें पीसके सुंघानेसे सर्पका विष उतरताहै (१७) इसके कंद और निर्गुंडीके रससे सिद्ध कियेहुए तेलकी नस्य देनेसे फैलीहुई गंडमाला शीघ्रतासे मिटजातीहै (१८) इसके कंदको कांजीमें पीस गर्भवती स्त्रीके पैरोंपर लेप करनेसे बालक तुरंत पैदा होजाताहै ।

संख्या (११६)

(सं०) कसेरुः, गुण्डकन्दः, सूकरेष्टः, गन्धकन्दकः

होतेहैं। पुष्प सफ़ेद और बहुत छोटे २ होतेहैं। इसके पके हुए फल काले रंगके होतेहैं ॥

प्रयोग—(१) इसके फल—बल और मूत्रवर्द्धक, शीतल और स्निग्ध है, रुधिरको शुद्ध करतेहैं और हृदयके रोगोंको मिटातेहैं (२) मकोयका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (३) इसके क्वाथमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (४) इसके क्वाथसे आँखोंको धोनेसे ज्योति बढ़तीहै और फोड़ोंको धोनेसे फोड़े मिटतेहैं (५) बावले, (पागल) कुत्तेके काटेहुएको इसका क्वाथ पिलानेसे और उसीसे उसके घावको धोनेसे घाव भरजाताहै और विष उतर जाताहै (६) इसके पोधेका १५—१६ तोले स्वरस पिलानेसे बहुत दिनोंसे बढ़ाहुआ यकृत् कम होजाताहै—इसका स्वरस बनानेकी यह रीतिहै कि इसका रस निकाल उसको मिट्टीके बरतनमें इतना गर्म करे कि उसका रंग बदलकर हरेसे गुलाबी होजावे तब ठंढाकर छानके प्रातःकाल पिलाना चाहिये (७) इसके अर्कको पिलानेसे अच्छा विरेचन और मूत्रवृद्धि होतीहै (८) इसकी थोड़ी मात्रा देनेसे शरीरके बहुत दिनोंके लाल चट्ठे मिटजातेहैं (९) इसका क्वाथ पिलानेसे दबी हुई चेचक (शीतला) फिर बाहर आजातीहै (१०) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे वृक्क और मूत्राशयकी शोथकी पीड़ा मिटतीहै (११) इसकी जड़के क्वाथमें थोड़ा गुड मिलाके पिलानेसे निद्रा आतीहै (१२) इसके पत्ते, फल और डालियोंका सार निकालके पिलानेसे जलोदर और हृदयके रोग मिटतेहैं। इसके सारकी मात्रा २ से ८ मासेतक दिनमें एक या दोवेर देना चाहिये (१३) इसके अर्कका लेप करनेसे जलोदर मिटताहै (१४) इसके पत्तोंको चबानेसे मुख और जिह्वाके छाले मिटतेहैं (१५) इसके ताजे रसकी मात्रा ५ से २० तोलेतकहै (१६) इसके रसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र का दुर्गंधयुक्त स्राव मिटताहै (१७) जलोदरवालेको इसके पत्तोंका शाक खिलाना चाहिये (१८) इसका सार रेचक और मूत्रवर्द्धकहै (१९) इसके पत्तोंके क्वाथमें शोरे और नोसादरके तिंजाबकी चार २ बूंद डालके पिलानेसे बहुत दिनोंका बढ़ा हुआ यकृत् ठीक होजाताहै (२०) इसके क्वाथमें हलदीका चूर्ण डालके पिलानेसे कामलारोग मिटताहै (२१) सर्वांग जलमय शोथके ऊपर इसके फलोंका उष्ण लेप करना

चाहिये (२२) इसके पत्तोंके रसमें घी या तेल मिलाके दांतोंकी जगह पर मलनेसे दांत विना कष्टके निकल आतेहै (२३) इसकी जडको सूतसे बांध मस्तकमें बांधनेसे नष्ट हुई निद्रा आने लगतीहै (२४) इसकी जड कानमें बांधनेसे रात्रि ज्वर छूटताहै। (२५) इसके रसमें सोहागा मिलाके पिलानेसे वमन वन्द होतीहै (२६) पिल्लरोग वालेकी आंखोंको ढककर उनके घीसे चुपडेहुए इसके फलकी धूनी देनेसे कीडे वाहिर निकल आतेहैं (२७) इसके पत्ते और कोमल शाखाओंका शाक बनाया जाताहै, इसके पके फल खानेके काममें आतेहैं उनसे कोई उपद्रव नही होताहै।

संख्या (१२२)

(सं०) काजूतकः, केश्यः, उपपुष्पिका, स्वाद्वाख्यः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
काजूगुळी	काजू	काजु(जू)	काजू			मुन्तमामिडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मुंदिरिकोट्टै	गेरपप्पु			Anacardium occidentale	The cashew nut.

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके दक्षिण भागोंके जंगलोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान—इसके वृक्षकी ऊंचाई ३० से ४० फुट तक होतीहै इसके पीला या कुछ ललाई लिये हुए गोंद लगताहै वह पानीमें पूरा नहीं गलताहै। इसकी गिरको दवानेसे हलका पीला तेल निकलताहै वह शरीरका उत्तम पोषण करनेवाला और हरेक वातमें वादाम स्नेहकी वरावरहै। इसकी २॥ सेर गुलीमेंसे सेर तेल निकलताहै। इसके छिलकोंमेंसे भी एक प्रकारका तेल निकलताहै उस का रंग काला और स्वाद कडवा होताहै। इसतेलके लगानेसे फफोला उठजाता है और काष्ठ आदिके चुपड देनेसे दीमक नहीं लगतीहै। १०० तोले छिलकोंमें से २६॥ तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) आंटन, शरीरपरके मस्से और फोडोंको जलानेके लिये छिलकों का तेल लगातेहैं। इस तेलके लगानेसे वह ठौर लाल पड़ जातीहै या वहां फफोला हो जाताहै (२) इसकी गिरी खानेसे शीताद रोग मिटताहै

(३) इसके फलका स्वरस शोथयुक्त पीड़ा पर लगाया जाताहै (४) इस तेलके लगानेसे कोढसे पैदा हुआ त्वचाका शून्यपन मिट जाताहै । (५) इसके छिलकोंको सिरकेमें भिगो उनका तेल निकाल बिवाई पर लगाना चाहिये (६) उपदंशसे पैदाहुए फोडे या लाल चट्ठोंको मिटानेके लिये यह तेल लगाया जाताहै । इसकी मींगीको सेककर खातेहैं और उसका मुरब्बा बनातेहैं ।

संख्या (१२३)

(सं०) काञ्चनारः, कोविदारः, कुद्दालः, स्वल्पकेसरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कचनार	सफेद कचनार	चपाकाटी	काचनी	काचन काचनार	कचनार कुलाड	देवकाचनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	कोचाले कन्चवाल	-	कचनर कचनाल	Bauhinia racemosa. B. parvi flora.	-

स्थान—सफेद कचनारके वृक्ष पंजाब, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान अवध और बंगाल आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं । यह श्वेत, पीले और लाल पुष्पोंके भेदसे तीन प्रकारकी होतीहै ।

पहिचान—इसका वृक्ष १५—२० फुट ऊंचा होताहै, इसकी शाखें झुकी हुई रहतीहैं । इसकी छाल एक इंच मोटी, खरदरी, भूरे या सफेद रंगकी होतीहै, मृगशिरमें या कुछ पीछे इसके पत्ते गिर जातेहैं । फागुनसे जेठ तक नवीन आजातेहैं ।

फूलने फलने का समय—फागुनसे जेठतक इसके पुष्प लगतेहैं और कातीसे फागुन तक इसकी फलियें पकतीहैं इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

प्रयोग—(१) दूषित पृथ्वी, जल, वायु और सड़ेहुए फलसे पैदाहुए ज्वरमें जो मस्तक पीडा होतीहै उसको मिटानेके लिये सफेद कचनारके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये ।

(सं०) पीतकाञ्चनारः Latin —Bauhinia tomentosa.

स्थान—पीले कचनारके वृक्ष हिंदुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं।

प्रयोग—(२) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहै (३) इसकी सूखी फलियोंके चूर्णकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै (४) इसकी जडकी छालका क्वाथ पीनेसे यकृत्‌की शोथ उतर जाताहै (५) इसकी छालके क्वाथ, फाट या हिमके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (६) इसका फल मूत्रजनकहै (७) इसके बीजोंको सिरकेमें पीसकर लेप करनेसे घाव के कीड़े मरतेहैं (८) इसके सूखे पत्तोंके चूर्णकी फक्की देकर ऊपर सौंफका अर्क पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (९) इसके छोटे पुष्पोंको औटा छान-कर पिलानेसे आमातिसार मिटताहै। इसके बीजोंमेंसे तेल निकलता है।

संख्या (१२४)

(सं०) रक्तकाञ्चनारः, युग्मपत्रः, महापुष्पः, गण्डारी।

स्थान—लाल कचनारके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर लगाये जातेहैं।

पहिचान—यह एक साधारण ऊंचाईका वृक्ष होताहै इसकी पेदड़ छोटी और खड़ी होतीहै उसकी गोलाई ४-५ फुटकी होतीहै, इसकी छाल हल्की या गहरे भूरे रंगकी होतीहै। इसके पुष्प निकलनेके पहिले पुराने पत्ते गिरजातेहैं इसके उष्ण कालके प्रारम्भमें या कहीं २ माघ फागुनमें सुगंधयुक्त दोइंच लम्बे बड़े और लाल श्वेत पुष्प लगतेहैं उनके दो मास पीछे बीज पकतेहैं। इसके भूरे रंगका गोंद लगताहै वह पानीमें फूल जाताहै परन्तु बहुत कम गलताहै। इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) इसकी जड़का क्वाथ पिलाने से मंदाग्नि मिटतीहै (२) ३ मासे अजवायनके चूर्णकी फक्की देकर ऊपर इसका क्वाथ पिलानेसे अफारा उतरताहै (३) इसके पुष्पोंका गुलकंद या सूखे पुष्पोंको पीस शकरके साथ फक्की लेनेसे सारकपन अर्थात् मल ढीला होजाताहै (४) फोडेको जल्दी पका-नेकेलिये इसकी जडको चावलोंके धोवनके साथ पीस पुल्टिस बनाके बांधना चाहिये (५) ऐसेही इसकी छाल और पुष्पोंका उक्तरीतिसे पुल्टिस बनाके बांधनेसे फोडा जल्दी पक जाताहै (६) इसकी छालका क्वाथ पिला-

नेसे आंतोंके कीडे मरतेहैं (७) इसकी सूखी कलियोंके चूर्णकी फकी देनेमें आमातिसार मिटताहै (८) इसकी कलियें शीतल और ग्राहीहैं उनका शाक खिलानेसे अतिसार मिटताहै (९) इसकी कलियोंके काथसे आंतोंके कीडे मरतेहैं (१०) मिश्री और मक्खनमें इसकी कलियोंका चूर्ण मिलाके चाटनेसे रक्तार्श मिटताहै (११) इसकी छालके या पुष्पोंके काथको ठढाकर मधु मिलाके पीनेसे रुधिरविकार मिटताहै (१२) गंडमाला मिटानेके लिये इसकी छालका काथ पिलाना चाहिये (१३) इसकी छालके काथमें बावचीके तेलकी २० बूंद डालकर पीनेसे कोढ मिटताहै (१४) इसकी छाल के काथसे फोडे फुन्सियोंको धोना चाहिये (१५) इसकी लकडीके कोयलों का मंजन करनेसे दंतपीडा मिटतीहै (१६) इसकी छालके क्राथपर सोंठका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे गंडमाला मिटतीहै (१७) इसकी छालके रसमें जीरे का चूर्ण अथवा कपूर मिलाके पिलानेसे दाह मिटतीहै (१८) इसकी छाल के काथमें स्वर्णमाक्षिककी भस्म बुरकाके पिलानेसे अंतर्गत मसूरिका बाहिर निकल आतीहै (१९) इसके पुष्पोंका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै (२०) चावलोंके धोवनके साथ कचनारकी छालको पीस सोंफ बुरकाके पिलानेसे गंडमाला मिटतीहै (२१) इसकी छालको औटाकर गंडूप करनेसे मसूडोंकी पीडा मिटतीहै (२२) जामुनकी मोलसिरीकी और इसकी छालको पानीमें औटाकर गुदाको धोनेसे रक्तार्श मिटताहै।

संख्या (१२५)

(सं०) कामरूपः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
			नादरूक	कामरूप		येर्रजुवी

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	पिलाल पिंरल			Ficus retusa. F. dilatata.	

स्थान—यह हिमालयके पूर्व भागमें कमाऊंसे बंगालतक, आसाम, द-

क्षिण हिन्दुस्थान और दक्षिण भारद्वीप आदि देशोंमें होताहै।

पहिचान—यह वृक्ष बड़ा होताहै और इसके पत्ते पतझड़में नहीं गिरतेहैं इसके छोटे २ एक दो फल ठौर २ लगतेहैं वे पक जानेपर बैंजनी रंगके हो जातेहैं और उनपर छोटे कुछ पीले छींटे रहतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी जडकी छालको या केवल जडको, या पत्तोंको तेलमें ओटाके लगानेसे घावभरतेहै और चोटकी पीड़ा मिटतीहै, (२) इस तेलका मर्दन करनेसे स्नायुपीडा मिटतीहै (३) इसके पत्ते और छालका पुल्टिस बनाके बांधनेसे मस्तककी वातपीडा मिटतीहै (४) इसके और तुलसीके पत्तोंका रस बराबर ले उसमें आधा घी मिलाके पिलानेसे अफारा और शूल मिटतीहै (५) गर्म ईंटपर इसके रसको छिडकके बफारा देने और सेक करनेसे अफारा और शूल मिटतीहै (६) इसकी छालका एक तोला रस दूधमें मिलाके पिलानेसे यकृत्के रोग मिटतेहैं।

संख्या (१२६)

(सं०) कारवेल्ल, कठिल्ल, उग्रकाण्ड, सुकाण्डकम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
करेलो	करेला	करेला	कारली कारले	उच्छे करेला	करेला	कार्करी

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पाहलू	हागल			Momordica Charantia. M. humilis.	Hairy mordica. Squirting cucumbar

स्थान—करेला हिन्दुस्थानमें बोया जाताहै।

पहिचान—करेले कई प्रकारके होतेहैं उनमें दो मुख्य है एक उष्णकालका और दूसरा वर्षा ऋतुका। इनके भी कई भेदहैं। इनके अलग २ देशों में अलग २ नाम है। वर्षा ऋतुमें होनेवालेको करेली कहतेहै और ग्रीष्मऋतुमें होनेवालेको करेला कहतेहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं।

(२) इसके रसका लेप करनेसे दाद मिटताहै (३) इसके फलका शाक बनाया जाताहै (४) इसके रसमें चाकमिट्टी मिलाके लगानेसे, मुंहके छाले मिटतेहैं (५) इसके रसका शिर पर लेप करनेसे पीपवाली फुन्सियां मिटतीहैं (६) अग्निसे जलेहुये पर लेप करनेसे उसकी दाह मिटतीहै (७) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे बच्चेको विरेचन लगताहै (८) इसका पंचांग, दालचीनी पीपल और चांवलोंको जंगली बादामके तेलमें मिलाकर लगानेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (९) इसकी जड़ ग्राही और उष्णहै (१०) इसकी जड़को घिसके बादीके अर्शपर लेप करतेहैं (११) इसके पत्तोंके रसका लेप करने से पैरके तलवोंकी जलन मिटतीहै और आंखके बाहिर चारों ओर लेप करनेसे रतौंधा जाता रहताहै (१२) जंगली करेलेके फलसे ज्वर छूटता है। (१३) नये पैदा हुए बच्चेके मुखमें इसके पत्तेका टुकडा रखनेसे उसकी छाती और अन्तडियोंका सब मल और आम निकल जाताहै (१४) पत्तोंको ओटाकर पिलानेसे प्रसूती स्त्रीका रुधिर शुद्ध होताहै और दूध बढताहै। (१५) इसके पत्तोंके रसमें सोंठ, मिरच और पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे ऋतु-धर्म शुद्ध होने लगताहै (१६) इसका फल कड़वा, मृदुसारक, शीतल और बल-बर्द्धकहै (१७) इसके रसका लेप करनेसे फोड़ोंकी दाह और खुजली मिट-तीहै (१८) इसके पत्तोंके रसको सिरकेके साथ पिलानेसे वमन होतीहै (१९) इसके पत्तोंके रसमें बडी हरड घिस कर पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (२०) इसके कच्चे फलके रसको गर्म करके लेप करनेसे गांठियां मिटतीहै (२१) इसके फल के रसमें राई और नमक बुरकाके बढीहुई तिल्लीवालेको पिलाना चाहिये (२२) यकृत् वृद्धिवाले को इसके रसमें तसतूंबेकी जडका चूर्ण डालके पिलाना चाहिये (२३) इसके दो तोले रसमें थोडा मधु मिलाके पिलानेसे विरेचन लगके जलंधर मिटताहै (२४) इसके रस में तेल मिलाके पिलानेसे विसूचिका मिटतीहै (२५) शीतज्वरमें ठण्ढ लगनेके पहिले इसके रसमें जीरेका चूर्ण मिलाके पिलाना चाहिये (२६) सूखे करेलेको सिरकेमें पीस गर्मकर लेप करनेसे कण्ठकी सूजन मिटतीहै।

संख्या (१२७)

(सं०) कार्पासी, बदरी, सारिणी, चव्या)

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कपास	कपास	कपास	कापशी (सी)	कापास	कपास	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		कुतुन	पंबाई	Gossypium herbaceum	Cotton plant.

स्थान—कपास हिन्दुस्थानमें सब ठौर होताहै। इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै वह खूब जाताहै। कपासके बीजोंको हिंदीमें बिनौले, मरहठीमें सिरकी और मारवाड़ीमें काकड़े कहतेहैं।

प्रयोग—(१) काकड़ेकी मींगी स्नायु जालको बलवान् करतीहै (२) काकड़ोंकी मींगीकी खीर बनाके खिलानेसे मस्तिष्ककी निर्बलता मिटतीहै। (३) मस्तककी पीड़ा मिटानेके लिये काकड़ोंकी मींगी और पोस्तके बीजोंका हरीरा करके खिलाना चाहिये (४) अग्निसे जलेहुए पर और छालेपरे इसकी मींगीका लेप करनेसे दाह मिटतीहै (५) तोलेभर मींगीकी खीर बनाके खिलानेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (६) इसकी मींगीका तेल लगानेसे गठियाकी पीड़ा मिटतीहै। (७) इसकी मींगीको जलके साथ पीस छान चावलोंके साथ खीर बनाके खिलानेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (८) २॥ पाव काकड़ोंको सवासेर पानीमें ओटाकर २॥ पाव पानी रखके छानलेवें, इसमेंसे १२॥ तोले क्वाथ रोगीको ठंड लगनेके एक या दो घंटे पहिले पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर रुक जाताहै। (९) इसकी मींगीका दूधिया जल बनाके आमातिसारवालेको पिलातेहैं (१०) इसके बीजोंको दबाके निकाला हुआ तेल लगानेसे त्वचाके पीले चट्टे मिटतेहैं (११) इसके पत्तोंको चाहके जैसे ओटाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै। (१२) दस्तकी वारवार शंका मिटानेकेलिये इसके पत्तोंका ओटाके गुदाके बफारा देना चाहिये।

(१३)इसकी जड़का काथ पिलानेसे मूत्र उतरते समयमें दाह और पीडाका होना मिटताहै (१४) इसके पुष्पोंका शर्बत बनाकर पिलानेसे विक्षिप्तपन मिटताहै और चित्त प्रसन्न होताहै (१५) इसके पुष्पोंका पुल्टिस बांधनेसे अग्निसे जले हुएकी दाह और चटका या कुलन मिट जातीहै (१६) रूई औरऊनका या रूई और रेशमका बनाहुआ कपडा शरीरको बहुत नैरोग्य रखताहै (१७) क्षत और चांदी (टांकी) पर रूईकी भस्म बुरकानेसे बहुत जल्दी आराम होताहै (१८) जिसके हाथ या पैरकी शोथमें जलन हो जाय, या जिसके हाथ या पैरे शून्य होजाय उसपर सोंठ या आंबाहलदीके चूर्णको बुरकाके उसके ऊपर रूई बांधतेहैं (१९) काकडोंकी मींगी और सोंठको जलके साथ पीसके लेप करनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (२०) खांसी मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसकी मींगीको ओटाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै ॥ (२१) इनकी मींगीका हरीरा बनाके खिलानेसे मल ढीला हो जाताहै (२२) इनकी मींगीका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (२३) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (२४) पत्तोंको तेलसे चुपडके बांधनेसे छोटे जोड़ोंकी सूजन मिटतीहै (२५) इसके कोमलपत्ते और जड़के काथमें नाभितक बैठानेसे स्त्रीके गर्भाशयकी शूल मिटतीहै (२६) इसकी जडकी छालका काथ पिलानेसे कष्टसे मासिक धर्म होना मिट जाताहै (२७) इसकी जडकी १० तोले छाल को सवासेर पानीमें ओटाकर २॥ पाव पानी रख लेवें फिर उसमेंसे ५ तोले की मात्रा हर २० या ३० मिनटमें देना चाहिये, या इसके गाढे कियेहुए सारकी मात्रा ३० से ६० बूंद तक देनेसे सर्दीसे बन्ध हुआ मासिकधर्म फिर होने लग जाताहै और कष्ट से मासिकधर्म होना मिट जाताहै (२८) छाती के रोगोंको मिटानेके लिये इनकी मींगीका दूधिया रस पिलाना चाहिये (२९) घावके ऊपर पट्टी बांधनेके लिये रूई को कारबोलिक ऐसिड या सोहागेके तिजाबमें भिगोके सुखा रखना चाहिये। इसकी पट्टी बांधनेसे क्षत (घाव) का स्राव बन्ध होजाताहै और उसको हवासे बचातीहै (३०) घावका रुधिर बन्ध करनेके लियेभी उसी रूईका फोया बांधना चाहिये (३१) रूई या ऊनका बुना हुआ कपड़ा हवाके जीवोंको घावपर पहुंचनेसे रोकताहै (३२) इनकी मींगीको पीसके कनपटियों पर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै

(३३) इसके पत्ते दहीमें पीसके लेप करनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (३४) बिनौलोंको औटाकर कुरले करनेसे दन्तपीड़ा मिटतीहै (३५) २ तोले बिनौले की मींगीको पानीमें पीसके पिलानेसे धतूरेका विष उतरताहै (३६) इसके पुष्पोंकी एक तोले भस्मकी फंकी देनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का निकलना बन्ध होताहै (३७) इसकी जड़को चांवलोंके पानीके साथ पीसकर पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (३८) इसके और पाकड़के स्वरसमें मधु मिलाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (३९) जंगली कपासकी जड़के चूर्ण को चांवलोंके आटेमें मिलाकर उसकी रोटी या पूरी बनाके खिलानेसे अपची रोग मिटताहै (४०) जंगली कपासकी जड़को कांजीकेसाथ पीसकर पिलानेसे दूध बढताहै (४१) इनकी मींगीको पीस गायके दूधमें औटाकर पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहै (४२) इसकी रविवारके दिन उखाड़ी हुई जड़को चबानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (४३) इसके बीजोंको पीस गर्मकर टिकिया बनाके बदपर बांधनेसे बद बिखर जातीहै (४४) ७ मासे बिनौले रातको पानीमें भिगो देवें और प्रातःकाल उनको पीस छान कर थोडा सैंधानमक मिलाके पीनेसे कामला मिटताहै (४५) इनकी मींगी को पीस टिकिया बनाके दिनमें दोवेर कुछ गर्म २ बांधनेसे वातपीड़ा मिटतीहै (४६) इनकी मींगीको महीन पीसकर मधुके साथ अंजन करनेसे नष्टहुई निंद्रा फिर आने लगजातीहै (४७) इसके पत्तोंको मीठे तेलमें औटाके लेप करनेसे वायुपीड़ा मिटतीहै ॥

संख्या (१२८)

शोणकार्पासी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हीरवण	रक्तकपास	हीरवणी	रक्तकापशी	रक्तकार्पास		यर्रेटिपत्ति

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शहृप्पुतिप्पु	केंप्पुहत्ति			Gossypium arboreum	

प्रयोग—(१) हीरवणकी फूलकी पंखड़ीको गायके या स्त्रीके दूधमें पीसके लेप करनेसे बच्चोंकी आंखकी पीड़ा मिटतीहैं (२) इसकी जड़का काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै। (३) इसके पत्तोंके रसमें वनजीरेको पीसके लेपकरनेसे ज्वरके पीछे होनेवाले फोडे फुन्सी मिटतेहैं (४) इसके पत्तोंको दूधके साथ पीसके पिलानेसे पीड़ाके साथ थोड़ा २ मूत्र उतरना और मूत्र उतरते समय पीड़ाका होना मिटताहै ।

संख्या (१२९)

(सं०) कालिङ्गं, कालिन्दं, कृष्णवीजं, घृणाफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मतीरो	तरबूज	तडबूच	टरबूज	तरमुज्	तरबूज	दरबूजि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तरपूशि	कल्लंगाडि	बित्तीखहिंदी	खरबुजाह-हिन्दी	Citrullus vulgaris Cucurbita Citrullus	The Water melon

स्थान—तरबूज हिन्दुस्थानके रेतीले भागोंमें होताहै यह अलग २ देशोंमें अलग २ समय में बोया जाताहै ।

पहिचान—यह बहुत बड़ा होताहै इसका छिलका हरा, किसीका कुछ कालास लिये हरा और चिकना होताहै । इसकी गिरी कुछ सफेदी लियेहुए पीली या बहुधा लाल होतीहै । इसके बीजोंमेंसे स्वच्छ पीले रंगका तेल निकलताहै वह खाने और जलानेके काममें आताहै ।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंकी मींगी ठंढी होतीहै (२) इसकी मींगीको मिश्रीके साथ घोट छानकर पीनेसे मूत्रका विरेचन लगताहै (३) इसकी मींगीका पाक बनाके खानेसे शरीर पुष्ट होताहै (४) इसका अर्क पिलानेसे तृषा मिटतीहै (५) यह जहरीली छूतको मिटाताहै (६) पानीजरेमें इसका प्रयोग बहुत उपकारीहै (७) इसकी गिरी खिलानेसे थूकके साथ रुधिरका आना बन्ध होजाताहै परन्तु पसलीकी पीड़ावालेको नहीं खिलाना चाहिये

इसके सूखे फलोंको पकाकर दूधके साथ पीसके पिलानेसे शीत पित्त मिटताहै (९) इसके कोमल पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे अंगुलीके नखसम्बन्धी क्षत मिटतेहैं (१०) इसके फलोंका काथ पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै। इसके फल पहाड़ी लोगोंके खानेके काममें आतेहैं।

संख्या (१३२)

(सं०) कासमर्द, कासारिः, कर्कशः, अरिमर्दः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कसोंदी	कसोंदी	कासुंदरो	कासविंदा	कालकासन्दा	कासमर्द	कासिवेंद

द्राविड़ी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पयावारे	चुरुचरक			Cassia occidentalis	The Negro coffee (or Round podded cassia.

स्थान—कसोंदीके वृक्ष हिमालयसे पश्चिम प्रायः द्वीपतक, बंगाल दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं। इसके दो भेदहैं, एकका वर्णन यहहै और दूसरेका दूसरी संख्यामेंहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते, जड़, और बीज औषधिके काममें आतेहैं येतीनों विष नाशक, और बिगड़े हुए दोषोंको निकालनेवालेहैं (२) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे कुत्ताखांसी मिटतीहै (३) इसकी जड़का फांट या हिम पिलानेसे कई प्रकारके विष उतरतेहैं (४) इसका पंचांग रेचकहै (५) इसके पत्तोंकी मात्रा ६ मासेकीहै (६) इसकी जड़का हिम मूत्रवर्द्धकहै (७) इसके पत्तोंका हिम या काथ पिलानेसे पांव और त्वचा सम्बन्धी दूसरे रोग मिटतेहैं (८) पांव और त्वचा सम्बन्धी दूसरे रोगोंको मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पीसकर लेप या मर्दन करना चाहिये (९) इसकी जड़का काथ जलंधरके पूर्व रूपमें पिलाना चाहिये (१०) इसके पत्तोंको पीसकर ताजे घाव पर लेप करनेसे तुरत भर जाताहै (११) इसके पके बीजोंको पीसकर दाद पर लेप करतेहैं (१२) खुजली मिटानेके लिये इसके बीजोंको पीसके लेप

करना चाहिये (१३) इसके बीजोंको सेक पीस उनका काथ बनाके इकह्वा या काफीके साथ पिलानेसे कुनैन जैसा काम देताहै (१४) इसके बीजोंका काथ पिलानेसे पसीना आताहै (१५) इसकी जड़को कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे दाद, कुष्ठ आदि त्वक् रोग मिटतेहै (१६) सिंहकी मूछका बाल खानेसे जो विष चढ जाताहै उसको उतारनेके लिये इसके पत्तोंका रस ३ दिन पिलाना चाहिये (१७) इसकी जड़को नींबूके रसमें घिसकर लगानेसे दाद मिटताहै (१८) इसकी जड़को मुखमें चाबके उल्टे कानमें फूंक देनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (१९) इसके पत्ते और काली मिरचोंको पीसकर लेप करनेसे कंठमाला मिटतीहै (२०) इसके फल खिलानेसे या इसके बीज पीसके लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२१) इसकी साढे तीन मासे जड़ और पौने दो मासे काली मिरचका चूर्ण खिलानेसे सर्प आदिका विष उतरताहै (२२) इसके २ या ३ पत्ते और २ या ३ काली मिरचको पीसके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (२३) इसकी जड़की छालके चूर्णको शहदमें मिला गोलिया बनाकर प्रकृतिके अनुसार एकसे चार मासे तक देके ऊपर दूध पिलानेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (२४) इसके बीजको पानीमें घिसके अंजन करनेसे सर्पका विष उतरताहै (२५) इसके और मूलीके बीजोंको गंधकके साथ पीसकर लेप करनेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै (२६) इसके पत्तोंका यूष बनाके पिलानेसे हिचकी रुकतीहै (२७) पत्तोंका काथ पिलानेसे श्वास रोग मिटताहै (२८) इसके पत्तोंके ७ मासे रसमें कुछ मधु मिलाकर नेत्रमें टपकानेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (२९) इसके ताजे फलोंको सेककर खानेसे खांसी मिटतीहै।

(सं०) कासमर्द भेद। Cassia Sophora

यह कसौंदीका भेदहै और हिन्दुस्थानमें सबठौर पैदा होताहै॥

प्रयोग—(३०) इसके पत्ते, छाल और बीज रेचकहै (३१) इसके पत्तोंके रसमें चन्दन घिसके लगानेसे दाद मिटताहै (३२) इसकी जड़को घिसकर लेप करनेसे दाद मिटताहै (३३) दाद और पावको मिटानेके लिये इसके बीजोंको पीसके लेप करना चाहिये (३४) इसकी जडको काली मिर-

चक्के साथ पीसके पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै (३५) इसके बीज पत्ते और गंधकको पीसके लेप करनेसे पांव और दाद मिटतेहै (३६) इसकी छालके काथमें मधु मिलाकर पिलानेसे मूत्रातिसार मिटताहै (३७) मूत्रातिसार मिटानेके लिये इसके बीजोंको पीसके मधुके साथ चटाने चाहियें (३८) इसके पत्तोंका रस लगानेसे दाद और त्वचाके रोग मिटतेहैं (३९) इसके पुष्प खानेके काममें आतेहैं (४०) मूत्रकृच्छ्रके प्रारम्भमें इसके पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसके पिलाना चाहिये (४१) उपदंशकी टांकियोंपर इसके पत्तोंका रस लगानेसे लाभ होताहै (४२) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं।

सं० (१३३)

(सं०) कासीसं, धातुकासीसं, वस्त्ररागधृक्, हंसलोमशम्

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कसीस	कासीस	हीराकशी	हिराकस	हिराकस	कसीस	कासीसमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
अन्नभेदि	अन्नभेदि	जाजेअसफर	जाकअर्द	Iron sulfhph	Vitriol green green Copper sulphate of Iron

स्थान—हीरा कसीस हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर खानोंमेंसे निकलताहै।

धातु कसीसके गुण और प्रयोग—(१) यह कसली, शीतल, खट्टी, उष्ण, वृष्य, खारी और कडवी होतीहै। विष और कृमिका नाश करतीहै, कान्ति बढातीहै, नेत्र और केशोंको हितकारीहै, खुजली, चित्रकुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वात, कफ, व्रण, कुष्ठ और क्षय रोगको मिटातीहै (२) कसीस और कैथकी गिरको मधुके साथ चटानेसे हिचकी बन्द होतीहै (३) अंडवृद्धिवाले के अंड कोषोंको वस्त्रसे बाधकर कसीस और सैंधेनमकको एरंडके तेलमें मिलाके पिलानेसे उसका ज्वर छूटताहै (४) कसीस और सैंधानमक स्त्रीके दूधमें पीसके अंजन करनेसे शिरोत्पात रोग मिटताहै (५) कसीस और सैंधेनमकके चूर्णको मधुमें मिलाके अंजन करनेसे शिरहर्ष

रोग मिटताहै (५) तांबेके पात्रमें पुष्प कसीसके चूर्णके तुलसीके रसव १० दिन तक भावना देकर अंजन करनेसे पिल्ल और बाफनीके रो मिटतेहैं (६) पुष्प कसीस उष्ण, कषेली, खट्टी, केशरंजक और नेत्रों हितकारीहै, केशोंकी खुजली, कुष्ठ, क्षयरोग, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वात, कफ व्रण और श्वेत कुष्ठको मिटातीहै। इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठ आदि अने प्रकारके त्वचाके रोग मिटतेहैं।

संख्या (१३४)

(सं०) कांस्य, घोष, कंसक, घोषपुष्पम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कांसी	कांसा कांसी	कांसु	कासें	कांसा	कांसी	कंचु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वगल	कंचु	—	—	—	Bell metal White copper or brass

यह उपधातु है ताम्र और रांगके योगसे बनाई जातीहै।

गुण—यह कडवी, उष्ण, लेखन, विशद, सारक, भारी, रूखी, कषेली, दीपन, पाचक, रुचिकारक, कफ पित्त नाशक, नेत्रोंको हितकारक और वात कफके विकारको हरनेवालीहै।

संख्या (१३५)

(सं०) किंकिणी, व्याघ्रघंटी, गोविन्दी, कण्टकलता ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गिटोरन	गिटोरन	वाघाटी	वाघाटीवेल			अरडोंड, अडोंड

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कटलिकाय्				Capparis horrida C. Zeylanica	

स्थान—गिटोरनकी वेल हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतीहै।

पहिचान—इसकी बडी भारी वेल होतीहै, इसके मुडे हुए कांटे लगतेहैं इसके सफेद बड़े पुष्प लगतेहैं जो पीछे गुलाबी रंगके होजातेहैं इसके फलकी मध्य रेखा इंच या डेढ इंचकी होतीहै। फल पकजानेपर लाल रंगके होजातेहैं। यह वेल बहुधा गांवके पासकी खारी जमीनमें या पहाडी जमीन में होतीहै।

प्रयोग—(१) दाह और खुजली मिटानेके लिये इसके पत्तोंका लेप करतेहैं (२) इसके पत्तोंकी लुपरी बांधनेसे सूजन विखर जातीहै (३) अर्श का फुलाव या सूजन मिटानेके लिये इसके पत्तोंकी लुपरी बांधतेहैं (४) विसूचिकामें इसकी छालका चूर्ण सिरकेमें घोलके पिलाना चाहिये (५) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै (६) इसके फल कड़वे और उष्ण हैं। विसूचिका, वात, कफ और त्रिदोषनाशकहै इनका आचार वनातेहैं। यह कपेली, कड़वी, शीतल और पित्तनाशकहै।

संख्या (१३६)

(सं०) कुकुरद्रुः; कुकुन्दरः; ताम्रचूडः; सूक्ष्मपत्रः।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
ककरूंदो	कुकरौंदा	कोकरुदा	कुकुरवन्ध कुकुरुन्दा	कुकुरशोंका	कुकुरौंदा	अडवीमुलंगी

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नारककरंडे	—	कोमाफीनूस	करपसेरूमी	Blumea lacera	

स्थान—कुकरौंदा हिन्दुस्थानमें प्राय सब ठौर बहुधा नदी और तालाब आदिके किनारे पर आर्द्र भूमिमें होताहै।

पहिचान—इसके पत्ते छोटे और तमाखूके पत्तोंके जैसे होतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंके काथसे आखोंको छांटनेसे नेत्रपीड़ा मिट-तीहै (२) इसके पत्तोंके स्वरसको पिलानेसे बच्चोंकी गुदाके कीड़े मरतेहैं

(३) इसके पचांगका काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) इसकी ताजी जडको मुँह में रखनेसे तृषा कम होजातीहै (५) कुकरोंदेको मिश्रीके साथ घोट व छानकर पिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (६) इसको काली मिरचके साथ घोटकर पिलानेसे विसूचिका की तृषा मिटतीहै (७) इसकी गीली जडको मुखमें रखनेसे मुख शोष मिटताहै (८) इसका रस या इसके पत्ते मलने या बांधनेसे अर्श मिटताहै (९) इसके पत्तोंको पीसके बांधनेसे फोडे मिटतेहैं (१०) इसके पत्तोंको घीसे चुपडकर गांठपर बांधनेसे वह बिखर जातीहै (११) यह चरपरा कडवा और उष्ण होताहै (१२) ज्वर, रुधिर विकार, तृषा और दाहको मिटाताहै (१३) अग्निसे मेढ किये हुए कुकरोंदेके अर्कमें काली मिरच मिला, बेर समान गोलियां बनाकर दिनमें दो बेर दो गोली देनेसे अर्श मिटताहै ॥

संख्या (१३७)

(सं०) कुंकुम, अग्निशेखर, पिशुन, घुसृणम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
केसर	केसर	केसर	केशर	कुकुम केशर	केसर	कुंकुमपूव्वु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लॅटिन	अंग्रेजी
कुकुमप्पू	कुकुमदहु	जाफरान	लरकीमास	Crocus sativus	Saffron

स्थान—केसर कश्मीरमें बहुत पैदा होताहै ॥

प्रयोग—(१) केसर उत्तेजकहै (२) दालचीनी और केसरकी गोली बनाके देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (३) पानमें रखके खिलानेसे मतिभ्रम मिटताहै (४) इसको और पानको पीस गर्म करके पिलानेसे बच्चोंकी सर्दीका असर मिटताहै (५) इसकी अधिक मात्रा देनेसे अचेत करनेवाले विषका काम देतीहै (६) उष्ण औषधियोंके साथ इसकी गोली बनाके देनेसे बांइटे मिटतेहैं (७) केसर और अकलकरेकी गोली बनाके देनेसे मासिक

धर्म शुद्ध होने लग जाताहै (८) हृदयको बल देनेवाली औषधियोंमें इसको मिलाके देनेसे लाभ होताहै (९) ब्राह्मीके काथपर केसर बुरकाके पिलानेसे चित्तका उदासीपन मिटताहै (१०) यकृत् वृद्धिवालेको करेलेके रसमें केसर बुरकाके पिलानेसे लाभ होताहै (११) इसको नींबूके रसके साथ देनेसे विसूचिका मिटतीहै (१२) केसरको छालीके दूधमें पकापीसके पीनेसे ऊर्ध्वगत रक्तपित्त मिटताहै परन्तु उस रोगीको कुछ दिनोंतक छालीका दूध पिलानो चाहिये (१३) केसरके कल्कको रातभर पानीमें भिगो उसमें मधु मिलाकर पिलानेसे मूत्राघात मिटताहै (१४) पुराने घीमें केसरको पीसकर तीन दिनतक पिलानेसे शर्करास्मरी मिटतीहै (१५) केसरको घीमें खरलकर नस्य लेनेसे आधाशीशी आदि मस्तकपीडा मिटतीहै । इसमें से पीलारंग निकाला जाताहै ॥

संख्या (१३८)

(सं०) कुटजः, यवफलः, महागन्धः, शक्रपादपः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कुड़ा, खिरणी	कुडा, कुरैआ	इन्दरजवनु झाड	कुडा	कुडाचि	कुडाशक	कोडिशचट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
पाला वेतपाल	कोडशिगे-यमरनु	लिसानुलअसाफीरुलमुर	जवानेकुंजश्कतल्क	Holarrhena antidysenterica Wrightia d	Circhi or Conessi bark

स्थान—कडवे इन्द्रजौके वृक्ष हिन्दुस्थानके सूखे जगलोंमें बहुत होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष २०—३० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेंदछ—छोटी, सीधी और गोलाईमें ३—४ फुट होतीहै इसकी छाल आध इंच मोटी कुछ भूरी या कुछ काले रंगकी होतीहै, इसके पुराने पत्ते माघमें गिर जातेहैं और चैत वैसाखमें नवीन निकल आतेहैं । इसके पुष्पोंमें सुगंध नहीं होतीहै, इसकी गोल फलियें १—१॥ फुट लम्बी होतीहै उनमें लंबे बीज निकलतेहैं उनकी एक नोकपर रूपकी कूंची लगी रहतीहै जो खुलके गोलाकार होजातीहै । फलोंको डाली परसे तोडनेसे दूध निकलताहै ।

फूलने फलनेका समय—इसके चैतसे जेठ तक सफेद पुष्प लगतेहैं शीतकालमें फल पकतेहैं, और बहुधा फागुन, चैतमें फलियां तडके जातीहैं ॥ प्रयोग—(१) इसकी सूखी छालको पीसकर जलंदर वालेके शरीर पर मर्दन करतेहैं (२) फलीको पीस सर्पके डंश पर लगानेसे सूजन उतरतीहैं और दाह मिटतीहै (३) इसकी जडकी छालका सत १॥ रती और अफीम पावरती देनेसे आमातिसार मिटताहै (४) केवल इसकी जडकी छाल आमातिसार मिटातीहै (५) जडकी छालका ५ रतीसे १० रती तक चूर्ण दिनमें ३ बेर जवान मनुष्यको जलके साथ देना चाहिये (६) जडकी छालका २॥ से ५ तोला काथ अतिसार और आमातिसारको मिटाताहै (७) इसका काथ दोनों प्रकारके अर्शोको मिटाताहै (८)—ज्वरातिसार मिटानेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये (९) अतिसार या आमातिसारके प्रारम्भमें कुडाछालका प्रयोग नहीं करना चाहिये (१०) इसके काथमें पुरानी पाडिया मिटतीहै (११) अतिसार मिटानेके लिये इन्द्रजोका एक या दो रती चूर्ण बच्चेको देना चाहिये (१२) सब शरीरकी निर्बलता और दुबलापन मिटाने के लिये २-३ रतीकी मात्रा देनी चाहिये (१३) इंद्रजोको पीस मधु मिला पुरानी रूईका फोया उसमें भर गर्भाशयके मुखपर लगानेसे गर्भाशयकी पित्तशोथ मिटतीहै (१४) कुडाछाल ताजी लेना चाहिये छालके द्रव सत्वकी १० से २० बूंद देनेसे अतिसार रक्तातिसार या पुराना आमातिसार मिटताहै (१५) इसके ५ तोले काथमें थोडा अफीम मिलाके दो २ या तीन ३ घंटेके अंतरसे पिलानेसे तीव्र आमातिसार मिटताहै (१६) इसकी छालके काथको गाढाकर उसमें अष्टाश या चतुर्थांश अतीसका चूर्ण मिलाकर चटानेसे त्रिदोषका अतिसार मिटताहै (१७) इसकी छालको पीसकर गायके दूधके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१८) इसकी छालके चूर्णको दहीके साथ सेवन करनेसे शर्कराश्मरी मिटतीहै परन्तु इसके सेवनके समय में पथ्य भोजन करना चाहिये (१९) इन्द्रजोको मधुके साथ चटानेसे रक्तार्श मिटताहै (२०) इसकी छालका स्वरस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२१) इसका काथ पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (२२) ४ तोले कुडाछालको ३२ तोले जलमें औटा चतुर्थांश पानी रखें छान उसमें उतना ही

अनारका रस मिला आगपर गाढ़ाकर उसमेंसे ६ मासेकी मात्रा छाछमें मिलाके पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै (३३) छालके काथमें सोंठ और घी मिलाकर पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै (३४) ७ मासे इन्द्रजौको चारपहर भैंसके दूध में भिगो पीस गर्मकर इन्द्रीपर लेपकर पट्टी बांध देवें फिर गर्मजल से धोडालें ऐसे कई दिनतक करनेसे इन्द्री पुष्ट होजातीहै (३५) ४ तोले इन्द्रजौ गर्म जलमें भिगो उस जलको छानकर पिलानेसे पित्तका अतिसार मिटताहै (३६) इन्द्रजौ चरपरे, कड़वे, शीतल, ग्राही, पाचन और दीपनहैं (३७) वातरक्त कफ, रुधिरपित्त कई प्रकारके ज्वर शूल अर्श, अतिसार, त्रिदोष, कुष्ठ, कृमि, विसर्प और रुधिरविकारको मिटातेहैं।

संख्या १३६

(सं०) कृष्णकुटजः वृक्षकुटजः मल्लिका, नीलयष्टिका

मारवाड़ी मीठा इन्द्रजौ गुजराती कालेकिडो मरहटी कालाकुड़ा

Latin—Wrightia tinctoria Nerium tinctorium

स्थान—मीठे इन्द्रजौके वृक्ष मध्य हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि के देशोंमें होतेहैं। मेवाड़में वासोंके जंगलोंमें अजमेर और पुष्करके बीचमें नाग-पहाड़में होतेहैं।

परिचय—इसका वृक्ष छोटा होताहै इसके पत्ते पतझड़में खिर जाया करतेहैं इसकी छोटी डालियां पीले या हल्के भूरे रंगकी होतीहैं इसके पत्ते ३—४ इंच लम्बे होतेहैं इसके सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं इसके १० से १२ इंच लम्बी फलियोंके झूमके लगतेहैं।

फूलने फलने का समय—फागुन और चैत्रमें इसके पुष्प और नवीन पत्ते लगजातेहैं शीतकालमें इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके कोंपल पत्ते और फलियोंका शाक बनाया जाताहै इसके बीजोंमेंसे रंग निकलताहै इसके २—२॥ मासे पत्तोंको ३ घटेतक औटा छानके ठंडा होनेसे आध सेर नील निकलताहै।

संख्या (१४७)

(सं०) कुन्दः, सदापुष्पः, भृङ्गबन्धुः, मनोरम।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कुज,कुन्द	कुन्द	कुन्दफाणडो	कुन्द	कुन्दफूल	कुन्द	मोल्लि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
कुन्द	कोलमल्लिगे			Jasminum pubescens.	

स्थान—कुन्दके वृक्ष हिंदुस्थानके सब बागोंमें लगाये जातेहैं।

प्रयोग—(१) कुन्दके पत्तोंकी पुल्टिस बनाके सुस्त फोडोंपर बांधतेहैं (२) इसकी जड़को घिसके सर्पके दंशपर लेप करनेसे अथवा ओटाके पिलानेसे विष उतरताहै (३) यह शीतल, मधुर, कषैला, पचनमें हल्का, सारक, पाचक, दीपन, हृद्य, चरपरा और कडवा होताहै। पित्तरोग, मस्तकके रोग, विष, शोथ, आम और रुधिरविकारको मिटाताहै।

संख्या (१४८)

(सं०) कुन्दुरु, मुकुन्दकः, बिडालाक्षः, तीक्ष्णगंधः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कोदरूगूद	सालइका गोंद	सालेडानो गूंद	सालईचेंभीक	कुन्दुरुखोटी	गुदब्रोसा	कुन्दुरुष्कम्

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
	नहडगोला	कुंदुर	कुंदुर	Boswellia serrata	The true frank incense Indian incense

स्थान—सालरके वृक्ष बहुधा हिन्दुस्थानके उष्ण और रूक्ष देशोंमें होते है अर्थात् सतलज नदीसे नेपाल तक मध्य हिन्दुस्थान और बरारसे राजपूताने तक और दक्षिण सरकार और कोकन आदि देशोंमें होतेहै॥

पहिचान—इसमेंसे पारदर्शक सुनहरी पीले रंगका आधा गाढ़ा गोंद

निकलताहै, जो धीरे २ जम जाताहै इसका स्वाद कड़वा होताहै। यह मुंहमें नरम होजाताहै। तपानेसे नरम होजाताहै। इसको तीक्ष्ण अग्निमें तपानेसे इसके परिमाणु अलग-२ होजातेहैं।

प्रयोग—(१) नारियलके तेलमें इसको गोंदका मरहम बनाके घावों पर लगातेहैं (२) इसको घीमें मिलाके उपदंशकी टाकियों पर लगातेहैं (३) श्वासकी दुर्गंध मिटानेके लिये इसको बबूलके गोंदके साथ मुखमें रखना चाहिये (४) इसकी ३॥। मासेकी फकी कई दिनों तक लगातार लेते रहनेसे मेदरोग मिटताहै अर्थात् मोटा मनुष्य दुबला हो जाताहै (५) गांठको बिखेरने या बैठानेके लिये कुंदरु गोंद और सिंदूरको पानीसे पीस कपड़ेपर लगाकर गांठ पर चेप देतेहैं (६) स्निग्ध या चेपदार औषधिके चेपमें इसके तेलकी १० से २० तक बूंद डालकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (७) नारियलके तेलमें इसका मरहम बनाके लगानेसे पुराने फोड़े मिटतेहैं (८) कुंदरूको त्रिफलाके साथ ओटाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होताहै (९) बड़ी हरड़की छाल और कुंदरू बराबर ले पीस छानके मधुमें गोली बनाके लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१०) इसको तेलमें ओटाकर मर्दन करनेसे गठिया मिटताहै (११) कुंदरू गोंदको महीन पीसकर अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै और नेत्रका घाव जमाहुआ रुधिर आसूका बहना, बाफनीका गलना और नेत्रोंकी सफेदी मिटतीहै (१२) इसके गोंदके शहदमें मिलाके अंजन करनेसे धुंध मिटतीहै (१३) इसकी धूनी देनेसे नेत्रोंकी खुजली मिटतीहै (१४) इसको पीसके नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होताहै (१५) कुन्दरू गोंद पीसके दांत और मसूड़ोंपर मलनेसे रुधिर विकारकी दंतपीडा मिटतीहै (१६) कुन्दरू गोंदको दीपकमें जला उसका काजल पाड़ उस काजलके अंजनसे नेत्रोंसे पानीका बहना और पलकोंका झड़ना बन्ध होजाताहै (१७) ३॥ मासे कुन्दरू गोंद सायंकालके समय पानीमें भिगो प्रातःकाल छान थोड़ा बूरा मिलाकर पिलानेसे मूलरोग मिटताहै।

संख्या (१४२)

(सं०) कुम्भिका, वारिपर्णी, कुमुदा, जलवल्कलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कुम्भी	जलकुम्भी	कुम्भी	कुम्भी	पाना टोकापाना		अन्तरदामर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
आकाश-तामरै	आकाश तामरै			Pistia Stratiotes	

स्थान—जलकुम्भी—बंगाल, कारो मण्डल कोष्ट, मद्रास, दक्खन, ब्रह्मा और सीलोन आदि कई देशोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) इसका हिम या क्वाथ शीतल होताहै और शरीरकी चमचमाहटको मिटाताहै (२) मिसरीके साथ इसका क्वाथ करके २॥—२॥ तोले दिनमें दो वेर पिलानेसे चिनग मिटतीहै (३) इसके पत्तोंकी पुल्टिस बाधनेसे अर्शकी पीड़ा कम होतीहै (४) इसके पत्तोंको चावलोंके साथ ओटा, छान उसमें नारियलका दूध मिलाके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (५) इसकी जड़के चूर्णको मिश्रीके साथ फक्की देके ऊपर गुलाब जल पिलानेसे खांसी मिटतीहै (६) इसकी जड़के क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे श्वास मिटताहै (७) इसकी जड़ सारकहै (८) जलकुम्भीकी भस्मका लेप करनेसे मस्तकके दाद मिटतेहैं (९) इसकी भस्मको गोमूत्रमें पका छानके पिलानेसे गलगंड मिटताहै इस प्रयोगके सेवन करनेवालेको कोदोंकी रोटी या दलिया छाछ के साथ खिलाना चाहिये । पूनेके जिलेके गरीब लोग कालके दिनोंमें इसका शाक बनाके खातेहैं । यह जिस तालावमें होतीहै उसका पानी साफ रहताहै ।

संख्या (१४२)

(सं०) कुरण्टकः, वाण, सहचर, मृदुकण्टः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कटसैलो	कटसैया	कांटाअशे ळीयो	कोराटा	झांटीगाछ	सांसा	गोरंट

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
करम्पुगुर्दाणि	केम्पुगोरएटे			Barleria cristata B Alebotoma.	

स्थान—कटसरैया बागोंमें बोया जाताहै और कई पर्वतोंमें अपने आप उगताहै।

पहिचान—यह काले धोले लाल और पीले रंगके पुष्पोंके भेदसे चार प्रकारका होताहै इन सबके शूलें लगतीहैं और इनके पत्तोंमें विशेष अन्तर नहींहैं।

प्रयोग—(१) काला कटसरैया, कड़वा और चरपरा होताहै। वात, कफ, शोथ, कंडू, शूल कुष्ठ, व्रण और त्वक्दोषको मिटाताहै (२) इसके बीज सर्पके विषको उतारतेहै (३) इसके पत्तोंको पीस आगपर तपाके लेप करनेसे, शोथ उतरताहै (४) इसकी जड़का हिम, फांट या क्वाथ पिलानेसे कफ मिटताहै (५) इसकी जड़को पीस तेलमें मिला गर्म करके लेप करनेसे सूजन उतरतीहै (६) इसकी जड़को पीस गायके दूधके साथ पुरुष और स्त्रीको तीन दिन पिलाने खिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (७) धोला कटसरैया—कड़वा, चरपरा, मीठा, उष्ण और स्निग्ध होताहै, दांत और बालोंके रोग, कुष्ठ, वात, रुधिर विकार, कफ, कंडू और त्वक्दोषको मिटाताहै (८) लाल कटसरैया—कड़वा और उष्ण होताहै शोथ, ज्वर, वात रोग, कफ, रुधिरविकार, पित्त, आध्मान, शूल, कास, और श्वासको मिटाताहै और शरीरकी कान्ति बढ़ाताहै।

संख्या (१४४)

(सं०) पीत कुरण्टकः किंकिरातः, कनकः, पीतपुष्पकः।

स्थान—पीला कटसरैया—बम्बई, मद्रास, आसाम, सिलहट, सीलोन और राजपूताना आदि कई देशोंमें होताहै कहीं २ इसको खेतोंकी बाड़पर लगातेहैं।

पहिचान—इसके एक प्रकारका पीला गोंद लगताहै वह सूखनेपर काला पड़जाताहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका रस कुछ कड़वा होताहै परन्तु स्वादमें बुरा नहीं होताहै (२) बच्चोंके अतिश्याय में (कि जिसमें ज्वर हो और

कफ बहुत बढगया हो) इसके १॥ तोले रसमें मधु या बूरा और जल मिलाके दिनमें दो वेर पिलाना चाहिये (३) इसके पत्तोंका स्वरस वर्षाऋतुमें पैरोंकी पगथलीये लगानेसे वर्षातके जलसे पगथली नहीं फटतीहै (४) इसके पत्तोंका रस उपदंशकी टोकियोंपर लगातेहैं (५) कालीमिरच और इसके पत्तोंको पानीके साथ पीस छानकर पिलानेसे उपदंश मिटताहै (६) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटजाताहै (७) इसके पत्तोंके हिम, फाट या काथमें मधु मिलाके पिलानेसे रूक्ष खांसी मिटतीहै (८) इसके काथमें ईट बुझाके बफारा देनेसे पसीना होके ज्वर उतरजाताहै और छूटजाताहै (९) इसके काथ पर सोंठ बुरकाके पिलानेसे बचोंका अतिसार मिटताहै (१०) यह उष्ण कडवा और कपैलाहै। मंदाग्नि, वात, कफ, कण्डू, शोथ, रक्तविकार और त्वक्दोषको मिटाताहै।

संख्या (१४५)

(सं०) कुराडिका, छत्रभूषा, छत्रनाशिनी,

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
आग्यो	कुराडवृक्ष	आगियो	फलगी			अग्निवेदपाकु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नेरुप्पु				Ammannia baccifera A. vesicatoria	Blistering Ammonia

स्थान—आगियो हिन्दुस्थानकी आर्द्रभूमिमें सबठौर होताहै।

प्रयोग—(१) इसमें नोसादर जैसी तीव्रगंध आतीहै, परन्तु छुरी नहींहै (२) इसके पत्ते बहुत चरपरे होतेहैं उनको मल टिकडी बनाके आध घंटेतक बांधके खोल देनेसे वहां किसीके १२ घंटोंमें और किसीके २४ घंटोंमें छाला होजाताहै और किसीके होता ही नहीं परन्तु इसके बांधनेसे दाह बहुत होतीहै (३) पीप पडीहुई गाठको शीघ्रतासे पकानेके लिये इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (४) इसकी जडके स्वरसको शोथपर लगातेहैं

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
कठ	कूठ	कू(ठ)	कोष्ट	कुड	कुट्ट	चंगल्वकोष्टम्

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लॅटिन	अंग्रेज़ी
शंगलंवकोष्टं	चंगलकुष्ट,	कुस्त	कुस्त	Saussurea Lappa. Aucklandia Costus.	The Costus. Costus root.

स्थान—कूठ कश्मीर, चनाव और झेलमके नलोंमें पैदा होतीहै भादवे और आसोज में इसकी जड़ जमीनमें से निकाली जातीहै उसमें बहुत सुगंध होतीहै जब यह गट्ठोंमें बांध लादके रवानाकी जातीहै तब उस मार्गकी हवाको सुगंधित करदेतीहै।

प्रयोग—(१) यह पुरुषार्थ और बल बढ़ातीहै (२) वात और कफ के बिगड़नेसे जो रोग पैदा होतेहैं उनमें इसका प्रयोग बहुत उपकारीहै (३) इसके चूर्णको मधुमें मिलाके चटानेसे श्वास रोगमें बड़ा उपकार होताहै (४) इसको पानीमें घिस गर्मकर लेप करनेसे गांठें बिखर जातीहै (५) यह चरपरी और उत्तेजकहै (६) कफ, श्वास, कास, ज्वर, मंदाग्नि और त्वचाके रोगोंमें दी जातीहै (७) इसके चूर्णका मरहम बनाके फोड़ों पर लगातेहैं (८) विसूचिकासे शिथिल हुए अंगोंको उत्तेजित करनेके लिये कूठका क्वाथ करके पिलातेहैं और इसको तेलमें तलकर उस तेलका मर्दन करतेहैं (९) इसके चूर्णको फोड़ों पर बुरकातेहैं (१०) इसके चूर्णका मंजन करनेसे दांतकी पीड़ा मिटतीहै (११) गठियाकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन करना चाहिये (१२) घावों के कीड़े मारनेके लिये इसका चूर्ण बुरकाना चाहिये (१३) इसके चूर्णको पान में रख चाब ३ के पीक निगलनेसे खांसी मिटतीहै (१४) मंदाग्नि मिटानेके लिये कूठ, सोंठ और सेंधनमककी फकी देना चाहिये (१५) बादी और कफकी ज्वरको मिटानेवाली औषधियोंमें कूठ मिलाई जातीहै (१६) कूठ और रालका धूम्र (धुंआ) पिलानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१७) कूठ और एरण्डकी जड़को कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे बादीसे पैदा हुई मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१८) इससे बनायाहुआ तेल (वातरक्तको मिटाताहै

(१९) इसका वफारा लेनेसे प्रतिश्याय मिटताहै (२०) इसके चूर्णको दुगुनी शहतमें मिलाकर चटानेसे श्वास और खांसी मिटतीहै (२१) ५ तोले कूठको जौ कूटकर सेरभर पानीमें औटा आधसेर रखकर दिनमें तीन चार वेरमें पिलानेसे कुत्तेका विष उतरताहै ।

संख्या (१५१)

(सं०) कुष्ठवैरी, शैलरोही, महीरुह, वैवस्वतद्रुमः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	कुष्ठवैरी			चालमुगरा, चाउलमुगरा		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Gynocardia odorata	Chaulmugra, Lucruban or [illegible] seed

स्थान—चालमुगराके पेड सिकम और खासिया पहाड़से चटगांव और रंगून तक होतेहै इसके १०० तोले वीजोंमें से २५ से ३० तोले तक तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) इसके वीजोंका लेप करनेसे कोढ मिटताहै (२) त्वचाके दूसरे रोगोंमें भी इसका लेप करतेहै (३) इसका तेल रुधिर शुद्ध करनेके लिये दिया जाता है (४) इसके तेलका मर्दन करनेसे उत्तेजना पैदा होती है (५) कोढके लिये इसके तेलका प्रयोग वहुत उत्तम है जो कोढ थोड़ा वढगया हो और वहुत दिनोंका न हो तो इसके प्रयोगसे वहुत शीघ्र और प्रशंसाके योग्य गुण होताहै । जब वहुत वढगया हो और पुराना पड़गया होवे तब कई महीनों या वर्षों तक इसके तेलका सेवन करना चाहिये । यह सात्र प्रकारके कोढमें गुण करताहै । जब इस तेलको खानेके लिये काममें लावें तब शरीर पर भी इस तेलका मर्दन करना चाहिये, परन्तु केवल इस तेलका मर्दन करनेमे दूसरे उपद्रव होजातेहैं; इसलिये एक भाग इसके तेलमें दो या तीन भाग नीमका तेल मिलाके मर्दन करना चाहिये (६) यह

एक प्रकारके कुष्ठ जो खूंखी और गोडोंमें होताहै उसमें और उपदंशके उपद्रवों में मर्दन किया जाताहै (७) जब इसके तेलका सेवन कराया जावे तब उस रोगीको मच्छी, झींगामच्छी, बेंगन, दूसरे हरेशाक, मट्ठा, नींबूकी खटाई और तेज मदिरा आदि खानेको नहीं देना चाहिये । इस तेलको पानी या दूधमें डालके देना चाहिये । इसकी ५ से १५ बूंदें या अधिक धीरे २ बढाता हुआ दिनमें ३-४ वेर देना चाहिये, जो इससे जी मचलाने लगे या वमन होवे या आतें ढीली होजावें तो इसको एक दो दिन छोड़कर फिर उसकी कुछ कम मात्रा देनेका प्रारम्भ करना चाहिये (८) इसको पीने और मर्दन करनेसे कोढ, गंडमाला, त्वचाके रोग और पुरानी गठिया मिटतीहै (९) उपदंश और त्वचाके साधारण रोगोंको मिटानेके लिये इस तेलका तीन सप्ताह तक सेवन करना चाहिये । इस तेलमें घी मिलाकर भी मर्दन करतेहैं (१०) क्षय रोगमें इस तेलका प्रयोग बहुत उपकारीहै (११) इसके बीज की मींगीकी तीन तीन रत्ती प्रमाण गोलियां बना दिनमें तीन वेर लेवें, पीछे उनको धीरे २ बढावें । जबतक कि खाली होवड न होने लगे (१२) बिगड़े हुए जख्म और बच्चोंके ऐसे फोडे कि जिनमें खरूंट आता जाय और खुजली चलती रहे, वे इसके सेवनसे मिट जातेहैं ।



सं० (१५२)

(सं०) कुष्माण्डं, पुष्पफलं, पीतपुष्पं, बृहत्फलम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पेठो	पेठा कुम्हड़ा	भूराकोळा	भूराकोहळा	कुमडा कुष्माड	पेठा कुम्हडा	गुम्मडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पूपाणि	कुबल, गुबल			Benincasa cerifera. Cucurbita Lepo	The white gourd melon

स्थान—पेठा हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै । इसके बीजोंमेंसे पतला फीका और पीले रंगका तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) पेठेका शर्बत पीनेसे रुधिर शुद्ध होताहै (२) इसका स्वरस पिलानेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै (३) इसके स्वरसमें मिश्री डालके पिलानेसे अतर्दाह मिटतीहै (४ इसकी गिरी कनपटियोंपर बाधनेसे नेत्रों की पित्त दाह मिटतीहै (५) इसके बीज आतोंके कीडे मारतेहै (६) इसकी मीगीका १। तोले तेल एकवेर या दो घंटे पीछे दूसरीवेर देकर उसके पीछे कोई सारक औपधि देनेसे आंतोंके कीडे मरके या जीतेहुए निकलजातेहै (७) क्षयरोगके प्रारम्भमें इसके ताजे स्वरस के साथ मोतीकी सीपका चूर्ण चटातेहै (८) फुफ्फुस सम्बन्धी क्षयरोग में यह एक बहुत उत्तम औपधिहै (९) फुफ्फुसकी छोटी २ गाठें मिटानेके लिये इसका स्वरस बहुत उत्तम औपधिहै (१०) इसके मुरब्बेसे रक्तार्श मिटताहै (११) पित्तकी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसका मुरब्बा खिलाना चाहिये (१२) उपदंशकी टांकियों पर इसकी गिरीका वफारा देना चाहिये (१३) पेठेका स्वरस रेचक और रक्तशोधकहै (१४) पारेके विकारको शांत करनेके लिये इसके स्वरस का सब शरीरपर मर्दन करना और पिलाना चाहिये (१५) शरीरको कृश करनेवाले क्षय आदि रोगोंको मिटानेके लिये इसका मुरब्बा बहुत उपकारीहै, और शीघ्र पचताहै (१६) शरीरकी अतर्दाह मिटानेके लिये इसका शर्बत या मिठाई या मुरब्बा खिलाना चाहिये (१७) शरीर पुष्ट करनेके लिये इसका पाक, मिठाई या मुरब्बा बहुत उत्तम औपधिहै (१८) इसके शर्बतके साथ शुद्ध शूरणके चूर्णकी फकी देनेसे रक्तार्श मिटताहै (१९) पारेका उपद्रव मिटानेके लिये पेठेका पाक खिलाना चाहिये (२०) पेठा मूत्रवर्द्धकहै और भीतरके यंत्रोंमें से रुधिरके वहावको रोकताहै (२१) इसके रसमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तका उन्माद मिटताहै (२२) अपस्मार मिटानेवाली औपधियोंके साथ पेठेका घी बनाके खिलानेसे अपस्मार मिटताहै (२३) पाक बनानेके लिये पुराना और पका पेठा लेना चाहिये (२४) इसके ६ मासे पुष्प पीसके पिलानेसे विसूचिकामें लाभ होताहै (२५) इसकी जड़के चूर्णकी फकी उष्ण जलके साथ देनेसे भयंकर श्वास और कास मिटता है (२६) पेठेके रसमें गुड मिलाके पिलानेसे कोद्रव (कोदों) का विप उतरताहै (२७) इसके और काकड़ीके बीजोंको पीसकर नाभिके नीचे लेप करनेसे

रक प्रकारके कुष्ठ जो खुंणी और गांडोंमें होताहै उसमें और उपदंशके उपद्रवों में मर्दन किया जाताहै (७) जब इसके तेलका सेवन कराया जावे तब उस रोगीको मच्छी, झींगामच्छी, बेंगन, दूसरे हरेशाक, मठा. नींबूकी खटाई और तेज मदिरा आदि खानेको नहीं देना चाहिये। इस तेलको पानी या दूधमें डालके देना चाहिये। इसकी ५ से १५ बूंदें या अधिक धीरे २ बढाता हुआ दिनमें ३-४ वेर देना चाहिये, जो इससे जी मचलाने लगे या वमन होवे या आंतें ढीली होजावें तो इसको एक दो दिन छोड़कर फिर उसकी कुछ कम मात्रा देनेका प्रारम्भ करना चाहिये (८) इसको पीने और मर्दन करनेसे कोढ,गंडमाला, त्वचाके रोग और पुरानी गठिया मिटतीहैं (९) उपदंश और त्वचाके साधारण रोगोंको मिटानेके लिये इस तेलका तीन सप्ताह तक सेवन करना चाहिये। इस तेलमें घी मिलाकर-भी मर्दन करतेहैं (१०) क्षय रोगमें इस तेलका प्रयोग बहुत उपकारीहै (११) इसके बीज की मींगीकी तीन तीन रत्ती प्रमाण गोलियां बना दिनमें तीन वेर लेवें, पीछे इनको धीरे २ बढावें। जबतक कि खाली होवड़ न होने लगे (१२) बिगड़े हुए जख्म और बचोंके ऐसे फोड़े कि जिनमें खरंट आता जाय और खुजली चलती रहे, वे इसके सेवनसे मिट जातेहैं।



सं० (१५२)

(सं०) कुष्माण्डं, पुष्पफलं, पीतपुष्पं, बृहत्फलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पेठो	पेठा कुम्हड़ा	कोळुं	कोहळ	कुमड़ा कुष्मांड	पेठा कुम्हड़ा	गुम्मडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
पूषणि	कुंबल गुंबल			Benincasa cerifera. Cucurbita Pepo.	The white gourd melon.

स्थान—पेठा हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै। इसके बीजोंमेंसे पतला फीका और पीले रंगका तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) पेठेका शर्बत पीनेसे रुधिर शुद्ध होताहै (२) इसका स्वरस पिलानेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै (३) इसके स्वरसमें मिश्री डालके पिलानेसे अतर्दाह मिटतीहै (४ इसकी गिरी कनपटियोंपर बांधनेसे नेत्रों की पित्त दाह मिटतीहै (५) इसके बीज आंतोंके कीडे मारतेहै (६) इसकी मींगीका १। तोले तेल एकवेर या दो घंटे पीछे दूसरीवेर देकर उसके पीछे कोई सारक औषधि देनेसे आतोंके कीडे मरके या जीतेहुए निकलजातेहै (७) क्षयरोगके प्रारम्भमें इसके ताजे स्वरस के साथ मोतीकी सीपका चूर्ण चटातेहै (८) फुफ्फुस सम्बन्धी क्षयरोग में यह एक बहुत उत्तम औषधिहै (९) फुफ्फुसकी छोटी २ गाठें मिटानेके लिये इसका स्वरस बहुत उत्तम औषधिहै (१०) इसके मुरब्बेसे रक्तार्श मिटताहै (११) पित्तकी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसका मुरब्बा खिलाना चाहिये (१२) उपदंशकी टांकियों पर इसकी गिरीका बफारा देना चाहिये (१३) पेठेका स्वरस रेचक और रक्तशोधकहै (१४) पारेके विकारको शांत करनेके लिये इसके स्वरस का सब शरीरपर मर्दन करना और पिलाना चाहिये (१५) शरीरको कृश करनेवाले क्षय आदि रोगोंको मिटानेके लिये इसका मुरब्बा बहुत उपकारीहै, और शीघ्र पचताहै (१६) शरीरकी अतर्दाह मिटानेके लिये इसका शर्बत या मिठाई या मुरब्बा खिलाना चाहिये (१७) शरीर पुष्ट करनेके लिये इसका पाक, मिठाई या मुरब्बा बहुत उत्तम औषधिहै (१८) इसके शर्बतके साथ शुद्ध शूरणके चूर्णकी फकी देनेसे रक्तार्श मिटताहै (१९) पारेका उपद्रव मिटानेके लिये पेठेका पाक खिलाना चाहिये (२०) पेठा मूत्रवर्द्धकहै और भीतरके यन्त्रोंमें से रुधिरके बहावको रोकताहै (२१) इसके रसमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तका उन्माद मिटताहै (२२) अपस्मार मिटानेवाली औषधियोंके साथ पेठेका घी बनाके खिलानेसे अपस्मार मिटताहै (२३) पाक बनानेके लिये पुराना और पक्का पेठा लेना चाहिये (२४) इसके ६ मासे पुष्प पीसके पिलानेसे विसूचिकामें लाभ होताहै (२५) इसकी जड़के चूर्णकी फकी उष्ण जलके साथ देनेसे भयंकर श्वास और कास मिटता है (२६) पेठेके रसमें गुड मिलाके पिलानेसे कोद्रव (कोदों) का विष उतरताहै (२७) इसके और काकड़ीके बीजोंको पीसकर नाभिके नीचे लेप करनेसे

मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (२८) इसके चार तोले स्वरस में एक मासे जवाखार और एक तोले शक्कर मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२९) इसके स्वरस में हींग और जोखार मिलाके पिलानेसे बस्ति और इन्द्रीकी शूल, पथरी और शर्करा मिटतीहै (३०) पदेके अठारह गुने रसमें घी और मुलहटीका कल्क डालके घी सिद्ध करके पिलानेसे अपस्मार मिटताहै (३१) इसके स्वरसमें गुड और जोखार मिलाके पिलानेसे मूत्राघात और शर्कराश्मरी मिटतीहै।

संख्या (१५२)

(सं०) कुसुम्भं, वह्निशिखम, पावकं, वस्त्ररंजकम ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलङ्गी
कसूंबो	कसूम	कसुबो	करडईचेफुल	कुसुमफुलो	कुसुभा	लत्तुक लकेनगारसु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
		मअसफर	खशकदाने	Carthamus tinctorius.	Carthamine dye. The safflower Wild or Bastard saffron

स्थान—कसूंबा हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोया जाताहै।

पहिचान—इसके पेड़ दो प्रकारके होतेहैं। एक काटेवाले उनके पुष्पोंमेसे जो रंग निकलताहै वह हल्का होताहै। दूसरे बिन काटेवाले उनके पुष्पोंमेसे जो रंग निकलताहै वह बहुत उत्तम होताहै॥

इसके ४० तोले बीजोंमेसे ७ तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) कसूमके बीज रेचकहै (२) इसके बीजोंका तेल गठिआमें मर्दन किया जाताहै (३) इस तेलके मर्दन करनेसे शरीरके हरेक अंगका शून्यपन और निश्चेष्टपन मिटताहै (४) इसके बीजोंके विरेचसे शरीर मेंसे कफके और दूसरे बिगडे हुए दोष निकल जातेहैं (५) इसके सूखे हुए ४ मासे पुष्पोंकी फक्की लेनेसे कामला रोग मिटताहै (६) इसके बीजोंके प्रयोगसे रजोधर्म शुद्ध होने लगताहै (७) इसके बीजोंका लेप करनेसे गांठे बिखर जातीहै (८) कसूमके बीज, मूंगफली और तिल इन सबको इकट्ठे

करके तेल निकालतेहैं वह औषधिके काममें आताहै (९) इसके बीज सारकहै इनकी अधिक मात्रा देनेसे एक दो हल्के दस्त आजातेहैं। (१०) इसके साढे सात मासे वीजोंको २॥ पाव पानीमें ओटाकर पिलानेसे पसीना होताहै। (११) इसके वीजोंको पीस पुल्टिस बनाके बच्चा होनेके पीछे गर्भाशय पर बाधनेसे वहाकी पित्त शोथ और पीडा कम होजातीहै (१२) इसके बीजोंको पीसकर बिगडे हुए फोडों पर लेप करना चाहिये (१३) कम्भुमको ओटाकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१४) इसका तेल फोडे फुन्सियों पर लगाया जाताहै (१५) दबा हुवा निकाला और चेचक आदिको पीडा बाहिर निकालनेके लिये कम्भुमको ओटाके पिलाना चाहिये (१६) इसके बीजोंकी मीगीका पानीमें चेप निकाल उसमें थोडा बूरा मिलाके गुनगुना कर पिलानेसे उदरपीडा मिटतीहै (१७) इसके तीन मासे पुष्पोंको पीस दहीके साथ खानेसे अर्श मिटताहै (१८) इसके बीज और बबूलकी छालको बराबर ले जलाके चमेलीके तेलमें मिलाकर बालोंकी जडमें मलनेसे बाल कोमल और लम्बे बढजातेहैं। (१९) इसके बीजोंको सेककर खातेहैं।

संख्या (२५४)

(सं०) कृष्णकोलिः, कृष्णकेलिः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गुलहब्बास	गुलअब्बास		गुलबसी	कृष्णकलि	गुलाबास	चंद्रमल्लि, चंद्रमल्लि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
बंद्राल्लि	सर्जमल्लिगे		गुलेअब्बास	Mirabilis Jalapa.	The four o'clock plant.

स्थान—गुलहब्बास हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) इसकी जड कुछ रेचकहै (२) इसके पत्तोंको मल गर्म करके बांधनेसे गांठें और फोडे जल्दी पकतेहैं (३) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड गर्म करके बांधनेसे फोडा जल्दी पक जाताहै (४) इसकी जडको सुखा

ास कपड़ छानकर दूसरी औषधियोंके साथ पाक बनाके पुष्टाईके लिये खाते
(५) इसकी जड़का पानीमें घिस लेप करनेसे त्रोटकी सूजन उतरतीहै ॥

संख्या (१५५)

(सं०) कृष्णबीजः ।

ारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मेरचाई	मिरचाई			कालदाना		कोल्लिविलुलु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
ाकुट्टान-वेरै	गन्नीबीज	हब्बुलनील	तुख्मनील	Ipomaea hederacea Pharbitis nil	

स्थान—मिरचाई हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै और अपने आपभी बहुत उगतीहै । यह दो प्रकारकी होतीहै ।

प्रयोग—(१) मिरचाईके सवा मासेसे पौने चार मासेतक बीजोंके चूर्ण की फकी देनेसे विरेच और मूत्र विरेच होतेहै (२) मिरचाईके २॥ रती सत में आधी या एक रती रस कपूर मिलाके देनेसे या केवल २॥ रती सत ही के देनेसे अच्छा विरेचन होताहै (३) भोजनके पहिले इसको २॥ रती सत देनेसे वमन नहीं होतीहै और ५ रती सत देनेसे वमन होतीहै (४) यकृत्की शिथिलतासे जो बद्ध कोष्ठ होजाताहै उसको मिटानेके लिये मिरचाईका सत बहुत उपकारी है (५) पौनेचार मासे मिरचाईके बीज विरेचनके लिये जुलाफेका बराबर काम देतेहै । (६) अंतडियोंकी सूजन वालेको मिरचाई के बीजोंको विरेचन नहीं देना चाहिये (७) पौने चार मासे मिरचाई और ३॥ रती सोंठमें थोडी शकर मिलाके देनेसे अच्छा विरेचन होताहै (८) कालादाना और इमलीका सत प्रत्येक १७॥ तोले और सोठ २॥ तोले इन सबको कपड छान कर उसमेंसे साढे पांच मासे की मात्रा देनेसे अच्छा विरेचन लग जाताहै (९) इसके विरेचनसे कफ और पित्तके विकार निकलतेहै (१०) पेटके कीडे मारने केलिये भी इसका विरेचन देतेहैं (११) इसकी मात्रा देनेसे एक से ३ घंटे

तक विरेचनके ४-५ अच्छे वेग हो जातेहैं (१२) कोई २ इनको सेक पीस के फंकी देतेहैं।

संख्या (१५६)

(सं०) केतकी, तीक्ष्णपुष्पा, त्रिफला, धूलिपुष्पिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
केवड़ो	केवड़ा	केवड़ो	केवड़ा	केयागाछ	केउड़ा	मोगलि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अङ्गरेज़ी
ताळ,ताळई	ताळ	—	फादी	Pandanus odoratissimus	

स्थान—केतकी के वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थानके किनारे पर, बंगाल, मद्रास अहाता और राजपूताना आदि कई देशोंमें बहुत बोये जातेहैं और अपने आप भी उगते हैं इससे तेल बनाया जाताहै।

प्रयोग—(१) केतकीके फूलोंका इत्र उत्तेजकहै (२) केतकीके पुष्पों का तेल गांइटे मिटाताहै (३) इसके तेलका मर्दन करनेसे शिरकी पीड़ा और गँठिया मिटतीहै (४) इसकी जड़का तेलभी औषधिके काममें आताहै (५) इसके पुष्पोंके कोमल पत्ते कच्चे या मसालेके साथ पकाके खाये जातेहैं (६) इसके पुष्पोंको मीठे तेलमें डाल कर ४० दिन तक धूपमें रखकर मर्दन करनेसे वायुकी पीड़ा मिटतीहै।

संख्या (१५७)

कोकन।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोकन	कोकम	कोकम	कोकम			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Garcini indica. G purpurea.	Cocum, Kokam butter Mangosteen oil Brindonia tallow

स्थान—कोकनके वृक्ष कोकन और कनारेके बागोंमें बहुत बोये जातेहैं॥

पहिचान—इसके बैंजनी रंगका छोटी नारंगी जितना बडा फल लगता जो चैत वैसाख में पकताहै। इसके फलका रस रंगतके काममें आताहै। कोकन के १० तोले बीजोंमेंसे ३० तोले तेल निकलताहै उसके निकालने की तीन रीतियां है (१) पहिले इसके बीजोंके छिलके अलग कर उनकी गिरीको पत्थरकी खरलमें खरलकर पीछे उसको लोहेकी कडाई या मिट्टीके तगार में पानीके साथ आग पर चढाके ओटावें फिर कुछ समय पीछे उसको दूसरे बरतनमें निकालके ठण्डा करनेसे तेल पानी पर तैर आताहै वह ठण्डा होने पर जम जाताहै तब उसको निकाल लेतेहैं (२) पहिली रीतिके अनुसार बीजोंकी मींगी को पीस, बडे बरतनमें पानीमें घोल रातभर रख छोडे और प्रातःकाल पानी पर जमे हुए तेलको निकाल लेवें पीछे उस बचे हुएको दहीकी भांति मथने से जो मक्खन जैसा पदार्थ ऊपर आजाताहै उसको निकाल लेवे (३) जैसे कोल्हू में और बीजोंका तेल निकालतेहैं वैसेही कोल्हूमें इसका तेल शीत कालमें निकालना चाहिये। कोकनका तेल बहुत दिनों तक रहनेसे सड जाता है। इसको मुहमें रखनेसे मक्खनकी भांति पिघल जाताहै और जिह्वापर शीतलता प्रतीत होताहै।

प्रयोग—(१) कोकन का फल औषधिकी रीत पर भोजनके काममें आताहै (२) इसका फल कुछ शोषकहै। इमलीकी अपेक्षा इसकी खटाई अच्छी होतीहै (३) इसके फलके रसका शर्बत बनाया जाताहै उसके प्रयोग से पित्तके विकार मिटतेहैं (४) कोकनका तेल शरीरको पोषण करताहै। कठोरताको शिथिल करताहै और पदार्थोंकी चरपराहट मिटाताहै (५) क्षय मे फुप्फुसके रोग, गंडमाला, सम्बंधी रोग, और आमातिसार मिटानेके लिये काममें आताहै (६) फुप्फुसके रोगमें यह काड मच्छीके तेल जैसा काम देताहै (७) बार २ दस्तकी शंका होने और पेटकी शूल मिटानेके लिये इन रोगों को मिटाने वाली दूसरी औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करना चाहिये (८) शरीरका पोषण करनेके लिये और बल बढानेके लिये काडमच्छीके तेलके बदलेमें इसको ?। तोलेसे २॥ तोलेतक मात्रा देनी चाहिये (९) अतिसार और आमातिसार मिटानेके लिये यह ३॥। से ७॥ मासेतक देना चाहिये

(१०) चमड़ी छिलजानेपर और शीतकालमें हाथ, पैर, होठ आदिके फटजानेपर इसका तेल मलना चाहिये (११) मरहम बनानेके काममें इसका तेल बहुत आताहै (१२) कोकनकी छाल ग्राहीहै। इसके कोमल पत्तोंको केलेके पत्तेमें लपेट पुटपाक बना उसमें से निकाल रसे दूधमें पीसके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१३) इसके फलके रसके शर्बत से ज्वरकी तृषा मिटतीहै (१४) इस शर्बत के पिलानेसे शीतादि रोग मिटताहै (१५) इसके सरा होले तेलको थोडे ओटाये हुए चांवलोंमें मिलाके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१६) इसकी मात्रा दिनमें एक बेर देना चाहिये। इसका अंजनी रंगका फल खुराकके काममें आताहै ॥

संख्या (१४)

(सं०) कोकिलाक्षः, काकेक्षुः, इक्षुरः, क्षुरक ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तालमखाणा	तालमखाना	एखरो	तालिमखाना	कुलेखाडा	तालमखाना	गोलिमिडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नीरमुळ्ळि	कोळावलिके			Hygrophila spinosa. Astera antha longifolia.	Long leaved barbaria.

स्थान—ताल मखानेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें हिमालयसे सीलोन तक सब ठौर होतेहैं।

पहिचान—इसके क्षुप तलैया, नाडी आदि वर्षातके जलाशयोंमें उगतेहैं इनके कांटे लगतेहै और पत्ते लम्बे होतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके सब अंग औषधिके प्रयोगमें आतेहैं। ये ठण्डे और बलकारकहैं (२) यकृत सम्बन्धी रोग, जलन्धर, गठिया और वीर्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंके रोगोंमें इसका पंचांग, भस्म और बीज काममें आतेहैं और पुरुषार्थ पैदा करतेहैं (३) इसकी जडका सवा छः तोले आधे दिनमें दो बेर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके जलन्धर मिटताहै (४) इसके बीज

रपराहट मिटानेवाले और मूत्रवर्द्धकहै, ये बलवर्द्धक होनेके कारण वीर्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंके रोगोंको मिटातेहै (५) इसकी जड ठण्ढी कड़वी ल और मूत्रवर्द्धकहै (६) इसके पत्ते ठंढे और मूत्रवर्द्धकहैं (७) इसके रतीसे ७॥ मासेतक बीजोंका हिम या फांट बनाके पिलाना चाहिये (८) सके २॥ तोले पंचांगको २॥ पाव जलमें ओटा ७ छटाक पानी रखके उसमें ५ तोले तक नित्य पिलाना चाहिये (६) इसकी जडका प्रयोगभी पंचाङ्ग ी रीति पर करना चाहिये (१०) इसके पत्तोंको ओटते हुए पानीमें रात्रीके समय भिगोकर प्रातःकाल छानके जलन्धरवालेको पिलानेसे मूत्रका विरेच ागके जलन्धर मिट जाताहै (११) इसकी २॥ तोले ताजी जड़को २५ तोले लमें बन्ध बरतनमें पाव घंटेतक ओटा छानके उसमेंसे २॥ से ५ तोले तक लन्धरवालेको पिलाना चाहिये, जो आवश्यकता समझें तो मूत्रवर्द्धक औ- धियोंको इसके साथमें ओटाकर पिलाना विशेष गुणकारीहै (१२) पथरी मेटानेके लिये इसकी जडका ६।-६। तोले क्वाथ दिनमें दोवेर पिलाना चाहिये।

संख्या (१५६)

(सं०) कोद्रवः, कोरदूषः।

ारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोदूं	कोदो	कोदरा	कोद्रव, हरक	कदोधान	कोदों	बरगलु

्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	हरक			Paspalum scrobiculatum	Kodra. Punctured paspalum

स्थान—हिन्दुस्थानके वहुतसे भागोंमें वर्षाऋतुमें इसकी खेती होतीहै ।

कोदों कई भातिके होतेहैं उनमें दो मुख्यहै एक सविष और दूसरा निर्विष १०० तोले कोदोंमें ७७। तोले मैदा और २ तोले तेल होताहै। कटी हुई कोदों खेतमें पडी रहनेके कारण जो वर्षाके पानीसे भीग जातीहै उसमें विष अधिक होजाताहै, जो नहीं भीगतीहै उसमें विष कम रहताहै।

इस अन्नको बहुतसे आदमी खुराकके लिये काममें लातेहैं परन्तु यह अन्न नैरोग्यतादायक नहींहै इसके खानेसे किसी २ को सन्निपातज्वर होजाताहै और किसी २ को वमन होने लगतेहैं यदि इस अन्न का शोधन भली-भाँति नहीं किया जावे तो विष जैसा प्रभाव प्रगट करताहै।

इसके साथ इसी जैसा एक घास पैदा होताहै जिसको मैजिना या मैजिनी कहतेहैं वह आसानीसे पहिचानमें नहीं आसकताहै उसी का यह जहरीला असरहै इसमें यह दोष नहींहै इसके दोनोंके सिवाय हरेक भागमें विषहै परन्तु भुसी और छिलकेमें अधिकहै इस अन्नको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि गोबरका पानी करके उसमें कोदोंको तीन चार घंटे तथा अधिक समय तक भिगोदेवें भिगोनेसे जो भारी और निर्विश अन्न होगा वह डूब जायगा और लघु (हल्का) विषैल अन्न तैरता रहेगा, इस प्रकार से निर्विष अन्नको निकालकर सूर्यकी धूप (घाम) में सुखा लेवें, इस अन्नकी जबतक निर्विष होजानेकी पूरा निश्चय नहीं हो तबतक उक्त क्रिया करते रहना चाहिये इस क्रियासे भी पूरा विष नहीं निकलताहै परन्तु यह अन्न पुराना पड़नेसे अपने आप विषरहित होजाताहै। इसको काममें लानेके लिये मिट्टीकी चक्की में दलतेहैं पीछे इसको फटककर साफ करनेसे काममें लाने योग्य होजाताहै अन्न मट्ठेके साथ खानेसे निर्विष होजाताहै कोदोंके विषसे ये लक्षण होतेहैं जैसे अचेतपन, प्रलाप, काम करनेवाले मात्र पट्ठोंका वेगसे कापना, आखकी पुतलीका फैलना, नाड़ीका निर्बल होना, बहुत पसीना होनेसे शरीर ठंढा पड जाना, भोजनके निगलने में कठिनता होना अर्थात् कंठ मिलजाना इत्यादि।

प्रयोग—(१) कोदोंका विष उतारनेके लिये उड़द के आटेका लपटा या केलेके पत्तेकी डंडीका रस, या जामफलका खट्टारस या गुड़ मिला हुआ कोहलेका रस पिलाना चाहिये या हार सिंगारके पत्ते खिलाने और चुसाने चाहिये।

संख्या (१६०)

(सं०) कोलकंदः क्रमिघ्नः सुकुटः वस्त्रपञ्जलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोलीकादा	कोलिकादा	कोलकंद	कोलकादा	शुयारआलु	पाणकंदा	नक्कावुल्लिगड्डा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नरिवंगीय	अडवीइरुल्लि	इस्कील	प्याजदस्ती	Urginea Indica. Scilla Indica.	Indian squill.

स्थान—कोली कांदा हिन्दुस्थानमें बहुधा रेतीली जमीनमें और समुद्रके किनारे सब ठौर होताहै ।

प्रयोग—(१) कोलीकांदा—चांदीकी भस्म करनेमें काम आता है (२) हाथ पैरोंका निश्चेष्ट और शून्यपन सूखी खांसी, मंदाग्नि, मूत्रकी कमी, कष्टसे मासिक धर्म, पेटके यन्त्रोंकी रुकावट, श्वास, जलंधर, गठिया, पथरी, मूत्र सम्बन्धी रोग, कोढ और त्वचाके रोग इन सब रोगोंमें कोलीकांदेका प्रयोग किया जाताहै (३) नींबू जितने बडे कोलीकांदेको ५ से १० रत्ती तक मात्रा देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (४) कोलीकांदेको कूट पुल्टिस बनाके बांधनेसे गठिया और चोटकी सूजनकी पीड़ा मिटती है (५) ताजे कोली कांदेके रसको कपडेके पाण लगातेहैं (६) यह बडा होजानेसे गुणहीन हो जाताहै और जल, पृथ्वी और ऋतुके कारणसे इसके गुणभी न्यूनाधिक होजाते है।

संख्या (१६१)

(सं०) कोशातकी, धामार्गवः, धाराफला, दीर्घफला।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तोरू	तोरई, तुरई	तुरिया	दोडकी	घोषालता	तोरि, तुरिया	बीरी

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पींर्क	हीरे			Luffa acutangula. Cucumis acutangulus.	Acuteangled cucumber

स्थान—यह हिन्दुस्थानके संयुक्त प्रदेश, सिकाम, आसाम, बंगाल, राजपूताना आदि बहुतसे भागोंमें बोई जातीहै।

पहिचान—इसकी बेल होतीहै इसके पत्ते नीचेसे खरदरे होतेहैं इसके पुष्प हलके पीले रंगके होतेहैं। इसका फल प्रायः एक हाथ लम्बा और उसके ऊपर तिखूंटी तीखी धारे होतीहैं यह चैत्रसे असाढ तक बोई जाती है।

फूलने फलने का समय—यह चौमासेमें फूलती फलती है।

प्रयोग—(१) इसके बीज कडवी तोरूके बीजोंकी अपेक्षा वामक और रेचक कम होतेहैं (२) इसके बीजोंको पीस गर्म कर लेप करनेसे तिल्लीकी सूजन मिटतीहै (३) इसका लेप करनेसे रक्तार्श और कोढ मिटता है (४) इसके ताजे पत्तोंका स्वरस बच्चोंकी आंखोंमें डालनेसे पपोटोंकी फुन्सियां मिटतीहैं (५) रातके समय गीडोंका अधिक आना बन्द होजाता है, जिससे आंखें नहीं चिपतीहैं (६) इसका शाक बहुत अच्छा होताहै।

संख्या (१६२)

॥ (सं०) कटुकोशातकी

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कड़वी तोरू	कडवी तुरई	कडवातुरीयां	कडू दोडकी	तितपल्ता	कडवी तोरी	चेतिबीरा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कशप्पुपीरक	कैहीरे	[illegible]	[illegible]	Luffa amara	(bitter [illegible])

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर मिलतीहै।

प्रयोग—(१) इसका फल तीव्र रेचक और वामकहै (२) कच्ची कडवी तोरूको सेक उसका रस निकालके कनपटीपर लगानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (३) इसके पके बीजोंके चूर्णकी फकी या क्वाथ करके पिलानेसे वमन और विरेचन होताहै (४) इसकी बेल और पत्ते—कडवे, मूत्र और बलवर्द्धक होतेहैं (५) इसके पत्तोंको पीस कर लगानेसे चौपाये के घाव भर जातेहैं

६) कड़वी तोरूंकी गिरको पानीमें पीस-कर पिलानेसे वमन और बिरेचन होके कुत्तेका विष उतर जाताहै (७) इसके सूखे फलके चूर्णको सुंघानेसे कमलिया मिटताहै (८) फलके स्वरसको लगानेसे कई प्रकारके विषैले जानवरोंका विष उतर जाताहै (९) इसकी और जमूंदकी जड़ सारिवा का दूध और जीरेको शकरके साथ देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१०) इसके बीज आमातिसार में दिये जातेहैं (११) इसके पके और सूखे बीज वामकहैं (१२) इसके बीजोंके १० रतीसे २। मासे तक चूर्णकी फकी देनेसे ठीक विरेचन हो जाताहै परंतु किसी २ को एकभी दस्त नहीं लगताहै और किसी २ को घंटों तक वमन हुआ करतीहै (१३) एक साबित मझोली कड़वी तोरूंको कूट रात भर पानीमें भिगो प्रातःकाल मल छानकर पिलाने से विरेच होताहै परंतु किसीको नहीं भी होताहै और पेटमें केवल मरोड़ी ही होतीहै (१४) इसके बीजोंके छिलके या सबमें केवल बीजकी गिरी अधिक वामकहै (१५) बीजोंकी गिर को मीठे तेलमें घिसकर अंजन करने से आंखका फूला दूर होताहै (१५) इसके बीजोंकी १। मासेसे २ मासे तक मींगीकी मात्रा देनेसे वमन होतीहै और ५ से आठ रती तक देनेसे खाली होवड होतीहै २॥ से ५ रती तक देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (१६) इसके स्वरस में पीपल मिलाकर नस्य देनेसे गलगंड आदि रोग मिटतेहैं (१७) इसका और हल्दीका लेप करनेसे अर्श मिटतेहैं (१८) इसके चूर्णको गुदापर मलनेसे अर्श खिर जातेहैं (१९) इसके क्काथमें मधु और घी मिलाकर पिलानेसे वमन होके विष उतरताहै।

संख्या (१६३)

(सं०) हस्तिकोपातकी, महाकोपातकी, महाफला, ऐभी।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
घीयातोरूं	घीयातोरई	गलकां	मोटीघोसाली	धुन्दुल	घीयातोरी	मागेबीरा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पेयमिरट्टी	कहिहिरपहीरे			Luffa aegyptiaca pentandra.	

स्थान—यीया तोरूं हिन्दुस्थानमें हर ठौर बोई जातीहै इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) इसके बीज वामक और रेचकहै (२) यह स्निग्ध, सारक और मीठीहै, वादी बढ़ातीहै और घावको भरतीहै (३) इसका अधिक सेवन करनेसे अफारा और कीड़े पैदा होजातेहैं, यह इसके फलोंका शाक बनातेहैं ।

संख्या (१६४)

(सं०) क्षीरिणी, राजादनः, फलाध्यक्षः, प्रियदर्शनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खिरणी	खिरनी	रायणी	खिरणी	खिरनी	खिरणी	पालमानु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पळ पालमरम्	हालेमर			Mimusop hexandra M. Indica	

खिरनी दो प्रकारकी होतीहै एकका विवरण यहां लिखाहै दूसरीको आगे लिखेंगे ।

स्थान—खिरनीके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थानमें पचमारीके पहाड़ोंतक, गोदावरीके उत्तरमें और हिन्दुस्थानके पश्चिमोत्तर भाग और राजपूताना आदि देशोंमें बोये जातेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ५०—६० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ सीधी होतीहै, छाल कुछ भूरी या कुछ काले रंगकी और खुरदरी होतीहै, इसके फैलती हुई बहुतसी शाखें लगतीहैं, गोल, नोकदार और साफ पत्ते लगतेहैं वे पत्तझड़में नहीं गिरतेहैं । इसके कुछ सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं । इसका पका हुआ फल पीले रंगका होताहै, उसमें एक बीज निकलताहै उसका आकार नीमकी निंबोली जैसा होताहै, परन्तु उससे कुछ लम्बा और मोटा होताहै

फूलने फलनेका समय—कार्त्तिकसे पोष तक इसके पुष्प लगतेहैं, जेठ अषाढ तक फल पकतेहैं इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै इसके बीजोंमें

से तेल निकाला जाताहै उसको धोके बाजे लोग घीके बदलेमें बेच देतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी छालमें मोरसलीकी छाल जैसे गुणहै। इसके दूधिया रसमें किरमालेके पत्ते और पुन्नागके बीजोंको पीसके फोडों पर लगाते हैं (२) इस वृक्ष के ऊपर जो बंदाक का वृक्ष उग जाताहै उसके पत्तोंको गर्मकर अर्क निकाल उसमें पीपल डालके पिलानेसे बाइटे मिटतेहैं इसके फल फलाहार और खानेके काममें आतेहैं, और गरीब लोग गर्मीके दिनोंमें बहुत खाया करतेहैं।

Latin Mimusops Kauki M Bilota

Eng. the obtuse leaved mimusops

दूसरीका विवरण यह हैः—

स्थान—खिरनीके वृक्ष होशियारपुर, लाहौर, मुलतान गूजरांवाला आदि बहुतसी ठौर होतेहैं।

प्रयोग—(३) इसके बीजोंको पीसके दुखतीहुई आंखपर लेप करतेहैं (४) इसके फल खानेसे बल बढताहै (५) ज्वर छुडानेके लिये खिरणी खिलाना चाहिये (६) खिरणी उष्ण और स्निग्धहै (७) कुष्ठ, तृषा और प्रलाप रोगमें इसका प्रयोग किया जाताहै (८) तिल्ली आदि यंत्रोंके बढावके बिगाडको सुधारनेके लिये खिरनीका सेवन करना चाहिये (९) यह कृमिनाशकहै (१०) इसकी जड और छाल ग्राहीहै (११) बच्चोंका अतिसार मिटानेके लिये छालको पानीमें पीस मधु मिलाके पिलाना चाहिये (१२) इसके पत्तोंको तिल्लीके तेलमें औटा उसमें इसकी छालको पीसकर मर्दन करनेसे हाथ पैरोंका ठण्ढापन मिटताहै जो एक प्रकारके जलवरसे होताहै (१३) आंख और कानके पित्त शोथ को मिटानेके लिये इसका दूधिया रस लगाना चाहिये (१४) इसके पत्ते, आंबाहलदी और सोंठका पुलटिस बांधनेसे गांठ बिखरजातीहै (१५) इसकी जडको पानीमें पीस, मधु मिलाके पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (१६) इसका खट्टा फल खानेसे भूख बढतीहै।

संख्या (१६५)

नाम—(सं०) खटी, खटिका, खटिनी, श्वेतधातुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खड़ी	खड़िया	खडी	खडू	खडिमाटी	खड़ामिट्टी	बलपमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नळाकल	बळावु			Creta.	Chalk

गुण—खड़ी—मीठी, कडवी, शीतल और लेखनहै. व्रणदोष, पित्त, दाह, कफ, रक्तविकार, नेत्र रोग, विष और शोष को मिटातीहै।

संख्या (१६६)

(सं०) खादिर, गायत्री, दंतधावनः, याज्ञिकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खैर	खैर	खेर	खैर	खदिर	खैर	चंड्र

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
काशुकट्टि	कागालिमर		कत्था	Acacia catechu Mimosa catechuoides	Catechu Cutch Nigrum

स्थान—खैरके वृक्ष मध्य और पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान गोंड अवध, अपर गोदावरी, छुटिया नागपुर, बम्बई अहाता, अहमदाबाद, भडोंच, पांच महल, सूरत, बरोदा, मद्रास अहाता, मैसोर और राजपूतानेके जगलोंमें होतेहै।

पहिचान—इसका वृक्ष ३०—४० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेटड़ छोटी और बहुत सीधी नहीं होतीहै उसकी गुलाई ४ से ६ फुट और ऊंचाई १० फुट तक होतीहै। इसकी डालिया बहुत मिलवा और कांटेदार होतीहैं। इसकी छाल आध पौन इंच मोटी और कुछ सफेद भूरे रगकी होतीहै पुराने वृक्षकी छाल प्रायः काली होजातीहै। इसकी छोटी डालिया बैंजनी रगकी

और साफ होतीहै, । इनकी फलियां (पातडिया) दो तीन इंच लम्बी, आध या पौन इंच चौडी, पतली, भूरी और चमकदार होतीहै, जिनमें ३ से १० तक बीज निकलतेहैं । माघ फागुनमें इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं और फागुन चैतमें नवीन पत्ते निकल आतेहैं ।

फूलने फलने का समय—वैशाखसे अषाढ तक इसके पुष्प लगतेहैं वसंत ऋतुमें फलियां लगतीहैं, वे बहुत समय तक वृक्ष परही लगी रहतीहैं । इसके एक प्रकारका कुछ पीला गोंद लगताहै वह स्वादमें मीठा पानीमें गलनेवाला और बहुत चेपदार होताहै । इसको बबूलके गोंदमें बेचदेतेहैं । इसके गुण भी उससे मिलते हुएही हैं ।

प्रयोग—(१) इसका सत बडा ग्राहीहै (२) गुदाकी भिल्ली ढीली पड़ जानेसे जो दस्तकी रुकावट न रहे, तथा उसके साथ थोडा ज्वरभी होवेतो इसके ३॥ मासे सतको मधुके साथ चटाना चाहिये (३) इसका डेढ मासे सत चटानेसे आमातिसार मिटताहै (४) इसको चूंसनेसे मसूडोंके दुःसाध्य रोग मिटतेहैं (५) चिरायतेके अर्कके साथ इसकी फकी लेनेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (६) इसको मुहमें रखनेसे लटकाहुआ काग सिमट जाताहै या पीछा ऊपरको उठ जाताहै और इसके लटकजानेसे जो खासी का ठसका हो जाताहै वह भी बन्द होजाताहै (७) इसको तेलमें चुपड के मुखमें रखनेसे बोलीका भारीपन मिटताहै (८) इसको पचगुने पानीमें ओटा आठवा भाग बाकी रख कर उसमें जायफल, कपूर और सुपारीको पीस गोली बनाके मुखमें रखनेसे मुखपाक आदि समस्त रोग मिटतेहैं (९) इसको पानीमें गलाके पिचकारी देनेसे श्वेत और रक्तप्रदर मिटतेहैं (१०) इसकी पिचकारी देनेसे नया और पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) बालक पैदा होनेके पीछे प्रमाणसे अधिक रुधिर बहनेको रोकनेके लिये इसकी पिचकारी देनी चाहिये (१२) इसके क्वाथसे फोडोंको धोतेहैं (१३) इसके क्वाथका लेप करनेसे शोथ मिटतीहै (१४) इसका लेप बनाके, खुजली, उपदंश और अग्निदग्ध पर लगातेहैं (१५) पुराने और जिसमेंसे पूय बहतीहो उस फोडे पर मोमके साथ इसका लेप बनाके लगाना चाहिये (१७) बेर बेर भरनेवाले फोडे पर इसके लेपमें मोरथूथा मिलाके लगाना चाहिये (१८)

मोम और अफीमके साथ इसका प्रलेप बनाके लगाने से कांचका निकलना बन्ध हो जाताहै, (१६) इस लेपके लगानेसे लटकते हुए मस्से सिमट जातेहैं (२०) घाव पर इसका चूर्ण बुरकानेसे रुधिरका बहना बन्ध हो जाताहै (२१) उपदंशकी टांकी पर इसका चूर्ण बुरकातेहैं (२२) स्तनकी बीटलीके घाव पर इसके चूर्णका बुरकाना लाभकारीहै (२३) जो मनुष्य मानसिक रोगसे नित्य उदास रहता हो, उसका चित्त प्रसन्न करनेके लिये इसको उष्ण और सुगंधित चरपरे पदार्थोंके साथ देना चाहिये (२४) आंखके श्वेत भागमें जो पित्त शोथ हो जावे तो उसको मिटानेके लिये पानीमें पीसके ठण्डा लेप करना चाहिये (२५) नीलाथूथा और अंडेकी जरदीके साथ इसका प्रलेप बनाकर लगानेसे फैलनेवाला घाव मिटजाताहै (२६) स्त्रियोंके बालक होनेके पीछे उनके दूध और बल बढ़ानेके लिये खैरसार और बोल मिलाके देतेहैं (२७) इसकी अधिक मात्रा खानेसे नपुंसकता पैदा होतीहै (२८) इसकी थोडी मात्रासे पुरुषार्थ बढताहै (२९) जायफल और दालचीनीके साथ इसकी गोली बनाके खिलानेसे अतिसार मिटताहै और बल बढताहै (३०) कामकी बाधाको कम करनेके लिये ५ रतीसे १। मासे तक कत्थेको पानीमें गलाके स्त्री या पुरुषको पिलाना चाहिये (३१) सेकी हुई सुपारी और कत्थेके चूर्णका मंजन करनेसे फूले हुए मसूडे बैठ जातेहैं परन्तु कई दिनों तक लगातार मंजन करते रहनेसे दांत काले पड जातेहैं (३२) मसूडे और दांतों को दृढ करनेके लिये कत्था, किरणच और कसीसके चूर्णका मंजन करना चाहिये (३३) २ रती खैरसार, हल्दी और मिश्रीके चूर्णकी फकी लेनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (३४) कत्थेको पीसके बुरकानेसे कानसे पूय बहना बंध हो-जाताहै (३५) इसको घीमें मिलाके लगानेसे गर्मीके फोडे, फुन्सी मिटतेहैं (३६) खैरके काथसे स्नान करना और उसका बफारा लेना त्वचाके रोगोंमें बहुत उपकारीहै (३७) खैरके कोयले सुपारीकी भस्म और बादामके छिलकोंकी भस्मका मंजन बनाके मलनेसे दात दृढ होजातेहैं (३८) कत्थे और गूदीकी छालको मुखमें रखनेसे मुखपाक मिटताहै (३९) खैरके काथको पिलानेसे या लेप, उबटना और भोजनमें उपयोग करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (४०) इसकी छाल, आवला और बावचीका काथ करके पिलानेसे सफेद

कुष्ठ मिटताहै (४१) बालक होनेके कई सप्ताह पहिलेसे खैरके काथसे स्तनोंकी बीटलियोंको धोतेरहनेसे बालक होनेके पीछे उनपर घाव नहीं पडतेहैं (४२) २-२ तोले कत्था जलमें पीसके पिलानेसे संखियेका विष उतरताहै (४३) कत्था मुंहमें रखनेसे जीभके चीरे मिटतेहैं (४४) खैर और विजैसारके काथको ठंढा कर पिलानेसे विस्फोटक मिटताहै (४५) खैर और लेसवाके काथसे गुदाको धोनेसे उसके व्रण मिटतेहैं (४६) सफेद कत्था और कलमीशोरा बराबर ले महीन पीसके बुरकानेसे मुखके छाले मिटतेहैं (४७) त्रिफला और कत्थेको औटाकर कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (४८) कत्था और बीलगिर बराबर ले चूर्ण बनाके फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै।

संख्या (१६७)

(सं०) विट्खदिरः, अरिमेदक, कालस्कंधः, गोरटः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	दुर्गन्धिखेर	गन्धिलोखैर	गंधीहिंवर	दुर्गंधखदिर	दुर्गंधिखैर	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Acacia Farnesiana Mimosa F	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर उगतेहैं।

पहिचान—यह एक प्रकारका झाड होताहै, इसके सीधे कांटे लगतेहैं। इसकी एक सींकपर १० से २० जोडे पत्तोंके लगतेहैं। इसके मीठी सुगंधवाले गहरे पीले पुष्प लगतेहैं और दो तीन इंच लम्बी फलियां लगतीहैं।

फूलने फलनेका समय—माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२) जिन २ रोगोंके लिये बबूलकी छाल काममें आतीहै उनमें इसकी छाल भी काममें आतीहै (३) इसके गोंदको धातु पुष्ट करनेवाली औषधियोंमें मिलाके लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (४) इसकी छालको दसगुने जलमें औटा छान कर

कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (५) इसकी छालके काथसे फोड़े फुन्सियों को धोनेसे वे जल्दी मिटजातेहै (६) इसके ७॥ मासे कोमल पत्तोंको पीस गोली बनाके खिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (७) इस वृक्षमें यह गुणहै कि इसकेपास सर्प और ऊंदरे नहीं रहतेहैं। इसके बहुतसा गोंद लगताहै उसमें बंबूलके गोंदसे भी अधिक गुणहैं और उसको बंबूलके गोंदकी ठौर काममें लातेहै। इसकी छाल और फलियोंमें से रंग निकाला जाताहै। भभके आदि यंत्रमें खैंचा हुआ इसके पुष्पोंका अर्क बहुत सुगंध युक्त होताहै।

संख्या (१६८)

(सं०) खर्जूरी खरस्कंधा, दुष्प्रधर्षा, दुरारोहा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खिजूर	खजूर	खजूर	शिंदी, खजूरी	खेजुर	खजूर	खर्जूरमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		तमर	खुरमा	Phoenix Sylvestris	The wild date or Date-sugar palm

स्थान— इसके वृक्ष बंगाल, बिहार, कारोमण्डलकी तीर, गुजरात, रुहेलखण्ड और, मैसोर आदि बहुतसे देशोंमें होतेहै।

पहिचान—इसके वृक्षकी ऊंचाई ४०–५० फुट तक होतीहै। इसके २ से ६ फुट तक लम्बी डालिया लगतीहै। इसका फल हरा और एक इंच लम्बा होताहै वह पक जानेपर कुछ लाल पीले रंगका होजाताहै उसकी गिरका स्वाद कुछ मीठा और कसेला होताहै इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलनेका समय—इसके चैत वैशाखमें पुष्प लगतेहै और भादवे आसोजमें फल पकतेहै।

प्रयोग—(१) इसके फलको बादाम बिहीदाने पिस्ते गर्म मसाले (सोंठ आदि) और शकरके साथमें खिलानेसे पुष्टाई पैदा करताहै (२) इसकी गींगी और आंधीझाड़ेकी जड़को नागरबेलके पानमें रखके खानेसे शीत

ज्वर छूटताहै (३) इस वृत्तका रस जिसको ताड़ी कहतेहै, वह ठंढीहै (४) इसके बीचका कोमल भाग पुराने मूत्रकृच्छ्रको मिटाताहै (५) इसकी जड से या जडकी राख से दांतुन करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (६) इसकी जडके काथ से कुल्ले करनेसे दांतोंका दर्द मिटताहै (७) इसका पाक बनाके खानेसे स्नायुजालकी शक्ती बढतीहै (८) इसके मदसे शर्करा बनाई जातीहै जो बंगाल आदि देशोंमें बहुत खपतीहैं ।

संख्या (१६९)

(सं०) पिण्डखर्जूरी, द्वीप्या, स्थूलपिण्डा, फलपुष्पा, हयभक्षा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पिण्डखिजूर	पिण्डखजूर	खजूरी	पेंडखजूर	पिण्डिखजुर	पिण्डखजूर	खर्जूरपण्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पेरीच्चपळं	खर्जूराहण्णु			Phoenix dactylifera.	The Edible date

स्थान—पिण्डखजूर के वृक्ष–पंजाब, सिन्ध, गंगाका अंतरवेद, बुंदेलखण्ड, दक्षिण और गुजरातमें बहुत होतेहैं, बंगालकी पृथ्वी इस वृक्षको नहीं मानतीहै ।

पहिचान—इसके वृक्ष १०० से १२० फुट तक ऊचे बढ़ जातेहैं । इसका फल पकने पर १ से ३ इंच लम्बा बहुधा कुछ लाल या कुछ पीले भूरे रंगका होताहै, इसकी गिर मीठी होतीहै ।

फूलने फलने का समय—फागुन और चैतमें इसके पुष्प लगतेहैं भादवे और आसोज में इसके फल पकतेहैं । स्त्री वृक्षोंकी अपेक्षा इसके पुरुष वृक्ष कम मिलतेहैं इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै जो औषधीके काममें आताहै ।

प्रयोग—(१) इसके गोंदकी फकी देनेसें अतिसार मिटताहै (२) इसके बीजोंको जलमें पीसके पपोटां पर लेप करनेसे आंखका मैल और गुदलापन मिटताहै (३) इसका ताजा रस ठंढा और सारकहै (४) गन्नेकी शक्करकी

अपेक्षा इसकी शक्कर बहुत नैरोग्य बढानेवाली और चित्त प्रसन्न करनेवालीहै (५) आखके गोले और सफेद भागकी पित्त शोथ मिटानेके लिये आख पर इसके बीजोंका लेप करतेहै (६) मूत्र और वीर्य्य सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इसके गोंदका प्रयोग बहुत अच्छाहै (७) पिंडखजूरको नित्य खानेसे मसूडोंमें घाव हो जातेहैं (८) इसके ताजे रसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (९) इसके फलके प्रयोगसे श्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (१०) इसके फलोंका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (११) शरीरको पुष्ट करनेके लिये इसके फलोंका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१२) छुहारोंको दूधमें ओटाके पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै और पसीनालानेके लिये भी यह प्रयोग बहुत अच्छाहै (१३) छुहारे, शतावर और मिश्रीको ओटाकर पीनेसे सूखी खासी मिटतीहै (१४) छुहारेमें अहिफेन और जायफलके चूर्णको भर पुटपाक में पका, गोलियां बना, एक २ रती खिलानेसे अतिसार मिटताहै (१५) छुहारेकी गुठली को मुंहमें रखनेसे अथवा इसको पानीमें घिसके पीनेसे तृषा मिटतीहै (१६) छुहारेकी गुठलीके चूर्णकी जलके साथ फकी लेनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१७) छुहारे और सोंठको पानमें रखके खिलानेसे श्वास रोग मिटताहै (१८) छुहारेको नीबूके रसमें भिगो उसमें नमक और उष्ण वेसवार (गर्म मसाला) मिला अचार बनाके खानेसे अरुचि मिटतीहै, इसके अचारको खटमीठा बनानेके लिये इसमें बूरा या बूरेकी चासनी मिलातेहै यह भी बहुत रोचक होताहै ।

— oo —

संख्या (१७०)

(सं०) गण्डकः, खड्गः, वज्रचर्मा, तुङ्गमुखः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गेंडो	गेंडा		गांडा	गाण्डार खाग		अग्निवेंदपाकु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नेरुप्पु		जिरीस	करकदन	Rhinoceros unicornis II Indicus	The great one horned Rhinoceros

स्थान—गेंडे तीन प्रकारके होतेहै। उनमेंसे जिस जातिके गेंडेके प्रयोग यहां लिखेहै वे बहुधा आसामकी घाटीमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) गेंडेके सींगके प्यालोंको विषकी परीक्षा करनेके लिये काममें लातेहै (२) इसके सींगकी धूंनी देनेसे अर्श मिटतेहैं (३) बालक होनेके समयमें जिस स्त्रीकी पीड बन्ध होजातीहै तो उसकी भगके इसके सींग की धूंनी देनेसे पीड पीछी चलने लगजातीहै और बच्चा होनेमें दुःख नहीं होताहै ४) इसके सींगके प्यालेमें पानी भरके पीनेसे अर्श मिटताहै (५) गेंडेकेसींग, दांत, पंजे, मांस, चर्म, रुधिर, विष्टा और मूत्र ये सब औषधिके प्रयोगमें आतेहै, इसके सींगके जितने प्रयोगहै उन सबमें काले नोकदार सींगें काममें लाने चाहियें क्योंकि काले नोकदार सींग सबस अच्छे होतेहैं।

—:०:—

संख्या (१७१)

(सं०) गंधकः, गंधपाषाण, गंधाश्मा, पूतिगंधः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गंधक	गंधक	गंधक	गंधक	गंधक	गंधक	गंधकमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
गंधकं	गन्धक	कबरीत्	गोगिर्द	Sulphur	Sulphur Brimstone

स्थान—गंधक ज्वालामुखी पहाडोंमें या उनके आसपासके पहाड़ोंमें निकलताहै। यह बहुधा लोह और तांबेमें मिला हुआ रहताहै।

पहिचान—यह-यहा बहुधा दो प्रकारका मिलताहै। एक आमलासार-जो कुछ हरास लिये हुए पीले रंगका चमकदार होताहै। दूसरा-मूठिया जिसकी ढली हुई गोल रूलें होतीहैं। असली गंधकमें सुगंध और स्वाद नहीं होताहै, यह जल और मदिरामें नहीं गलताहै घी और तेलमे पिघल जाताहै, और शुद्ध गंधकको जलानेसे पीछे कुछ नहीं रहताहै।

गंधकको शुद्ध करनेकी पहिली रीति—एक चौड़े मुहके वरतनमें गायका दूध भर उसके मुंह पर मलमलका कपडा बांधकर उसपर दरदरा पिसा हुआ गंधक बिछा, उस बरतन की कोरपर एक अंगुल मोटी आटेकी बाड लगा उस पर एक लोहेका तवा जमा, उसकी खोमें फबीकर उस तवे पर आंयलोंकी आग रख देवे और ध्यानसे देखता रहे कि वह खोमें खुलकर गंधकका धुआं न निकलने जाय, अगर कहींसे निकलने लगे उसका तुरंत बन्द कर देवे, जिस अग्निसे गंधक पिघलकर कपडेमें होके दूधमें गिरजावे तब उसको खोमें खोलकर गंधकको दूधमेंसे निकालके काममें लाना चाहिये और दही जमाके बिलोकर या दही जमाके बिलोकर घी निकाल लेना चाहिये इस घीके लगानेसे उपदंशकी टांकियां मिटतीहैं। [illegible]

दूसरी रीति—पीतल या लोहेके पात्रमें गंधकसे दुगुना घी ले अग्निपर चढा उसमें गंधक डालकर मंद आंचा देवे जब वह गंधक पिघल आवे तब उसको गायके दूधमें छान देवे, जब गंधक दूधमें जम जावे तब उसको निकाल जलमें २—३ बेर धोडाले उसका सब घी निकाल देवे और जब उस गंधकमें घी न रहे तब उसको सुखा लेवे। इसमें यह प्रयोजन है कि जो गंधकमें कुछ घी रह जावे तो कुछ दिनों पीछे उसमें मैलोंका गंधा भी आने लगता है।

प्रयोग—(१) अशुद्ध गंधकके सेवनसे कुष्ठ, ताप, भ्रम और पित्तके रोग पैदा होतेहैं, बल, वीर्य, रूप और सुखका नाश होताहै इसलिये अशुद्ध गंधकको काममें नहीं लाना चाहिये (२) शुद्ध गंधक अत्यन्त उष्ण अग्नि और वीर्यवर्द्धक, कास, श्वास, क्षय, वृद्धावस्था, कंडू, कुष्ठ, नेत्ररोग, विसर्प, दद्रु, विष और कृमि रोगको मिटाताहै (३) दो मासतक शुद्ध गंधकको बिना नमकके आटेकी बाटीमें रख पकाकरके खिलानेसे पाम और खुजली मिटती है (४) गंधकके चार रत्ती फूल खिलानेसे बद्ध कोष्ठ मिटताहै (५) गंधक को सरसोंके तेलमें पीस मर्दन करनेसे फोडे फुन्सी मिटतेहैं (६) इसकी थोडी मात्रा देनेसे पसीना आताहै (७) गंधकको पीस घीमें मिलाके लगानेसे व्रण शुद्ध होके भर जाताहै (८) गंधकको विसखपरेके उसमें खरलकर एक चावल प्रमाण नित्य १५ दिन तक सेवनेसे भूख, वीर्य और बल बढताहै (१०) गंधक पीसके लगानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (११)

गंधक और लसणके जलानेसे टांटिया उड़ जातेहै (१२) गंधकको नींबूके रसमें मिलाके पिलाने से विसूचिका मिटतीहै (१३) चार मासे गंधकको ८ मासे गुड़के साथ खिलाकर ऊपर दूध पिलानेसे २० प्रकारके प्रमेह और पिटिका मिट जातीहै (१४) गंधक और यवक्षारको पानी या कड़वे तेलमें पीसके लेप करनेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै (१५) गंधकके खानेसे और इसको कड़वे तेल में पीसके लेप करनेसे पामा और खुजली मिट जातीहै (१६) ४ मासे गंधक को कड़वे तेलमें मिलाके पिलाने और लेप करनेसे दूध पीनेवालेकी पांव या खुजली शीघ्र मिट जातीहै (१७) इसको गोमूत्रमें पीसके लेप करनेसे कोढ मिटताहै (१८) गंधकको सिरकेमें पीस उसमें रूई भिगोके कीड़े खाये हुए दांतमें रखनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१९) एक भाग गंधक और दो भाग मिश्रीको सहत में मिलाकर दो मासे प्रमाण पानमें रखके खानेसे श्वास मिटताहै (२०) इसको पीसकर भिड़के दंश पर मलनेसे उसका विष उतरताहै (२१) गंधकको आकके दूधमें दो दिन तक खरल कर टिकिया बना छायामें सुखा किसी बरतन में जलभर उसमें टिकियाको डाल कर चार पहरतक मंदाग्निसे ओटावे । जब तेल पानी पर तैर आवे तब उसको अंगुलीसे उतारके धर रक्खे इस तेलके लगानेसे दाद और पांव आदि त्वचाके रोग मिटतेहै ।

संख्या (१७२)

(सं०) गारुत्मतं, मरकतं, रौहिणेयं, हरिन्मणिः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पन्नो	पन्ना	लीलुं, पानुं	पाचरत्न	पान्ना	पन्ना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		जुमुर्रद	ज़ुमुर्रुद	Smaragdus	Emerald

गुण यह—ठण्ढा, मधुर, रोचक, पौष्टिक और वृष्यहै । विष, भूतबाधा, अम्लपित्त, ज्वर, वमन, दाह, मन्दाग्नि, अर्श, पाण्डुरोग और शोथको मिटाताहै और ओजको बढ़ाताहै ।

संख्या (१७३)

(सं०) गार्जरं, पिण्डमूलं, पीतकं, नारङ्गम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गाजर	गाजर	गाजर	गाजर	गाजर	गाजर	गज्जरगड्डा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कारट्टकिलंग्	गज्जरी	ज़यजूर	ज़रदफ़गज्य	Daucus Carota	The Carrot.

स्थान—गाजर हिन्दुस्थान में सब ठौर बोई जातीहै । इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै उसमें तीव्रगंध होताहै और उसका स्वाद अच्छा नहीं होताहै, यह तेल उष्ण और उड़नेवाला होताहै ।

प्रयोग—(१) गाजर योगवाही और बलवर्द्धकहै (२) कच्ची गाजर खानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं (३) बिगड़े हुए फोड़ों पर गाजरका पुल्टिस बांधतेहैं (४) गाजर खानेसे शरीर पुष्ट होताहै (५) इसके बीज स्नायु जाल को बलवान् करतेहैं (६) बच्चा होनेके समयकी अधिक पीड़ा मिटानेके लिये इसके बीज और पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (७) गाजरका हलुवा खिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै (८) गाजरके बीज चरपरे, उत्तेजक और शूल मिटानेवालेहैं आध्मान, जलंधर और वृक्कके रोगोंमें काम आतेहैं (९) गाजरके पुल्टिसमें नमक डालके बांधनेसे वह पित्त शोथ उतरताहै कि जिसमें फुन्सियां हो जातीहैं (१०) कच्ची गाजरको पीसके लेप करनेसे अग्नि आदिसे जलेहुए की दाह मिटतीहै (११) गाजरका आचार खिलानेसे तिल्ली कम होतीहै (१२) गाजरके पत्तोंको घीसे चुपड़ गर्म कर उनका रस निकाल २-३ बूंदें कान और नाकमें टपकानेसे कुछ छींकें आकर आधाशीशी की पीड़ा मिटजातीहै (१३) गाजरके छिलकेको महीन पीसकर अंजन करनेमे कुंजारोग मिटताहै (१४) इसके बीजोंकी धूनी देनेसे गर्भवती कष्टी स्त्रीको सुखसे प्रसव हो जाता है (१५) गाजर के बीजों के स्थान में जंगली गाजर काम में आ सकतीहै ।

जातेहैं (११) कंथा, सोहागा और गूगल मिलाके जो मरहम बनाया जाताहै, उससे कई प्रकारके व्रण अच्छे हो जातेहैं (१२) रूपार्थ बढानेके लिये गूगल का प्रयोग बहुत अच्छाहै (१३) गूगल, अडूसा और गुड़को ओटाके पिलानेसे शुष्क कास मिटताहै (१४) अर्श मिटानेके लिये गूगलका मरहम लगाना चाहिये (१५) स्नायु-सम्बन्धी गठिया, कुष्ठ, अर्श, आमातिसार, पुराना मूत्रकृच्छ्र, शीताद रोग, नाड़ीव्रण, स्त्रियोंके प्रदेश का रोग, पाण्डुरोग, मंदाग्नि और फुफ्फुस सम्बन्धी पुराने रोगोंमें उक्त रोगोंको मिटाने वाली औषधियोंके साथमें गूगलको खाने पीने और लगानेके काममें लाना चाहिये (१६) योगराजगूगल आदि बहुत प्रकारकी गूगलकी गोलियां बनाके ६ मासेकी मात्रा रास्नादि और महारास्नादि काथके साथ देनेसे कई प्रकारके वादीके रोग मिटतेहैं (१७) इसकी एक तोले कोमल कोंपलोंको पीसकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१८) गूगल और रसोतको जलके साथ पीसकर उसमें पारा मिलाकर लगानेसे घाव भरताहै (१९) ५ तोले गूगल और ४ तोले रास्ना इनकी घीके साथ गोलियां बनाके खानेसे गृध्रसी मिटतीहै (२०) गूगलको गोमूत्रके साथ पिलानेसे शूल और गुल्मरोग मिटताहै (२१) गूगलको एरंडके तेलके साथ या गोमूत्रके साथ पिलानेसे पुरानी अंडवृद्धि मिटतीहै (२२) शोथ मिटानेके लिये इसको गोमूत्रमें मिलाना चाहिये (२३) एक भाग गूगल और दो भाग गुड़की गोलियां बनाकर ३ मासेसे एक तोलेकी मात्रा घृतके साथ लेनेसे जोड़ और पीठ आदिकी वातपीड़ा मिटतीहै।

संख्या (१७५)

(सं०) माहिषाक्ष, गुग्गुल।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भैसागूगल	भैसागूगल	भैंसीगुगुळ	भूंगीगुग्गुळ	महिषाक्ष गुग्गुल	[illegible]	महिषाक्षीगुग्गुळमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
महिषाक्षी गुग्गुल	गुग्गुल			Balsamodendron Kataf	[illegible] Bdellium

प्रयोग—(१) मासिक धर्मकी रुकावट मिटानेके लिये तथा मासिकधर्म शुद्ध होनेके लिये इसका प्रयोग बहुत उपयोगीहै (२) बच्चा होनेके पीछे यह गूगुल ॥ रतीसे ३ रती तक लगातार पांच सात तथा ग्यारह दिन तक देनेसे गर्भाशय का सब दूषित मल निकल जाताहै (३) पुराने फोड़ा पर इसका लेप बनाके लगाना चाहिये (४) इसके धुंएसे वायु शुद्ध होताहै (५) इसको और मोम को गोमूत्रके साथ पीस बत्ती बनाके नासूरमें देनेसे वह शीघ्र मिटजाताहै ।

संख्या (१७६)

(सं०) गुञ्जा, रक्तला, प्रघ्णला, चड़ामणिः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
चिरमी	चिरमिटी	चणोठी	गुंज	कुच	चिरमिटी	रक्त गुरिगिञ्ज

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कुन्दमणि	गुरिगिंजे	ऐनुद्दीक्	चश्मैखुरूस	Abrus precatorius	Indian or wild Liquorice root Bead tree

स्थान—यह हिन्दुस्थानके पहाड़ और जंगलोंमें प्रायः सब ठौर मिलतीहै।

पहिचान—यह एक प्रकारकी बेल होतीहै इसके पत्ते इमली जैसे होतेहैं परन्तु स्वादमें मीठे होतेहै इस बेलकी फलियां लगतीहैं जिस बेलके गुलाबी पुष्प लगतेहैं उसकी फलीमेंसे ३—५ तक काली आंखवाले लाल बीज निकलतेहैं जिसके काले पुष्प लगतेहैं उसकी फलीमेंसे ६ से १२ तक सफेद आंखवाले काले बीज निकलतेहैं तथा जिसके सफेद पुष्प लगतेहै उसकी फलीमेंसे ४ से ६ तक सफ़ेद बीज निकलतेहैं पुष्पोंके रंगके कारण घुंघची दशसे भी अधिक जातिकी होतीहैं परन्तु हिन्दुस्थानमें सब प्रकारकी नहीं मिलतीहै।

फूलने फलनेका समय—यह वर्षा ऋतुमें फूलती फलतीहै इसके पंचांगमें पत्ते सबसे ज्यादा मीठे होतेहैं उनमेंसे बहुतसा सत निकाला जा सक्ताहै तथा बेल में से एक प्रकार का लाग भी निकलता है। कई लोग इसकी जड़को मुलहटी बतलातेहैं परन्तु मुलहटी दूसरी चीज़ है, इसकी जड़ नहीं है।

प्रयोग—(१) इसकी जड़ और फलोंके दो भाग क्वाथमें एक भाग तेल डाल कर पचावें जब क्वाथ जलकर तेल मात्र शेष रहजावे तब उसको उतार लेवे इस तेलके मर्दनसे दारुण गंडमाला मिटतीहै (२) इसकी जड़को बकरीके मूत्रमें घिस कर अंजन करनेसे असाध्य तिमिर रोग मिटताहै। (३) सफेद चिरमी की ३० रत्ती जड़को पीस उसका अर्क निकाल मिश्रीके साथ देनेसे सुजाक मिटता है (४) इसको रातभर जलमें भिगो प्रभात मल छानकर पीनेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (५) जड़को सोंठके साथ २॥ या ३॥ रत्ती देनेसे खासी या कुत्ताखासी मिटती है (६) पत्तोंको राईके तेलसे चुपड़ कर गठियापर बांधनेसे सूजन उतरतीहै (७) ताजे पत्तोंको पीस रस निकाल तेलमें मिलाके मालिश करनेसे दर्द मिटताहै (८) घुंघचीको पारा, गंधक, निंबोली, भङ्गके पत्ते और बिनौलोंके साथ पीसकर लगानेसे फोडे फुन्सिया मिटती है (९) यह रेचकहै परन्तु अधिक मात्रा देनेसे विष का काम देतीहै और विसूचिका (हैजे) केसे निशान पैदा करती है। विशेषकर चिरमीके छिलकेके लाल हिस्सेमें विष होताहै (१०) आधरत्तीसे १॥ रत्ती तक घुंघचीके चूर्ण को दूधमें औटा इलायची बुरकाके पीने से स्नायुजाल की शक्ति बढ़ती है परन्तु अधिक मात्रा देनेसे वमन लाती है (११) विना उबाले हुए चूर्ण को खानेसे भी वमन और दस्त बहुत होते हैं (१२) सफेद घुंघची तथा उस की जड़की दूसरी दवाइयोंके साथ चटनी बनाके खिलानेसे पुरुषार्थ पैदा करती है (१३) घुंघचीको घिसकर पपोटोंकी फुन्सिया तथा आखके दर्दपर लगाने से कुछ सूजन पैदा होकर दोनों मिट जातेहैं (१४) हलकी सूजनपर घुंघची को घिसकर लगानेसे बहुत लाभ होताहै (१५) इसके चूर्णको सूंघनेसे सिर का तेज दर्द मिटताहै (१६) पेटमें खानेकी अपेक्षा रुधिरमें मिलनेसे विषका काम अधिक देतीहै। उस जगह फोड़ा होकर सूजन हो जातीहै। इस विषको दूर करनेके लिये, सिरका २ भाग, शकर ३ भाग और चूनेका पानी १ भाग मिलाकर ४। मासेकी मात्रा देनी चाहिये (१७) चिरमीके छिलके उतारे मींगी को महीन पीसकर आंखके फूले तथा पपोटोंकी फुन्सियोंपर लगानेसे लाभ होताहै (१८) इसकी जड़को पानीमें घिसकर नास देनेसे आधाशीशी मिटतीहै (१९) घुंघची और उसकी जड़को नारियलके दूधके साथ देनेसे बवासीर

मिटतीहै (२५०) सफेद घुघचीको भुगली एरण्डके रसमें घिसकर अंजन करनेसे शीतलासे पैदा हुआ आंखका फूला कटजाताहै (२५१) सफेद उबालकर खानेसे आरोग्यदायक है परन्तु अधिक खानेसे शिरका तेजदर्द पैदा करतीहै इसमें इतना विष है कि यदि आधी चिरमीको पीसकर जवान बिल्लीकी जांघ में पिचकारीसे और किसी तरह डालदीजाय तो २४ घंटोंमें प्राणनाश कर देतीहै (२५२) पत्तोंके रसको दूधके साथ पीनेसे प्रमेह मिटताहै (२५३) सफेद चिरमीकी जड और सफेद गुडहलकी जडको घिसकर पानीमेंसे घोरकर इन्द्री को टांकीपर लगानेसे उपदश मिटताहै (२५४) सफेद चिरमीकी जडको घिसकर पीनेसे खासी मिटतीहै।

संख्या (१७१) (सं०) गुड, रसाल, शिशुप्रिय ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गुळ,गुड	गुड	गोळ	गूळ	गुड़	गुड़	बेल्लमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
बिल्ल	बेल्ल	कंदअसवेद	कदसियाह		

स्थान—गुड हिन्दुस्थान में बहुत और बनायाजाताहै।

पहिचान—यह देशभेदसे कई प्रकारका होताहै परंतु राजपूतानेमें अजमेरके मालवाका बनाहुआ गुड बहुत प्रसिद्ध है और उत्तम होताहै।

नवीन गुडके गुण—मधुर,खार युक्त,पचनेमें भारी,स्निग्ध,पुष्टि और स्तंभक है वीर्य,मज्जा,मांस,अग्नि,रक्तपित्त,पित्तविकार,कृमि और मेद को बढाताहै,कास,श्वास,कफ,अर्श,कोमल,शोष,प्रमेह,गुल्म,पांडु,हलीमक,अरुचि और राजरोगको मिटाताहै। एकवर्ष पीछे गुड पुराना कहलाताहै।

पुराने गुडके गुण—यह स्निग्ध,मीठा,पचनेमें हल्का और पथ्यहै। श्रम,त्रिदोष,हृद्रोग,मूत्र और मलकेरोग,कंडु,प्रमेह,अरुचि,संग्रहणी विशेषसे

ज्वर और संतापको मिटाताहै। यह तीन वर्षतक काममें आसकताहै पीछे हीन वीर्य होजाताहै।

प्रयोग—(१) पीपलामूलके चूर्णकी गुडमेंगोली बनाके खानेसे कईदिनों से नष्ट हुई निद्रा आने लग जातीहै (२) गुड़में आधा भाग पीपल का चूर्ण मिला गोली बनाके देनेसे जीर्णज्वर, मंदाग्नि और खांसी मिटतीहै (३) गुडमें जायफलका चूर्ण मिलाके देनेसे मुखशोष मिटताहै (४) गुडमें थोर का दूध मिलाके देनेसे श्वास, कास मिटताहै (५) गुड़ और संचललोणको मिलाकर गोली बनाके खानेसे अरुचि मिटतीहै (६) स्निग्ध अन्नके भोजन करनेसे जो तृषा पैदा होतीहै उसको मिटानेके लिये गुडका शर्बत पिलाना चाहिये (७) गुड़में सोंठ और देवदारु का चूर्ण मिलाके देनेसे हृदयकी वायु- पीड़ा मिटतीहै (८) गुड़में हरडका चूर्ण मिलाके देनेसे वातरक्त मिटताहै (९) गुडको निवाये दूधमें मिलाके पिलानेसे सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र मिटतेहैं (१०) ६ मासे गुड और ६ मासे हल्दी कांजीके साथ पीसकर पिलानेसे पथरी मि- टतीहै (११) गुड़को घीमें मिलाकर पिलानेसे सूर्यावर्त रोग मिटताहै (१२) गुड और बीलगिरकी गोली बनाके देनेसे रक्तातिसार मिटताहै (१३) गुड और हरड़की गोली बनाके खिलानेसे अर्श मिटताहै (१४) मंदाग्नि मिटाने- केलिये गुड़ और हरड़के चूर्णकी गोली बनाके देना चाहिये (१५) गुड़ और सोंठके चूर्णकी गोली बनाके खानेसे आमाजीर्ण मिटताहै (१६) गुड और पी- पलके चूर्णकी गोली बनाके खानेसे अजीर्ण मिटताहै (१७) गुडमें हरड़का चूर्ण मिलाके खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१८) गुड़में बराबर कडवा तेल मिलाकर २१ दिन तक सेवन करनेसे श्वास रोग मिटताहै (१९) हृदयका बल बढाने- के लिये गुड़ और घी मिलाकर पीना चाहिये (२०) इस प्रयोग से वात- रक्त भी मिटताहै (२१) गुड और अदरकको एक तोलेसे बढाता हुआ १२ तोले तक बढाके एक महीने तक खिलानेसे या पानीके साथ पीसकर पिलानेसे शोथ रोग मिटजाताहै इस प्रयोगके सेवनके समय में केवल दूध या दूध चावलका पथ्य देना चाहिये (२२) गुड़ और सोंठके चूर्णकी गोली बनाके देनेसे बादीका प्रतिश्याय मिटताहै (२३) गुड और पीपलके चूर्णकी गोलीसे संग्रहणी मिटतीहै (२४) गुड खानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२५) स्त्री गमन

प्रयोग—(२१) इसके बीजोंको कूट मधुमें मिलाके चटानेसे बच्चों का आमातिसार मिटताहै (२२) बच्चोंकी खांसी मिटानेके लिये बीजोंके काथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (२३) ज्वरघ्न औषधियोंके साथ इसके बीजों का क्काथ करके पिलानेसे ज्वर छूटजाताहै।

---o o o---

संख्या (१७९)

(सं०) गुडूची, अमृतवल्ली, छिन्ना, अमृता।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गिलोय	गिलोय	गळो	गुळवेल	गुलच	गलो, गिलो	तिप्पतीगे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सीदलकुड़ि	अमृतवल्लि			Tinospora Cordifolia	Heart leaved moon seed

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें प्रायः कमाऊंसे आसाम और ब्रह्मा तक, और विहार और कोकनसे कर्नाटक और सीलोन तक सब ठौर होतीहै।

पहिचान—इसकी वेल होतीहै जब यह पुरानी होजातीहै तब इसकी डंडीपर एक पतला सफेद रंगका सत्तदार पतले कागज जैसा छिलका उस पर ठौर २ से अलग दीखने लगजाताहै उसके भीतर हरे रंगकी डंडी होतीहै इसके छोटे २ पीले पुष्प लगतेहै। छोटे और लाल रंगके एक २ दो २ तीन तीन फल इकट्ठे लगतेहै।

प्रयोग—(१) इसके सब अंग औषधिके काममें आतेहै। यह—रक्त-शोधक, बलवर्द्धक, स्वेदजनक और सर्वागकी निर्बलता मिटानेवालीहै। ज्वर, तिल्ली, कामला, त्वचाकेरोग, गठिया, मूत्रदोष और मंदाग्निको मिटातीहै (२) इसकी जड़का काथ तीव्रवामकहै (३) सर्पका विष उतारनेके लिये इसकी जड़का काथ पिलातेहैं (४) कुष्ठरोगमें इसका स्वरस पिलातेहैं (५) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे वल बढता है (६) इसका काथ या हिम पिलाने से पुरानी गठिया मिटतीहै (७) उशवेके साथ इसका काथ पिलानेसे उपदंशसे पैदा हुए सब शरीरके फोड़े मिटतेहैं। इससे

मूत्र अधिक आने लगताहै (८) दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे गठिया और मूत्रकी खराई मिटतीहै (९) इसके और सोंठके चूर्णकी फकी दूधके साथ लेनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१०) इसके स्वरसमें पाषाणभेदका चूर्ण और मधु मिलाके चटानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) इसके छोटे टुकडों की माला बनाकर पहिननेसे कामला मिटताहै (१२) ज्वरनाशक दूसरी औषधियोंके साथ इसका क्वाथ करके पिलानेसे मंद वेगवाला जीर्णज्वर और विषमज्वर मिटताहै (१३) इसका क्वाथ पिलानेसे मूत्र अधिक उतरताहै (१४) इसके फांट या हिमसे, श्वेतप्रदर मिटता है (१५) ब्राह्मी के साथ इस का क्वाथ बना के पिलाने से उन्माद मिटता है (१६) इलायची, वंशलोचन और गिलोयसतको मधुके साथ चटानेसे क्षयरोग मिटताहै (१७) गिलोयसत की मात्रा ६ मासे तककी है (१८) इसकी जडका क्वाथ पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (१९) शतावर के साथ इसका क्वाथ करके पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (२०) गिलोयको पानीमें घिस गुनगुना करके कानमें डालनेसे कानका मैल निकल जाताहै (२१) गिलोय और हल्दीसे सिद्ध किये हुए तेलके लगानेसे नाडीव्रण मिटताहै (२२) गिलोयके हिममें शकर मिलाके प्रातःकाल पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै (२३) गिलोयके क्वाथपर पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे कफ ज्वर और जीर्णज्वर छूटताहै (२४) इसके क्वाथको ठंढाकर उसमें चतुर्थांश मधु मिलाके पिलानेसे जीर्ण ज्वर छूटताहै (२५) इसके स्वरस में पीपल का चूर्ण और मधु मिला के पिलाने से जीर्णज्वर, कफ, कास, प्लीहा और अरुचि मिटतीहै (२६) इसके क्वाथको ठंढाकर उसमें मधु मिलाके पिलाने से वमन बन्ध होतीहै (२७) इसके क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (२८) इसके पत्तोंको पीस छाछमें छानकर पीनेसे कामला मिटताहै (२९) इसके रससे या कल्कसे सिद्ध कियाहुआ भैंसका घी चौगुणे दूधमें मिलाके पीनेसे हलीमक रोग मिटताहै (३०) इसके स्वरस में घी और दूध मिलाके पिलानेसे हलीमक मिटताहै (३१) क्षय रोगमें वमन की शान्ति के लिये इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (३२) इसके और सोंठके चूर्णकी नस्य देनेसे हिचकी बन्ध होतीहै (३३) इसके

हिमर्मे मधु मिलाके पिलानेसे त्रिदोष की वमन बन्ध होतीहै (३४) हृदयकी वात पीडा मिटानेके लिये गिलोय और काली मिरचको उष्ण जलके साथ पीसकर प्रातःकाल पिलाना चाहिये (३५) गिलोय और एरंडके बीजोंको दहीके साथ पीसकर पगथलियों पर लेप करनेसे उनकी दाह मिटतीहै (३६) इसके क्वाथमें एरंडका तेल मिलाके पिलानेसे वातरक्त मिटताहै (३७) इसके क्वाथमें गूगल मिलाके पिलानेसे वातरक्त मिटताहै (३८) इसके स्वरस, कल्क, चूर्ण या क्वाथके सेवन करानेसे वातरक्त मिटताहै (३९) इसके कल्क और क्वाथसे घृत बना उसको पिलाने और मर्दन करनेसे वातरक्त मिटताहै (४०) ३ या ५ जवाहरडके चूर्णकी गुडमें गोली बना उसको खिलाकर ऊपर गिलोय का क्वाथ पिलानेसे बहुत बढाहुआ वातरक्त मिटताहै (४१) गिलोय और चित्रकका क्वाथ पिलानेसे सर्पिः प्रमेह मिटताहै (४२) गिलोय का क्वाथ पिलानेसे शीतपित्त मिटताहै (४३) इसके स्वरसमें मधु मिलाकर पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (४४) इसके स्वरसमें मधु मिलाकर पीनेसे प्रमेह मिटताहै (४५) इसके और शतावरके स्वरसमें गुडकी चासनी बनाके चाटनेसे वातज्वर छूट जाताहै (४६) इसका फांट पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै (४७) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे कामलारोग मिटताहै (४८) घृतके साथ गिलोय का सेवन करनेसे वात मिटतीहै (४९) गुडके साथ सेवन करनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (५०) मिश्रीके साथ सेवन करनेसे पित्तके उपद्रव मिटतेहैं (५१) मधुके साथ सेवन करनेसे कफ मिटताहै (५२) सोंठके साथ इसका सेवन करनेसे आमवात मिटताहै (५३) गोमूत्रके साथ इसका सेवन करनेसे श्लीपद मिटताहै (५४) इसके स्वरसका बलानुसार सेवन करनेसे कफपित्त-जनित कुष्ठ मिटताहै इसका हिम पिलानेसे जीर्णज्वर छूटता है।

दूसरे वृक्षोंपर चढीहुई गिलोयके गुणोंकी अपेक्षा नीमपर चढीहुई गिलोयमें गुण अधिकहै। गिलोयसत का स्वाद फीका या कुछ कडवा होताहै जो यह बहुत अच्छी तरहसे धोया जावे तो उसका रंग सफेद हो जाताहै कम धोनेसे कुछ हरे रंगका रह जाताहै।

संख्या (१८०)

(सं०) गैरिकं, रक्तधातुः, ताम्रधातुः, लोहितमृत्तिका

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गैरूं	गेरू	गेरू	गेरू,काव	गिरिमाटी	गेरी	जाजु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
काविरि	काविरु			Bole Rubra.	Ochre Red lumber stone Red chalk

गुण—यह स्निग्ध, मीठी, कषैली, ठण्ढी और नेत्रोंको हितकारीहै। दाह, पित्त, कफ, हिचकी, रुधिरविकार, ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अर्श और रक्तपित्तको मिटातीहै, अग्निदग्धके व्रणको और दूसरे व्रणोंका रोपन करतीहै और शरीरकी कान्ति, बलको बढातीहै ॥

प्रयोग—(१) सोनागेरूके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे बालककी हिचकी बन्ध होतीहै (२) सोनागेरू और सेलखड़ी (घीयाभाटा) बराबर ले चूर्ण बनाके ६ मासेकी फकी ठण्ढे जलके साथ देनेसे विना समय मासिकधर्म होना और उस समयमें प्रमाणसे अधिक रुधिरका बहना बन्ध होताहै ॥

संख्या (१८१)

(सं०) गोक्षुरः, गोकण्टः, व्यालदंष्ट्रः, क्षुरकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोखरू	गोखरू	गोखरू	गोखरू	गोक्षुर(री)	गोखरू भूखड़ा	पल्लेरु एनुगपल्लेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नेरिंजिल्	नेग्गुलु	हसक	खारेखसक	Pedalium Murex	Burweed.

स्थान—यह हिन्दुस्थानके दक्षिणमें समुद्रके किनारे, सीलोन, गुजरात, काठियावाड़ और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंके रेतीले भागोंमें होताहै।

पहिचान—इसका छोटा पोधा होताहै इसकी डालियां और पत्ते बहुत चेपदार होतेहैं इसकी जड पीली सिंदूरिया रंगकी होतीहै इसके पत्ते कुछ गोल और दलदार होतेहैं, इसके चोखूंटे प्रायः एक इंच लम्बे फल लगतेहैं उन के चारों कोनों पर एक २ कांटा होताहै और उनके नीचेका भाग चारों ओरसे सिमटता हुआ एक कोनेमें आमिलताहै, इसके कच्चे फलका रंग हरा पकनेपर पीला और सूखजाने पर मिटिया रंगका होजाताहै इसका छिलका सूखके तन्तुओंकी जालीसी दीखने लगजाताहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंसे निकाला हुआ चेप (लुआब) पिलानेसे मूत्र मार्ग और मूत्राशयकी अधिक ऊष्मा मिटतीहै (२) इसके देनेसे मूत्र बहुत जल्दी आताहै (३) इसके फल और पत्तोंके चेपका पिलानेसे मूत्रकी रुकावट और मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) गोखरूके सेवन से इन्द्रियोंकी निर्बलता स्वप्न प्रमेह और वीर्यका स्वतः निकल जाना मिटताहै (५) गोखरूके चूर्णमें लौंग इलायची शक्कर और घी मिलाके दूधके साथ देनेसे शरीर पुष्ट होताहै (६) यह गर्भाशय के रोगों को मिटाताहै (७) इसके पत्तोंको पीसकर पिलानेसे बढीहुई तिल्ली कम होजातीहै (८) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो उनका चेप निकालके पिलानेसे वृक्ककी प्रमाण से बढी हुई ऊष्मा कम हो जातीहै (९) पाषाणभेद और गोखरूका क्वाथ, या फांट पिलानेसे पथरी मिटती है (१०) इसके पत्तोंका स्वरस लगानेसे मुखपाक मिटताहै (११) इसके चेपके साथ तीक्ष्ण औषधिको पिलानेसे उसका चरपराहट कम हो जाताहै (१२) इसके फलों का काथ पिलाने से मासिकधर्म शुद्ध होने लगता है (१३) बालक होने के पीछे जो दूषित जलादिक गर्भाशय में रह गये हों तो उन को निकालनेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये, इससे प्रसूति सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (१४) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पित्तके रोग मिटते हैं (१५) गोखरू और सोंठका काथ नित्य प्रातःकाल पिलानेसे आमवात और कटिशूल मिटतीहै (१६) इसके काथमें जौखार मिलाके पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१७) इसका पंचाग और ककडीके बीजोंको कांजीके साथ पीसकर वस्तिपर लेप करनेसे मूत्र शुद्धि होतीहै (१८) भेड़के दूधमें मधु मिला उसके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे पथरी मिटतीहै (१९) इसके पंचांगके काथ

में मधु और मिश्री मिलाकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और उष्णवातु मिटतीहैं ॥

संख्या (१८२)

(सं०) लघुगोक्षुरः, गोकण्टकः, चणद्रुमः, षडङ्गः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोखरूकाटी	छोटागोखरू	बेठोगोखरू	सराटे	छोटगोखुरी		नेग्गिलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शेप्पुनेरिंजिलु	नेग्गुलुमुल्लु			(Terrestris ?) T lanuginosus.	

स्थान—छोटे गोखरू विहार पश्चिमोत्तर देश मद्रास अहाता अवध और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसके मलर पृथिवी पर फैलतेहैं उनके चने जैसे पत्ते और छोटे पीले पुष्प लगतेहै इसके दो २ फल जुडे हुए लगतेहै उनको गोखरूकाटी या कांटी कहतेहैं । एक २ फलके तीन तीन कांटे लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसका पंचाग परन्तु विशेष करके इसका फल औषधि के काममें आताहै (२) इसके फलके चूर्णकी फकी देनेसे, स्त्रियोंका बन्ध्यापन मिटताहै (३) इसके पंचागको २ घडेतक जल में भिगो मल छानकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) गोखरू और मिश्रीके छः छः मासे चूर्णकी ठंढे जलके साथ फकी देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) ५ तोले गोखरू ७॥ मासे धनिया दोनोंको जोकूटकर २॥ पाव पानीमें ओटा आधा रख छान दिन भरमें थोडा थोड़ा पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (६) गोखरू, इसकी जड और चावलोंको एकत्र ओटा छानकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (७) इसके फल और पत्तोंका २॥ से ७॥ तोले काथ दिनमें तीन चार वेर पिलाने से मूत्राशयकी पुरानी सूजन उतर जातीहै (८) इसके फल और पत्तोंका स्वरस २॥ से ५ तोले तक दिनमें दो तीन वेर पिलानेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (९) इन दोनोंके काथमें चन्दनके तेलकी दश बूंद डालके दिनमें तीन

बेर पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१०) गोखरूके ६ मासे चूर्णको मिश्रीके साथ फकी देनेसे सुरत प्रमेह मिटताहै(११) गोखरूको शतावरके साथ ओटाके पिलानेसे पुरुषार्थ बढताहै (१२) गोखरूके चूर्णको मधुके साथ चटा-कर ऊपर बकरीका दूध पिलानेसे पथरी मिटतीहै (१३) गोखरूका शर्बत पिलानेसे शरीरमें पित्तकी शान्ति होतीहै (१४) गोखरूके १५ रत्ती चूर्णमें कालीमिरच और मिश्री मिलाके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) इसके सेवन से नपुंसकता मिटतीहै ।

संख्या (१८३)

(सं०) गोजिह्वा, गोजिका, दार्विका, खर्पत्री ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जंगलीगोभी	गोभी	भोंपाथरी	पाथरी	दाड़िशाक	गोभी	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Elephantopus scaber	Prickly leaved elephant's foot

प्रयोग—(१) गोजिह्वाकी जडका काथ पिलानेसे मूत्राघात मिटता है (२) गोभीके पत्तोंको कूट चावलोंके साथ ओटा छानके पिलानेसे आमाशय की शोथ और पीडा मिटतीहै (३) इसकी जडका काथ पिलानेसे ज्वर छूट-ताहै (४) इसके पत्तोंको ओटा छान ठंढाकर मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्र-कृच्छ्र मिटताहै (५) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे नेत्रपीडा मिटतीहै (६) इसको पानीके साथ पीसकर १४ मासे तक खिलाने पिलानेसे कफके साथ रुधिरका आना और रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै (७) गोभीकी चटनी बनाके खानेसे स्वरभंग मिटताहै (८) इसके पत्ते और डालियों को पानीमें ओटा छान उस काथमें मधुकी चासनी बनाके चटानेसे स्वरभंग मिटता है (९) इसका शाक बनाके खानेसे अर्श मिटताहै (१०) इसकी जड गलेमें बांधनेसे ज्वर छूटताहै (११) जंगली गोभीका शाक खानेसे अर्शका रुधिर

बन्ध होताहै (१२) इसके पत्तोंको गुदापर मलनेसे अर्शकी दाह मिटतीहै (१३) इसके पत्तोंको मधुमें पीसके लेप करनेसे मनुष्यके दशका विष उतरताहै ।

संख्या (१८४)

(सं०) गोधूमः, सुमनः, वहुदुग्धः, म्लेच्छभोजनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गहूं	गेहूं	घऊ	गहू	गम्	कणक	गोधूमलु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
गोदि	गोधि	हिंताह, बुर	गन्दुम	Triticum sativum. T Vulgare	Wheat.

स्थान—गेहूंकी खेती हिन्दुस्थानमें सब ठार होतीहै ।

पहिचान—यहां तीन प्रकार के गेहू होते हैं (१) काठे (२) बाजे (३) कठ बाजे ।

प्रयोग—(१) गेहूंका आटा, मैदा, दलिया, रवा और सूजी ये सब खाने और औषधिके काममें आतेहैं (२) पित्तविसर्प पर आटेका लेप करते है (३) अग्निदग्ध पर इसका लेप करना चाहिये (४) त्वचा की दाह कई प्रकारकी खुजली दाह या चीस युक्त फोड़े फुन्सियों पर आटेका ठंढा और गर्म लेप करना चाहिये (५) चापड (भूसी) के हिम, फाट या क्वाथसे पसीना निकालने या कठोरपनेको ढीला करनेके लिये स्नान कराना चाहिये (६) चरपरी औषधिके खाने पीनेसे जो भीतर दाह हो जातीहै उसको मिटानेके लिये चापडका हिम फाट या क्वाथ पिलातेहैं (७) चापड का पुल्टिस कई रोगोंमें बांधा जाताहै (८) चापडकी रोटी कुछ सारक होतीहै (९) चापडकी रोटी मंदाग्निवाले के लिये पथ्यहै (१०) चापडमें मैदाका भाग बहुत कम होनेके कारण इसकी रोटी बहुमूत्रवालेको लाभकारीहै (११) गेहूंके आटेमें से मैदा निकाल उसको सूजन की ठौरपर सूखी लगानेसे सूजन के भीतर जो खट्टा द्रव होताहै उसको सोस लेतीहै और चमड़ीको छिलने नहीं

देतीहै (१२) चम्परी औषधिपर मैदाका गलेफ लगाके निगलनेसे उस औषधि का खरपराहट नहीं लगताहै जिस औषधिको मुहमें छूनेसे विकार हो जातेहै उसपरभी इसका गलेफ चढाके निगलना चाहिये (१३) सवा तोले गेहूं और दो मासे सेंध नमकको पावभर पानीमे औटा तीसरा भाग पानी रख छानके ७ दिनतक पिलानेसे खासी मिटतीहै (१४) दो तोले गेहूंके सतको किसी बरतनमे रात्रीके समय थोड़े पानीमें घोलकर उसको प्रातःकाल पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) गेहूं और शणके बीजोंके चूर्णको घीमें तलकर उसमें गुड मिला लड्डू बांधके खानेसे स्नायुक गल जाताहै (१६) गेहूं और चनोंको औटाकर उनका पानी पिलानेसे वृक गुर्दे और मूत्राशयकी पथरी गल जातीहै (१७) गेहूंको जला उनकी भस्ममें बराबर गुड़ और घी मिलाकर डेढ २ तोलेकी मात्रा तीन दिन देनेसे चोटकी पीडा मिटतीहै ।

संख्या (१८५)

(सं०) गोमेदः, राहुरत्नः, तमोमणिः, स्वर्भानवः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोमेद	गोमेदमणि	गोमेद	गोमद	गोमेद	गोमेद	गोमेदक
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
				Onyx		Onyx

इसके गुण—यह अम्ल, उष्ण, पाकमें लघु, पाचक, दीपन, रोचक और बुद्धिवर्द्धकहै। वात, कफ, पित्त, क्षय, त्वचाके रोग, नेत्ररोग और कास को मिटानेवाला है ।

संख्या (१८६)

(सं०) गोरक्षी, सर्पदण्डी, दीर्घदण्डी, सुदण्डिका,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कळविरछ	गोरखइमली	रुखडो	गोरखचिंच			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Adansonia digitata.	The Baobab-tree The sour gourd or monkey bread tree of Africa.

स्थान—कलविरछ के वृक्ष हिन्दुस्थानमें कहीं २ होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष सबसे बडा और सबसे अधिक आयुवाला होताहै इसकी ऊंचाई ६० से ७० फुट तक होतीहै इसके पेडकी गुलाई १६–२२ और ४० फुट तक होतीहै और कहीं २ स्कंधकी मध्य रेखा ३० फुटकी होतीहै जैसे बील, पलाश और वरणेके तीन २ पत्ते लगतेहैं वैसेही इसके पांच२ या सात २ पत्ते लगतेहैं। उष्ण कालमें इसके पत्ते गिर जातेहैं और वर्षाऋतुमें नवीन आजातेहैं इसका छोटा फल नीबू जितना और बड़ा फल १ फुट लम्बा और आल जैसा होताहै परन्तु पृथ्वी, जल और वायुके कारणसे फलका आकार बहुत बदल जाताहै इसका स्वाद कुछ खट्टा होताहै और इसमें भूरे बीज निकलतेहैं।

फूलने फलने का समय—वैशाख और ज्येष्ठमें इसके पुष्प आजातेहैं इसके एक प्रकारका सफेद गोंद लगताहै उसमें किसी प्रकारकी गंध और स्वाद नहीं होताहै। इसकी जड़में से लाल रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) इसके फलकी गिरी चेपदार, ठंढी, कुछ खट्टी और स्वादिष्ट होतीहै इसको ज्वरकी दाह कम करनेके लिये खिलातेहैं (२) इसकी आधी रतीसे १० रतीतक गिरी मट्ठेके साथ खिलानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (३) इसके पत्ते और छालमें भी चेप होताहै (४) इसकी २॥ तोले छालको १५ छटाक जलमें औटा १० छटांक रख छानकर दिनभर में सब पिला देनेसे पसीना आकर ज्वर उतर जाताहै (५) इसकी छालके चूर्णकी फकी देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (६) इसके क्वाथ पर पीपल बुरकाके पीनेसे पाचन शक्ति बढतीहै (७) त्वचाके रोगोंपर इसकी गिरीका लेप करना चाहिये (८) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे पित्तकी

मस्तकपीडा मिटतीहै (९) इसकी छालके काथमें जौखार डालके पीनेसे मूत्र की रुकावट मिटतीहै और मूत्रवृद्धि अधिक होतीहै (१०) इसकी लकड़ी जहरीली छूतको मिटातीहै (११) इसके फलके बीजोंमें ज्वरनाशक शक्तिहै (१२) इसकी छाल और पत्तोंकी, चटनी बनातेहै (१३) इसके सूखे पत्तों को महीन पीसकर शरीरपर मर्दन करनेसे अधिक पसीना आना बन्द होजाताहै (१४) इनके चूर्णकी फकी देनेसे भूख बढतीहै (१५) गुजरातमें इसके पत्तों को भोजनके साथ खातेहैं इनसे शीतलता रहतीहै (१६) इसके फलोंका शर्बत ठंढा और दाह मिटानेवालाहै ।

—— oo ——

संख्या (१८७)

(सं०) गोराणी, दृढवीजा, निशांध्यग्निः, सुशाका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गवाँरफली	गवाँर	गुवार	गोवारी			गोरचिक्कु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Cyamopsis Psoralioides.	

स्थान—यह वर्षाऋतुके प्रारम्भमें बहुतसे देशोंमें बोयाजाताहै ।

पहिचान—इसका गुल्म दो प्रकारका होताहै। एक २, ३ फुट ऊंचा बढकर फैल जाताहै और दूसरा सीधा जो ५, ६ फुट ऊंचा बढ जाताहै। इसकी फली २, ३ इंच लम्बी होती हैं।

प्रयोग—(१) पित्तातिसार मिटानेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये (२) तिल और गँवारको कूट जलमें राधकर चोट या मोच की सूजनपर बाधना चाहिये (३) यह शीतल, रूक्ष, मधुर, पचनेमें भारी, कफकारक, पित्तनाशक और अग्निको दीप्त करनेवालीहै (४) इसके पत्ते पित्तनाशकहैं (५) पत्तोंके रसका अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै (६) इसके पत्तोंका

शाक खानेसे रतौंधा मिटताहै (७) इसकी फलियोंका शाक बनाकर खातेहैं परन्तु निर्बल और बादीकी प्रकृतिवालेको नहीं खिलाना चाहिये, क्योंकि इससे पेट मे आध्मान (अफारा) और शूल हो जाताहै। गँवारकी बहुधा कोमल कच्ची फलियोंको सुखाके रख छोडते हैं जब चाहें तब उनको घी या तेलमें तल उनपर नमक, मिरच, (मसाला) लगाकर खातेहै, गँवारकी खेती अधिक बोने का कारण यह है कि यह चौपायों के खाने के काम में बहुत आता है।

संख्या (१८८)

(सं०) गोरोचना, पिङ्गला, गव्या, मेध्या।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गोलोचन	गोलोचन	गोरोचन	गोरोचन	गारोचना	गोलोचन	गोरोजनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
गोरोजन	गोरोचन			Bos taurus]	Gall stone Beyopr Biliary concretion of a cow or bullock

पहिचान—गौके पित्तेको (गोलोचन) कहतेहैं, इसकी गोली माय: जायफल जितनी बड़ी होतीहै कांदके छिलकेकी जैसे इसके पुडतपर पुडत जमेहुए होतेहै, इसके टुकड़े पीलास लियेहुए नारजी रगके होते है।

गुण—यह शीतल और कडवाहै उन्माद, गर्भस्राव, कृमि, अरुचि, कुष्ठ, भूतग्रह, विष, रक्तविकार और नेत्ररोगको मिटाताहै, वीर्य्यको बढाताहै और क्षतके रुधिरको रोकताहै।

संख्या (१८९)

(सं०) घृत, आज्य, हविः, सर्पि।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
घी	घी, घृत	घी	तूप	घि, घृत	घी	नेय्यि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नैय्	तुप्पा	समन	रोग़नेज़र्द	Butryrum Depuratum	Clarified butter

घृत आठ प्रकारके होतेहैं इनमें गौका घृत सबसे उत्तम होताहै। जहां कहीं विशेष घृतका नाम नहीं लिखा हो वहां गौका घृत लेना चाहिये।

प्रयोग—(१) यह ठण्ढा शिथिल करनेवाला और आमाशयकी पीडा मिटानेवाला है (२) वाणी, सुंदरता, शरीरकी कान्ति, मेदके भाग और मानसिक शक्तियोंको बढाताहै (३) नेत्ररोग, उन्मत्तता, आध्मान, पीडा सहित अतिसार, फोड़े और घाव आदि रोगोंमें इसका प्रयोग बहुत लाभकारीहै। और अलग २ रोगोंमें अलग२ रीतिसे काममें आताहै (४) घी को शुद्ध करनेकी रीति यह है कि इसको अग्निपर अच्छा गर्म करके उसपर से उतार के कुछ देरतक पडा रक्खे जब इसमें छाछ और पानी पैंदे बैठ जाय तब कपडेमें छानकर काममें लावें (५) जिस रोगको मिटानेके लिये गोघृत बनाया जावे उसी रोगकी औषधियोंके काथ या कल्कमें ओटाके बनातेहैं कई रोगोंके लिये कई प्रकारके घी बनाये जातेहैं कोई घृत खानेके कोई पीनेके, कोई मर्दनके, कोई सूंघनेके और कोई वस्तीके काममें आतेहै (६) घृतका पाक तीन प्रकारका होताहै मृदु मध्य और खर (१२) ताजा घी खानेके काममें और पुराना घी औषधिके काममें आताहै (१२) १० वर्षका घी पुराना कहाजाताहै उसमें बहुत तेज, चरपरी, सुगंध होजातीहै और उसका रंग लाखजैसा होजाताहै घृत जितना पुराना होवे उतना ही उसका गुण अधिक होताहै (१३) १०० से १००० बेरतक ठण्ढे जल से धोया हुआ घृत कई रोगोंको मिटाताहै। धोया हुआ घी साबुन और झाग जैसा कोमल होजाताहै यह ठण्ढा और शिथिल करनेवालाहै। स्नायुपीड़ा किसी अंगका शून्य और निश्चेष्टपन, स्नायुकी मस्तक पीड़ा, श्वास, गठियाके रोग जोड़ों का करडापन, शरीर हाथ या पैरों की दाह और नेत्ररोग आदि बहुतसे रोगोंमें बहुत काम आताहै (१३) ज्वरकी बहुत बढीहुई ऊष्माको घटाने के लिये धोया हुआ घृत शरीरपर मलना चाहिये (१४) पुराने घीमें हींग मिलाकर

सुंघानेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै (१५) पुराने घीमें हींग और सैधानमक मिलाकर सुंघानेसे ज्वर छूटताहै (१६) सोंठके कल्क से बनाया हुआ घृत संग्रहणी, पांडुरोग, प्लीह, कास और ज्वरको मिटाताहै (१७) घी और दूध मिलाकर पिलानेसे अफीम आदिके विष उतरतेहैं (१८) घी और मधु को गौके गोबरके रसमें मिलाकर पिलानेसे रक्तपित्त मिटताहै (१९) रक्तपित्त मिटानेके लिये १०० वेर धुपेहुए घीको मस्तकपर लेप करना चाहिये (२०) कुछ उष्ण घी पिलानेसे हिचकी बन्ध होजातीहै (२१) भोजन किये पीछे घीमें काली मिरचका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे स्वरभंग मिटताहै (२२) जीरे या धनियके कल्कसे सिद्ध किये हुए घीके सेवनसे वमन, अरुचि और मन्दाग्नि मिटतीहै (२३) अठारे भाग पेठेके रसमें एक भाग घृत सिद्ध करके काममें लाने से पित्तविकार मिटतेहैं (२४) पलासके क्षारसे सिद्ध कियाहुआ घी रक्त गुल्मको मिटाताहै (२५) धनिया और गोखरूके क्वाथ और कल्कमे सिद्ध कियाहुआ घी पिलानेसे मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और शुक्रदोष मिटताहै (२६) गायके घीमें सैधानमक मिलाके पीने और लेप करनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (२७) घृत और सेंधे नमकको पानीमें खरलकर गर्म २ लेप करनेसे शीतपित्त मिटताहै (२८) घृतमें सेंधानमक मिला कुछ गर्मकर अभ्यङ्ग करनेसे शीतपित्त मिटताहै (२९) १०० वेर पानीसे धोये हुए घीका वार २ लेप करनसे विसर्प रोग मिटताहै (३०) शिररोगमें धोयेहुए घीका वार २ मर्दन करना चाहिये (३१) चार भाग अडूसेके रसमें एक भाग घी डाल करके सिद्ध कर सेवन करानेसे रक्तपित्त मिटताहै (३२) पटोलके, या पटोल और सोंठके कल्कसे सिद्ध कियेहुए घीका सेवन करनेसे कफ, पित्तके विकार मिटतेहैं (३३) शतावरीके कल्कसे घृत सिद्धकर उसका सेवन कराने से अम्लपित्त, वातपित्तजनितरोग, रक्तपित्त तृषा, मूर्छा, श्वास और संताप मिटते हैं (३४) घृतके सुंघनेसे आधाशीशी मिटतीहै (३५) ज्वरमें कफ मिटनेसे १२ रात्री पीछे घृतका सेवन कराना चाहिये (३६) घृतमें सेंधानमक मिलाकर पिलानेसे वातजनितछर्दि बन्ध होतीहै (३७) दूधमें घी मिलाकर पीनेसे पित्त शान्त होताहै (३८) सोंठके कल्क और क्वाथमें सिद्ध कियेहुए घीका सेवन करनेसे वात, कफ और कटिशूल मिटतीहैं (३९) चौगुने काजीके जलमें सोंठके कल्कसे सिद्ध कियेहुए

घीका सेवन करनेसे आमवात और मंदाग्नि मिटतीहै (४०) पीपलके काथ और कल्कसे बनायेहुए घीको मधुमें मिलाकर चटानेसे परिणामशूल मिटतीहै (४१) ५० उत्तम हरड और ८ तोले संचलनान इनस एक सेर घीको चौगुणे जलमें सिद्धकर उसका सेवन करानेसे श्वास, गुल्म, हृद्रोग, उदररोग, और वातरोग मिटतेहै (४२) अर्जुनके कल्क और रससे घी बनाकर उसका सेवन करानेसे सर्व प्रकारके हृद्रोग मिटतेहैं (४३) एक सेर घी और ८ तोले चित्रकका कल्क दुगुने गोमूत्र और चौगुने जलमें डाल सिद्धकर उसमें जौखार मिलाकर पिलानेसे उदरविकार मिटता है (४४) घीको २१ बेर धोकर मर्दन करनेसे भिड और मक्खीका विष उतरताहै ।

संख्या (१६०)

(सं०) नवनीतः, मृच्चणं, सरजं, कलम्बुटम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
माखण	मक्खन	माखण	लोणी,लोर्न	ननि,माखन्	मक्खन	वेन्ना

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वण्णै,वेन्नै	बेएणे	जबद	मस्का	Butyram	Butter

प्रयोग--(१) बकरीके मक्खनका मर्दन करनेसे गर्मी और खुश्कीकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२) मक्खनमें मिश्री मिलाके खिलानेसे कंठकी खुश्की मिटतीहै (३) मक्खनका शरीरपर मर्दन करनेसे बल बढताहै और शोथरोग मिटता है (४) गौके दूधमेंसे निकालेहुए मक्खनमें मधु और शक्कर मिलाके खानेसे रक्तातिसार मिटताहै (५) मक्खनमें नागकेसरका चूर्ण और शक्कर मिलाकर चटानेसे अर्शका रुधिर बन्ध होताहै (६) मक्खनमें तिल मिलाके खानेसे अर्शका रुधिर बन्ध होताहै (७) मक्खनमें मधु और शक्कर मिलाकर चटानेस या दूध, घी और मधु मिलाकर पिलानेसे क्षयरोग मिटताहै । (८) मक्खन और मिश्री चटानेसे जायफलका मद उतरजाताहै (९) पैरके तलवोंपर मक्खनका लेपकर उनको तपानेसे दाह मिटती है ।

संख्या (१६१)

(सं०) घृतकुमारी, गृहकन्या, स्थूलदला, दीर्घपत्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गवाँरपाठो	घीगुवार	कुवार	कोरफड	घृतकुमारी	कुआरगदल	कलवद

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कथाले(इ)	लोलसरै	नबतेसिबारा	दरख्तेसिब्र	Aloe vera A barbadensis	Babadeo Aloes Indian aloes

स्थान—घीगुवार हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै ।

पहिचान—यह कई जातिका होताहै इसकी उचाई प्राय २॥ फुटकी होती है इसके श्वेत रंगकी एक जड़ होतीहै इसके पेदड़ नहीं होतीहै इसके पत्ते भीतरकी ओरसे दबे हुए और बाहिरकी ओरसे उठे हुए साफ हरे रंगके और गिरदार होतेहैं ये जड़की ओरसे चोड़े और अन्तमें नोकदार होतेहैं इनके दोनों किनारों पर कुछ मुड़े हुए छोटे कांटे होतेहैं । पत्तोंके बीचमें उनसे लंबी छिनगेदार एक डंडी निकलतीहै उसको मारवाड़ीमें गवाँरपाठेकी फली कहतेहैं ।

प्रयोग—ग्वारपाठेके पत्तेका ताजा रस रेचक और ठंढाहै (२) इसके रसको गर्मकर लेप करनेसे आंखकी पीड़ा मिटतीहै (३) ग्वारपाठेकी गिर पर हल्दीडाल गर्मकर बांधनेसे आंखकी पीड़ा मिटतीहै (४) ग्वारपाठेकी गिर पर सोहागा बुरकाके खिला देनेसे तिल्ली मिटतीहै (५) ग्वारपाठेकी गिरको पकाके बांधनेसे फोड़ा जल्दी पकजाताहै (६) ग्वारपाठेकी गिर ६ मासे, गोघृत ६ मासे इनमें हरड़का चूर्ण और सेंधा नमक मिलाकर देनेसे गोलेकी पीड़ा मिटतीहै (७) इसकी गिरपर पलाशका खार बुरकाके खिलाने से स्त्रियोंका मासिक धर्म शुद्ध होने लगताहै (८) इसकी जड़को ओटा छान उसपर सेकी हुई हींग बुरकाके देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (९) इसकी गिर का चूरमा बनानेकी रीति—गेहूँके आटेमें घीका मोवन देकर उसको इसकी गिरमें ओसन बाटी बना सेक, कूट, छानकर उस चूर्णमें घृत और खांड मिला-

कर लड्डू बनाकर खानेसे कमरकी वादी मिटतीहै (१०) ऐसेही बाटी बना सेक घीमें चुपकर खानेसे कमरकी, वादीकी पीड़ा मिटतीहै (११) अजवायनको ग्वारपाठेके रसकी ७ भावना दे सुखा फिर नींबूके रसकी सुखा २ कर ७ भावना देकर उसकी फक्की देनेसे अजीर्ण, आध्मान, मंदाग्नि और पेटकी पीडा आदि रोग मिटतेहैं (१२) इसके गूदेके रसकी बूंदें सोते समय कानमें टपकानेसे नेत्रपीडा मिटतीहै (१३) इसकी एक मासे गिरमें तीन रती अफीम मिलाके उसको पोटलीमें बाध पानीमें भिगो २ कर नेत्रों पर फेरनेसे और एक दो बूंद भीतर डालनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (१४) इसके रसको गर्म कर दूसर कानमें डालनेसे कानकी पीडा मिटतीहै (१५) गवारपाठेके रसमें ६ मासे एलुवा और एक तोला बंबूलका गोंद मिला पीसकर पेटपर लेप करनेसे बालकका डब्बा मिटताहै (१६) इसकी एक तोले जड़को पीस कुछ गर्म पानीके साथ पिलाकर वमन करानेसे विषमज्वर छूटताहै (१७) इसके रसमें घी मिलाकर सूंघनेसे कामला रोग मिटताहै (१८) इसके पत्तेके एक ओरका छिलका दूरकर उसपर सेंधा नमक बुरकाकर कुत्तेके दंशपर तीन दिन तक बांधनेसे कुत्तेका विष उतरताहै (१९) इसकी फली (गादल) का शाक बनाकर खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (२०) इसकी गादल बहुत रोचकहै। इसकी फलियोंको बनारके सुखा रखतेहैं, उन सूखे हुए टुकडोंको "खेलरे" कहतेहैं। इनको घीमें तल नोंन मिरच लगाकर खातेहै (२१) इसका आचार बनानेकी रीति — गवाँरपाठेके पत्तोंके दोनों ओरके कांटोंको कुछ छिलके सहित अलग करके फिर उनके दो तीन अंगुलके कप्पे काट कर ५ सेर लेलेवें उनमें पीसा हुआ आध सेर नमक डालकर खूब हिलाकर मुंह बन्द करके तीन दिन धूपमें धर देवें औरतीनदिनमें २-३ बेर उछाला देदिया करें पीछे उसमें १० तोले हल्दी, १० तोले धनियां, १० तोले सफेद जीरा, १५ तोले लाल मिरच, ६। तोले सेकीहुई हींग, ३० तोले अजवायन, १० तोले सोंठ, ७॥ तोले कालीमिरच ७॥ तोले पीपल, ५ तोले लौंग, ५ तोले दालचीनी ५ तोले सोहागा, ५ तोले अकलकरा, १० तोले सियाह जीरा ५ तोले बड़ी इलायची, ३० तोले जवाहरड़, ३० तोले सोंफ और ३० तोला राई इनमें जवाहरड़े को साबित ही रख और सब को महीन कूटकर उसमें मिला देवें।

रोगीका बलाबल देखकर ६ मासेसे ३ तोले तक इसकी मात्रा देवें इससे पेटके वात, कफ सम्बन्धी कई विकार मिटतेहैं यह आचार सूख जावे तो उसकी फकी देवें या शाकादिक और दालमें मिलाके खिलावें, यह रोगीके ही काममें नहीं आताहै, किन्तु रोचककी रीतिपर हरेक मनुष्य के काममें आताहै ।

संख्या (१६२)

(सं०) रक्तघृतकुमारी ।

Aloe Rubescens

स्थान-इसके गुल्म बंगाल, पश्चिमोत्तर, हिन्दुस्थान और और भी कई ठौर होतेहैं । इसके नारंजी और कुछ २ लाल पुष्प लगतेहैं । इसके पत्तोंकी जड़ बैंगनी-रंगकी होतीहै ।

प्रयोग-(१) इसकी गिरका हलुवा बनाकर खिलानेसे अर्शरोग मिटता है। (२) इसके रससे बनेहुए एलुवेको उष्ण जलमें गला, नागरबेलके पान पर उसका लेप कर उस को बच्चेके पेटपर चेप देनेसे बच्चेकी दस्तकी रुकावट मिट जातीहै, अर्थात् एक-दो मृदुवेग लग जातेहैं (३) इसको स्पिरिट में गलाकर लेप करनेसे बाल काले पड़ जातेहैं (४) बाल उगानेके लिये भी यही लेप करना चाहिये (५) गुलाबके इत्रमें गलाके लगानेसे नेत्रोंकी कई प्रकारकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसको निशोतकी साथ देनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (७) बच्चोंकी आंतोंके कीड़े मारनेके लिये यह बहुत उत्तम औषधिहै (८) इसके गोंद जैसे सतका लेप करनेसे शोथ बिखर जातीहै (९) पक्वाशयके उपद्रवके कारणसे जो मस्तकमें रोग होतेहैं उनको मिटानके लिये अथवा चित्त उदास रहता होवेतो इसका सीरा देना चाहिये । इसमें गुलाबका गुलकंद और रूमीमस्तकी मिलानेसे पेटमें मरोड़ी नहीं चलतीहै (१०) रातको सोते समय इसकी गोली देनेसे प्रभात में साफ दस्त लगनेसे अर्शकी पीड़ा मिटजातीहै (११) ताजी गिरमें हल्दी मिला गर्मकर लेप करनेसे चोटकी सूजन और पीडा मिटतीहै (१२) इसकी गिरको फिटकड़ीके पानीमें पीस गर्मकर लेप करनेसे नेत्रोंसे पानी और पूयका बहना बन्द होजाताहै (१३) इसके गाढे किये हुए रसमें हींग मिला

गर्मकर बच्चोंके पेटपर लेप करनेसे शूल और फुप्फुस सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (१४) इसके आधीरती रसमें आधीरती सोहागा मिलाकर माके दूधके साथ देनेसे भी उक्त रोग मिटतेहैं (१५) पेटपर इसका लेप करनेसे बद्धकोष्ठ और अफारा मिटताहै (१६) इसके पीले रसमें हल्दी मिला गर्मकर लेप करनेसे तिल्ली मिटतीहै (१७) इसको खिलानेसे भी तिल्ली मिटतीहै (१८) थोड़े गंधक के साथ एलवे की गोली बनाके देनेसे अर्शकी पीड़ा मिटतीहै (१९) गवाँरपाठेकी गिरको अजवाएन और नोंनके साथ खिलाने से पेटकी शूल और मंदाग्नि मिटतीहै (२०) इसके गाढे किये हुए रसमें शक्कर मिलाके देनेसे सुजाक मिटताहै (२१) इसके पत्तोंके ताजे रसको दूध और जलकी साथ पीनेसे सुजाक और गर्भाशयकी पित्तशोथ मिटतीहै (२२) इसके प्रयोग से औषधियोंकी चरपराहट और शरीरकी शिथिलता मिटतीहै (२३) इसके प्रयोगसे लघु विरेचन होताहै (२४) इसकी ताजी गिरमें शक्कर मिलाके खिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और दाह मिटतीहै और मूत्र अधिक आने लगताहै (२५) इसकी कोमल गिर खानेसे गठिया मिटतीहै (२६) इसकी गिरका दो ढाई अंगुल चोखूंटा गिरीदार टुकडा ले उसपर आधी रती कसीस और आधीरती हींग बुरकाके खिलानेसे तिल्ली और दस्तकी कबजी मिटतीहै (२७) आधी रती एलुवा आधी रती कसीस और आधीरती हींगकी गोली बनाकर देनेसे तिल्ली मिटतीहै (२८) इसके गिरदार टुकड़ेका एक ओरका छिलका दूरकर उसपर रसोत और हल्दी बुरका गर्मकर बांधनेसे बद बिखर जातीहै (२९) इसके एक ओरका छिलका दूरकर अग्निपर रख उसपर थोड़ी अफीम और हल्दी बुरकाकर उष्ण होनेसे उतार उसका रस निकालके पिलानेसे चौथैया ज्वर छूटताहै ।

संख्या (१९३)

(सं०) लघुघृतकुमारी ।

Aloe Indica

स्थान—यह छोटा गवाँरपाठा मद्रास अहातेके दक्षिण किनारेपर बहुत होताहै ।

पहिचान—इसके पीले पुष्प लगतेहैं जड़में इसके पत्तोंकी चौड़ाई लाल पुष्पवाले गवाँरपाठेके पत्तोंसे आधी होतीहै । इसके पत्ते प्रायः पौन हाथसे एक हाथ तक लम्बे होतेहैं ।

प्रयोग (१) इसके पत्तेकी गिरको ठण्डे पानीमें भली भाँति धो उस पर मिश्री बुरकाके खानेसे शरीरकी ऊष्मा और रुधिरके भ्रमण का वेग कम हो जाताहै (२) ऐसे साफ की हुई गिरपर फुलाईहुई थोड़ी फिटकड़ी बुरका के बांधनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (३) इसके गाढ़े कियेहुए रसकी एलुवे जितनी मात्रा देनेसे तीव्र विरेचन लग जाताहै (४ इसके गीले और सूखे रसमें बराबर गुणहैं (५) शरीरके ऊपरकी सूजनपर इसके ताजे रसका लेप करना लाभकारीहै (६) इसके ७॥ तोले ताजे पत्तोंको बनारकर उनमें १॥ मासे नमक मिलाके जलमें इतना गर्म करें कि औटने लग जावे तब छान उस में १॥ तोले मिश्री मिला ठंढाकर प्रातःकाल पिलानेसे विरेचन लगके तिल्ली कम हो जातीहै (७) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै ॥

—:o:—

संख्या (१६४)

(सं०) वीरास्रावः, एलीयकः, कृष्णबोलं, कुमारीसारोद्भवः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
एळयो	एलुवा	एळीयो	एळयाबोळ	मुसब्बर	एलुवा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		सिब्र	सिब्र	Aloe succotrina	The socotrine aloes of commerce The yamani or Moka aloes of Bombay

प्रयोग—(१) इसकी थोड़ी मात्रा देनेसे पेटकी पीडा मिटतीहै और बल बढ़ताहै (२) इसकी अधिक मात्रा देनेसे विरेचन लगताहै (३) रजस्वलाके रुकेहुए रुधिरको निकालनेके लिये अधिक मात्रा देनी चाहिये (४) स्त्रियोंके एक खास रोग जिसको स्त्रियोंके आवेशका रोग कहतेहैं उससे और आंतोंके पट्ठोंकी निर्बलतासे पैदाहुए बद्धकोष्ठको मिटानेके लिये इसका प्रयोग

करतेहै (५) मंदाग्नि, कामला और पांडुरोगको मिटानेके लिये इसको थोडी २मात्रा देनी चाहिये (६) इसको सिरके के साथ पीसकर मर्दन करनेमें त्वचाके रोग मिटतेहै (७) इसको और अफीमको जलके साथ पीसकर लेप करनेसे पित्त,शोथ और गुरडकी पीडा मिटतीहै (८) नाभिके चारों ओर इसका लेप करनेसे दस्त आके अफारा मिट जाताहै (९) पेडू अर्थात् नलोंपर इसका लेप करने से कष्टमे रजस्वला होना मिटताहै (१०) जो बचा रेचक औषधि नहीं पी संकता हो उसके पेटपर साबुनके साथ इसका लेप करनेसे दस्त साफ आजाता है (११) चोट या मोचसे पैदाहुई सूजनको मिटानेके लिये चूनेके पानीके साथ या गर्म पानीके साथ इसका लेप करना चाहिये (१२) एलुवा, अफीम, बोल और अंडेकी सफेदीका लेप करनेसे हर तरहकी सूजन बिखर जातीहै और उसकी पीडा मिट जातीहै (१३) इसके बराबर कत्था ले दोनोंको पीस के लगानेसे नाडीव्रण मिटताहै (१४) एलुवा और इंडोली दोनोंको बराबर ले महीन पीस,गर्म करके लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (१५) पीसाहुआ थोडासा एलुवा चमेलीके तेलमें डाल गर्मकर कानमें डालनेसे कानकी खुजली मिटतीहै (१६) गर्मीके कारण से कानमें कीडे पडगये हों तो एलुवा पानीमें पीस कानमें डालनेसे कीडे मरजातेहै (१७) एलुवा, सोहागा और बीज बोलकी चने प्रमाण गोलिया बना दिनमें दोबेर दो दो गोली देनेसे श्वासरोग मिटताहै (१८) सवजी दूरकिया हुआ जमालगोटा और एलुवा दोनों समान भाग ले बाछियाके मूत्रके साथ लोहेकी खरलमे लोहेके दस्तेसे घोट मूंगप्रमाण गोलिया बना बालककी अवस्था देखकर माके दूधके साथ गोली देनेसे पसलीके रोग मिटतेहै (१९) एलुवे का लेप करनेसे स्नायुक (नारू) गलजाताहै।

संख्या (१९५)

(सं०) चक्रमर्दः, प्रपुन्नाटः, एडगजः, दद्रुघ्नः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पुवाडिया	पुमाडू(र)	कुवाडियो	टाकळा	चांकन्दा	पवाड	तगिरिस

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
ताहाराच्चडि	सुगरेगिड्डा	सजसबोयाह	सगसबोया	Cassia Tora	The foe id cassia. Oval leaved cassia.

स्थान—पवांडके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं।

पहिचान—इसका पोधा २ फुट ऊंचा होताहै। यह वर्षाऋतुका वृक्षहै। इसके बीजोंमेंसे नीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) मलको ढीला करनेके लिये इसके पत्ते काममें लातेहैं (२) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे दाद और पाव मिटतेहैं. (३) इसके बीजोंको छाछमें ३ दिन भिगो महीन पीसकर शरीरपर मर्दन करनेसे पाव और खुजली मिटतीहै (४) इसके बीजोंको थूहरके रसमें भिगो गोमूत्रमें पीस छिछडेवाली गाठोंपर लेप करना चाहिये (५) इसके और करंजके बीजोंका लेप करनेसे दाद मिटताहै (६) इसके बीज और पत्तोंकी प्रकृति गलानेवाली या पतला करनेवालीहै (७) इनका लेप करनेसे त्वचाके वेरोग मिटतेहैं कि जिनमें चमडी कड़ी होजातीहै (८) महामारीकी गांठपर इसके पत्ते या बीजोंका लेप करतेहैं (९) इसकी जड़को नीबूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै (१०) इसके चेपदार और दुर्गंधवाले पत्ते सारक है, इस कामके लिये इनको ओटाकर पीतेहैं (११) जिन बच्चों को दांत उगनेके कारणसे ज्वर आताहो उनको इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये। (१२) पत्तोंको एरंडके तेलमें तल, पीसकर बिगडे हुए फोडोंपर लेप करतेहैं (१३) पाव या त्वचाके दूसरे रोगवाले रोगीको इसके पत्तोंके क्वाथसे स्नान कराना चाहिये (१४) इसके कोमलपत्तोंका शाक बनातेहैं (१५) इसके बीजोंको सेक पीसके या इनको ओटाके काफीकी ठौर काममें लातेहैं (१६) इसके बीज और आकडेके फूलोंको खट्टे दहीमें पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै (१७) पवांडके बीज १ सेर गायकादूध दोसेर घी पावभर और २ तोले गधक इनको ओटा दूध जलजानेके पीछे पीसकर मर्दन करनेसे दाद पांव और खुजली मिटतीहै (१८) इसकी जडको चावलोंके धोवनके साथ पीसके प्रातःकाल पिलानेसे जलमदर मिटताहै (१९) पवाड़के बीजोंके

४-४मासे चूर्णकी फक्की २१ दिनतक देनेसे कफ और खांसी मिटतीहै (२०) इसके बीजोंको पानीमें इतने दिनतक भिगोवें कि वे सड़जावें तब उनको पीसकर शरीरपर मर्दन करके गर्म जलसे स्नान करलेनेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (२१) इसके बीजोंके चूर्णको दही और जलमें दोतीन दिन भिगो- शरीरपर मलकर उष्ण जलसे स्नान-करनेसे झाई दूर होतीहै (२२) अत्तार- लोग सनायके पत्तोंमें इसके पत्ते मिला देते हैं।

संख्या (१९६)

(सं०) चचेंडा, चिचंडः, श्वेतराजी, अहीफला।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चचेंडा	चिचेंडा	पडोला	पडोळ	चिचिंएडा		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अङ्गरेजी
				Trichosanthes anguina.	The snake gourd

स्थान—चचेंडाकी वेलें हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोई जातीहैं।

पहिचान—इसके पीले पुष्प लगतेहै जब इसके फल पकतेहैं, तब वे एकसे तीन फुट तक लम्बे चमकदार और नारंजी रंगके हो जातेहैं। जबतक कच्चे रहतेहैं तबतक उनपर लम्बाईमें सफेद धारियें बनी रहतीहैं।

प्रयोग—(१) इसके बीज शीतल होतेहैं (२) इसके फल वात पित्त को मिटातेहैं। बल और रुचिको बढातेहैं और शोथ रोगवालेको बहुत हित- कारीहै जबतक इसके फल केवल ४ इञ्च लम्बे रहतेहैं तबतक उनका शाक बहुत स्वादिष्ट होताहैं।

संख्या (१९७)

चणकः, हरिमन्थः, कृष्णचूचुक., बालभोज्यः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चिणा	चने, छोले	चणया	हरभरे, चणे	बुट्, छोला	छोले	शेणगुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कडलै	करले	हिम्मस	नखूद	Cicer Arictinum	Gram. The common gramor Chick pea.

स्थान—चने हिन्दुस्थानमें सबठौर बोये जातेहै।

पहिचान—चनेके बूटे २ फुट ऊंचे होतेहै इनकी सींकोंपर आमने सामने कटुवां कंगूरेदार, कुछ गोल पत्ते लगतेहै। इनके शोशनी रंगके पुष्प लगतेहैं। इसकी डालीके थोडी २ दूर पर चनोंकी गेगरीयां लगतीहै उनमें १,२ या तीन चने निकलतेहैं।

प्रयोग—(१) चने पित्तविकार को मिटातेहै (२) मंदाग्नि, अजीर्ण और बद्धकोष्ठमें चनकाम्ल प्रयोग किया जाताहै. लोग भूलसे इसे चनखार कहतेहैं, इसको चणकाम्ल या चणकशुक्त कहना चाहिये। (३) चणकाम्ल बनाने की यह रीतिहै "कि जिन दिनोंमें ओस पडने लगे उन दिनों में सूरज उगनसे पहिले चनोंके खेतमें जाकर एक हल्की मलमल के टुकडेको चनेके बूटों पर फेरे जब वह गीला होजाय तब उसको चीनी, काच या मिट्टी अथवा पत्थर के बरतनमें निचोडके बोतलमें भरकर रखछोडे अथवा उस कपडे को नित्य भिगो २ के सुखा देनेसे वह कई दिनोंमें गाढा होजाताहै जब शाक आदि में खटाई देनी होतो उस कपडेमेंसे जरासा टुकडा कतर पानीमें भिगो मलके उस पानीको शाकमें डाल देतेहैं जिससे उसमें अच्छी खटाई होजातीहै। अतार लोग इसके बदलेमें गंधकके तिजाबको हल्का कर उसमें कुछ रंग देके चणकाम्ल के नामसे बेंच दिया करतेहैं" (४) गर्मीके दिनोंमें चणकाम्लको जलमें मिलाके पीनेसे ठण्ढाई रहतीहै (५) ६ मासे सिरका और ६ मासे चणकाम्ल मिला कर पीनेमे अजीर्ण मिटताहै, (६) अतिसार मिटानेके लिये इन दोनोंको मिलाकर कुछ दिनोंतक पिलाने चाहिये (७) इसको थोडे जलमें डालके पिलानेसे लू का असर मिट जाताहै (१०) चनेके

सूखे पत्तोंको राजपूतानेमें पानसी कहतेहैं। जब गीले पत्ते नहीं मिलें तब सूखे पत्तोंका ओटा उनका पुल्टिस बनाके मोच या उतरेहुए हाथ पैरको पीछा बैठाके उसपर बांधतेहैं (११) पत्तोंके ताजे रसमें जौखार मिलाके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१२) थोडे से चणकाम्लको पानीमें मिलाके ज्वरवाले को पिलानेसे उसकी तृषा और दाहकी घबराहट मिटजातीहै (१३) जिस स्त्रीके कष्टसे मासिक धर्म होता हो गर्म पानीमें एक चनेका बूंटा रखके उसपर उस स्त्रीको बैठा देना चाहिये अथवा चणकाम्लको जलमें डाल ओटाके उसका बफारा देना चाहिये (१४) जिस मनुष्यके शर्कराश्मरी होवे अथवा जिसके पथरी होनेकी सम्भावना होवे उसको चणकाम्लका सेवन बहुत कम करना चाहिये (१५) चनोंको पानीमें भिगा कर उस पानीको पीनेसे बल बढताहै (१६) जिस पानीमें चने भिगोये हों उस पानीको पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (१७) छोला का हिम पिलानेसे पित्तके विकार मिटतेहैं (१८) चणकाम्लमें नीमके कोमल पत्तोंको पीसके लेप करनेसे कोढ मिटताहै (१९) चणकाम्लको कुछ जलमें मिलाके पीनेसे तिल्ली कम होतीहै (२०) श्वासकी नलीके कफको मिटानेकेलिये रातको सोते समय सेके हुए थोडेसे चने खाकर ऊपर गर्म दूध पीलेना चाहिये (२१) जीका मचलाना मिटानेके लिये चणकाम्लको जलके साथ पीना चाहिये (२२) चणकाम्लमें लोंग बुरकाके पिलानेसे वमन मिटतीहै (२३) विसूचिकामें चणकाम्लका प्रयोग किया जाताहै (२४) गीले सेकेहुए चनों को मारवाडी भाषामें होले कहतेहैं ये खानेके काममें आतेहैं (२५) इनको पानीमें भिगोकर अन्तर्दाह मिटानेके लिये उस पानीको उष्णकालमें बच्चोंको पिलाया करतेहैं (२६) इनको पानीमें भिगोकर उस पानीको पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै (२७) इसके आटेका उबटना करनेसे शरीरका रंग गोरा हो जाताहै (२८) ५ तोले चनेकी दालको आधपाव जलमें भिगो प्रातःकाल रखकर मसले बूरा मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (२९) चनोंकी भुस्सी हुक्केमें तमाखूकी तरह पीनेसे हिचकी बन्ध होतीहै (३०) ३॥ तोले चने पाव पानीमें ओटा आधा पानी रखकर पिलानेसे जलंधर कम होताहै (३१) भुनेहुए चने और छीली हुई बादामकी गुली दोनों बराबर ले नित्य दोनों समय खानेसे बल बढताहै (३२) चनोंके

होले खानेसे वीर्य पुष्ट होताहै (३३) चनोंके आटेकी अलोनी रोटीमें घी डालकर खानेसे जोड़ोंकी पीडा मिटतीहै (३४) चनेके आटेमें गूगल मिला टिकिया बना उसको बदपर बांध उसपर नीमके गर्म पत्ते बाधनेसे बद बैठ जातीहै । सूखे-सेकेहुए चने खानेके काममें आतेहैं। चनेके आटेको बेसण कहते हैं । चनेकी दाल और बेसण के कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनतेहैं ।

संख्या (१९८)

(सं०) चन्दनं, श्रीखण्डं, मलयजः, गंधसारः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चन्दन	सफेदचन्दन	सुखड्यचंदन	चन्दन	चन्दन	सुफेदचन्दन	श्रीचन्दनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शन्दनकट्टे	श्रीगन्ध	संदलेअब्यज़	संदलेसुफेद जर्द	Santalum album hirium Myrtifolum	The white sandal wood tree

स्थान—चन्दनके वृक्ष मैसोर, कोयम्बटूर सलीमसे दक्खन मदूरा तक और उत्तर में कोल्हापुर तक बंबई अहाता, पूना, गुजरात, राजपूताना मध्य हिन्दुस्थान और हिन्दुस्थान के उत्तर भागमें किसी २ ठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान—चन्दनका वृक्ष छोटा होताहै, इसकी ऊंचाई ४० फुटतक होतीहै । यह १२ महीने हरा भरा रहताहै अर्थात् वसंत ऋतुमें पत्ते नहीं गिरतेहैं । इसके पेड़की गुलाई ३ फुटकी होतीहै, डालियां पतली और लटकती हुई होतीहैं । इसके पत्ते हलके होतेहैं और एक दूसरेके आमने सामने लगतेहैं । इसके पुष्प कुछ भूरे गहरे बैंजनी या लाल रंगके गंध रहित होतेहैं । फल काले रंगके लगतेहैं उनमें एक २ बीज निकलताहै । पृथ्वीमेंसे रस ऊंचा चढ़ानेवाली इसके पेड़के भागकी लकड़ी सफेद रंगकी और निर्गंध होतीहै । मध्य भाग की लकड़ी कुछ पीली, भूरे रंगकी और अत्यन्त सुगंधवाली होतीहै । चन्दनके बीजोंमेंसे गाढ़ा और चेपदार तेल निकाला जाताहै वह जलानेके काममें आताहै । चन्दनकी लकड़ीमेंसे जो तेल निकाला जाताहै वह स्वच्छ और पीले रंगका होताहै इसकी जड़ोंमेंसे भी बहुत अच्छा तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) चन्दन कई प्रकारके होतेहैं उनमें श्वेत, रक्त और पीत ये तीन मुख्यहै (२) चन्दनकी लकड़ी कड़वी ठण्डी और ग्राही होतीहै (३) यह पित्तविकार, वमन, ज्वर, तृषा और शरीरकी दाह को मिटाताहै (४) चन्दन का लेप करनेसे, मुहांसे ऊपर बढनेवाली जल युक्त पित्त शोथ, खुजली और छोटी फुन्सियां मिटतीहैं (५) इसको जलके साथ घिसके गाढा लेप करनेसे दाह युक्त सूजन मिटतीहै (६) ज्वरकी अधिक ऊष्मासे उत्पन्न हुई घबराहट मिटानेके लिये कनपटियों पर चन्दनका लेप करतेहैं (७) त्वचाके जिन रोगोंमें दाह और खुजली होवे उनपर इसका लेप करना चाहिये (८) चन्दनके प्रयोगसे पसीना आताहै (९) यह—रूक्ष, बलवर्द्धक, विषनाशक और हृदयका बल बढानेवाला है (१०) यह-हृदय, मस्तिष्क और आमाशय-की रक्षा करनेवालाहै (११) पित्तज्वरमें इसके प्रयोगसे शान्ति रहतीहै (१२) त्वचाके ऊपरके छाले मिटानेके लिये चन्दनके तेलमें नींबूका रस और कपूर मिलाके मर्दन करना चाहिये (१३) चन्दनके छोटे छोटे टुकड़े करके उनको थोड़े साजीखारके साथ पानीमें इतनी देरतक ओटाना चाहिये कि जबतक वे नरम पड़ जांय पीछे उनको उस जलमेंसे निकाल, शकरकी चासनीमें डालके मुरब्बा बना लेना चाहिये । इस मुरब्बेसे दाह और तृषा आदि रोग मिटतेहै (१४) नारियलके जलमें चन्दनका बूर मिलाकर पिलानेसे तृषा मिटतीहै (१५) उष्ण कालमें स्नान करनेके पीछे शरीर पर चन्दनका लेप करनेसे गर्मीकी चमचमाहट और बहुत पसीना आना बन्ध होजाताहै (१६) मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये चन्दनके कई प्रकारके प्रयोग करतेहैं। गायके दूधके साथ चन्दन के बूरकी फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१७) जहां शीतल मिरच आदि औषधियां मूत्रकृच्छ्रको नहीं मिटा सकतीहैं वहां चन्दनके तेलकी १० से ३० तक बूंदे गायके दूधमें डालके दिनमें दो तीन बेर पिलाना चाहिये (१८) दूध या दूधकी लस्सीमें इसकी ३० से ४० तक बूंदें डालके पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१९) ललाट या कनपटीपर चन्दनका तेल लगानेसे पित्तकी मस्तक पीड़ा मिटतीहै (२०) खांड में इसकी २० बूंदें डालके दिनमें दो बेर फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (२१) चन्दन को घिसके कनपटियां पर लेप करने से पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटती है

(२२) सफेद चन्दनको घिस गोली बना दिनमें दो तीन वेर खानेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै (२३) पित्तातिसारमें इसका प्रयोग किया जाताहै (२४) चन्दन और खीरा ककड़ीको सुंघानेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२५) चन्दन और कपूरको गुलाब जलमें घिसकर सुघानेसे पित्तकी मस्तकपीडा मिटतीहै (२६) चन्दन और धनियाके पत्ते सुघानेसे छींकें बन्ध होतीहैं (२६) चन्दनको शक्कर और मधुके साथ चटानेसे वमन बन्ध होतीहै (२७) चन्दनको मधु, मिश्री और चांवलोंके धोवनके साथमें लेनेसे पित्तातिसार मिटताहै (२८) इसके एक तोले चूर्णको आंवलोंके रस और मधुमें मिलाकर पिलानेसे वमन मिटतीहै।

संख्या (१६६)

(सं०) रक्तचन्दनं, क्षुद्रचन्दनं, ताम्रसारं, अर्कचंदनम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लालचंदन	लालचन्दन	रतांजली	रक्तचंदन	रक्तचन्दन	लालचन्दन	रक्तचन्दनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शोप्पुशन्दन	रक्तचन्दन	संदलेअहर्मर	सन्दलेसुर्ख	Pterocarpus Fsantalinus	Red sandal wood The sanders red or red sanders tree

स्थान—लालचन्दनके वृक्ष कुडापा, उत्तर अरकाट और करनूलके दक्षिण भागमें बहुधा मिलतेहै परन्तु अब मद्रास, बंबई और बङ्गालहातेमें भी बोये जातेहैं।

पहिचान—रक्तचन्दनका वृक्ष छोटा होताहै। यह सूखी और बहुधा पथरीली भूमिमें, उष्ण और रूक्ष देशोंमें होताहै, इसकी लकडीमेंसे लालरंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) यह ग्राही और बलवर्द्धकहै और बहुतसे ग्राही प्रयोगोंकी औषधियोंमें मिलाया जाताहै (२) इसका इकल्लेका प्रयोग बहुत कम किया जाताहै (३) इसका लेप करनेसे दाह और शोथ मिटतीहै (४) ललाट पर लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (५) कई रोग मिटानेके लिये जो तेल बनाये

जातेहैं उनकी औषधियोंमें लालचन्दन मिलाया जाताहै (६) रक्तातिसारमें लालचन्दनका प्रयोग किया जाताहै (७) जब कि अतिसारमें रुधिर और पित्तका सम्बन्ध होताहै तब श्वेत और रक्त, दोनों चन्दन दिये जातेहैं (८) तिलोंके तेलमें रक्तचन्दनको मिलाके स्नान करनेके पीछे शरीरपर मर्दन करने से रुधिर शुद्ध होताहै (९) पित्तविकार और त्वचा के रोग मिटानेके लिये रक्तचन्दन खाने और लगानेके काममें आताहै (१०) ज्वर की उष्मा कम करनेके लिये इसको पानीमें घिसके पिलाना चाहिये (११) फुन्सियों पर इस का लेप करना चाहिये (१२) नेत्रोंकी ज्योति बलवान् करने लिये कनपटी और आंखके पपोटों पर इसका लेप करना चाहिये (१३) पसीना लानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (१४) इसको जलमें घिसके इन्द्री आदि की त्वचा छिलजाने पर लेप करना चाहिये (१५) पुराने आमातिसारमें मवाद बन्ध होनेके पीछे इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (१६) इसको सेंधेनमकके साथ स्त्रीके दूध में घिसकर नास देनेसे हिचकी बन्ध हो जातीहै (१७) इसके साथ कपूरको घोटकर कई दिनों तक पीनेसे नकसीर बन्ध होजातीहै (१८) इस प्रयोगसे मासिकधर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का निकलना बन्ध होजाताहै ।

संख्या (२००)

चन्द्रशूर, वासपुष्पा, रक्तराजी, कालमेषा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
असाळू	हालों	अशेळियो	अहाळीव	हालिम	हालू	अदियालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अलिविरै	अलिवीज	जरजीर	तराहतेजक	Lepidium Sativum	The garden cress The Cress

स्थान—असालू हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जाताहै ॥

पहिचान—इसके बीजोंमें चेप होताहै ॥

प्रयोग—(१) असालू वल वढातीहै और रुधिरको शुद्ध करतीहै (२) यह हिचकी, अतिसार और रुधिरविकारसे जो त्वचाके रोग होतेहैं उनमें बहुत उपकारीहै (३) यह उष्ण और रूक्षहै (४) इसके सेवनसे तिल्ली आदि बढेहुए यंत्र अपने योग्य आकारपर आजातेहैं (५) सर्दीके कारणसे जो कोई उपद्रव होजाताहै उसको मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (६) इसका क्वाथ पीनेसे आमाशयकी पीडा मिटतीहै और आमाशय कुछ उत्तेजित होजाताहै (७) गर्भवती स्त्रीको इसका क्वाथ कभी नहीं पिलाना चाहिये (८) इसके बीजोंको कूट नींबूके रसमें मिलाकर लेप करनेसे शोथ बिखर जातीहै (९) यह लघु और ग्राहकहै (१०) इसके प्रयोगसे अतिसार और आमातिसार मिटतेहैं (११) इसका क्वाथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (१२) जिन रोगोंमें सरसों काम देतीहै उन रोगोंमें असालू भी काम देतीहै (१३) दाह और खुजली पैदा करनेवाले पदार्थोंके विष को उतारनेके लिये इसके बीजोंका गाढा चेप निकालके पिलाना चाहिये क्योंकि यह विषैले परिमाणुओंको गलेफ देताहै और आमाशय और अंतड़ियोंकी कलाओंके ऊपर एक प्रकारका ढकन बना देताहै (१४) इसके बीजोंका चेप बंबूलके गोंदकी ठौर काममें आसकताहै (१५) इसकी टहनिया ओटा पिलानेसे श्वास और सूखा कास मिटताहै (१६) इसके शर्बतसे रक्तार्श मिटताहै (१७) इसकी जडके चूर्णकी फकी देनेसे दस्तकी बार २ शंका होना बन्द होजाताहै (१८) इसको ओटाके पिलानेसे सब शरीरमें फैलाहुआ उपदंशका उपद्रव मिटताहै (१९) इसके बीजोंको दूधमें ओटाके पिलानेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (२०) इसके बीजोंकी मात्रा ४ से १० मासे तककी है (२१) इसके क्वाथकी मात्रा २॥ से ७॥ तोले तककी है (२२) इसका क्वाथ दिनमें ३-४ बेर पिलाना चाहिये। इसका क्वाथ बनानेकी यह रीति है कि २ तोले दरगचे हुए इसके बीज और ३॥ मासे दरगचीहुई मुलहटीको १२॥ छटांक पानीमें बन्ध बरतनमें १० मिनिट तक ओटाके छान लेना चाहिये (२३) इसके १०० तोले बीजोंमें से ५७ तोले तेल निकलताहै वह तेल जैसा होताहै।

संख्या (२०१)

(सं०) चम्पकः, चाम्पेयः, शीतलः, हेमपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चपो	चम्पा सोनचपा	चपो पीलोचपो	चांपा	चाँपाफुल	चम्पा	सम्पङ्गि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शम्पां	सम्पिके(ग)			Michelia champa a M Rufinervis	

स्थान—चम्पाके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बागों में बोये जाते हैं और रावी के दक्षिणकी ओर पश्चिमोत्तर हिमालय, नैपाल, आसाम, ब्रह्मा, नीलगिरी और पश्चिमी घाटोंके जंगलोंमें कनारा तक अपने आप उगतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ६० से १०० फुटतक ऊंचा और बहुत सुन्दर होताहै। इसकी शाखें खडी फैलतीहुई और पास२ होतीहैं जिससे इसकी छाया सघन घन बनी रहतीहै। इसके उत्तम सुगंध वाले पीले पुष्प देश भेदके कारणसे अलग २ ऋतुओंमें लगतेहै परन्तु विशेष करके वैशाखमें लगतेहै और फल शीतकालमें पकतेहै, इसके पत्ते लम्बे और नोकदार होतेहै वे वसंतऋतुमें नहीं गिरतेहै इसके बीज छोटे मटरके बराबर होतेहै। इसके पुष्पोंमें से रंग निकाला जाताहै। इसके बीजोंमेंसे गाढा तेल निकलताहै, इसके पुष्पोंमें से उड़नेवाला तेल निकलताहै, इसके पत्तोंका सुगंधित अर्क खेंचा जाताहै, इसके पुष्पोंसे सुगंधित तेल बनाया जाताहै वह शरीर और बालोंमें लगानेके काममें आताहै।

प्रयोग—(१) इसके पुष्प और फल कड़वे और ठण्डेहै, ये मदाग्नि हृल्लास और ज्वर छुडानेके लिये काममें आतेहै (२) पत्तोंको घीसे चुपड उन पर जीरेका चूर्ण बुरका अमृताल्लीके शिरपर बाधनेसे उन्माद, प्रलाप और उन्मादकी भड़क मिटतीहै (३) इसके पुष्पोंको तिल्लीके तेलमें पीस शिरपर लेप करनेसे भँवल मिटतीहै (४) पुष्पोंको तेलमें पीसकर नाकके ऊपर लेप करने से नासिकासे दुर्गंध युक्त पूयका बहना बन्ध होताहै (५) पुष्पोंको पीस ठंढाई की तरह पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके मूत्रकृच्छ्र और वृक्क के रोग

मिटतेहैं (६) इसकी सूखी जड़ और जड़की छालको पीस दहीमें मिलाके पीपयुक्त
फोड़ेपर बांधनेसे वह फोड़ा बैठ जाताहै या पक जाताहै (७) इसका
फांट करके पिलानेसे मासिक धर्मके समयमें कष्टका होना बन्ध होजाताहै (८
इसके पुष्पोंसे बनायाहुआ तेल लगानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (९) छोटे जोडोंकी
शोथ पर इस तेलका मर्दन कर ऊपर इसीके पत्ते बाध देने चाहियें (१०
दुखनीहुई आंखमें इस तेलकी एक दो बूंदे डालनेसे उसकी पीडा मिटती है (११
इसके बीजोंका तेल पेटपर धीरे २ मर्दनकर तपानेसे आध्मान मिटताहै (१२) इसके
कोमल पत्तोंको जलमें मसल उसकी बूंदें आखमें डालनेसे आंखकी ज्योति निर्मल
हो जातीहै (१३) पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके
पिलाना चाहिये (१४) इसकी छालका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता
(१५) इसकी छाल और पुष्प उत्तेजकहै (१६) इसकी छालके चूर्णको
मधुके साथ चटानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (१७) इसकी छाल और अतीस
के चूर्णकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (१८) पैरोंकी बिवाई पर इसके
बीज और फलका लेप करना चाहिये (१९) इसकी जड़का काथ पिलानेसे
विरेचन लगताहै (२०) इसके पुष्पोंका तेल बनाके मर्दन करनेसे बांइटे मि
टतेहैं (२१) इसके पुष्पोंके फाटमें काला नोंन बुरकाके पिलानेसे पेटकी बाव
की पीड़ा मिटतीहै (२२) आमाशयकी शूल मिटानेके लिये इसके पुष्पोंका
काथ पिलाना चाहिये (२३) इसके पुष्पोंको मधुके साथ चटानेसे बल बढता
(२४) इसके ताजे पत्तोंका २ तोले रस या उसमें थोड़ा मधु मिलाकर पि
लानेसे पेटमेंसे कीड़े निकल जातेहैं (२५) गठियाकी पीड़ा मिटानेके लि
इसके ताजे पुष्पोंसे बनाये हुए तिलोंके तेलका मर्दन करना चाहिये (२६
इसके हिम या काथकी मात्रा ५॥ तोलेकीहै (२७) इसकी छालका काथ पि
लानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (२८) इसकी छालको नागर
बेलके पानमें रखके खातेहैं (२९) तुरंतके टूटे हुए ४ पुष्पोंको २ तोले मधुके
साथ चटानेसे चित्तोन्माद मिटताहै (३०) इसके पुष्प, छाल और पत्तोंको
पानीमें पीसकर मर्दन या उबटना करनेसे झांप (झाई) दूर होतीहै (३१
इसके पुष्पोंको नींबूके रसमें पीसके मलनेसे मुखकी झाई मिटतीहै ।

संख्या (२०२)

(सं०) भूमिचम्पकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	भुँइचम्पा	भोंयचंपो	भुइचाफा	भुँइचाँपा		कोरंडकलवो

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Kaempferia rotunda	

स्थान—भुँइचम्पेके वृक्ष हिन्दुस्थानके आर्द्र और उष्ण देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसके कद और जड़के आटेका रंग पीला होताहै और स्वादमें कड़वा चरपरा और कपूर जैसा होताहै।

प्रयोग—(१) इसके पंचांगको पीस मरहम बनाके लगानेसे ताजा घाव तुरंत मिलजाताहै (२) इसके चूर्णकी फकी देनेसे शरीरमें कहीं भी रुधिर या पूय जमाहुआ हो निकल जाताहै (३) इसकी जड़का लेप करनेसे गलगंड मिटताहै (४) इसकी जड़का काथ पिलानेसे जलमय सर्वांगशोथ मिटतीहै (५) पेटकी शूल मिटानेके लिये इसकी जड़का काथ पिलाना चाहिये (६) इसकी जड़ या कंदका लेप करनेसे शोथ उतरतीहै (७) फोड़ेको जल्दी पकानेके लिये इसकी जड़का पुल्टिस बनाके बांधना चाहिये।

संख्या (२०३)

(सं०) चव्य, चाविका, चवक, कोलवल्ली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चव्य	चव्य, चवै	चवक	चवक	चई, चैइगाछ	चवक	चव्यमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
चव्य, शव्य	चव्य			Piper chaba; Chavica officinarum	

स्थान—पञ्चाब के पूर्व हिन्दुस्थानमें बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) इसका फल उत्तेजकहै (२) इसके फलके प्रयोग से प्रतिश्याय और पेटकी पीड़ा मिटतीहै (३) इसके पुष्पोंके प्रयोगसे कृत्रिम विष, श्वास, त्रास और क्षय रोग मिटताहै (४) यह उष्ण, चरपरी, रोचन और दीपन होतीहै। कृमि, कास, श्वास, शूल, वात, कफ ज्वर और अर्श की पीड़ा मिटातीहै। इसकी लकड़ी और जड़ रंगने के काम में आतीहै।

संख्या (२०४)

(सं०) चांगेरी, क्षुद्राम्ला, चुक्राम्ला, दंतशठा

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	चांगेरी	आम्बोती	आंबवती	आमरुल्शाक	खटकल	पुलिचिंत

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पुलियारै(इ)	पुल्लपुलुने			Oxalis Corniculata Repens	The Indian sorr[illegible] Bladder dock

स्थान—चांगेरी हिन्दुस्थान के और सीलोन के अधिक उष्ण भागों में होती है।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते ठण्डे, शान्ति करनेवाले, पेटकी शूल और मसूड़ोंका असाध्य रोग मिटानेवालेहै (२) ज्वर आमातिसार और मसूड़ोंके रोग मिटानेके लिये इसके पत्तों का प्रयोग करना चाहिये (३) चांगेरी आदि घृत बनाकर गुदा पर लेप करनेसे उसका निकलना बन्द होजाताहै (४) इसके पत्तोंका ताजा रस पिलानेसे धतूरेका मद उतरताहै (५) इसके ताजे पत्तोंकी चटनी बनाके खिलानेसे भूख और पाचन-शक्ति बढ़तीहै (६) जिस शोथमें अधिक दाह और पीड़ा होती हो उसको मिटानेके लिये इसके केवल पत्तोंका पुल्टिस या पत्तोंको पानीमें पीसके पुल्टिस बनाके बांधना चाहिये (७) इसके पत्तोंको कुछ पानीमें औटा छान उसमें सफेद कांदेका रस मिलाके लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (८) चर्म मेद या मदकी

गांठ पर इसके पत्तोंके रसका लेप करना चाहिये (९) इसके रसका अंजन करनेसे आंखका जाला कटताहै (१०) बच्चोंका आमातिसार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका अर्क पिलाना चाहिये (११) मसूढ़ोंका असाध्य रोग मिटाने के लिये इसके पत्तोंके रससे गंडूष कराना चाहिये (१२) इसके पत्तोंके काथ में सेकीहुई हींग बुरकाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (१३) इसके पत्तों के रसका शर्बत बनाके पिलानेसे तृषा मिटतीहै (१४) पित्त रोग मिटाने के लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (१५) इसके पत्तोंको ठंडाईकी जैसे घोट छान उसमें बूरा डालकर पिलानेसे अंतर्दाह मिटतीहै (१६) इसके सूखे पत्तोंसे दांतोंका मंजन करना चाहिये (१८) इसके पत्तों को मुखमें पानकी जैसे रखनेसे मुखकी दुर्गंध मिटतीहै ।

संख्या (२०४)

(सं०) चित्रकः, दहनः, व्यालः, कालमूलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी.
चित्रक	चित्रक, चीता	चित्रो, चिंत्रो	चित्रक	चितेगाछ	चित्रा	चित्रमूलमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
चित्रमूल	चित्रमूल	शैतरज	बेलखुरिंदा	Plumbago zeylanica P auriculata.	

स्थान—चित्रक हिन्दुस्थानमें बहुधा सब ठौर उगतीहै, परंतु दक्खन प्रायः द्वीप और बंगालमें बहुत होतीहै।

प्रयोग—(१) चित्रककी जड़में वेही गुणहैं जो रक्त चित्रककी जड़में हैं, परंतु इसकी जड़में शक्ति कमहै। यह पाचनशक्ति और भूखको बढ़ाती है (२) यह मंदाग्नि, अर्श, सर्वांग, जलमयशोथ, अतिसार, त्वचाके रोग और दूसरे रोगोंको मिटातीहै (३) पीपवाले फोड़ेके मुंह करनेके लिये इसकी छालका लेप करना चाहिये (४) छाला उठानेवाली या जलानेवाली

दूसरी औषधियोंमें रक्त चित्रककी छाल मिलाई जातीहै (५) इसकी फकी लेनेसे कफके उपद्रव मिटतेहैं (६) इसका लेप करनेसे गठियाकी पीडा मिटतीहै (७) ग्वारपाठेकी गिरके ऊपर चित्रककी छालके चूर्णको बुरकाके खिलानेसे तिल्ली मिटतीहै (८) चित्रककी छालको दुग्ध या शुक्त या नमक और जलके साथ पीसके कोढ और दूसरे प्रकारके त्वचाके रोगों पर लेप करना चाहिये अथवा इन्हीं औषधियोंके साथ पीस पुल्टिस बनाके उस ठौर पर इतनी देर तक बंधा रखना चाहिये कि जबतक छाला न उठे। इस पुल्टिसको गठियाकी शोथपर १५—२०मिनिट तक बंधा रखनेसे लाभ होताहै (११) इसके ३॥ मासे चूर्णकी फकी देनी चाहिये (१२) इसके मुखमें रखनेसे लाळ बहने लगजातीहै (१३) पसीना लानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (१४) विगडे हुए घावपर इसका दूध लगाना चाहिये (१५) इसके दूधके लगानेसे खुजली मिटतीहै (१६) इसके क्वाथ और कल्कसे सिद्ध कियेहुए घीका सेवन करनेसे संग्रहणी मिटतीहै (१७) इसकी जडको पीसकर लेप करनेसे अर्श मिटताहै। अथवा इसकी जडकी छालके चूरनको दही या तक्र के साथ पीना चाहिये (१८) इसके चूर्णके आवलोंके रसकी ३ भावना देके उसको गोघृतके साथ रात्रिमें चटानेसे पांडुरोग मिटताहै (१९) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे नकसीर बन्ध होतीहै (२०) इसका लेप या मर्दन करनेसे मंडल कुष्ठ मिटताहै (२१) १ तोले चित्रककी जडके चूर्णको मधुमें चटानेसे बालक सुखसे पैदा होजाताहै (२२) इसकी जडके चूर्णको तेलमें पकाके उस तेलका तालुएपर मर्दन करनेसे मूषेका विष उतरताहै (२३) इसकी जड़को पीसकर मृत्तिकाके पात्रमें लेप कर उसमें दही जमा उसको उसीमें विलोकर उस छाछको पिलानेसे अर्श मिटताहै (२४) चित्रक और देवदारुको गोमूत्रमें पीसके लेप करनेसे श्लीपद रोग मिटताहै।

(संख्या (२०६)

१ (सं०) रक्तचित्रकः, महाङ्ग, रुद्रांह्वः । —)

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलङ्गी
लालचित्रक	लालचीता	रातोचित्रक	रक्तचित्रक	रक्तचिता	[illegible]	शिवपुचित्रि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी
				Plumbago Rosea.	Rose colored Lead wort

प्रयोग—(१) इसकी जड़को छाला उठानेके काममें लातेहैं (२) इसकी जड़ चरपरी और उत्तेजक है (३) इसकी जड़को तेलमें मिलाकर मर्दन करनेसे गठिया और पक्षाघात मिटताहै (४) इन रोगोंकी साधारण दूसरी औषधियोंमें इसको मिला चूर्ण बनाके फकी देनी चाहिये (५) इसकी जड़के पुल्टिस से छाला उठानेमें शोथ तो अधिक होतीहै परन्तु छालेमें जल कम निकलताहै (६) इसकी जड़की छाल और थोड़े आटेका पुल्टिस बनाके चमड़ीपर आध घंटे तक बांधकर उतार लेना चाहिये, इससे १२ से १८ घंटे तकके समयमें उतनीही ठौरमें छाला उठजायगा किसी २ के इससे दाह और पीडा तो अधिक होतीहै परन्तु छाला छोटा उठताहै और घाव जल्दी नहीं भरताहै (७) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे तीव्र विषका काम करतीहै इस लिये इसका प्रयोग करनेमें सावधानी रखनी चाहिये (८) इसकी सूखी जड़की छालके प्रयोगसे कोढ और उपदंश मिटताहै (९) दुःखतीहुई आंख पर इसके दूधका लेप करना चाहिये (१०) अटके हुए गर्भ या छोडको गर्भाशयमेंसे निकालनेके लिये इसकी जड़को गर्भाशयके मुंहके भीतर रख देना चाहिये (११) इसकी कोमल दहनियोंका लेप फोड़ेपर करना चाहिये (१२) इसके दूधका लेप करनेसे खुजली मिटतीहै ।

संख्या (२०७)

(सं०) चिरपोटा, कुंतली, फलाम्ला, दीर्घपत्रा, ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	पंनसोखा	पर्पोटी	चिरपोटाणी			

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Zanonia indica Physolis minima. P. Indica	

स्थान—यह आसाम पूर्वी बंगाल दक्खन प्रायद्वीप मलबार घाट और सीलोनमें होतीहै।

गुण—यह ठंडी, रूक्षहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंको मक्खन निकाले हुए दूधमें पीसकर लेप करनेसे पीडा मिटतीहै (२) ज्वर मिटानेके लिये भी इसका प्रयोग करतेहैं (३) इसका फल तीव्र विरेचकहै (४) वडे २ फोडे और गांठोंसे नसोंमें जो दाह और खुजली हो जातीहै उसको मिटानेके लिये इसके पत्तोंको जलमें औटाके स्नान कराना चाहिये (५) इसके पत्तोंको दूध और मक्खनके साथ पीसकर लगानेसे वाइटे और पट्ठोंकी ऐंठन मिटतीहै (६) इसके पत्तोंका ताज़ा स्वरस पिलानेसे विषैले जीवोंके काटनेसे जो विष चढताहै वह उतर जाताहै।

संख्या (२०८)

(सं०) चीनक, काककङ्गुः, श्लक्ष्णक, शरलक्ष्णा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलंगी
चीणो	चीना,चैना	चीणो	राले	कानीधान	चानो	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		दुखन	अरज़न	Panicum miliaceum P millium	Millet Common mill

स्थान—संयुक्त प्रदेश, बुंदेल खंड, पंजाब और बडोदा आदि बहुतसे

देशोंमे इसकी खेती होतीहै। बुंदेल खण्डमे यह दो प्रकारका होताहै—एक फि-कई नामसे और दूसरा राली नामसे प्रसिद्धहै। ये दोनों वर्षाऋतुमें बोय जा-तेहै। इनमें फिकई जातिके को कुछ पहिले गातेहै। हिमालयमें इसको शीतकाल मे बोतेहै। शिमला प्रान्तके मनुष्य इसकी रोटी बनाके खातेह उसको चनट्टी कहतेहै। १०० तोले चनमसे ६६। तोले मैदा और ३॥ तोले तेल निकलताहै। इसको चावलोंकी भाति राधकर खातेहै। बिहारमें इसको रांधकर या सेककर खातेह। इसको मीठे चांवलोंकी भाति राधकर भोजन करतेह। उपवासके दिन इसका फलाहार करतेहैं।

प्रयोग—(१) यह अन्न शीघ्र पचताहै, और पुष्टिकारक है।

संख्या (२०६)

(सं०) चुक्र, चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलङ्गी
चूका	चूकेकाशाक	खटीभाजी चूका	चुका	चुकोपॅला	चूक	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हम्माज़	तुरस्था	Rum x vesic rius	Sured Bladuer dock.

स्थान—चूके का शाक हिन्दुस्थान के बहुत से बागो में बोया जाता है।

प्रयोग—(१) चूके का रस शीतल सारक और कुछ मूत्रवर्द्धक है (२) इसके रसमें नमक डाल के पिलानेसे दृष्लास मिटताहै (३) इसके पचांगका रस पिलानेसे आमाशयकी दाह मिटतीहै (४) इसके रसमें सोंठ डालके पिलानेसे भूख बढतीहै (५) पटम चलनेवाले कीड़ों के विषकी और विच्छू के डंशकी पीडा मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पीसके लेप करना चाहिये (६) इसके बीजोंका सेक चूर्ण बनाके फक्का देनेसे आमातिसार मिटताहै (७) गुण—यह उष्ण बहुत खट्टा सारक, रोचक और पचनेमें हल्का होताहै। शूल-गुल्म, मन्दाग्नि, हृदय की पीडा, आमवात, तृषा, वमन, कफ, वात और

मुख के विरसपन को मिटाता है, पित्त को बढाता है और मल की गांठ को बिखेरता है ।

संख्या (२१०)

(सं०) चर्णं, सुधा, सौधभूषणकं, शिलाक्षारम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चूनो	चूना	चुनो	चुना	चून, चुन	चूना	सुन्नपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शुन्नाम्बु	सुण्णद्द	किलस्	आहक		Lime, Carbonate of lime Quick lime

प्रयोग—(१) चूना, सज्जी, मोरथुथा और सोहागे को पानीमें पीसके गांठ और मस्से पर लेप करतेहैं (२) चूनके पानीमें तिलोंका तेल और शक्कर मिलाके पिलानेसे किसी दूसरी औषधिसे नहीं मिटनेवाला मूत्रकृच्छ मिटताहै (३) पागल कुत्तेके दंश पर गीले चूनेका लेप करतेहैं (४) ५ तोले कलीको ५ सेर पानीमें काकदार शीशीमें बुझा २, ३ मिनट तक हिलाकर रख छोडें इसको १२ घंटे पहिले काममें न लावें जब चूना पेंदेमें जम जाय तब उस नितरेहुए पानीमेंसे २॥ से ५ तोले तक पिलानेसे अम्लपित्त मिटताहै (५ चूनेका पानी बहुधा नया बना रखना चाहिये । उसके काक मजबूत रखना चाहिये, जिससे हवा न घुससके (६) चूनका पानी पिलानेसे बच्चेके दूधके विकार नहीं होतेहैं (७) चूनेका मीठा पानी बनानेकी यह रीति है कि २॥ तोले चूनेको ५ तोले चीनी शक्करके साथ खरल करके ५॥ पाव पानीमें मिलाकर काकदार शीशी में भरकर बन्ध करके रख छोडें जब वह पानी नितरजाय तब उसमें से १५, २० बूंद दूधमें मिलाके बच्चेको दिनमें २, ३ बेर पिलाना चाहिये (८) जिसको खट्टी डकार आतीहो, हृदय में दाह हो या अम्लपित्तसे अजीर्ण रहने लगगया हो, उसको पौनेचारसे ५ तोले तक चूनेका पानी पिलाना चाहिये (९) अजीर्ण से जिसके मूत्र थोडा उतरने लग गया हो और बहुत

पीला होगया हो, खट्टी डकार बहुत आने लग गई हो और वमन होने लग गई हो उसको दूधमें चूनेका पानी मिलाके पिलाना चाहिये (१०) जिसको अम्लपित्तसे अतिसार होगया हो उसको चूनेके पानीमें बंबूलका गोंद या चेपदार दूसरी औषधि मिलाके पिलाना चाहिये (११) चूनेके पानीमे बराबर निवाया कियाहुआ दूध और गोंद मिलाके गुदामे पिचकारी देनेसे अतिसार मिटताहै (१२) बच्चेको अपनी माके दूधके सिवाय और कोई बनाईहुई खुराक खिलानेसे जो अतिसार और वमन होजाय तो उसको २॥ पाव दूधमें छठा या चौथा हिस्सा चूनेका पानी मिलाके पिलाना चाहिये। ऐसे अतिसार और वमनको चूनेका मीठा पानीभी मिटाताहै (१३) जब किसी भी औषधि से वमन बन्द नहीं होवे तो चूनेके पानीको दूधमे मिलाके पिलाना चाहिये (१४) इस पानीको दूधमें मिलाके पिलानेसे बढेहुए ज्वरकी वमन मिटतीहै (१५) पीले बुखारमें काली वमनको रोकनेके लिये चूनेका पानी और दूध बहुत उपकारीहै (१६) एक भाग चूनेके पानीमें दो या तीन भाग पानी मिलाके पिचकारी देनेसे श्वेतप्रदर या दूसरे प्रकारके पानी बन्ध होजातेहै (१७) दूधमें चूनेका सेरा तोला पानी मिलाके दिनमें ३, ४ वेर देनेसे कभी २ गंडमालामें लाभ होताहै (१८) जिस गंडमालामें पीपवाले फोडे होने लगे और लगातार घाव पड़ते जाँय तो इस दूधके पीनेसे वे फोडे मिट जातेहैं और घाव भर जातेहै (१९) यह दूध १२ घंटे से अधिक न पडा रहना चाहिये (२०) गंडमाला सम्बन्धी या दूसरे प्रकारके फोडे जिनमें बहुत पीप निकलता हो उनपर चूनेका पानी लगाना चाहिये (२१) सवा पाव चूनेके पानीमें १५ रती रसकपूर मिलाके उपदंश सम्बन्धी फोडे या ऐसे फोडे कि जो भरे नींगले होगये हों उनपर लगाना चाहिये (२२) इसको अंग्रेजीमें Black wash ब्लैकवाश्य कहतेहै इसमें कपडेको भिगोकर उन फोडोंपर लगातार धरा रखना चाहिये (२३) बहुत स्राव खुजली और दाहवाले बहुतसे त्वचाके रोगोंमें केवल चूनेके पानीमें या तेल मिलेहुए चूनेके पानीमें कपडा भिगोकर उसे त्वचा पर रखनेसे बहुत फायदा होताहै (२४) स्तनकी बीटलीके घावपर या जो बीटली तडक गई हो उसपर चूनेका पानी लगाना चाहिये (२५) चूनेके पानीमें बराबर पानी या दूध मिलाके नाक या कानमें उसकी पिचकारी देनेसे उनका बहना बन्ध हो जाताहै (२६)

जयरोगवाले मनुष्यको दूधमें चूनेका पानी मिलाकर पिलाना चाहिये (२७) बहुमूत्रवालेके लियेभी यह प्रयोग उपकारीहै (२८) जिस बच्चेकी गुदामें चूर्ण (कद्दूदाने) पड गये हों या आंतमें पिटाट पैदा हो गई हो तो ८, १० तोले चूनेके पानीकी जबतक वे न निकलजाय तबतक तीनचार वेर पिचकारी देना चाहिये (२९) चूनेका पानी पिलानेसे संखियेका विष उतरताहै (३०) अग्निसे जले हुएपर या खाली दाजे हुएपर चूनेका पानी और अलसीका तेल बराबर मिलाके लगाना चाहिये, जहां अलसीका तेल न मिले वहां तिलोंका तेल लेलेना चाहिये, इन दोनोंको हिलाकर एस मिलालने चाहिये कि दोनोंका एक रूप होजाय, तब उसमें कपडा भिगोके घावपर लगातार आवश्यकतानुसार लगा रहने देना चाहिये (३१) रुईके फोएको इसमें भिगोके माता (शीतला) के व्रणोंपर धरा रखनेसे वे ऊंडे नहीं पडतेहैं (३२) इसके पानीसे धोनेसे बगल गंध मिटतीहै (३३) चूना और शहद मिला कपडेपर लगा उसको बदपर बांधनेसे बद बिखर जातीहै (३४) चूना और घी मिलाके उठते हुए फोडेपर लगानेसे वह बढने नहीं पाताहै (३५) चूनेको नींबके रसमें मिलाकर मर्दन करनेसे मकडीका विष उतरताहै (३६) पुराने चूनेको दहीके जलमें पीसके तेलसे जले हुए व्रण पर लगाना चाहिये (३७) चूने और नासादरको मिलाकर सुंघानेसे कफ और वातसम्बन्धी मस्तकपीडा मिटतीहै (३८) चूने और बिडलवणको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे नारू मिटताहै (३९) चूनेको मधुके साथ पीस तिल्लीपर लेपकर उसके ऊपर अंजीरके पत्ते बांधनेसे तिल्ली मिटतीहै (४०) चूना और साबुन महीन पीसके लगानेसे प्रीयका घाव मिटताहै (४१) चूना और सज्जी जलके साथ पीस मस्सेको जंगली कंडेसे रगडकर २, ३ दिन तक लगानेसे मस्से मिट जातेहैं (४२) चूनेको तेलमें मिलाकर जिस दिन फोडा उठे उसी दिन लगानेसे नहीं बढता है (४३) चूना, तेल और चिरौंजी पीसके मर्दन करनेसे मकडीका विष दूर होताहै ।

संख्या (३११)

चोपचीनी; अमृतोपहिता

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चोबचीनी	चोबचीनी	चोपचीनी	चोपचीनी	तोपचिनि	चोबचीनी	परगिचक्का

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
परगिशक्के	परंगिचक्के	खुशबु सीनी	बेखचीनी	Smilax China b Japanica.	China root, or weed

स्थान—चोबचीनी जापान और चीनसे हिन्दुस्थानमें आतीहै।

गुण—यह चरपरी, कडवी और उष्णहै क्षीण मनुष्योंको पुष्ट करतीहै और अग्नि बढाती है। बद्धकोष्ठ, आफरा, शूल, वातरोग, अपस्मार, उन्माद, शरीरकी पीडा, कुष्ठ और विसर्पको मिटातीहै।

प्रयोग—(१) चोबचीनी उपदंश और गठिया के रोगोंमें बहुत उपकारीहै (२) यह पुरुषार्थ पैदा करनेवाली औषधियों में मिलाई जातीहै (३) कोढ मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है (४) त्वचा के पुराने रोग मिटानेके लिये इसके चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये (५) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (६) निर्बल मनुष्योंको इसका सेवन करानेमें बडी सावधानी रखनी चाहिये, क्योंकि यह हृदयकी यथोचित धडकनेकी संख्याको कम करतीहै (७) यह मासको बढातीहै (८) काडमच्छीके तेलकी ठौर चोबचीनी काम देसकतीहै (९) इसका क्वाथ पिलानेसे गठिया मिटताहै (१०) जिसका शरीर उपदंश से फूट गया हो और जिसके शरीरमें उपदंश का विष फैलगया हो उसको चोपचीनीके क्वाथ फांट या हिममें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (११) इसके ४ मासे से १ तोले भरतक चूर्णको मधुमें मिलाकर चटानेसे गंडमाला मिटतीहै (१२) १० तोले चोबचीनीको ८० तोले जलमें ओटा ३० तोले जल रख उतार छान २॥ तोले से ७॥ तोले भर क्वाथ दिनमें ३,४ वेर पिलानेसे खून रोग मिटताहै (१३) चोबचीनीका तेल मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै।

संख्या (२१२)

(सं०) छिक्किनी, छिक्किका, चवक्कत्, प्राणदु खदा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नकछीकणी	नकछीकणी	नाकछीकणी	नकछीकणी	हचेताय छ	नकछिकना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Centipeda orbicularis Artemisia sternutatoria	

स्थान—नकछीकणी हिन्दुस्थानके जंगलोंके आर्द्रस्थानोंमें होतीहै ।

पहिचान—यह शीतकालके पिछले दिनोंमें पैदा होतीहै ।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंकी नस्य देनेसे छींकें आतीहैं (२) शिरकी पीड़ा मिटानेके लिये नकछीकनी की नस्य देना चाहिये (३) बन्ध श्वासको बहानेके लिये नकछीकनीकी नस्य देना चाहिये (४) नकछीकनीको पीस गर्मकर गालोंपर लेप करनेसे दांत और डाढकी पीडा मिटतीहै (५) आधाशीशी मिटानेके लिये नकछीकनीका चूर्ण सुंघाना चाहिये (६) इसका चूर्ण सुंघानेसे मिरगीका वेग दूर होताहै (७) यह चरपरी, रोचक, दीपन, पचनेमें हल्की, उष्ण, कंपनी और तीक्ष्णगंध युक्त होतीहै (८) यह-पित्त और अग्निको बढातीहै (९) रक्तदोष, वात, कफ, कुष्ठ, कृमिरोग, रक्तविकार, ग्रहपीड़ा, भूतबाधा और वातरक्तको मिटातीहै ।

संख्या (२१३)

भूताङ्कुशः, चवकः, चवः, भूतद्रावी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	भूतांकुश	भूतकेशी	भूतांकुश			नेरवे द

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
इरकुली	थागराज			Elaeodendron Glaucum Ageria dichotoma	

स्थान—भूतांकुश दक्षिण हिन्दुस्थान और बम्बई अहातेमें होताहै ।

प्रयोग—(१) इसके कडवे और सुगंधित पत्तोंका हिम या फांट पिलानेसे पेट और आंतोंके रोग मिटतेहैं (२) पत्तोंके काथसे प्रतिश्याय मिटताहै (३) चिरायतेके साथ इसके पत्तोंको औटाकर पिलानेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाताहै (४) इसके पत्तोंके काथकी उष्ण भाफको श्वासके साथ पीनेसे बहुत पसीना आताहै (५) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे बचोंके पेटकी पीडा मिटतीहै (६) इसके पत्तोंके काथमें सोंठ घिसकर पिलानेसे बचोंकी मंदाग्नि मिटतीहै (७) बचोंके दांत आनेके दिनोंमें जो ज्वर होताहै उसको छुडानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलातेहैं (८) इसके पंचांगका काथ पिलानेसे गठिया मिटतीहै (९) इसके पत्तोंका तेल निकालके मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (१०) बहुत पसीना लेना होतो इसके तोले भर पत्तोंका काथ करके बफारा लेना चाहिये (११) इसके पत्तोंका २॥ से ५ तोले तक काथ पिलानेसे बहुत पसीना आताहै।

संख्या (३१४)

(सं०) जटामांसी, मांसी, कृष्णजटा, हिंस्रा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बालछड़	बालछड़	बालछड़	जटामासी	जटामासी	बिल्लीलोटन,	जटामासमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
जटामास	जटामासी	सुम्बुलउल तीव		Nardostachis Jatamansi Veterchi	spikenard

स्थान—बालछड हिमालयमें गढवालसे सिक्कम तक होती है।

पहिचान—इसकी जड रंगतके काममें आतीहै। २८ सेर जटामांसीमें ७॥ तोले तेल निकलता है।

प्रयोग—(१) इसकी जड चरपरी, सुगंधयुक्त, बलवर्द्धक, उत्तेजक और कड़वी होतीहै (२) बांइटे, अपस्मार, स्त्रियोंके आवेशका रोग, और नशोंकी ऐंठनका रोग मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (३) तिल्ली

आदि। पेटके यंत्रोंके वढावकी रुकावट और मासिक धर्मका कष्ट मिटानेके लिये मूत्र और पाचनशक्ति वढानेके लिये और श्वास सम्वन्धी नलिकाओं को शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (४) कामला, गलेके रोग और विषदोष दूर करनेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये (५) वालोंकी सफेदी मिटानेके लिये और उनको वढानेके लिये इसका प्रयोग करतेहै (६) मस्तक या ललाटपर इसका लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (७) इसको घोट छान मधु मिलाकर पीनेसे रुधिर शुद्ध होताहै (८) कई प्रकारके तेल वनानेकी औषधियोंमें यह मिलाई जातीहै (९) हृदयका धडकना कम करने के लिये इसका लेप करतेहैं (१०) आध्मान मिटानेके लिये उष्ण जलके साथ इसके चूर्णकी फकी देना चाहिये (१२) इसकी मात्रा ५ रत्तीसे १। मासेतक कीहै (१३) दांतोंकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके चूर्णका मंजन करना चाहिये (१४) मुख की दुर्गंध मिटानेके लिये इसको मुखमें रखना चाहिये (१५) इसको पीसके सूंघनेसे नाकके मलकी दुर्गंध मिटतीहै (१६) इसका शर्वत पिलानेसे हृदय और कफके रोग मिटतेहैं (१७) ६ तोले वालछड डेढ सेर पानीमें ओटा आधा पानी रख उसमें सेर भर मधु डालकर शर्वत जैसी चासनी वनाके सर्दीके रोगोंमें देना चाहिये (१८) ३॥ मासे वालछड पीस के पिलानेसे कफकी वमन वन्ध होतीहै (१९) १४ मासे वालछडका लाल वकरीके ६ तोले मूत्रमें पीसके पिलानेसे जलधर मिटताहै (२०) वालछड और नमकको सिरके के साथ पीसके लगानेसे जलंधर मिटताहै (२१) इसको पीसके लगानेसे पसीनेका अधिक आना वन्ध होजाताहै॥

संख्या (२१५)

(सं०) जपा, ऊर्ध्वपुष्पं, ओड्रपुष्पा, अर्कप्रिया।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वगाली	पंजावी	तैलङ्गी
गुडहल	गुडहर	जासुस	जासवंद जासुंदी	जवाफुल	गुडहल	दासानिपुव्वु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शप्पात्तिपू	दासवाळदा हुव्वु			Hibiscus Rosa sinensis	The shoe flower

स्थान—गुडहलके वृक्ष हिन्दुस्थानके वहुतसे वागोंमें वोये जातेहैं ।

पहिचान—यह एकेरा, दोहेरा, लाल पीले और सफेद पुष्पोंके भेदसे कई प्रकारका होताहै । हिन्दुस्थानमें इसकी कलमें लगाई जातीहै। इसके पुष्पों मेंसे लाल रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) इसके पुष्प शिथिलता पैदा करतेहैं (२) इसके पुष्पों के काथसे औषधियोंकी चरपराहट मिट जातीहै (३) इसके पुष्पोंके काथ या शर्वतके सेवनसे ज्वरमें शान्ति होतीहै (४) मूत्रकी पीड़ा और दाह मिटाने के लिये इसका शर्वत वहुत उत्तमहै (५) वीर्य्य और मूत्र सम्वन्धी अंगोंकी दाह मिटानेके लिये इसका शर्वत पिलाना चाहिये (६) ताजे पुष्पोंकी पंखड़ियोंका रस और जैतूनका तेल वरावर लेके ओटावे जब सब रस छीज जावे तव तेलको अग्नि परसे उतार छानकर रख छोडें । इस तेलके लगानेसे केश अच्छे वढतेहैं (७) इसके पत्ते चरपराहट और पीडा मिटानेवाले और सारक हैं (८) इसके पुष्पोंको घीमें तलकर वूरेके साथ खिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है (९) इसके लाल पुष्पोंका शर्वत ज्वरकी दाहको मिटाताहै (१०) इसके वीजोंको ठंडाईकी जैसें घोट छानके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) इसका पुष्प पहिले दिन एक लेवे दूसरे दिन दो ऐसे नित्य एक २ वढाकर ५ दिन तक वढाके फिर नित्य एक २ कम करता हुआ एक पर लाके छोडदेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१२) इसके पुष्पोंको छायामें सुखा उनके चूर्णमें वरावर वूरा मिलाकर ३ मासेकी फकी ४० दिन तक लगातार लेनेसे पुरुषार्थ वढता है (१३) इसके पुष्पोंके रसमें वरावर तेल मिलाके ओटावे जब रस छीज जावे तव उसको उतार छानकर शीशी आदि वरतनमें भरकर रखछोड़ें। इसके लगानेसे दारुण रोग मिटताहै (१४) इसके पुष्पोंको पानीमें पीस नाभीपर और उसके आस पास लेप करनेसे बच्चा सुखसे पैदा होजाताहै (१५) उपदंशकी टांकियोंको इसके पत्तोंके काथसे धोना चाहिये ।

गुण—यह शीतल, मधुर, स्निग्ध, पौष्टिक, ग्राही, केस और गर्भ वढाने वाली और प्रमेहको मिटानेवालीहै ।

संख्या (२१६)

(सं०) जम्बीरः, दंतशठः, जम्भः, जम्भीरः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जमेरी	जभीरी,नींबू	ईडलीबू	ईडनिम्बू	गोंडानेबु	जभीरी	निम्मपंडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
लिमिच्चपले	निम्नेहण्णु			Citrus Aurantium var Limonum.	Bergamot orange.

स्थान—जमेरीके पेड़ हिन्दुस्थानमें कही २ होतेहैं।

जमेरीके फलकी छालको दबानेसे एक प्रकारका तेल निकलताहै अथवा उसका अर्क खैंचनेसे अर्कके साथ तेल निकल जाताहै। इसके पत्ते और पुष्पोंका अर्क खेंचनेसे उनमेंसे भी अलग २ तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) नींबूके रसमें जितने गुणहै उतनेही जमेरीके रसमें है परन्तु नींबूके रससे इसके रसमें यह अधिकताहै कि नींबूका रस पड़ा रहनेसे उसका गुण कम होजाताहै इसके रसका कम नही होताहै (२) शीतला, बोदरी, लालबुखार (रातड्या) और दूसरे प्रकारके ज्वरोंमें जमेरीका शर्वत शान्ति करताहै (३) शरीरके भीतरके किसी यंत्रमेंसे जैसे फुप्फुस, आमाशय, अंतड़ियां आदिमें से जो रुधिर निकलता हो उसका रोकनेके लिये इसका शर्वत बहुत उपकारीहै (४) इसके रसमे एक तोला शंखकी भस्म मिलाके पिलानेसे प्लीह रोग मिटताहै।

गुण—यह उष्ण, गुरु, खट्टी, होतीहै।

संख्या (२१७)

(सं०) जम्बूः, नीलफला, सुरभिपत्रा, जाम्बवम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जामुण	जामुन	जाबु (बू)	जाभुल	जामगाछ	जामुन	नेरेडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नावल्	नेरळे			Eugenia jambolana Syzygium jambolanum	Black plum.

स्थान—हिन्दुस्थान के बहुतसे भागोंमें जामूणके वृक्ष बोये जातेहैं और अपने आप भी उगतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ७०,८०फुट या कभी कभी ९० फुट ऊंचा बढ जाताहै इसकी पेदड़ लम्बी और बहुत सीधी नहीं होतीहै। उसकी गोलाई ६,८ फुट, कभी कभी १२,१५ फुटकी हो जातीहैं। इसका वृक्ष ३० फुटका होनेके पीछे उसके पहिली शाखा फूटतीहै, इसकी शाखा खड़ी और फैलतीहुई होती है, छोटी शाखा लटकती रहतीहै, इसके कोमल पत्ते गहरे हरे रंगके होतेहै वे बडे होनेपर चमकदार और सुगंधयुक्त हो जातेहै, उनकी लम्बाई ६ इंच तक होतीहै, इसकी छाल गहरे भूरे रंगकी और १,१॥ इंच मोटी होतीहै। इसके छोटे और कुछ हरे पुष्पोंके आमके मोर जैसे मोर लगतेहै। इसका फल बैंजनी या काले रंगका, एक इंच लम्बा और चमकदार होताहै। इसके पत्ते, फल और वृक्षकी और भी कई बातें, देश भेदके कारणसे बहुत पलट जातीहैं।

फूलने फलनेका समय—इसके फागुन चैतमें चमकदार, तांबेके रंगके नवीन पत्ते और पुष्प लगतेहै, और जेठ अषाढमें फल पकजातेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी छालके चूर्णकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै (२) इसकी छालके काथके गंडूष करनेसे दांत दृढ होतेहैं (३) कच्चे जामून के रसका सिरका बनाया जाताहै, वह पेटकी शूल और बादीकी पीडा मिटाने-के लिये काममें आताहै (४) इसको कलमी शोरेके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) इसका ताजा रस बकरीके दूधके साथ पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (६) इसके पत्तोंका केवल स्वरस अथवा उसमें कोई दूसरी ग्राही औषधि मिलाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (७) मूत्रातिसार और मधुप्रमेहको मिटानेके लिये जामूणकी सूखी गुठलीके चूर्णकी फक्की देनी चाहिये (८) यह मूत्रमेंसे शकरको बहुत शीघ्रताके साथ घटाताहै (९) इस की गुठलीकी और आमकी गुठलीकी सूखी गिरके चूर्णकी फक्की देनेसे

अतिसार और आमातिसार मिटता है (१०) इसकी छालके काथके गंडूप करनेसे गलेके छाले मिटतेहैं (११) इसके ताजे कोमल पत्तोंके रसको बकरी के दूधके साथ पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१२) इसकी छालके काथ में सोंठ और जायफल घिसके पिलानेसे अतिसार और आमातिसार मिटता है (१३) कुचीलेके विषको उतारनेके लिये, इसकी गुठलीकी सूखी गिरके चूर्णकी १० मासेकी मात्रा देनी चाहिये (१४) तिल्ली मिटानेके लिये इसके सवा तोले रसकी मात्रा देनी चाहिये (१५) जामूनका शर्वत अतिसार मिटानेके लिये काममें आताहै (१६) पारेको लगातार कई दिनों तक सेवन करनेमें अथवा और कोई कारणसे मुँह आगया हो अर्थात् मुँहसे लाळ बहती होतो इसकी छालके काथसे गंडूप करने चाहियें (१७) पके हुए जामून खिलानेसे पथरी मिटतीहै (१८) विच्छूके दंश पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (१९) पके हुए जामूनके सिरकेसे पेटकी शूल मिटतीहै (२०) तिल्लीवालेको पके हुए जामूनका सिरका पिलाना चाहिये (२१) सिरकेकी मात्रा ३॥ माससे ७॥ मासेतककी है (२२) पके हुए जामूनका सिरका पिलानेसे अजीर्ण और उसकी दाह मिटतीहै (२३) मसूड़ोंका ढीलापन और उनकी पीडा मिटानेके लिये इसके ताजे पत्तोंके रससे कुल्ले करने चाहियें (२४) पका हुआ जामून कुछ खट्टा और ग्राही होताहै (२५) जामूनकी गुठली परसे उसकी गिर उतार उसमें कुछ नमक मिला एक घंटे तक पडी रखनेसे बहुत स्वादिष्ट होजातीहै (२६) बहुत जामून खानेसे ज्वर आने लग जाताहै (२७) इसकी लकडीके कोयले का मंजन करनेसे मसूडोंसे रुधिर निकलना बन्ध होजाताहै (२८) इसकी कोपलोंके दो तोले रसमें थोडा बूरा मिलाके पिलानेसे अर्शसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (२९) इसकी छाल और पत्तोंके काथसे बगलको धोनेसे उसकी गन्ध मिट जातीहै (३०) इसकी और आमकी छालके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे वमन और तृषा मिटतीहै (३१) इसके ७॥ पत्ते पानीमें पीसके पिलानेसे विषैल जीवोंका विष उतरताहै (३२) आम और जामूनके पत्ते और छालको पानीमें ओटाकर सींचा लेनेसे कांचका निकलना बन्ध होताहै (३३) इसका शर्वत विष्टम्भी औषधियोंके साथमें पिलानेसे संग्रहणी, अति-

सार और अर्श मिटतेहैं (२४) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे अग्निदग्ध का सफेद दाग मिटताहै (२५) इसकी और आमकी गुठलीकी गिरको पानीमें पीसकर मलनेसे मुखकी भांई मिटतीहै।

गुण—यह कषैला, खट्टा, ग्राही, मीठा, पाचक, रूक्ष, रोचकहै।

संख्या (२१८)

(सं०) जयन्ती, बलामोटा, हरिता, सूक्ष्ममूला।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	बल मोटा	झीणांखपाट	जयती	जयती		सोमेन्दा

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अङ्ग्रेज़ी
	तोगरसे			Sesbania aegyptiaca Aeschynomene sesban	

स्थान—जयन्ती हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतीहै।

पाहिचान—जयन्तीका वृक्ष ८, १२ और नदियोंके किनारे १५, २० फुट ऊंचा होताहै। यह बहुत वर्षों तक नहीं रहताहै, इसकी एक सींकपर १० से २० जोडे पत्तोंके लगतेहैं इसकी फली ६ से ८ इञ्च लम्बी होतीहै उसमें २० से ३० तक बीज निकलतेहैं।

फूलने फलनेका समय—वसंतमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके बीज उत्तेजक और ग्राहीहैं (२) इसके बीजोंके प्रयोगसे मासिकधर्मका कष्ट मिटताहै (३) तिल्ली कटनेके लिये इसके बीजोंकी फकी देनी चाहिये (४) इसके बीज और अलसीके चूर्णकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (५) इसके बीजोंकी फकी देके ऊपर खसोतका हिम पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (६) इसको पवाडके बीजोंके साथ पीसके शरीर परमर्दन करनेसे पामा और त्वचाके कई प्रकारके रोग मिटतेहैं (७) इसकी छालका रस पिलानेसे पामा मिटतीहै (८) दूसरी प्रकारके फोड़े फुन्सी मिटानेके लिये इसकी छालके रसमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (९) फोडेको जल्दी पकानेके लिये इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये

(१०) मूत्रज, अंडवृद्धि और गठियाकी सूजन बिखेरने के लिये, इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (११) शरीरकी खुजली मिटानेके लिये, इसके बीजोंके चूर्णको आटेमें मिलाके उबटना करना चाहिये। (१२) इसके बीजोंको दिखाते रहने से कई मनुष्योंका बिच्छूका विष उतरजाताहै (१३) इसके ताजे पत्तोंका ५ तोले रस पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (१४) इसके पत्ते हल्दी और कादा या लसणको पीसके लेप करनेसे शोथ बिखर जातीहै (१५) इन सबको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे उस ठौरपर छाला उठजाताहै (१६) इसके पुष्पोंको तिल्लीके तेलमें औटा उस तेलको सिर, छाती और कनपटियों पर लगानेसे बहता हुआ प्रतिश्याय मिटताहै (१७) इसकी जड़को पीस बिच्छूके दंशपर लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (१८) पीपवाले फोडे को जल्दी पकानेके लिये इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये, इससे वह फोडा जल्दी पकके उसका पीप पकीहुई चमडी के पास चला आताहै (१९) जयंतीकी जड़को हाथमें लेके जहातक बिच्छूका विष चढा हो वहासे जहा कांटा हो वहातक हाथको एक इंच दूर रखकर, हाथकी अंगुलियोंको टेढीकर अर्थात् सर्पके फणके जैसे करके वार वार झाड़नेसे बिच्छूका विष उतरजाताहै।

गुण—यह कड़वी, चरपरी, उष्ण, और वातनाशकहै।

संख्या (२१९)

(सं०) जलं, पानीयं, सलिलं, नीरं, जीवनम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जल,पाणी	जल,पानी	पाणी	पाणी	जल	पानी	नीलु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तण्णीर	नीरु	मा	आब	Aqua	water

प्रयोग—(१) हर किसी प्रकारके विषमें गर्म पानी पिलाकर वमन करानेसे विष उतरताहै (२) ठण्डे पानीकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (३) ईंट बुझाये हुए पानीको ठण्डा करके पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (४)

वादीकी तृषा मिटानेके लिये सोना, रूपा, या ईट बुझायाहुआ, या औटाया हुआ पानी पिलाना चाहिये (५) पानीमें मधु या शकर मिलाकर पिलानेसे तृषा मिटतीहै (६) मधु मिलाहुआ ठण्ढा पानी पेटभर पिलाके वमन करानेसे तृषा शान्त होतीहै (७) जलमें मिश्री मिलाके पिलानेसे दाह मिटताहै (८) वस्तिपर उष्ण जलकी धारा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (९) उष्ण जलको ठण्ढा कर उसमें मधु मिलाके पिलानेसे मेदवृद्धि मिटतीहै (१०) दूध, शकर और पानी मिलाकर मस्तकपर तरडा (छींटा) देनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (११) मस्तकपर ठण्ढा पानी डालनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१२) गर्म पानीको मस्तकपर तरडा देनेसे उसकी गर्मी मस्तकमें पहुंचनेसे प्रतिश्याय मिटताहै (१३) गर्म पानीके कुल्ले करनेसे मसूडोंकी पीड़ा मिटतीहै (१४) गर्म लोहे का बुझायाहुआ पानी पिलानेसे तिल्लीके विकार मिटतेहैं (१५) जिस ठौर बिच्छू काटा हो उसपर उष्ण जलकी धारा देनेसे अथवा उस अंगको उष्ण जलमें रखनेसे विष उतर जाताहै (१६) गर्म जलमें नोन मिलाकर बिच्छूके दंशपर मलनेसे विष उतरताहै (१७) ठण्ढा जल पीनेसे मूर्च्छा दूर होतीहै (१८) शीतल जल पिलानेसे रक्तपित्त और मदात्यय मिटताहै (१९) पेट भरके ठण्ढा जल पीनेसे सुपारीका मद उतरताहै (२०) गर्म जलमें एरंडका तेल मिलाकर पिलानेसे शूलयुक्त गुल्म रोग मिटताहै (२१) मुंहमें पानीभर लेवे फिर जलसे नेत्रोंको छाटनेसे तिमिररोग मिटताहै परन्तु जब मुखका पानी गर्म हो जावे तब उसे थूक देवें और दूसरा ठण्ढा पानी फिर मुखमें भर लेवें (२२) जलकी नस्य लेनेसे आधाशीशी मिटतीहै (२३) ठण्ढे पानीसे स्नान करानेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२४) गर्म पानीसे गरारा करानेसे कंठकी सूजन मिटतीहै (२५) मुहपर ठण्ढा पानी छाटनेसे मूर्छा मिटतीहै (२६) गर्म जलसे हाथपांव और तलवोंको धोनेसे या तरडा देनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (२७) सैंधे नमकको महीन पीस जलके साथ नस्य देनेसे हिचकी बन्ध होतीहै।

संख्या (२२०)

(सं०) जाती, मनोज्ञा, सुमना, तैलभाविनी ।

[illegible]	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलंगी
चमेली	चमेली	चमेली	जाई	जाती	जाई	जाजि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लटिन	अंग्रेजी
जातिपुष्प	जाजि	यासमीन	[illegible]	Jasminum gran liflorum	Jasmine The spanish

स्थान — चमेलीके पेड हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान — इसका एक बड़ा झाड होताहै, इसके तीनसे ५ तक जोडे पत्तोंके लगतेहैं, इसके सफेद पुष्प लगतेहैं, उनमें मीठी सुगंध आतीहै ।

फूलने फलनेका समय — इसके फागुनसे भादों तक पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग — (१) इसके पुष्पोंसे सुगंधित तेल बनाया जाताहै वह ठण्डा होताहै और शरीरके दाह मिटानेके लिये उसका मर्दन करतेहैं (२) इसके पत्तोंका क्राथ पिलानेसे त्वचाके रोग मुखपाक और कानकी पीडा आदि रोग मिटतेहैं (३) इसके पत्तोंके ताजे रसको लगानेसे पैरोंकी अंगुलियोंके नीचेके नाम आटन मिटतेहैं (४) चमेलीके पंचांगका क्राथ पिलानेसे, तिल्ली आदि यंत्रोंके बढावकी रुकावट और मासिकधर्मकी रुकावट मिटतीहै (५) इसके पत्तोंका क्राथ कृमिनाशक और मूत्रवर्द्धक है (६) त्वचाके रोग, मस्तकपीडा और नेत्रोंकी निर्बलता मिटानेके लिये इसके पुष्पोंका या उनके सारका लेप करना चाहिये (७) पत्तोंको औटाके कुले करनेसे दांत और डाढकी पीडा मिटतीहै (८) इसके पत्तोंको चबानेसे मुखकी झिल्लीके घाव मिटतेहैं (९) इसको घीमें तलके चबानेसे भी वही गुण होताहै (१०) शरीर पर चमेलीका तेल मर्दन करनेसे ठंढी और रूखी वायुका प्रभाव नहीं होताहै (११) इसके ३ पुष्पोंको गुड़ ?गनके साथ पीसके नाकमें टपकानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (१२) इसके पत्तोंके रसमें तेल बनाके इन्द्री पर मलनेसे ध्वजभंगता मिटतीहै (१३) इसके तेलमें एलुवा मिलाके कानमें डालनेसे उसकी खुजली मिटतीहै (१४) इसके गर्म तेलमें फोया भिगोके नाभिपर रखनेसे वायुशूल मिटतीहै (१५) इसके पत्तोंके तेलमें राई पीसके इन्द्री, पेडू और जांघों पर

लेप करनेसे नंपुसकता मिटतीहै (१६) इसके पत्तोंके काथसे इन्द्रीको धोनेसे उपदंशके चत्व मिटतेहै (१७) इसके ताजे पत्तोंका २ तोले रस, गायका २ तोले घी और २ तोले राल इन सबको एकत्र करके पिलानेसे पांच प्रकारका उपदंश मिटताहै। इसको लेनेके समय घी, दूध और गेहूंका पथ्य खाना चाहिये (१८) इसके पत्तोंको चबानेसे मुखपाक मिटताहै (१६) इसके पत्तोंके तेल को कानमें डालनेसे पूतिकर्ण मिटता है। इसके तेल में कपूर मिलाकर मलने से खुजली मिटतीहै।

गुण—यह कपैली, कड़वी, व्रण, कुष्ठ, विष, रक्तपित्तको मिटातीहै।

संख्या (२२१)

(सं०) जातिपत्री, जातिकोषा, जातिफलत्वक्, जातीपत्री।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जावित्री	जावित्री	जावंत्री	जायपत्री	जयत्री	जावित्री	जाजीपत्तिरि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
जापत्रि	जापत्रि	बिसबासाह	बजबानज	It is the aril of myristica fragraus.	The mace.

स्थान—जावित्री और जायफल एकही वृक्षके अंग है इसवास्ते इसके स्थानादिक जायफलके साथ लिखेहै।

प्रयोग—(१) हल्का ज्वर छुड़ानेके लिये जावित्री दी जातीहै (२) क्षयरोगमें जावित्रीका प्रयोग बहुत उपकारीहै (३) कफकी तरीसे जो श्वास होताहै उसमें जावित्रीको पानमें रखके खिलाना चाहिये (४) शरीरको कृश करनेवाले और आंतोंके पुराने रोगोंमें ४ से ६ रतीतक और आवश्यकता हो तो १५ रती तक जावित्रीकी मात्रा देना चाहिये। इसकी अधिक मात्रा देने में बहुत सावधानी रखना चाहिये क्योंकि इससे मूर्च्छा और बहुत नशा आजाताहै- (५) यह पुरुषार्थ बढातीहै। पेटकी, बादीकी, पीड़ा और मंदाग्नि को मिटातीहै (६) जावित्रीको सेककर खिलानेसे विसूचिकाके दस्त मिटतेहैं (७) सेकीहुई जावित्रीको काली मिरचके साथ खिलानेसे यकृत् और प्लीह

के बहावकी रुकावट मिटती है (८) मक्खनमें चन्दन और मिश्री मिलाके चटानेसे जावित्रीका मद उतरता है ॥

गुण—कटु, तिक्त, मीठी, उष्ण और लघुहै ।

संख्या (२२२)

रामपत्री ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रामपत्री	रामपत्री		रामपत्री			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Aril of myristica malabarica	

स्थान—जिस वृक्षमे जंगली जायफल पैदा होता हो उसीमे यह पैदा होतीहै । जंगली जायफलके छिलकेको रामपत्री कहतेहैं इसलिये इन दोनोंका स्थान एकही है ।

प्रयोग—(१) रामपत्री स्नायुजालको शक्ति बढ़ाती है (२) इसको जलमें घिसकर पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (३) जावित्रीकी अपेक्षा रामपत्रीमें सुगध बहुत कम होतीहै (४) जावित्रीके बदलमें धोखेसे रामपत्री देदेते हैं ।

संख्या (२२३)

(सं०) जातीफलं, जातिसस्यं, शालूक मदशौण्डकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जायफल	जायफल	जायफळ	जायफळ	जायफल	जाफल	जाजिकाय

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
जादिकाइ	जाजिकाय	जोजबोवा		Myristica fragrans M. Officinalis	The nutmeg

स्थान — जायफलके वृक्ष मोलुकाके टापूमें, वंदाके ज्वालामुखी पहाड़ोंमें होतेहै। अब हिन्दुस्थानमें नीलगिरी पहाड़ों पर इसके वृक्ष बोये जातेहैं और औरभी कई ठौर इसके वृक्ष बोये जातेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष ४०, ५० फुट ऊंचा होताहै। इसके पत्ते वसंतऋतु में नहीं गिरतेहैं।

प्रयोग—(१)-जायफल मन्दाग्निकी एक बहुत अच्छी औषधिहै (२) यह हृदय और शरीरका बल बढाताहै (३) नशोंको दूर छुडानेसे जो उप-द्रव होतेहै उनको मिटानेके लिये जायफल दियाजाताहै (४) जायफल की अ-धिक मात्रा देनेसे बहुत नशा आजाताहै और मूर्च्छा होजातीहै (५) ताजे जाय-फलके रसको पानीमें मिलाके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै, (६) त्वचामें उत्तेजना पैदा करनेके लिये जायफलका उडनेवाला तेल मर्दन करना चाहिये (७) जायफल का गाढा तेल भी इसी काममें आताहै (८) मस्तकपीड़ा मिटानेके लिये जायफलका लेप करना चाहिये (९) आं-खोंपर इसका लेप करनेसे ज्योति बढतीहै (१०) जायफल उत्तेजक और पेटकी वादीकी पीड़ा मिटानेवालाहै (११) ४ रत्तीसे १ मासे तक जायफल खिलानेसे हल्की मंदाग्नि, अफारा, शूल और अतिसार मिटता है (१२) जायफलको ठण्डे पानीमें घिसके पिलानेसे विसूचिकाके रोगीकी तृषा मिटतीहै (१३) जायफलको यंत्रमें देनेसे जो तेल निकलताहै उससे ग-ठिया, अर्द्धांग और मोचका दर्द मिटताहै (१४) जायफलमें एक छोटा छिद्र करके उसको भीतरसे पोलाकर उसमें थोड़ा अफीम भर उसी चूरेसे उसके छिद्रको बन्धकर फिर थोडी आटा आसण कर उसको उसमें लपट भूभलमें सेकपीछे उसको पीसके गोलियां बनालेवे, इन गोलियोंकी उचित मात्रा देने-से अतिसार मिटताहै (१५) इस गोलीको देके ऊपर दूध पिलानेसे बल बढताहै (१६) गाठियाकी पीडा मिटानेके लिये इन गोलियोंको सोठके काथ

के साथ देना चाहिये (१७)। जायफल और जंगली सरवके फलको पीस गोली बनाके मुखमें रखनेसे दन्तपीडा मिटतीहै (१८) कर्णमूलकी गांठ और दूसरी पेशियों की शोथको मिटानेके लिये जायफलको पीसके उन पर लेप करना चाहिये (१९) जायफलके चूर्णमें घी, खांड मिलाके चटानेसे बच्चोंका आमातिसार मिटताहै (२०) जायफलको तेलमें घिसके मर्दन करने से विशूचिकाके बाइटे मिटतेहै (२१) भीतरके यंत्रोंमें रुधिरके जमावको बिखेरनेके लिये जायफलको तेलमें घिसके मर्दन करना चाहिये (२२) मिरगी वालेके गलेमें जायफल लटकानेसे लाभ होताहै (२३) अर्दित रोगमें जायफलको मुखमें रखनेसे लाभ होताहै (२४) ठण्डे पानीमें इसको घिसके पिलाने से तृषा और जीमचलाना मिटताहै (२५) इसका लेप करनेसे शरीरके नीले और काले और चट्टे मिटतेहै इसमेंसे दो प्रकारका तेल निकलताहै एक सफेद चरपरा, जायफलके जैसी तीव्र गंधवाला होताहै। दूसरा कुछ पीले रंग का और गाढा होताहै उसको जायफलका मक्खन कहतेहै। इसका तेल निकालने की दो रीतियाहै (१) जायफलको कूट पानीमें भिगो भभकेमें अर्क खैंचनेसे उसकेसाथ तेल निकल आताहै (२) जायफलको कूट गरम जलमें भिजोकर गर्म २ को दबानेसे गाढा तेल निकल आताहै यह ठंढा होने पर जम जाताहै।

गुण—यह तिक्त, उष्ण, रोचक, लघु, कटु, दीपन और ग्राहीहै।

संख्या (२२४)

जंगली जायफल

Myristica malabarica

स्थान—जंगली जायफलके वृक्ष कोंकणमें, कनारा और उत्तर मलबारमें होते है।

प्रयोग—(१) इसके तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (२) इसका लेप करनेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै (३) इसको सेका पीस उसका चूर्ण को दिनमें २, ३ वेर देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (४) नित्य

लानेके लिये इसके चूर्णको मधुमें चटना चाहिये (५) वादी मिटानेके लिये आहिफेनके साथ इसकी गोली बनाके खिलानी चाहिये (६) यह असली जायफलसे बहुत बडा होताहै जैसे रामपत्रीको जावित्रीके बदलेमें बेच देतेहैं वैसेही जंगली जायफलको भी जायफलके बदलेमें धोखेसे देदेतेहैं। इसके बीजों को कूटकर पानीमें औटानेसे एक जमनेवाला कुछ पीले रंगका तेल निकलताहै।

संख्या (२२५)

(सं०) जिङ्गिनी, सुनियासा, गुडमञ्जरी, मोदनी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जिंगणी	जिंगिणी (नी	मवडी	गोंई, मोक	गुल्दुली	कालीसिम्बल	गिलिभिरिन्त

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Odina wodier.	

स्थान—जिगिनीके वृक्ष हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ४०, ५० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ सीधी होतीहै उसकी गुलाई ५, ६ फुट होतीहै। इसके बड़ी और फैली हुई थोडी डालियां होतीहैं। इसकी छाल भूरी या कुछ काले रंगकी और चिकनी होती है, पोष, माघ या वसंत ऋतुमें इसके पुराने पत्ते गिरके जेठ तक नवीन आजातेहैं। इसकी शाखाओंके अन्तमें थोडे पत्ते लगे रहतेहैं। इसके फल पकने पर लाल रंगके होजातेहैं। वसंत ऋतुमें इसके कुछ पीला और सफेद रंगका गोंद लगताहै वह पानीमें आधा गलताहै और आधा नहीं गलताहै इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाताहै।

फूलने फलनेका समय—माघसे चैत तक इसके पुष्प लगतेहैं और जेठसे फल पकने लगतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी छाल ग्राहीहै (२) इसकी छालके क्वाथको

गाढा करके फोडे फुन्सियों पर लेप करना चाहिये (३) भरे नींगले फोड़े पर इस गाढे क्वाथका लेप करना बहुत उपकारी है (४) इसकी छालके क्वाथके कुल्ले करनेसे मसूड़ोंका ढीलापन मिटताहै (५) इसकी छालको नीमके तेलमें पीसके लगानेसे पुराने और भरे नीगले फोड़े मिटतेहैं (६) इसके गोंदको नारियलके दूधमें पीसके लेप करनेसे मोच और चोटकी पीड़ा मिटतीहै (७) इसके पत्तोंको तेलमें ओटाके बांधनेसे मोच और चोटकी पीड़ा मिटतीहै (८) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (९) स्त्रियोंके हृदयका बल बढानेके लिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (१०) गठियाकी पीड़ा मिटानेके लिये कई प्रकारके लेप और तेलों में इसका प्रयोग किया जाताहै (११) अहिफेन या दूसरे विषोंसे जो मूर्च्छा होगई हो उसको मिटानेके लिये इसके ताजे पत्तोंके १० तोले रसमें ५ तोले इम्लीको मसल छान पिलाके वमन कराना चाहिये ।

गुण—यह मधुर, उष्ण, कटु और कपैली होतीहै । मुख दुर्गन्ध, तृषा वात और कफके रोगोंको मिटातीहै ।

संख्या (२२६)

(सं०) जीरकः, जरणः अजाजी, कणजीरक. ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जीरो	सफेदजीरा	जीरू, जीरों	पांढरीजिरें	जीरा	सुफेदजीरा	जिलकर्र

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शीराम्	जीरिगे	कमून	जीरारूमी	Cuminum Cyminum	Cumin

स्थान—जीरा बंगाल और आसामके सिवाय हिन्दुस्थानके बहुतसे भागों में कहीं थोड़ा और कहीं बहुत बोया जाताहै ।

प्रयोग—(१) पेटका अफारा और शूल मिटानेवाली औषधियोंमें दो मासे जीरेको मिलाके देना चाहिये (२) जीरेको नींबू के रसमें भिगो कुछ

नमक मिलाके खटाईका जीरा बनातेहै। गर्भवती स्त्रीका जी मचलाना और खाली होवद इसी जीरेसे बन्ध होजाताहै (३) जीरेका पाक बनाके खिलानेसे बचेकी माका दूध बढताहै (४) जीरेको घीमें चुपड़ नलिकाद्वारा उसकी धूनी पीनेसे हिचकी मिटतीहै (५) जीरा, शूलमिटानेवाला, उत्तेजक और ग्राहीहै (६) यह ज्वर और अतिसारमें उपकारीहै (७) जीरा मसाले के काममें आताहै (८) यह ठंढा है इसलिये मूत्रकृच्छ्रकी कई औषधियोंमें मिलाया जाताहै (९) इसका लेप करनेसे दाह और पीड़ा मिटतीहै (१०) इसको और नमकको पीस घी और मधुमें मिला गर्मकर अथवा ठण्ढा लेप करनेसे बिच्छू का विष उतरताहै (११) यह छौंकनेके काममें आताहै (१२) इसके और इसके तेलके गुण एकसे ही हैं (१३) दहीमें जीरेका चूर्ण मिलाके खानेसे अतिसार मिटताहै (१४) ४ तोले जीरा और २ तोले सिंदूरको ३२ तोले कडवे तेलमें पचाके लगानेसे पामा मिटतीहै (१५) जीरे और धनियेके कल्क से सिद्ध कियेहुए घीके सेवनसे मंदाग्नि और वातपित्तके रोग मिटते हैं और रुचि बढतीहै (१६) जीरेके चूर्णको कचनारकी छालके रसमें मिलाके लेनेसे संताप मिटताहै (१७) ६ मासे जीरेको एक तोले शकर और ४ तोले मधुमें मिलाकर चटानेसे रुचि बढतीहै (१८) जीरेको रेशमीन कपडेमें लपेट बत्ती बना उसका धूंआ नाकमें सूंघनेसे बहुत दिनोंकी वमन बन्द होती है (१९) इसके चूर्णको गुडमें मिलाके खाने से मंदाग्नि, विषमज्वर और वात के रोग मिटतेहैं (२०) सोंठ और जीरे को पानी के साथ पीसके लगाने से मकडीका विष उतरताहै (२१) जीरेको सिरकेमें ओटा पीसके पिलानेसे तृषा और हिचकी मिटतीहै (२२) जीरा और १५ नग काली मिरचको घोट छानकर पिलानेसे कुत्तेका विष उतरताहै (२३) जीरा और कालीमिरचों को पानीके साथ पीस ओटाके मर्दन करनेसे अंड कोषका कडापन मिटताहै (२४) जीरेका तेल बनाया जाताहै और जीरेमें भी एक प्रकारका तेल होताहै॥—

गुण—यह कटु, ग्राही, दीपन, लघु, कुछ उष्ण और मधुर होताहै।

संख्या (२२७)

(सं०) कृष्णजीरकः कृष्णाजाजी, जरणा, कालजीरकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
श्याजीरो	कालाजीरा	शाजीरु	शहाजिरें	कृष्णजीरा	कालाजीरा	तल्लजिलकर्र

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
करुंशीराम्	करिजीरिगे	कमूं किरमानी	सियाहजीरा	Carum nigrum.	Caraway

स्थान—कालाजीरा हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) सियाह जीरा अफारा, शूल, हल्की मन्दाग्नि और आतोंके बाइटोंको मिटाताहै (२) इसका तेल उत्तेजक है (३) विरेचनकी गोलियां बनानेमें सियाहजीरा डाला जाताहै (४) ७। मासे सियाह जीरेको ?॥ पाव औटते हुए जलमें डाल फांट बनाकर उससे आखोंको धोनेसे ज्योति बढतीहै (५) इसका काथ पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं (६) इसका शर्बत पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (७) गर्भाशयकी सूजन मिटानेके लिये इसके काथसे पात्रको भरकर उसमें स्त्रीको बैठाना चाहिये (८) जो अर्श बाहिर लटकते हों और पीडा करते हों तो उनपर इसका पुल्टिस बांधना चाहिये (९) इसको घीसे चुपडकर नलिका द्वारा धूंआं सूंघनेसे प्रतिश्याय मिटताहै इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै वह पीले रंगका और पतला होताहै इसमें सियाहजीरे जैसी तीव्र गंध और स्वाद होताहै।

संख्या (२२८)

(सं०) वनजीरकः तिक्तजीरकः, बृहत्पालीः, अरण्यजीरकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालीजीरी	वनजीरा	काळीजीरी	किडुजिरी	वनजीरे	कालाजीरा	अडविजिलकर

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
काट्टुशीरहम्	काडुजीरिगे			Vernonia anthelmintica serratula A.	The purple flea bane

स्थान—कालीजीरी हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतीहै।

प्रयोग—(१) काली जीरी, श्वेतकुष्ठ और त्वचाके रोगोंमें बहुत काम आतीहै (२) यह कृमिनाशकहै परन्तु इकली इस काममें कम आतीहै (३) त्वचाके पुराने रोग मिटानेके लिये इसको इसी गुणवाली दूसरी औषधियोंके साथ मिलाके देतेहै (४) कुष्ठ और कुष्ठ सम्बन्धी दूसरे रोगोंमें वर्षभर तक इसकी फक्की नित्य लेनी चाहिये अथवा कालीजीरी और तिलोंको निवाये जलमें भिगो घोट छानके पिलाना चाहिये परन्तु इसके पहिले धूप या और किसी रीतिसे शरीरका पसीना निकाल देना चाहिये, इसमें दूध चावलोंका पथ्य देना चाहिये (५) आंतोंके कीड़े और कफ निकालनेके लिये इसका क्काथ पिलाना चाहिये (६) कफकी गांठोंको बिखेरनेके लिये इसका पुल्टिस बांधना या लेप करना चाहिये (७) इसको खाने पीनेके काममें कम लाना चाहिये क्योंकि इससे कभी २ उपद्रवभी हो जातेहैं (८) कफ और अफारा मिटानेके लिये इसका क्काथ पिलातेहै (९) सर्पका विष उतारनेके लिये इसको विषनाशक औषधियोंके साथ मिलाके देतेहै (१०) सर्वांग जलमय शोथ को मिटानेके लिये काली जीरीकी फक्की देतेहैं (११) पीपवाले बड़े फोड़ों पर इसको लेप करतेहै (१२) ज्वर छुड़ानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (१४) रसायनकी रीतिपर इसका सेवन करनेसे आयु बढतीहै बुढापा जाता रहताहै और बालोंका सफेद होना बन्ध हो जाताहै (१५) इसकी साधारण मात्रा ५, ६ मासेकीहै इसकी एक मात्रा देके फिर ४, ५ घंटेके पीछे दूसरी मात्रा देके एरंड का तेल या और सारक औषधि देना चाहिये (१६) किसी २ को काली जीरीके ५ रत्तीसे २ मासे तक चूर्णकी मात्रा देनेसे पेटके कीडे मरके बाहिर निकल जातेहै (१७) १। मासेसे १॥ मासे तक चूर्णकी फक्की देनेसे बल बढ़ताहै (१८) इसी मात्रासे आमाशयकी शूल मिटतीहै (१९) इसको ठण्ढे जलके साथ घोट छानके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (२०) इसको नीबू के रसमें पीसके लेप करने से जूवें, लीखें मरतीहे (२१) इसके बीजोंमें जहरीली छूत मिटानेकी शक्ति है (२२) काली जीरीके पोधेकी मकानमें धूनी देनेसे अथवा उसको पीसके आंगन में बिखेर देनेसे कई प्रकारके विषैल जीव उस मकानमें से बाहिर निकल जातेहै (२३) इसको और

कलौंजीको पीसके लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२४) इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै।

संख्या (२२६)

(सं०) स्थूलजीरक., जर्णा, काली, बहुगंधा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कलौंजी	कलौंजी	कलौंजी जीरुं	कळोंजी	कलौंजी	कलौंजी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हब्बतुस्सोदा	शूनीज़	Nigella sativa v Indica.	Small fennel or black cummin

स्थान--कलौंजी हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोई जातीहै।

प्रयोग--(१) कलौंजी चरपरी और सुगंध युक्त होतीहै (२) पेट और आमाशयकी, बादीकी पीड़ा, अजीर्ण, मंदाग्नि, ज्वर और अतिसारको मिटातीहै (३) इसके प्रयोगसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (४) यह--उष्ण, कृश करनेवाली, फोड़ोंको पकाने और साफ करनेवाली और मूत्रवर्द्धक है (५) सर्दीके उपद्रवोंको मिटानेके लिये इसकी फकी देतेहैं (६) इसके प्रयोगसे कीड़े मरतेहैं (७) ५ रतीसे २॥ मासेतक कलौंजीके चूर्णकी फकी देनेसे शरीरकी ऊष्मा, नाड़ीकी चाल और शरीरके भीतरके यंत्रोंका सब प्रवाह बढ जाताहै वृक्क और त्वचाका प्रवाह अधिक बढताहै (८) ५ रतीसे १। मासेतक कलौंजीके चूर्णकी फकी देनेसे कष्टसे मासिक धर्म होना बन्ध होजाताहै (९) यह गर्भवतीको नहीं देनी चाहिये (१०) बलवर्द्धक औषधियोंमें इसकी भी गिनतीहै (११) यह रेचक औषधियोंके साथ दीजातीहै (१२) बचेकी माका दूध सुधारनेके लिये उसको शाक या खड़ीके साथ कलौंजी खिलानी चाहिये (१३) इसके बीजोंको गर्मकर दरदरा मलमलके कपड़ेमें बांध लगातार सूंघते रहनेसे मस्तककी सर्दी और प्रतिश्याय मिटताहै (१४) कपूर और कलौंजी

को पीसके ऊनी कपड़ेमें रखनेसे कीड़े नहीं लगतेहैं (१५) दूसरी कुष्ठनाशक औषधियोंके साथ इसको खोपरेके तेलमें पीसके मर्दन करनेसे कुष्ठ सम्बन्धी त्वचाके कई रोग मिटतेहैं (१६) कलौंजी ५ तोले व बची ५ तोले, गूगल ५ तोले दारुहलदीकी जड ५ तोले गंधक २॥ तोले नारियलका तेल दो बोतल इन सब चीजोंको दरगचके तेलमें डाल बोतलमें भर काक लगाकर ७ दिनतक धूपमें धरी रक्खें और उसको दिनमें दोतीन वेर खूब हिला दिया करें। इस तेलका मर्दन करनेसे कुष्ठआदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (१७) इसके तीन मासे चूर्णको ३ मासे मक्खनमें मिलाके चटानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१८) इसके ७ दाने स्त्री के दूधमें पीसकर नाकमें टपकानेसे कामलारोग का शेष पीलापन मिटजाताहै (१९) इसका क्वाथ पिलानेसे कामला मिटताहै (२०) इसको पानीके साथ पीसकर बालोंमें मलनेसे बाल बढने लगतेहैं और उनका गिरना बन्ध होजाताहै (२१) कलौंजी और एलुवेकी बत्ती बनाके गुदामें देनेसे चुरने मरतेहैं (२२) इसका और काले जीरेका लेप करनेसे सर्दीकी मस्तकपीडा मिटताहै (२३) कलौंजीके एक तोले चूर्णको मधुके साथ बारीके दिन चटानेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै (२४) इसको मद्यमें मिलाके लगानेसे बन्दरका विष उतरताहै (२५) इसको गुडमें मिलाके देनेसे विष ज्वर छूटताहै (२६) भुनी कलौंजी २ मासे नोसादर २ मासे और सोंठ ३ मासे इनको पीस पोटली बाधके सूंघनेसे प्रतिश्याय मिटताहै (२७) इसका पाक बनाके खिलानेसे कुत्तेका विष उतरताहै (२८) इसके पाकसे उदरकी वातपीडा, कृमि, अफारा और कफके रोग मिटतेहैं (२९) इसकी भस्मके मलनेसे अर्श मिटतेहैं (३०) इसकी भस्मको मधुमें मिला बत्ती बनाकर गुदामें रखनेसे अर्श मिटतेहैं (३१) इसके चूर्णकी फकी देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (३२) इसको दहीमें पीसके लेप करनेसे नारू मिटताहै (३३) इसको सिरकेमें पीस रातके समय मुखपर लेप करके प्रातःकाल धोडालनेसे मुंहासे अर्थात् जवानीकी फुन्सिया मिटतीहै (३४) इसी लेपसे त्वचाके सफेद चट्ठे मिटतेहैं (३५) इसके बीजोंमेंसे दो प्रकारका तेल निकलताहै एक काले रंगका सुगंध युक्त और उडनेवाला होताहै । दूसरा स्वच्छ प्रायः रंग रहित अर्थात् श्वेत और एरण्डके तेल जैसा गाढा होता है ।

संख्या (२३०)

ज्योतिष्मती, स्वर्णलता, कटभी, अनलप्रभा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मालकांगणी	मालकँगनी	मालकांगणी	मालकांगोणी	लताफट्की	मालकागनी	मालकगुनिविेत्तुल

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
फारिा	गंगुंगे	हब्बे किल-३	[illegible]	Calastrus paniculata Cilaiolfolia	The [illegible] plant Black oil

स्थान—यह झेलमसे आसाम तक, पूर्वी बंगाल, विहार, दक्षिण, हिन्दुस्थान, ब्रह्मा और सीलोनमें होताहै। (४४)

पहिचान—इसका झाड़ वेलकी भांति होताहै अर्थात् वृक्षपर चढताहै इसके कांटे नहीं लगतेहैं। इसके डोडेमें तीन खाने होतेहैं, उनमें ३ से ६ तक बीज निकलतेहैं, और उस डोडेका रंग लाल होताहै।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंको पानीमें ओटा कर तेल निकालतेहैं उस तेलकी १० से १५ बूंद तक दिनमें दो वेर देनेसे शरीरमें चैतन्यता पैदा होतीहै और कुछ घटों पीछे खुलासा पसीना होजाताहै परन्तु निर्बलता नहीं होतीहै (२) स्नायु सम्बन्धी और किसी अंगके शून्य और निश्चेष्टपनके नये रोगमें इसका तेल बहुत उपकारीहै (३) मालकागनी, लोबान, लोंग, जायफल और जावित्री, इन सबको मिलाकर अर्क खैंचतेहैं उसके साथ इन सबका तेल निकल जाता है (४) इसके बीजोंकी फकी देनेसे गठिया और वादीके दूसरे रोग मिटतेहैं (५) इसका खैंचा हुआ तेल फुप्फुसके रोगोंमें लाभकारीहै। इसके लेनेकी रीति पहिले प्रयोगमें लिखीहै (६) मालकँगनीके बीज, उष्ण, रूक्ष, पुरुषार्थ बढानेवाले और उत्तेजकहै (७) गठिया, छोटे जोड़ोंकी सूजन, पक्षाघात सम्बन्धी रोग, कुष्ठ और सर्दीसे पैदाहुए दूसरे रोगोंमें मालकँगनीको खाने और लगानेके काममें लाना चाहिये इसके खानेकी यह रीतिहै कि पहिले दिन एक बीज खाना फिर नित्य एक एक बीज बढाते जाना ऐसे १५ दिनमें १५ बीज तक बढाना। इसके बीजको खानेका आरम्भ करे तबसे इसका तेल

लगानेका या मालकँगनीके साथ ऐसीही दूसरी चीजोंको पीसके उस अंगपर लगानेका प्रारम्भ कर देवे (८) इसके बीज आदिका लेप, गाठिया और दूषित जल वायु आदिसे पैदा हुई पीड़ाको मिटाताहै (९) मालकँगनीके पत्तेभी औषधिके प्रयोग में आतेहैं (१०) इसके तेलको दूधकी लस्सीमें डालके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) इसका तेल लगानेसे नासूर और लम्बे घाव मिटतेहै (१२) आमाशयके बिगाड़मेंभी यह तेल काममें आताहै (१३) दूसरी कई औषधियोंको सप्ताह या महीने तक सेवन करनेसे जो रोग नहीं मिटतेहै वे इस तेलके सेवन करनेसे तुरंत ठीक होने लगजातेहैं। इसके सेवनका पहिला उत्तम गुण तो यहहै कि मूत्रवृद्धि होके जलंधर सम्बन्धी दूषित जल कम होने लग जाताहै। इसके सेवन करने वाले रोगीको बहुत हल्की और बहुत थोड़ी चीजें खानेको देतेहैं अर्थात् दूध और रोटीके सिवाय कुछ नहीं देतेहैं (१४) इसके तेलकी १० से ३० बूंद तक देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१५) और ५से १५ बूंद तक देनेसे पसीना आताहै और स्नायुजाल उत्तेजित हो जाताहै स्नायु सम्बन्धी रोग मिटानेके लिये मालकँगनी को दूधमें ओटाके पिलातेहैं (१६) मालकँगनीके बीजोंको खीरमें मिलाके खानेसे नपुंसकता मिटतीहै (१७) इसके तेलकी दश दश बूंदें नागर वेलके पानमें लगाके दिनमें दो तीन बेर खानेसे नपुंसकता मिटतीहै परन्तु उन दिनोंमें दुग्ध और घृतका अधिक सेवन करना चाहिये (१८) पांडु रोगकी जलयुक्त शोथमें इसके तेलका सेवन बहुत उपकारीहै (१९) इसके और मंडूकपर्णीके पत्तोंके रसमें चालछड़को पीसके लेप करनेसे कपालकी पित्तशोथ मिटतीहै (२०) २ मासे मालकँगनी और इलायचीदानेको निगलजानेसे कफका श्वास मिटताहै (२१) इसके बीजोंको पीसके लेप करनेसे रक्तार्श मिटताहै (२२) इसके तेलकी मात्रा दूधके साथ देनेसे उदर रोग मिटतेहै (२३) इसको २१ दिन तक गोमूत्रमें भिगो उसका तेल निकालके लगानेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै (२४) इसके तेलका पगथलियोंपर मर्दन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै (२५) जोड़ोंकी, वादीकी पीड़ा मिटानेके लिये और भूख बढानेके लिये मालकँगनीका सेवन इस प्रकार करना चाहिये कि पहिले दिन एक दाना और दूसरे दिन दो ऐसे नित्य एक २ दाना बढाताजाय जब ऊष्मा अधिक बढती जान पड़ेतो उसी दिनसे एक २ दाना पीछा घटानेका आरंभ कर देना चाहिये (२६) इसके तेलकी एक २ बूंद नित्य एक

महीने तक सेवन करनेसे बुद्धि बढतीहै परन्तु इसके सेवनेके समय चांवल और गायके घीका पथ्य लेना चाहिये। इसके बीजोंको यंत्रमें दबाकर तेल निकालते हैं वह तेल पीले रंगका और चरपरी सुगंधवाला होताहै।

संख्या (२३१)

❀ (सं०) महाज्योतिष्मती, तेजोवती, बहुरसा, कनकप्रभा।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मालकागणी	मालकागुनी	मालकाकणी	मालकागोणि	लताफटकी	उमजिनि	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Cardis permum Halleacabum	Ballo n vine Heart pea.

स्थान—इसकी बेल हिन्दुस्थानके बहुतसे जंगलोंमें और विशेष करके बंगाल और पश्चिमोत्तर देशमें होतीहै।

प्रयोग—(१) इसकी जड़ वामक, सारक, पेटकी शूलनाशक और चमड़ीको लाल करनेवालीहै (२) यह पसीने लातीहै मूत्र और बल बढाती है (३) इसको इकली, या दूसरी औषधियोंमें मिलाकर गठिया, स्नायुसम्बन्धी रोग और अर्श आदि कई रोगोंमें देतेहै (४) इसकी जड़का पांच छः तोले क्राथ दिनमें दो बेर पिलानेसे मल ढीला हो जाताहै (५) यह चेपदार होतीहै इसके स्वादसे कुछ जी मचलाताहै (६) इसके बीजोंके प्रयोगसे ज्वर में निर्बलता नहीं होतीहै (७) इसके बीजोंके सेवनसे पसीना होकर गठिया की पीड़ा कम हो जातीहै (८) इसके भुनेहुए पत्तोंकी फकी देनेसे मासिकधर्म मे यथोचित रज आने लग जाताहै (९) इसके पत्ते, सज्जीखार, वच और बिजैसारकी जड़की छाल इन सबको दूधमें पीस ४,४ मासेकी मात्रा तीन दिन तक देनेसे स्त्रियों के मासिकधर्म में यथोचित रज निकलने लग जाता है (१०) फुफ्फुस सम्बन्धी रोगोंमें इसके पत्तोंका सेवन उपकारीहै (११) इसके पत्तों

❀ मा० हि० बड़ी, गु० मोटी, म० थोर, बं० बड़। ये उक्त भाषाके आदमि हैं।

को पीस एरण्डके तेलके साथ पीनेमे गठिया और कमरकी पीडा मिटतीहै (१२) इसके पत्ते और गुडको तेलमें रांधके दुःखतीहुई आंखपर लेप करतेहैं (१३) इसके पंचांगको तेलमें ओटा, छान उस तेलको शरीर पर मर्दन करनेसे पित्तकी पीड़ा मिटतीहै (१४) अकडेहुए हाथ पैरोंके और गठियाके ऊपर इसके पंचांगको पानीमें पीसके लेप करना चाहिये (१५) इसके चूंटको दूधमें भिगोके लेप करनेसे सूजन और कठोर गांठ बिखर जातीहै (१६) मालकंगनी के पंचांगको रस सवा तोले भर नित्य पीनेसे मासिकधर्म यथोचित होने लग जाता है (१७) इस रसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्रकी दाह मिटतीहै इसके पत्ते और कोंपलें शाक बनानेके काममें आतीहैं।

संख्या-(२३२)

(सं०) झावुक, पिचुल:, झावू:, झावु:, अफल: ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
झाउ	झाऊ		सिरनाटी	झाऊगाछ		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		तर्फा	गज	Tamarix gallica T. indica.	Tamarisk

स्थान—झाऊके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सबठौर नदियोंके किनारे और समुद्रके पास बालूरेतमें और खारड़ीभूमिमें होतेहैं।

पहिचान—यह बीज और कलमसे लगाया जाताहै इसका वृक्ष जबतक छोटा रहताहै तबतक शीघ्रतासे बढताहै। और जल्दी जवानीको पहुंचके जल्दीही मरजाताहै। इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै उसकी पेडकी गुलाई ३ फुटकी होतीहै। इसकी डालियें मुड़ीहुई होतीहै और नवीन छोटी डालियोंकी छाल कुछ ललाईलिये भूरे रंगकी और चिकनी होतीहै उसपर कुछ सफेद छोटे दाग होतेहैं, इसकी पेडकी और बडी डालियोंकी छाल पतली कुछ हरी, भूरे रंगकी और खरदरी होतीहै। इसके बहुधा सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं

इसके पत्ते छोटे होतेहैं। इसके स्त्री और पुरुष जातिके पुष्प अलग २ नहीं होते। इसके डोंडू (गाल्स) रंगतेके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१) बड़ी मायं ग्राहीहै (२) बिगड़ेहुए और छौंकेवाले फोड़ोंपर और, उपदंश सम्बन्धी गाठोंपर इसके गाढे किये हुए काथका लेप करना चाहिये (३) इसके (गाल्स) डोंडू और टहनियोंकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (४) इसकी छालको रोकने वाहुतसा सज्जाखार और गंधकहै (५) इसकी छालमें एक मकोड़का कीड़ा छेद करदेताहै उसमेंसे मधु जैसी छोटी २ बूंदे निकलतीहैं, हवा लगने पर कड़ी पड़ जातीहैं तब उनको एकत्र कर रखतेहैं। इनका लेप करनेसे धिंडाहुवा फोड़ा साफ होजाताहै (६) इसके ३॥ मासे पत्तोंके चूर्णमें बराबर चूना मिलाकर फंकी देनेसे तिल्ली कम होजातीहै (७) इसकी हरी जड़ कोल्हुमें कूट कर उसके बराबर तिलोंके तेल और दुगुणे जलमें उसको डालकर औटावें जब सब पानी और आधा तेल जल जाये तब उस तेलको बालोंके चलोंमें लगानेसे सफेद बाल काले होजातेहैं—(८) इसके पत्तोंका बफारा लेनेसे प्रतिश्याय मिटताहै (९) इसके और अनारके छिलकेको महीन पीसकर चूर्णमें मिलाकर दिन और रातमें दोवेर लेप करनेसे स्तन कठोर होजातेहैं (१०) इसके कूंडेमें पानी पीना तिल्लीवालेको गुण करताहै (११) इसके पत्तोंके अर्क ३॥ तोलेमें मधु मिलाकर पिलानेसे तिल्ली मिटतीहै।

संख्या (२३३)

(स०) रक्तझावुक।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लालझाऊ	लालझाऊ		तावड़ीनिरनाटी	लालझाउ		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		तर्फा आइमर	गजेसुर्ख	Tamarix articulata T. orientalis	

होनेके समयका कष्ट मिटानेके लिये ओंगीझाडकी जडके काथमें इसको बुरका के पिलाना चाहिये (१८) गर्भाशयसे बहते हुए रुधिरको रोकनेके लिये सोहागे के जलमें कपडा भिगोके योनीके भीतर रखना चाहिये (१९) त्वचाके रोग मिटानेके लिये इसके पानीका मर्दन करना चाहिये (२०) स्त्रियोंके स्तनके घावपर इसका लेप करना चाहिये (२१) इसको मोममें मिला गोली बनाके कीडोंके खायेहुए दांतकी खोखलमें रखनेसे पीडा मिटतीहै (२२) फुलायेहुए सोहागेमें मिश्री मिलाकर मंजन करनेसे दांत दर्द मिटतेहैं (२३) सोहागा और सिरका मिला कर करके कानमें डालनेसे कीडे मरतेहैं (२४) बालकोंकी खांसी और कफ के रोगमें आधा कच्चा और आधा फुलायाहुआ सोहागा और [illegible] काली मिरचको ग्वारपाठेके रसमें घोटकर जनेके जितनी गोली बना देना चाहिये (२५) २ रत्ती फुलाये हुए सोहागेकी [illegible] इसमें गोली बना इसको प्रातःकाल खाकर उसके ऊपर थोडा घी पीवे और अलोना पथ्य रक्खे ऐसे ३ दिन तक लेनेसे अडकोषकी सूजन मिटतीहै (२६) इसको पीसकर बालोंमें लगानेसे जूवें मरजातीहैं (२७) इसको चावलके [illegible] साथ पिलानेसे [illegible] मूत्र होताहै (२८) इसको पानीके साथ पिलानेसे सर्पका विष उतर जाताहै (२९) विषको अधिक मात्रा लेनेवालेका विष उतारनेके लिये सीसे सोहागा पीसके पिलाना चाहिये (३०) इसको गिलोयके रसमें मिलाके पिलानेसे रक्तविकार (नासूर) मिटताहै (३१) ३ मासे भुने हुए सोहागेमें इतनीही देशी मिश्री चूर्ण बनाके सात दिनतक दोनों समय लेनेसे नासूर मिटताहै (३२) ३ तोले सुहागेको ४ तोले गुडमें मिलाकर उसमेंसे सोते समय [illegible] खानेसे श्वास मिटताहै (३३) एक भाग भुनाहुआ सोहागा और तीन भाग [illegible] महीन पीसकर दोनों समय एक [illegible] मासेकी मात्रा लेनेसे [illegible] होतीहै (३४) १० मासे सुहागा गुलाबके अर्कमें [illegible] मिलाकर [illegible] खानेसे और चिकना भोजन करनेसे [illegible] गलजाताहै (३५) सुहागेको [illegible] साथ पानीमें पीसकर मलनेसे [illegible] दूर होतीहै (३६) [illegible] तोले सुहागेको फुलाकर घीमें मिलाके पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै (३७) [illegible] का विष उतारनेके लिये [illegible] सोहागा खिलाना चाहिये (३८) सोहागा रंगतके काममें आता है।

(संख्या २३५) टङ्कारी

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
टंकारी	टंकारी		चिंकारी	टेपारी		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Physalis peruviana	The cape gooseberry

स्थान—टंकारीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें थोडे बहुत सब ठौर बोये जातेहैं।

पहिचान—इसके वृक्ष वैशाख ज्येष्ठमें बोतेहैं ये अंग्रेजी बगीचोंमें बहुत होतेहैं इसका फल आकृति आदिमें [illegible] बहुत मिलता हुआ होताहै वह चमकदार और कहरुवेके रंगका और बहुत स्वादिष्ट होताहै और कच्चाही खानेके काममें आताहै। पोष माघमें इसके फल पकतेहैं।

गुण—यह कडवा और पचनेमें हल्का होताहै, वात, कफ, सूजन, विसर्प और उदरविकारको मिटाताहै, अग्निको दीपन करताहै।

ढोलसमुद्रिका

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	ढोलसमुद्र		डिंडा	ढोलसमुद्र		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Leea macrophylla [illegible]	

स्थान—ढोलसमुद्रिकाके वृक्ष हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें अर्थात् बंगाल और आसाम तक और तराईमें और दक्षिणी हिन्दुस्थानमें होतेहैं।

पहिचान—इसके छोटे सफेद फूल लगतेहैं इसकी जड़ औषधके काममें आतीहै।

खनाबन्ध होताहै (७) यह बलवर्द्धकहै, और वारी से आनेवाले ज्वरको रोकताहै। पुराने फोड़े पर इसका लेप करना चाहिये ।

संख्या (२३६)

(सं०) तंडुलीयः, मेघनादः, विषघ्नः, कण्डेरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चनलाई	चौलाई	ताजलजो	तांदुलजा	निटेशाक	चौलाई	चिरीं चिलकूर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
शिरुकीरे	कीरेसोप्पु	बकलेयमानि या	सुर्फदगंदे	Amaranthus spinosus	Prickly amaranth.

स्थान— यह हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होताहै, परन्तु बंगाल और मलबारमें बहुत होतीहै ।

प्रयोग—(१) यह शीतल, लघु, रूक्ष, मधुर, रेचक, दीपन, और विषनाशकहै (२) सर्पका विष दूर करनेके लिये इसके पंचांगका रस पिलाया जाताहै (३) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (४) इसकी जड़को घोट छानकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै और पीप बन्द हो जाताहै (५) रक्तप्रदर मिटानेके लिये उसको मिटानेवाली दूसरी औषधियों के साथ इसकी जड़का प्रयोग किया जाताहै (६) फोड़ोंको जल्दी पकानेके लिये इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधतेहैं (७) गांठ और व्रणको जल्दी पकानेके लिये इसकी जड़का पुल्टिस बांधतेहैं (८) इसकी जड़के काथकी मात्रा २॥ से ५ तोले तक है (९) यह ठण्डी और मूत्रवर्द्धकहै (१०) इसको गर्म जलमें भिगो मल छानकर पिलानेसे मूत्रकी नालीका दाह और पीड़ा मिटतीहै (११) इसकी जड़को घिसके लेप करनेसे बिच्छूका विष उतर जाताहै (१२) इसकी जड़को रसोत, मधु, और चौंलाईके धोवनके साथ पिलानेसे सब प्रकारके प्रदर मिटतेहैं (१३) इसके और नीमके पत्तों को पीसकर कनपटी पर लेप करनेसे नकसीर बन्द होतीहै (१४) इसका शाक खानेसे पथरी गल जातीहै

(१४) इसकी सूखी या गीली छाल जड़को पीसकर गायके घीके साथ पिलानेसे विष उतरताहै (१५) इसकी जड़को पीसकर नारूपर बांधनेसे नारू गल जाताहै (१६) इसके पंचांगकी राखका उबटना या लेप करके थोड़ी देर धूपमें बैठके गर्म जलसे स्नान करनेसे फाई दूर होतीहै (१७) इसके पत्तोंको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका विष दूर होताहै (१८) इसका मधुमें अवलेह बनाके चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै ॥

संख्या (२४०)

(सं०) तमालः, कालस्कन्धः, नीलध्वजः, तापिच्छः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तमाल	श्यामतमाल	तमाल	तमालवृक्ष	तमालवृक्ष	तमाल	कानुगचट्ट

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पुगंमर	होंगेमरा			Garcinia morella G. lobulosa.	The Gamboge tree.

स्थान—तमालके वृक्ष पूर्वी बङ्गाल खासिया पहाड़ पश्चिमी और पूर्वी मालद्वीप आदि देशोंमें होतेहैं ।

गुण—यह कषैला, मधुर, शीतल और पचनेमें भारीहै ।

प्रयोग—(१) इसमेंसे एक प्रकारका गोंद जैसा पदार्थ निकलताहै वह अतितीक्ष्ण विरेचकहै (२) इसके प्रयोगसे पेटके कीड़े मरतेहैं (३) जलधर तथा उसी प्रकारके दूसरे रोगोंमें इसका प्रयोग बहुत उपकारीहै (४) इसकी अधिक मात्रा देनेसे यह आंतोंमें बहुत तीक्ष्ण पीड़ा पैदा करके विषका काम देताहै, इसलिये बच्चोंको बड़ी सावधानीसे देना चाहिये (५) विरेचनके लिये इसको इकल्ला देनेमें पेट बहुत कटताहै और पीड़ा बहुत होतीहै इसलिये पीड़ा और काट मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसको देना चाहिये (६) इसका लेप करनेसे शोथ उतरतीहै और पीड़ा मिटतीहै (७) इसकी टहनियोंके टुकड़ोंको पानीमें घिसके लेप करनेसे फुन्सियां मिटतीहैं (८) स्याम देशसे

संख्या (२४२)

(सं०) तरुणी, शतपत्री, लाक्षापुष्पा, चारुकेसरा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गुलाब	गुलाब	गुलाब	गुलाब	गोलाप	गुलाब	रोजापुष्पमु,

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
रोजापुष्पम्	गुलाबि	वर्द	गुल	Rosa Damascene	Rose The Damask, Bussora or persian rose

स्थान — गुलाब हिन्दुस्थानमें सबठौर बागोंमें बोया जाताहै ।

पहिचान — चैत वैशाखमें इसके गुलाबी रंगके पुष्प लगतेहैं । इसकी शाखाओंमें छोटे २ कांटे लगतेहैं । गुलाबके फूलोंका इत्र निकाला जाताहै और उसीका गुलाबजल भी बनाया जाता है ।

प्रयोग — (१) गुलाब शीतल, ग्राही, पचनेमें लघु, कड़वी, चरपरी, पाचक और सारकहै । फूलेहुए गुलाबके पुष्पकी पंखड़ीकी अपेक्षा गुलाब की कली अधिक संकोचक होतीहै (२) इसकी कलियां शीतल रूक्ष, बलवर्द्धक और सारकहैं (३) इसकी पंखड़ियोंका लेप संकोचकहै (४) इसकी डंडी उष्ण, रूक्ष और ग्राहीहै (५) उष्णकालके अतिसारको मिटानेके लिये गंधक के तिजाबको गुलाबजलसे हल्का करके पिलाना चाहिये (६) शुक्त एक भाग, गुलाबजल एक भाग और पानी दश भाग मिला उसमें कपड़ा भिगोकर शिर पर रखनेसे ज्वरकी उष्मा कम हो जातीहै (७) एक भाग गुलाबजलमें दो भाग मैल मिलाकर पिलानेसे नाक टपकने लग जाताहै (८) तृषा कम करने के लिये यही जल पिलाना चाहिये (९) इस जलको पिलानेसे ज्वरमें मस्तक की भड़कन कम हो जातीहै (१०) इस जलके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है (११) आंखके ऊपर इस जलमें भिगायाहुआ रूईका फोया बांधनेसे पित्त की नेत्रपीडा मिटतीहै (१२) गुदामें पिचकारी देनेके लिये गुलाबजलको काम

में लातेहैं (१३) यह हृदय और मस्तकसम्बन्धी रोग, अर्श और वातके उपद्रवको मिटाताहै (१४) गुलाबकी शर्बत पिलानेसे गर्मीकी बेहोशी मिटती है (१५) आंखोंपर गुलाबजलके छींटे देनेसे गर्मीकी बेहोशी मिटतीहै (१६) इसके पत्ते चबानेसे मुखपाक मिटताहै (१७) दो भाग बूरेमें गुलाबके पुष्पोंकी एक भाग पंखडियोंको मलकर ४० दिन तक धूपमें रखनेसे गुलकंद अच्छा बन जाताहै (१८) या इसी तरहसे मधु मिलाके बनायेहुए गुलकंदके सेवन करनेसे पाचनशक्ति और उदरका बल बढताहै (१९) इसके पुष्पोंके तेलका मर्दन करनेसे गुदाकी शोथ उतरतीहै।

संख्या (२४३)

(सं०) शेवन्ती, रामतरुणी, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेवती	सेवती	कोटेशेवती	शेवती	गुलदन्ती		चामन्तिपुव्वु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शामन्तिप्पू	शामन्तिहुव्वु	निसरीन		Chrysanthemum coronarium Or Roxburghii.	

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें बोई जातीहै।

पहिचान—छोटे, बडे या सफेद, पीले और नारंजी रंगके पुष्पोंके भेदसे यह कई प्रकारकी होतीहै। इसके पत्तेभी अलग २ प्रकारके होतेहैं।

प्रयोग—(१) सेवती शीतल, कुछ कपेली, मीठी और सार है। सेवती की जड़को चबानेसे मुहमें अकलकरे जैसी चरपराहट लग जातीहै और उसकी ठौर काममेंभी आसकतीहै (२) सेवती के पत्तोंको काली मिरचके साथ पीसके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३) इसकी जडको कालिंजन और सोंठके साथ औटाके पिलानेसे शूल, स्त्रियोंका आवेशका रोग, मस्तकपीडा, तन्द्रा और पानीजरा मिटताहै (४) इसकी जड़को चबानेसे जीभकी निरसतापन मिटतीहै (५) अपस्मार, पुराने नेत्र रोग

और मुखके शिरा सम्बन्धी रोगोंमें इसका प्रयोग बहुतही उपकारीहै (६) इसकी जड़को पीस पुल्टिस बनाके बांधनेसे कच्ची गांठें बिखर जातीहैं और जिसमें पूय पड गयाहो वे शीघ्रतासे पक जातीहैं. (७) इसकी जड़को घिस गर्म कर पके हुए फोड़े पर लेप करनेसे उसका मुंह खुल जाताहै ।

संख्या (२४४)

(सं०) ताम्रं, म्लेच्छमुखं, शुल्वं, उदम्बरम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तांबो	तांबा	त्राम्बु	तांबे	तामा	तांबा, ताम्मा	रागि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
ताम्रं शम्बु	ताम्र	नोहास	मिस	Cuprum	Copper

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर खानोंमेंसे निकलताहै ।

पहिचान—तांबा दो प्रकारका होताहै एक-नेपाल और दूसरा म्लेच्छ । इनमें नेपाल नामका ताम्र उत्तम होताहै । उत्तम तांबेकी परीक्षा यहहै कि जिसका रंग गुडहलके पुष्प जैसा हो, स्निग्ध कोमल चोट सहनेवाला हो जिसमें लोह और शीशा नहीं मिलाहो और जिसको धोनेसे लाल रंग निकलता हो ऐसा तांबा औषधिके प्रयोगमें उत्तम होताहै ।

ताम्रमें—(१) वमन (२) भ्रम (चक्कर) (३) घबराहट (४) दाह (५) शूल (६) कंडू (७) विरेचन (८) वीर्यका नाश ये आठ दोष होतेहैं । इन दोषोंको मिटानेके लिये इस प्रकारसे इसका शोधन करना चाहिये—

इसको शुद्ध करनेकी रीति—(१) इसके कंटक वेधी पत्रोंको लाल कर २ के तक्र तेल और गोमूत्रमें अलग २ सात २ बेर बुझानेसे वान्ति दोष मिटताहै (२) ऐसेही कांजी और कुलत्थी के क्वाथमें बुझानेसे भँवलका दोष मिटताहै (३) थुहर और गौके दूधमें बुझानेसे घबराहट पैदा करनेवाला

दोष मिटताहै (४) इमली और नींबूके रसमें बुझानेसे दाह कारक दोष मिटताहै (५) ग्वारपाठे और नारियलके जलमें बुझानेसे शूलकारक दोष मिटताहै (६) दुग्ध और गौ घृतमें बुझानेसे कंडूकारक दोष मिटताहै (७) शूरणके रस और दहीमें से निकलेहुए पानीमें बुझानेसे विरेक करनेवाला दोष मिटताहै (८) मधु और दाखोंके रसमें बुझानेसे वीर्यनाशक दोष मिटताहै बुझावा देनेके लिये जितने द्रव्य लिखेहै उन प्रत्येकमें सात ७ बेर बुझाना चाहिये।

ताम्रभस्म बनानेकी यह रीतिहै—कि एक भाग पारा और दो भाग गंधककी कजलीको नींबूके रसमें खरल कर ३ भाग शुद्ध तांबेके पत्रों पर लेप कर उनको सुखा दो सरावोंमें कपडमिट्टीसे बन्ध कर गजपुटकी आंच देके स्वांग शीतल होनेपर सरावोंमेंसे उस ताम्रको निकालकर फिर उक्त रीतिसे शूरणकदके रसमें खरलकर टिकडी बना, सुखाके उक्त रीतिसे गजपुटकी आंच देकर स्वांग शीतल होनेपर निकाल खरलकर उसमेंसे एक चांवल प्रमाण दहीपर डालकर उसको चार पहरतक पडा रक्खे। जो दही पर हरापन आजावे तो उक्त रीतिसे आंच देते रहें और उसकी परीक्षा करते रहें जब दहीपर हरापन आना बन्ध होजाय तब उक्त रीतिसे पंचामृतके तीन आंच देकर औषधीके प्रयोगमें लाना चाहिये। ऐसे बनाई हुई ताम्रभस्ममें वान्त्यादिक दोष नहीं रहतेहैं। इसकी भस्म बनानेकी दूसरी रीति—उक्त रीतिसे शुद्ध किये हुए ताम्रका चूर बना उसको छोटी दूधीके रसमें खरल कर टिकिया बना उसी दूधीकी लुगदीमें रखकर उसको सराव संपुटमें बन्ध कर उक्त रीतिसे गजपुटकी आंच दे निकाल उसी रीतिसे फिर उसके रसमें खरल कर टिकिया बना २ के ५१ आंच देनेसें शुद्ध निर्दोष ताम्रभस्म होजातीहै।

ताम्रभस्मके गुण—यह परिणामशूल, उदररोग, वातशूल, पांडु, ज्वर, गुल्म, प्लीह, क्षय, मन्दाग्नि, श्वास, कास, संग्रहणी कुष्ठ, वात, कफ, शोथ, तन्द्रा, कृमि, वमन, मोह, अतिसार, अर्श, भ्रम, मस्तकरोग, प्रमेह और हिक्का आदि अनेक रोगोंको अलग २ अनुपानके साथ मिटातीहै (२) केंचुएमें से निकाले हुए ताम्रके गुण—यह शीतल होताहै, सब प्रकारके कोढ और व्रणों को मिटाताहै।

संख्या (२४५)

(सं०) ताम्रकूटः, वज्रभृङ्गी, क्षारपत्रा, कृमिघ्नी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तमाकू(खू)	तमाखू	तमाकु	तम्बाखू	तामाक	तमाकु	पोगाकु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पुहै, इलै	होगेसोप्पु	तम्बाकू		Nicotiana Tobacum	Tobacco American or verginian Tobacco.

स्थान — तमाखू हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै ।

इसको औटानेसे एक प्रकारका गहरा, भूरा, चरपरा और कुछ दुर्गंधवाला अर्थात् तमाखू जैसा गंधवाला तैल निकलताहै । इसके १०० तोले बीजोंमें से ३६ तोले तेल निकलताहै, इसका रंग कुछ हरासे लियेहुए पीला होताहै, इस में गंध नहीं होतीहै इसको खुला रखनेसे जल्दी सूख जाताहै । तमाखूके तैल में बहुत विष होताहै ।

प्रयोग—(१) तमाखू उष्ण, तीक्ष्ण, चरपरी, कडवी और वामकहै और दृष्टिको निर्बल करतीहै इसके पत्ते नाड़ीके स्पंदको घटातेहैं (२) तमाखूका धूंआं हवाको शुद्ध करता है (३) विसूचिकाके रोगी के पास इसकी धूनी देनी चाहिये (४) हुक्केका पानी मूत्रवर्द्धकहै (५) नहचेमें जो काला तेल होता है उस को नाडीव्रण पर लगाना चाहिये (६) रतौंधी मिटाने के लिये उसका आंखमें अंजन करना चाहिये (७) आंख दुखनेसे जो गीड बहुत आया करतेहैं, वे इसके अंजनसे मिट जातेहैं (८) तमाखू, चूना और पुन्नाग की छालका लेप करनेसे अण्डवृद्धि मिटतीहै (९) धनुस्तम्भमें पृष्ठ वंशपर तमाखूके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (१०) इसके अधिक सूंघनेसे एक प्रकारकी असाध्य मन्दाग्नि हो जातीहै (११) तमाखूके अधिक खाने और पीनेसे स्नायु जालकी शक्ति निर्बल हो जातीहै (१२) यह अग्निको बिगाडतीहै और यकृत्के कर्मको शिथिल करती है और अर्द्धाङ्गका पूर्वरूप पैदा

करतीहै (१४) इसका बहुत सेवन करनेसे बहुतसे शारीरिक उपद्रव होतेहैं परन्तु साधारण रीतिपर खाने पीनेसे स्वास्थ्यकी हानि नहीं होतीहै (१४) धनुस्तम्भमें पट्ठेके खिंचाव और ऐंठनको मिटानेके लिये तमाखूको पत्तोंको दश बारह या सोलहगुने जलमें ओटा चौथाई बाकी रखेहुए क्वाथका बफारा देना चाहिये (१५) बच्चोंकी गुदामें इसके पत्तेकी बीचली सींक रख देनेसे मल ढीला होजाताहै (१६) अंडकोषकी पीडा और सूजन मिटानेके लिये इसके ताजे पत्ते अथवा सूखे पत्तोंको गीले करके बांधना चाहिये (१७) नाक या गलेमें जो जोंक चिपटजातीहै उसको उतारनेके लिये इसके पत्तोंका चूर्ण या हुक्केके नहचेके भीतरका कीटा काममें लाना चाहिये (१८) इसके सूखे पत्तोंको अंडकोषपर बांधनेसे हृल्लास और वमन अवश्य होताहै (१९) कुचीलेके सत्त्वका विष उतारनेके लिये इसके पत्तोंका हिम या फांट पिलाना चाहिये (२०) फोडेपर इसके पत्तोंका लेप करनेसे पीडा मिटतीहै (२१) पांडुरोगवालेको तमाखूका धूम्रपान करना चाहिये (२२) मंदाग्नि आदि पेटके रोगवाले पशुको इसका धूम्रपान लाभकारीहै (२३) फूलेहुए मसूडोंपर इसके पत्तोंका चूर्ण मलनेसे उनका पकना बंद होजाताहै और पीड़ा मिटजातीहै (२४) हुक्केके पानीसे व्रणको धोनेसे उसके कीडे मरजातेहैं (२५) तमाखूके अधिक पीनेसे (तिमिर रोग, नेत्ररोग) होजाताहै (२६) साधारण रीतिसे तमाखू पीनेसे कई प्रकारकी मंदाग्नि मिटतीहै (२७) तमाखूके सूखे पत्तोंको नीबूके रसमें पीसके तिल्लीपर लेप करना चाहिये (२८) इसको खानेवाला जबतक इसको मुहमें रखताहै तबतक उसके मुंहसे पानी गिरता रहताहै (२९) दो भाग तमाखू और एक भाग काली मिरचको पीसकर मंजन करनेसे दंतपीडा मिटतीहै (३०) कोल्हू (घाणी) से निकाले हुए तमाखूके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे श्वेतदाग मिटतेहैं (३१) तमाखूके गुलको पीसकर लगानेसे फोडा जल्दी पककर फूटजाता है (३२) इसके गुलको कडुवे तेलमें पीसके लेप करनेसे गंज दूर होतीहै (३३) आध सेर तमाखूको आध सेर पानीमें चार पहर भिगो उसको निचो उस पानीमें बराबर तेल डालकर औटावे जब तेल शेष रहजावे तब उसको उतार लेवे इसका मर्दन करनेसे जोडोंकी पीडा मिटतीहै (३४) तमाखूके गुलकी राखको पानीमें ८ पहर भिगो उसके नितरे हुए पानीको कढाईमें चढा

उसको छिजो, खार बनाके २ रतीकी मात्रा देनेसे, कास और श्वास मिटताहै (३५) इसके हरे पत्तोंके रसमें बराबर गुड मिला शर्बत बनाके १४ से २८ माशे तक देनेसे श्वास मिटताहै (३६) इससे दस्त और वमन होनेके कारण निर्बल मनुष्य को इसकी थोड़ी मात्रा देनी चाहिये (३७) इसके बीज दो भाग, और छाल एक भाग, को महीन पीस छान मीठे तेलमें ४ महर तक उष्ण रखके इन्द्रीपर लगानेसे हयरसके उपद्रव मिटतेहैं।

संख्या (२४६)

(सं०) तालः, लेख्यपत्रः, तृणराजः, महोन्नतः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ताड	ताड ताल	ताड	ताड	ताल गाछ	ताड	ताडु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पानम्मरं	वालमेरं			Borassus flabelliformis	Palmyra palm, brabtree

स्थान—ताड़के वृक्ष दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थान, बङ्गाल, सिन्धके नीचेके भाग, और संयुक्त प्रदेशमें अलीगढ और शाहजहाँपुरमें बहुत बोये जातेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष ४० से ६० फुटतक और कहीं कहीं १०० फुटतक ऊंचा होताहै। पूरे बढेहुए वृक्षके जड़से ऊपर पेदड़केभागकी मध्यरेखा बहुधा प्रायः १॥ २ फुटकी होतीहै, इसके पत्तेमें ६० से ८० भाग होतेहैं, उन हरेक हिस्सोंकी मध्यरेखा ३ से ४ फुट होतीहै। इसके पुष्प कोमल, गुलाबी और पीले रंगके होतेहैं, एक कलीमेंसे एक २ पुष्प धीरे २ खुलताहै इसका फल कुछ दबाहुआ चिकना और चमकदार होताहै उसका छिलका कुछ पिलास लिये हुए, भूरे रंगका होताहै उसमें कड़े चूंसदार पीले रंगकी गिरी उसके बीजोंके लिपटीरहतीहै उसमें २ से ४ तक बीज निकलतेहैं इसके एक प्रकारका काला गोंद लगता है।

फूलनेफलने का समय—फागुनके महिनेमें इसके पुष्प लगतेहैं चैत बैशाखमें छोटे फल और असाढ श्रावणमें इसके बड़े फल पकतेहैं इसके फल की मध्य रेखा ५ से ७ इंचकी होतीहै।

प्रयोग—(१) यह मधुर, शीतल, सारक, स्निग्ध, और पचनेमें भारीहै। इस वृक्षका रस उत्तेजक और कफनाशक है (२) इसका ताजा रस बहुत मीठा और सारक होताहै इसको लगातार कई दिनों तक पीते रहनेसे बद्धकोष्ठ मिट जाताहै (३) यह त्रिदशोथपर लगाया जाताहै (४) जलंधरके रोगमें इस रसको पिलातेहैं (५) इसके पुष्पोंके सूखे हुए गुच्छेकी राखको पिलानेसे हृदय की जलन मिटती है (६) इसकी फलीके चूर्ण की फकी देनेसे शरीर पुष्ट होताहै और बल बढताहै (७) इसका रस पिलाने से तिल्ली मिटती है (८) इसकी अंतरी कलीको जलके साथ घोट छानके पीनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (९) इसकी जड ठण्डीहै और रक्तको बढातीहै (१०) इसकी ताडीमें चावलोंके आटेकी लेई पका उसको कपडेपर फैला हल्की अग्निपर तपाके सडेहुए मांसवाले फोडे अदीठ और सुप्त फोडोंपर लगानेसे उनमें जल्दी अकुर आने लगताहै (११) इसके पकेहुए फलके गूदेका लेप करनेसे त्वचा के रोग मिटतेहैं (१२) इसकी पत्ते लगीहुई साखाकी जडके बाहिर रूई जैसा एक हल्का भूरा पदार्थ होताहै उसको घावमेंसे बहते हुए लोहीको रोकनेके लिये घावपर लगाते हैं (१३) इसके रससे सिरका, ताडी और मदिरा बनाई जातीहै (१४) इसके रसमें थोडा खमीर उठाके पिलानेसे मूत्रातिसार मिटताहै (१५) इसके पुष्पोंके गुच्छेकी भस्म पिलानेसे पित्तके रोग मिटतेहैं (१६) इसके पत्ते और छोटी जडोंका रस निकालके पिलानेसे पटकी आनोंमें अधिक द्रव का होना और हिचकी मिटतीहै (१७) इसका ताजा रस पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१८) इसके ताजे रसमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१९) इसके खमीर उठायेहुए रससे किसी २ को तीव्र विरेचन लग जाताहै (२०) उष्णकालमें इसके ताजे रसको ठंढाईकी ठौर पीतेहैं (२१) इसके कच्चे गूदेकी पोलमें जो पानी रहताहै वह मीठा होताहै उसको पिलानेसे वमन और खांसी वमने बन्द होजातीहै (२२) ताडके कच्चे बीजोंमें जो दूधिया रस रहताहै वह मीठा और ठण्डा होताहै उसको पिलानेसे हिचकी और उत्क्लेद मिटताहै (२३) उपदंश

से जब अण्डकोष और इन्द्रीयें सूजन होजातीहै और टाकियां बहुत बढ़जाती हैं तो उनको मिटानेके लिये इसके हरे पत्ताका रस पिलातेहै (२४) ज्वरकी प्यास और दाहको मिटानेके लिये इसका फल खिलातेहैं (२५) इसके मीठे रसमें सुगन्धित पदार्थ जैसे लौंग और दालचीनी आदि मिलाके रोगीके बल और अग्निके अनुसार पिलानेसे उसका दुर्बलपन मिटताहै और पराक्रम बढ़ताहै (२६) इसके पुष्पोंके सूखेहुए गुच्छेकी भस्मको उसी गुणवाला दूसरी औषधियोंमें मिलाके देनेसे बारीसे आनेवाला वेग मिटताहै (२७) इसके पुष्पोंके गुच्छेको काटनेसे जो ताजा रस निकलताहै उसको पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके जलधर मिटताहै (२८) ताडके पत्तोंका खार और हींगको चांवलोंके मांडके साथ पीनेसे मेदवृद्धि मिटतीहै (२९) इसकी उत्तरदिशाकी जड़को शरीरके बराबर लम्बे धागेसे स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाताहै (३०) इसकी शाखाका रस पिलानेसे उन्माद मिटताहै।

संख्या (२४७).

(सं०) तालीसपत्रं, पत्राख्यं, शुकोदरं, धात्रीपत्रम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तालीसपत्र	तालीसपत्र	तालीसपत्र	तालीसपत्र	तालीशपत्र	तालीसपत्री	तालीसपत्री

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
ताळीशपत्र	तालीसपत्र	जरनब		Abies webbiana Pinus W	The Himalayan silver fir

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें, सिन्धु नदीसे भूटान तक होतेहैं।

परिचान—इसका वृक्ष १२० से १५० फुटतक ऊंचा होताहै इसकी पेड़की गुलाई १४, १५ फुट और कहीं कहीं २५, ३० फुटकी होतीहै। सघनघन वनके सिवाय और स्थानोंमें इसकी डालियां ऐसी फैलतीहैं कि जमीन तक चली जातीहैं। इसके छोटे वृक्षकी छाल चिकनी और रेशम जैसी सफेद होतीहै। पुरानी पेड़की छाल कुछ भूरी सफेद होतीहै, इसकी

छोटी शाखियोंका एक २ पत्ता चकर खाता हुआ निकलताहै। इसके पत्ते चिकने और बहुत कम चौड़े अर्थात् एक इंचका ८ वां भाग चौड़े और एकसे ३ इंच लम्बे होतेहैं, उनके ऊपरका भाग गहरा हरा और चमकदार होताहै, नीचेका भाग खरदरा होताहै। चैत, वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकल आते हैं वे खुलासा हरे रंगके होतेहैं और पुराने पत्ते काले रंगके होजातेहैं और दूरसे कालेही दीखतेहैं। यह वृक्ष सदैव हरा बना रहताहै। इसमें राल जैसा सफेद पदार्थ लगताहै। इसमेंसे बैंजनी रंग निकालाजाताहै।

फूलने फलनेका समय—चैत्रमें इसके पुष्प लगतेहैं। वैशाखके अन्त तक इसके शंकके आकारके फल, तीन इंच तक लंबे बढ जातेहैं और भादोंमें पक जातेहैं, आसोजमें उनके छिलके और बीज वृक्षसे गिर जातेहैं।

प्रयोग—(१) तालीश पत्र पचनेमें हल्का, तीक्ष्ण, उष्ण, कडुवा और मीठाहै। इसके गोंदको गुलाबके तेलमें मिलाके चाटनेसे नशा आजाताहै (२) इसको मस्तकपीडा और स्नायुपीडाआदिमें लगातेहैं (३) इसके सूखेपत्तोंके चूर्णको अजवायन के साथ देनेसे अफारा मिटताहै (४) मधुके साथ चटानेसे सूखी खासी मिटतीहै (५) काले नमकके साथ देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (६) इन्द्रजौके साथ देनेसे अतिसार मिटताहै (७) छोटी इलायची और वंशलोचनके साथ मधुमें चटानेसे बल बढताहै (८) अडूसेके पत्तोंके साथ औटाकर पिलानेसे क्षय रोग मिटताहै (९) हलदीके साथ चिलममें रखके पिलानेसे श्वास मिटताहै (१०) अदरकके रसके साथ चटानेसे खासी मिटतीहै (११) सोंठके साथ पीस गर्मकर नलोंपर लेप करनेसे मूत्रातिसार मिटताहै (१२) कुत्ताखांसीमें इसके पत्तोंको गर्मजलमें भिगो छानके पिलाना चाहिये (१४) तालीसपत्रकी मात्रा पौने दो मासेसे साढे तीन मासे तक कीहै (१४) बच्चोंको वायुसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसके ताजे पत्तोंके स्वरसकी ५ से १० बूंदें जलमें या उसकी माके दूधमें मिलाके देना चाहिये (१५) ऐसेही दांत निकलनेके समयमें और आंतोंके रोगोंमें भी दिया जाताहै (१६) बच्चा होनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेको लिये इसके चूर्णकी फकी देतेहैं (१७) इसके ३॥ मासे चूर्णको शर्बतके साथ देनेसे हृदयका बल बढताहै और अतिसार मिटताहै।

संख्या (२४८)

(सं०) तिनिशः, स्यन्दनः, नेमी, रथद्रुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	तिरिच्छ	हमों	तिवस	जारुलगाछ	तिरिच्छा	नेमिमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	आरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	हुलगति			Ougeinia dalbergioides; Dalbergia ougeinensis	

स्थान—तिनिशके वृक्ष हिमालयमें सतलजसे तिसटातक मध्य हिन्दुस्थान अवध गोरखपुर गोदावरी और कनाराके जंगलोंमें और आयद्वीपके पश्चिमकी तीरपर होतेहैं।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ३० से ४० फुटकी होतीहै इसकी छोटी और मुड़ी हुई पेड़की गुलाई ३ से ५ और कभी ७, ८ फुटकी होतीहै । इसकी छाले गहरे भूरे रंगकी होतीहै । इसके पत्ते चौड़े अंडेके आकारके ३ से ६ इंच लम्बे होतेहैं पोष और माघमें इसके पुराने पत्ते गिरजातेहैं, और चैत वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं, इसके लाल रंगका गोंद लगताहै फूलने फलनेका समय—फागुनसे वैशाखतक इसके पुष्प निकलते रहतेहैं।

प्रयोग—(१) तिनिश कषेला, उष्ण, और ग्राहीहै इसके गोंदकी फंकी देनेसे अतिसार मिटताहै, (२) सेकीहुई सौफ मिश्री और इसका गोंद प्रत्येक बराबर १ ले पीस घृतमें मिलाके चटानेसे आमातिसार मिटताहै (३) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै।

संख्या (२४९)

(सं०) तिन्दुकः, स्फूर्जकः, कृष्णत्वक्, कृष्णसारः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तेंदू	तेंदू	टींबरवो	टेंभरणी	गाव, तेंद	तेंदु	तुमिकि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
	तुबार	आबनूस		Diospyros Embryopteris Glutinosa	

स्थान—तेंदूके वृक्ष हिन्दुस्थानमें पंजाब और सिन्धके सिवाय प्रायः बहुत ठौर होतेहैं

पहिचान—इसकी ऊंचाई ३०, ३५ फुटकी होतीहै। इसका पेड़ खड़ी और सदैव सीधी नहीं होतीहै और उसकी गुलाई ४ फुटकी होतीहै इसके फली हुई शाखें लगतीहैं। इसकी छाल आधइंच मोटी और काले रंगकी होतीहै इसके छोटे पत्ते रएंदार होतेहैं इसकी डालियोंकी दोनों ओर पत्ते लगतेहैं परंतु वे सीधे और एक दूसरेके सामने नहीं लगतेहैं कुछ अंतरसे लगतेहैं इसके सुगंध युक्त सफेद पुष्प लगतेहैं। इसके पुरुष पुष्प ३ से ६ तक एकठौर लगतेहैं और स्त्री पुष्प बड़े और अलग २ लगतेहैं। इसके फलकी मध्यरेखा डेढ़से दो इंच होतीहै, कच्चे फल हरे और पकजानेपर कुछ सफेद पीले रंगके होजातेहैं उनकी चेपदार गिरमें ४ से ८ तक बीज दोर २ गड़े रहतेहैं। पतझड़में इसके पत्ते नहीं गिरतेहैं।

फलने फलनेका समय—फागुनसे बैशाखतक इसके पुष्प लगतेहैं, मृगशिर तक फल पकतेहैं। यह बोये जानेके पीछे ८ वें वर्ष तक पूरा फलने लगताहै।

पहिचान—इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै। इसके फल रंगतके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१) यह कषेला, कड़वा, स्निग्ध, उष्ण, ग्राही और पचनेमें भारी है। इसके फल और छाल ग्राही हैं। (२) इसके फलोंको जल में औटानेसे तेल निकलताहै, इसके तेलकी बूंदें सोंठके जलमें डालके पिलाने-से अतिसार मिटताहै। (३) इसके फलके फाटके गंडूष करानेसे मुखपाक और गलेके छाले मिटतेहैं (४) इसके बीजोंकी फंकी देनेसे अतिसार मिटताहै (५) इसके कच्चे फलमें छेद करनेसे एक प्रकारका गाढ़ा, कषेला और शोणितपंक रस निकलताहै जो ताजे घावोंपर लगाया जाताहै (६) इसके फलका ७॥ मासे रस २॥ पाव जलमें डालके स्त्रीके गुह्य स्थानमें पिचकारी देनेसे श्वेत-प्रदर मिटताहै। (७) इसका कच्चा फल बहुत ग्राही होताहै। ज्यों यह पकताहै

त्योंही इसका ग्राहीपन जाता रहताहै और मीठा होजाताहै (८) इसकी छाल का काथ पिलानेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (९) इसका स्वरस पिलानेसे पेटके भीतरके यंत्रोंमेंसे रुधिरका बहना बन्द होजाताहै (१०) इस के पकेहुए फलकी चपदार गिर गोंदकी ठौर काममें आतीहै (११) इसकी लकडीको घिसकर अञ्जन करनेसे नेत्रका ढलका बन्द होजाताहै (१२) इसकी लकडीको घिसकर लेप करनेसे भिलावेके धुंएसे उत्पन्नहुई शोथ मिट-तीहै (१३) इसका फल खानेके काममें आताहै। इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै। इसका पकाहुआ फल बहुत मीठा होताहै। इसमें कीडे नहीं लगतेहैं।

संख्या (२५८)

(सं०) विषतिन्दुकः, काकेन्दु, कुपीलु, मर्कटातिन्दुकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कुचीला	कुचिला। कुचला	झेरकोचला	कुचला	कुचिलागाछ	कुचले	विषमुष्टि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी
विषमुष्टि	विषमुष्टिबीज	कातलुल किलाब	कुचला	Strychnos Nux vomica.	The nux vomica Strychnine tree. Vomitnut Poison or Quaker's nut

स्थान--कुचीलेके वृक्ष हिन्दुस्थानके उष्ण भागमें होतेहैं। ये बंगालेमें बहुत कम होतेहैं परन्तु मद्रास और टेनासारिममें बहुत होतेहैं।

पहचान--इस वृक्षकी ऊंचाई ४० फुटतक होतीहै कुचीला गोल और चिपटा होताहै इसकी गोलाईकी मध्य रेखा १ इंच तक होतीहै। कुचीला चौथाई इंच मोटा होताहै। इसके बीचमें एक बिन्दुसा होताहै कुचीलेके ऊपर सफेद चमकदार रूंए होतेहैं। इसकी गिर सफेद होतीहै चिपटेपनमें इसकी गिरके दो विभाग करनेसे उसके बीचमें एक छोटासा पत्ताउ निकलताहै उसको जीभी कहतेहैं कुचीले स्वादमें बहुत कडुवे होतेहैं यह रंगतके काममें आतेहैं। इसके बीजोंको तेलमें छोटाके तेल बनातेहैं।

प्रयोग--(१) कुचीला बहुत कडुवा, शीतल, चरपरा, हलका, पचनेमें

हल्का रूक्ष दीपन और भेदनहै इसकी लकडीका क्वाथ बनाके पिलानेसे वल बढताहै (२) कुचीलेको मन्दाग्नि मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ देनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (३) स्नायुजालके रोग मिटानेके लिये कुचीलेका प्रयोग करतेहैं (४) सर्पका विष उतारनेके लिये कुचीलेकी जडका प्रयोग करतेहैं (५) कुचीलेकी लकडीको घिसकर पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (६) कुचीलेको जायफल, जावित्री आदिके साथ देनेसे शूल मिटतीहै (७) कुचीलेके वृक्षकी एक गीली सीधी लकडी लेके उसके दोनों किनारों पर बरतन बांध उस लकडीके बीचमें आंच देनेसे जो दोनों किनारोंमें होके रस निकलताहै उस रसकी कुछ बूंदें देनेसे विसूचिका मिटतीहै (८) मुरब्बेकी हरडकी गिर पर उस रसकी बूंद डालकर खिलानेसे बहुत तीक्ष्ण अतिसार मिटताहै (९) इसके ताजे बीजोंसे बनाये हुए तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गठिया मिटतीहै (१०) कुचीला एक प्रकारका नशा पैदा करताहै (११) कई मनुष्य पुरुषार्थके लिये इसको सदैव खानेका अभ्यास कर लेतेहै, जो लोग सदैव ऐसे खाया करतेहैं, वे धीरे २ नित्य १ या २ बीज तक खाने लग जातेहै। इसकी अधिक मात्रा लेनेसे नसें खिचने लग जातीहै इसलिये इसका प्रयोग करनेमें बहुत सावधानी रखनी चाहिये (१२) पक्षाघातकी यह बहुत उत्तम औषधिहै (१३) स्नायु जालकी शिथिलता मिटानेके लिये कुचीलेका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१४) पुरानी गठिया मिटानेके लिये इसको लशनेके अर्कके साथ देना चाहिये (१५) शरीरकी निर्बलता मिटानेके लिये इसकी फकी देके ऊपर दूध और घी पिलाना चाहिये (१६) स्नायु सम्बन्धी और पुरानी गठिया पर कुचीले, सोंठ और साभर के सींगका लेप करना चाहिये (१७) चूहेके डंशपर कुचीलेका लेप करना चाहिये (१८) कीडेवाले घावोंपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बाधना चाहिये (१९) जिन घावोंमें कीडे पड गये हों उनपर इसका पुल्टिस बाधना बहुत उपकारीहै। इससे कीडोंका बढना बन्ध होजाताहै, और जो घावमें जियादा ऊंडे कीडे होतेहैं वे इसके पुल्टिसके बांधनेसे मर जातेहैं (२०) इसकी जडकी छाल को महीन पीस नींबूके रसकी साथ गोलिया बनाके विसूचिकावालेको देना चाहिये (२१) दुष्टवायु, जल और पृथ्वीके कारणसे आर्तव ज्वर (ऋतु-

सम्बन्धी मन्दज्वर) होताहै, उसको मिटानेके लिये कुचीलेका सत बहुत अच्छाहै (२२) स्नायुसम्बन्धी निर्बलता मिटानेके लिये कुचीलेके सतको दूध और घृतके साथ खिलाना चाहिये (२३) इसको कुनैनकी साथ खिलाने से चारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (२४) नपुंसकता मिटानेके लिये इसको पुष्टाईकी औषधियोंके साथ देना चाहिये (२५) सोंठ, जायफल आदि चरपरी, और सुगंधित औषधियोंके साथ इसके वृक्षकी छालकी नींबूके रसमें गोली बनाके विसूचिकामें देना चाहिये (२६) निर्बल मनुष्यकी खांसी मिटानेके लिये कुचीलेका सत बहुत उत्तम औषधिहै (२७) इसके प्रयोगसे शुष्क खांसी मिटतीहै (२८) कुचीले के फलकी गिर जो कुचीले के चारों ओर होतीहै वह खानेके काममें आतीहै (२९) १५ कुचीलोंको १५ दिन पानीमें भिगोके हर तीसरे दिन पानी बदल देवे ऐसे १५ दिन पीछे जब नरम पडजावे तब उनका छिलका दूरकर सुखाके उनकी भस्म करलेवे उस भस्ममें बराबर कालीमिरच मिलाके कालीमिरच प्रमाण गोलिया बनाकर अर्द्धांग, पक्षाघात मस्तकके रोग आदि कई रोगोंमें उचित मात्रा देनी चाहिये (३०) कुचीलेकी धूनी देनेसे रक्तार्शका रुधिर और पीडा बन्ध होतीहै (३१) इसको मीठे तेलमें जलाके लगानेसे नाडीव्रण मिटताहै (३२) कुचीले और महुवेका लेप करनेसे सांप का विष उतरताहै (३३) एक भाग कुचीला और आधा भाग फिटकड़ीको घीमें मिलाके लेप करनेसे उकौता मिटताहै (३४) कुचीले और सांपकी कांचलीको पीस, बाल उखाडकर इनका लेप करनेसे बाल देरीसे उगतेहै (३५) सांपके काटनेसे जो अचेत होजावे या जिसकी हिलने चलनेकी शक्ति न रहे परंतु मरा न होवे तो कुचीलेको पानीमें पीसके उसके कंठमें डालनेसे और थोडा उसकी गर्दन और शरीरपर मर्दन करनेसे सचेत होजाताहै (३६) शुद्ध कुचीलेके चूर्णमें शक्कर मिलाके बलाबलके अनुसार थोडी मात्रा देनेसे रक्तार्श, प्रमेह, स्वरदोष और कृमिरोग मिटतेहै (३७) कुचीलेको घीमें भूनकर उसके चूर्णकी २ रत्तीकी मात्रा देनेसे कफका कास मिटताहै (३८) कुचीलेको मनुष्य के मूत्रमें ओटाकर लेप करनेसे या मदिरामें ओटाकर छीलके उसके एक रत्ती चूर्णकी नित्य मात्रा लेनेसे कुत्तेका विष उतरताहै (३९) इसको पानीमें ओटा उसमें कंद मिलाके खानेसे कुत्तेका विष उतरताहै (४०) इसको और

कालीमिरचको पानीके साथ घिसके कुछ गुनगुना लेप करनेसे वद बैठ जातीहै (४१) इसको कालीमिरचके साथ पीसके खिलानेसे सर्पका विष उतरता है (४२) कुचीलेको पानीके साथ पीस, बाल उखाड उस ठौरपर लगानेसे वहा पर देरीसे बाल उगतेहै (४३) १५ रती कुचीला या इसका आध रती सत प्राणनाशकहै (४४) जब किसी रेचकसे विरेचन नहीं हुआ हो तो उसको कुचीलेके सतका एक रतीका चौबीसवां भाग एक २ घटेके अन्तरसे ३, ४ मात्रा मे देनेसे विरेच होने लगताहै (४५) इसके सतकी एक रतीके अस्सीवें भाग की मात्रा बल बढानेवालीहै (४६) कुचीलेकी मात्रा आध रतीसे ढाई रती तककीहै (लैटिन) Latin Strychnos colubrina S minor यहभी एक प्रकारका कुचलाहै ।

स्थान—इस कुचीलेके वृक्ष दक्षिण मायद्वीपके पश्चिमके भागमें और कोकनसे कोचीन तक होतेहै ।

प्रयोग—(४७) इसकी जडको पानीमें भिगोके पिलानेसे दाह युक्त सब प्रकारके ज्वर मिटतेहै (४८) सर्प और नोलकी लडाईमें सर्प जब नोलको काट खाताहै तब उसके विषको उतारनेके लिये नोल इसकी जडको खालिया करताहै (४९) इसकी जडका हिम पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहै (५०) शरीरका ठंढापन मिटानेके लिये इसकी जडका काथ पिलाना चाहिये (५१) इस काथपर हींग बुरकाके पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहै (५२) दाणा मेथीकी फकी देके ऊपर इस काथको पिलानेसे पेटकी शूल मरतेहै (५३) इसकी जड और सुनायको औटाके पिलानेसे बिगडे हुए दोष विरेचनके द्वारा निकल जातेहै (५४) इसकी जडके चूर्णकी फकी देनेसे दुष्टवायु और जलादिकसे पैदा हुआ ज्वर छूटताहै (५५) तेजरा और चौथैया ज्वर छुटानेके लिये इसकी लकडीका काथ पिलाना चाहिये (५६) इसमें वह तत्व बहुतहै जो कुचीलेमें होताहै इसलिये इसको काममें लानेमें सावधानी रखना चाहिये ।

संख्या (२५१)

(सं०) तिलः, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पणम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तिल	तिल	तल	तिळ	तिल	तिल(ली	नुवुलु,

द्राविड़ी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी
एळु	एल्लु	सिमसिम	कुंजद	Sesamum Indicum Orientale	Gingelly Sesamum

स्थान—तिल हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोये जातेहैं। ये कई प्रकारके होतेहैं इनमें काले और धोले मुख्य हैं ये अलग अलग देशोंमें अलग २ ऋतुओंमें बोये जातेहैं और अलग २ ऋतुमें पकतेहैं इनका तेल रंगतके काममें आताहै।

प्रयोग—ये कड़वे, मीठे, कपैले, पचनेमें भारी, स्निग्ध और उष्णहै। इनमें काले तिल सबसे उत्तम होतेहैं और शरीरको पुष्ट करतेहैं (२) ये शरीरके कठोर पड़ेहुए भागको शिथिल करनेके लिये काममें आतेहैं (३) ये बल मूत्र और स्त्रियोंके दूधको बढातेहैं (४) ये अर्शके लिये बहुत उत्तमहैं क्योंकि आंतोंको ठीक करके बद्ध कोष्ठको मिटातेहैं (५) तिलोंको जलके साथ पीस मक्खनमें मिलाके चाटनेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होताहै (६) इनका पुल्टिस घावपर बांधा जाताहै (७) आमातिसार और मूत्र सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इनको मिटानेवाली औषधियोंमें तिल और इनका तेल मिलाके देतेहैं (८) घाव और चांदियों पर तिलोंके तेलका फोया विशेष करके उष्ण ऋतुमें बांधना चाहिये (९) जैतूनके तेलकी ठौर तिलका तेल काममें आसकताहै (१०) तिलोंका तेल खाने और जलानेके काममें आताहै (११) तेलकी अधिक मात्रा सारकहै (१२) कष्टसे मासिक धर्म होनेको मिटानेके लिये तिलोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (१३) तिलोंके क्वाथमें सोंठ, मिरच और पीपलका चूर्ण डालके पिलानेसे मासिकधर्मकी रुकावट मिटतीहै (१४) तिल और मिश्रीको औटाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (१५) तिल और अलसीका क्वाथ पिलानेसे पुरुषार्थ बढताहै (१६) तिलोंको पीसके उष्ण जलादिक पदार्थोंसे या अग्निसे जलेहुए पर लेप करना चाहिये (१७) आंखोंके गोत्र रोग

मिटानेके लिये तिलपुष्पके ऊपर जो ओसके कण पडतेहैं वे बहुत उपकारी हैं इसलिये तिलोंके पुष्पका ओस एकत्र कर रखना चाहिये (१८) इसके पत्तोंमें बहुत चेप होताहै इनको पानीमें भिगोनेसे इनका चेप पानीमें आजाता है जैसेकि यह चेप बच्चोंकी विसूचिका अतिसार आमातिसार प्रतिश्याय और मूत्रकी नलीके रोग और कई प्रकारके रोगोंमें पिलाया जाताहै (१९) इसके पूरे बढेहुए १-वा-२ ताजे पत्तोंको पाव या सवापाव ठंढे पानीमें और सूखे पत्तोंको गर्म पानीमें डालके हिलानेसे वह अच्छा गाढा चेपदार होजाताहै (२१) कोमल करनेवाले लेपमें तिलोंके पत्ते मिलाये जातेहैं (२२) आमातिसार मिटानेके लिये पानीमें तिलोंके पत्तोंका चेप निकालके पिलाना चाहिये जो इससे दस्त बन्द नहीं होवे तो इसमें थोडा अफीम मिलादेना चाहिये (२३) गर्भाशयमें रुधिरके जमावको बिखेरनेके लिये ५-५ रत्ती तिलोंका चूर्ण दिनमें ३।४ वेर देना चाहिये और इस रोगवाली स्त्रीको कमर भितर उष्णजलमें बिठाना चाहिये (२४) गर्भवती स्त्रीको तिल्ली नहीं खिलाना चाहिये (२५) इसकी जड और पत्तोंके काथसे बालोंको धोनेसे बालोंपर काला रंग पैदा होताहै (२६) जब नागफनी थुहरका कांटा त्वचामें लगजाता है और वह चिमटे या और किसी यंत्रसे न निकाला जावे तो उस ठौर तिल्लीका तेल बार २ लगानेसे कुछ समय पीछे वह कांटा चितां प रेश्मके निकाला जासकताहै इस तेलके प्रभाव से वह कांटा कोमल होजाताहै प्रायः गल जाताहै और स्थान छोड देताहै। हरेक कांटेकी जगह एक छाला दीखने लगताहै। जब वह छाला फूट जाताहै तब कांटेका चिन्ह नहीं दीखताहै (२७) इसके पत्तोंको सिरके या पानीमें पीसके लेप करनेसे मस्तक पीडा मिटतीहै (२८) इसकी कोंपलोंको छायामें सुखा उनकी भस्म बनाके ७ या १० मासे तक नित्य लेनेसे पथरी गलतीहै (२९) इसके पुष्पोंके खारको मधु और दूधमें मिलाके पिलानेसे पथरी मिटतीहै (३०) तिलोंको दूधमें बांटकर लेप करनेसे सूर्यावर्त्त मिटताहै (३१) तिलोंके काथमें गुड मिलाके पिलानेसे स्त्रियोंके रज उत्पन्न होताहै (३२) इनके सेवनसे वीर्य्य बढताहै (३३) गर्भाशयकी सर्दीकी पीडा मिटानेके लिये तिलोंको तेलमें पीस गर्म करके नाभिके नीचे लेप करना चाहिये (३४) तिलोंको शिरसकी छाल

और सिरकेको साथ पीसके मर्दन करनेसे मुंहासे मिटतेहैं (३५) चोट और मोच पर इनकी खलको पानीसे पीस गर्म करके बांधनेसे लाभ होताहै (३६) तिलोंको पानीमें पीसकर लेप करनेसे भिड़ीका विष उतरताहै (३७) इनके कल्कको घृत अथवा तेलके साथ लेनेसे विषम ज्वर छूटताहै (३८) तिलोंके कल्कमें बराबर मिश्री मिलाकर बकरीके चौगुणे दूधके साथ पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै (३९) ठण्डे जलके साथ काले तिलोंका लगातार सेवन करनेसे अर्श मिटताहै (४०) इनकी लकड़ीको ७ मासेसे २४ मासे तक भस्म सिरकेके साथ पीनेसे पथरी मिटतीहै (४१) तिलोंको सिरकेमें पीसके मलनेसे भिड़का विष उतरताहै (४२) एक तोले तिल और एक तोले गोखरूको रातभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उनका चेप निकाल उसमें थोड़ा बूरा डालके पिलानेसे बन्द हुआ मासिक धर्म फिर जारी हो जाताहै (४३) तिल और इंडोलीको अलग २ कूट दोनोंको मीठे तेलमें मिलाकर लेप करनेसे चोटकी पीड़ा मिटतीहै और सूखा हुआ अंग अपनी पूर्वदशापर आ जाताहै (४४) इनकी खल और हल्दीको पानीके साथ पीसकर मलनेसे मकड़ीका विष उतरताहै (४५) तिल और मक्खनको पीसकर मर्दन करनेसे भिलावेकी सूजन उतरतीहै (४६) तिलोंको तेलमें पीस अर्द्धोष्ण कर नाभिके नीचे लेप करनेसे स्त्रीओंकी सर्दीकी पीड़ा मिटतीहै (४७) काले तिल और जलभांगरेके पत्तोंका लगातार एक मासतक सेवन करनेसे और उनन दिनोंमें केवल दूधहीका अहार करनेसे कई प्रकारके रोग मिटतेहैं और रसायनका प्रभाव होताहै।

संख्या (२५२)

(सं०) तुन्न, कुबेरकः, कच्छः, नन्दीवृक्षः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तूणी, तुणी	तुन्द, तून	नंदीवृक्ष	नंदीवृक्ष	तूनगाछ	तुण	नंदिवृक्षमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
	नन्दवृक्षे			Cedrela Toona.	The toon or Indian Maho ganytree Moulmein Cedar

स्थान—तुन्नके वृक्ष हिमालयमें सिन्धु नदीसे पूर्वकी ओर मध्य और दक्षिण-हिन्दुस्थानके पहाड़ी-भागोंमें और बंगाल और अवधमें बहुत होतेहैं।

पहिचान—तुन्नका वृक्ष ६०, ७० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेंदड खड़ी होतीहै उसकी गुलाई ६ से १० फुट तक और कहीं कहीं १५ से २० फुट तक होतीहै इसकी छाल चौथाई इंच मोटी और गहरे भूरे रंगकी होतीहै इसके डालियां बहुत होतीहैं डालियोंकी सीकों पर बहुधा १० से २० पत्ते एक दूसरे के सामने लगतेहैं इसके मधु जैसी गंधवाले सफेद पुष्प लगतेहैं इसके सबके सब पत्ते एक साथ नहीं गिरतेहैं शीतकालमें इसके पुराने पत्ते कुछ समय के अंतरसे गिरते रहतेहैं। फागुन और चैतमें नवीन पत्ते निकल आतेहैं यह वृक्ष बहुत जल्दी बढ़ताहै इसके रालकी जातिका एक प्रकारका गोंद लगताहै इसके पुष्पोंसे लाल और पीला रंग निकाला जाताहै।

फूलने फलने का समय—फागुन चैतमें इसके पुष्प लगतेहैं जेठ अषाढमें इसके बीज पकतेहैं और खाली डांडे कई महीनों तक वृक्षके लगे रहतेहैं॥

प्रयोग—(१) तूण; कडवा, चरपरा, शीतल, पचनेमें हलका, मीठा, और ग्राहीहै (२) इसका क्वाथ पिलानेसे मंद ज्वर छूटताहै (३) बच्चोंका अतिसार और आमातिसार मिटानेके लिये इसकी छालका क्वाथ पिलाना चाहिये (४) जबकि अतिसार मिटानवाली दूसरी चीजें न मिलें तो इसकी छालको उनकी ठौर काममें लाना चाहिये (५) इसकी छालका सूखा सार चटानेसे बच्चोंका आमातिसार मिटताहै (६) इसकी सूखी ॥ तोले छालका यथा दोष फाट, हिम या क्वाथ बनाके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (७) इसकी छालको घिसके ठंढा या गर्म लेप करनेसे कई प्रकार के फोड़े फुन्सी मिटतेहैं (८) इसकी छाल और किरणगचकी मींगीकी फकी देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै और बल बढताहै (९) इसके पुष्पोंको औटाके पिलानेसे मासिकधर्म ठीक होने लगताहै (१०) एकाकी

फैलनेवाले ज्वर और अतिसारको रोकनेके लिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देनी चाहिये। यह ग्राही है।

संख्या (२५३)

(सं०) तुम्बुरुः, सौरभः, तीक्ष्णफलः, स्फुटफलः।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तुमरू, तुंबर	तुम्बरु	तुंबरु	चिरफल	तेंपालिधगे	तुंबर	तुम्बुरलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	तुम्बरु			Zanthoxylum alatum	

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें यमुनासे भूटानतक होतेहैं।

पहिचान—इसका झाड या छोटा वृक्ष होताहै इसके पत्ते सुगंधयुक्त, चरपरे और सघनघन होतेहैं। चैत वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) तुम्बरु कडवा उष्ण, चरपरा, पचनेमें हलका और रोचकहै (२) मिसरीके साथ इसके बीजोंकी फकी देनेसे पित्तकी मंदाग्नि मिटतीहै (३) बीलके शर्बतके साथ इनकी फकी देनेसे पित्तातिसार मिटताहै (४) इस वृक्षकी छाल सुगंधित और बल बढानेवालीहै (५) छालको औटाके पीनेसे गठिया मिटतीहै (६) इसके चूर्णकी फकी देनेसे तीव्र मंदाग्नि मिटती है (७) वृक्षकी छालकी अपेक्षा इसकी जडकी छालमें ये शक्तियां अधिकहैं (८) इसकी शाखा और कांटोंको औटाकेकुल्ले करनेसे दांतकी पीडा मिटती है (९) इसकी जडकी छालका काथ पिलानेसे विसूचिकामें लाभ होताहै (१०) इसके बीजोंसे जल शुद्ध होताहै (११) इसकी शाखासे दातुन करनेसे दांत निर्मल होजातेहैं और उनकी पीडा मिटजातीहै (१२) इसका तेल लगानेसे जहरीली छूत मिटतीहै (१३) इसके बीज उष्ण और रूक्ष हैं इसके बीजोंमें से तेल निकलताहै। इसकी छालमें से तेल और राल जैसा पदार्थ निकलताहै।

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	हालुमाड्डि	अमूलेलुन्नी		Liquidamber Orientalis L. Imberbe.	Liquid storax orambar Rose mulloes sweet gum Gum storax

स्थान—शिलारसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं ।

प्रयोग—(१) शिलारस स्निग्ध, कटु, तिक्त, उष्ण, तृष्य, मीठाहै, और कफको उत्तेजित करके निकाल देताहै (२) इसका लेप करनेसे वह ठौर उत्तेजित होजातीहै (३) यह जहरीली छूतको मिटाताहै (४) हवाको शुद्ध करताहै (५) इसको जैतून या तिल्लीके तेलमें मिलाके लगानेसे खुजली और जूंए मिटतीहैं (६) गलेके रोग पसीनेकी अधिकता और त्वचाके रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाताहै (७) यह बलवर्द्धक, गाठोंको पकाने और बिखेरनेवाला और ग्राहीहै (८) यह छातीके उपद्रवोंको मिटाताहै और शरीरके यंत्रोंको बलवान करताहै (९) इसका जहां कहीं लेप किया जावे वही ठौर बलवान् होजातीहै (१०) शोथ पर इसका लेप बहुत उपकारीहै (११) अण्डवृद्धिमें शोथयुक्त ठौर पर इसका लेप करके ऊपर तमाखू के पत्ते बांध देने चाहियें (१२) वादीके रोग मिटानेवाले तेल बनानेकी औषधियोंमें यह मिलाया जाताहै ।

संख्या (२५७)

(सं०) तुलसी, सुरसा, हरिप्रिया, भूतघ्नी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तुलसी	तुलसी	तुलसी	तुळस	कालतुलसी	तुलसी	तुलसी

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तुलसी	तुळसि			Ocimum sanctum O. Munachorum	The sacred basil. Purple stalked basil. White basil.

स्थान—तुलसीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं और अपने आप भी उगतेहैं ।

प्रयोग—(१) तुलसी चरपरी, कड़वी, हृद्य, उष्ण, दीपन और पचनमें हल्की है (२) इसके पत्तोंसे सूखी खांसी मिटतीहै और उनका रस पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (३) खांसी मिटानेके लिये इसके और अडूसेके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (४) इसके रसका मर्दन करनेसे दाद और त्वचाके दूसरे रोग मिटतेहैं (५) पक्वाशयका क्रम विगड़नेसे आमाशयमें जो शूल होजातीहै उसको मिटानेके लिये तुलसीके पत्तोंका फांट पिलाना चाहिये (६) तुलसीका फांट पिलानेसे बच्चोंके यकृत् सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (७) पूतिनस्य (नाकसे दुर्गन्धि युक्त स्राव) को मिटानेके लिये तुलसीके सूखे पत्तोंके चूर्णकी नस्य देना चाहिये (८) इसके चूर्णकी नस्य देनेसे पीनस रोग मिटताहै (९) दूषित जल, वायु और पृथ्वी आदिके कारणसे जो ज्वर होजाताहै उसको मिटानेके लिये इसकी जड़का क्वाथ पिलाना चाहिये (१०) मूत्र और वीर्य्य सम्बन्धी अंगोंके रोग मिटानेके लिये इसके बीजोंमें शक्कर मिलाके फकी देनी चाहिये (११) बच्चोंके पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें सोंठ बुरकाके पिलाना चाहिये (१२) कानकी पीड़ा मिटानेका सबसे उत्तम प्रतीकार यहहै कि इसके पत्तोंका रस कानमें डालना चाहिये (१३) बच्चोंका मल ढीला करके विरेचनके १, २ वेग करानेके लिये इसके पत्तोंका फांट पिलाना चाहिये (१४) इसके पुष्प और सोंठके चूर्णको कादेके रस और मधुके साथ चटानेसे सूखी खांसी तर होजातीहै (१५) बच्चोंका श्वास मिटानेके लिये इसके ताजे पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (१६) सर्पका विष उतारनेके लिये इसके पत्ते मंजरी और कोमल जड़ोंका रस पिलाना चाहिये (१७) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतरजाताहै (१८) पित्त बढ़ानेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (१९) ज्वरमें जो घबराहट होतीहै वह इसके पत्तोंका शर्वत पिलानेसे मिटजातीहै (२०) फुफ्फुसमें जो प्रमाणसे अधिक द्रव होगया हो उसको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (२१) इसके पत्ते और काली मिरचकी गोली बनाके दांतोंके नीचे दबाये रहनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (२२) इसके रस और काली मिरचके चूर्णको घीके साथ चटानेसे वातरोग मिटतेहैं (२३) इसके रसमें इलायची दानेका चूर्ण मिलाके चटानेसे

(६) इनके फांटमें जायफलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (७) मिश्री और घीमें तलीहुई सोंफके चूर्णकी फकी देके ऊपर-इसका फांट पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (८) बच्चोंके दांत आते समय जो अतिसार होजाताहै उसको मिटानेके लिये इसका फांट पिलाना चाहिये (९) बच्चा होने के पीछेकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके बीजोंका हिम पिलाना चाहिये (१०) पौने चार मासेसे १ तोले भर तक बीजोंकी फकी देनेसे पुरुषार्थ बढताहै (११) बिच्छूके दंशपर इसके पत्तोंका लेप करना चाहिये (१२) इसके सूखे पत्तोंका चूर्ण घावपर बुरकानेसे उसके कीडे निकल जातेहैं (१३) इसके पंचांगका काथ पिलानेसे पसीना आने लगताहै (१४) शीतज्वर चढनेके समय जो ठंढ लगतीहै उसको मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें सोंठ और कालीमिर्च का चूर्ण बुरकाके पिलाना चाहिये (१५) जवान मनुष्यका अतिसार बन्ध करनेके लिये उसको पौने चार मासेसे ७॥ मासे तक बीजोंकी फकी देनी चाहिये (१६) बचेका अतिसार मिटानेके लिये २, ३ रत्ती बीज अनारशर्वतके साथ पिलाना चाहिये (१७) इसके धुपेहुए बीजोंको पीस उनकी पुल्टिस बनाके बिगडेहुए घावपर बांधना चाहिये (१८) बद्धकोष्ठकी प्रकृतिवालेको सारक शर्वतके साथ इसके बीजोंकी फकी देनी चाहिये (१९) गुदाके भीतरके अर्श की पीड़ा मिटानेके लिये इसके बीजोंकी फकी देनी चाहिये (२०) इसके पौने चार मासे बीजोंको पावभर पानीमें भिगो उसमें कुछ शक्कर मिलाकर उन सब को पीजाने से मूत्र और वीर्य सम्बन्धी अंगोंके रोग मिटतेहैं । जबतक वे नहीं मिटें तबतक नित्य पीना चाहिये (२१) इसके बीजोंका शर्वत पिलानेसे ज्वरमें शान्ति होतीहै (२२) मूत्रवृद्धि करने के लिये इसका शर्वत पिलाना चाहिये (२३) कम सुनना और कानकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके पत्तों का रस कानमें डालना चाहिये (२४) बच्चोंका विरेचनके एक दो वेग लगानेके लिये इसकी जडका क्वाथ पिलाना चाहिये (२५) इसके पत्तोंका स्वाद लवंग जैसा है । ये बहुधा शाकादिकमें बघार देनेके लिये काममें आतेहैं (२६) इसके बीजोंको कभी २ पानीमें भिगोके या कहीं २ रोटीमें मिलाके खातेहैं । यह शीतल और बहुत पौष्टिकहै ।

संख्या (२५९)

(सं०) गन्धतुलसी, तीक्ष्णगंधः, देवदुंदुभिः, सुगन्धः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रामतुलसी			मोटीतुलस	रामतुलसी		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		फरजमश्क	पलंगेमुश्क	Ocimum Gratissimum O Citriodorum	The shrubby basil

स्थान--रामतुलसीके वृक्ष बंगाल चटगाँव पूर्वी नेपाल और दक्षिण भारतद्वीप आदि कई देशोंके बागोंमें बोये जातेहैं ।

पहिचान—तुलसीकी जितनी जातेहैं उनमें सबसे अधिक सुगंध इसके पत्तोंको हाथमें मलनेसे आतीहै ऐसी उत्तम सुगंध और किसी तुलसीके पत्तोंमें नहीं आतीहै ।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२) इसके पंचागके क्वाथका तरड़ा देनेसे अर्द्धांग और गठिया मिटतीहै (३) इसका बफारा देनेसे भी ये दोनों रोग मिटतेहैं (४) शरीर पुष्ट करनेके लिये इसके बीजोंकी फकी दीजातीहै (५) पारेसे पैदा हुई गठियाको मिटानेके लिये इसके पत्तोंके क्वाथका तरड़ा या इसके पंचांगके क्वाथका बफारा देना चाहिये (६) वीर्य्य पुष्ट करनेके लिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाया जाताहै (७) पत्तोंके क्वाथके गडूष करानेसे पारेके दोषसे मुखसे पानीका गिरना बन्ध होजाताहै (८) इसके पत्तोंके रसका ललाट और कनपटियोंपर लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (९) स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटानेके लिये इसके बीजोंकी फकी देनी चाहिये ।

संख्या (२६०)

(सं०) तूलं, तूतं, तूदं, ब्रह्मकाष्ठम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शहतूत	सहतूत	शेतूत	तूत	तुत, तुंत	शहतूत	( )

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
		तूत श्यामी	तूत, शहतूत	Mouls indica	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं ।

पहिचान—देश भेदसे यह कई प्रकारका होताहै अर्थात् मीठा खट्टा और अलग २ रंगका होताहै इस वृक्षकी ऊंचाई २०,४० फुट होतीहै इसकी पेड़ खड़ी और गुलाईमें ७,८ कभी कभी १०,१२ फुट होजातीहै इसकी छाल सफ़ेद या भूरे रंगकी होतीहै शीतकालमें इसके सब पत्ते गिर जातेहैं और आधे माघसे फगुन और कभी २ चैत तक नवीन पत्ते निकल आतेहैं इसके पत्ते गिरने और नवीन आनेमें एक ऐसी विचित्रताहै कि उसी जंगलमें कई वृक्षों के पत्ते बिलकुल गिर जातेहैं और उन्हीके पासके वृक्षोंके पत्ते वैसेके वैसेही बने रहतेहैं इसके पुष्प पुरुष और स्त्री जातिके भेदसे अलग २ डालियोंपर लगतेहैं।

फूलने फलनेका समय—माघ फागुन और चैत में इसके पुष्प लगतेहैं वैशाख और जेठ में फल पकतेहैं जो वृक्ष पहाड़ों पर बहुत ऊंचे होतेहैं उनके फल और भी देरसे पकतेहैं ।

प्रयोग और गुण—(१) पकेहुए तूत पचनेमें भारी, मीठे, ठंढे और खट्टे होतेहैं इसका रस मीठा और कुछ लाल रंग का होताहै (२) गले के छाले मिटानेके लिये इसका रस पिलाना चाहिये (३) ज्वरवाले मनुष्यको संताप और घबराहट मिटानेके लिये इसका रस पिलाना चाहिये (४) इसके पत्तोंके क्वाथके गंडूष करानेसे गलेके छाले मिटतेहैं (५) इसके शर्बतमें पीपल डालके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (६) पित्तका उन्माद मिटानेके लिये ब्राह्मीके क्वाथमें इसका शर्बत मिलाकर पिलाना चाहिये (७) इसकी छाल रेचकहै (८) इसका क्वाथ पिलानेसे कीड़े मरतेहैं (९) इसके पत्ते चबानेसे मुखपाक मिटताहै (१०) गलेकी खुरकी मिटानेके लिये इसका शर्बत

पिलाना चाहिये (११) इसके रसमें कलमीशोरा पीसके नाभिके नीचे लेप करनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१२) इसका शर्बत कंठमाला, और जीभकी सूजनको मिटाताहै। इसका शर्बत बनानेकी यह रीतिहै कि सहतूतके रसमें बराबर बूरा डालकर शर्बतकी चासनी बनाके काममें लानाचाहिये (१३) इसके पत्ते जड और कोमल डालियोंको पानीमें ओटाके गरारा करनेसे कंठकी सूजन मिटतीहै (१४) सूखे हुए सहतूतको पीसकर उसकी रोटी बनाके खानेसे शरीर पुष्ट और मोटा होजाताहै (१५) इसके पत्ते १ सेर प्रातःकाल और १ सेर सायंकाल खिलानेसे गायके दूध बढ़ताहै अर्थात् तीन हिस्सेका चार हिस्से हो जाताहै ताजे सहतूत खाने और मुरब्बा बनानेके काममें आतेहैं।

संख्या (२६१)

लैटिन Morns alba अंगरेजी The white mulberry

स्थान—तूंतके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे सिक्किमतक, बंगाल, आसाम, ब्रह्मा और राजपूताना आदि कई देशोंमें होते हैं।

पहिचान—यह वृक्ष २०, २५ फुट ऊंचा होताहै।—इसके पेडकी गोलाई १५,२० इंच होतीहै इसकी कलियें और पत्तोंपर छोटे २ रुएं होतेहैं इसके पुष्प पुरुष और स्त्री जातिके भेदसे अलग २ लगतेहैं। फल छोटे २ लगतेहैं जब वे पकतेहैं तब काले पडजातेहैं। पतझडमें इसके पत्ते गिरजातेहैं परंतु उत्तर हिन्दुस्थानमें शीतकालमें इसके पत्ते गिरजातेहैं। माघके महीनेमें इसके पत्ते निकलने लगतेहैं जो चैत तक निकला करतेहैं इसके एक प्रकारका गोंद लगता है।

फूलने फलनेका समय—फागुनसे चैततक इसके पुष्प लगतेहैं और वैशाख जेठ या अषाढतक फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) सहतूतमें उत्तम सुगंधि और खट्टा स्वाद होताहै (२) ज्वरवाले की तृषा कम करनेके लिये सहतूत खिलाना चाहिये (३) सहतूतके रसमें शक्कर डालके पिलानेसे दाह मिटतीहै (४) सहतूत मारकहै (५) इसकी छालको मधुमें मिलाके चटानेसे पेटमेंसे कीडे निकल जातेहैं (६)

इसकी छालका काथ पिलानेसे विरेचन होताहै(७)इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे आतोंके कीड़े निकल जातेहै या मरजातेहैं (८) इसकी जड़ ग्राहीहै (९) इसके काथके गंडूप करानेसे लटकाहुआ काग सिमट जाताहै (१०) मुखपाक मिटानेके लिये सहतूतका शर्बत पिलाना चाहिये (११) शब्द सम्बन्धी नशोंका मोटापन मिटानेके लिये और उनकी सूजन उतारनेके लिये इसके पत्तोंके काथके गंडूप कराने चाहिये(१२)ये सहतूत अकालके सिवाय खानेके काममें कम आतेहैं।

संख्या (२६२)

(सं०)तैलं, अभ्यञ्जनं, स्नेहोत्तमं, स्नेहसुख्यम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तेल	तेल	तेल	तेल	तेल, तैल	तेल	नूने

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
एसै	येणे			Oleum	Oil.

गुण—सब प्रकारके तेलोंकी अपेक्षा तिलोंका तेल वातनाशक अधिकहै तिलका तेल कपेला स्वादिष्ट, सूक्ष्म, उष्ण, व्यवायी, सारक, हृष्य, विकाशी, सूक्ष्म कडवा, लेखन, बल्य और पित्तकारकहै ।

प्रयोग—(१)तिलोंके तेलमें सेमरकी छालकी राख मिलाके लेप करनेसे सूजन विखरजातीहै (२) कडवे तेलमें साबुन मिला उसमें रूईका फोया भिगोकर गर्भाशय के मुंहपर रखनेसे स्त्रीकष्टसे छूटजातीहै (३) तेल और पानी को ओटाकर धारा देनेसे नारू विना कष्टके निकलजाताहै (४) जलभंगरेके रससे सिद्धकियेहुए तेलके लगानेसे बाल काले होजातेहैं (५) तिलोंके तेलमें लशुनका कल्क और नमक मिलाके सेवन करनेसे विषमज्वर और सबप्रकारकी वातपीड़ा मिटतीहै (६)तैल, दही और थोड़े कपूरको मथकर पिलानेसे मदात्यय मिटताहै (७)सरसोंके तेलको गोमूत्र, गोबर और बकरीके चौगुणे मूत्रमें पचाकर मलनेसे अपस्मार मिटताहै (८) सैंधानमक और छील हुए लशुन

को कूट तिलोंके तेलमें मिलाके खानेसे हनुस्तम्भरोग मिटताहै (९) गर्दनपर तेलका मर्दन कर उसपर आक या एरंडके गर्म पत्ते बांधनेसे मन्यास्तम्भ मिटता है (१०) निर्गुंडीके पंचांगके रसमें बराबर तेल मिला सिद्ध कर उसके लगानेसे दुष्ट नाडीव्रण मिटतेहैं (११) तेलमें खार और सैंधानमक मिलाकर मर्दन करनेसे शीतपित्त मिटताहै (१२) तेलमें फोया भिगोकर योनिमें रखने-से उसकी कठोरता और पित्तके विकार मिटतेहैं (१३) तिलोंके तेलकी कुछ बूंदें कानमें टपकानेसे कानके कीडें मरजातेहैं (१४) तेल और सिरका मिलाकार कानमें डालनेसे कानकी खुजली मिटतीहै (१५) कनखजूरेके दंश पर दीपककी जलतवाई लगानेसे उसका विष उतर जाताहै (१६) तिलोंका तेल मलनेसे भिलावेके विषसे उत्पन्न हुई शोथ उतरतीहै (१७) सरसोंके तेलको नस्य उबटना और मर्दनके काममें सदैव लानेसे उन्माद मिटताहै (१८) शरीरपर कंबल ओढा उसके भीतर कडवे तेल और सत्तूकी धूनी देनेसे परिणाम शूल मिटताहै (१९) पूतिकरंजके पत्तोंके ८ तोले रसमें सरसोंका ३ माशेसे १ तोलेभर तेल मिलाके बलानुसार पिलानेसे श्लीपद रोग मिटताहै (२०) २ तोले सिंदूर और ४ तोले जीरेको सरसोंके तेलमें पकाकर लगाने से पाव मिटतीहै (२१) दोबके रसमें चोगुना तेल मिला, पकाकर मर्दन करनेसे विचर्चिका मिटतीहै (२२) धतूरेके बीज और मानकंदके खारसे सिद्ध कियाहुआ तेल विपादिका को मिटाताहै (२३) हल्दीके कल्क और आकके पत्तोंके रससे सिद्ध कियेहुए तेलके लगानेसे पाव और बीची मिटतीहै (२४) गायके गोबरके ८ तोले रसमें १ तोला तेल सिद्ध कर उसकी नस्य देनेसे तिमिर रोग मिटताहै (२५) मुलहटीका ४ तोले कल्क और सेरभर जलभँ-गरेके सेरभर रसमें पाव तेल मिला सिद्धकर उस तेलकी एक महीने तक नस्य लेनेसे वली और पलित रोग मिटताहै और दृष्टी बढतीहै (२६) बचके चूर्णको तेलके साथ एक महीने तक लगातर लेनेसे स्मरण शक्ति और बुद्धि बढतीहै।

संख्या (२६३)

(सं०) त्रायमाणा, बलभद्रा, त्रायन्ती, कृतत्राणा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
त्रायमाण	त्रायमाण(ल)	त्रायमाण(ल)	त्रायमाण	बलालता	देवनला	कलुगानगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
[illegible]	गीरागेब ब्ली			Ficus heterophylla [illegible]	

स्थान—त्रायमाणकी बेलें हिंदुस्थानके अधिक उष्णभागोंमें बड़ी नदियोंके किनारेपर होतीहै।

प्रयोग—(१) यह कषेली, शीतल, मधुर, सारक और कड़वी होतीहै यह पित्त रोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रुधिरविकार, ग्लानी तृषा, हृद्रोग, रक्तपित्त, अर्श और त्रिदोष, इन सबको मिटातीहै (२) इसकी जड़का रस पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (३) आमातिसार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस दूधमें डालके पिलाना चाहिये (४) कास, श्वास छातीके रोग और इसीप्रकारके दूसरे रोग मिटानेके लिये इसकी जड़की बहुत कड़वी छाल और धनियेके चूर्णकी फकी देनी चाहिये।

संख्या (२६४९)

(सं०) त्रिवृता, श्यामा, सर्वानुभूति, सरला।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
निसोत	निशोत	नसोत्तर	निशोतर	तेउड़ी	निसोत	तेल्लतेगड़नल्लतेग

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शिवते	करीतेगडे	तुरबुद		Ipomaea Turpethum, Convolvulus T	Turpeth root, Indian Jalap

स्थान—निशोत हिन्दुस्थानमें प्राय सब ठौर अपने आप उगतीहै। और बागोंमें बोई जातीहै। खाईके किनारे आर्द्र और छाया दार ठौरमें इसकी बेलें बहुत अच्छी फलतीहै।

पहिचान—इसकी चौमुंदी शाखा वृक्षादिक पर चढतीहै, वर्षाऋतुमें इस के घंटेके आकारके बहुतसे सफेद पुष्प लगतेहैं । इसकी जड लम्बी और कुछ गिरदार होतीहै जिसके बहुतसी शाखें फूटतीहैं जबतक जड गीली रहती है तबतक उसमेंसे दूध या दूधिया रस निकलताहै, वह तुरंत जमकर राल जैसा पदार्थ बन जाताहै उसका स्वाद पहिलें कुछ मीठा और पीछे कुछ खट्टा लगताहै सूखी जडमें कुछ विशेष स्वाद और गंध नहीं होतीहै, जिस लकडीमें घुंमे बहुत होतेहैं पीसतेसे अलग होजातेहैं उनको निकाल देना चाहिये । सफेद निसोथका रंग सफेद, या कुछ ललाई लियेहुए सफेद होताहै और कालीका रंग भूरा होताहै। सफेद निसोतके टुकडेके अन्तमें कुछ गोंद लगा रहताहै। सफेद निसोतकी जडकी छाल, काली निशोथकी जडकी छालसे कुछ मोटी होतीहै । ज्यों २ इसकी बेल पुरानी होती जातीहै त्यों २ इसकी छालमें घुंस बढते जातेहैं ।

प्रयोग—(१) निशोथ, चरपरी, कडवी उष्ण, रूक्ष, मधुर, कषेली, रसमें तिक्त और पाकमें कडुहै. (२) सफेद निशोत औषधिके प्रयोगमें अच्छी है और हल्का रेचकहै. (३) काली तीव्र रेचकहै, और इससे वमन, निर्बलता और चक्कर आने लगतेहैं (४) कई प्रकारकी रेचक औषधियोंमें निशोत मिलाई जातीहै, (५) इसके लेनेकी यह रीतिहै कि निशोतकी छिलीहुई २॥ मासे छालको जलसे पीस उसमें थोडी सोंठ और सेंधा नमक मिलाके या शकर और कालीमिरच मिलाके लेना, अथवा दूधमें औट छानके लेना चाहिये (६) ६ इंच लम्बी और छोटी अंगुली जैसी मोटी, निशोतकी जड विरेचनकी एक साधारण मात्राहै (७) इसकी जडकी छालमें रेचकशक्तिहै (८) सफेद निशोतकी जडकी रेचकशक्ति जुलाफेकी बराबर और रेवदचीनी से अधिक है, इन दोनोंसे इसको उत्तम समझनेका कारण यहहै कि इसके स्वाद और गंध से ह्रास नहीं होताहै अर्थात् जी नहीं मचलाता है । इसकी मात्रा जुलाफे से ५, ७ रत्ती अधिक देनी पडती है (९) पीपल और सेंधे नमक के साथ सफेद निसोतकी छालको पीसके देनेसे अच्छा विरेचन लगताहै। (१०) कालेदानेकी अपेक्षा इसमें रेचकशक्ति कमहै। विरेचनके लिये निसोतका ५॥ मासे तक चूर्ण दे सकतेहैं । इसका चूर्ण बनाते समय चूसोंको अलग करनेमें ध्यान न रक्खा जायतो उस चूर्णकी विरेचन शक्ति कम हो जातीहै इसलिये इसके

जूंवोंको निकालदेना चाहिये (११) इसको कांजीके साथ पीसके लगानेसे जूवे मरतीहै (१२) विसर्परोग वालेको निशोतका जुल्लाव देना चाहिये (१३) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे विषमज्वर छूटताहै ।

संख्या (२६५)

(सं०) दधि, क्षीरोद्भवं, तक्रजन्म, दौग्ध्यम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दही	दही	दहि	दहि	दइ	दही	पेरुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
तैर	मोमरु	लबतुलहा जिम	मास्ते		Curd Coagulated milk

प्रयोग—(१) दही–उष्ण, दीपन, स्निग्ध, कषेला, भारी, पचनेमें खट्टा, मल रोधक, और बलवर्द्धकहै (२) दही (मट्ठे) का लगातार सेवन करनेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होजाताहै (३) दहीमें पानी मिलाके कुल्ले करनेसे जीभकी दाह मिटतीहै (४) दहीके तोडमें थूक मिलाके अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै (५) दहीमें २ मासे कतीरागोंद मिलाके पिलानेसे जमाल गोटेकी दस्तें बन्ध होतीहैं (६) आंवला पवांडके बीज और कत्थेको दहीकेसाथ पीसकर लेप करनेसे दाद और खुजली मिटतीहै (७) दहीके साथ बेरीके पत्ते पीसके लेप करनेसे दाह मिटतीहै (८) जायफलका मद उतारनेके लिये दहीमें शर्कर मिलाके खिलाना चाहिये (९) दहीमें से टपकेहुए पानी का लेप करनेसे दाह मिटतीहै (१०) दहीके तोडमें शहद मिलाके चाटनेसे प्रवाहिका मिटतीहै (११) दहीमें गुड़ मिलाकर खिलानेसे वादीकी तृषा मिटतीहै ।

संख्या (२६६)

(सं०) दन्ती, शीघ्रा, निकुंभा, उदुम्बरपर्णी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
दातूणी	तिरिफल	दातश्रेठलेने-पालानोमूल	लघुदती	दंती	दंदनदाना	दंतीचेट्टू

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हब्बुलमुलूक	बेदअंजीर ख़ताई	Balk spermum montanum Coton polyandrum.	

स्थान-उत्तर और पूर्व बंगालसे दक्षिण हिन्दुस्थान तक इसके पेड होतेहैं।

प्रयोग—(१) दन्ती-चरपरी, गरम, दीपन, शोधन और सारकहै (२) इसके बीजोंसे बहुत तीक्ष्ण विरेचन होताहै परन्तु अधिक मात्रा लेनेसे तीक्ष्ण विषका काम देतेहै और ये असली जमालगोटेकी जगह काममें आतेहैं (३) इसके बीजोंके तेलसे तीक्ष्ण विरेचन लगताहै (४) इसके तेलके मर्दनसे गठिया मिटतीहै (५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे घाव भरताहै (६) इसकी जड़ रेचकहै (७) यह जलधर और परों की जलयुक्त सूजनमें दी जातीहै (८) इसके बीजोंका लेप उत्तजकहै और उस ठौरकी चमडीको लाल कर देताहै (९) इसकी जडके चूर्णकी फकी देनेसे कामलारोग मिटताहै (१०) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (११) आधी रती से ४ रती तक इसके बीजोंकी गिरीकी मात्रा देनेसे अथवा इसके तेलकी एक से २ बूंद तक देनेमें तीक्ष्ण विरेचन होताहै (१२) इसकी जड़का धूआं पीनेसे कफका कास मिटताहै।

संख्या (२६७)

(सं०) जयपालकं, दन्तीबीजं, रेचकं, कुंभीबीजम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जमैपाल्यो	जमालगोटा	नेपाळो	जेपाळ	जयपाल	जमालगोटा	नेपाळप्रवितु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नेर्वाल	नेपालदन्नी-जा	हब्बुस्सला-तीन,दद	तुख़मबेद अंजीरख़ताई	Croton Tiglium. C Pavana	Croton seeds The purging croton.

स्थान—जमालगोटेके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें वोये जातेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष १५, २०-फुट ऊंचा होताहै।

प्रयोग—(१) जमालगोटा-तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरा, भारी, स्निग्ध, दीपन और रेचकहै (२) इससे बहुत भारी विरेचन होताहै और इसकी अधिक मात्रा तीव्र विषका काम देतीहै (३) इसके बीजोंमेंसे नारंजी, पीले रंगका तेल निकलताहै उसका स्वाद कडवा और जुलाफकी जैसी गंधवाला होताहै इससे बडा भारी विरेचन होताहै (४) यह जलंधर, अपस्मार और जो किसी औषधिसे न मिटे ऐसे बद्धकोष्ठमें बहुत उपकारीहै (५) एक अजेपालकी मींगी विरेचनके लिये बहुतहै (६) इसके छिलके और भीतरकी जीभीमें बहुत विष होताहै इसलिये अजेपालके ऊपरका छिलका और भीतरकी जीभी निकालकर उसको दूध या गोबरमें ओटाके काममें लाना चाहिये ऐसे शुद्ध कियेहुए अजैपालकी मींगीको मुनक्कामें रखके देनी चाहिये (७) इसकी मींगीका विरेचन लेनेसे आंतोंमें एठन और छातीमें दाह बहुत होतीहै उसको मिटानेके लिये इसमें त्रिफला और कत्था आदि मिला देना चाहिये। इससे वमन और तीव्र विरेचन होनेको रोकनेके लिये चूनेका पानी छटाकसे दो छटांक तक, जबतक बन्ध न होवे तबतक हर आधघंटेमें पिलाना चाहिये (८) यह-ज्वर, आंतोंके कीडे जलयुक्त सर्वांगशोथ और प्लीह आदि यन्त्रोंका बढना इन सब रोगोंमें उपकारीहै (१०) आवश्यकतानुसार इसकी आधी या एक मींगीको एक मासे भर चावलोंके साथ पीसके फकी देना चाहिये या इसको केलेके फलके टुकडेमें लपटके खिला देना चाहिये (११) इसकी मींगीको यंत्रमें दवाके निकाले हुए तेलको गठियाकी पीडा पर लगाना चाहिये (१२) कई मनुष्य ऐसे मृदुकोष्ठवाले होतेहैं कि जिनकी जीभ पर अजैपालके तेलकी एक बूंद डाल देनेसे बहुत ढीले दस्त होजातेहैं और कइयोंके १० बूदोंसे भी दीखने जैसा असर ही नहीं होताहै-(१३) मिरगी, बाइटे और प्रमादमें अजैपालके तेलका विरेचन बहुत उपकारीहै (१४) इसके लेनेकी रीति यहहै-कि बबूलके गोंद और शक्करमें अजैपालका तेल मिला पाच सात बिदामकी गुलीको जलमें पीस उसमें इस चूर्णको मिलाके देना चाहिये (१५) इस तेलके प्रयोगसे स्त्रियोंके मासिकधर्म ठीक होने लगताहै

और विना समय बन्ध हुआ मासिक धर्म फिर होने लगताहै (१७) अजै-पालकी जडको पीसके चूर्णकी अच्छी चुमटी भरके निवाये जलके साथ देने-से भारी विरेचन होजाताहै (१८) इसके गीले पत्तोंको पानीमें भिगो मल छानके पिलानेसे विरेचन लगताहै (१९) इसके सूखे पत्तोंको पानीके साथ पीसके सर्पके दंशपर लेप करतेहैं (२०) इससे अधिक विरेचन होने पर शीत आजाताहै (२१) अपाड करनेवाली दूसरी औषधियोंके साथ अजे-पालकी मींगीको पीसके नपुंसककी इन्द्री पर लेप करतेहैं (२२) अजेपालको चराककी लोयमें जलाके उसका धूआ नाकके द्वारा पीनेसे श्वास मिटता है (२३) बच्चोंकी खांसी मिटानेकेलिये अजैपालके तेलकी एक बूंदमें ९, १० बूंद सरसोंके या जैतूनके तेलको मिलाके छातीपर मर्दन करना चाहिये (२८) मस्तक पीडा और नेत्रपीडा मिटानेकेलिये कनपटीपर अजैपालका लेप करना चाहिये (२९) अजैपालको चराककी लोयमें जलाकर उसका चौथा भाग प्रतिदिन पानमें रखके खिलानेसे श्वास रोग मिटताहै (३०) अजैपालको हुक्केमें भरकर पीनेसे बादीकी हिचकी बन्ध होतीहै (३१) अजैपालको पानीके साथ पीसके लगानेसे नासूर गलजाताहै (३२) अजैपालको पानीमें पीसके जिस भागमें पीडा हो उसके सामनेके भागपर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (३३) काले सांपके काटे हुएको ७ अजैपाल और दूसरी जातिके सांपके काटे हुएको २ या ३ अजैपाले खिलानेसे और रतीभरका अंजन करनेसे विष उतर जाताहै (३४) इसका अंजन करने और पीसके लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै।

संख्या (२६८)

(सं०) बृहद्दन्ती, दुग्धगर्भा, विषापहा, एरण्डपत्रा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रतनजोत	मुगलाईअरंड	रतनजोत	थोरदन्ती		मुगलाईअरंड	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	एरंडनदंती			Jatropha Curcas J. Moluccana	

स्थान—धनएरण्डके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुतसी ठौर परन्तु कारो मण्डलके किनारे और ट्रावङ्कोरमें पहुत बोये जातेहैं ।

पहिचान—इसके पीले पुष्प लगतेहैं । इसके पत्ते एरंडके जैसे कोनेदार होतेहैं ।

इसका रस सूखजाने पर एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ बन जाताहै । इसका रस रंगतके काममें आताहै । इसके १०० तोले बीजोंमें ३० से ३७॥ तोले तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) इसके बीज एरंडके बीजसे अधिक रेचकहै और जमाल गोटेसे कम रेचकहै इनमें यह दोष है कि कभी इनसे तीव्रविरेचन होजाताहै और कभी बहुतही कम होताहै इसके तेलकी भी यही प्रकृतिहै (२) विशेष करके इसके अंकुर (नाकू) में चरपरी-वामक और बहुत रेचकशक्तिहै जो वह नाकू इसमें से पूरा निकाल दिया जावे तो इसके ४,५-बीजोंसे भी साधारण निरुपद्रव विरेचन होताहै (३) इसके साबित बीज विपका काम देतेहै इनसे मुखमें दाह, पेटका फूलना और पीडा, हृल्लास, वमन, तीव्र विरेचन हाथपैरोंके अन्तमें दाह, छातीमें कफका जमाव, प्रलाप और अचेतपन आदि चिन्ह पैदा होतेहै (४) इसका उतार नींबूका रसहै (५) इसका तेल पामा, त्वचाके रोग और पुरानी गठियापर मर्दन करनेके काममें आताहै (६) इसके तेलको बिगडे हुए घाव और चांदीपर लगानेसे साफ होजातेहै (७) इसके पत्तों का क्वाथ स्त्रीके स्तनोंपर लगानेसे दूधका संचार बढ जाताहै (८) इसके पत्तोंपर एरंडका तेल चुपड अग्निसे तपाके फोडेपर बांधनेसे फोडा जल्दी पक जाताहै (९) बिगडे हुए घाव और चांदीपर इसके गाढे रसका लेप करनेसे बहुत उपकार होताहै और उसके ऊपर एक प्रकारका ढकनसा बनके रुधिरका बहना रुक जाताहै और घाव भरना प्रारम्भ होजाताहै (१०) इसकी जडकी छालका लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (११) फूले हुए मसूडोंपर इसका गाढा रस लगातेहैं (१२) इसकी कोमल शाखोंका दातुन करनसे दांत दृढ होजातेहैं (१३) इसकी जडकी छालको हींग और मक्खन निकाले हुए दूधके साथ पीसके पिलानेसे मंदाग्नि और अतिसार मिटताहै ।—

संख्या (२६६)

(सं०) दाडिमः, कुट्टिमः, करकः, दंतबीजकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
दाडम	अनार	दाड़िम	डाळिंब	दाडिमगाछ	अनार	दानिम्मा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मादल	दालिम्बि	रुम्मान	अनार	Punica Granatum P. Nana	Pomegranate

स्थान—दाड़िमके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्राय सब ठौर बोये जातेहैं।

पहिचान—इसका कोई वृक्ष २० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेड़ छोटी होतीहै उसकी गुलाई ३ ४ फुट होतीहै, इसकी छाल कुछ पीली या गहरे भूरे रंगकी होतीहै। माघ और फागुनमें इसके नवीन पत्ते निकलतेहैं इसके पत्ते टहनियोंके आमने सामने लगतेह वे कुछ लम्बे, नोकदार और कुछ पिलास लिये हुए लाल होतेहैं इसके पुष्प एक २ ठौर २ लगतेहैं। इसके फलकी मध्यरेखा दोसे ३॥ इंच लम्बी होतीहै। इसके दाने लाल, नोकदार और किसी २ के सफेद होतेहै किसी २ के बीजोंमें लकड़ी होतीहै और किसी २ में बिलकुल नहीं होतीहै। अनार खट्टे, मीठे और खटमीठे स्वादके भेदसे तीन प्रकारकी होतीहै। खट्टे अनारके वृक्षके खट्टेही अनार लगतेहैं और मीठेके मीठे लगतेहैं। इसके पुष्प और छाल रंगतके काममें आतेह।

फूलने फलनेका समय—इसके सब ऋतुओंमें पुष्प लगतेहैं परन्तु चैत वैशाखमें बहुत लगतेहैं। अषाढसे भादवे तक फल पकतेहैं परन्तु देशान्तरमें पृथक् २ समय में पकतेहैं।

प्रयोग—(१) अनार–शीतल, खट्टा, ग्राही, दीपन, कषेला और रोचक है (२) इसका ताजा रस ठण्ढा, शीतल और शान्ति करनेवालाहै (३) यह मंदाग्निको मिटाताहै (४) अनारके फलका छिलका पुराने अतिसार और आमातिसार को मिटाताहै (५) इसकी जड़की छाल बहुत ग्राहीहै (६) जड़की छालका क्वाथ पिलानेसे आंतोंके कीडे निकल जातेहैं (७) अनार-

वर्द्धकहै और अफारा पैदा करताहै (७) इसकी जड़ कानमें बांधनेसे पारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाताहै ।

संख्या (२७२)

(सं०) दुरालभा, धन्वयास, ताम्रमूला, कच्छुरा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
धमासो	धमासा	धमासो	धमासा	दुरालभा	धमाह	दूरगोविल

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंगेजी
	तुरुकुरुकभेद			Fagonia arabica. F mysorensis	

स्थान—धमासा पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान सिन्ध पंजाब और पश्चिम प्रायद्वीपके दक्षिणभाग आदि बहुतसे देशोंमें होताहै ।

प्रयोग—(१) धमासा चरपरा, कडवा, उष्ण, खारा, खट्टा, मीठा शीतल और कषेलाहै (२) इसके पत्ते और टहनिया शीतल होतीहै (३) शरीरके बाहिर और भीतरके पित्तके जितने रोगहै उन सबमें यह बड़ा उपकारीहै (४) उष्णकालमें गर्मीके जितने उपद्रवहैं उन सबको दूर करनेमें यह बड़ा समर्थहै (५) इसके प्रयोगसे ज्वर छूट जाताहै (६) कांटेके लग जानेसे जो पीपदार फोडे होजातेहै उनको पकानेके लिये उनपर इसके पत्तोंका लेप या पुल्टिस बांधतेहै (७) इसको ओटाके कुल्ले करानेसे मुखपाक मिटताहै (८) इसके रसमें मिश्री डालके मंद आंचसे इतनी देर तक ओटावे कि यह बिलकुल गाढा होजावे इसमें से थोड़ासा मुखमें धरा रखनेसे मुखपाककी दाह मिटतीहै (९) खुले घावपर इसका अर्क लगानेसे पकना बन्ध होजाताहै (१०) इसका क्वाथ पीनेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै (११) इसके काथको पिलानेसे पेटके यंत्रोंके बहावकी रुकावट मिटजातीहै (१२) यह ग्राहीहै (१३) इसका काथ पिलानेसे शीतपित्त मिटताहै (१४) इसका स्वरस पिलानेसे मूत्रावरोधका उदावर्त मिटताहै (१५) इसके काथमें घी मिलाके पिलानेसे भ्रम रोग मिटताहै ।

इतिश्रीत्रिपाठ्युपाख्यवैद्ययमुनादासात्मज-भारतधर्ममहा-
मण्डल तथायुर्वेदविद्यापीठनासिकवैद्यसभाप्राप्ता-
युर्वेदपञ्चाननोपाधिभूषितगङ्गाप्रसादवैद्य-
विरचितोऽनुभूतचिकित्सासागर-
पूर्वार्धः संपूर्णः ।





ANUBHOOTA CHIKITSA SAGARA.

SECOND PART.



A Magazine

OF

WELL-TRIFD

Ayurvedic Medicines

BY

PANDIT GANGA PRASAD

DADHICH TRIPATHI

Ayurveda-Panchanan

and

Member of the Ayurveda Vidya—Pitha



AJMER,

VEDIC PRESS

FIRST EDITION

1908

To be had of the author, Ajmer

Price 3 Rupees only

संस्कृतशब्दानुक्रमणिका ।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके–

मारवाड़ीशब्दोंकी अकारादिअनुक्रमणिका।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

हिन्दीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।

अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

गुजरातीशब्दोंकी अकारादिअनुक्रमणिका ।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

मरहटीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धक–

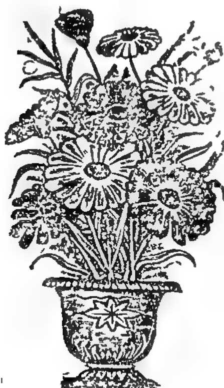
वङ्गालीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

पञ्जाबीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

तैलङ्गीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

द्राविडीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।





अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

कर्नाटकीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

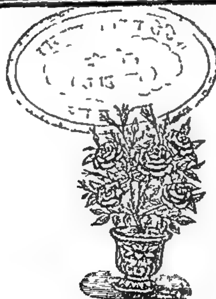
अरबीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

फारसीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।





INDEX OF THE LATIN WORDS OF THE ANUBHUTA CHIKITSA SAGAR

THE ALPABETICAL

INDEX OF THE ENGLISH WORDS OF THE ANUBHUTA CHIKITSA SAGAR

संख्या (२७२)

(संज्ञा) दूर्वा, शतपर्वा, सहस्रवीर्या, अनंता

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दोबड़ी	दूब	ध्रो	दूर्वा	दूर्बा	दूब, घा	गरिके

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
अरुहंपिल्लु	करिगरिके			Cynodon Dactylon, Panicum D	Creeping panic grass or Doobwa, Couch grass

स्थान—दूब हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतीहै।

प्रयोग—(१) यह मधुर, शीतल, स्निग्ध और कपेलीहै (२) इसका ताजा रस ग्राही है (३) नकसीर बन्ध करनेके लिये इसका ताजा रस सुंघाते हैं (४) घावका रुधिर बन्ध करनेके लिये इसको पीसके लेप करनो चाहिये (५) आमातिसार मिटानेके लिये दूबको सौंफ और सोंठके साथ ओटाके पिलातेहैं (६) दूबके रसमें सफेद चन्दनका बुरा और मिश्री मिलाके पिलाने से रक्तप्रदर मिटताहै (७) श्वेत दूबका रस पिलानेसे पित्तको वमन मिटतीहै इसको पैरोंकी अंगुलियोंके घाव पर लेप करना चाहिये (९) दूबको काली मिरचके साथ पीसके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१०) इससे जलधर और सर्वांग जलमय शोथ मिटताहै (११) हरी दूबके रसका लेप करनेसे आंख का दूखना और गीडोंका बहुत आना मिटताहै (११) मूत्रमें रुधिर आनेको रोकनेके लिये दूबको मिश्रीके साथ पीस छानके पिलाना चाहिये (१२) इस के रसमें अतीसके चूर्णको दिनमें दो तीन वेर चटानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (१३) इसके काथके कुल्ले करनेसे मसूडोंके छाले मिटतेहैं (१४) उपदंशके बढजानेसे सब शरीरमें जो चाठे पड जातेहै उनको मिटानेके लिये दूबकी जडका काथ पिलाना चाहिये (१५) इसकी जडका काथ मूत्रवर्द्धकहै (१६) इसका हिम या काथ पिलानेसे रक्तार्श का रुधिर बन्द होताहै (१७) दूबको घोट दूधमें छानके पिलानेसे मूत्र सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटती है (१८) दूबकी ७॥ मासे जडको महीन पीस दहीके साथ चटानेसे पुराना

मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१९) श्मशानमें उत्पन्नहुई दूबकी जड़को सूतसे लपेटकर हाथमें बांधनेसे सब प्रकारका ज्वर छूटताहै (२०) दूब और ब्रूकेको बराबर ले पानीमें पीस ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै (२१) इसका रस चांवलोंके धोवणके साथ पीनेसे पित्तकी वमन मिटतीहै (२२) इसके रससे सिद्ध कियाहुआ तेल व्रणनाशक है (२३) इसकेरसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होताहै (२४) इसके रसके लगानेसे खुजली मिटतीहै (२५) इसके रससे तेल बनाके मर्दन करनेसे खुजली और दाद मिटताहै (२६) दूब और हलदीको पीसके लेप करनेसे खुजली, पांव और दाद मिटतेहैं (२७) शीतपित्त में भी यह लेप उपकारीहै।

संख्या (२७४)

(सं०) देवदारु, शिवदारु, भूतहारि, भवदारुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
देवदारू	देवदार	देवदार (रु)	देवदार	देवदारु	दिआर	देवदारि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
	देवदारि	स्यजरैतुलजिन		Cedrus Deodara. Pinus Deodara.	Deodar Himalayan cedar

स्थान—देवदारुके वृक्ष हिमालयके पश्चिमोत्तर भागमें अर्थात् अफगानीस्थान और बिलोचीस्थानके उत्तरमें और दोली नदी (जो अलक नंदामें गिरतीहै) के पूर्वतक होतेहैं।

पहिचान—इसके वृक्ष बहुत बड़े और बहुत ऊँचे होतेहैं इसमें से एक प्रकारका चेपदार द्रव्य निकलताहै उसके निकालनेकी यह रीतिहै—जिसमें तीन चार सेर जल माता हो ऐसी एक चौड़े मुँहकी हंडी लेके जमीनमें गाड़ देतेहैं और जिसमें १२, १३ सेर जल माताहो ऐसे एक घड़ेके पैंदेमें छोटे (२ छेद कर उसमें देवदारुकी लकड़ीके छोटे २ टुकड़े भर उसके मुंह पर एक ढकना रख उसपर कपड़ मिट्टी कर देतेहैं पीछे इस घड़े को जमीनमें गड़ी हुई हंडी

पर जमाके इन दोनोंके कपड़ मिट्टी करदेतेहैं पीछे टुकडे भरेहुए उस घड़ेके चारों तरफ कंडे (छाणे) और छोटी २ लकडियें चुनके उनमें अग्नि लगा देतेहैं ४ से ८ घंटे तक अग्नि लगी रखते हैं उस समयमें उन टुकड़ोंमें से वह द्रव निकलके जमीनमें गडी हुई हंडीमें चला जाताहै, एक सेर टुकडोंमें ढाई छटाँक द्रव और सवाचार छटाक कोयले बैठतेहैं। सवा छः सेर लकड़ीमें से सेर भर द्रव निकलताहै।

(१) देवदारू-पचनेमें हल्की, स्निग्ध, तिक्त, उष्ण, पाकमें चरपरी और रूक्षहै (२) इसकी लकड़ी पेटकी वातपीड़ा मिटानेवाली, पसीना लानेवाली और मूत्रवर्द्धकहै ज्वर, अफारा, पित्तशोथ, जलंधर और मूत्र सम्बन्धी रोगोंमें उपकारीहै (३) इन सब रोगोंको मिटानेवाली जो २ औषधियेंहैं उन २ के साथ देवदारूको मिलाके देना चाहिये (४) फोड़े और त्वचाके रोगोंमें इसके द्रवका लेप करना चाहिये (५) देवदारूका तेल पिलाने और लगानेसे पारेके उपद्रवोंसे बिगड़ा हुआ रुधिर सुधर जाताहै (६) इसका तेल पिलानेसे त्वचाके दूसरे रोगभी मिटतेहैं (७) देवदारूकी लकड़ीको पानीके साथ घिसके कनपटियोंपर लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (८) देवदारूकी लकडी कडवी होतीहै (९) यह बद्धकोष्ठ, अर्श और फुफ्फुस सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये अच्छीहै (१०) इसके तेलकी पाँचचारमासे की मात्रा देनी चाहिये (११) इसके पत्ते और छोटी डालियोंभी इसके

इसमें २७५ से ३२० तक औषधी संख्या अशुद्ध छप गई है उसको शुद्ध कर लेवें ॥

(सं०) देवदाली, घोषी, गरागरी, वृत्तकोशा

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
विंदाल	सौनैया	कुकड़वेल्य	देवडांगरी	घीतघोषा	सौनैया	दाउरंडगि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	देवताळ			Luffa echinata L. Bindaal	Bristly luffa

स्थान— विन्दालकी बेल गुजरात, सिन्ध, पुनिया और ढाका आदि के देशोंमें होतीहै।

प्रयोग—(१) विन्दालका डांडा जलंधरकी एक उत्तम औषधीहै (२) यह अच्छा विरेचकहै (३) यह कड़वा होताहै (४) इसके फलके भीतरके कड़वे तन्तु या जालेका हिम या फांट सर्पके काटे हुएको पिलातेहैं (५) विसूचिका के हरेक विरेक के पीछे यह हिम पिलाना चाहिये (६) पित्त ज्वर में इसके हिमका सब शरीर पर लेप करना चाहिये (७) कामला रोगवाले के शिरपर इसके हिमका लेप करना और पिलानाभी चाहिये (८) इसका काथ पिलानेसे पटकी शूल मिटतीहै (९) इसकी जड़ कानमें बांधने से रात्रि ज्वर छूट जाताहै (१०) इसका पुराने गुड़में मिला लम्बी बत्ती बना के गुदामें रखनेसे रक्तार्श मिटताहै (११) इसको ओटाके बफारा लेनेसे आर्श मिटताहै (१२) इसका पानीमें भिगो मल छानकर दो बूंदें नाकमें टपकाने से जल बहकर आधाशीशी मिटतीहै (१३) ऐसे ही २,३ बूंदें नाकमें डाल नेसे कामला रोग मिटताहै (१४) इसको और सेंधेनमकको कांजीसे पीसके लेप करनेसे अर्शकी शूल मिटतीहै (१५) इसके काथ या हिमसे गुदाको धोनेसे अर्श पैदा नहीं होतेहैं (१६) इसके पंचांगके चूर्णकी दूध या पानीके साथ महीने तक फकी लेनेसे पाण्डुरोग मिटताहै (१७) इसके ३ फलोंको आधपाव जल में रात्रिभर भिगो प्रात काल मल छानकर पिलानेसे उपदंश मिटताहै (१८) इसके तोले भर चूर्णकी फकीसे गर्भस्राव होजाताहै इसलिये गर्भवतीको नहीं देनी चाहिये (१९) यह रस और पाकमें कड़वी, चरपरी, उष्ण और वाम

करै (२०) अर्श, कफ, शोफ, कामला, आम, ज्वर, कास, अरुचि, श्वास, हिचकी, पांडु, क्षय, कृमि, भूतबाधा, विष और मूषेके विषको मिटातीहै (२१) इसकी जड़ सारक और कड़वी होतीहै और गुल्म, कृमि, कफ शूल, अर्श, कामला और बादीको मिटातीहै।

संख्या (३८०)

(२९) (सं०) द्राक्षा, गोस्तनी, स्वाद्वी, मधुरसा

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दाख	किसमिस	धरास	कालेद्राक्ष	किसमिस	दाख	द्राक्षा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
द्राक्षे(ली)	द्राक्षेहण्णु	जबीब अनब	मवीज(सूखे) अंगूर(तर)	Vitis Vinifera	The vine The grape Raisins

स्थान—इसकी बेलें हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें लगाई जातीहैं।

पहिचान—इसके सुगन्धयुक्त हरे पुष्प लगतेहैं अलग २ देशोंमें अलग २ ऋतुओंमें दाखें पकतीहैं। बिन बीजवाली दाखको किसमिस कहतेहैं।

प्रयोग—(१) यह स्निग्ध, सारक, मधुर और ठण्डी होतीहै (२) तृषा, शरीरकी ऊष्मा, कास स्वरभंग और राजयक्ष्माको मिटातीहै (३) यह कठोर भागको कोमल करतीहै (४) काली दाख उष्ण और रूक्षहै (५) बिन बीजकी दाखभी कठोर भागको कोमल करतीहै और फोडे फुन्सियोंको पकाती है (६) मुनक्का बहुत पाचक, रुधिरको शुद्ध करने और बढ़ानेवालीहै (७) इसकी लकड़ीकी राखको पानीमें घोलकर पीनेसे मूत्राशयमें पथरीका पैदा होना बन्ध होजाताहै (८) इसका लेप करने और पिलानेसे अंडकोषकी बादीकी शोथ बिखर जातीहै (९) अर्शकी सूजनके लिये भी यही उपचार लाभकारीहै (१०) कच्ची दाखकारस ग्राहीहै (११) गलेके रोगोंमें इसके रसके गंडूष कराना बहुत अच्छा है (१२) इसका शर्बत बनाके पीनेसे शरीरमें ठण्ढाई होतीहै (१३) पित्तज्वर और उसकी तृषा मिटानेके लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (१४) मूत्र

और मूत्रनालीके पित्तसम्बन्धी विकार मिटानेके लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (१५) पित्तसम्बन्धी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसके शर्बतमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलाना चाहिये (१६) मंदाग्नि, आमातिसार, अतिसार और जलंधर सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इनको मिटानेवाली औषधियोंको इसके शर्बतके योगसे देना बहुत लाभकारी है (१७) वसंतऋतुमें काटीहुई इसकी टहनियोंमें से एक प्रकारका मद निकलताहै जो त्वचाके रोगोंकी चिकित्सामें काम आताहै और दुखतीहुई आंख परभी लगाया जाताहै (१८) अंगूरके रससे सिरका बनाया जाताहै (१९) अजीर्ण और शूल मिटानेके लिये अंगूरका सिरका पिलाना चाहिये (२०) विसूचिकामें भी इसका प्रयोग करना अच्छाहै (२१) इसके सिरकेमें नमक डालके पिलानेसे वमन होतीहै (२२) इसका रस पिलानेसे दाह और तृषा मिटतीहै (२३) इसके रसमें चन्दन घिसकर मलनेसे बहुत पसीना आना बन्द होजाताहै (२४) दाख और आंवलेका कल्क खानेसे पित्तज्वरकी दाह मिटतीहै (२५) इसके रसमें शकर मिलाकर पीनेसे पित्तशूल मिटतीहै (२६) दाख और अडूसेका क्वाथ बनाके पीनेसे कफकी शूल मिटतीहै (२७) इसके रसमें हरडका चूर्ण और गुड़ मिलाके पिलानेसे पित्तगुल्म मिटताहै (२८) दाख शकर और हरडके चूर्णकी फंकी ठंढे पानीके साथ लेनेसे पित्तज हृद्रोग मिटताहै (२९) दाख और मिश्रीको पीस दहीके पानीमें मिलाके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३०) दाख और आंवलोंको लवाने पीस मधु मिलाके चटानेसे ज्वरयुक्त मूर्च्छा मिटतीहै (३१) इसकी लकडीकी भस्मको सिरकेमें मिलाकर लगानेसे कुत्तेका विष उतरताहै (३२) पथरी मिटानेके लिये इस ६ मासे भस्मको गोखरूके रसमें मिलाके पिलाना चाहिये (३३) दाखके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्द होताहै (३४) इस रसको नाकके द्वारा पीनेसे तृषा मिटतीहै (३५) इसके रसमें हरडका चूर्ण मिलाके पीनेसे गलग्रन्थी मिटतीहै (३६) दाखके क्वाथसे कुल्ला करनेसे मुखरोग मिटताहै।

संख्या (२८१)

(सं०) द्रोणपुष्पी, कौडिन्यः, सर्वपत्रा, द्रोणा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुंडापालीं	गूमा,गोमा	कुंबो	कुम्भा	घलघसा	गुमा	येनुगंतुम्मि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	हेग्गुमी			[illegible]	

स्थान—दङ्गल (गूमा) के पौधे हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह पचनमें भारी, मधुर, रूक्ष, उष्ण, चरपरी, सलोनी कड़वी, वात पित्त बढानेवाली और रेचक होतीहै (२) कफ, आम, कामला, शोथ, तमक, श्वास, अरुचि, मंदाग्नि, पक्षाघात और कृमिको मिटातीहै (३) इसके पत्ते मीठे, कड़वे, रूक्ष, पचनमें भारी, पित्तकारक और रेचकहै । कामला शोथ, प्रमेह और ज्वरको मिटातेहैं (४) इसके पत्तोंका पुटपाक कर नमक मिलाके खिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (५) इसके पत्तोंका ताजा रस पिलानेसे मस्तकपीड़ा और सर्दीका असर मिटजाताहै (६) इसके पत्तोंके रसमें मिरच मिलाके पिलानेसे विषमज्वर छूटताहै (७) पत्तोंके रसका अंजन करनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै (८) इसके रसके अंजनसे कामला रोग मिटताहै ॥

संख्या (२८२)

(सं०) श्वेतधत्तूरः, उन्मत्तः, कितवः, धूर्तः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सफेदधतूरा	सफेदधत्तूरा	धतुरो	पाढराधोतरा	श्वेतधुतुरा	धतूरा	तेल्लउम्मेत

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	बिलियमट्ट-कुणिके		तातूराहसेफेद	Datura-Alba.	White Datura.

और मूत्रनालीके पित्तसम्बन्धी विकार मिटानेके लिये इसका शर्बत मिलाना चाहिये (१५) पित्तसम्बन्धी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसके शर्वतमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलाना चाहिये (१६) मंदाग्नि, आमातिसार, अतिसार और जलंधर सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इनको मिटानेवाली औषधियों को इसके शर्वतके योगसे देना बहुत लाभकारी है (१७) वंसतऋतुमें काटीहुई इसकी टहनियोंमें से एक प्रकारका मंद निकलताहै जो त्वचाके रोगोंकी चिकित्सामें काम आताहै और दुखतीहुई आंख पर भी लगाया जाताहै (१८) अंगूरके रससे सिरका बनाया जाताहै (१९) अजीर्ण और शूल मिटानेके लिये अंगूरका सिरका पिलाना चाहिये (२०) विसूचिकामें भी इसका प्रयोग करना अच्छाहै (२१) इसके सिरकेमें नमक डालके पिलानेसे वमन होतीहै (२२) इसका रस पिलानेसे दाह और तृषा मिटतीहै (२३) इसके रसमें चन्दन घिसकर मलनेसे बहुत पसीना आना बन्द होजाताहै (२४) दाख और आंवलेका कल्क खानेसे पित्तज्वरकी दाह मिटतीहै (२५) इसके रसमें शक्कर मिलाकर पीनेसे पित्तशूल मिटतीहै (२६) दाख और अडूसेका क्वाथ बनाके पीनेसे कफकी शूल मिटतीहै (२७) इसके रसमें हरडका चूर्ण और गुड़ मिलाके पिलानेसे पित्तगुल्म मिटताहै (२८) दाख शक्कर और हरडके चूर्णकी फंकी ठण्ढे पानीके साथ लेनेसे पित्तज हृद्रोग मिटताहै (२९) दाख और मिश्रीको पीस दहीके पानीमें मिलाके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३०) दाख और आंवलेको उबाल पीस मधु मिलाके चटानेसे ज्वरयुक्त मूर्च्छा मिटतीहै (३१) इसकी लकड़ीकी भस्मको सिरकेमें मिलाकर लगानेसे कुत्तेका विष उतरताहै (३२) पथरी मिटानेके लिये इस ६ मासे भस्मको गोखरूके रसमें मिलाके पिलाना चाहिये (३३) दाखके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्द होताहै (३४) इस रसको नाकके द्वारा पीनेसे तृषा मिटताहै (३५) इसके रसमें हरडका चूर्ण मिलाके पीनेसे गलग्रन्थी मिटतीहै (३६) दाखके क्वाथसे कुल्ले करनेसे मुखरोग मिटताहै।

संख्या (२८१)

(सं०) द्रोणपुष्पी, कौडिन्यः, चवपत्रा, द्रोणा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुंडापोर्ली	गूमा, गोमा	कुबो	कुम्भा	घलघसा	गुमा	येनुगंतुम्मि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	[illegible]			[illegible]	

स्थान—दइगल (गूमा) के पोधे हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह पचनमें भारी, मधुर, रूक्ष, उष्ण, चरपरी, सलोनी कड़वी, वात पित्त बढानेवाली और रेचक होतीहै (२) कफ, आम, कामला, शोथ, तमक, श्वास, अरुचि, मदाग्नि, पक्षाघात और कृमिको मिटातीहै (३) इसके पत्ते मीठे, कड़वे, रूक्ष, पचनेमें भारी, पित्तकारक और रेचकहैं । कामला शोथ, प्रमेह और ज्वरको मिटातेहैं (४) इसके पत्तोंका पुटपाक कर नमक मिलाके खिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (५) इसके पत्तोंका ताजा रस पिलानेसे मस्तक-पीड़ा और सर्दीका असर मिटजाताहै (६) इसके पत्तोंके रसमें मिरच मिलाके पिलानेसे विषमज्वर छुटताहै (७) पत्तोंके रसका अंजन करनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै (८) इसके रसके अंजनसे कामला रोग मिटताहै ॥

संख्या (२८२)

(सं०) श्वेतधत्तूरः, उन्मत्तः, कितवः, धूर्तः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सफेदधतूरा	सफेदधत्तूरा	धतुरो	पाढराधोतरा	श्वेतधतूरा	धतूरा	तेल्लाउम्मेत

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	विलियमहुकुणिक		सातूराहसे फेद	Datura-Alba.	White Datura.

स्थान—सफेद धतूरा हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होताहै।

पहिचान—इसका पेड़ ८, ९ फुट तक ऊंचा होताहै (० [illegible])

प्रयोग—(१)धतूरा कषैला, मधुर, कड़वा, उष्ण, भारी, चरपरा और अग्निदीपकहै (२)इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान करानेसे ऐसा तेज श्वास मिटताहै कि जिसमें घांटे आतेहों (३) इसके पत्तोंका सार क्षय रोगमें १ रतीभर दिया जाताहै जिससे दुःखसे श्वास आना मिटताहै (४) इसका लेप और पुल्टिस बांधनेसे हड्डीकी पीड़ा मिटतीहै (५) गठियासे फूली हुई जोड़ों पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (६) इसके पत्तोंका लेप करनेसे

[illegible] मिटतीहै (७) बाहिरके अर्शपर इसके पत्तोंका लेप

चाहिये (८) श्वासमें और पुराने हृद्रोगमें छातीपर इसका लेप करना

(९) स्त्रियोंके दूधका निकास बन्ध करनेके लिये इसके पत्तोंको

(१०) इसमें से एक तत्व निकाला जाताहै जो दुःखती हुई

[illegible] लगाया जाताहै (११) धतूर के पत्तों के रस के प्रयोगसे

[illegible] जातीहै (१२) घावके कारणसे जो हनुस्तम्भ होजाय

[illegible] बांधने चाहिये (१२) जिस घाव पर गहरा पीप या

[illegible] उसको [illegible] गर्म पानीकी धारसे धोके दिनमें ३, ४ बेर

(१३) धतूरेके अर्कका पृष्ठ व्रश पर

(१४) उन्माद रोग मिटानेके लिये ध-

तूरेका प्रयोग [illegible]) अपस्मार (मिरगी) और बुद्धि भ्रंश

पूर्वरूपमें जो मस्तकपीड़ा [illegible] मिटानेके लिये इसका प्रयोग

धतूरेकी जड़के चूर्णका

तक बढ़ा देना चाहिये

[illegible] मिटानेके लिये [illegible] पत्तोंका रस [illegible]

(१६) [illegible] गठिया सम्बन्धी रो-

और [illegible] प्रयोग

( )२

गोली बनाके दांतकी खोखलमें रखनेसे दांतकी पीड़ा मिटतीहै (२१) धतूरेका १ तोला रस ताजे दहीमें मिलाके बारीसे आनेवाले ज्वरको वेग प्रारम्भ होनेके कमसे कम दो घंटे पहिले पिलाना चाहिये (२२) धतूरेके सारको १ रतीके १६ वें भागकी मात्रा देनेसे गृध्रसी मिटतीहै परन्तु इसकी मात्रा धीरे २ आध रत्ती तक बढ़ा देना चाहिये (२३) धतूरेके तेलका मर्दन करनेसे गठिया और पांव मिटतीहै (२४) धतूरेके पत्ते और चावलोंके आटे का पुल्टिस बनाके बांधनेसे नारू जल्दी निकल जाताहै (२५) इसी कामके लिये कभी २ धतूरेके पत्तेको मूंसतेभी हैं (२६) धतूरेमें बहुत विषहै (२७) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे मनुष्य प्रलाप करने लग जाताहै (२८) इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान बहुत कम किया जाताहै और कियाभी जाताहै तो केवल रोग मिटानेके लिये किया जाताहै (२९) इसके गीले पत्ते लेप और पुल्टिसके काममें आतेहै (३०) इसके बीज कई रोग मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके अच्छे सहायक हैं (३१) इसकी जडभी इसी रीतिसे काममें लाई जातीहै (३२) पागल कुत्ता काटनेके पीछे, जो मनुष्य भड़क जाताहै उसके भडकन पैदा होनेके पहिले उसको इस रोगकी दूसरी औषधियोंमें इसकी जड़ मिलाकर देना चाहिये। इससे वह मनुष्य प्रलाप करने लगताहै और उन्मत्त हो जाताहै जैसे कि कभी कभी पागल कुत्तेके विषसे हो जाया करताहै। इसके देनेमें पूरी सावधानी रखनी चाहिये और इसकी पूरी मात्रा देनी चाहिये। कुत्तेके विषसे भडकजाने के बाद इस औषधिका देना वृथाहै (३३) गठियाकी सूजनपर धतूरेके पत्ते रख उनके ऊपर एरण्डके पत्ते बांध देना चाहिये (३४) पैरोंके पसीने मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पानीमें पीसके लेप करना चाहिये (३५) इसके २, ३ बीज नित्य निगलनेसे पुरानी मस्तकपीडा मिटतीहै (३६) इसके बीज और कालीमिरच दोनों बराबर ले पीस उडदके बराबर गोली बनाके सौंफके नित्य लेनेसे पुराना प्रमेह मिटताहै (३७) इसके स्वरसमें मधु [illegible] कीडे मरतेहै (३८) इसके रससे बनाये हुए तेलका मर्दन [illegible] (३९) इसकी जड़ कमरसे बांधे रहनेसे बिना समय गर्भ [illegible] (४०) इसके पंचाग के २ तोले रसमें तिल सरसों [illegible] तेल डाल मंद आंचसे पका उसका मर्दन

कर एरंड या आकके पत्ते गर्मकर उसपर बांधनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (४१) इसके बीजोंकी भस्म बनाके उसकी ४ मासे जवानको और ४ रत्तीकी मात्रा बालकको देनेसे शीतज्वर छूटताहै (४२) इसके पत्तोंको तपाकर बांधने से बादीकी पीड़ा मिटतीहै (४३) रविवारके दिन उखाड़ेहुए धतूरेको दाहिने हाथमें बांधनेसे ज्वर छूटताहै ।

संख्या (२८२)

(सं०) कृष्णाधत्तूरः, शिवः, सचिवः, कनकाह्वयः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालेधतूरो	कालाधतूरा	काळोधुंतरो	काळाधोत्रा	कालधुतूरा	कालाधतूरा	नल्लउमेत्त

द्राविड़ी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
करप्पूमत्त	करिउमत्तै		तातूराहसियाह	Datura fastuosa, D Hummatu	Black Datura.

स्थान—काले धतूरेके पेड हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें और निकम्मी ठौरमें होतेहै ।

प्रयोग—(१) श्वेत धतूरेसे काले धतूरेमें अधिक गुण होतेहै. (२) पागल कुत्तेके काटनेसे मनुष्य बहुधा ४० दिन पीछे भड़के जाताहै इसलिये भड़कनेके पहिले उसकी चिकित्सा करनी चाहिये, अर्थात् काटनेके १५ वें दिनसे २० वें दिनके भीतर २ उसकी चिकित्सा करनी चाहिये उसकी यह रीतिहै कि उसको काटनेके पीछे १५ वें दिनके प्रातःकालके ६ बजे, धाकी लकड़ीके कोयलोंके ७॥ मासे चूरणकी फकी देनी चाहिये जिससे, उसको धतूरेका जहर नहीं चढे, इसके आधघंटे पीछे उसको काले धतूरेके पत्तोंका २॥ तोले रस पिलादेना चाहिये, फिर थोड़ी देर पीछे उसको ताड़का गुड या और कोई चीजें खिलादेना चाहियेकि जिससे उसको वमन न हो, फिर उसको रस्सीसे बांधके दुपहर तक ४ या ५ घंटे धूपमें रखना चाहिये जिससे, वह आदमी धीरे २ उन्मत्त होजायगा और पागल कुत्ते जैसी कई चेष्टा करने लग-

यगा जब ये लक्षण दीखने लगें तो यह प्रगट होजाताहै कि इस मनुष्यको अवश्य पागल कुत्तेने काटाहै और यह नैरोग्य भी होजायगा फिर दुपहर पीछे ठण्डे जलकी कई मटकियें उसके शिरपर डालना चाहिये, इससे उस रोगीको बड़ा क्लेश होताहै, पीछे उसको बेगन और चणेका पथ्य देना चाहिये जो तुमको भड़के हुए मनुष्यकी चिकित्सा करनी होवे तो तुम उसके शिरके सामनेके भागको छुरीसे छीलके रुधिर निकालदो और उस ठौर काले धतूरेके पीसे हुए पत्तोंका मर्दन करो और पत्तोंका रस उसको पिलावो (३) इसके ताजे पत्तोंका रस मर्दन करने या पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे पीड़ायुक्त शोथ मिटजातीहै (४) पत्तोंके ताजे रसका आंख पर लेप करनेसे आंख दुःखती रहजातीहै ललाई फट जातीहै शोथ और दाह मिटजातीहै (५) इसके सूखे पत्ते और टहनियोंका धूम्रपान करनेसे श्वासके वेग मिटतेहैं (६) बांइटे मिटानेके लिये इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान कराना चाहिये इसका अधिक धूम्रपान करानेसे उस मनुष्यको चक्कर आने लगतेहैं और निर्बलता होजातीहै (७) पागल कुत्तेके काटनेसे भड़के हुए मनुष्यके लिये धतूरेके बीजोंका प्रयोग अच्छा है (८) विसूचिकामें इसकी केसरका प्रयोग करना चाहिये (९) इसकी सूखी हुई जड़का धूम्रपान करानेसे श्वास मिटताहै (१०) पत्तोंके ताजे रसकी १ या २ बूंद कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (११) इसके पत्तोंके रसका लेप या मर्दन करनेसे छोटे जोड़ोंकी सूजन, गठिया, पेशीका बढाव और उसकी शोथ मिटतीहै (१२) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे स्त्रियोंके स्तनोंकी शोथ बिखर जातीहै (१३) जिस स्त्रीके अधिक दूध होनेसे स्तनमें गांठें होजानेका भय हो तो उसके दूधको रोकनेके लिये स्तनपर इसके पत्ते बांधना चाहिये (१४) इसके पत्ते बांधनेसे पीडा मिटतीहै (१५) इसके बीज पुरुषार्थ बढानेके लिये काममें आतेहैं (१६) पुरानी खांसी मिटानेके लिये इसके पत्तोंका धूम्रपान कराना चाहिये (१७) इसकी चौथाई रत्ती सूखी जड़को पानमें रखके खिलानेसे उपदंश सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (१८) इसके १५ फलोंके सूखे बीजोंको पीस गायके १० सेर दूधमें ओटा उसका दही जमा बिलो घी निकाल कर उसको वीर्य्य सम्बन्धी अंगोंपर दिनमें दो बेर मर्दन करनेसे और २ रत्ती घी पानमें लगाके दिनमें एक बेर खिलानेसे

नंपुसकता मिटतीहै और पुरुपार्थ बढताहै, (१९) पत्तोंके रसको घी निकाले हुए दूधमें मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२०) पत्तोंके गाढे किये हुए रसका लेप करनेसे कर्णमूलकी शोथ मिटतीहै (२१) इसके पत्तोंको पानीमें ओटा पुल्टिस बनाके सादे और पीपदार फोडोंपर बांधनेसे उनकी पीड़ा घट जातीहै और वे जल्दी पक जातेहै (२२) इसके बीज अकलकरा और लौंगोंकी गोलियां बनाके खिलानेसे पुरुपार्थ बढताहै (२३) धतूरेके पत्ते और हलदी का लेप करनेसे स्त्रियोंके स्तनकी पित्त शोथ मिटतीहै (२४) धतूरेके पत्तोंका रस "बेलडोना" की ठौर काममें आताहै (२५) इसके पुष्पोंको सुखा पीस चने प्रमाण गोलिया बना एक गोली नित्य खानेसे पुरुपार्थ बढताहै (२६) इसके पत्ते, नागरबेलके पान और काली मिरच प्रत्येक गिनतीमें बराबर ले पीस उडद समान गोलिया बना दिनमें दो वेर एक२ गोली देनेसे ज्वर छूट जाताहै (२७) इसके बीजोंकी एक मासे भस्म नित्य ७ दिनतक खिलानेसे पसीना आना बन्ध होजाताहै, (२८) इसके बीजोंके चूर्णकी ४ चावलभर मात्रा ज्वर चढने के एक घंटे पहिले देनेसे शीतज्वर छूटताहै (२९) इसके पुष्पोंके चूर्णको घी और मधुके साथ चटानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (३०) इसके बीजोंके चूर्णकी आधी रतीसे एक मासे तक मात्रा सात दिन तक देनेसे पुस्तवाय (हथेली और पगतलीमें पसीना) आना मिटताहै।

संख्या (२८४)

(सं०) धर्मन, रक्तकुसुमः, गोत्रपुष्पः, धन्वनः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धामण	धामन धामिन	धामण	धामण	धामनगाछ	धामन	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Grewia tiliaefolia arborea	

स्थान—धामणके वृक्ष हिमालयमें यमुनासे नेपाल तक मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें ब्रह्मा और सीलोनमें होतेहैं ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ३०,३५ फुटकी होतीहै । इसकी पेदड़ खडी और सीधी होतीहै उसकी गुलाई ४,५ फुटकी होतीहै इसकी छाल आध इंच मोटी और खरदरी होतीहै इसकी कोमल डालियोंपर या पत्तोंपर रुंए होतेहैं । इसके मटर जितने बड़े फल लगतेहैं फागुनमें इसके पत्ते गिर जातेहैं फिर पीछे चैत्रमें नवीन आजातेहैं ।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं और जेठसे आसोज तक इसके फल पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) धमन— चरपरा, उष्ण, कषेला, ग्राही, मीठा और रूक्ष है (२) इसकी अंतर छालका दरगच पानीमें भिगो मल छान गाढा चेप निकाल उस ५ तोले चेपमें चीनाककी २ तोले आटेको मिलाके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (३) इसकी लकड़ीके चूर्णकी फकी देनेसे वमन होती है (४) अहिफेनके विषको उतारनेके लिये इसकी लकड़ीके चूर्णकी फकी देके वमन कराना चाहिये (५) कौंचकी फलीको छूनेसे जो दाह और खुजली होजातीहै उसको मिटानेके लिये इसकी छालका लेप करतेहैं (६) इसके छोटे फल जो अच्छे खट्टे होतेहैं वे खानेके काममें आतेहैं ।

संख्या (२८५)

(सं०) धवः, धुरंधरः, कषायः, धवलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धो,धोकड़ो	धावा, धौ	धावड़ो	धावड़ा	धाउयागाछ	धौ,कहुवा	नारिंजचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	सिरिवरु			Anogeissus latifolia. Conocarpus latifolia.	

स्थान—यह मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, हिमालयमें रावीसे पूर्वकी

और मेलघाट, गोदावरीके, ऊपरके भाग, और राजपूताना आदि कई देशोंमें होता है।

पहिचान—इसका वृक्ष बड़ा और सुंदर होताहै, इसके पत्ते चौड़े और दोनों ओर से तीखे होतेहैं, इसका फल पकजानेपर चिकना और, चमकदार हो जाताहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै, यह साफ, कुछ पीला, कभी२ मधुके रंगका जैसा और इसमें मैल मिलजानेसे भूरे रंगका, और बबूलके गोंदसे अधिक चेपदार होताहै। यह चैत्रमें इकट्ठा किया जाताहै।

प्रयोग—(१) यह कड़वा कषेला पित्तकारक, रोचक, दीपन, मधुर और शीतलहै (२) विसूचिकामें इसका प्रयोग बहुत लाभकारीहै (३) इसके गोंदको दरदरा पीस घीमें तल खांडमें जमाके खिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (४) इसके पुष्प और सेमरका गोंद बराबर ले औटा के पिलानेसे अतिसार मिटताहै (५) पांडु, प्रमेह, कफ, पित्तार्श और वातके रोगोंको मिटाताहै (६) इसका फल ठण्ढा, मीठा, कषेला, रूक्ष, मलस्तंभक और वातलहै (७) इसके प्रयोगसे कफ और पित्तके रोग मिटतहै (८) इसकी जड़ कड़वी, कषेली, पित्तकारक और दीपनहै।

संख्या (२८६)

(सं०) धातकी, धातुपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मुरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
धावडाफूल	धावई	धावणी	धायटी	धाइफुल	फुल्लधायपुंदे	आरेपुव्वु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Woodfordia floribunda Grislea tomentosa	

स्थान—धायके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सर्वठौर होतेहैं।

पहिचान—इसका बड़ा झाड होताहै इसके लम्बी फैलनेवाली डालियें लगतीहैं, इसके पत्ते एक दूसरेके सामने लगतेहैं। इसके पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। इसकी ऊंचाई १० फुट यो इससे भी कुछ अधिक होतीहै।

फूलने फलनेका समय— माघसे चैत्र तक इसके पुष्प लगतेहैं इसकी कलियें और पत्ते रंगतके काममें आतेहैं इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै वह पानीमें फूल जाताहै इसको "धावड़ी" गोंद कहतेहैं। हाडोती और मेवाड़में इस गोंदका संग्रह बहुत करतेहैं।

प्रयोग—(१) यह चरपरी, उष्ण, शीतल, कषेली और स्तंभिनीहै इसके सूखे पुष्प उत्तेजक और ग्राहीहै (२) अतिसार और आमातिसार मिटानेके लिये इसके सूखे पुष्पों के ७॥ मासे चूर्णकी मट्ठेके साथ फंकी देनी चाहिये (३) रक्तप्रदर मिटानेके लिये इसके पुष्पोंको मधुके साथ चटाना चाहिये (४) घावोंका पूय बंध करनेके लिये और उनमें अंकुर पैदा करनेके लिये उन पर इसके पुष्पोंका चूर्ण बुरकाना चाहिये (५) पित्तके रोग मिटानेके लिये रोगीके मुंहमें तिल्लीका तेल भरके उसके शिरमें तालूकी ठौर पर इसके पत्तोंका रस लगा देना चाहिये इससे वह तेल पित्तको सोसके पीला होजाताहै जब वह तेल पीला होजाय तब उस तेलको मुंहमें से निकालके फिर दूसरा तेल मुंहमें भरलेवे जब तक तेल मुंहमें पीला पड़ता जाय तब तक यह क्रिया करते रहना चाहिये। जब तेल पीला होना बन्ध होजाय तब छोड देना चाहिये (६) इसके पुष्प उपदे ग्राही और उत्तेजकहै (७) इसके पुष्पोंका शर्बत पिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (८) पुष्पोंके क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (९) पुष्पोंका शर्बत पिलानेसे दाह मिटतीहै (१०) पुष्पोंका क्वाथ ३ दिन पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (११) इसके पुष्पोंका बेहेडे जितना कल्क खिलानेसे प्रदर रोग मिटताहै (१२) इसके पुष्पोंका गुलकंद बनाया जाताहै (१३) इसके चूर्णको अलसीके तेलमें मिलाकर लगानेसे अग्निदग्ध व्रण और मर्माश्रित नाडीव्रण और विषैले कीडोंके दंशके व्रण मिटतेहैं।

संख्या (२८७)

(सं०) धान्यक, छत्रा, कुस्तुम्बरी, कुनटी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धणों	धनियां	धाणा	धणे	धनियां	धनिया	दानियालु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
कोत्तमलि	कोत्तमरि		किशनीज	Coriandrum Sativum	Coriander

स्थान—धनियां हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै यह अलग २ देशों में अलग २ ऋतुओंमें खेतोंमें बोया जाताहै।

पहिचान—इसके गुल्मकी ऊंचाई २, २॥ फुट होतीहै, इसके पत्ते कोमल और कटवां होतेहै, इसकी टहनियां और पत्तोंमें सुगंध होतीहै, इसके पुष्पोंका रग सफेद होताहै।

प्रयोग—(१) धनियां–मीठा, शीतल, कषेला, पित्तनाशक, दीपन, लघु, ग्राही, रोचक, हृद्य, नेत्रोंको हितकारीहै घबराहट और पेटकी वादीको मिटाता है। मूत्र, वत्त और पुरुषार्थको बढाताहै (२) सूखा धनियां या इसका तेल पेट की शूलको मिटाताहै (३) इसको चवानेसे श्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (४) इसको सेककर चवानेसे अतिसार मिटताहै (५) उष्णकालके दिनोंमें जो ठंडाई बनाके पिया करतेहैं उसमें धनियां मिलाना चाहिये (६) यह श्वासरोग में अच्छा उपकारीहै (७) शीतलामें आंखमें जो व्रण होजातेहैं उनको इसके काथसे धोतेहैं (८) नेत्रके सफेद भागकी पुरानी सूजन मिटानेके लिये नेत्रों को इसके काथसे छांटतेहै (९) मदिराका मद और दुर्गंध कम करनेके लिये इस को काममें लातेहै (१०) इसको और जौको पीस पुल्टिस बनाके देरीसे अच्छी होनेवाली सूजनपर बांधतेहैं (११) मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीडा मिटाने के लिये इसका लेप करतेहैं (१२) पुराने फोडे और अदीठपर इसका पुल्टिस बांधते हैं (१३) इसके हिम फांट या काथके कुल्ले करनेसे बच्चोंके मुंहके सफेद छाले मिटतेहैं (१४) भिलावेका तेल लगानेसे शरीरमें जो दाह, सूजन और छोटी २ अलाइयां होके बडे २ घाव पड जातेहै उनपर इसके गीले बूटेका रस लगातेहैं (१५) धनियेंको दूध और मिश्रीके साथ ओटाके पिलानेसे रक्तार्शका रुधिर बंध होताहै (१६) इसको सेक, कूट, फटक, गुली निकालके खिलानेसे शरीरमें ठण्डाई और उत्तेजना पैदा होतीहै (१७) पित्तके रोगोंमें धनियेका प्रयोग किया जाताहै (१८) इसका हिम पिलानेसे बच्चोंकी शूल मिटतीहै (१९) इसका ७ मासे अवलेह नित्य लेनेसे मस्तकपीडा, भँवल और चक्कर मिटतेहैं

(२०) धनियां चबानेसे गलेकी पीडा मिटतीहै (२१) इसको सिरकेके साथ पीसके लेप करनेसे गंज मिटतीहै (२२) इसको औटाकर पीनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका बहना बन्ध होताहै (२३) धनियां हृदयका बल बढाताहै (२४) धनियां और आंवलोंको रातभर भिगो उनको प्रातःकाल घोट छान मिश्री मिलाके पिलानेसे गर्मीकी मस्तकपीडा मिटतीहै (२५) इसके चबानेसे भिडका विष शान्त होजाताहै (२६) धनियां और चांवल रात्रिमें भिगो प्रातःकाल उनका क्वाथ कर मधु मिलाके पिलानेसे अंतरदाह और पित्तज्वर मिटता है (२७) इसका कल्क बनाके खानेसे दाह शान्त होतीहै (२८) धनिया, नेत्रवाला और पाठके क्वाथसे बनाया हुआ भोजन खिलानेसे अतिसार, दाह और तृषा मिटतीहै (२९) इसका और सोंठका क्वाथ पिलानेसे पाचनशक्ति बढतीहै (३०) धनिया, सोंठ और एरण्डकी जडका क्वाथ पीनेसे आमवात मिटतीहै (३१) धनियेके पानीमें मधु और मिश्री मिला के पिलानेसे रोगसे पैदा हुई तृषा मिटतीहै (३२) इसको रातभर पानीमें भिगो उसको घोट छान मिश्री मिलाके पिलानेसे अंतरदाह मिटतीहै (३३) शीतपित्तके समय इसका क्वाथ पिलाना बहुत लाभकारीहै (३४) गर्भवती स्त्रीकी वमन बन्ध करनेके लिये इसके कल्क और मिश्रीको चावलोंके पानीमें मिलाके पिलाना चाहिये (३५) बालकोंका कास और श्वास, मिटानेके लिये चांवलोंके पानी के साथ धनियां और मिश्री पीसके पिलाना चाहिये (३६) धनियां और जौका सत्तू नित्य लगानेसे कठमाला मिटतीहै (३७) इसका अर्क सिरकेमें मिलाके लगानेसे भिडका विष उतरताहै (३८) ३॥ मासे धनियेंमें १० मासे बूरा मिलाके खानेसे जोडोंकी पित्तकी पीडा मिटतीहै (३९) धनियां पीसके लगानेसे मस्से और तिल मिटतेहै धनियेंके हरे पत्तों को कोथमीर कहतेहै इस की चटनी बनातेहै और कई शाकोंमें डालतेहै। १०० तोले हरे धनियेंका अर्क खैचनेसे ६ मासेसे तोलेभर तक उडनेवाला तेल निकलताहै।

संख्या (२८८)

(सं०) धूनराजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मस्तगी	मस्तिकी		रूमीमस्तगी	रूमीमस्तकी		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			मस्तगी	Pistacia Lentiscus.	The mastic tree or Mastiche

स्थान—रूमी मस्तिकीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं।

पहिचान—इसके वृक्षमें एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ निकलताहै जो पीले रंगका चमकदार और हल्की उत्तम सुगंधयुक्त होताहै इसको रगड़ने से वा अग्निकी ऊष्मा देनेसे इसकी सुगंध बढतीहै।

प्रयोग—(१) मस्तकी ग्राही, कफनाशक और पौष्टिकहै रक्तप्रदर प्रमेह और दंत रोगको मिटातीहै यह बहुधा सालब मिश्रीके साथ दीजातीहै (२) दांतोंकी रक्षा और श्वासको सुगंधित करनेके लिये इसको मुँहमें रखतेहैं (३) धातु बढानेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग कियाजाताहै (४) यह उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहै (५) एक मासे मास्तिकीको १॥ तोले कंदकी चासनीमें मिलाके दिनमें दो बेर चटानेसे मुंहसे लाळका गिरना बन्ध होजाताहै।

संख्या (२८९)

(सं०) धूम्रपत्रा, क्रामिघ्नी, गृध्राणी, गृध्रपत्रा, स्त्रीमलापहा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कीडामार	कीटामारी	कीडामारी	गेंधाणी			गाडिदेकडुपक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
आडुतिंडा-पालै(इ)				Aristolochia bracteata.	The bracteated Birthwort

स्थान—फीड़ामार यमुना और गंगाजीके किनारों पर और दक्षिण आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै, यह काली मिट्टीकी पृथ्वीमें बहुत होतीहै।

पहिचान—इसका हरेक अंग बहुत कड़वा होताहै।

प्रयोग—(१) यह रसमें कडवी, उष्ण, रोचक, दीपन, और कृमिनाशकहै (२) इसके पत्तोंको बालककी नाभिपर बांधनेसे उसका बद्धकोष्ठ मिटताहै (३) इसके पत्तोंके क्राथमें एरंडका तेल डालके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (४) इसके रसको घावमें निचोड़नेसे कीडे मरजातेहै (५) इसका क्राथ पिलानेसे वारीसे आनेवाला, ज्वर छूट जाताहै (६) इसके पत्ते समुद्रफलके बीज, मालकंगुनी और कालीमिरच इन सबको पीसके सब शरीरपर मर्दन करनेस दुष्ट वायु आदिसे पैदा हुआ ज्वर छूट जाताहै (७) इसकी जडके चूर्णकी ६ मासेकी फकी देनेसे गर्भाशयका मुख सुकड़ जाताहै (८) इसके पत्तोंको कूट पुल्टिस बनाके बांधनेसे फोड़के कीड़े मरतेहै (९) इसके सवा तोले पांगको २५ तोले औटते हुए पानीमें डालके दो तीन घंटे पड़ा रक्खें फिर उसको मसल छानके ४॥ से ५ तोले तककी मात्रा देनेसे वारीसे आनेवाला ज्वर मिटजाताहै (४) इसके २ ताजे पत्तोंको थोडे पानीमें पीस २४ घंटेमें १ वेर पिलानेसे मठोटीके साथ दस्तका होना बन्द होजाताहै (११) कीड़ोंके कारणसे जो बच्चोंके आतोंमें उपद्रव होजातेहैं उनको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये। (१२) विरेचनके लिये इसका क्राथ पिलाना चाहिये।

संख्या (२६०)

(सं०) नरसारः, नवसार, चूलिकालवणं, विदारणः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नोसादर	नवसादर	नवसार	नवसागर	निशादल	नसादर	नवक्षारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नुवचार	नवसागर	नोशदर	नोशादर कानी	Ammonium. Chloride	Sal Ammoniac

प्रयोग—(१) नोसादर, तीक्ष्ण, पाचक, सारक और अत्यन्त उष्ण है (२) पेशियोंकी सूजन पर इसका लेप करतेहैं (३) नारूकी सूजन पर इसका लेप करना चाहिये (४) इसके खिलानेसे नारू मिटताहै श्वासकी नलीके रोगोंको मिटानेके लिये इसको पानमें रखके खिलाना चाहिये (५) ५ से १० रती तक इसकी मात्रा देनेसे आधाशीशी मिटतीहै (६) इसकी १। मासे की मात्रा तीन २ घंटे के अन्तरसे तीन बेर देनेसे मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (७) यकृत्के पित्त शोथमें नोसादरका प्रयोग बहुत उपकारीहै (८) ग्वारपाठेकी गिर पर नोसादर बुरकाके खिलानेसे तिल्ली मिटतीहै (९) स्वरभंग मिटानेके लिये इसको कुलिंजनके साथ पानमें रख के खिलाना चाहिये (१०) अड़ूसेके काथ पर इसको बुरकाके पीनेसे कुत्ता खांसी मिटतीहै (११) इसको गोखरूके काथमें बुरकाके पीनेसे मूत्रकी नली के रोग मिटतेहैं (१२) इसको कुटकीके साथ पीसके कनपटी और ललाट पर लेप करनेसे अधाशीशी मिटतीहै (१३) इसकी ५,५ रतीकी मात्रा दिन में ३,४ बेर देनेसे यकृत् सम्बन्धी कई रोग मिटतेहैं (१४) इसका लेप करनेसे कंठकी सूजन बिखर जातीहै (१५) इसकी जवार जितनी मात्रा रूई में लपेट दांतोंके नीचे दबाके लाल टपकानेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१६) नोसादर और हलदी मिलाके सूंघनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१७) इसको महीन पीसकर अंजन करनेसे मोतिया बिन्द मिटताहै (१८) ३ रती नोसादर और २ काली मिरचको पीसके बारीके दिन देनेसे ज्वर छूटताहै (१९) इसको मधुमें मिलाके लेप करनेसे सफेद कोढ मिटताहै (२०) २ रती नोसादर और दो रती कालेदानेको पानीके साथ पीसके नाकमें टपकानेसे आधाशीशी मिटतीहै (२१) नोसादर और फिटकरी दोनोंको महीन पीसके अंजन करनेसे नेत्र रोग मिटतेहैं (२२) इसको तेलमें पीसके लगानेसे विचर्चिका मिटतीहै (२३) इसको हरतालके पानीके साथ पीस कर दंशपर लगानेसे बिच्छूका विष उतर जाताहै (२४) इसको सिरकेमें पीसके गरारा करानेसे कंठमें चिपी हुई जोंक गिर जातीहै (२६) इसकी १॥ मासेकी मात्रा मूलीके जलमें मिलाके पिलानेसे या मूली और तिल बराबर पीसके बांधनेसे तिल्ली मिटजातीहै (२७) नोसादर, सोहागा और चूना बराबर ले हथेलीमें

मलकर सुंघानेसे विच्छूका विष उतर जाताहै (२८) इसको तेलमें गलाकर लेप करनेसे सफेद कोढ मिटताहै।

संख्या (२९१)

(सं०) नलः, पोटगलः, पुष्पमृत्युः, मृदुच्छदः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नरसल	नरसल	नाली	देवनळ	नल	नरसल	किक्कस

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	देवनल			Phragmites, Roxburghii. Arunda, karka.	

स्थान—नरसल–छोटी नदी और नालोंके किनारोंपर और आर्द्रभूमिमें होतीहै। इसकी ऊंचाई ८ से १२ फुटतक होतीहै।

नरसलके गुण—यह–मीठी, कड़वी, कषेली, उष्ण, शीतल, रोचक, दीपन, वीर्यवर्द्धक और मूत्रशोधक है। योनिरोग, दाह, विसर्प, पित्त, मूत्रकृच्छ्, रुधिरविकार, कफ, हृद्रोग, वस्तिशूल और रक्तपित्तको मिटाती है। इसकी जड़को पीस तेलमें मिला कुछ उष्णकर मर्दन करनेसे जोड़ोंकी पीडा मिटतीहै।

संख्या (२९२)

(सं०) नवमालिका, अतिमोदा, ग्रैष्मी, नवमालिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
		नेवरी	नेवाळी	वासतीफल		विरजाजि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	जाजि			Jasminum arborescens J. montanum	The Aratrans jasmine

स्थान—यह दक्षिण हिन्दुस्थानके उष्ण और नीचे पहाड़ोंमें और क्रमाऊंसे बंगालतक और सीलोन आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै।

प्रयोग—(१) नवमल्लिका, शीतल, मधुर, लघु, वीर्यमें उष्ण और रसमें कड़वीहै। मासिक धर्मके कई उपद्रवोंमें इसके प्रयोग किये जातेहै (२) गाढे चेपदार कफसे जो श्वासकी नली रुक आती है उसकी रुकावट मिटाने के लिये इसके ७ पत्तोंके रसमें कालीमिरच, और लहसन आदि दूसरे उत्तेजक पदार्थोंको मिला, पिलाके वमन कराना चाहिये (३) छोटे बच्चेके लिये इसके आधे पत्ते और अगस्तिके ४ पत्तोंके रसमें १ रत्ती कालीमिरच और १ रत्ती सूखा सोहागा मिलाके मधुके साथ चटाना चाहिये (४) इसके पत्ते थोड़े कड़वे, ग्राही, मलवर्द्धक और पेटकी शूल मिटानेवालेहैं (५) इसमें से एक प्रकारका उड़नेवाला तेल निकाला जाताहै।

संख्या (२६३.)

(सं०) नागकेशरः, किञ्जल्कं, कनकाह्वम्, चाम्पेयम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
केसर	नागकेशर	नागकेसर	नागकेसर	नागेश्वर	नागकेसर	नागकेसरालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नागकेसरं	नागकेसर,री			Mesua Ferrea M Speciosa.	Cobra s saffron.

स्थान—नागकेशरके वृक्ष पूर्वी बंगाल, पूर्वी हिमालय, आसाम ब्रह्मा, दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन आदि हिन्दुस्थानके कई भागोंमें बोये जातेहैं।

इसके कोमल फलके नीचे चरपरा सुगंधवाला राल जैसा एक पदार्थ लगताहै और इसकी छाल या जड़में छेद करनेसे भी वही पदार्थ निकलता है इसके पुष्पोंकी कलियें रंगतके काममें आतीहैं।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं अषाढ़ और श्रावणमें कुछ लाल और सल पड़ेहुए फल लगतेहैं।

प्रयोग—(१) नागकेशर—थोड़ी उष्ण, लघु, कड़वी, रूक्ष और कफ

शक है और इसके सूखे पुष्प ग्राही हैं (२) आमाशय की पीड़ा, तृषा, आमाशयकी दाह और अधिक पसीना आना आदि रोगोंको मिटानेके लिये काममें आतेहैं (३) रक्तार्शका रुधिर बन्ध करनेके लिये नागकेशर और शक्करको पीस मक्खनमें मिलाके लगाना चाहिये (४) इस लेपको पगथली पर लगानेसे पैरोंकी दाह मिटतीहै (५) इसको चटानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होजाताहै (६) जिसके बहुत कफ गिरता हो उसको नागकेशरके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (७) नागकेशर और इसके पत्तोंको पीस सर्पके दंश पर लेप करनेसे विष उतरताहै (८) नागकेशरके वृक्षकी छाल थोड़ी ग्राहीहै (९) इसके वृक्षकी छालको सोंठके साथ देनेसे पसीना आताहै (१०) इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (११) इस तेलको घाव पर लगानेसे घाव भर जाताहै (१२) पामा और त्वचाके दूसरे रोग मिटानेके लिये इस तेलका मर्दन करना चाहिये (१३) पांव और बिगड़ेहुए जिन घावोंमेंसे दुर्गंध युक्त पीप निकलता हो उसपर इसका तेल लगाना चाहिये (१४) शरीरको कृश करनेवाले रोग छूटनेके पीछे की निर्बलता मिटानेके लिये इसकी छाल और जड़का प्रयोग करना चाहिये (१५) नागकेशरके चूर्णको छाछके साथ पीने और तक्रोदन भोजन करनेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (१६) तीसरे महीनेमें गर्भ गिरनेका भय होय तो इसके चूर्णमें मिश्री मिलाकर दूधके साथ फकी देनी चाहिये।

संख्या (२६४)

(सं०) नागदमनी, नागपत्रा, नागपुष्पी, मदघ्नी, दुर्धर्षा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कालीनगद	नागदौन	नागदमनी	नागदवण	नागदनो	नागदौन	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	नागदमनी			Artemisia vulgaris A. Indica.	Indian worm wood Flea-bane

स्थान—यह बहुधा हिन्दुस्थानके पहाड़ोंमें होतीहै।

प्रयोग—(१) नागदौन कड़वी, उष्ण और चरपरीहै। निर्बलताके

कारणसे पैदा हुई रगोंकी ऐंठन या बांइटे मिटानेके लिये इसके पत्ते और कोंपलोंका काथ पिलातेहै (२) फोड़ोंके भी इसी काथका बफारा देतेहैं (३) छोड २ के आनेवाले ज्वरको मिटानेके लिये इसका काथ पिलातेहै (४) इसके काथसे मन्दाग्नि मिटतीहै (५) इसके काथपर हींग बुरकाके पिलानेसे आंतोंके कीडे मरतेहै (६) दालचीनीके साथ इसका काथ करके पिलानेसे पेटका दर्द मिटताहै (७) इसका काथ पिलानेसे बच्चोंकी खांसी मिटतीहै (८) इसका अर्क बच्चोंके शिरपर चुपड़नेसे उनकी कंपवायु मिटतीहै (९) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसके काथमें मधु मिलाके पिलातेहैं (१०) शतावर के साथ इसका काथ करके पिलानेसे बल बढताहै (११) यकृत्के रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसका लेप करना चाहिये और उनकेही काथका बफारा देना चाहिये ॥

संख्या (२९५)

(सं०) नागरङ्गः, ऐरावत., त्वग्गंध, नारङ्गः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नारगी	नारंगी,संतरा	नारगीलिंबु	नारिंग	नारंगीलेंबु	नारंगी	किच्चलिपरंडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
आरंजिप्पलं	कित्तळेहणु	—	नारग	Citrus Aurantium.	Orange.

स्थान—नारंगीके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

फूलने फलने का समय—हिन्दुस्थानमें बहुधा मार्गशीर्षसे फागुन तक नारंगी पकतीहै, परंतु नागपुरमें नारंगीके एक प्रकारके ऐसे वृक्षहैं जो बारह महीनेमें दो वार फलते फूलतेहैं अर्थात् माघमें पुष्प निकलके जो फल लगतेहैं वे फागुन और चैत या वैशाखमें पकतेहैं और जो अषाढमें पुष्प निकलके जो फल लगतेहै वे कार्ती से पोष तक पकतेहैं यह दो प्रकारकी होतीहै। एक खट्टी और दूसरी मीठी, जिस नारंगीका छिलका पतला और चिकना हो और

जितनी अधिक बड़ी हो उतनी ही सबसे अच्छी होतीहै नारंगीके वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

प्रयोग—(१) नारंगी—उष्ण, खट्टी, पचनेमें भारी, सारक, मीठी, रूक्ष, हृद्य, रोचक, दीपन और पाचनहै (२) नारंगीकी फाकका छिलका पेटकी शूल मिटाताहै और बल बढाताहै। यह साधारण मंदाग्नि और सब शरीर की निर्बलताको इसी कामकी दूसरी औषधियोंके योगसे मिटाताहै (३) नारंगीके छिलकेका हिम, फांट, क्काथ और शरबत काममें आतेहै (४) नारंगीके पुष्पोंका खैंचा हुआ २॥ या ५ तोले अर्क पिलानेसे नांइटे मिटतेहै (५) स्नायु जालकी ऐंठन और स्त्रियोंके आवेशका रोग मिटानेके लिये नारंगीके पुष्पोंका खैंचा हुआ अर्क पिलाना चाहिये (६) पीनेकी चीजोंको स्वादिष्ट करनेके लिये नारंगीके पुष्पोंका शरबत काममें आताहै (७) नारंगीका छिलका और पुष्प उष्ण और रूक्ष होतेहैं (८) नारंगीकी गिरी ठढी और रूक्ष होतीहै (९) सर्दीके कारणसे जो ज्वर हुआ हो और जिसमें खांसी कफ हो उसको मिटानेके लिये थोड़ी २ नारंगी खिलानी चाहिये (१०) नारंगीकी फाकका गूदा निकाल उस पर बूरा बुरका उसको सेक कर खिलानेसे ज्वर और खांसी आदि रोग मिटतेहैं (११) इसका अर्क पिलानेसे पित्तके विकार मिटतेहै (१२) इसका शरबत पिलानेसे पित्तका अतिसार मिटताहै (१३) नारंगीकी खटाई उपद्रव नहीं करतीहै (१४) इसके छिलकेका चूर्ण चटानेसे वमन मिटतीहै (१५) इसके क्काथमें हींग बुरकाके पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं (१६) नारंगीका पुल्टिस बांधनेसे त्वचाके रोग जैसे कि शरीरपर एक प्रकार के दाद जिनके भीतरका भाग सफेद होता है और ऊपर खरूंट रहताहै वे मिटते हैं (१७) नारंगी विषको और दुर्गंधसे जो उपद्रव होतेहै उनको मिटाती है (१८) नारंगी का खेंचा हुआ अर्क पीने से उत्तेजना बढतीहै और चित्त प्रसन्न होताहै (१९) चिरायते के अर्क में नारंगी का शरबत मिलाके पीनेसे रुधिर शुद्ध होताहै (२०) ज्वरकी तृषा मिटानेके लिये जलमे थोड़ा नारंगीका शरबत मिलाके पिलाना चाहिये (२१) नारंगीकी फाकपर सोंठ बुरकाके खिलानेसे भूख बढतीहै (२२) नारंगीके छिलके का क्काथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (२३) उष्णकालमें नींबूके शरबतकी अपेक्षा

नारंगीका शरवत पीना अच्छाहै क्योंकि इससे कोई उपद्रव नहीं होताहै और नींबूके शरवतसे हानिकारक विसूचिका होनेका भयहै (२४.) नारंगीकी छालका क्वाथ पिलानेसे पेटकी वादीकी पीड़ा मिटतीहै (२५) इस क्वाथपर सोंठ और कालानमक बुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि और अफारा मिटताहै (२६) नारंगीकी गिरको सेकके बिगडे हुए फोड़ेपर बाधतेहैं (२७) नारंगीके ताजे छिलके को मुंहपर मलनेसे मुखदूपिका मिटतीहै (२८) इसके छिलके को पीसके जलके साथ मर्दन करनेसे एक प्रकारकी फुन्सियां मिटतीहैं।

संख्या (२८६)

(सं०) नागवल्ली, ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागलता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नागरवेल	नागरबेल	नागरवेल्य	नागवेल	पानगाछ	नागरबेल	तमलपाकु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन्	अंग्रेज़ी
वेत्तिलै	विल्लेदले		तम्बोल	Piper Betle Chavica Betle	Betel leaf

स्थान—नागरवेल हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और अधिक आर्द्र भागों में बोई जातीहै। इसकी मुख्य तीन जातेहैं, बगला, संची और कपूरी।

प्रयोग—(१)नागरवेलके पान-कड़वे, चरपरे, मधुर, सलोने, कषेले, रोचक, तीक्ष्ण, सारक, बल्य, हृद्य, दीपन, पाचक और त्रिदोषनाशकहै पान बहुधा बीडी बनाके खानेके काममें आतेहै। कई मनुष्य इनमें चूना, कत्था, सुपारी रखके और कई इनके सिवाय लौंग, जायफल, इलायची, भीमसेनी कपूर आदि कई प्रकारके सुगन्धित पदार्थ रखकर खातेहै पानबीड़ा खानेसे एक प्रकारकी उत्तेजना और चित्त प्रसन्न होताहै जिनके पान खानेका व्यसन होजाताहै उनको नहीं खानेसे बायड आन लग जातीहै और एक प्रकारकी निर्बलता प्रतीत होतीहै (२) पान पेटकी वादी मिटानेवाला उत्तेजक और ग्राही है इससे श्वासमें मिठास होजाताहै। बोली स्पष्ट होजातीहै और मुखकी

सब प्रकारकी दुर्गंध मिट जातीहै (३) यह पुरुषार्थ बढाताहै कफके रोगोंमें नागरवेलके पानोंका प्रयोग बहुत अच्छाहै (४) इसके रसमें खासी मिटाने वाली औषधियोंको खरल करके गोलियां बनाके देनेसे खांसी मिटतीहै (५) पानकी डंडीके ऊपर तेल चुपडके बालककी गुदामें देनेसे दस्तकी रुकावट मि टजातीहै (६) बच्चेका आध्मान मिटानेके लिये भी यह प्रयोग किया जाताहै (७) कनपटियों पर नागरवेलके पान बांधनेसे मस्तककी वायुकी पीड़ा मि टतीहै (८) मांसपिंडोंकी सूजन और पीड़ा मिटानेके लिये उन पर पानको तेलसे चुपड़ अग्नि पर तपाके बांधना चाहिये (१०) स्तनों पर नागरवेल के पान बांधनेसे दूधका सचार मिटजाताहै (११) बिगडे हुए फोड़ों पर पान बांधना चाहिये (१२) इसके फलको मधुके साथ चटानेसे खासी मि टतीहै (१३) गर्भ रहना बन्ध करनेके लिये इसकी कोमल जड़ोंको काली मिरचके साथ पीसके प्रयोग करना चाहिये (१४) पानोंका ३॥। मासे उष्ण किया हुआ अर्क दिनमें २,३ वेर पिलानेसे ज्वरका आन्ध बन्ध होताहै (१५) बच्चेका अजीर्ण मिटानेके लिये पानका अर्क पिलाना चाहिये (१६) स्त्रियों का आवेशका रोग मिटानेके लिये पानका अर्क दूधमें मिलाके पिलाना चाहिये (१७) पानके अर्कमें कपासकी जडकी लुगदी बना उसमें हीरेको रख कपड़ मिट्टी देके गजपुटकी आंच देनेसे हीरेकी भस्म हो जातीहै(१८)बच्चोंका प्रतिश्याय और हृदय सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये पानको तेलसे चुपड़ आगसे तपाके उसको छातीपर रख फिर उसके ऊपर ५, ७ पान रखकर पट्टी बाधदेना चाहिये (१९)इसी प्रयोगसे बच्चेकी खासी और कठिनतासे श्वास लेना मिटजाताहै हृदय और यकृत्में जो रुधिरका जमाव हो वह बिखर जाताहै और अन्य रोगभी मिट जातेहैं (२०) पेटकी शूल मिटानेके लियेभी उक्त रीतिसे पान बांधने चाहियें (२१)आर्द्र पृथ्वी और देशके दूषित जल वायुसे होनेवाले विकार पान खा नेवालेके नहीं होतेहैं(२२)निर्बल मनुष्योंको पानका सेवन कराना चाहिये(२३)यह सब शक्ति आर्द्र पानोंमें होतीहै सूखजानेसे सब जाती रहतीहै क्योंकि इनमें उडनेवाला एक तेलहै उसमें रोग मिटानेवाली ये सब शक्तियें है (२४) पा नका अर्क भपकेमें खेंचनेसे इसका तेल अर्कके ऊपर तैर आताहै । इनमेंसे दो प्रकारके पीले तेल निकलतेहै एक भारी और दूसरा हलका । इन तेलोंमें पान-

कीसी एक विशेष भांतिकी सुगंध होतीहै परन्तु हल्के तेलमें अधिक सुगंध होतीहै (२५) पानोंमें से एक प्रकारका क्षार और लवण निकालतेहैं वे कुछ कडवे होतेहै और उनके सेवनसे मुंहसे पानीका वहना वढ जाताहै हृदयका धडकना कम हो जाताहै और विरेचन लग जाताहै (२६) आंखमें पानके अर्ककी बूंदें डालनेसे उसकी वादीकी पीडा मिटजातीहै (२७) मस्तिष्कमें रुधिरके जमावको विखेरनेके लिये पानका अर्क सुंघाना चाहिये (२८) पान खानेसे तृषा कम पड़ जातीहै (२९) पानका रस उत्तेजकहै (३०) पानके रसका अजन करनेसे रतोंधा और आंखके सफेद भागके रोग मिटतेहैं (३१) गलेकी पीडा मिटानके लिये पानपर कडवा तेल चुपड़ अग्निसे तपाकर बांधना चाहिये(३२)श्वासकी नलीको शुद्ध करनेके लिये बंगला पानका प्रयोग बहुत अच्छाहै(३३)पानकी जड़ और मुलहटीको पीस मधुके साथ चटाने से प्रतिश्यायसम्बन्धी रोग मिटतेहै (३४) गवैये लोग अपनी राग साफ करने और सुधारनेके लिये इसकी जड चूंसा करतेहै (३५) पानके रसको मधुके साथ चटानेसे बच्चोंकी सूखी खांसी मिटतीहै (३६) पानोंके शर्वतमें दूसरी चरपरी चीजें अर्थात् उष्ण वेसवार मिलाके या उष्ण वेसवारके साथ पानका शरवत वनाके ढाई ढाई तोले दिनमें तीन वेर पिलानेसे सब शरीरकी निर्वलता मिटतीहै (३७) इसके रसमें कबूतरकी वींट मिलाके पिलानेसे गर्भस्राव बन्ध होजाताहै (३८) तांबूल भक्षण करनेसे ज्रम्भाका वेग रुकताहै (३९) इसका शरवत पीनेसे हृदयका बल वढताहै कफ और मन्दाग्नि मिटतीहै॥

संख्या (२७६)

(सं०) नाडिका, नाडीशाक , नाडीकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पटुआसाग	नालनिभाजी	नाडीशाक	नालिताशाक	पटुशाक	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Corchorus olitorius	Jews mallow

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत और बोई जातीहै ।

प्रयोग—(१) इसको सूखी या गीलीको जला उस भस्मको थोड़ी मधुके साथ चटानेसे तिल्ली आदि यंत्रोंके बहावकी रुकावट मिटजातीहै (२) इसके पत्तोंका हिम या फांट पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटतीहै (३) इसके पत्तोंका हिम पिलानेसे बल बढताहै (४) तीव्र आमातिसार मिटनेके पीछे भूख लगने और शक्ति बढानेके लिये इसका प्रयोग निरुपद्रव उपकारीहै (५) इसके तीन रत्ती चूर्णमें तीन रत्ती हल्दी मिलाके फकी देनेसे तीव्र आमातिसार मिटताहै (६) इसके पत्ते शाकके काममें आतेहैं ॥

संख्या (२९८)

(सं०) नारिकेलः, उच्चतरुः, जटाफलः, तृणराज ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नारेल	नारियल	नालियेर	नारळ नारेळ	नारिकेल	नारियल	टेंकाईचट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
तेंगाइ	तेंगिनमर		नारगील	Cocus nucifera.	The cocoanut palm. Cocoanut.

स्थान—इसके वृक्ष सिन्धके नीचेके भाग बंगाल और मैसोर आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

फूलने फलने का समय—उष्णकालमें इसके पुष्प लगतेहैं । भादवेसे कार्त्तिकतक इसके फल पकतेहैं ।

इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । नारियलकी दाढी और पत्तोंकी डंडियोंमेंसे एक प्रकारका रस निकलताहै ।

प्रयोग—(१) नारियल—पचनेमें भारी, स्निग्ध, शीतल, वृष्य, बल्य, रस और विपाकमें मधुर, हृद्य और मदकारकहै । नारियलका कच्चा खोपरा ठण्डा होताहै (२) इसके पुष्प ग्राही होतेहैं (३) नारियलकी ताजी गिरी मेंसे निकाला हुआ तेल काडमछलीके तेलकी और काममें आसक्ताहै (४)

नारियलका दूधिया पानी अच्छा स्वादिष्ठ, ठण्ढा और शान्ति करनेवालाहै (५) इसको ज्वरमें पिलानेसे ज्वरकी तीव्रतासे पैदा हुई घबराहट मिटती है (६) इसके पिलानेसे अधिकतृषा मिटतीहै (७) मूत्रसम्बन्धी उपद्रवों को मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (८) इसकी मात्रा नियत नहींहै इसके सेवनसे रुधिर शुद्ध होताहै (९) इसका अधिक सेवन करनेसे अंडकोषमें पानी भरकर शोथ पैदा होजातीहै (१०) कच्चा खोपरा ठण्ढा, शरीरको पुष्ट करनेवाला और मूत्रवर्द्धक है (११) पका खोपरा कड़ा और पचनेमें भारी होताहै (१२) पके खोपरेको महीन कूट थोड़े जलसे पीस दबा के निचोडनेसे एक दूध जैसा पदार्थ निकलताहै उसका स्वाद दूधसे बहुत मिलता हुआ होताहै और दूधकी ठौर काममें आसकताहै। इस दूधको आध पावसे पावभर तक दिनमें दो तीन बेर पिलानेसे शरीरकी निर्बलता और बिगडी हुई दशा मिटतीहै (१३) क्षयके प्रारम्भमें इस दूधका पिलाना बहुत उपकारीहै (१४) इस दूधको काफीमें गायके दूधकी ठौर काममें ला सकतेहै(१५)इसकी अधिक मात्रा लेनेसे,यह सारकपनका काम करताहै और कभी २ अधिक विरेच लगा देताहै इसलिये इसको एरंडके तेल और दूसरे उत्क्लेद करनेवाले (जी मचलानेवाले) विरेचनकीठौर काममें लातेहै (१६) पके खोपरेका नारिकेल खंड बनातेहैं जिसके सेवनसे मंदाग्नि, हृदयकी पुरानी दाह और स्तन रोग मिटताहै (१९) नारेलीके टुकडे कर उनको हंडीमें भर पाताल यन्त्रसे उनका चौवा निकालतेहै वह दादके ऊपर लगानेके काममें आताहै (२०) नारियल के तेलसे एक सफेद कडा साबुन बनताहै जो मोलमें सस्ता पडताहै। इसका पलस्तर और लेप बनातेहै (२१) पके खोपरेमें से निकाले हुए दूधमें तेल डाल ओटाकर एक प्रकारका तेल बनातेहैं उसको अग्निसे जले हुए पर और गंज पर लगातेहैं (२२) इसकी गिरीको कूट पानीमें ओटाके तेल निकालते हैं या गिरको महीन पीस किसी यंत्रमें दबाके तेल निकालतेहैं परन्तु यह तेल मूंगफली और तिल्लीके तेलसे गुणमें हल्का होताहै खोपरेमें से निकाला हुआ अपक्व तेल नहीं खिलाना चाहिये (२३) इसकी सवा सवा तोलेकी मात्रा दिनमें तीन बेर दे सकतेहै, यह मर्दन करनेसे जल्दी सूख जाताहै (२४) इस तेलमें आमलीके बीजोंका तेल मिलाके या बडी कालीमिरच मिलाके गठिया

की सूजन पर लगानी चाहिये (२५) इस तेलके लगानेसे बाल बढ़तेहैं, या जिसके बाल खिरते हों उसको चाहिये कि यह तेल बालोंके लगाया करे (२६) ज्वर छूटनेके पीछे या शरीरको निर्बल करनेवाले रोगों में जिस के बाल खिरतेहों उसको चाहिये कि यह तेल बालोंके लगाया करे (२७) मेद रोगवालेको यह तेल पिलाना चाहिये (२८) इसके पिलानेसे कीड़े मरतेहैं (२९) जिसको दस्त लगतेहों उसको भूखा रख इस तेलको गर्मकर कुछ शक्कर मिलाके पिलाना चाहिये (३०) खांसीवालेको खोपरेका दूध बनाके पिलाना और खोपरा खिलाना चाहिये (३१) फैफडेके रोगोंमें बहुधा ये दोनों प्रयोग अच्छे उपकारीहैं (३२) यंत्रमें दबाके निकाले हुए तेलसे खोपरेका जलके साथ निकाला हुआ दूध अच्छाहै और इस दूधके सेवनसे कफक्षयके १०० रोगियोंमें से कम से कम ६६ रोगी अच्छे होजातेहैं और उनका शरीर पुष्ट होजाताहै (३३) विना प्रयोजन बहुत दिनों तक इसका लगातार सेवन करनेसे पाचनशक्ति बिगड जातीहै और अतिसार होजाताहै (३४) जहरी सर्पोंके काटेहुए मनुष्योंको इस तेलका सेवन कराना चाहिये (३५) इसका खेंचाहुआ ताजा रस शान्ति और मूत्रवृद्धि करताहै (३६) इसकी कोमल जड और सोंठको ओटा छान नमक बुरकाके पिलानेसे ज्वर छूट जाता है (३७) नारियलकी शाखाके नीचेके भागमें बाहिरकी ओर रूई जैसा एक कोमल इल्के भूरे रंगका पदार्थ चिपका रहताहै इसको नारियलकी रूई कहते हैं उसको रुधिर बन्ध करनेके लिये घाव, चोट और जोंकके डंक पर लगातेहैं (३८) इसकी जड मूत्रवर्द्धकहै और गर्भाशयके रोगोंमें उपकारीहै (३९) इस की जडके काथके कुल्ले करानेसे गलेका दर्द मिटताहै (४०) इसके पत्तों की भस्म और इसका खार औषधीके प्रयोगमें काम आतेहैं (४१) नारियलकी डाढी ओटाके भोजन किये पहिले पिलानेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै (४२) नारियलके कच्चे फलका रस खट्टी डकार और पकाशय की दाहको मिटाताहै (४३) नारेलीका चीया लगाने से पांव और त्वचाके दूसरे कृमि सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (४४) विसूचिकाकी तृषा मिटानेके लिये नारियलका जल पिलाना चाहिये (४५) विसूचिकाकी वमन दूसरी औषधियोंसे बन्ध नहीं होवे तो नारियलका जल पिलानेसे अवश्य बन्ध होजातीहै (४६) ताजे खोपरेमें

से निकालेहुए तेलकी मात्रा २० से ३० बूंद तक दिनमें तीन वेर देना चाहिये पीछे उसको धीरे २ पौने चार मासे तक वढा देना चाहिये (४७) खोपरेकी भस्म अम्लपित्तको मिटातीहै और पाचनशक्ति बढातीहै (४८) इसके वृक्षमें से एक प्रकारका मीठा मादक रस निकाला जाताहै यह बहुत शान्तिकारक और सारकहै (४९) यह रस गर्भवती स्त्रीको हर सप्ताहमें दो तीन वेर लगातार ६ महीने तक देते रहनेसे गर्भमें बालकका रंग पलट जाताहै अर्थात् काले रंगके मा बापोंके बालकका रंग पक्का होजाताहै और पक्के रंगवालोंके बालकका रंग गोरा और गोरे रंगवालों के बालकका रंग विलायतियों जैसा हो जाताहै (५०) नारियलके पुष्पोंके गुलकंदमें खस और सफेद चन्दनका चूरा और कुछ पानी मिलाके पिलानेसे पित्तज्वर में बहुत लाभ होताहै, वमन मिटतीहै, कलेजे में शीतलता (ठंढाई) होती है, अतिसार, आमातिसार और मुखपाक मिटताहै (५१) नारियलकी डांडीकी भस्मको पानीमें घोल उस निंतरे हुए पानीको पिलानेसे हिचकीका आना बन्ध होजाताहै (५२) चोटकी पीड़ा मिटानेके लिये और चोटकी गांठकी शोथ उतारनेके लिये उसपर महीन कूटीहुई पुराने नारियलकी गिरमें चौथा भाग पीसीहुई हल्दी मिला गर्मकर पोटली बांधके सेक करना और उसीको बांध देना चाहिये (५३) नारेलके पानी की नस्य लेनेसे सूर्यावर्त मिटताहै (५४) दूध पीनेवाले बालककी माको नारियल की गिर ७ दिन खिलानेसे उस बच्चेकी शीतला कम निकलतीहै (५५) बालक होनेके पीछे गर्भाशयमें पीडा होती हो तो खोपरा खिलाना चाहिये (५६) नारेलीके टुकडोंका पाताल यन्त्रसे जो तेल निकालतेहै उसको नारेलीका चौवा कहतेहै । यह त्वचाके रोगोंमें काम आताहै (५७) इसके ७ तोले ताजे तेलमें एक मासा सैंधानमक मिलाके नस्य देनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै । नारियलकी १०० तोले गिरीमेंसे ३७ से ५० तोले तक तेल निकलताहै यह तेल सफेद और मीठा होताहै इसके ताजे तेलमें अच्छी सुगन्ध आतीहै यह थोड़े दिनोंके पीछे बिगड जाताहै परन्तु साफ करनेसे जल्दी नहीं बिगड़ताहै ।

संख्या (२६६)

(सं०) अब्धिनारिकेल ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जहरी नारेल	दर्याई नारियल		जहरी नारेल			समुद्र पुटेंकाय

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			नारगील नारजील	Lodoicea sechellarum Lodoicea seychellarum	The sea cocoanut. The double or marine cocoanut

स्थान—दर्याईनारियलके वृत्त मेडेगैस्करके उत्तर पूर्वके शिसुली समूहके दो तीन पहाड़ी टापुओंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृत्त बड़ा होताहै इसके शिर पर १२ से २० तक बड़े पत्ते होतेहैं इसके २० से २५ सेर तक बहुत बड़ा फल लगताहै जो बहुत वर्षोंमें पकताहै ।

प्रयोग—(१) दर्याई नारियल विषनाशक और बल वर्द्धकहै (२) इसकी गिरीको स्त्रीके दूधमें घिसके दिनमें दो बेर देनेसे मोतीझरा छूटताहै (३) इसकी गिरीका लेप करनेसे ममूड़ोंके रोग मिटतेहैं (४) इसको कुचीलेकी जड़के साथ मिलाकर पिलानेसे बच्चोंकी शूल मिटतीहै (५) इसको पानीमें पीस कर पिलानेसे हैजेकी दस्त और उल्टी मिटतीहै (६) इसके कच्चे फलका पानी पीने या कच्चे दर्याई नारियलकी गिरी खानेसे पित्तके विकार मिटतेहैं (७) भोजनके पीछे इसकी कच्ची गिरी खानेसे खट्टी डकारें आना बन्ध होताहै (८) इसका पका हुआ फल सारकहै (९) यह फल जब तक कच्चा रहताहै तब तक इसके भीतरका चेपदार गूदा खानेके काममें आताहै (१०) इस वृक्षके अन्तका ऊपरका भाग खानेके काममें आताहै (११) उपदंशकी टांकी पर इसका लेप करतेहैं (१२) इसकी एक मासा गिरी पीसके पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरते हैं ।

संख्या (३००)

(सं०) नाही ( )

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	नाही	कडवीनई	कडवीनाई			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Corallocarpus epigoea. „ Bryonia epigoea.	

स्थान—नाहीकी वेलें पंजाब, सिन्ध, गुजरात और दक्खन प्रायद्वीपमें बेलगांव तक होतीहै ।

पहिचान–यह दो प्रकारकी होतीहै एक मीठी और दूसरी कडवी। इसकी जड़की मोटाई और लम्बाई सब ठौरसे एकसी नही होतीहै यह बांझ करेले की जडसे बहुत मिलतीहै और शलगमसे बहुत बड़ी होतीहै उसपर ऊपरसे कुछ पिलास लियेहुए सफेद कुछ उठेहुए गोल चकर होतेहैं । यह स्वादमें कडवी चेपदार और खट्टी होतीहै जब इसको काटतेहैं तब इसमें से गाढा रस निकलताहै वह तुरन्त गोंद जैसा कड़ा होजाताहै। इसके पत्ते नागरवेलके पत्तों जैसे होतेहैं कडवीके फल झडबेर से कुछ बड़े और मीठीके फल नीबू जैसे होतेहैं उनका रंग जर्द कुछ स्याही लिये होताहै जडमेंसे एक प्रकारका कंद निकलताहै इसकाभी रंग फलों जैसा होताहै इसके पुष्पोंकी मंजरीसी लगतीहै इसका फल मेघकी गरजकी आवाजसे फटताहै और तबही उगताहै इसके फलको गरजफल कहतेहैं ।

प्रयोग—(१) नाही–कड़वी, कषेली, वामक, रेचक और उष्णहै (२) कंदको शुद्ध करके उपदंश मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै। इसके ४ मासे चूर्णकी फकी दिनमें एक वेर देनी चाहिये (३) उपदंशकी पिछली अवस्थामें इसकी ४ मासेकी फकी दिनमें एक वेर ८–१० दिन तक देनेसे मल के एक या दो ढीले दस्त होके उपदंशकी चांदी मिट जातीहै (४) जीरा, प्याज और नाहीके कंदको एरंडके तेलमें पीसके लेप करनेसे पुरानी गठिया

मिटतीहै (५) इसकी जड़के चूर्णकी फकी लेनेसे और उसको घिसके सर्प के दंश पर लगाने से सर्प का विष उतरता है (६) वायविड़ंग और इसके चूर्णकी फकी देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (७) कड़वीनाहीका कंद वामक, रेचक और शोथ नाशकहै (८) मीठी नाहीके फलोंका शाक बनातेहैं (९) कड़वी नाहीके कंदको घिसकर पीने और लगानेसे शोथ उतरताहै ।

संख्या (३०१)

(सं०) निकोचकं, जलगोजकं, सकोचं, चारुफलम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चिलगोजा	चिलगोजा		-- --	--	नेज़े	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
--	--	--	चिलगोजा	Pinus Gerardiana.	[illegible] or Edible pine

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिमालयमें कुनवारसे पश्चिमकी ओर और गढ़वालमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३०–४० और कभी ५०–६० फुट ऊंचा होता है इसकी पेड़ छोटी और सीधी होतीहै और गुलाईमें ६–७ कभी कभी १२ फुट होजातीहै । यह वृक्ष ८—१० फुट ऊंचा बढ़जानेके पीछे इसमें शाखा फूटतीहै, इसके गहरे हरे रंगके पत्ते और चिकनी शाखा लगतीहै और भूरे रंगके गोले लगतेहैं उनमें फल रहतेहैं । ये गोले पकजाने पर ६–९ इंच लम्बे होजातेहैं इसकी जड़के पासकी मध्यरेखा ४–५ इंच लम्बी होतीहै । इसके फल एक इंच लम्बे, गोल और एक ओरसे कुछ चिपटे होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—जेठ अषाढ़में इसके पुरुष पुष्प लगतेहैं, फलोंके तिकूटे गोले दूसरे वर्षमें भादवे और आसोजमें पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) चिलगोजा–पचनेमेंभारी, स्निग्ध, वृष्य, बृंहण, उष्ण

मीठा और वल्यहै, (२) इसकी मींगीको पीस, लेप करके नपानेसे वादीकी पीडा मिटतीहै (३) इसकी मींगी खानेसे शरीरका आलस्य मिटताहै और फुरती बढ़तीहै (४) इसके तेलको घात और पिटिकापर लगानेसे वे शीघ्रतासे भरजातेहैं (५) इसके तेलके लगानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (६) इसकी मींगी और मुनक्का एक दिनरात पानीमें भिगो थोड़ा बूरा मिलाके खानेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (७) इसकी मींगीको आटेमें मिला रोटी बनाके खातेहैं । एक मनुष्य एक वृक्षके फलोंसे शीतकाल बिता सकताहै। इसके बीजों में से एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै वह औषधिकी रीतिपर काममें आताहै । इसके राल जैसे पदार्थमें से एक प्रकारका तेल निकलताहै ।

संख्या (३०२)

(सं) निम्बः, अरिष्टः, सर्वतोभद्रः, पिचुमन्दः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नीम	नीम	लिंबड़ो	कडु निंब	निम	निम नीम	वेमु वेपचेट्टु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेपम्मर	बेवु, बेवुमरा		नीब	Melia Azadirachta. A. Indica.	The Neem or Margosa tree.

स्थान—निम्बके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुत से भागोंमें बहुधा लगाये जातेहैं और अपने आप उगतेहैं ।

पहिचान—नीमका वृक्ष ४०,५० फुट या इससेभी ऊंचा होताहै, इसकी पेड़ छोटी सीधी और उसकी गुलाई ६ से ८ फुट तक होतीहै इसकी छोटी शाखाके अंतमें ८ से १५ इञ्च लम्बी बहुतसी सींकें लगतीहै उनके ८ से १३ तक पत्तोंके जोडे लगतेहै पत्ते कटवा कंगूरेदार किनारेके और मुडवां अनीके एक ओरसे कुछ चौड़े और एक ओर से तंग और हरे रंगके होतेहै । इसके सफेद पुष्पोंकी मंजरी लगतीहै उसमेंसे रात्रीमें मधु जैसी तीव्र गंध आतीहै । उसके बहुतसे हरे बीज लगतेहैं वे पकनेपर पीले पड जातेहैं । उनकी गिरी मीठी होतीहै । फलमें एक खाना और

एक बीज होताहै इसके फलको मारवाडीमें "निंबोली," कहतेहैं-इसके पुराने पत्ते सब गिर जानेके पहिलेही फाल्गुन चैत्रमें नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै जो कडवा नहीं होताहै और ठण्डे पानीमें भलीभांति गल जाताहै यह गोंद साफ उजला और कहरवेके रगका होताहै इसके छोटे २ टुकड़े होतेहै। नीमकी छाल और गोंद रगतके काममें आतेहैं।

फूलने फलनेका समय— फाल्गुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं अषाढ श्रावणमें निंबोलिया पकतीहैं।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंमेंसे कड़वा, चरपरा, गहरापीला, नहीं उड़नेवाला और बहुत बुरे स्वादवाला तेल निकलताहै। तेल निकालनेके लिये निंबोलीमेंसे मींगीको निकाल उसको महीन कूटके पानीमें ओटानेसे तेल ऊपर तैर आताहै या इसकी मींगीको घाणीमें डालके पेरनेसे तेल निकल आताहै (२) बिगडे हुए घावों पर यह तेल लगानेसें उनकी शिथिलता मिटकर वे मिटजातेहैं (३) स्त्रियोंका दूध बन्ध करनेके लिये नीमके पत्तोंका कल्क बनाके उनके स्तनों पर लेप करतेहैं (४) नीमकी छालमेंसे एक कड़वा तत्व निकालतेहैं जो ज्वर छुडानेमें बड़ा प्रबलहै (५) जो ज्वर छुडानेवाली दूसरी औषधियां ज्वर नहीं छुडा सकें तो नीमकी छालका अष्टमांश या दशांश काथ कर निरंतर रहनेवाले ज्वरको छुडानेके लिये हर घंटेमें देना चाहिये (६) फोड़े और त्वचाके रोगोंपर दुष्ट और दुर्गंधयुक्त वायुका असर नहीं होनेके लिये नीमके पत्तोंका पुल्टिस बांधतेहैं या नीमकी डाली उस मकानके दर्वाजेपर बाध देतेहैं (७) बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी छालका काथ दिनमें ३ वेर पिलातेहैं (८) नीमकी छालका काथ पिलानेसे ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै और पेटके कीडे मरतेहैं (९) नीमकी अंतरछालके चूर्णकी फकी देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (१०) इसके बीजोंका तेल लगानेसे जूंएं, लीखें मरतीहैं (११) पित्तीवालेके इसके तेलका मर्दन कराना चाहिये (१२) बच्चोंके ऐसे फोडे कि जो नीचेसे हरे रहतेहैं और ऊपर खुरंट आजातेहैं उनपर इस तेलको लगाना चाहिये (१३) थोड़े वेगवाले शीतज्वरको मिटानेके लिये नीमकी अतरछालका काथ दिनमें २ वेर पिलाना चाहिये (१४) जो बिगड़ेहुए फोडे दूसरी औषधियोंसे नहीं मिटतेहैं उनपर नीमके

पत्तोंका पुल्टिस बांधतेहै (१५) इसके तेलका मर्दन करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहै (१६) कोढ़ और त्वचाके दूसरे रोगोंमें नीमके पत्तोंके ताजे रसका मर्दन करनेसे बहुत लाभ होताहै (१७) १२ वर्ष पर्य्यंत नीमके वृक्षके नीचे रहनेसे पित्तका गलित कुष्ठ मिटताहै (१८) नीमकी कोमल डालियोंसे लगातार दांतुन करनेसे मुखके कई रोग मिटजातेहै मुख और श्वास शुद्ध और मीठा होजाता है (१९) नीमके पत्तोंको पीस उनकी छोटी २ टिकड़िया बना मन्द आंचसे घीमें तलते २ जब वे जलजावें तब निकाल देवें और उस घीमें बराबर मोम डाल पिघलाके पानीसे भरेहुए बरतनमें डाल देवें जब वह घी जम जावे तब उसको पानीपर से उतारके रख छोड़े । शीतकालमें इसको हाथ पैरों पर लगानेसे कोमल बने रहतेहैं और फटते नहींहै (२०) नीमके पत्तोंको घीमें जला महीन पीस मोममें मिलाके शिथिल पड़ेहुए फोड़ोंपर लगातेहै (२१) नीमके तेलकी ३० बूंद से पौने चार मासे तक की मात्रा लेके ऊपर पान चाबनेसे श्वास मिटताहै (२२) नीमकी छालकी भस्मको बहुत बहनवाले फोड़ों पर लगाना चाहिये (२३) जिस ज्वरमें बांइटे चलते हों या पैरोंमें शीत आगयाहोवे तो उस दशा में नीमके तेलका मर्दन बहुत उपकारीहै (२४) विसूचिकामें भी इन दोनों उपद्रवोंको मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन बहुत उपकारीहै (२५) नीमकी जो कूट कीहुई ५ तोले अंतरछालको अढ़ाईपाव पानीमें आधे घंटे तक ओटा के छान लेवें, फिर उसी छालको उतनेही पानीमें ओटाके उसका पावभर पानी रखके छान लेवें, फिर इन दोनों काथोंको मिलाके उसमें से पांच पांच तोले काथ दिनमें दो तीन बेर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२६) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे और पत्तोंको ओटाके बफारा देनेसे फोड़ोंकी दाह मिटतीहै (२७) दुष्ट पृथ्वी, वायु जलादि और सड़ेहुए फलोंकी दुर्गंधसे जो ज्वर होता है उसको छुडानेकेलिये नीमकी छालका काथ पिलाना चाहिये (२८) नीम की छालका हिम, फांट या काथ यथा दोष पिलानेसे रुधिर शुद्ध होके फोड़े फुन्सी मिट जातेहैं (२९) इसके तेलको पानमें लगाके खिलानेसे या रास्नादि काथमें इसकी ३० बूंदें डालके पिलानेसे बाइटे और कई प्रकारके वायुके वेग मिटतेहै (३०) गहरी शीतला निकल जाने पर इसके तेलका सब शरीर पर चुपड़ देनेसे बहुत उपकारहोताहै । इस काममें इसका प्रभाव तिल्लीके तेलसे या नारि-

यलके तेलसे या कारबोलिकएसिडूसे भी बहुत बढकरहै (३१) त्वचाके ऊपर के मात्र प्रकारके छोटे या दृष्टिमें नहीं आनेवाले कीडोंको मारने या उनको दूर करनेके लिये नीमके तेलका मर्दन करना चाहिये (३२) विगडेहुए फोडे या घावोंको नीमके पत्तोंके काथसे धोना चाहिये (३३) नीमके कोमल पत्ते पित्त सम्बन्धी विकारोंको मिटातेहै (३४) नीमके तेलका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (३५) पुराना ज्वरातिसार मिटानेकेलिये नीमकी छालका काथ पिलाना चाहिये (३६) नीमकी कोंपल और कालीमिरचको घोट छानके पिलानेसे बारीसे आनेवाले ज्वरका वेग बन्ध होजाताहै (३७) इसकी छाल के काथसे फोडेको धोनेसे जहरीली छूतका असर नहीं होताहै (३८) इसके कोमल पत्तोंको पीसके लगातार पिलानेसे कोढ मिटताहै (३९) इसकी कोमल कोंप-लोंका बैंगनके साथ शाक बनाके खातेहै (४०) इसके पत्तोंका बफारा देनेसे मोचकी और गिल्टियोंकी सूजन मिटजातीहैं (४१) गठियाकी सूजन मिटानेके लिये नीमके तेलका मर्दन करना चाहिये (४२) इसके पत्तोंको घीमे भून पीस आवश्य-कता होतो उनमें फिर घी मिलाके छीछडेदार घावोंपर और सडीहुई हड्डियोंपर लगातेहै (४३) नीमके पुराने वृक्षमेंसे जो दूधिया रस निकलताहै उसका सेवन करानेसे रुधिर शुद्ध होकर बल बढ़ताहै (४४) खोपरीपर रगड़ लगजानेसे जो घाव होजाताहै उसपर निंबोलीका तेल लगाना चाहिये (४५) नासूर और पीपवाले फोडोंपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे बड़ा लाभ होताहै (४६) नीमकी छालके काथके कुल्ले करनेसे या नीमका तेल लगानेसे मसूडोंके असाध्य रोग मिटतेहैं (४७) रात्रीमें नीमके नीचे सोनेसे ज्वर छूट जाताहै (४८) इसके पत्तोंकी भस्मको घीमें मिलाके उन चाठोंपर लगातेहै कि जो नीचेसे लाल रहतेहै और उनके ऊपर सफेद छिलकोंके कई पडत जमे रहतेहैं (४९) नीमके पत्तोंके काथसे धोनेसे छालोंकी जलन मिटजाती है (५०) इसका तेल लगानेसे या इसके काथमे धोनेसे कच्चे खुरंट उतर जातेहैं (५१) कच्चे फोडे पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे या तो वे जल्दी पकजातेहैं या उनकी सूजन बिखर जातीहै (५२) बैंगन या दूसरे शाकके साथ इसके पत्तोंको छोंकके या शाक बनाके खानेसे पेटके कीडे मरतेहैं (५३) कोढीके शरीर पर इसके तेलका मर्दन करानेसे बहुत उप-

कार होताहै (५४) इसका तेल लगानेसे दाह मिटतीहै (५५) इसके पत्तों को कपड़े और किताब आदिमें रखनेसे उनमें कीड़े नहीं लगतेहैं पत्तोंको बेर २ बदलते रहना चाहिये, क्योंकि इनमें कीडोंसे बचानेकी शक्ति कपूर जितनी नहींहै (५६) नीमका दूधिया रस नीममेंसे अपने आप निकलताहै या युक्ति करके निकालतेहैं । अपने आप निकलने वाला दूधिया रस महीन धार से निकलताहै या उसकी बूंदें २ गिरतीहैं यह रस ४ से ७ सप्ताह तक १ या ४ ठौरसे निकला करताहै यह स्वच्छ सफेद और पतला होताहै किसी २ नीममेंसे हरतीसरे चौथे वर्ष ३-४ बेर रस निकलके पीछे वह वृक्ष सूखजाताहै । जब नीमका मद निकलने वाला होताहै तब उसमें से एक प्रकारका शब्द होने लगताहै जब उसमेंसे मद बहना शुरू होताहै तब वह शब्द बन्ध होजाताहै (५७) मद निकालनेकी रीति—हरेएक वृक्षमेंसे दूधिया रस नहीं निकाला जासकताहै । नदी नाले या तालाबके कनारे जो वृक्ष अच्छे जवान और बड़े होतेहैं उन वृक्षोंकी एक साधारण मोटाईकी ताजी जडपरसे मिट्टी अलग करके उस जड़के बीचमें छेद करके उस ठौर नलिका लगाके अथवा उसकी गोलाईमेंसे आधी काटके उसके नीचे एक पात्र रख देतेहैं उसमें महीन धारसे रस आने लगताहै यह मदभी वैसाही गुणकारीहै जैसाकी अपने आप निकलने वालाहै इस रीतिसे बहुत कम मद निकलताहै अर्थात् २४ घंटोंमें २ से ६ बोतल तक निकलताहै (५८) नीमके इतने अंग औषधिके काममें आतेहैं जैसे नीमकी जड, पेड़की अंतरछाल कच्चेफल, तेल, बीज, पत्ते, पुष्प, गोंद और दूधयारस आदि । इसके पकेफलको मारवडीमें गुटका कहतेहैं इनकी गीली गिर खानेके काममें आतीहै (५९) नीमके तेलमें मधु मिला उसमें बत्ती भिगोकर कानमें रखनेसे कानका पूय बध होताहै (६०) इसके पत्तोंका बफारा देनेसे कानका मैल निकलके उसकी पीड़ा मिटजातीहै (६१) नीमके पत्तोंको सम्पुटमें रख कपड़मिट्टी लगाके अग्निमें रखदेवें, जब उनकी भस्म होजाय तब निकाल उस भस्मको नींबूके रसमें खरलकर नेत्राजन करनेसे खुजली और जलन आदि नेत्ररोग मिटतेहैं (६२) पत्तोंका रस निकाल पीछे तेलमें मिलाके नाकमें टपकानेसे मस्तकके कीड़े मरजातेहै (६३) नीमकी लकड़ीका दांतुन करनेसे दांतोंमें कीड़े नहीं पडतेहैं (६४) नेत्रपीडा मिटानेके लिये इसकी कोमल

कोपलोंका रस निकाल निवायाकर जिस ओर पीड़ा हो उसकी दूसरी ओर के कानमें डालना या दोनों नेत्रोंमें हो तो दोनों कानोंमें डालना चाहिये (६५) इसके पत्तोंका २ मासे खार खानेमे पथरी गलजाती है (६६) नकसीर बन्ध करनेकेलिये इसके पत्ते और अजवाइन दोनोंको महीन पीसके कनपटियों पर लेप करना चाहिये (६७) पत्तोंका रस नेत्र में लगानेसे चांफनीका गलना और दाह मिटतीहै (६८) २ तोले कोमल कोपलोंको पीस छानके १५ दिन तक पीनेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (६९) इसके फूल, फल और पत्ते, ये सब बराबर २ ले पीसके दो मासेसे लेना प्रारंभ करे, पीछे ६ मासे तक बढा लेना चाहिये इस रीतिसे ४० दिन तक लेनेसे सफेद कोढ़ मिटताहै (७०) इसकी ४ मासे छाल जोकूटकर २ तोले गुड़के साथ डेढ पाव पानीमें औटा आधपाव रखकर पिलानेसे बन्ध हुआ मासिकधर्म फिर होने लग जाताहै (७१) इसकी छालका क्वाथ पिलाने से सिकता और इक्षु प्रमेह मिटताहै (७२) छालका क्वाथ पिलानेसे शीतपित्त मिटताहै (७३) इसका शर्बत पिलानेसे तृपा मिटतीहै (७४) अत्यन्त तृपा को मिटानेके लिये इसके पत्तोंको मिट्टीमें मिला, उसका गोला बना, उसको आगमें लालकर पानीमें बुझाकर उस पानीको पिलाना चाहिये (७५) नीम के २१ पत्ते और २१ साबित कालीमिरचों की महीन वस्त्रमें पोटली बांध उस को आधसेर पानीमें डाल, औटा आधपाव रखकर दोनों समय ७ दिन तक पिलानेसे ज्वर छूटताहै (७६) जिस ज्वरमें दाह हो उसमें इसके कोमल पत्तों को नींबूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाह मिटतीहै और ज्वर छूटजाताहै (७७) इसके पत्तोंके रसके फेनका लेप करनेसे दाह मिटतीहै (७८) पत्तों का केवल रस अथवा उसमें मधु मिलाके पिलानेसे पेटके कृमि मिटतेहैं (७९) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (८०) इसके फलोंके तेलका मर्दन करनेसे पक्षाघात मिटताहै (८१) इसके पत्ते और लोद को पानीसे पीस, रस निकाल, गुनगुना कर नेत्रोंमें डालनेसे वातज, रक्तपित्तज, अभिष्यंद आदि कई प्रकार के नेत्र रोग मिटतेहै (८२) इसके पुष्पोंको छाया में सुखा उनमें बराबर कलमीशोरा मिला, पीसके अंजन करनेसे धुंध और फूली कटके नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (८३) इसके और बेरीके पत्तोंको पीसके शिरमें

लगा ४ घड़ी पीछे धो डालनेसे बाल लम्बे बढतेहैं (८४) इसकी अंतर छाल को पीस अद्धोंष्ण गाढ़ा २ लेप करनेसे जोडोंकी पीड़ा मिटतीहै (८५) इसके पत्तोंका खार लगानेसे कोढ, दाद और खुजली मिटतीहै (८६) इसके पत्तोंको दहीमें पीसके लगानेसे दाद मिटताहै (८७) इसके पत्तोंके कल्कमें घी मिलाके खानेसे शीतपित्त, उदर्द, रक्तपित्त, व्रण, विस्फोटक और कंडू आदि रोग मिटते हैं (८८) नीमके १ मासे तेलकी एक महीने तक नित्य नस्य लेनेसे और उन दिनों में केवल गायका दूध पीने से वली और पलित रोग मिटताहै (८९) नाकके रोगमें यह तेल सुंघाना चाहिये (९०) इसके रससे सिद्ध किये हुए घीका सेवन करनेसे पद्मनीकंटकरोग मिटताहै (९१) इसके रससे वमन करानेसे पद्मनीकण्टकरोग मिटताहै (९२) इसके बीजों की मींगीके जलभांगरेके रसकी ७ या २१ भावना देके उनका तेल निकाल कर उसकी नित्य नस्य लेनेसे और उन दिनोंमें दूध चावलोंकी खीरका भोजन करनेसे वली पलित रोग मिटताहै (९३) इसका रस घावमें डालनेसे उसके कीड़े मरजातेहैं (९४) जिस गांवके चारों ओर नीमके वृक्ष बहुत होवेहैं उस गांवमें ज्वरादिक कई रोग बहुत कम हुआ करते है।

——००——

संख्या (३०३)

(सं०) महानिम्बः, महोद्रेकः, कार्मुकः, केशमुष्टिः

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बकायण	बकायन	बकान्य	बकाणी निंब	घोड़ानिम	ध्रेक	पेदृमानु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पिरुम्मरं	बेट्टदबेउ			Melia Azedarach M sempervirens	The Persian Lilac Bead tree

स्थान—बकानके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं और अपने आप ऊगे हुएभी बहुत मिलते है।

पांहचान—यह प्राय ४० फुट ऊंचा होताहै। इसके पेडकी गुलाई

६—७ फुटकी होतीहै यह सीधी और छोटी होतीहै इसके ऊपर डालियां ब
फैली हुई होतीहैं और इसकी छाल चौथाई इंच मोटी होतीहै । इस वृ
छोटे भाग कुछ रूंएदार होतेहैं । इसकी सींकें ६ से १८ इंच लम्बी और
पर आमने सामने ३ से ५ या ७ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं । इसके मधुगंधी
लगतेहैं इसके फलकी मध्य रेखा आधेसे पौन इंच लम्बी होतीहै यह पके प
पीले रंगका होजाताहै इसमें ५ खाने और ५ बीज होतेहैं शीतकालमें इ
३–४ महीने तक बिलकुल पत्ते नहीं रहतेहैं फागुनसे बैशाख तक यह
पत्तोंसे सघनघन होजाताहै उस समय यह सुन्दर दीखने लगजाताहै । –
... फूलने फलनेका समय—फागुनसे बैशाख तक इसके पुष्प लगते
तेहैं वसंत ऋतुमें फल पकतेहैं जब तक इसके पत्ते नहीं आते तबतक फल ल
रहतेहैं । उनको बुलबुल आदि कोई जन्तु नहीं खातेहैं । इसके गोंद जैसा
भूरे रंगका चेपदार गोंद लगताहै जो दीखनेमें कथके गोंद जैसा होताहै इस
पत्तोंमेंसे एक प्रकारका नीला रंग निकाला जाताहै इसके बीजोंमेंसे नहीं
नेवाला तेल निकाला जाताहै जो नीमके तेलमें मिलता हुआ होताहै और
उसके गुणभी उससे मिलते हुए होतेहैं यह औषधिके प्रयोगमें बहुत कम आता
(प्रयोग—(१) बकायन शीतल, रूक्ष, कड़वी, ग्राही, कषेली, और
चरपरी है । इसकी जड़की छाल, फल, पुष्प और पत्ते उष्ण और रूक्ष
(...) जो तिल्ली और हृदय आदि यंत्र हैं उनके पहारकी ।
मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (३) स्नायुसम्बन्धी
पीड़ाको मिटानेके लिये इसके पुष्प और पत्तोंका पुल्टिस बांधाजाताहै (
इसके पत्तोंका रस पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (५) उसमें मिश्री
लानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (६) उसमें जोखार डालके पिलानेसे शर्क
मिटतीहै (७) अकलकरेका चूर्ण उस रसमें मिलाके पिलानेसे स्त्रियोंका
सिकधर्म शुद्ध होने लग जाताहै (८) इसके रसको गर्मकर लेप क
सर्दीकी सूजन मिटतीहै (९) इसका रस पिलानेसे वे सब उपद्रव
कि जिनसे सूजन पैदा होतीहै (१०) इसके पत्तोंका क्काथ स्त्रियोंके ।
रोगमें पिलाया जाताहै (११) अतिसार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका
पिलातेहैं (१२) इस क्काथमें सोंठ बुरकाके पिलानेसे पेटकी शूल

(१३) इसके पत्ते और छालका काथ पिलानेसे कोढ और गंडमाला मिट है, इन पर काथका लेप भी करना चाहिये (१४) इसके पुष्पोंका पुलि बांधनेसे घावोंके कीडे मरतेहैं (१५) इसके पुष्पोंको पीसके लेप करने फोड़े फुन्सी और त्वचाके खुजली आदि रोग मिटतेहैं (१६) इसके फलों विष होताहै तब भी ये कोढ और गडंमालाकी चिकित्सामें काम आतेहैं (१ इसके फलोंकी माला पहिरनेसे संक्रामक रोगोंका असर नहीं होताहै (१ इसके बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे गठिया मिटतीहै (१९) इसके बी को खुवाणीके साथ पीसके लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (२०) जब क एकाएक फैलनेवाला रोग पैदा होताहै उसको रोकनेके लिये दरवाजोंके अ वरांडोंके इसके फलोंकी माला बांध देतेहैं (२१) बकाणके वृक्षमें से भी ए प्रकारका दूधिया रस निकलताहै (२२) तिल्लीके ऊपर इसके गोंदका ले करना चाहिये (२३) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (२ इसका स्वाद कड़वा और उत्क्लेद करनेवालाहै (२५) इसकी १० तोले ता छालको सवा सेर पानीमें औटा २॥ पाव रखकर उसमें से सवा २ तोले तीसरे घंटे बच्चेको पिलाना चाहिये कि जबतक उसकी आंतों या आमाश पर स्पष्ट प्रभाव दिखलाई न देने लगे, या ७ दिन तक सांझ सबेरे इतनी मात्रा पिलाके पीछे कोई विरेचन देना, इससे किसी २ के कृमिनाशकपनेक प्रभाव कम होताहै (२६) इसके सूखे फलोंको सिरकेमें पीसके पिलाने पिटाट और चुरणे (कद्दूदाने) आदि कई प्रकारके कीडे पेटमेंसे निकल जाते या मरजातेहैं (२७) इनको सिरकेमें पीस लेप करनेसे त्वचाके कृमि सम्बन्धी रोग मिटतेहैं (२८) इसके फलकी गिरको खोपरेके तेलमें पीसक शिरके उन क्षतोंपर लगातेहैं कि जो बहुत उष्ण जल, घृत या तेलसे उत्पन्न हुए हों (२९) इसकी छालका शर्बत या द्रवसार फाल्गुन और चैत्रमें नहीं बनाना चाहिये, क्योंकि इन दिनोंमें इसका दूधिया रस वृक्षके ऊपर चढ़ा क रताहै इन महीनोंमें इसकी छालमें से निकाले हुए सार और जड़के काथसे या जड़के रससे बनाये हुए शर्बतमें मदकारी दोष रहतेहैं (३०) इसकी छाल पत्ते और फलोंकी अधिक मात्रा लेनेसे एक प्रकारका विष चढ जाताहै जिस से मनुष्य अचेत होके मर जाताहै (३१) इसके ६ से ८ तक बीज खिलाने

खाली उबाक, बांइटे और हैजे जैसे लक्षण होके मनुष्य कभी२ मर जाताहै(
गजरोग मिटानेके लिये इसके बीजोंको कडवे तेलमें जलाके लेप करना चा
(३३) इसकी दो तोले छाल २ सेर पानीमें औटा, तीन पाव पानी रख,
में थोडा गुड मिलाकर तीन दिन तक पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहै (३
इसकी छाल और सफेद कत्था, दोनों बराबर ले चूर्ण बनाके बुरकानेसे मुं
छाले मिटतेहैं (३५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिट
(३६ पेटपर एरडका तेल चुपड इसके पत्तोंको गर्मकर पेटपर बांधनेसे पे
पीड़ा मिटतीहै (३७) बकानके पावभर पत्तोंमें २ तोले नमक मिला
झड़बेरकी बराबर गोलियां बनाके खिलानेसे बवासीर मिटताहै (३८) बक
की मींगी और सोंफको पीस उसमें बराबर बूरा मिला दो मासेकी फकी दे
बवासीर मिटताहै (३९) इसकी छालको छायामें सुखा कूट बत्ती बन
योनीमें रखनेसे वह संकीर्ण होजातीहै (४०) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बन
नेत्रोंपर बांधनेसे पित्तसे पैदा हुआ अभिष्यंद मिटताहै (४१) इसकी
तोले कोमल कोंपलोंको घोट छानके पिलानेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधि
रुधिरका जाना बन्ध होजाताहै (४२) इसके एकसे ७ तक बीज बढा २
नित्य देनेसे नारू गल जाताहै (४३) इसके बीजोंको चांवलोंके पानीमें पी
घी मिलाके खानेसे बहुत समयका प्रमेह मिटताहै (४४) इसकी जड़की छा
का कल्क गृध्रसीको मिटाताहै (४५) इसके सारको पानीके साथ पीसके पि
नेसे गृध्रसी मिटतीहै ।

संख्या (२०४)

(रसं०) सुरभि निम्बः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मीठानीम	मीठानीम	मिठोलिम्बो	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	Murraya Koenigii Bergera K	The curry leaf tr

नेत्रके आसपास पतला २ लेप करनेसे नेत्र पीड़ा मिटतीहै (१२) नींबूका शर्बत पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै (१३) इसके रसमें आंवलोंको पीसकर बालोंमें मलनेसे उनका गिरना बन्ध हो जाताहै और लम्बे बढ जातेहैं (१४) प्रतिदिन दादको खुजलकर उसपर इसका रस लगानेसे दाद मिटजाताहै (१५) इसका रस गर्भाकी मद्राग्निको मिटाताहै (१६) इसका रस नेत्रमें लगानेसे कामला मिटताहै (१७) इसके शर्बतमें दुगुना पानी और लौंग मिरच डालके पीनेसे अरुचि मिटतीहै (१८) इसके रसमें हरे काचकी चूड़ी को महीन पीसके अंजन करनेसे फूली और जाला कटताहै (१९) इसका रस विच्छूके दंशपर टपकानेसे उसका विष उतरजाताहै (२०) इसका शर्बत रुधिरकी दाह और विदग्ध दोषोंको मिटाताहै (२१) इसके ३ छटांक रसका सेर भर बूरेमें शर्बतबनाके वायुकी वमन बंध करनेके लिये पिलाना चाहिये (२२) इसके रसमें बूरा मिलाके मस्तक पर लेप कर दो प्रहर पीछे धोडालनेसे खोरा मिटताहै (२३) इसका और प्याजका पोने दो तोला रस मिलाके १४ दिन तक पिलानेसे तिल्ली मिटतीहै परन्तु उनदिनोंमें दाल चांवल आदिका द्रव भोजन करना चाहिये (२४) इसके बीजोंकी ६ मासे मींगी और ८ मासे सैंधनमककी फक्की देनेसे विच्छूका विष उतरताहै (२५) नीबूके कईतरहके अचार बनाये जातेहैं और कईतरहके अचारोंमें इनके रसकी खटाई डालतेहैं ।

संख्या (३०६)

(सं०) करुणः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
करणो	कन्ना		एडलिंबू	करुना लेबुरगाछ		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Citrus Medica. Var 2 Lemonum C Afrantium Var Limtnum.	The lemon.

स्थान—कन्ना हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोया जाताहै कन्नेके छिलके को दबानेसे या भभके में अर्क खींचनेसे उसमेंसे जो एक प्रकारका तेल निकलताहै उसको Essence of lemon एसेन्स आफ लीमन कहतेहैं ॥

प्रयोग—(१) यह उष्णहै कफ, वायु आम और मेदके रोगोंको मिटाताहै कन्नेके तीन भाग विशेष करके काममें आतेहैं, एक तो छालका बाहिरका भाग, दूसरा-छालका-तेल और तीसरा पके हुए फलोंका रस (२) इसकी छाल पेटकी शूल और वादीको मिटातीहै (३) इसके शर्बतको जलमें मिलाके पीनेसे शीतलता हो जातीहै (४) निद्रालानेवाले तीक्ष्ण विषोंको उतारनेके लिये इसका रस पिलातेहैं (५) विषैले जीवोंके काटनेसे जो विष चढ जाताहै उसको उतारनेके लिये इसका अर्क पिलातेहैं (६) इसके रसमें कुनेन बुरकाके पिलानेसे पित्तज्वर और वारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (७) सायंकालको इसका ताजा रस पिलानेसे वह मंदाग्नि मिटतीहै कि जिसमें भोजन करनेके पीछे उल्टी होजाया करतीहै (८) इसके रसमें जोखार और मधु मिलाके पिलानेसे छातीकी पीडा, गृध्रसी, कटिशूल और कूले के जोड़की पीडा मिटतीहै (९) २॥ तोले नींबू के तिजाबमें १६ गुना पानी मिला उसमें कुछ बूंदें कन्नेके तेलकी डालके इसके रसकी ठौर काममें ला सकतेहैं (१०) कन्नेका रस जल्दी विगड जाताहै इसलिये इसके रसको तुरन्त काममें लेलेना चाहिये, इसको बहुत दिनों तक नहीं विगडने देनेकी सबसे उत्तम रीति यहहै कि कन्नेका रस निचोकर उसको कुछ देर तक पडा रहने देवें जब उसका जमजानेवाला पदार्थ अलग होजाय तो उसको कागजमें छान के काचकी शीशीमें नाली तक भर देवे और उसके ऊपर वादामका या दूसरा मीठा तेल तिरा देवे, अथवा बोतलोंको औटते हुए पानीमें १५ मिनट तक रखके फिर उनके काक लगाया जावे तो और भी उत्तम है, अथवा हल्के आंचसे इसका पानी उडाके रसको गाढा कर लेवे, या इसको ऐसी सर्दीमें रक्खे कि जिससे इसके पानी का भाग जम जावे और केवल अर्क रह जावे, इसका गुण पहिले से भी अधिक बलवान् हो जाताहै (११) इसकी जडकी छालका क्वाथ पिलाने से ज्वर छूटताहै (१२) इसके बीजोंकी फंकी देनेमें

कीडे मरतेहैं (१३) इसका रस और बारूद के लगानेसे खुजली मिटतीहै (१४) कच्चे का अचार बनाके खिलाने से तिल्ली कटती है ।

संख्या (३०७)

चकोत्रा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चकोतरा	चकोत्रा		पपनस		चकोतरा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Citrus decumana.	Paradise apple Thu shaddock Pumelo Pompelmo The forbidden fruit

स्थान—ये बंगाल दक्षिण हिन्दुस्थान और संयुक्त प्रदेश आदि देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ३०-४० फुट की होतीहै । इसके बडे पत्ते ६ से ८ इंच तक लंबे होतेहै इसके बडे और सफेद पुष्प लगतेहैं । चकोत्रा बहुत बडा और गोल होताहै, कभी २ पाच सेरसे दश सेर तक तोलमें होजाताहै इसका छिलका चिकना और थोडे पीले रंगका होताहै, चकोत्रे दो प्रकार के होतेहैं एककी गिर कुछ सफेद और दूसरेकी कुछ लाल होतीहै। इनकी गिर खट्टी होतीहै देशकाल और पृथ्वीके कारणसे चकोत्रे छोटे बड़े भी होजातेहैं इस वृक्षके बारहमहीने ही फल लगते रहतेहैं, पुष्प, कच्चे और पके फल, एक साथ लगे रहते है ॥

प्रयोग—(१) चकोत्रा शरीरको पुष्ट करने वाला और शीतलहै (२) इसकी छालमें शकर, खट्टा तिजाब और बहुतसा सुगंधित तेल होताहै (३) इसके पत्ते अपस्मार, विसूचिका और सूखी खांसीमें बहुत उपकारीहै ॥

संख्या (३०८)

(सं०) श्वेतानिर्गुण्डी, सिन्दुवारः, सुरसः, सिद्धकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मंभालू	संभालू	नगड्य नगोड	निर्गुडी	निमिन्दा-गाछ	सम्हालू	तेल्लनाविली

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वल्लेनाचिक्ष	बिळिलकि		पजनकिश्त	Justicia Gendarussa. G Vulgaris.	

स्थान—सम्भालुके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पहिचान—सम्भालू नीले और पिलास लिये हुए नीले पुष्पोंके भेदसे दो प्रकारकी होतीहै । यह रंगनके काममें आतीहै ॥

प्रयोग (१) सफेद निर्गुडी-कड़वी, उष्ण, रूक्ष, चरपरी, कपेली और अग्नि-वर्द्धकहै (२) इसकी जड बलवर्द्धक, ज्वर नाशक और सूखी खासीको मिटातीहै (३) इसके पत्ते सुगधयुक्त, चरपरे, बलवर्द्धक और कीडे मारनेवालेहै (४) बादी मिटानेवाली कई औषधियोंके इसके पत्तोंके रसकी भावना देके गोलियां बनातेहैं (५) इसके पत्तोके क्वाथपर पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे प्रतिश्यायका ज्वर, मस्तकका भारीपन और कम सुनना मिटताहै (६) मस्तकपीडा मिटानेके लिये इसके पत्तोंसे तकिया भरके मस्तकके नीचे रखना चाहिये (७) इसके पत्तोंके रसका घावपर लेप करनेसे उसमेंसे सडताहुआ पीप निकलना बन्ध होजाताहै और कीड़े मरजातेहैं (८) इसके पत्तोंके रसका तेल बनाकर लगानेसे हड्डीके जख्म और गंडमालाके फोडे मिटतेहैं (९) यह पीडा मिटानेवाली, मूत्रवर्द्धक और मासिकधर्मको शुद्ध करनेवाली है (१०) इसके बफ़ारेसे या इसके ओटाये हुए जलमें बैठा रखनेसे कमरके नीचेके भागकी बादीकी पीडा मिटतीहै (११) दूषित रुधिर आदि कहीं एकत्र होगये हों उनको बिखेरनेके लिये इसके पत्तोंको ओटाके बांधने चाहियें (१२) तेज गठियासे जोडों में पित्तशोथ होगया हो उस को मिटानेके लिये इसके पत्तोको ओटाके जबतक सूजन न मिटे तबतक दिन में दो तीन वेर बांधना चाहिये (१३) स्त्रियोंके बालक होने के पीछे आवश्यकता होतो इसके पत्तोंके क्वाथसे स्नान कराना चाहिये (१४) इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी जलके साथ देनेसे बारी से आनेवाला ज्वर

छूटताहै.(१५) इसके फल के चूर्णकी फक्की देनेसे स्नायु और मस्तक सम्बन्धी रोग मिटतेहै (१६) जिस स्त्रीको कष्टसे मासिकधर्म होताहो या बहुत कम होताहो उसका इसके बीजोंके चूर्णकी फक्की देनेसे मासिकधर्म ठीक होने लगजाताहै (१७) इसकी जड कड़वी और ज्वरमें हितकारीहै (१८) इसके पत्तोंके रसका लेप करनेसे त्वचाके रोग और सूजन मिटतीहै (१९) इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान करनेसे मस्तकपीडा और प्रतिश्याय मिटताहै (२०) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (२१) इसके पत्ते, ल्हसन, चावल और गुड इन सबको पीस गोली बनाके देनेसे गठिया मिटतीहै (२२) इसके पत्तोंको ओटाके बफारा देनेसे ज्वर, प्रतिश्याय और गठियाके रोग मिटतेहै (२३) इसके सूखे फलोंकी फक्की देनेसे कीडे मरतेहै (२४) इसके पत्तोंको आगपर तपाके बांधनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे ललाटकी पीडा मिटतीहै (२६) इसके पत्तोंको कूट टिकिया बनाके कनपटीपर बांधनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (२७) इसकी जड़ और पत्ते पसीना लानेवाले, मूत्र और बलबढाने वालेहै (२८) इसके पंचागके रससे तेल बनाके लगानेसे दुष्ट व्रण और नाडीव्रण मिटतेहै (२९) इसके पत्तोंका ताजा रस कानमें डालनेसे कानके कीडे मरजातेहै (३०) इसकी जड बालकके गलेमें लटकानेसे दांत सुगमतासे निकल आतेहै (३१) इसके पत्तोंके रससे तेल बना गुनगुना २ मल कर ऊपर इसीके पान बांधनेसे जोडोंकी पीड़ा मिटतीहै (३२) इसके बीजोंको दांत निकलनेके समय बालकके गलमें लटकानेसे दांत जल्दी निकलतेहैं (३३) इसके पत्तोंको गर्म करके बांधनेसे बद बिखर जातीहै (३४) इसके क्वाथमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे कफज्वर छूटताहै (३५) इसकी जडको पानीमें घिसके नस्य देनेसे गंडमाला मिटतीहै (३६) इसका रस लगानेसे कीडे मरजातेहैं (३७) पहिले थोड़ा २ घी तीन दिन तक पिलाके फिर इसका स्वरस पिलानेसे नारू मिटताहै (३८) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे उरुस्तम्भ और गृध्रसी मिटतीहै (३९) इसका सेक और लेप करनेसे वातव्याधि मिटतीहै (४०) इसको और मूसली कंदको चिगलनेसे जीभकी पीडा मिटतीहै (४१) निर्गुंडीको पीस कर नाभि, बस्ति और योनी पर लेप करनेसे सुखसे प्रसव हो जाताहै ।

संख्या (३०९)

(सं०) नीलनिर्गुंडी, नीलसिन्दुक., नीलपुष्पी, नीलिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
निर्गुंडी नेगड	नीलसम्हालू	नीळीनगडय	काळीनिर्गुंडी	नालनिशिन्दा	संभालू	नल्लवाविलि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
करुपुनाच्चि	करिनक्कि	अमलक असवद	पंजनकिश्त निर्योस	Vitex Negundo V. arborea	—

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बंगालसे सीलोन तक सब प्रान्तोंमें सब ठौर बाग और डूगरोंमें होतीहै।

पहिचान—इसका झाड २ से ४ फुट ऊंचा होताहै। इसका पेड सदैव हरा रहताहै, इसके पत्ते तूरके पत्तों जैसे होतेहै, एक एक डंठलपर पाच २ पत्ते होतेहै, जो लम्बे, ऊपरसे नीले और नीचेसे सफेद होतेहैं। इसके पत्ते और कोमल कोंपलोंको मलनेसे उनमें से तीव्रगंध आने लगतीहै, यह दो प्रकार की होतीहै एक सफेद पुष्पोंकी और दूसरी नीले पुष्पोंकी, फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहै।

प्रयोग—(१) नीली निर्गुंडी–तिक्त, रूक्ष, उष्ण, कपेली, चरपरी और सूक्ष्महै (२) इसके पत्ते और कोमल कोंपलोंका काथ पिलानेसे पुरानी गठिया मिटतीहै (३) इसके पंचागके काथसे ज्वरका आना बन्द होजाताहै (४) इसके पत्तोंसे तेल बनाके लगानेसे वे फुन्सिया मिटतीहैं कि जो शरीरमें किसी किसी ठौर बहुतसी पास २ हो जाया करतीहैं और बहुधा आपसमें मिल भी जातीहैं (५) पत्तोंका काथ पिलानेसे स्नायु सम्बन्धी मस्तकपीडा, पक्षाघात और अर्दित रोग मिटतेहैं (६) ताजे पत्तोंका स्वरस कानमें डालनेसे कानकी पीडा मिटतीहै (७) मस्तकके बायें भागमें पीडा होवे तो दहनी नकतोडीमें और दहने भागमें पीडा होवे तो बाई नकतोडीमें इसके स्वरसकी पाच २ बूंदे पांच २ घंटेके अंतरसे चार पांच बेर डालनी चाहिये (८) इसकी जड कमरमें बांधनेसे सब प्रकारके ज्वर छूटतेहैं (९) एक तोला निर्गुण्डी गायके मूत्रमें

पीसके पीनेसे श्वास, कास और शीतागवायु मिटतीहै (१०) एक तोला निर्गुंडी गौघृतके साथ खानेसे कफ, पित्त और वायु मिटतीहै (११) १४ दिन तक मीठे तेलके साथ इसका सेवन करनेसे ८४ प्रकारकी वायु मिटतीहै (१२) इसके पत्त पीसके दंशपर लगानेसे कुत्तेका विष उतरताहै ।

संख्या (३१०)

(सं०) नीलमणिः, सौरिरत्नं, नीलाश्मा, सुनीलकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नीलम	नीलमणी	निलम कालु नग	नीलमणि	नीलवर्णमनि	नीलम	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Saffirus.	Sapphire

नीलमके गुण (१)–यह कडवी और उष्ण होतीहै श्वास, कास, त्रिदोष, विषमज्वर और अर्शको मिटातीहै । वीर्य्य और अग्निको बढातीहै ।

संख्या (३११)

(सं०) नीली, काला, क्लीतकिका, रञ्जनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नील	नील	गळी	लघुनीली	नीलगाछ	नील	नीलिचेट्टु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
नीली	नीलीगिड्ड			Indigofera tinctoria	The indigo plant.

स्थान–यह पंजाबके दक्षिण और पूर्वके भागमें, बंगाल, सिन्ध, दक्षिण हिन्दुस्थान, और राजपूताना आदि कई देशोंमें बहुत बोई जातीहै ।

पहिचान—इसका गुल्म छोटा होताहै इसकी ऊंचाई प्रायः दो ढाई फुट होतीहै इसकी ३, ४ इंच लम्बी, सीधी; सींकपर ४–६ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं जो सूखनेपर काले पड़जातेहैं। कुछ नीले गुलाबी रंगके २०–२० पुष्पोंकी मंजरियां लगतीहैं। एक डेढ़ इंच लम्बी, मोटी, कुछ गोल और सीधी फलियां लगतीहैं। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) नील–रेचक, कड़वी, उष्ण, चरपरी, और सारकहै। (२) इसका सत अपस्मार और स्नायु सम्बन्धी उपद्रवमें दिया जाताहै (३) खासीमें इसको मधुके साथ चटातेहै (४) यह घावोंके मरहममें मिलाया जाताहै (५) मस्तिष्कके पुराने रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाताहै (६) धातुओंके विषको उतारनेके लिये यह एक मुख्य उपायहै (७) नीलके पत्तोंका लेप करनेसे बाल बढ़तेहै (८) पेटके ऊपर इसका लेप करनेसे अफारा और मूत्राघात मिटताहै (९) अग्निसे या और किसी प्रकारसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये इसका लेप करतेहैं (१०) संखियेका विष उतारनेके लिये इसकी जड़का क्वाथ पिलातेहैं (११) इसके ताजे पत्तोंके रससे तेल बनाकर लगानेसे अर्श मिटताहै (१२) इसकी जड़को कानमें बांधनेसे सब प्रकारकी ज्वर छूटजातीहै।

संख्या (३१२).

(सं०) पटोलः अमृतफलं, पाण्डुफलः, बीजगर्भः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पटोल	परवल	कड़वा पटोल	कडू पडवल	पटोल	परवल	चेति पोटली

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कोम्बुपुडल	कैपडल			Trichosanthes cucumerina. T. Dioica	

स्थान—परवलकी वेलें हिंदुस्थान और सीलोनमें कई ठौर होतीहैं।

प्रयोग—(१) परवल–कड़वा, चरपरा, उष्ण, भेदक, पाचक, अग्निवर्द्धक ज्वरनाशक और सारकहै (२) इसकी कोमल छोटी डालियें और सूखे हुए फलके छिलके बहुत कड़वे और सारक होतेहैं (३) ये आमा

शय की पीड़ा मिटातेहैं। इनका पांच पांच तोले काथ दिनमें दोवेर देना चाहिये (४) आमाशयके उपद्रवोंको मिटानेकेलिये इसके बीजोंका प्रयोग कियाजाताहै (५) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं (६) चिरायतेके अर्कके साथ इसके बीजोंकी फकी देनेसे ज्वर छूट जाताहै (७) इसकी कोमल टहनिया और फलके सूखे छिलकेको सूरेके साथ ओटाके पिलानेसे पाचन शक्ति बढ़तीहै (८) इसके पत्तोंका अर्क वामकहै (९) इसकी जड़ रेचकहै (१०) इसकी डंडीका काथ पिलानेसे सूखी खासी तर होजातीहै (११) इसके पंचांग, सोंठ और चिरायतेको ओटा मधु मिलाके पिलानेसे ज्वर छूटताहै (१२) यह हृदयका बल बढ़ाताहै (१३) इसके पत्तोंको ओटा मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होताहै (१४) यकृत्या सब शरीरपर इसके पत्तोंके अर्कका मर्दन करनेसे निरन्तर रहनेवाला ज्वर छूट जाताहै (१५) इसके पत्ते और फलके रसका मर्दन करनेसे यकृत्में जमा हुआ रुधिर बिखर जाताहै (१६) इनके रसका ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटतीहै (१७) इसके पके हुए फलोंका अचार बनाया जाताहै। यह बहुत कड़वा होताहै इसलिये उसको अधिक नैरोग्यकारी मानतेहै (१८) इसका स्वरस लगानेसे इन्द्रलुप्त मिटताहै (१९ पटोल नीमकी छाल और मैनफलका काथ बना उसमें मधु और सैंधानमक मिलाके पिलानेसे वमन होके अम्लपित्त मिटताहै (२०) इसके पत्तों का यूप बनाके पिलानेसे पित्त और कफज्वर छूटताहै (२१) इसके फलों के यूपसे वातके रोग मिटतेहै (२२) मलहटीके साथ इसका काथ बनाके गुदाको धानेसे अतिसार मिटताहै (२३) इसके कल्कसे इसीकी बराबर घी बनाके सेवन करनेसे कफपित्तकी वमन बन्द होतीहै (२४) पटोल और सोंठका कल्क बना उसमें बराबर घी मिला, घी सिद्ध करके सेवन करनेसे कफ और पित्तकी वमन मिटतीहै (२५) पटोल और धनियेंका यूप बनाके पिलानेसे पित्त कफज्वर छूटताहै (२६ पटोल और अदरकका काथ पिलानेसे पित्त और कफज्वर छूटताहै।

संख्या (३१३)

(सं०) पटोलिका, स्वादुपटोली, ज्योत्स्ना, जाली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
परवळ	मीठापटोल	मीठा पटोळ	पड़वली	स्वादुपटोल	पटोली	कोम्मुपोट्ल

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कोम्बुपुडल	पडवल			Trichosanthes dioica	

स्थान—परवलकी वेल उत्तर हिन्दुस्थानमें पंजाबसे आसाम और पूर्वी बंगाल तक होतीहै। इसके कच्चे फलका रंग हरा और पकनेपर पीला या नारंजी हो जाताहै।

प्रयोग—(१) मीठापरवल–मधुर, रोचक, ज्वरनाशक, पौष्टिक, दीपन और पाचनहै (२) इसके पत्ते और धनियेंका काथ पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै। यह काथ सारकहै (३) इसकी जड बहुत रेचकहै (४) इसकी जडका काथ पिलानेसे जलंधर मिटताहै (५) इसके अंकुरोंका काथ बलवर्द्धक और ज्वरनाशकहै (६) इसके कच्चे फलोंका ताजा रस ठंढा और सारकहै (७) रुधिरशुद्ध करनेवाली औषधियोंके साथ इसके कच्चे फलका ताजा रस दिया जाताहै (८) जिस जगहके वाल उडगये हो वहां इसके पत्तोंका ताजा रस लगाना चाहिये (९) इसकी जडके कंदका भाग तीव्र विरेचकहै (१०) इसकी वेल कडवी और निरोगतादायकहै (११) इसके फलका सेवन करनेसे कोढ मिटताहै (१२) इसके पत्तोंको आटेमें लपट घी में तलकर खानेसे बल बढताहै (१३) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटाने के लिये इसके फलोंका शाक और अचार खिलाना चाहिये। इसके फलों का शाक और अचार बहुत अच्छा बनताहै।

———०० ———

संख्या (२१४)

(सं०) पत्तंग, कुचन्दनं, पट्टरंजनं, पत्रांगम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पतग	पतग	पतग	पतग	बक्रमकाष्ट	बकम	सेपगानु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शुम्गर	पतग			Cae alpinia sappan	Sappan or sampeen wood

स्थान—पतङ्ग के वृक्ष मध्य हिन्दुस्थानमें बोये जातेहैं। और पूर्वी और पश्चिमी प्रायद्वीपमें मिलतेहै।

पहिचान—इसकी लकडी, फलियों और छालमें से लाल रङ्ग निकाला जाताहै। इसकी जड़में से पीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग-(१) इसकी लकड़ीका काथ पिलानेसे मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै (२) पेटके भीतरकी सूजनको मिटानेके लिये इसका काथ पिलातेहैं और घिसके ऊपर भी लेपकरतेहै (३) इसका हिम या फांट पिलाने से रुधिर शुद्ध होताहै (४) अतिसार और आमातिसार मिटाने के लिये इसके काथ पर अतीसका चूर्ण बुरकाके पिलातेहैं (५) शकर और मधुके साथ इसका लेपकरनेसे पित्तका मुखरोग मिटताहै (६) यह तिक्त, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर और कड़वा होताहै (७) वातपित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र, कफकी पथरी, रुधिरविकार, भूतबाधा और व्रण को मिटाताहै (८) शरीरके रंगको सुधारताहै। इसमें उत्तम सुगंध होतीहै।

संख्या (३१५)

(सं०) पद्मकं, केदारजं, पद्मकाष्ठं, शीतवीर्यं।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पद्माक(ख)	पद्माक ख)	पद्मकाष्ट	पद्मकाष्ट	पद्मकाष्ठ	पद्माख	पद्मपुचेवा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	पद्मक			Prunus Puddum cerasoides	The wild cherry of the Himalaya.

स्थान—पद्माकके वृक्ष हिमालयमें गढवालसे सिकम और भूटान तक होतेहै।

पहिचान—जल, वायु और पृथ्वीके कारणसे यह वृक्ष कहीं साधारण उचाई का और कहीं बड़ा होताहै, वसंतऋतुमें इसके पत्ते गिर जातेहैं, इस वृक्षके एक प्रकार का गोंद लगताहै, इसके बीजोंमें से कड़वे बादाम जैसा तेल निकलताहै।

फूलने फलनेका समय—आश्विन और कार्तिकमें इसके पुष्प लगते है और वसंतऋतुमें इसके छोटे फल लगतेहै जिनमें पीली, थोडी नारंजी या कुछ लाल गिर निकलतीहै।

प्रयोग—(१) पथरी और मूत्रके साथ जो चमकतीहुई रेत निकला करतीहै उसको मिटानेकेलिये इसकी गिर काममें लाई जातीहै (२) पद्माख शीतल, कषेला, कड़वा, पचनेमें हल्का और वातलहै, विसर्प, दाह, विस्फोटक कुष्ठ, कफ, रक्तपित्त, वमन, अरुचि, तृषा, व्रण, मोह और भ्रमको मिटाताहै और गर्भ स्थापन करताहै।



संख्या (३१६)

(सं०) पनसः, कंटकिफलः, अपुष्पफलदः, स्थूलकंटफलः।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कटहल	कटहर	फणस	फणस	कॉटोल	कटहल	पनसचट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पेलाप्पळ	हलसुमर			Artocarpus integrifolia.	The jack fruit tree

स्थान—कटहरके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं, इसके वृक्ष सह्याद्रिके जंगलोंमें बोयेहुए और विन बोयेहुए दोनोंही प्रकारके मिलतेहै।

पहिचान—इसका वृक्ष ४०–५० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेड़ छोटी खड़ी और मोटी होतीहै, इसकी छाल बहुत मोटी और उसपर गहरी दरारें होतीहैं। इसकी नई डालियोंके कड़े रूंए होतेहै इसके पत्ते ऊपरसे चिकन और नीचेसे खरदरे होतेहै, इसका फल बड़ा, कुछ लम्बा और गिरदार होताहै,

सकी लम्बाई एकसे डेढ फुट तक और मध्य रेखा ६ से ८ इंच तक लम्बी हो- ती है इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै वह पानीमें गल जाताहै, इसकी लक- डीके चूरेको ओटानेसे पीला रंग निकलताहै।

फूलने फलनेका समय—मृगशिरसे माघतक इसके पुष्प लगतेहैं वैशाख से अषाढ तक इसके फल लगतेहैं।

प्रयोग—(१) यह शीतल, वातल, कषेला, पचनेमें भारी, रोचक, मधुर, बल और वीर्यवर्द्धक, हृद्य, ग्राही और पिच्छलहै। (२) पेशीकी सूजन को जल्दी बखेरनेके लिये इसके पत्तोंका अर्क लगातेहैं (३) इसके कोमल पत्तों को पीसके त्वचाके रोगोंपर लेप करतेहैं (४) इसकी जडके चूर्णकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (५) इसका कच्चा फल ग्राही और पका फल सारकहै। यह शरीरको पुष्ट करनेवाला होने पर भी कठिनतासे पचताहै (६) गाठको जल्दी पकानेके लिये उसपर इसके पत्तोंका लेप करतेहैं (७) इसकी जडको घोटा छानके नाकमें टपकानेसे मस्तक पीडा मिटतीहै (८) कठेल पीसके जल के साथ पिलानेसे वमन होकर सापका विष उतरजाताहै (९) कठेलका चूर्ण प्रतिदिन एक २ मासा बढा २ के लेनेसे विरेच और वमन होकर उपदंश, मिटताहै।

संख्या (३१७)

(सं०) परूषः, परूषकः, पवनोम्बुजम्, मृदुफलः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
फालसा	फालसे	फालसा	फालसा	फलसा	फालसा	चिट्टीदु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	बेट्टदादोगलि			Grewia Asiatica G. Subeinaequalis.	

स्थान—फालसेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई २५ फुट होतीहै, इसकी छोटी पेदडकी गुलाई ३-४ फुटकी होतीहै इसकी छाल एक तिहाई इंच मोटी, गहरे भूरे रंगकी

और साफ होतीहै उसमें खड़ी दरारें होतीहैं इसके पत्ते २ से ७ इंच लम्बे प्रायः उतनेही चौड़े होतेहैं। इसके ३ से ५ तक पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं इसके फल पकनेके पीछे गहरे भूरे रंगके होजातेहैं। फाल्गुनके अन्त तक इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं।

फूलने फलनेका समय—माघ,फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं और वैशाख जेठमें फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) फालसे खट्टे, कपेले, पचनेमें हल्के, उष्ण, मधुर और पित्तकारकहैं (२) इसका शर्बत पीनेसे दाह मिटतीहै (३) अजवानकी फकी देकर ऊपर फालसेका उष्णरस पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (४) इसके पत्तोंको पकने वाले फोड़ोंपर बाधना चाहिये (५) औषधियोंकी चरपराहट मिटानेकेलिये इसकी छालका हिम पिलाना चाहिये (६) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे गठिया मिटतीहै (७) इसकी १४ मासे जड़को जोकूट कर पावभर पानीमें रातभर भिगो प्रातःकाल मल छानकर ७ दिन तक पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (८) इसकी जड़को पीसके नाभि वस्ति और भगपर लेप करनेसे मूढगर्भ निकल जाताहै (९) काले रंगके मीठे फालसेके रसमें गुलाब जल और दुगुना बूरा मिला शर्बत बनाके पिलानेसे वादीकी वमन, रुधिरविकार और उदरकी निर्बलता मिटतीहै (१०) पके हुए फालसे, मीठे, रूक्ष, शीतल, रोचक, विष्टम्भी, हृद्य, और बृंहणहै।

संख्या (३१८)

(सं०) पर्पटः, पित्तारिः, तृष्णारिः, क्षेत्रपर्पटी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पजाबी	तैलङ्गी
पित्तपापड़ो	पित्तपापड़ा	पीतपापड़ो	पित्तपापड़ा	क्षेतपापड़ा	पित्तपापड़ा	पर्पाटकमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पर्पाटकं	पर्पाटक		शाहतराह	Oldenlandria Corymbosa, O. biflora.	

स्थान—पित्तपापड़ा हिन्दुस्थानमें सब ओर होताहै।

पहिचान—इसका क्षुप दो प्रकारका होताहै एकके नीले पुष्प और दूसरे के लाल पुष्प लगतेहैं। लाल पुष्पके पित्तपापड़ेमें गुण अधिक होताहै।

प्रयोग—(१) पित्तज्वरको मिटानेकेलिये पित्तपापड़ेका क्वाथ पिलाना चाहिये (२) ज्वर मिटानेवाले कई क्वाथोंकी औषधियोंमें पित्तपापड़ा मिलाया जाताहै (३) कामलारोगमें पित्तपापड़ेका फांट पिलातेहैं (४) इसके पत्तोंके रसका लेप करनेसे हथेली और पगतलीकी दाह मिटतीहै (५) इनके रसमें दूध और शक्कर मिलाके पिलानेसे पाकस्थलीकी दाह मिटतीहै (६) दूषित जल वायु पृथ्वी आदिके कारणसे जो ज्वर होताहै उसको मिटानेके लिये पित्तपापड़ा, कटेली और गिलोयका क्वाथ पिलाना चाहिये (७) पित्तपापड़े और वायविडंगको औटाके पिलानेसे कीड़े मरतेहैं (८) धनिये और पित्तपापड़ेका क्वाथ पिलानेसे जीर्णज्वर छूटताहै (९) इसका अवलेह बनाके चटानेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (१०) इसका अर्क पिलानेसे खुजली मिटतीहै। (११) इसका क्वाथ पिलानेसे पित्तकी वमन बन्ध होतीहै (१२) इसके क्वाथ में मधु मिलाके पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (१३) पित्तपापड़ा शीतल, तिक्त, वातल, लघु और पाकमें चरपरा है पित्त, कफ, रक्तदाह, अरुचि ज्वर, मद, और ग्लानिको मिटाताहै।

संख्या (११९)

(सं०) पलाण्डु, नीचभोज्य, सुकन्दक, यवनेष्टः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कांदो	प्याज़	डुगळी	कादा	पेंयाज	गंडा	उल्लिगड्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेंगायं	ईरुल्लि	बसल	प्याज	Allium Cepa.	Onion

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सबठौर बोयाजाताहै परन्तु बड़े शहरोंके आस पास बहुत बोया जाताहै। यह सफेद और लालके भेदसे दो प्रकारकाहोताहै।

प्रयोग—(१) यह शीतल, स्निग्ध, अग्निदीपक, पचनेमें भारी, चरपरा, मधुर, कुछ उष्ण, पित्तल, वृष्य और बलकारक है। विंपलकीड़के दंश पर इसका अर्क लगानेसे खुजली और दाह मिटतीहै (२) कादेके बीचका भाग उष्ण करके कानमें रखनेसे कानकी पीड़ा मिटजातीहै (३) ताजे कादेका अर्क निकाल उष्णकर कानमें डालनेस कानकी पीड़ा मिटतीहै (४) कांदे को औटानेसे उड़नेवाला चरपरा तेल निकलताहै (५) बिना समयमें रुका-हुआ मासिकधर्म कच्चा कादा खानेसे फिर होने लगजाताहै (६) इसकी तेज गधसे सर्प आदि विपैल जन्तु पास नहीं आतेहैं (७) कादेको कूटके सुंघानेसे अचेतपन और स्त्रियोंके आवेशके रोगका वेग मिटाताहै (८) कांदेका पीसके बिच्छूके दंश पर लेप करनेसे विष उतरताहै (९) त्वचा सम्बन्धी रोगों पर इसका लेप करनेसे दाह और खुजली मिटतीहै (१०) क्षयरोगमें कफ घटाने के लिये इसका रस पिलातेहैं (११) इसको सिरकेके साथ पीसके चटानेसे गलेका रोग मिटताहै (१२) इसका क्वाथ पिलानेसे कफ मिटताहै (१३) कादेका रस और राईका तेल बराबर मिलाकर मर्दन करनेसे गठियाकी पीड़ा मिटतीहै (१४) कांदेसे पाचन शक्ति बढ़तीहै (१५) कांदेके रसमें घी मिलाके पिलानेसे पुरुषार्थ बढताहै (१६) यह दूसरे पदार्थकी दुर्गंधको मि-टाताहै (१७) यह हवाके उपद्रवोंको मिटाताहै (१८) विसूचिका या ऐसे शीघ्र फैलनेवाले रोगोंके उपद्रवोंसे बचनेके लिये कादेको पासमें रखना चा-हिये और घरके दर्वाजेमें लटका रखना चाहिये (१९) मूत्रवृद्धि करनेके लिये कच्चे कादेका रस पिलाना चाहिये (२०) इसको सिरकेके साथ पका के खिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (२१) बावले कुत्तेके काटनेसे जो घाव हो-जाताहै उस घाव पर ताजे कादेका अर्क लगाना चाहिये और उसको कादेका रस पिलानेसे जल्दी आराम होनेकी सूरत होजातीहै (२२) कादे खानेवालेके शीतादरोग नहीं होताहै (२३) इसके आधपाव से पावभर रसमें ५ तोले शक्कर मिलाके दिनमें एक बेर पिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (२४) मझोली मोटाईका एक कादा दो तीन कालीमिरचके साथ दिनमें दो बेर खानेसे दुष्ट वायु आदिसे पैदा हुआ ज्वर छूटजाताहै (२५) कादेका क्वाथ पिलानेसे

मूत्रकी दाह और पीड़ा मिटतीहै (२६) कांदेको काट उसके कटेहुए भागपर बुझाया हुआ चूना लगाकर विच्छूके दंशपर रगड़ने से विष तुरन्त उतरताहै (२७) कांदेके अर्कका लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२८) कच्चा कांदा खानेसे नींद आतीहै (२९) निर्बलतासे अचेत होनेकी दशामें चैतन्य करनेके लिये कांदेका रस नाककी नथनीके द्वार लगाना चाहिये (३०) कांदे को किसी बरतनमें भरकर फिर उसका मुंह ऐसा मजबूत बन्द करे कि उसमें हवा न आनेजाने पावे, फिर उस बर्तनको जहां गाय बंधती बैठतीहो वहां चार महीनेतक गडा रखकर पीछे उसको निकाल उसमेंसे बलाग्निके अनुसार एक कांदा खिलानेसे पुरुषार्थ बहुत बढ़ताहै (३१) एक कांदेमें आधरती अफीम रख उसको भूभलमें सेककर खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (३२) मझोली मोटाईके तीन कांदे और एक तोले इम्ली के पत्तोंको पीस गोली बनाके खिलानेसे विरेचन लगताहै (३३) कांदेके ताजे रसको शरीरपर मर्दन करनेसे लूका असर तुरन्त मिटताहै (३४) बच्चेको कांदेकी माला बनाके छातीतक पहिरानेसे लूका असर नहीं होताहै (३५) कांदेको सेक उसका अर्क निकालके पिलानेसे बच्चेके पेटका दर्द मिटताहै (३६) इसका तेल उत्तेजक, मूत्रवर्द्धक और कफानिःसारकहै (३७) ज्वर, जलधर, प्रतिश्याय और पुरानी खांसीमें कांदेका प्रयोग उपकारीहै । ३८ । इसके रसमें हींग और कालानमक डालके पिलानेसे शूल और अफारा मिटताहै (३९) इसका रस सुंघानेसे नकसीर बन्ध होतीहै (४०) कांदा और कलोंजी समान भागले चिलममें भर उनका धुआं पीकर मुंहसे लाल टपका देनेसे मसूडोंकी सूजन और दंतपीडा मिटतीहै (४१) कांदेका रस कानमें डालनेसे कानके कीड़े मरतेहैं (४२) कांदेका रस नेत्रमें लगानेसे नेत्रपीडा मिटतीहै (४३) कांदेके रसका मर्दन करनसे गंज मिटतीहै (४४) कांदेको बालकके मूत्रमें पीस तेलमें तलकर बद पर बांधनेसे बद बैठ जातीहै (४५) कांदा खानेसे सर्पका विष उतरताहै (४६) कांदेको शहदमें मिलाके लगानेसे घाव नहीं भरने पाताहै (४७) कांदा और लसणको पीसके लगानेसे कनखजूरेका विष उतरताहै (४८) कांदेके रसमें मधु मिलाके अंजन करनेसे नेत्रपीडा नजला आदि रोग मिटतेहै और ज्योति बढतीहै (४९) कांदेका जीरा मलनेसे विच्छूका विष उतरताहै (५०)

तिल्ली वालेके गलेमें काढा लटकानेसे उसका प्रकोप कम हो जाताहै। (५१७) इसके बीजोंमेंसे सफेद स्वच्छ तेल निकलताहै। प्याज-यूरोप और हिन्दुस्थान वालोंके खानेके काममें आताहै।

संख्या (३२०)

(सं०) पलाशः, किंशुकः, ब्रह्मपादपः, याज्ञिकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
छिंवरो	ढाक टेसू	खाखरो	पळस(स)	पलासगाछ	पलाश	मोदुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पैलाश	मुत्तुगदगिड़			Butea frondosa.	Bastard teak Bengal kino Butea gum Doury branch Butea.

स्थान—ढाकके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष १० वर्षसे अधिक नहीं जीताहै। इसकी ऊंचाई प्रायः ४०, ५० फुट तककी होतीहै। इसकी पेड़ मुडीहुई और बहुधा पेडौल और गुलाईमें ६ से ८ और कभी २ दश से बारह फुट की होजातीहै। इसके थोड़ी मुडीहुई शाखे लगतीहैं, इसकी छाल आधेसे एक इंच मोटी थोड़ी भूरी और खरदरी होतीहै, इसके नवीन भाग रुएंदार होतेहैं। इसके एक एक डंडीपर तीन २ पत्ते लगतेहैं जिनमें नीचका पत्ता प्राय गोल और आसपासके दोनों पत्ते कुछ लम्बे होतेहैं। इसके पुष्प लाल कुछ पीले और अन्तमें कुछ काले होतेहैं प्रायः आगेज लम्बी डंडीपर पुष्पोंकी छुड लगीरहतीहैं और इनके गिरजानेके पीछे लम्बी चिपटी और पतली फलियां लगतीहैं इसके बीज पतले चिपटे और प्रायः गोल होतेहैं उनमें स्वाद और सुगन्ध बहुत कम होतीहै। इसके पुराने पत्ते पोष और माघमें गिरजातेहैं, चैत्र, वैशाखमें नवीन पत्ते आजातेहैं।

फूलने फलने का समय—नवीन पत्ते आनेके पहिलेही नारंगी रंगके पुष्प निकलने लगतेहैं। जेठ और असाढमें इसकी फलियां पकतीहैं। छुटिया नाग-

पुर, मध्य हिन्दुस्थान, दक्खन, बरोदा और गुजरात आदि देशोंमें छिद्रके एक प्रकारका लाल गोंद लगताहै उसको चुनिया, चूनी, खाखरेका० ढाकका या पलाशका गोंद और कमरकस कहतेहैं, इसके पुष्पोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै। इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) यह कषेला, उष्ण, दीपन, वृष्य, सारक, कड़वा, चरपरा स्निग्ध और ग्राहीहै (२) इसके गोंदकी ५ रतीसे १५ रती तककी फकी देने से अतिसार मिटताहै। इसमें कुछ दालचीनी मिला देनेसे यह अधिक गुण करताहै (३) चूनी गोंद, दालचीनी और अफीमकी गोली बनाके खिलाने से अतिसार तुरन्त मिटताहै (४) इसका ताजा रस पिलानेसे राजयक्ष्मा मिटताहै (५) इसके ताजे रसमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे मुख आदिसे रुधिरका निकलना बंध होताहै (६) इस रसके लगानेसे गलेके घाव मिटतेहै (७) फोड़ोंपर इसका ताजा रस लगाया जाताहै (८) इसका ताजा रस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (९) इसके रसमें सोंठ बुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१०) ज्वरातिसार मिटानेकेलिये इसका रस पिलातेहैं (११) चूनीगोंद, लोद और अफीमका लेप करनेसे आंखका अर्मरोग और मैलापन मिटताहै (१२) इसके बीजोंको पानीमें भिगो छिलका उतार उनकी गिरको सुखा पीस कपड़ छानकर सवा मासेकी मात्रा दिनमें तीन बेर लगातार तीन दिनतक देकर चौथे दिन एरंडका तेल पिलाना चाहिये, इस प्रयोगसे आंतोंके लम्बे कीड़े निकल जातेहैं, जो इनकी गिरकी फकीसे विरेचन होजावे, तो कीड़े नहीं निकलतेहैं। इससे कभी वमन और वृक्कमें जलन होजातीहै (१३) बीजोंकी गिरको पीस मधुके साथ चटानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं और मृदुरेचन भी होताहै (१४) इसके बीजोंको नीबूके रसके साथ पीसके मर्दन करनेसे पांव मिटतीहै (१५) इनको नींबूके रसके साथ पीसके दाद पर लेप करतेहैं (१६) इसके पुष्पोंका पुल्टिस बनाके बांधनेसे शोथ विखर जातीहै (१७) पुष्पोंको ओटाके नलोंपर सेक करनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै (१८) इनको ओटाके नल और कमर पर बाधनेसे मासिकधर्म खुलासा होने लगताहै (१९) इसके पुष्पोंको ओटाके गोशेकी सूजन पर बांधतेहैं (२०) इसके पत्तोंको गर्म करके बांधनेसे फोड़े फुन्सी बैठ

जातेहैं (२१) इसकी छाल और सोंठको श्रोटा छानकर पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै (२२) अफीमके सतको सफेद करनेके लिये ढाकका कोयला कामगें आताहै (२३) इसके बीजोंकी गिरकी दो मासेसे चार मासे तक की मात्रा कीडे निकालनेके लिये दी जातीहै । परन्तु चार वर्ष तकके बच्चेको दो रत्ती तकही देनी चाहिये (२४) इसका गाढ़ा कियाहुआ रस अच्छा ग्राहीहै और इसके गोंदकी ठौर काममें आसकता है परन्तु इसकी मात्रा उससे कुछ अधिक अर्थात् एक मासेसे २॥ मासे तक देनी पड़तीहै (२५) इसके पत्तों का पुल्टिस बाधनेसे गांठ (जैसे अर्श और बद) बिखर जातीहै (२६) इसके गोंदकी २ मासेसे ४ मासे तककी फक्की देनेसे आमाशय और मूत्राशयमें से रुधिरका निकलना बन्ध होताहै (२७) इसके गोंदको पानीमें गलाके लेप करनेसे चोटकी और मुखके ऊपरकी असाध्य पित्तशोथ मिटतीहै (२८) इस की जड़की अन्तरछाल को दूधके साथ पिलानेसे पुरुपार्थ बढ़ताहै (२९) इसके बीजोंको पीसकर जलके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (३०) इसके पुष्पोंका पुल्टिस बांधनेसे मूत्राशयके रोग मिटतेहै (३१) इसके गोंदकी फक्की देनेसे मंदज्वर छूटताहै (३२) इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे अफारा और शूल मिटतीहै (३३) पुष्पोंको पानीमें ओटाके नाभिके नीचे तरेरा देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (३४) इसके पुष्पोंको ओटाके अंडकोषकी सूजनपर तरेरा देनेसे और इनका फोक बाधनेसे उनकी सूजन उतर जातीहै (३५) इसकी जड़को पानीमें घिसकर वेगके समय नाकमें टपकानेसे मिरगी दूर होतीहै (३६) इसकी सूखीहुई कोंपलें, गोंद छाल और पुष्पोंको कूट छान उसमें बराबर बूरा मिलाके ९ मासे की फक्की दूधके साथ नित्य लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (३७) इसकी जड़की छालके ७ मासे चूर्णकी पानीके साथ फक्की देनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (३८) इसकी कलियों को छायामें सुखा चूर्ण बना उसमें बराबर शक्कर मिला २ से १० मासे तककी फक्की १४ दिन तक देनेसे भग संकोचन होतीहै (३९) इसके बीजोंको पीसकर बिच्छूके दंशपर लगानेसे उसका विष उतरताहै (४०) इसके कोमल पत्तोंको नींबूके रसमें पीसके लेप करनेसे दाहज्वर शान्त होताहै (४१) इसके बीजोंके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे कृमि नष्ट होजातेहै (४२) इसके बीजोंका कल्क तक्रमें मिलाके पीने

से कीड़े मरतेहै (४३) इसके २ रत्ती बीजोंको थूहरके दूधके साथ पीसके खानेसे पेटके कृमि मरके निकल जातेहै (४४) इसके पुष्पोंके कल्क या क्वाथ में शकर मिलाके पिलानेसे रक्तपित्त मिटताहै (४५) इसके पुष्पोंसे वस्तिपर सेक या स्वेद करनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४६) इसके पुष्पोंको औटा वस्ति पर उस पानीकी धारा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४७) इसके पुष्पोंके क्वाथमें शकर मिलाके पिलानेसे प्रमेह मिटताहै (४८) इसकी जड़को घिसकर कान के नीचे लेप करनेसे गलगंड मिटताहै (४९) इसकी मुंडमुंदी कोंपलोंको सुखा कूटछान, गुड़में मिला, अखरोटकी बराबर गोलियां बनाके एक गोली प्रातः काल नित्य लेनेसे प्रमेह मिटताहै ।

संख्या (२२१)

(सं०) पाटला, अमोघा, फलेरुहा, कुबेराक्षी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पाड़ल	पाढल,पाडर	पाडल	पाडल	पारुल	पाढल	कलिगुट्ट

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Stereospermum suaveolens. Bignonia S	

स्थान—पाढलके वृक्ष हिन्दुस्थानके आर्द्र भागोंमें, हिमालयकी तराई, ट्रैवनकोर और ट्रैनसरीमतक और सीलोनमें होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष ३६ से ६० फुटतक ऊंचा होताहै इसकी पेड़ लम्बी, सीधी, ३० फुटतक बढ़जानपर उसके शाखें फूटने लगतीहैं इसकी गुलाई ६ फुटकी होतीहै इसकी एक से दो फुट लम्बी टहनियों पर २-३-कभी कभी चार जोड़े पत्तोंके लगतेहैं, जिन में अन्तका पत्ता ३ से ६ इंच लम्बा होताहै। इसके धूमसे या थोड़े किरमची रंगके अतिसुगंधवाले पुष्प लगतेहैं। इसके पुराने पत्ते चैतमें गिर जातेहैं और उसी महीनेके अन्ततक या वैशाखके प्रारम्भमें नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

फूलने फलनेका समय—इसके चैतमें पुष्प आजातेहै और कार्तिक मार्गशीर्षतक इसके फल पक जातेहैं।

प्रयोग—(१) पाढल कसैली, कडवी, रसमें चरपरी और उष्णहै (२) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधु में मिलाके चटाने से हिचकी मिटतीहै (३) यह शीतल, मूत्र और बलवर्द्धकहै (४) यह बहुधा दूसरी औषधियोंके साथ मिलाके दीजातीहै (५) इसकी भस्मसे पानक्षारका पानी बनाया जाताहै (६) चमडीको जलाने वाले लेपमें इसकी भस्म मिलाई जातीहै (७) इसके फलोंके रस में मधु और सुवर्णभस्म मिलाके पिलानेसे सब प्रकारकी हिचकी बन्द होतीहै (८) इसके फल और पुष्पोंके चूर्णको पानीके साथ फंकी देनेसे हिचकी मिटतीहै (९) इसके साथ सोंठको पीस कुछ गर्मकर ठंढा करके पिलानेसे गर्भवतीकी वातपीड़ा मिटतीहै (१०) इसके क्वाथसे बनायेहुए कडवे तेलके लगाने से दग्धव्रण, व्रणस्राव, दाह और विस्फोटक मिटतीहै।

संख्या (३२२)

(सं०) पाठा, अम्बष्ठा, स्थापनी, अविद्धकर्णी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पाठ	पाठ	कालिपाठ	पहाडमूल	चकपाठा	पाडा	चिरवुद्दी

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	अगलुशोंठि			Cissampelos Pareira. C. hernandifolia	False Pareira Brava

स्थान—पाठकी बेलें सिन्ध और पंजाबसे सीलोनतक और शिमलेके नीचे भी होती है।

पहिचान—इसका छोटा झाड होताहै। वह बेलकी भांति वृक्षोंपर चढ़ताहै। इसकी पदड छोटी होतीहै जिसमेंसे कई लम्बी शाखें निकलतीहैं वे वृक्षोंके लिपट जातीहैं। इसके पुष्प पुरुष और स्त्रीजातिके भेद से अलग २ होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—फागुनसे आसाजतक इसके पुष्प लगतेहै।

प्रयोग—(१) पाठ उष्ण, चरपरी, कड़वी, पचनेमें हल्की और तीक्ष्ण है (२) इसकी सूखीहुई जड और छाल थोड़ी बलवर्द्धकहै (३) मूत्राशय की पीड़ा युक्त पुरानी सूजनको मिटानेके लिये इसका काथ या सार बनाके देना चाहिये (४) इसके पत्ते शीतल होतेहै और गाठपर बांधे जातेहैं (५) औषधिके प्रयोगमें इसकी जड़ही बहुधा कममें आतीहै। यह कुछ कड़वी होतीहै (६) इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (७) पथरीवाले रोगीको इसकी जडका काथ पिलातेहैं (८) इसकी जड़को घी के साथ घिसकर पिलानेसे विष उतरताहै (९) इसके पत्ते और जड़का शर्बत बनाके पिलानेसे खैनरोग मिटताहै (१०) इसकी जड़का काथ पिलानेसे आमाशयकी पीड़ा और निर्बलता मिटतीहै (११) बिगडे हुए घाव और हड्डियोंके व्रणोंपर इसकी जड़का लेप करतेहै (१२) सर्प और बिच्छूके दंशपर इसकी जड़का लेप करतेहैं (१३) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाके पिलानेसे खांसी मिटती है (१४) जड़के काथपर पीपलका चूर्ण बुरकके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१५) अतीसके चूर्णकी फकी देके ऊपर इसकी जड़का काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१६) कोयलकी जड़को इसकी जड़के साथ ओटाके पिलानेसे जलन्धर मिटताहै (१७) पाठकी जडके प्रयोगसे मूत्रशुद्धि होके मूत्राशयकी पुरानी सूजन मिटजातीहै (१८) इसका प्रयोग करनेके लिये बहुधा इसका काथ बनाके या गाढ़ा सार बनाके देतेहै (१९) जिस स्त्रीकी योनी निकल जावे उसको इसके काथसे धोनी चाहिये और उस स्त्रीको इसका काथ पिलाना चाहिये (२०) इसकी जड़को चांवलोंके पानीके साथ पीसके पीनेसे अतर्विद्रधी मिटतीहै (२१) इसकी जड़को पीसके गर्भवती स्त्रीकी नाभि, वस्ति और भगपर लेप करनेसे उसके बच्चा सुखसे पैदा होजाताहै।

संख्या (३२३)

(सं०) पातालगरुडी, तिक्तांगा, दृढकाण्डा, मेचकाभिधा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	छिरेटा	वासनवेल	तानीचावेल	गिलिन्दा	छिरेटा	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Cocculus villosus	

स्थान—सिन्ध, पंजाब, दक्खन, मद्रास और बंगाल आदि निर्जल देशों में इसकी बड़ी बेलें होतीहैं।

पहिचान और फूलने फलने का समय—इसके तन्तु बड़े दृढ होतेहैं इसके छोटे फलोंके झूमके लगतेहैं वे पकनेपर काले होजातेहैं इसकी जड़ कड़वी होतीहै, इसके पत्तोंके स्वरससे पानी जम जाताहै और उसका हरा रंग होजाताहै। माघ और फागुनमें इसके पुरुष और स्त्रीजातिके पुष्प अलग २ लगतेहैं।

प्रयोग—(१) पातालगरुड़ी (छिरेटा)—वृष्य, मधुर, रोचक, तिक्त और तृप्तिकारक है (२) इसके पत्तोंके रसको पानीमें डालनेसे वह जम जाता है, इस जमेहुए पानीको शरीरके ऊपर लगानेसे दाह मिटतीहै (३) इसमें मिश्री मिलाके खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) इसकी ताजी जड़के २॥ छटांक क्वाथ में बकरीका ढाई छटाक दूध मिला उसपर कालीमिरचोंका कुछ चूर्ण बुरकाके प्रातःकालके समय पिलानेसे गठिया और उपदंश सम्बन्धी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (५) इसकी जड़ उष्ण, सारक और पसीना लाने वालीहै (६) यह उशवेकी भांति रुधिरको शुद्ध करके शरीरकी पीडा और व्रणादिकको मिटादेतीहै (७) इसको किरणचकी गिरके साथ पानीमें पीसके पिलानेसे बच्चोंके पेटकी पीड़ा मिटतीहै (८) पित्तसम्बन्धी मन्दाग्निमें इसके ६ मासे चूर्णमें सोंठ और शर्करा मिलाके देना चाहिये (९) ज्वर मिटानेवाली कड़वी और चरपरी चीजोंके साथ इसको मिला, गोली बनाके देनी चाहिये (१०) इसमें गिलोय जैसा कड़वापन और बलकारक शक्तिहै (११) इसको पीस गर्म करके लेप करनेसे शिरकी पीड़ा मिटतीहै (१२) इसको पानीके साथ पीसके पिलानेसे स्नायु रोग मिटताहै।

संख्या (३२४)

(सं०) पारदः, रसधातुः, रसेन्द्रः, चपलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पारो	पारा	पारो	पारा	पारा	पारा	पारदमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पादरस	पादरस	जीनक	सीमाब	Hydrargyrum	Mercury

पारेमें नाग, वंग, मल, अग्नि, चपलता, पर्वतका विष और अग्निका नहीं सहना, ये सांसर्गिक दोषहैं, इन्हींको कई आचार्य सात कंचुकी कहतेहैं इन सांसर्गिक दोषोंको दूर किये बिदून पारेका भक्षण करनेसे शरीरमें कईप्रकारके रोग होजातेहैं । इस वास्ते इसको शुद्ध करना चाहिये ॥

तप्तखल्वकी रीति—जमीनमें गढा खोदके उसमें बकरीकी मींगनी और नाजके तुस डाले, उनकी भूभल पर लोहेकी खरल रखनेसे जब वह उष्ण हो जावे उसको तप्तखल्व कहतेहैं । पारेके संस्कार करनेके लिये उसको इस खरलमें मर्दन करना (घोटना) चाहिये; जिन औषधियोंके साथ पारा घोटा जावे उनमेंसे हरेक औषधि पारेका सोलहवां हिस्सा लेनी चाहिये ।

पारेको सूक्ष्म रीतिसे शुद्ध करनेकी रीति—(१) नागदोष दूर करनेके लिये ईंट और हल्दीके चूर्णके साथ (२) वंगदोष दूर करनेके लिये इन्द्रवारुणी और अङ्कोलके चूर्णके साथ (३) मलसम्बन्धी दोष मिटानेके लिये अमलतासके गूदेके साथ (४) अग्निदोष मिटानेके लिये चित्रककी जड़की छालके साथ (५) चंचलपन मिटानेके लिये काले धत्तूरेके रसके साथ (६) पर्वतके विषसम्बन्धी दोषको मिटानेके लिये सोंठ, मिरच पीपल और त्रिफलाके चूर्णके साथ (७) अग्निका नहीं सहना मिटानेके लिये गोखरूके चूर्णके साथ, इस रीतिसे हरेक दोष दूर करनेके लिये उक्त दोषोंको मिटानेवाली जो औषधियां हैं उनके साथ पारेको तप्तखरलमें जम्भेरीका रस डाल २ के एक एक दिन घोटना चाहिये और उष्णकांजी (उष्ण धान्याम्लक)

या फिर इससे धोते जाना चाहिये ॥ अथवा घी ग्वार, चित्रककी जड़की छाल, ऊभी इंदाली, राई और त्रिफला, इन सबके क्वाथके साथ तप्तखरलमें पारेको तीन दिनतक मर्दन करके उक्त रीतिसे धोलेनेसे इसके सब दोष दूर हो जातेहैं॥

पारेको स्वेदन करनेकी रीति—जितने प्रकारके अन्न मिलसकें उन सबके तुस अलग करके उनको जलकी हंडीमें डाल रक्खे जब वह जल खट्टा होजाय तब नागरमोथा, गोरखमुंडी, शंखाहुली, साटा, मच्छेछी, सहदेवी, सतावर, कपोती, हरड़, बहेड़े, आमले, काली कोयल, हंसराज और चित्रक, इनमेंसे जो औषधी मिलजावें उनको कूटकर उस खट्टे पानीमें डाल देवे। इसको धान्याम्लक कहतेहैं इसको पारेका स्वेदन करने और धोनेके काममें लाना चाहिये। जो इसके बनानेका योग नहीं बने तो इसकी ठौर सिरका काममें लाना चाहिये। सोंठ, मिरच, पीपल, नोन, राई, हलदी, हरड़, बहेड़े, आवले, अदरक, सहदेवी, गगेरन, चौलाई साटा, मेढासिंगी, चित्रक और नोसादर इनमें से जितनी औषधियां मिलजावें इनको उक्त कांजीसे पीस कपड़ेपर इनका एक अंगुल मोटा लेपकर उसमें पारेको बांधकर उक्त कांजीसे भरी हुई हांडी के बीचमें उस पोटलीको लटकाके मंद मंद आंचसे तीन दिनतक स्वेदन करना चाहिये, और जो आवश्यकता हो तो उस हंडीमें कांजी फिर डालदेना चाहिये। अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, नोन, कलमीशोरा, चित्रक, अदरक और मूली, इनमेंसे हरेक औषधि पारेका सोलहवां भाग ले उक्त रीतिसे पीस कपड़े पर एक अंगुल मोटा लेपकर उसमें पारेको बांध उक्त रीतिसे तीन दिन तक स्वेदन करे फिर उसमेंसे पारेको निकाल तप्तखरलमें डालकर धूमसी ईंट, दही, गुड़, नोन, राई ये हरेक चीज पारेका सोलहवां भाग ले उसमें डाल जम्भेरीके रसके साथ तीन दिनतक मर्दन करके उक्त कांजीसे धो लेना चाहिये।

मर्दन करनेकी रीति—ईंट, हलदी, ऊनकी भस्म और धूमसेके साथ उष्ण खरलमें जम्भेरीके रससे एक या तीन दिन तक मर्दन करके वैसेही धो लेना चाहिये। इस पारेको नीबूके रसमें डालके दिन भर धूपमें पड़ा रखना चाहिये।

पातनकी रीति—तीन भाग पारेको नींबूके रसमें एक भाग तांबेके चूर के साथ इतनी देर तक खरल करे कि जबतक उसकी गोली बन जावे फिर उस गोली को खरल कर हंडीके पेंदे में बिछा उस हंडी के मुँह पर जलसे भरी हुई दूसरी हंडी रख कपड़मिट्टी लगा चूल्हे पर चढ़ाकर, चार पहर तक मंद आंच देवे, ठंडी होनेके पीछे उसकी खाप खोल उस हंडीके लगेहुए पारेको उतार लेवे, अथवा तिगुने पारेमें एक भाग नीलातूथा और सोनमक्खी मिला मर्दनकर गोला बना डमरुयंत्रसे उड़ालेवे, इसको गाढे कपड़ेमें कईवेर छान २ के इसकी कालस निकाल कर शुद्ध कर-लेवे, इन रीतियोंसे शुद्ध किया हुआ पारा औषधि के काममें लाने योग्य होजाताहै।

षड्गुण गंधक जारण करनेकी रीति—ऐसे शुद्ध कियेहुए पारेमें कच्छपयंत्र, अथवा नलिकायंत्र, अथवा रससिंदूर बनानेकी रीतिसे ६ गुणा गंधक जारण करदेना चाहिये। कच्छपयंत्र बनानेकी यह रीतिहै कि मट्टीका एक कूंडा ले उसके बीचमें खडीकी एक इंच ऊंची डोली बना, उसके बीचमें एक सरावा जमादेवे, उस सरावेमें शुद्ध गंधक बिछा उसमें शुद्ध कियाहुआ पारा रख उसको पीसेहुए गंधकसे ढककर उसपर लोहेकी एक बड़ी कटोरी औंधी ढक, नमक और कंडेकी राख महीन पीसकर उससे उसकटोरी और कूंडेकी सन्धिको बन्धकर पानीसे भरेहुए बरतनमें उस कूंडेको आधा डूबाहुआ रखकर उस कूंडेमें अग्नि भर देना चाहिये। अग्नि बुझ जानेपर उसकी खाप खोलकर देखना चाहिये कि उसमें से कितना गंधक जला, जैसे २ गंधक जलता जावे वैसे २ गंधक फिर डाल दियाकरे। ऐसे ६ गुणा गंधक जला देनेसे वह षड्गुण गंधक जारण किया हुआ पारा कहलाताहै। यह अंतर्धूमकी रीतिहै। बहिर्धूमकी रीति यह है कि सिकता यंत्रमें एक सरावा रख उसमें पारा डाल उसपर थोड़ा गंधक बुरका देवे जब वह गंधक पिघलकर जलने लगे तब थोड़ा २ गंधक बुरकाता रहे, ऐसे ६ गुना गंधक जल जावे तब उसमेंसे उस पारेको निकाललेवे। अथवा छाणे (कंडे) की भूभलपर एक सरावा रख उसमें कड़वी तूंबीके बीजोंका तेल और मकोयका रस ये दोनों बराबर डाल उनमें पारा और गंधक डाल दूसरे सरावेसे बन्द करके उसपर थोड़ीसी अग्नि जला देवे जब वह ठंढा होजाय तब उसको खोलकर देखेंकि ये तीनों चीजें अर्थात् तेल रस और गंधक

जल गयेहैं या नहीं, जो वे बिलकुल नहीं जले होवें तो फिर वैसेही बन्ध करके आंच देवें, जो उनमें से थोडी बहुत बाकी रहगई होतो ये तीनों चीजें फिर डालके वैसेही आंच देवे, इस रीतिसे जबतक ६ गुना गंधक नहीं जल चुके तबतक उक्त तेल और रस ये दोनों गधकके साथ डालतारहे इस रीतिसे भी पारेमें ६ गुना गंधक जलाया जाताहै ।

केवल पारा औषधिके प्रयोगमें बहुतही कम आताहै । बराबर शुद्धगंधकके साथ अथवा दुगुने गंधकके साथ इसकी कजली बनाके काममें लातेहैं । जिस रोगको मिटानेवाली जो औषधिहै उसमें इसकी कजली मिला देनेसे उसकी उस रोग को नाश करनेवाली शक्ति बहुत बढ जातीहै इसलिये ऐसा कोई भी रोग नहीं है कि जिसको पारा नहीं मिटा सके । पारद भस्म, हरगौरी, मकरध्वज और हेमगर्भ आदि रस बनानेकी विधि यहां नहीं लिखनेका कारण यहहै कि जबतक ये रस गुरुके सामने नहीं बनाये जावें तबतक इनका बनाना बहुत कठिन और असंभवहै । क्योंकि ऐसा लिखाहै—"अध्यापयन्ति यदि दर्शयितुं क्षमन्ते सूतेन्द्रकर्म्मगुरवो गुरवस्त एव । शिष्यास्त एव रचयन्ति गुरोः पुरो ये शेषाः पुनस्तदुभयाभिनयं भजन्ते" इसका अर्थ यहहै कि पारेके कर्म्मका गुरू वहही है जो पारेके संस्कार करके दिखला देवे और शिष्य वहहीहै जो गुरूके सामने पारेके संस्कार कर लेवे । बाकी वे दोनों नाम मात्रके गुरु शिष्यहैं ॥

संख्या (३२१)

(सं०) पारिजातकः, प्राजक्तः, रागपुष्पी, खरपत्रकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हारसिंगार	हारसिंगार	शियाली	शिवली	पालतेमाँदार		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Nyctanthes Arbortristis. scabrita scabra.	

स्थान—हारसिंगारके वृक्ष हिमालय और तराईकी घाटियोंमें, मध्य हिन्दु-

स्थान — जङ्गल और सीलोनमें होतेहै और बहुधा बागोमें बोये जातेहै।

पहिचान और फूलने फलनेका समय — इसके पुष्प सायंकालको खिलतेहै और प्रातःकाल होने पर गिर जातेहै। इसका बडा गुल्म या छोटा वृक्ष १५, २० फुट ऊंचा होताहै। इसके कुछ सफेद रूए होतेहै, इसके पुराने पत्ते माघमें गिर जातेहै और चैत वैशाखमें नवीन आजातेहै, इसके बहुधा वर्षा ऋतुमें पुष्प लगतेहै परन्तु बारह महीनेही लगते रहतेहै।

प्रयोग — (१) इसके पुष्पोका क्वाथ पिलानेसे गठिया मिटतीहै (२) जीर्णज्वर मिटानेके लिये पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (३) मद आंचसे इसके पत्तोंका क्वाथ बनाके पिलानेसे किसी औषधिको न माननेवाली गृध्रसी मिटतीहै (४) पित्तविकार मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाके पिलाना चाहिये (५) इसी रसमें मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (६) मुनक्का और इसके पत्तोंका फांट पिलानेसे पित्तज्वर मिटताहै (७) इसके पत्तोंके रसमें नमक डालके पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहै (८) इसके पत्तोंका रस पित्तकारक, सारक, कुछ कडवा और बलवर्द्धक है (९) इसके पत्तोंका फांट बच्चोंको पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै (१०) इसके पत्तोंका हिम पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) इसके ताजे पत्तोंको दाल या कढी बनाते समय उनमें डालतेहै (१२) इसके खानेसे बल बढताहै (१३) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे उदक प्रमेह मिटताहै (१४) इसके सफेद पुष्पोंकी डंडी अलग कर उनमें दुगुना बूरा मिला शीशीमें भरकर ४० दिन कोठे पर रख देवें। इस गुलकंद का २ तोले नित्य प्रातःकाल खानेसे हृदयका बल बढताहै और गर्मीका हालदिल मिटताहै (१५) इसकी कोंपलें और ७ काली मिर्च पीस छानके पिलानेसे मासिकधर्ममें अधिक रुधिर का जाना बन्द होताहै (१६) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे दाद मिटताहै (१७) इसकी छालको तेल, काजी और सेंधे नमकके साथ पीसकर लेप करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं (१८) इसके एक तोले बीज और २ मासे कालीमिरचको पीस छानकर गोलियां बनाकर ३ मासे तक मात्रा शीतल जलके साथ देनेसे अर्श मिटताहै (१९) इसके सुगंधयुक्त पुष्पोंमें से सुगंधित तेल और पीला रंग निकाला जाताहै।

संख्या (३२२)

(सं०) पारिभद्रः, पालाशः, रक्तपुष्पः, प्रभद्रकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पञ्जाबी	तैलंगी
फरहद	फरहद	पाडेरवो	पागरो	पालिदामादे		बारिजमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी
कल्याणमुरंग	हालिवाण-दमर			Erythrina Indica.	Indian coral tree Mochi wood

स्थान—फरहदके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर होतेहैं और बहुधा बागोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान—यह एक साधारण ऊंचाईका शीघ्रतासे बढनेवाला वृक्षहै। यह दो प्रकारका होताहै एक बोया हुआ और दूसरा अपने आप उगनेवाला। इसकी पेड़ सीधी होतीहै। जबतक यह वृक्ष जवान होताहै तबतक बहुधा इसकी पेड़ में कांटे लगतेहैं बोये हुएके कांटे नहीं होतेहैं। इसकी छाल पतली, कुछ पीली या कुछ नीली और चमकदार होतीहै इसमें कुछ सफेद दाग होतेहैं। वसतके प्रारम्भमें इसके पुराने पत्ते गिरकर फाल्गुन चैत्रमें नवीन निकल आतेहैं। इसकी एक डंडी पर तीन पत्ते लगतेहैं इसके पुष्पोंका रंग लाल होताहै।

फूलने फलने का समय—माघ, फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं और वैशाखसे आषाढतक इसकी फलियां पकतीहैं। अपने आप उगनेवालेकी फली २, से ३ इंच और बोये हुएकी फली ६,७ इंच लम्बी होतीहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै, इसके सूखे लाल पुष्पोंमेंसे लाल रंग निकाला जाताहै। इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै।

प्रयोग—(१) यह कपैला, चरपरा, उष्ण, रोचक, अग्निवर्द्धक और पाकमें कटुहै (२) पित्तविकार मिटानेके लिये इसकी छालका हिम पिलाना चाहिये (३) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) इसके पत्तोंका ५ तोले रस पिलानेसे पेटके कीड़े निकल जातेहैं (५) विरेच-

नके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (६) उपदंश सम्बन्धी गाँठ मिटानेके लिये उनपर इसके पत्ते बांधने चाहियें (७) इसके पत्तोंपर एरंड का तेल चुपड़ उनको तपाके बांधनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (८) इसकी अन्तर छाल पर घृत चुपड़ उसपर दीपककी लोयसे कज्जल पाड़के आंखके भीतर और नीचेकी पलकपर अंजन करनेसे उसमेंसे पानीका बहना बन्ध हो जाताहै (९) आंखके सफेद भागके रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंके ताजे रसका लेप करना चाहिये (१०) उक्त ७ वें प्रयोगके अंजनसे बांफनीके रोग मिटतेहैं (११) इसके पत्तोंका ताजा रस कानमें डालनेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै (१२) इसके पत्तोंके क्राथके गंडूष करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (१३) इसकी जड़को स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे बालक सुखसे और शीघ्रतासे पैदा हो जाताहै (१४) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कृमि रोग मिटताहै ।

संख्या (३२१)

(सं०) पालक्यं, पालक्या, चीरितच्छदा, छुरिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पालखो	पालक	पालख नीभाजी	पालख (क)	पालशाक	पालक	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		इस्फानाख	इस्फनाख	Spinacia oleracea S tetrandra. Beta maritima. B Vulgaris	Indian or garden spinach. Beet root

स्थान—पालकका शाक हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोया जाताहै ।

प्रयोग—(१) पालक–शीतल, पचनेमें भारी, विष्टंभी, सारक, पिच्छल, कुछ चरपरा, मधुर, ग्राही, और वातलहै (२) इसके बीज शीतल और सारकहैं (३) ये कष्टसे श्वास आनेको मिटातेहैं (४) पित्तके उपद्रव मिटानेके लिये ठंडे जलके साथ इसके बीजोंकी फकी देनी चाहिये (५) मूत्रकी पथरीको मिटानेके लिये इसका ताजा रस पिलाना चाहिये (६) खट्टे पालकके बीजोंको पीस छानके योनि में मलनेसे उसका ढीलापन मिटताहै । इसके बीजोंमेंसे गाढा तेल निकलताहै ।

संख्या (३२४)

(सं०) पाषाणभेदः, अश्मघ्नः, शिलाभेदः, कृच्छ्रहरः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पाखाणभेद	पाखाणभेद	पाषाणभेद	पाषाणभेद	पाथरचुनी	पाषानभेद	पाषाणभेदि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पाषाणभेदि	पाषाणभेदि	-		Colens aromaticus C Amboinicus	Country Borage

स्थान—पाषाणभेद हिन्दुस्थानमें सब ठौर बागोंमें बोया जाताहै।

पहिचान—इसकी सुगन्ध उत्तमहै और स्वाद चरपरा होताहै।

प्रयोग—(१) पाषाणभेद-शीतल, कड़वा, कषैला, मधुर, तिक्त, सारक, और बस्तिशोधकहै। श्वास, पुरानाकास, अपस्मार और बांईटोंके रोग में काम आताहै (२) इसका क्राथ पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (३) बच्चोंके पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें शक्कर मिलाके पिलाना चाहिये (४) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे पुरानी मंदाग्नि मिटतीहै (५) इसके पत्तोंका बहुत रस पीनेसे नशा आजाताहै (६) इसके पत्तोंका रस ग्राही है (७) पत्तोंके रसमें सोंठ बुरकाके पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (८) आंख के बाहिर चारों ओर पत्तोंके रसका लेप करनेसे उसके सफेद भागकी पीड़ा मिटतीहै (९) मूत्राशयके रोग मिटानेके लिये पाषाणभेदका क्राथ पिलाना चाहिये (१०) स्त्रियोंकी योनिके स्राव आदि और पुरुषके मूत्र सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इसके क्राथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (११) इसका क्राथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरी मिटतीहै (१२) इसके क्राथमें मधु और शिलाजीत मिलाके पिलानेसे पित्ताश्मरी मिटतीहै। इसके पत्तोंको मक्खन और रोटीके साथ खातेहैं।

संख्या (३२५)

(सं०) पिच्छिला, अंभःफलं, पाटला।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बी, बिही	बिही	बिही	सफरजन	बिहिदाना	बहिदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
			बेह	Cydonia vulgaris Pyrus Cydonia.	The quince

स्थान—यह अफगानिस्थान आदि देशोंमें पैदा होताहै। पेशावरकी घाटी कश्मीर सिक्कम भूटान और खासिया पहाड कांगडामें इसके पेड बहुत बोये जातेहैं। —पहिचान—इसके सफेद लाल पुष्प लगतेहैं। पंजाबमें जेठ अषाढ़में इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंका हिम या क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२) बिहीदानेको भिगो उनका चेप निकाल उसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (३) चार मासे बिहीदानेका चेप निकालके पिलानेसे सूखी खांसी तर हो जातीहै (४) धातु पुष्ट करनेवाली औषधियोंकी फंकी लेके ऊपर इसके चेपका शर्बत पीनेसे धातु पुष्ट होताहै (५) बिहीदानोंको रातभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उनका चेप निकाल मिश्री मिलाके पिलानेसे बालक जवान और वृद्ध मनुष्यका अतिसार मिटताहै (६) शरबोलकी फंकी देके ऊपर इसका चेप पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (७) इसकी शर्बत पिलानेसे गलेके छाले मिटतेहैं (८) पित्तज्वरकी तृषा और दाह मिटानेके लिये इसके बीजोंको मुहमें रखना चाहिये (९) बिहीका मुरब्बा खिलानेसे यकृत् और हृदयकी निर्बलता मिटतीहै (१०) बिहीका लेप करनेसे पित्तके छाले और अग्निसे जलेहुएकी दाह मिटतीहै (११) औषधिकी चरपराहट कम करनेके लिये उसका इसके शर्बतके साथ चटातेहैं या पिलातेहैं (१२) इसका मुरब्बा खिलानेसे बार बार दस्तकी शंकाका होना बन्द हो जाताहै (१३) इसका शर्बत पिलानेसे पित्तकी वमन बन्ध होतीहै (१४) इसका पानी पीनेसे वमन और तृषा मिटतीहै (१५) इससे पित्तकी प्रकृतिवालेका उदरका बल बढताहै इसका पकाहुआ फल मीठा कुछ खट्टा और रसदार होताहै और इसको मुरब्बा बनातेहैं यह खानेके काममें आताहै।

संख्या (३२६).

(सं०) पिप्पली, मागधी, कृष्णा, चपला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहट्टी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पीपल	पीपर ल	लिंडीपीपर	पिंपळी	पिपुल	पीपल	पिप्पलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंगेजी
तिप्पलि	हिप्पालि	दारफिलफिल	पीपलदराज	Piper lobgum Chavfca. Roxbdrgh	Long paper

स्थान—पीपल-हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें नैपालके पूर्वसे आसामके पूर्व, कासियापहाड और बंगाल तक, पश्चिमकी ओर बम्बई अहाते तक, दक्षिण की ओर-ट्रैवनकोर और-सालोन तक होतीहै ॥

फूलने फलनेका समय—श्रावण, भादवेमें इसके पुष्प लगतेहै, पौष तक फल पकतेहैं ॥

प्रयोग—(१) पीपल—दीपन, वृष्य, पाकमें मधुर, अत्यन्त उष्ण, चरपरी, स्निग्ध, पचनेमें लघु, पित्तल, रेचक, उत्तेजक, पेटकी वायुकी पीड़ा मिटाने वाली, रुधिर शुद्ध करनेवाली और सारकहै (२) कफ, गलेका भारीपन, श्वास, मन्दाग्नि और पक्षाघात आदि रोगोंमें बहुत उपकारीहै (३) नई पीपलों से पुरानी पीपल अधिक गुणकारीहै (४) पीपलका चूर्ण मधुके साथ चटाने से कफ, श्वास, गलेका भारीपन, हिचकी और निद्रानाश मिटताहै (५) पीपल, पीपलामूल, काली मिरच और सोंठ इन सबको बराबर ले चूर्ण बना यथादोष, बल, एक मासे से ४ मासे तककी फकी देनेसे या मधुके साथ चटानेसे प्रतिश्याय, और, गले का भारीपन मिटताहै (६) वर्द्धमान पिप्पलीके प्रयोगसे रक्त शुद्ध होके शरीरका बल बढताहै और विषमज्वर छूटजाताहै, उरुस्तम्भ और पुरानी खांसी मिटजातीहै और तिल्ली आदि पेटके भीतरके बढेहुए यंत्र अपनी २ योग्य दशामें होजातेहै (७) वर्द्धमान पिप्पलीके प्रयोगकी यह रीतिहै-कि रोगीकी शक्तिके अनुसार पहिले दिन ३ पीपलको आधपाव दूध और आधपाव जलमें डालके अग्निपर चढ़ा देवें जब पानी जलजावे तब उसको अग्नि परसे उतार, ठण्ढा

कर दूधमेंसे पीपलोंको निकाल, रोगीको खिलाके ऊपर वह पिलादेवे, जो उसकी शक्ति होवे तो २ पीपल और छटांकभर दूध और छटांकभर जल उक्त रीतिसे नित्य बढ़ाते हुए जबतक आवश्यकता हो सेवन करावे जब बढ़ानेकी आवश्यकता नहीं रहे तब वैसेही उनको घटादेवे और घटाके २ तक लाके छोड देवे परन्तु किसी २ को दूधसे बद्धकोष्ठ होजाताहै अर्थात् मल गाढा होके गाठें बंध जातीहैं, इस लिये उसका मल ढीला रहनेका उपाय करते रहना चाहिये (८) पीपलको पानीमें घिसके अंजन करनेसे मूर्च्छा मिटतीहै (९) मूर्च्छा मिटानेवाली कई प्रकारकी नस्यकी औषधियोंमें पीपलका योग किया जाताहै (१०) पीपल और सोंठके योगसे तेल बनाके मर्दन करनेसे उरुस्तंभ और गृध्रसी मिटतीहै (११)पीपल कफकी गांठोंको विखेरतीहै (१२) तिल्ली और यकृतमेंसे उनके रसके बहावकी रुकावटको मिटातीहै (१३) मधुके साथ पीपलका चूर्ण चटानेसे पाचनशक्ति बढ़तीहै (१४) यह पुरुषार्थ बढातीहै, मूत्रवृद्धि करतीहै और कष्टसे मासिकधर्म्म होनेको मिटातीहै (१५) पक्षाघात, छोटे जोड़ोंकी सूजन, कमरकी पीड़ा और इसी प्रकारके दूसरे रोगोंमें पीपल और पीपलामूलका प्रयोग बहुत उपकारीहै (१६) रतौंधा मिटानेके लिये आंखमें पीपलका अंजन करना चाहिये (१७) पीपलको घिसके विषैल जीवोंके दंशपर लगाना चाहिये (१८) प्रतिश्यायसे जिसकी छाती कफसे भर गईहो उसको पीपलके क्वाथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये (१९) पीपल, कालीमिरच और सोंठके चूर्णकी फकी देनेसे हाथपैरोंका ठढापन और निर्बलता मिटतीहै (२०) पेटके कृमि निकालनेके लिये पीपलका प्रयोग करना चाहिये (२१) कालेनमकके साथ पीपलके चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (२२) मधु और पीपल चटानेसे ज्वरके पीछेकी ऊष्मा मिटजातीहै (२३) बच्चा होनेके पीछे रुधिरको रोकनेके लिये पीपलके चूर्णको घीमें चटाना चाहिये (२४) बच्चेका प्रतिश्याय मिटानेके लिये पीपलके चूर्णको मधुमें चटाना चाहिये (२५) पीपलको पानीसे पीसके लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (२६) पीपलके चूर्णकी नस्य देनेसे सर्दीकी मस्तकपीडा मिटतीहै (२७) इसके कल्कको दूधके साथ पीनेसे प्रवाहिका मिटतीहै (२८) इसका चूर्ण मधुके साथ चाटनेसे रक्तपित्त मिटताहै (२९) इसके चूर्णमें शकर मिलाके फकी देनेसे हिचकी बन्ध होतीहै (३०)

पीपलके बेर थूहरके दूधकी २१ भावना देकर १ या २ पीपल खिला देनेसे उदर रोग मिटतेहैं (३१) पीपलके पलासके खारकी भावना देके उसका सेवन करानेसे गुल्म, प्लीह और मंदाग्नि मिटतीहै (३२) कंठ शुद्ध होनेके लिये इनका चूर्ण मधुके साथ चटाना चाहिये (३३) घी और मधुमें इसका चूर्ण मिलाके मुखमें रखनेसे दंतशूल मिटतीहै (३४) एक भाग पीपल और दो भाग हरड़को जलके साथ पीस वत्ती बनाके आंखमें फेरनेसे तिमिर, अर्बुद और पटल दूर होताहै और नेत्रस्राव बन्ध होताहै (३५) पीपलको चिलममें भरकर तमाखू की भांति पीनेसे पुरानी खांसी मिटतीहै (३६) पीपलका चूर्ण कुछ- गर्म दूधकेसाथ लेनेसे दूध बढताहै (३७) पीपल और बचके चूर्णकी फकी देनेसे सूर्यावर्त मिटताहै (३८) पीपलका कल्क गुड और दूध इनसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे अम्लपित्त मिटताहै (३९) दूधमें इसका कल्क और घी डाल गर्म करके पिलानेसे मंदाग्नि और उदरके रोग मिटतेहैं (४०) दूधमें पीपलका चूर्ण डालकर पिलानेसे प्लीह मिटताहै (४१) पीपलके सेवनसे नपुंसकता मिटतीहै (४२) पीपल और आंधीझाडेके चूर्णकी नस्य देनेसे कठ कुब्ज सन्निपात मिटताहै (४३) इसके चूर्णकी दुगुने गुडमें गोली बनाके देनेसे जीर्णज्वर और मंदाग्नि मिटतीहै (४४) पीपलके कल्क से घृत सिद्ध करके उसका सेवन करानेसे राजयक्ष्मा और क्षयरोग मिटताहै (४५) पीपल और अद्रक को बेर २ चाव २ के थूकनेसे और गर्म जलसे कुल्ले करनेसे हनुस्तम्भ मिटताहै (४६) इसके और कटालीके चूर्णको मधु और आंवलेके रसके साथ चटानेसे या शकरके साथ फकी देनेसे हिचकी मिटतीहै (४८) गोमूत्र और एरंडके तेलमें पीपलका चूर्ण डालके पिलानेसे कफ और वातसे पैदा हुई गृध्रसी मिटतीहै (४९) छाछमें पीपलका चूर्ण और मधु डालके पिलानेसे प्लीहोदरी को लाभ होताहै (५०) वर्द्धमान पिप्पलीका मधुके साथ सेवन करनेसे उरुस्तम्भ मिटताहै (५१) बकरीके दूधके साथ पीपलके दो मासे चूर्णकी फकी देनेसे पुरानी प्रवाहिका मिटतीहै।

——००——

संख्या (३२७)

(सं०) गजपिप्पली, गजोपणा, चव्यजा, श्रेयसी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गजपीपल,	गजपीपल,	गजपीपर	गजपिंपळी	गजपिप्पुल	गजपीपल,	गजपिप्पलि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
यानेतिप्पलि	गजहिप्पलि			Scind[illegible]nalis Pothos	

स्थान—गजपीपल हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमे और विशेष करके दक्षिण हिन्दुस्थानमें होतीहै ।

पहिचान—इसकी बेल वृक्षोंपर चढतीहै । इसकी जड मोटी होतीहै ।

प्रयोग—(१) गजपीपल-उष्ण, चरपरी, कडवी, रूक्ष, तीक्ष्ण, कषेली ग्राही, अग्निवर्द्धक, उत्तेजक, कीडे मारनेवाली और पसीना लानेवालीहै कफ, बादी, अतिसार, श्वास, कृमि, कंठरोग काग और ज्वरको मिटातीहै। मलको शोधन करतीहै । स्तन, कर्णपाली और इन्द्रीको बढातीहै (२) इसके चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी बादीकी पीडा मिटतीहै (३) इसके चूर्णको पानमें रखके खानेसे श्वास मिटताहै (४) इसके चूर्णको अदरखके रस और मधुके साथ चटानेसे कफके रोग मिटतेहैं (५) आमकी गुठलीके साथ इसको घिस, गर्म करके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (६) इसको घिस, गर्म करके लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (७) इसके रसमें कालीमिरच मिलाके पिलानेसे साधारण विषैले सर्पका विष उतरताहै (८) इसके रसमें करेला मिलाके सर्पके दंशपर लेप करना चाहिये ।

संख्या (३२८)

(सं०) जलपिप्पली, शारदी, तोयपिप्पली, मत्स्यादनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जलपीपल	जलपीपरि	रतवालियो	जलपिंपळी	काँचडादाम	जलपीपल	नेलपिप्पलु

उसका चूर्ण वनाके, मधुके साथ चटानेसे गठिया मिटतीहै (८) बच्चेके फुप्फुसके रोगमें पीपलामूलके आधी रती चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये। इससे कफ निकलने लगताहै (९) इसका चूर्ण गुडके साथ देनेसे वहुत दिनोंसे नष्ट हुई निद्रा आने लग जातीहै (१०) इसको पीसके दूध और अदूसेके रसमें मिलाकर पीनेसे ऊर्द्धवात मिटतीहै।

संख्या (३३०.)

(सं०) पियालः, प्रियालः, चारः, सन्नकद्रुः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चारला	चिरोंजी	चारोली(ळी)	चारवृक्षवीज	पियाल	चिरोली	सारपप्पु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मारपरुप्पु	चारेपप्पु	हब्बुस्सिमना	नुक्लोख्वाजा	Buchanania latifolia	( )

स्थान चिरोंजीके वृक्ष हिमालयमें सतलजसे पूर्वकी ओर और हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और शुष्क भागोंमें होतेहैं।

पहिचान--इसका वृक्ष ४०,५० फुट ऊंचा होताहै। इसकी सीधी पेदड़की गुलाई ४ फुटकी होतीहै। इसकी छाल १ इंच मोटी गहरी, सफेद या कुछ काली और खरदरी होतीहै। इसके पत्तेके नीचे वीच की नस लंबे रेशमी रूआंसे ढकी हुई होतीहै। इसके पत्ते ६ से १० इंच लम्बे होतेहैं वे उष्णकालमें प्रायः सब गिर जाते हैं और थोडे दिनों पीछे नवीन पत्ते निकल आते हैं पूरे बढेहुए पत्ते गहरे हरे रगके होतेहैं। इसका पकाहुआ फल आधइंच लम्बा और काले रंगका होताहै। इसका छिलका कठोर होताहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलनेका समय--पोषसे फागुनतक इसके पुष्प लगतेहैं। चैत्र वैशाखमें इसके फल पकतेहैं, बहुधा ज्येष्ठमें वृक्षसे तोड लिये जातेहैं। चिरोंजीमेंसे पीले रङ्गका मीठा और नैरोग्यकारक आधा तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) चिरौंजी-पचनेमें भारी, चरपरी, खट्टी पाकमें मधुर, स्निग्ध शीतल, विष्टंभी, बृंहण और वृष्यहै (२) इसका गोंद अतिसारको मिटाताहै (३) गर्दनकी-पेशियोंकी सूजन पर इसका तेल लगाया जाताहै (४) चिरौंजीके खाने कलेजे, फेफड़े और मस्तककी सर्दी मिटतीहै (५) औषधियोंको स्वादिष्ट करनेके लि उनमें चिरौंजी मिलाई जातीहै (६) यह सारक है । इसको दूसरी सारक औ धियोंमें मिलानेसे उनकी सारकशक्ति बढ जातीहै (७) मिश्रीके साथ इ की फकी लेनेसे प्यास कम हो जातीहै (८) ज्वर मिटानेवाली औषधियों साथ इसका प्रयोग करनेसे ज्वरकी ऊष्मा और शरीरकी दाह कम होजा है (९) ताजी चिरौंजी स्वादिष्ट, बलवर्द्धक और स्वास्थ्यकारकहै (१० इसका तेल बादामके तेलकी ठौर और यह बादामकी ठौर काममें आमक है (११) दूधमें इसकी खीर बनाके खातेहै (१२) चिरौंजीके खानेसे तिल और चिरौंजीको भैसके दूधके साथ पीसके खानेसे भिलावेकी सूज मिटतीहै (१३) चिरौंजीको तेलके साथ पीसके मर्दन करनेसे मकडीका वि दूर होताहै (१४) यह उष्णहै (१५) इसको सेकके खातेहै (१६) इस मींगी सूखे फलोंको पीस धूपमें सुखाके रख छोड़तेहै उनको आटेमें मिल रोटी बनाके खातेहै।

संख्या (३३१)

(सं०) पीतमूली, गन्धिनी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रेवतचीनी	रेवतचीनी	रेवचीनी	रेवाचीनी	रेउचिनि	रेओंदचीनी	चीनगङ्ग

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मेट्टिकिलगु	रेवचिनि	रावद	रेवन्द	Rheum emodi R. Australe R emodium.	Rhubarb Gambrge. (K 1 1)

स्थान—रेवतचीनीके वृक्ष नैपाल और सिक्कममें होतेहै।

पहिचान—इसका पेड़ ५-६ फुट ऊचा होताहै, इसकी जड़ मुड़ी हु

या गोल, आकार और सुटाईमें कई प्रकारकी होतीहै, इसका स्वाद कड़वा और शोषक होताहै।

प्रयोग —(१) रेवतचीनी —कड़वी, चरपरी, मृदुरेचक और बलकारक है। यह अजीर्ण, अतिसार मन्दाग्नि, अरुचि विश्वंध शीतपित्त और दुष्ट व्रणों को मिटातीहै (२) हिमालयकी रेवतचीनी रेचक होतीहै। रेवतचीनीसे किसी २ को विरेचन हो जाताहै (३) इसकी डंडीको कालीमिरचके साथ पीसके चटनी बनातेहैं (४) इसमें मिस्सी मिलाके मंजन करनेसे दांत साफ और दृढ़ रहतेहैं (५) पानीसे पीसके इसको दोनों कंधोंके बीचमें लेप करनेसे बादीका होलदिल मिटताहै।

संख्या (३३२)

(सं०) पीलुः, गुडफलः, स्रंसी, विरेचनः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जाल	पीलु	खारीजाल्य	लघुपीलु	पीलुगाछ	पीलु	परगोंगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	गोनुमर	अराक	दरख्तेमिसवाक	Salvadora persica. Wightiana.	The tooth brush tree Mustard tree of scripture

स्थान — जालके वृक्ष हिन्दुस्थानके अधिक शुष्क भागोंमें होतेहैं अर्थात् पंजाब और सिन्धसे पटने तक, दक्खनकी ओर कोंकन, सर्कार और सीलोन के उत्तरभाग तक होतेहैं।

पहिचान — इसका वृक्ष २०-४० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेड़की उंचाई ८, १० फुटकी और गोलाई ४-५ या ६-८ फुट तक होतीहै। इसकी पेड़ बहुधा मुड़ीहुई होतीहै और उसके फैलीहुई बहुतसी शाखें लगतीहैं इसके अन्तकी डालिया झुकीहुई रहतीहैं, पेड़की छाल सफेद या कुछ भूरे रंगकी होतीहै। इसके पत्ते चैत्रमें गिर जातेहैं और उनके पीछेही नवीन पत्ते निकल आतेहैं, ये कुछ गोल और नोकदार होतेहैं परंतु देश भेदसे आकारमें बदल जातेहैं

इसके कुछ हरे सफेद पुष्प लगतेहैं और छोटे गिरदार, कुछ हरे पीले रंगके फल लगतेहैं वे पकनेपर लाल रंगके होजातेहैं।

फूलने फलनेका समय—कार्तीसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं। अलग अलग देशोंमें अलग २ ऋतुमें इसके फल पकतेहैं। इसके पत्ते और बीजोंमेंसे बहुत सुगंधित तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) पीलू चरपरा, कपेला, मधुर, खट्टा, सारक और दीपन है (२) यह पेटके यंत्रोंकी रुकावट और पेटकी पीडाको मिटाताहै, और मूत्रवर्द्धकहै (३) सर्पका विष उतारनेके लिये इसकी गीली लकडीको घिसे उसमें सोहागा मिलाके पिलाना चाहिये। इसकी सूखी लकडीमें गुण बहुत कम रहताहै (४) पीलू रेचकहै (५) इसकी टहनीकी छाल उष्ण और चरपरी होतीहै (६) मंदज्वरमें इसकी छालका क्काथ पिलाना चाहिये (७) यह उत्तेजकहै (८) इसका सवा छ छ तोले क्काथ दिनमें दो वेर पिलाना चाहिये (९) इसकी कोमल टहनियें और पत्ते चरपरे होतेहैं और सब प्रकारके विष उतारनेके लिये काममें आतेहैं (१०) इसके पत्तोंके रसके लेप से मसूडोंका रोग मिटताहै (११) इसके पत्तोंके रसको उष्ण करके लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (१२) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड आगसे तपाके गठियाकी सूजन पर बांधना चाहिये (१३) इसकी जडकी छाल चरपरी होतीहै उसको चाबनेसे छाला होजाताहै (१४) इसकी लकडीका दातुन करनेसे दांत साफ और दृढ बने रहतेहैं और पाचनशक्ति बढतीहै (१५) इसके पत्तोंको गोमूत्रके साथ पीस लेपकर उसके ऊपर पान बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (१६) इसके तेलमें वत्ती भिगोके गुदामें रखनेसे अर्श मिटताहै (१७) इसकी कोमल टहनियां और पत्ते शाकके काममें आतेहैं (१८) इसके छोटे लाल फल खानेके काममें आतेहैं। इनमें अच्छी सुगंध होतीहै और राई जैसा स्वाद आताहै।

संख्या (३३१)

(सं०) महापीलुः, मधुपीलुः, राजपीलुः, महाफलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बड़ी जाल	बड़ा पीलु	मोटी जाल्य	थोर पीलु	बड पीलु	बडा पीलु	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Salvadora oleoides. S Indica	

स्थान—बडे पीलूके वृक्ष सिन्ध पंजाब और राजपूताना आदि कई देशों के रेतीले जंगलोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष २०,२५ फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेढ छोटी बहुधा मुड़ीहुई और गुलाईमें ५,६ फुटकी होतीहै यह वृक्ष बड़ा होनेपर बहुधा खोखला होजाताहै। इसकी छाल चौथाई इंच मोटी और सफेद रंगकी होतीहै। चैत्रतक इसके नवीन पत्ते आजातेहै, इसके छोटे पत्ते बहुधा गहरे कुछ हरे भूरे रंगके होतेहैं परन्तु पूरे बड़े होनेपर उनका रंग पलट जाताहै। इसकी शाखें खाखी या कुछ लाल भूरे रंगकी और कडी होतीहैं, इसके पुष्प कुछ हरे सफेद रंगके होतेहैं, इसके फल छोटे होतेहै पकनेपर पीले रंगके और सूखनेपर गहरे भूरे या लाल रंगके होजातेहै।

फूलने फलनेका समय—फागुन और चैत्रमें इसके पुष्प लगतेहैं और ग्रीष्म ऋतुके प्रारम्भमें इसके फल पक जातेहै।

प्रयोग—(१) बडा पीलु-मधुर, वृष्य, रोचक और दीपकहै (२) इसका फल ठंढा और मीठा होता है और पुरुषार्थ बढानेवाली औषधियों के साथ काममें आताहै (३) इसका फल इकल्ला खानेसे मुखमें चरपराहट और छोटे छाले होजातेहैं (४) इसके बीजोंका तेल उत्तेजकहै (५) इसका मर्दन करनेसे गठियाके रोग मिटतेहै (६) बच्चा होनेके पीछे स्त्रियोंके इस तेलका मर्दन करनेसे बहुत लाभ होताहै (७) इसकी जड़की छालको पीसके लेप करनेसे छाला हो जाताहै (८) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे विरेचन लगताहै (९) चौपायोंको इसके फल खिलानेसे दूध बढताहै और मीठा होताहै (१०) इसके फलोंको संग्रह करके सुखा रखतेहै। इसके बीजोंमेंसे तेज नीले रंगका मक्खन जैसा गाढ़ा तेल निकलताहै।

संख्या (३३४)

(सं०) पुत्रजीवः, गर्भकरः, यष्टीपुष्प, अर्थसाधक ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जीयापोता	जीयापोता	पुत्रजीवक	पुत्रजीव	जियापुता	जियेपोता	पुत्रजीवमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पुत्रजीवि विरै (इ)	पुत्रजीवि			Putranjiva Roxburghii P sphaerica.pa.	—

स्थान—जीयापोताके वृक्ष हिमालयके नीचेके भागसे कमाउंमें पूर्व और दक्षिणकी ओर पीगू और सीलोन तक होतेहैं ।

पहिचान—यह वृक्ष ४०,५० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ सीधी और खड़ी होतीहै, उसकी गुलाई ४ से ५ कभी कभी ६ फुटकी होतीहै । इसकी छाल आध इंच मोटी, भूरे रंगकी और चिकनी होतीहै । चैत्रमें इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं वे गोल और कुछ लम्बे होतेहैं । इसके पुरुष और स्त्री जातिके पुष्प लगतेहैं; पुरुष जातिके पुष्प छोटे और पीले रंग के होते हैं । इसका फल ऊपर से चिकना श्वेत प्राय आध इंच लम्बा और बहुत कठोर होता है इसमें एक खाना होताहै उसमें बीज निकलताहै ।

फूलने फलने का समय—फागुनसे वैशाखतक इसके पुष्प लगतेहैं पोषसे जेठतक फल पकतेहैं ।

प्रयोग-(१) पुत्रजीव-पचने में भारी, रूक्ष, शीतल, मधुर, चरपरा और सलौना होताहै (२) गर्भ धारण करने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है (३) यह कफ वात और वीर्य्यको बढातीहै, नेत्रोंको हितकारीहै । मल मूत्रको अलग २ करता है । पित्त दाह और तृषाको मिटाता है (४) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (५) प्रतिश्याय मिटानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये (६) इसके बीजोंकी माला बनाके बच्चों को पहिनातेहैं (७) इसकी छालको पानीसे पीसके लेप करनेसे पीड़ायुक्त फोड़े और गांठे मिटतीहैं (८) इसकी ४ मासे छाल पीसके दूधके साथ पिलानेसे उग्र विषकी

शान्ति होतीहै (६) इसका रस सरसों के तेल में मिलाकर पीनेसे श्लीपद रोग मिटताहै। इसके बीजों की गिरमें से जो तेल निकलता है उसमें सड़ी हुई गंध आती है।

संख्या (३३५)

(सं०) पुदीनः, व्यंजनः, वांतिहारी, रुचिष्यः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पोदीनो	पोदीना	फो(दि)दीनो	पुदिना	पुदिना	पुदीना	पुदीना

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पुदीना				Mentha sylvestris	Mint

स्थान—पोदीना हिन्दुस्थान में बहुधा बागों और घरोंमें, घमलों में लगाया जाता है।

प्रयोग—(१) पोदीना—रोचक, मधुर, भारी, हृद्य और ग्राहीहै। जिस काम में पेपरमेंट आता है उसी काममें पोदीनाभी आताहै। (२) पोदीनेका काथ पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटती है (३) इसके पत्तों को मधुके साथ चटाने से अतिसार मिटताहै। (४) गठियाकी पीड़ा मिटाने के लिये इसका काथ पिलाना चाहिये (५) सर्दीकी ज्वर को मिटाने के लिये सोंठ और पोदीनेका काथ पिलाना चाहिये (६) ज्वर वाले रोगीके मुंहका स्वाद सुधारनेके लिये इसकी चटनी बनाके खिलाना चाहिये (७) वमन बन्ध करनेवाली औषधियोंमें पोदीना मिलाया जाताहै (८) इसके ताजे पत्तोंकी सुगंधसे मूर्च्छा मिटतीहै और उनके रसका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (९) बच्चोंके पेटकी पीड़ा मिटानेके लिये पोदीनेका हिम पिलाना चाहिये (१०) हृल्लास मिटानेके लिये पोदीनेके अर्कपर छोटी इलायची का चूर्ण बुरकाके पिलाना चाहिये (११) पोदीनेके चूर्णका मंजन करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटतीहै (१२) इसका शर्बत पिलानेसे ज्वरकी उष्मा कम हो जातीहै और घबराहट मिट जातीहै (१३) पोदीने और कालीमिरचको, घोट

छान मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१४) पोदीना-उत्तेजकहै और कामला रोगको मिटाताहै (१५) पोदीनेको चूरेके साथ चबानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१६) पोदीनेका अर्क पिलानेसे रुधिरका जमाव बिखर जाताहै (१७) सूखे पोदीनेको पीसके फकी लेनसे रुधिरका जमना बन्द होजाताहै (१८) पोदीनेको खाने और लेप करनेसे बिछूका विष शान्त होताहै (१९) पहाडी पोदीनेको औटाके पिलानेसे बालक होनेके पीछेकी गर्भाशयकी पीड़ा मिटती है।

संख्या (३३६)

(सं०) रक्तपुनर्नवा, वैशाखी, शोफघ्ना, रक्तपुष्पिका।
श्वेतपुनर्नवा, श्वेतमूला, दीर्घपत्रिका, सितवर्षाभूः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
साटो	सांट	साटेड़ी	घेंटुली	पुन्या	इटसिट	अहिकमामिडि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी
मुक्कुरट्टइ	कोम्मे	रतेनाह्	इहिमतुसह राई	Boerhaavia diffusa. B procumbens.	The spreading hog weed

स्थान—सारा हिन्दुस्थानमें सब और होताहै।

पहिचान—यह श्वेत, लाल और नीले पुष्पोंके भेदसे तीन प्रकारका होताहै।

प्रयोग—(१) इसकी जड़का काथ, सारक, मूत्रवर्द्धक, कृमिनाशक और शीतलहै (२) इसकी जडके चूर्णमें शकर मिलाके फकी देनेसे सूखी खांसी तर होजातीहै (३) इसकी जड़के ३ मासे चूर्णमें ४ रती हल्दी मिलाके देनेसे श्वास मिटताहै (४) इसकी अधिक मात्रा देनेसे वमन होतीहै (५) इसकी जड़ बहुत वामकहै (६) इसके पत्ते और कालीमिर्चोंकी चोट छानके पिलाने से मूत्रवृद्धि होके मूत्रकृच्छ्र मिट जाताहै (७) इसके पचांगको पीसके जलधर के रोगीके पेटपर लेप करना चाहिये (८) गांठके ऊपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (९) सर्वांग जलमय शोथको मिटानेके लिये चिरायता, सोंठ और साटेकी जड़का काथ पिलाना चाहिये (१०) कामला रोग में इसके

सर्वांग जलमय शोथ होवे तो शोथको मिटानेवाली औषधियोंमें साटेकी जड मिला, उनसे तेल बनाके उसपर मर्दन करना चाहिये (११) साटेके हिममें जोखार मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१२) कासयुक्त श्वासको मिटाने के लिये इसकी जड़का काथ पिलाना चाहिये और उस रोगीका धूम्रपान (तमाखू पीना) बन्ध करदेना चाहिये (१३) इसकी जड़का २॥ या ५ तोले क्वाथ पिलानेसे बाइट मिटतेहैं (१४) सूखे साटेके फांटमें शोरा डालके पिलानेसे जलंधर मिटताहै (१५) जलंधरके प्रारभमें साटेके पत्तोंके शाकसे रोटी खिलाना चाहिये (१६) साधारण निर्बलता और शोथ मिटानेके लिये साटे की जडको पानीमें पीसके पैरोंपर लेप करना चाहिये (१७) इसके पत्तोंके रस को दूधमें मिलाके पिलानेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१८) सफेद साटेकी जड़को छायामें सुखा, पानीमें घिसकर अंजन करनेसे आंखोंका गलना और पलकोंकी खुजली मिटतीहै (१९) इसकी जड़को चूर्ण पानमें रखके खानेसे कास और श्वास मिटताहै (२०) इसकी जड और सोंठको इसीके रसमें पीस के बांधनेसे स्नायुक मिटताहै (२१) इसकी जडकी मात्रा दूधके साथ देनेसे पित्तज चातुर्थिक ज्वर छूटजाताहै (२२) इसकी जड और सैंधा नमक दोनों बराबर ले कल्क बनाके घृतके साथ चटानेसे गुल्म रोग, और मधुके साथ चटानेसे जलोदर मिटताहै (२३) इसकी और वायवरणेकी जडके पिलानेसे अपक्व विद्रधि मिटतीहै (२४) इसकी जड़को दूधके साथ घिसके अंजन करनेसे खुजली, मधुके साथ नेत्रस्राव, (आंखका झरना) घृतके साथ फूला, तेलके साथ तिमिर रोग, और काजी या बकरीके मूत्रके साथ अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै (२५) इसकी जडको छायामें सुखा चूर्ण कर घृतमें मसलो बासी पानीमें गोली बना उसको पानीके साथ घिसकर अंजन करनेसे परवालोंका आना बन्ध होताहै (२६) रविवार के दिन उखाडी हुई इसकी जडको चबानेसे विच्छूका विष उतरताहै (२७) पीपलके साथ खानेसे भूख लगतीहै (२८) दूधके साथ खिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै (२९) शकरके साथ देनेसे पित्त गल जाताहै (३०) पानके साथ खानेसे स्तंभन होताहै (३१) सहदेईके साथ पित्त मिटाताहै (३२) खैरके कल्कके साथ हड फूटनी मिटातीहै (३३) सुपारीके साथ खानेसे कोढ मिटताहै (३४) गो घृतके साथ अंजन करनेसे दुख-

ती हुई आंख अच्छी होजातीहै (३५) पवांड़के बीजोंके साथ खानेसे दाद मिटताहै (३६) जल भांगरेके रसके साथ खानेसे मदर मिटताहै (३७) जीरेके साथ खानेसे पेटकी दाह मिटतीहै (३८) इसके पत्तोंके रससे इसकी जड़को पीसके बांधनेसे स्नायुक (नारू) की पीडा मिटतीहै (३९) इसके पत्ते और आंधी झाडेकी टहनियोंको पीसके मलनेसे विच्छूका विष उतरताहै (४०) २ तोले पुनर्नवा नित्य दूधके साथ पीवे ऐसे ६ महीने तक लगातार पीनेसे आयु बढतीहै। लाल फूलके साटेसे सफेद फूलके साटेमें गुण अधिकहै।

संख्या (२३७)

(सं०) पुन्नागः, पुरुषः, तुंग , देववल्लभः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सुलतानचंपा	सुलतान	पुन्नाग	उंडी	पुनॉगाछ		पुन्नै

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पुन्ने	होन्ने			Calophyllum inophyllum.	The Alexandrian laurel

स्थान—पुनागके वृक्ष ओडीसा दक्षिण हिन्दुस्थान सीलोन, ब्रह्मा और हिन्दुस्थान भरमें बहुत करके समुद्रके किनारे बोये जातेहैं। इसको समुद्रके किनारेकी सूखी बालू रेतकी पृथ्वी बहुत अच्छी मानतीहै।

फूलने फलनेका समय—वर्षमें ६ महीनेसे अधिक समय तक इसके पुष्प और फल लगतेहैं। यह एक वर्षमें दो वेर फलता और फूलताहै।

प्रयोग—(१) पुन्नाग—मधुर, शीतल और पित्त नाशकहै (२) इसके फलोंमेंसे जो तेल निकाला जाताहै वह गठिया पर लगाया जाताहै (३) शिथिल पड़े हुए फोड़ों पर इसके राल जैसे पदार्थका लेप करतेहैं (४) इसके गोंदकी फकी देनेसे अथवा इसके फल खिलानेसे वमन और विरेचन होतेहैं (५) इसके गोंद को-जो छाल और पत्तोंपर चिपका रहताहै-पानीमें डालनेसे उसका तेल पानीपर

तेर आताहै। इसको दुखती हुई आंख पर लगातेहै. (६) इसका वृक्ष मूत्र-वर्द्धकहै (७) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो सूजी हुई आंख पर बांधतेहैं (८) इसकी मींगीका तेल लगानेसे फोडे फुन्सी मिटतेहैं (९) इसकी छाल ग्राहीहै (१०) छालके चूर्णकी फक्की देनेसे शरीर के भीतरके किसी भागमेंसे बहता हुआ रुधिर बन्ध होजाताहै (११) इसकी छालको घिसके लगानेसे फोडे फुन्सी मिटतेहैं (१२) इसकी छालका रस रेचकहै (१३) इसमेंसे एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ निकलताहै, वह कुछ पीलापन लिये हरे रंगका होताहै, उसमें अच्छी सुगंध आतीहै। माघ और श्रावणके महीनेमें इसके फल इकट्ठे किये जातेहै। इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ६० तोले तेल निकलताहै वह सुगंध युक्त और धुंधले हरे रंगका होता है।

संख्या (३३८)

(सं०) पुष्करमूलं, श्वासारिः, पुष्कराह्वयं, पुष्करजः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पोखरमूल	पोखरमूल	पोकरमूल	पोखरमूल	पुष्करमूल	पोहकरमूल	पुष्करमूलमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पुष्करमूल	पुष्करमूल	कुस्त	कुश्त	Costus speciosus	

स्थान—पुष्करमूल हिन्दुस्थानमें हरेक ठौर होता है परन्तु बंगाल, कानडा और कारोमण्डलमें आर्द्र और छायादार ठौरमें बहुत होताहै।

प्रयोग—(१) यह कडवा, ग्राही और पाचक होताहै। अतिश्याय सम्बन्धी ज्वर, श्वास, कास, त्वचाकेरोग और वात कफके कई रोगोंमें काम आताहै। पोखरमूल पुष्टाईकी औषधियोंमें मिलाया जाताहै (२) व्रणको शुद्ध करनेके लिये इसके क्वाथसे धोना चाहिये (३) व्रणपर इसका चूर्ण बुरकानेसे कीडे मरतेहै (४) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे निर्बलता मिटतीहै (५) मज्जा सम्बन्धी पीडा मिटानेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये (६) पोखरमूल

का मुरब्बा बनाके खानेसे शरीर निरोग होजाताहै और भूख बढतीहै (७) पोखरमूल, जोखार और मिर्च इनके कल्कको गर्म जलके साथ लेनेसे श्वास और हिचकी बन्ध होतीहै (८) इसको महीन पीसके मलनेसे अधिक पसीना आना बन्ध होताहै (९) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे श्वास, कास, हिचकी और हृद्रोग मिटताहै (१०) पोखरमूल और सहिंजनेके बीजोंके चूर्णसे बालकके पेटके कृमि (चुरणे) मिटतेहै ।

संख्या (३३९)

(सं०) पुष्पराग , पीतमणि., पीतस्फटिकः, गुरुरत्नम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पुखराज	पुखराज	पुखराज	पुष्पराजमणि	पोखराज	पुखराज	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	पुष्पराग			Topaglo	Topaz

गुण—(१) यह खट्टा, शीतल, पचनेमें लघु और दीपन होताहै। विष, वमन, कफ, वात, मंदाग्नि, दाह, कुष्ठ, रुधिरविकार और अर्शको मिटाताहै । आयु, शरीरकी कान्ति और बुद्धिको बढाताहै ।

संख्या (३४०)

(सं०) पुष्पाञ्जनं, पुष्पकेतु, कौसुमं, कुसुमाञ्जनम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बोलेकाजल	जस्तकेफूल	पुष्पांजन	जस्ताचेफूल	पुष्पाजन	जिस्तदाफुल्ल	पुष्पाञ्जनमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Zinci oxydum	Zinc oxide

गुण—(१) यह शीतल, स्निग्ध और नेत्रोंको हितकारीहै। पित्त, हिचकी, दाह, विष, कास, ज्वर और नेत्रके सब रोगोंको मिटाताहै।

संख्या (३४१)

(सं०) पूगफलं, उद्वेगं, क्रमुकं, घोंटाफलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सुपारी	सुपारी	सोपारी	सुपारी	सुपारि	सुपारी	पोक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पाक	आडिके	फूफल	पोपल	Areca Catechu	The betel or areca nut.

स्थान—सुपारीके वृक्ष बंगाल, आसाम, सिलहट, पश्चिमी घाट मैसौर, कनारा, मलबार और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि कई देशोंमें होतेहै।

पहिचान—यह बहुत जातिकी होतीहै जिनमें सफेद और लाल मुख्यहै।

प्रयोग—(१) सुपारी-पचनेमें भारी, रूक्ष, कषेली, शीतल, दीपन, पाचन, रोचक, मधुर, स्निग्ध और कुछ सारकहै। कच्ची सुपारी बहुत ग्राही होतीहै और अतिसारको मिटातीहै (२) बिगड़े हुए फोड़ोंको सुपारीके क्वाथसे धोतेहैं (३) दांतोंके मंजनके लिये सुपारीकी राख काममें आतीहै (४) निर्बलतासे पैदा हुए अतिसारको मिटानेके लिये सुपारीका चूर्ण ५ रत्तीसे एक मासेतक हर तीसरे चौथे घंटेमें देना चाहिये (५) मूत्रसम्बन्धी उपद्रवोंमें सुपारी बहुत उपकारीहै (६) सुपारी पाकके खानेसे स्त्रियोंके योनी और रज सम्बन्धी बहुत रोग मिटतेहैं (७) सूखी सुपारीको चाबते रहनेसे शरीरपर एक प्रकारकी उत्तेजना और प्रसन्नता पैदा होतीहै (८) दूधकेसाथ सुपारीके चूर्णकी सवा तोलेसे २ तोलेतक फक्की देनेसे गोल और चिपटे कीड़े मरतेहैं (९) इसके पाकसे नसोंका बल बढ़ता है (१०) इसका लेप करनेसे आंखकी सूजन मिटतीहै (११) इसके कोमल पत्तोंका रस निकाल तेलके साथ मर्दन करनेसे कमरकी स्नायु पीड़ा मिटती है (१२) इसके चूर्णके मंजनसे अथवा इसके छोटे २ टुकड़े करके मुंहमें रखनेसे मसूड़ोंसे रुधिरका निकलना बंध होजाताहै (१३) इसके चूर्णकी

पोटली बांधकर योनिमें रखनेसे उसमेंसे पानीका बहना बंध होजाताहै (१४) कोई सुपारी ऐसी होतीहै कि जिसका चबाके उसका रस निगलनेसे बहुधा कानोंमें एक प्रकारकी चित्त प्रसन्न करनेवाली उष्णता प्रतीत होने लगतीहै और कोई ऐसी होतीहै कि जिसका रस निगलनेसे गले और छाती में ऐंठन मालूम होने लगतीहै और मुहसे बहुतसा पानी पड़ने लगताहै (१५) इसकी अंतरछालकी फक्की देनेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै (१६) सुपारीके ४ मासे चूर्णको मक्खनके साथ चटानेसे पेटके कीडे निकल जातेहैं (१७) रेतीले जंगलमें लम्बी सफर करते वक्त तिसको मिटानेके लिये सुपारीके टुकडे मुखमें रखने चाहिये (१८) सुपारीके कोयलेकी राख एक भाग और चाक मिट्टी ३ भाग मिलाके मंजन करनेसे दांत साफ रहते हैं (१९) गीली कच्ची सुपारी बहुत ग्राही होतीहै। जब इसको धूपमें सुखातेहैं तो इसका ग्राहीपन कुछ कम पडजाताहै। इसके बीचका श्वेत भाग थोड़ा मीठा होताहै (२०) कच्ची बिनसूखी सुपारीमें एक प्रकारका पदार्थ रहताहै जिससे अधिक सुपारी खानेसे कुछ समयके लिये चक्कर आने लगतेहैं (२१) सुपारीका सार बड़ा ग्राहीहै (२२) सुपारी और हल्दीके चूर्णमें शक्कर मिलाके फक्की देनेसे वमन बन्ध होतीहै (२३) सुपारी और खैरके क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे क्षौद्र प्रमेह मिटताहै (२४) इसका चूर्ण बुरकानेसे उपदंश मिटताहै (२५) सुपारी और बड़ी इलायची इन दोनों की भस्मको बुरकानेसे मुखपाक मिटताहै (२६) नागरबेलके पानमें कुछ चूना, कत्था लगाके उसमें इलायची, लौंग और सुपारीके टुकड़े रख, बीड़ा बना चाबके उसका रस निगलनेसे जी मचलाना बन्ध होताहै। आमाशयकी शक्ति और भूख बढ़तीहै (२७) पक्की सुपारियोंको मिट्टी या कलईदार पात्रमें कुछ घंटों तक औटानेसे चेपदा और राल जैसा सार निकलताहै, उसको अपने आप सुखाके या औटाके गाढ़ा करलेना चाहिये।

संख्या (३४२)

(सं०) पृथ्वीतैलं।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
घासलेट तेल	मिट्टीका तेल				मिट्टीका तेल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Petroleum	kerosine

स्थान—यह तेल हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर निकलताहै।

प्रयोग—(१) इस तेलका मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (२) कपूर और गंधक बराबर ले उनको इस तेलमें पीसके लगानेसे दाद मिटता है (३) इसका फोया भरके व्रणपर बांधनेसे उसके कीड़े मरजातेहैं (४) यह जलानेके काममें आताहै(५)इसका धुंआ श्वासके साथ पेटमें जानेसे फुफ्फुसको बिगाड़ताहै (६) इसकी तीक्ष्ण ज्योति नेत्रोंको हानि कारकहै।

संख्या (३४३)

(सं०) पृश्निपर्णी, कलशी, धावनी, गुहा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पञ्जाबी	तैलङ्गी
पिठवन	पीतवन	नहानो समेरवो	पिठवण	चाकुले	पिठौनी	कोलपोन्न

द्राविड़ी	कर्नाटकनी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंगरेजी
				Uraria lagopoides D. C. Hedias. L.	

स्थान—पिठवन—नैपाल और बंगालसे ब्रह्मातक और हिन्दुस्थानके बहुतसे दूसरे भागोंमें होतीहै।

प्रयोग—(१) यह वृष्य उष्ण, मधुर, सारक, चरपरी, कड़वी, कुछ खट्टी और पचनेमें हल्की होतीहै। दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा, वमन कास, उन्माद, व्रण, वातरोग और त्रिदोष आदि रोगोंको मिटातीहै(२)पिठवन दशमूलकी औषधियोंमेंहै और बहुधा दूसरी औषधियोंके साथ काममें आतीहै

(३) यह वारीसे आनेवाले ज्वरको रोकतीहै (४) निर्बल मनुष्यको इसकी जड़का क्वाथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जड़ और मिश्रीको ओटाके पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (६) इसकी जड़को दूधके साथ ओटाके गर्भवती स्त्रीको सातवें महीनेमें पिलानेसे बालक पैदा होजाताहै (७) इसको नाभि वस्ति और योनीपर लेप करनेसे बालक सुखसे शीघ्र पैदा होजाताहै।

संख्या (३४४)

(सं०) पेरुक, दृढवीज, मांसलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जामफल	जामफल अमरूद	जामफळ	पेरु		अमरूद	गोय्या

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
कोय्या	शीबे	कमुसरा	अमरूद	Psidium Gwyane Var. pyreferum Var. pon ifernm.	Guava.

स्थान—जामफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

पहिंचान—इसका वृक्ष छोटा होताहै। यह ४—७ वर्षका होनेके पीछे इसके फल लगने लगतेहैं और प्रायः ६, ७ वर्षतक फलताहै पीछे यह सूख जाताहै। यह दो प्रकारका होताहै।

प्रयोग—(१) इसका फल ग्राहीहै (२) कच्चे जामफल खिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) इसकी जड़की छाल ग्राही होतीहै (४) बच्चेका पुराना अतिसार मिटानेके लिये इसकी सवा तोले जड़को १५ तोले जलमें ओटा, ७॥ तोले रख, ६-६ मासेतक दिनमें दो तीन वेर पिलाना चाहिये (५) जिसकी गुदा बाहिर निकलतीहो उसकी गुदापर गाढ़ेकिये हुए इस क्वाथका लेप करना चाहिये (६) इसके पत्ते इससे कुछ कम ग्राही होतेहैं (७) इसके पत्तोंको पीस उनका पुल्टिस बनाके बिगड़े हुए घावपर बांधतेहैं (८) इसके पत्तोंके क्वाथके गंडूष करनेसे मसूड़ोंकी शोथ मिटतीहै (९) विषूचिका वालेको (१०) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे वमन और विरेचन बन्द होजातेहैं

इसका पका हुआ फल मारक होताहै (११) इसकी जड़की छाल या कोमल पत्तोंका काथ पिलानेसे पुराना अतिसार मिटताहै (१२) इसके कोमल पत्ते, अनारकी कली और बबूलके पत्तोंका फांट करके पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (१३) कच्चे जामफलको औटाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१४) जामफल सफेद या कुछ लाल गिरवाले चमकदार और पीली पतली छालके अच्छे होतेहैं । ये खाने और शाक बनानेके काममें आतेहैं ।

संख्या (३४०)

(सं०) पेरोजं, हरिताश्म, पेरजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पिरोजो	फिरोजा	पीरोजो	पेरोज	पेरोजा	फिरोज।	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	पेरोज	फीरोजज	फीरोजा	Turchesius Turchina.	Turkois Turkois.

गुण—(१) यह कषेला, मधुर, दीपन और सारकहै, शूल, भूतबाधा और स्थावरः जंगम और कृत्रिम विषको मिटाताहै ।

संख्या (३४६)

(सं०) प्रवालः, विद्रुमः, लतामणिः, भौमरत्नम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मूंगा	मूगा	परवाळां	प्रवाल पोंवले	मुगा, पला	मूगा	पगडमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पवळ	हवळवु	मरजान्	मरजान्	Corallium rubrum	Coral. Red coral.

प्रवालको शुद्ध और भस्म करनेकी रीति—इसके छोटे छोटे टुकडे कर कपड़ेकी थैलीमें बांध, कांजी, नींबूके रस, गोमूत्र और दूधमें क्रमसे एक

एक एक पहर स्वेदन करना चाहिये, फिर उसमेंसे निकाल उष्ण जलसे धो, सरावेमें अग्निसे लालकर ग्वारपाठके और चौलाईके रसमें क्रमसे सात सात बेर बुझानेसे इसकी भस्म हो जावेतो ठीक, नहीं तो ग्वारपाठेकी गिर और इसको सराव सम्पुटमें कपडमिट्टीसे बन्दकर गजपुटके आंचमें फूंक देना चाहिये।

प्रयोग--(१) प्रवाल - मधुर, खट्टा दीपन, रोचक और पाकमें लघुहै और शरीरको पुष्ट करताहै (२) क्षय,-पांडु, श्वास, कास, ज्वर मेद, रक्तपित्त भूतादिबाधा, विष और नेत्ररोगोंको मिटाताहै। वीर्य और कान्तिको बढाताहै (३) मूत्रसम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (४) इसको मक्खन और मिश्रीके साथ चटानेसे सैन रोग मिटताहै (५) शरीरको पुष्ट करनेके लिये मलाईके साथ इसका सेवन करना चाहिये (६) ३ मासे घिसे हुए लाल चन्दन पर प्रवाल भस्म बुरकाके चटानेसे रक्तार्श मिटताहै (७) ६ मासे काले तिलोंके साथ प्रवाल भस्मका सेवन करनेसे मूत्रातिसार मिटताहै (८) इसको मधु और पीपलके साथ चटानेसे जीर्णज्वर छूट जाताहै (९) मूत्रकी रुकावट मिटानेके लिये एक रती मूंगा पानीमें घिसके पिलाना चाहिये (१०) पके हुए केलेकी साथ प्रवाल भस्मका सेवन करनेसे क्षयरोग मिटताहै (११) दूध और मिश्रीके साथ पित्तका प्रकोप मिटताहै (१२) पानमें रखके खानेसे खांसी मिटतीहै (१३) प्रवालके चूर्णका मंजन करनेसे दात निर्मल और दृढ रहतेहैं (१४) त्रिफला और मधुके साथ चटानेसे मूत्रकृच्छ मिटताहै (१५) घृत और मिश्रीके साथ चाटनेसे धातु पुष्ट होतीहै (१६) धारोष्ण दूधके साथ लेनेसे रक्तप्रदर मिटताहै (१७) अदरकके रसमें मिश्री और प्रवालभस्म मिलाके चटानेसे शुष्क कास मिटताहै (१८) तुलसीके रसमें चूहेकी मींगनी और प्रवालभस्म मिलाके अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै (१९) इसको चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे कफका मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२०) प्रवाल और मिश्रीको महीन पीसके अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै (२१) इसको महीन पीसके बुरकानेसे घावसे रुधिरका निकलना बन्ध होताहै (२२) इसकी जडको पानीके साथ पीस पावोंपर उसका लेप करके थोडे समय पीछे धोडालनेसे वे कोमल बने रहतेहैं।

संख्या (३४७)

(सं०) प्रियंगुः, गोवंदनी, कांता, फलिनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
फूलप्रियगु	फूलप्रियंगु	घउला	गहुला,गहुला	प्रियगु	(१	प्रेंकणमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	प्रेंकणागडु			Aglaia Roxburghiana	

स्थान – प्रियगुके वृक्ष पश्चिम मायद्वीपमें कोकन और मिदनापुरसे द-क्षिणकी ओर सीलोन तक होतेहैं ।

पहिचान इसके फलकी मध्यरेखा पौन इंच होतीहै । इसके पांच पांच, कभी सात २ और कभी तीन २ ही पत्ते लगतेहैं ।

प्रयोग – (१) यह शीतल, कड़वी और कषेली होतीहै । वमन, दाह, पित्तज्वर, रुधिरविकार, शरीरकी दुर्गंध, पसीना, गुल्म, तृषा, विष, मोह, भ्रम कुष्ठ, प्रमेह, मुखके चिकनेपन, वादी और मेदको मिटातीहै । मुखकी कान्ति, बल और वीर्यको बढ़ातीहै (२) इसके बीज मीठे, शीतल, रूच, कषेले, ग्राही, पचनेमें भारी, बलवर्द्धक, आध्मानकारक पित्त और कफ नाशकहैं (३) इसके फल खानेसे अतिसार मिटताहै और शरीरका बल बढ़ताहै (४) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो मल छान, मिश्री मिलाके पिलाने से मूत्रनाली की दाह मिटती है (५) इस के पत्तोंका फांट पिलाने से शरीरकी दाह मिटतीहै (६) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै ।

संख्या (३४८)

(सं०) प्लक्षः, पर्कटिः, प्लवङ्गः, दृढप्ररोहः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पाकड	पाखर,पाकर	पीपर	पिंपरी वृक्ष	पाकुड	पिलखन	जुव्वि

...विड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
... लेमर	बसरि			Ficus infectoria F. venosa	

स्थान—पाकड के वृक्ष बंगाल; आसाम, ब्रह्मा, मध्य हिन्दुस्थान आदि ...न्दुस्थानके बहुतसे देशोंके जंगल और पहाडोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष ४०–५० फुट ऊंचा होता है, इसकी पेंदड छोटी ...ौर आकारमें बेडौल होती है, इसकी छाल सफेद और साफ होतीहै। इसके ...ते चमकदार होतेहैं। इसके फलकी मध्यरेखा चौथाई इंचतक होतीहै जब फल ...क जाताहै तब उसका रंग सफेद होजाताहै पतझडमें इसके पत्ते गिर जा...है, माघसे चैत्रतक नवीन पत्ते निकल आतेहैं।

फूलने फलने का समय—वैशाख जेठ तक इसके फल पकतेहैं। आ...ामी वर्षमें जबतक इसके नवीन फल नहीं आने लगतेहैं तबतक वे वृक्षके ल... रहते हैं।

प्रयोग—(१) पाकड–कपेला, चरपरा और मधुरहै। शोथ, दाह, पित्त, ...फ, रक्तपित्त, मूर्छा, भ्रम और प्रलापको मिटाता है (२) इसकी छालके क्वाथ ...े गंडूप करनेसे मुंहमें से पानीका बहना बन्ध होजाता है (३) छालके क्वाथ से ...णको धोनेसे साफ होजाताहै (४) इसके क्वाथकी पिचकारी योनीमें देनेसे ...वेतप्रदर मिटताहै (५) इसके अंकुरोंका शाक बनाया जाताहै।

संख्या (३४६)

(सं०) बकुलः, चिरपुष्पः, मकुल , मधुगंध ।

...ारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
...ौरसली	मौलसरी	बोलसरी	बकुली	बकुलगाछ	मौलसरी	पोगड, पोगडा

...द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
...हळंगरं	पगडेमर पगड			Mimusops Elengi	Surinam medlar

स्थान—मोरसलीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहै ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—यह वृक्ष ४०–५० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ छोटी होतीहै, इसके बारह महीनेही पत्ते बने रहतेहैं । इसके पूरे बढ़हुए पत्ते चिकने होतेहैं । उष्णकालमें इसके अच्छी सुगंधवाले छोटे २ बहुतसे पुष्प लगतेहै उनके गिर जानेपर फल लगतेहै जो प्राय एक इंच लंबे और ऊपरसे साफ होतेहैं, पकनेपर पीले रगके होजातेहै, इनमें कुछ मीठी गिर और एक बीज निकलताहै । इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै ।

प्रयोग—(१) मोलसरी–शीतल, मधुर, कषेली, विषनाशक और हृद्य है (२) इसका कच्चा फल ग्राहीहै । इसको मुंहमें चबाते रहनेसे दात दृढ़ हो जातेहै (३) इसकी छाल ग्राही होतीहै (४) इसके काथके गंडूष (कुल्ले) करनेसे मसूडे और दांत दृढ हो जातेहै (५) इसकी छालका हिम पिलानेसे मूत्राशय और मूत्रकी नालीकी झिल्लीका निस्राव बन्ध होजाताहै (६) छाल का काथ पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (७) इसके फल और पुष्पोंका दूसरी ग्राही औषधियोंके साथ काथ बनाके उससे चांदी और घावोंको धोतेहैं (८) पुष्पोंके चूर्णको सूंघनेसे नाकमेंसे बहुतसा दूषित जल बहके मस्तकपीड़ा मिटजातीहै (९) स्त्रियोंके गर्भ रहनेके लिये इसकी छालका प्रयोग बहुत किया जाताहै (१०) भभके में इसके पुष्पोंका अर्क निकालते है वह बहुत सुगंधयुक्त और उत्तेजक होताहै (११)इसके बीजोंको पीस बत्ती बनाके गुदामें देनेसे स्वाभाविक बद्धकोष्ठ मिटताहै (१२) बच्चोंका बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये इसके बीजोंकी मीगी की बत्ती देनी चाहिये जो आवश्यकता होतो इस बत्तीमें पुराना घी मिला देना चाहिये, इस बत्तीको गुदामें देनेके १५ मिनट पीछे मलकी कठोर गांठें दस्तके साथ निकल जातीहै (१३) इसके पकेहुए फलकी गिर कुछ मीठी और ग्राही है इसलिये पुराने आमातिसारको मिटानेकेलिये काममें आतीहै (१४) इसके फलका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१५) इसकी लकड़ीके कोयलों का मंजन करनेसे दात साफ और दृढ रहतेहै (१६) इसके फलकी गुठली मुंहमें रखनेसे दात दृढ होजातेहै (१७) इसकी छालके चूर्णमें बराबर बूरा मिलाके फकी देनेसे गर्भाशयसे पानीका बहना बन्ध होताहै (१८) इसके

प मधुर, शीतल, कषैले, स्निग्ध, ग्राही, विषद और वातलहै (१६) इसके
लोंका मुरब्बा बनाया जाताहै। इसके बीजोंको यंत्रमें दबाके तेल निकालतेहैं।
र तेलसे भोजनके पदार्थ बनाये जातेहै। इसके पुष्पोंमेंसे उड़नेवाला तेल
कलता है।

संख्या (३५०)

(सं०) बदरी, कंटकी, कर्कन्धूः, वक्रकण्टः।

रवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
ड़ी, बोर	बेर जंगका पड़	बोरडी	बेरी चेझाड	कुलगाछ	बेर	गोट्टेच ट्टु

विडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
यलन्दु	यलचीगिड	नबक	कुनार	Zizyphus jujuba Z mauritiana	The Indian jujube or chinese date Zizyphus

॥ स्थान—बेरीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं और अपने आप
ी लगतेहैं।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका वृक्ष ३० से ५० फुट ऊंचा
ोताहै। इसकी पेदड़ छोटी, खड़ी परतु बहुत सीधी नहीं होतीहै, इसकी गुलाई
ंसे ८ और कभी कभी १० फुटकी होतीहै, इसकी बहुतसी शाखें चारों ओर
कलतीहैं। इसकी छाल आधइंच मोटी गहरी, भूरी और प्रायः काले रंगकी
ोतीहै, उसमें छोटी २ दरारें होतीहै, जो छालके पार निकल जातीहै, फागुन
ौर चैत्रमें इसके पुराने पत्ते गिरते जातेहै और नवीन निकलते जातेहै। अ-
ाढ़ श्रावणमें इसके पत्ते दुबारा निकलतेहैं बहुधा चैत्रसे जेठ तक इसके पुष्प
लगा करतेहै परन्तु दूसरी ऋतुओंमें भी पुष्प लगतेहै मृगशिर से फागुन तक
सके फल पकतेहैं। इसकी डालियोंके अन्तके भाग लटक जातेहैं, इसकी छोटी
ौर बड़ी टहनियोंमें दो दो कांटे लगतेहैं उनमें एक सीधा और दूसरा मुड़ा
हुआ होताहै। इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे बहुधा गहरे हरे रगके और चिकने
होतेहैं और नीचेकी ओरसे कुछ सफेद होतेहै आकारमें कुछ लम्बे, गोल होते

है। इसके कुछ हरे पीले, पुष्प लगतेहैं। इसके फल गोल और कुछ लम्बे हरे रंगके होतेहैं ये पकजानेपर नारंजी या लाल रङ्गके होजातेहैं, फलोंकी गुठली कठोर होतीहै और उसमें बहुधा दो मींगी निकलती है। इसके एक प्रकार का गोंद और लाख लगतीहै। इसकी छालमेंसे लाल रंग निकाला जाताहै। इसकी मींगीमेंसे तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) वेर—मीठे, कषेले, खट्टे, रोचक, उष्ण, ग्राही, पचनेमें भारी और कुछ सारकहै (२) रूक्षता (खुश्की) और थकावट मिटानेके लिये पुराने वेर खिलाने चाहियें। ये पचनेमें लघुहै (३) पित्तसम्बन्धी रोग मिटानेके लिये इनकी मींगी खिलानी चाहिये (४) मिश्रीकी चासनी में लौंग और वेरकी मींगी मिलाके चटानेसे खाली होवड या जी मचलाना मिटताहै (५) ज्वरमें पित्तकी तृषा मिटानेकेलिये इसकी मींगी और मलहटीके चूर्णको थोडा२ मुहमें डालते रहना चाहिये (६) धूपमें सुखाये हुए वेर और इसीकी जडको ओटाके पित्तज्वरमें पिलाना चाहिये (७) पेमली वेर खानेसे रुधिर शुद्ध हो जाताहै (८) आधे पकेहुए वेरोंके नोंन, मिरच और जीरा लगाके खानेसे पाचन शक्ति बढ़तीहै (९) इसकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१०) ज्वर मिटानेकेलियेभी छालका काथ पिलाना चाहिये (११) ब्राह्मीके साथ इसकी जड़की छालका काथ बनाके पिलानेसे प्रलाप मिटताहै (१२) पुराने क्षत और फोडोंपर छालका चूर्ण भुरकातेहै या लेप करतेहैं (१३) मूत्र निकलते समय जो पीडा होतीहै उसको मिटानेकेलिये इसके पत्तोंको पीस नल, इन्द्री और पीठके नीचे कमरमें लेप करना चाहिये (१४) अतिसार मिटानेके लिये कच्चे वेर खिलाना चाहिये (१५) गूलर और वेरीके कोमल पत्तोंको पीसके लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (१६) फोडे, पीपदार फोड़े और अदीठको जल्दी पकानेके लिये इसके कोमल पत्ते और टहनियोंको पीस गर्म करके लेप करना चाहिये (१७) इसकी और बंबूलकी जडकी छालका हिम, फांट या काथसे कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (१८) इन दोनोंका क्वाथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१९) उपदंशसे या रसकपूर आदि औषधिसे जो मुखपाक होताहै उसको मिटानेके लिये उक्त दोनोंकी छालके हिम, फांट या काथसे कुल्ले करातेहैं (२०) इसके

पत्तोंको पीस कनपटियों पर लेप करनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (२१) इसके और नीमके पत्तोंको पीसके लगानेसे बाल बढतेहैं (२२) इसके कोमल पत्तों को नींबूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाहज्वर छूटताहै. (२३) इसके पत्तोंके कल्कमें सैंधानमक मिला इसको घीमें तलके खिलानेसे स्वरभंग, श्वास और कास मिटताहै (२४) इसके पत्तोंपर मैनसिलका लेपकर धूपमें सुखा दूधमें भिगोके उनका धूम्रपान करानेसे कास और कुत्ताखासी मिटती है (२५) इसके और नीमके पत्ते पीसके लगानेसे नासूर मिटताहै (२६) इसके ३ मासे पत्ते और २ मासे जीरा पानीसे पीसके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२७) बेरकी गुठलीकी मींगीको गुड़के साथ खानेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (२८) इसके पत्तोंको पीसके मलनेसे पुस्तशाय मिटतीहै (२९) इसकी कोमल कोंपलोंको दहीके साथ पीसके कई वेर मलनेसे अग्निदग्धका दाग मिटताहै (३०) बेरकी गुठली के बाहिरके भागको गुड़के साथ खानेसे सब प्रकारकी मसूरिका पक जाती है।

संख्या (३५१)

(सं०) भूबदरी, सूक्ष्मबदरी, वल्लीबदरी, क्षितिबदरी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
झड़बोर	झड़बेरी	चणियाबोर	भूयबोर	मेटोकुल	झाडीबेर	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		नबूक, सहराई	कुनार, दश्ती	Zizyphus nummularia Z' Lotus.	

स्थान—झड़बेरीके झाड पंजाब, सिंध, गुजरात, दक्खन, राजपूताना और पश्चिमोत्तर हिंदुस्थान आदि कई प्रदेशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसके झाड ६ से ८ और कभी कभी १५ फुट ऊंचे बढ़ जातेहैं। इसके सबके सब पत्ते नहीं गिरतेहैं। उष्णकालके प्रारम्भमें इसके पुराने पत्ते, बहुधा गिर जातेहैं और गिरनेके पीछेही नवीन पत्ते निकल आतेहैं

इसका फल गोल होताहै जो पकनेपर लाल रंगका और चमकदार होजाताहै। इसकी कठोर गुठलीमें दो खाने और उनमें दो मींगी होतीहै इसकी छोटी डालियों के दो दो तीखे कांटे लगतेहैं जिनमें एक सीधा और दूसरा मुड़ाहुआ होताहै। इसके पत्ते कुछ गोल और छोटे होतेहैं। इसके १० से २० तक पुष्पोंके बहुतसे गुच्छे लगतेहैं।

फूलने फलनेका समय—फागुनसे जेठतक इसके पुष्प लगतेहैं आसोजसे पोषतक इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके फल खट्टे, कषैले, कुछ मधुर, स्निग्ध, रोचक, तिक्त शीतल और ग्राहीहै और पित्तके रोगोंको मिटातेहैं (२) बिगड़े हुए व्रणों पर इसकी जड़की छालका पुल्टिस बांधते हैं (३) इसकी जड़ की छाल के काथसे कुल्ले करने से सब प्रकारका मुखपाक मिटता है (४) मीठे तेलके साथ इसके पत्तों को पीसके अग्नि दग्धपर लगाना चाहिये (५) बेरकी राखको जलके साथ शरीरपर मलने से रंग सुधरता है (६) बंबूलकी और इसकी जड़की छालको औटाके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै।

संख्या (३५२)

(सं) बंधूक, बन्धुजीवक, मध्यन्दिनः, माध्याह्निकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दुपहरिया	दोपहरिया	बपोरिया	दुपारी	बाधुलिफुलेर गाछ	गुलदुपहरिया	मकेन

द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कौजिशडि	बदुगे	——	——	Pentapetes phoenicia. Domboya-p	The flame tree of the woods.

स्थान—इसका झाड़ हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें बहुत होताहै।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसके चमकदार किरमिची रंगके दो इंच लम्बे पुष्प लगतेहै। इसके पत्ते कुछ लम्बे होतेहैं। इसके बारह महीनेही पुष्प लगतेहैं, परन्तु वर्षा ऋतुमें तो अवश्य लगतेहैं।

प्रयोग—(१) दुपहरिया-ग्राही, लघु, कुछ उष्ण और ज्वरनाशक है (२) इसके पुष्पोंकी पखडियोंका रस नाकमें टपकानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (३) इसके दो तोले पुष्पों को घीमें तल, ४ रत्ती जीरा और ४ रत्ती नागकेशरके साथ पीस उनमें मक्खन और मिश्री मिला, गोली बनाके दिनमें दो बेर देने से आमातिसार मिटता है (४) इसकी २, २॥ मासे ताजी जड़को थोडी पीपलके साथ पीसके तीन-२ चार २ घंटेके अंतरसे देनेसे तीव्र आमातिसार मिटताहै (५) इसकी जडका स्वाद अच्छाहै।

संख्या (३५३)

(स०) वंध्याकर्कोटकी, देवी, मनोज्ञा, नागारिः ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बाझककोडा	बाझककोडा	वाझकंटोला	वाझकटोली	तितकाँकड़ी	वाझखाखसा	ईश्वरी

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	ईश्वरि			Momordica dioica. M. Missionis.	

स्थान—बांझ ककोडेकी बेलें हिन्दुस्थानमें बहुधा सबठौर होतीहै।

प्रयोग—(१) बांझककोडा-कड़वा, चरपरा, लघु, उष्ण, शोधन और विषनाशकहै (२) इसका कंद बहुत चेपदार होताहै स्त्री जातिकी बेलका कंद पुरुष जातिकी बेलसे अधिक चेपदार होताहै (३) इसके कदका मुरब्बा खिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (४) इसकी मात्रा ७॥ मासे या कुछ अधिक दिनमें दो बेर देना चाहिये (५) आतोंके कई रोगोंमें इसके कदका मुरब्बा दिया जाताहै (६) मस्तक सम्बन्धी रोगोंकी यह बहुत उत्तम औषधिहै (७) नारियल की गिरी, कालीमिरच रक्तचदन और दूसरी औषधियोंके साथ इसके कदको पीसके लेपकरनेसे मस्तककी सब प्रकारकी पीडा मिटतीहै (८) विसमरे (छिपकिली) के मूतसे जो शोथ हो जातीहै उसको मिटानेके लिये इसकी जड़

के रसका लेप करना चाहिये (९) इसके सूखे फलके चूर्णको सूंघनेसे छींक बहुत आतीहैं (१०) स्त्रीजातिके कंदकी फकी देनेसे मूखी खासी तर हो जातीहै (११) सर्पके काटनेसे जो घाव हो जातेहैं उनपर पुरुषजाति की बेल के कंदका लेप करना चाहिये (१२) ज्वर छूटनेके पीछे उस रोगीको इसके कच्चे फलका शाक खिलाना चाहिये (१३) इसके कंदको पानीके साथ घिस के लेप करनेसे सर्प, बिच्छू और बिल्ली आदिका विष उतरताहै इसके १ तोले कंदको मधु और शक्करके साथ चटानेसे पथरी गलजातीहै (१४) इसके कंद के छालीके मूत्रकी भावना दे काजीके साथ पीसके सुंघानेसे विषकी मूर्च्छा मिटती है।

संख्या (३५४)

(सं०) बला, वाट्यालकः, भद्रोदनी, समंगा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खरेंटी	खिरैटी	खरेटी	लघुचिकणा	बेढेला	खरैहटी	प्रिम्मुत्त,वपुलगमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	चिट्टहरळु गिड			Sida Cordifolia & herbacea.	The horn bell leaved sida.

स्थान—इसके बूंटे हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) बल—कडवी, अत्यन्त मीठी, चरपरी और उष्णहै-बल और वीर्य्यको पुष्ट करतीहै (२) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पसीना आताहै, पेटकी पीड़ा मिटतीहै और शरीरकी शक्ति बढ़तीहै (३) इसकी जडके काथमें पीपल बुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (४) रोग मिटनेके पीछे जो निर्बलता रहती है उसको मिटानेके लिये इसकी जडकी छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला फकी देके ऊपर दूध पिलाना चाहिये (५) इसका हिम पिलानेसे पसीना आताहै (६) सोंठके साथ इसका फांट करके पिलानेसे ज्वर उतरताहै (७) इसकी जडके काथमें जायफल घिसके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (८) इसके

पत्तोंको कालीमिरचके साथ घोट छानके पिलानेसे दाह, और मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्र सम्बन्धी रोग मिटतेहै (९) इसकी जडकी छाल, लौंग, जावित्री और मिश्रीको पीस दूधमें छानके पिलानेसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (१०) इसकी जड़को कबूतरकी बींटके साथ पीसके लेप करनेसे फुंसियां फट जातीहै (११) इसके पत्तोंके तिल्लीका तेल चुपड़ अग्निपर तपाके बांधने से फोड़े शीघ्रतासे पकतेहै (१२) इसके और बंबूलके पत्तोंकी पीस टिक्की बनाके दुखती हुई आंखपर बांधना चाहिये (१३) इसकी जडका काथ पिलानेसे मूत्र अधिक लगकर गठिया मिटतीहै (१४) इसके पत्तोंको भिगो, मल छान, मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) इसकी जड गलेमें बांधनेसे ज्वर छूट जातीहै (१६) बलबीजका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (१७) बलबीजके चूर्णमें मिश्री मिलाके दूधके साथ फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१८) बलबीजोंका काथ पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (१९) मुरब्बेकी हरड खिलाके ऊपर बलबीजका काथ पिलानेसे दस्तकी बार २ शंकाका होना मिटताहै (२०) इसकी जडका हिम पिलानेसे दाह मिटतीहै (२१) इसके हिमकी साथ अतीसकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (२२) इसकी जडको सोंठकी साथ औटाके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (२३) इसकी जडके काथपर सेकी हुई हींग और सेधानमक बुरकाके पिलानेसे पक्षाघात और अर्दित मिटताहै (२४) वातव्याधि मिटानेके लिये जो तेल बनाये जातेहैं उनमें इसकी जड मिलाई जातीहै (२५) इसकी जडकी छालके चूर्णकी फकी लेके ऊपर मिश्री मिलाहुआ दूध पीनेसे चिनग मिटतीहै (२६) इसकी जडकी छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला, १ तोलेकी फकी देके ऊपर दूध पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (२७) इस चूर्णको मधु और दूधके साथ लेनेसे भी श्वेत प्रदर मिटताहै (२८) इसके काथमें बराबर दूध मिलाकर पिलानेसे अर्दित मिटताहै (२९) इसकी ५ मासे जड पानीके साथ पीसके पिलानेसे विषूचिका मिटतीहै (३०) इसके चूर्णको मधु और शकर के साथ लेनेसे स्वरभंग मिटताहै (३१) इसका काथ पिलानेसे अवबाहुक रोग मिटताहै (३२) इसके रस या काथसे सिद्ध किये हुए एरंडके तेलको दूधमें डालके पिलानेसे आध्मान, शूल, और अंडवृद्धि मिटतीहै (३३) इसका यूष

बनाके पिलानेसे-वातरोग मिटतेहैं (३४) इसका-काथ और कल्क एक भाग दूध चारभाग, इनसे तेल सिद्ध कर, ऐसे दश बेर सिद्धकिये हुए तेलके सेवनसे वातरक्त और रक्तपित्त मिटताहै (३५) पुष्प नक्षत्रके दिन इसकी जडका हाथमें बांधनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै।

संख्या (३५५)

(सं०) अतिबला, वल्या, बलिका, विंककता ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
डाबी	कंघी, कक्कहिया	खपाट्य	विकंकती	पीतवाकुलि	कंघी	पेद्दमुत्तवनूगुवेंड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तुथियलै	हिरिचिट्टहर-लुगिड	मश्तुलगूल	दरख्तेशानाह	Abutilon indicum sida indica	

स्थान—इसके छोटे गुल्म हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें सब ठौर होतेहैं । इसके बीजोंमेंसे चेप बहुत निकलताहै ।

प्रयोग—(१) अतिबला-तिक्त, चरपरी, मधुर, खट्टी और कृमिनाशक है (२) इसके पत्तोंमेंसे चेपदार गाढा रस निकालके औषधियोंकी तीक्ष्णता मिटानेके लिये पिलातेहै (३) इसकी जडका हिम पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटतीहै (४) कुष्ठके रोगीको इसका हिम पिलाना चाहिये (५) इसके बीज सारकहै और अर्शकी पीड़ा मिटानेके लिये इनकी फकी दीजातीहै (६) इसके बीजोंका चेप चरपराहटको मिटाता है (७) इसके बीज और अडूसेको ओटाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (८) अतिसार मिटानेके लिये इसकी छालका काथ पिलाना चाहिये (९) इसके हरेक अंग छातीके रोग मिटानेके काममें आतेहै (१०) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसके पत्तोंका हिम पिलाना चाहिये (११) इसकी छाल और बीजोंका हिम मूत्रवर्द्धकहै (१२) इसकी छालके काथसे कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा और

मसूडोंका ढीलापन मिटताहै (१३) उष्ण दूधको इसकी टहनीसे हिलानेसे जम जाताहै जम जानेके पीछे उसमेंसे जो जल निकलताहै उसको पिलानेमे अर्श मिटताहै (१४) इसके बीजोंका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (१५) इसके पत्तोंको पकाके खानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध हो जाताहै (१६) इसकी जड़का हिम पिलानेसे दाहके साथ वार २ मूत्र आना बन्ध होजाताहै (१७) इसके पत्तोंके हिममें मिश्री मिलाके पिलानसे मूत्रके साथ रुधिरका आना बन्ध हो जाताहै (१८) २ से ७॥ मासे इसके बीजोंको दूसरी सारक औषधियोंके साथ देनेसे वे सारकपनका काम करतेहैं (१९) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२०) पुरानी खासीको मिटानेकेलिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये (२१) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे मूत्राशयकी सूजन उतरतीहै (२२) बच्चोंकी गुदाके इसके बीजोंकी धूनी देनेसे सफेद, छोटे और गोल कीडे, (जिनको मारवाडी में चुरखिय कहतेहैं) मर जातेहै (२३) कन्याके हाथसे कते हुए सूतसे इसकी जडको स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे गर्भका गिरना बन्ध हो जाताहै (२४) इसके ७ पत्तोंको पानीके साथ पीस उनका रस निकाल बूरा मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (२५) इसका ७ मासे चूर्ण शहदके साथ चाटनेसे और दाल चावलका पथ्य खानेसे कामला रोग मिटताहै (२६) घावपर इसके पत्ते बाधनेसे वह भर जाताहै ।

संख्या (३५६)

(सं०) नागवला, चतुःफला, गांगेरुकी, झषा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गंगेरण	गुलशकरी	गंगेटी	नागवला	गोरक्षचा-कुल	गंगेरण(न)	जिजि(वि)लिके चट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	जिबिलिक			Sida spinosa S Alba & alnifolia	

स्थान—गंगेरन हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें अर्थात् पश्चिमोत्तर देशसे सीलोन तक होतीहै ।

प्रयोग—(१) गंगेरन खट्टी, मधुर, कषेली, पचनमें भारी, चरपरी और उष्णहै (२) इसके पत्ते औषधियोंकी चरपराहटको मिटातेहैं और ज्वरमें शान्ति पैदा करतेहैं (३) इसके पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसके पिलानेसे नया और पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४) मूत्रकी दाह मिटानेकेलिये इसकी जडका हिम पिलाना चाहिये (५) इसकी जडका काथ पिलानेसे पसीना आताहै (६) इसकी जडकी छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला एक तोले भरकी फक्की लेके ऊपर दूध पीनेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (७) इसके पत्तोंको जलमें भिगो मल छानके पिलानेसे प्रमेह मिटताहै (८) इसकी जडका काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (९) इसकी जडको पानीके साथ पीसके स्तनोंपर लेप करनेसे स्तन कठोर होजातेहैं (१०) इसकी जडको दूधमें औटाके पीनेसे हृद्रोग, श्वास और कास मिटताहै (११) जडके चूर्णको दूधके साथ फक्की देनेसे श्वास और कास मिटताहै ।

संख्या (२५७)

(सं०) महाबला, वर्षपुष्पा, पीतपुष्पी, सहदेवी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सहदेवी(ई)	सहदेवी(ई)	सहदेवी	महाबला	पीतबेडेला	सहदेई	सहदेवि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
सहदवि	सहदवि			Sida Rhombifolia S. canariensis	The ash colored fleal bane

स्थान—महाबला हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होतीहै ।

प्रयोग—(१) सहदेवी मधुर, बल्य, वृष्य और त्रिदोषनाशक है (२) इसके पंचांगका काथ पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै (३) इसके बीजोंका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (४) इसके बीजोंको

घोट छानके पिलानेसे विष उतरताहै (५) इसके पञ्चागको घोट छानके पिलानेसे चिनग मिटतीहै (६) इसको ओटाके पिलानेसे मूत्राशयकी नशोंकी ऐंठन मिटतीहै (७) आंखोंके ऊपर इसके पुष्प बांधनेसे आंखकी ललाई मिटतीहै (८) इसकी जडको ओटा छानकर पिलानेसे गठिया मिटताहै (९) इसकी जडको सोठके साथ ओटाके पिलानेसे विषमज्वर छूटताहै (१०) इसकी जडके काथपर पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे शीतवात, कफवात और दाह मिट जातीहै (११) इसको ऋतु समयमें पिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (१२) कंठमें बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (१३) कपिलागौके दूधके साथ इसका सेवन करनेसे बन्ध्यापन मिटताहै (१४) घृतके साथ इसका सेवन करनेसे शून्यवाय मिटतीहै।

संख्या (३५८)

(सं०) राजबला, प्रसारणी, चारुपर्णी, प्रतानिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पसरन	नारी	चादवेल	गधभादल्या	क्षीप	गोतेमगोरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
	सौरणेगिड			Paederia foetida P. Ovata	

स्थान—यह—मध्य और पूर्वी हिमालय, बंगाल, आसाम आदि देशोंमें होतीहै।

पहिचान—इसकी बड़ी भारी बेल होती है।

प्रयोग—(१) राजबला सारक, उष्ण, वृष्य, चरपरी, कड़वी, लघु, पचनेमें भारी और उष्णवीर्य है (२) रोग मिटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये और रोगीकी नीरोगता बढ़ानेके लिये इसके पत्तोंको ओटाके उनका झोल पिलाना चाहिये (३) इसके पंचांगको ओटाके पिलानेसे और मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (४) इसकी जड़ वामकहै (५) इसके पत्तोंका ३॥ मासे

स्वरस पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (६) इसके पत्तोंका शाक बनाके खानेसे निर्बलता मिटतीहै और नीरोगता बढतीहै (७) इसके पत्तोंको रोगके विना भोजनके काममें नही लाने चाहिये।

संख्या (३५६)

(सं०) वालकं, ह्रीवेरं, बर्हिष्टं, जलम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नेत्रवालो	सुगंधवाला	खोकोवाळो	गधवाला	गधवाला	नेत्रवाला	कुरु वेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
कुरु वेर	मुडिवाळ			Pavonia odorata Hibiscus odoratus	

स्थान— सुगंधवालेके पेड़ पश्चिमोत्तर देश, सिन्ध, बांदा, पश्चिमभाग्य-द्वीप और सीलोनतक पैदा होते है। यह उत्तम सुगंधकेलिये बागोंमें बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) सुगंधवाला–मधुर, कडवा, दीपन, पाचन, शीतल, लघु और रूक्ष होता है। कफ, पित्त, वमन, तृषा, कुष्ठ, अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, हृद्रोग, लालास्राव, रुधिरविकार, रक्तपित्त और कंडूको मिटाताहै (२) इसकी सुगंधित जड चरपरी ठण्डी और पेटका दर्द मिटानेवालीहै (३) ज्वर, पित्तशोथ और भीतरके यंत्रोंमेंसे रुधिरके वहनेको रोकने के लिये इन रोगोंकी दूसरी औषधियोंमें इसको मिलाके देना चाहिये (४) सुगंधवाला और बीलागिरकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै (५) इसके पानीसे निर्बल मनुष्यकी तृषा शान्त होतीहै (६) सुगंधवालेको शक्कर और मधुके साथ चटाके चांवलोंका पानी पिलानेसे बालकोंका रक्तातिसार, श्वास और कास मिटताहै (७) २ तोले नेत्रवालेको ३ पाव जलमें औटा, आधा रख, छानके पिलानेसे संग्रहणी मिटतीहै (८) इसको बकरीके ताजे दूध में पीसके इन्द्रीपर मलनेसे उसकी शक्ति बढतीहै (९) शीतला निकलने के पहिले इसको नींबूके रसके साथ चटानेसे शीतला कम निकलतीहै।

संख्या (३६०)

(सं०) ब्रह्मदण्डी, अजदण्डी, कंटपत्रफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डि
द्राविड़ी	**कर्नाटकी**	**अरबी**	**फारसी**	**लैटिन**		**अंग्रेजी**
ब्रह्मदण्डि				Trichol pis glabberima. Betratula Indica.		

गुण—(१) ब्रह्मदण्डी- चरपरी, उष्ण, वृष्य और कड़वीहै वातरोग, शोथ और कफको मिटातीहै और स्नायुजालकी शक्तिको बढातीहै ।

संख्या (३६१)

(सं०) ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्यनामा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ब्राह्मी,	बरभी, ब्रह्मी	विद्याब्राह्मी	ब्राह्मी,	ब्रह्मशाक	ब्रह्मी	
द्राविड़ी	**कर्नाटकी**	**अरबी**	**फारसी**	**लैटिन**		**अंग्रेजी**
				Herpestis monnierr H spalthplata		Indian penny wort

स्थान—ब्राह्मी हिन्दुस्थानमें पंजाबसे सीलोन और सिंघापुर तक नदी नालोंके पास या तालावके किनारे आर्द्र स्थानोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) ब्राह्मी-शीतल, कपैली, कड़वी, सारक, पचनेमें हल्की, रस और विपाकमें मधुर, और पिच्छलहै आयु, बुद्धि, स्मृति और मूत्रबद्धकहै (२) औषधी लेनेतक जो बद्धकोष्ठ मिटता रहे ऐसे बद्धकोष्ठसे, जिसका मूत्र बन्ध हो जावे ऐसी दशामें विशेष करके इसका प्रयोग करना चाहिये, (३) ब्राह्मीके रसको घासके तेलमें मिलाके, गठियाकी पीड़ापर, मर्दन करना

चाहिये (४) ब्राह्मी स्नायुजालकी शक्ति बढातीहै (५) ब्राह्मीका क्वाथ पिलानेसे गलेका भारीपन मिटताहै (६) उन्माद और अपस्मार मिटानेके लिये ब्राह्मीके योगसे कई प्रकारके घृत बनाये जातेहैं (७) इसके पत्तोंके ६ मासे ताजे रसमें २॥ मासे कूठ और मधु मिलाके पिलानेसे उन्माद मिटताहै (८) इसके पत्तोंको घृतमें तलके खिलानेसे स्वरभंग मिटताहै (९) धातुओं का विष उतारनेके लिये इसकी जडका प्रयोग किया जाताहै (१०) इसके पत्तोंका ३॥। मासे रस पिलानेसे बच्चोंको वमन और विरेचन होके प्रतिश्याय और तीव्र कास मिट जाताहै (११) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे मसूरिका मिटतीहै ।

संख्या (३६२)

(सं०) मंडूकपर्णी, ब्रह्ममांडूकी, सुप्रिया, दर्दुरच्छदा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
ब्राह्मीभेद	ब्रह्ममाडूकी, चमेली	खडभरामी	ब्राह्मी	थुलकुडि	मींडकी	मण्डूकब्रह्म कुराकु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वल्लारइ	वदलगा			Hydrocotyle asiatica H. Wightiana	Asiatic penny wort

स्थान - मंडूकपर्णी हिन्दुस्थानके आद्रस्थानोंमें बहुत ठौर पैदा होतीहै ।

पाहिचान—इसके ताजे पत्तोंमें किसी प्रकारकी गंध नहीं आतीहै परंतु जब उनको हाथसे मलें तो उनमें मंद सी चरपरी सुगंध आने लगतीहै ।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, लघु, सारक और रस और विपाकमें मधुर है (२) इसको सूर्यकी धूपमें अथवा अग्निके योगसे सुखानेसे इसमें जो उडने-वाला तेलहै वह उड जाताहै, इस औषधिमें प्रयोगका मुख्य पदार्थ तेलहीहै । इसलिये बहुत सावधानीसे छायामें सुखाये हुए इसके केवल पत्तोंके चूर्णको औषधि के काममें लातेहैं । इनके चूर्णको किसी शीशीमें ऐसा बन्द करना चाहिये कि उसमें शील नहीं पहुंचने पावे । ५ सेर ताजे पत्तोंका प्रायः २ सेर चूर्ण कुछ पीलिरा हरे रंग

का होताहै (३) इसके ताजे पत्तोंका स्वाद कडवा और बुरा होताहै परंतु भली भांति सूखजाने पर वहभी नहीं रहताहै (४) कोढ और उपदंशके प्रारम्भमें यह औषधि गुण करतीहै परंतु बढीहुई दशामें विशेष गुण नहीं करतीहै यह केवल उस कुष्ठमें गुण करतीहै कि जिसमें छोटी २ फुन्सियां होके फैलती जातीहै (५) बहुत से रोगोंमें मूत्रवृद्धि करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (६) रजोधर्म को शुद्ध करनेके लिये बहुधा इसका प्रयोग किया जाताहै (७) जो रोग सब शरीरमें हो और एक अंगमें विशेष हो तो इस औषधिको खिलाने पिलाने के सिवाय इसके चूर्णका उस ठौरपर मर्दन करना, पुल्टिस बांधना या लेप करना चाहिये (८) विगडे हुए फोडेपर इसका चूर्ण बुरकाना चाहिये और २॥ से ४ रती तक चूर्णकी फकी नित्य देना चाहिये और इसका पुल्टिस भी बांधना चाहिये (९) पानीसे धुलीहुई और अच्छे हवादार मकानमें छायामें पूरी सुखाई हुई जड और पत्तोंका ५-५ रती चूर्ण दिनमें दो तीन वेर देना चाहिये (१०) २० से ४० वर्षकी आयुवाले कोढी मनुष्यको इसके १० १० रती चूर्णको नित्य दो सप्ताह तक देके फिर २॥ रती बढाके एक सप्ताह तक देना चाहिये ऐसे हर सप्ताहमें २॥-२॥ रती चूर्ण बढाते हुए ३० रती तक बढाके एक महीनें तक ३०-३० रती देना चाहिये फिर उसी क्रमसे २॥-२॥ रती प्रति सप्ताहमें घटाते हुए ५ रती तक लाके छोडदेना चाहिये, और एक महीने तक बन्द रखना चाहिये, इस रीतिसे एक प्रयोग कर फिर दुवारा ऐसेही करना चाहिये, इस चूर्णको सोते समय उष्ण जलके साथ लेनेका प्रारम्भ करे जब वह १५ रतीतक पहुंच जावे तब इसीके दो बराबर विभाग करके एक प्रातःकाल और दूसरा सायंकालको लियाकरे इसी रीतिसे बढाते हुए उक्त प्रमाण तक बढाना चाहिये और उसी रीतिसे घटाके छोड देना चाहिये (११) इसका लेप बनानेकी यह रीतिहै कि पत्तोंको ठंढे जलसे महीन पीसकर लेप करनेयोग्य गाढा करलेना चाहिये, लेप बहुत पतला नहीं रखना चाहिये (१२) इसका शर्बत बनानेकी यह रीतिहै कि इसके ८ तोले चूर्णको सवासेर पानीमें बहुत मंद आंचसे औटा छानें उसमें सेरभर बूरा मिलाके शर्बत बना लेना चाहिये इस शर्बतकी सवा तोलेकी मात्राहै और इसका प्रयोग भी उक्त रीतिसे करना चाहिये, त्वचाके रोगोंमें रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत उत्तमहै (१३)

इसका द्रवसार बनानेकी यह रीतिहै कि इसके ४॥ तोले चूर्णका २॥ तोले द्रवसार बना लेना चाहिये और उसकी मात्रा ५ से ७॥ रत्ती तक दिनमें तीन बेर देना चाहिये (१४) इसका क्वाथ बनानेकी यह रीति है कि इसके सूखे पोधेके ८ तोले पंचांगको सवासेर जलमें औटाकर अढाई पाव रख लेना चाहिये (१५) स्नान करनेके लिये इसका जल बनानेकी रीति—इसके ४ सेर ताजे पोधेको गर्म जलमें औटा छानि उस जलमें बैठनेसे त्वचा सम्बन्धी रोगों में बहुत उपकार होताहै (१६) इसके पत्ते और मक्खनको जलमें औटा सब पानी जलाके उनको चटानेसे मस्तिष्क सम्बन्धी और उन्मादके रोग मिटतेहैं।

संख्या (३६३)

(सं०) भल्लातकः, अरुष्करः, अग्निमुखः, स्फोटहेतुः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भिलावो	भिलावा भला	भिलामा	बिनवा	भेला	भिलावें	जीडिगिंजा

द्राविड़ी	कर्नाटकनी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंगरेजी
शेनां कोट्टै	गेरुबीजा	हब्बुलफहम	बलादुर	Semecarpus, Anacardium S latifolius	Marking nut.

स्थान—भिलावेके वृक्ष हिमालयमें सतलज से पूर्व की ओर आसामतक और हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ३० फुटतक होतीहै। इसकी पेड़ सखी होतीहै उसकी गुलाई ४ फुटकी होतीहै। इसकी छोटी शाखाओंके नीचे कुछ तीखे रुंए होतेहैं। इसके ६ से १८ इंच लम्बे पत्ते डालियोंके अन्तमें लगे रहते हैं, उनका शिरा गोल होताहै। इसके पुराने पत्ते माघमें गिरजातेहैं और फागुनमें नवीन आजातेहैं, इसकी छाल एक इंच मोटी धुएके रंगकी सफेद और कुछ काली होतीहै। इस वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलने का समय—इसके पत्ते निकलनेके पीछेही बहुधा पुष्प लग जातेहैं परन्तु इसके सिवाय और भी कई बेर पुष्प लगतेहैं। कार्तीसे

माघतक इसके फल पकते है। इसके फलका छिलका रंगतके काममें आता है। १०० तोले भिलावेकी गिरमेंसे ३२ तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) इसका पकाहुआ फल—कपैला, रस और विपाक में चरपरा, मधुर, उष्ण, उत्तेजक, पाचक, स्नायु बलवर्द्धक और फफोले पैदा करने वाला है। मंदाग्नि, त्वचाके रोग, अर्श और स्नायु जालकी निर्बलता मिटानेके लिये काममें आताहै (२) गंडमाला, उपदंश और कुष्ट सम्बन्धी रोगोंमें इस की बहुत थोड़ी मात्रा देनी चाहिये (३) भिलावेके छिलकेका रस चरपरा होताहै उसमें छाला उठानेकी बड़ी शक्तिहै (४) चोटके झूठे चिन्ह पैदा करनेके लिये यह त्वचापर लगादिया जाता है, परन्तु चोट लगनेसे जो नील पडजातेहै उसमें और इसके लगानेसे जो चिन्ह होतेहैं उनमें यह अन्तर है कि त्वचापर जिस ठौर यह लगाया जाताहै वहांपर छोटे २ फफोले पैदा होजाते है और चोट लगनसे जो नील पड़तीहै उसपर फफोले नहीं होतहै (५) गठिया और मोचपर इसका तेल लगाया जाताहै (६) तालू की छत (काग) लटक जानेसे जो खासी पैदा होतीहै उसको मिटानेके लिये चराककी लोयमें भिलावेको जलानेसे जो तेल निकलता है उसको पावभर दूध में मिलाकर पिलाना चाहिये (७) भिलावे के छिलकेका रस उष्ण और रूक्ष है (८) वह सब प्रकारके त्वचा के रोग, पक्षाघात, अपस्मार और स्नायु जालके दूसरे रोगों में दिया जाताहै (९) इसकी मात्रा १ मासेसे २ मासे तककीहै (१०) इस को तेल या पिघलाये हुए घीमें मिलाके देना चाहिये (११) ठंढी शोथपर इसका वफारा लगाया जाताहै (१२) मुहकी लाल बन्ध करनेके लिये इसके क्वाथस गंडूप (कुल्ले) कराने चाहिये (१३) नपुंसकता मिटानेके लिये इसकी धुनी देनी चाहिये (१४) काजूके तेलके गुण इसके तेलसे मिलतेहै (१५) इसको त्वचा पर लगानेसे १२ घंटेमें फफोले पैदा होजाते हैं (१६) इस के तेलकी अधिक मात्रा देनेसे पीडाके साथ वार वार मूत्र आने लगता है और कभी कभी मूत्र के साथ रुधिर भी आने लगता है। इसकी थोड़ी मात्रा देने से कुछ असर नहीं मालूम होताहै (१७) ओड़को गर्भाशयमेंसे निकालनेके लिये भिलावेका चरपरा रस गर्भाशयके मुहपर लगा देतेहैं (१८) डाढकी पीड़ा मिटानेके लिये भिलावेकी राखस मंजन करना चाहिये (१९) उपदंशकी

टाकियोंपर भिलावेके मरहमकी चुगती लगाना चाहिये (२०) भिलावेका पाक खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (२१) किसी २ के इससे बड़ी खुजली चलने लगतीहै चमडी लाल होके उसमें दाह पैदा हो जातीहै और छोटी २ अलाइयां होके फुन्सियां हो जातीहै, ये सब उपद्रव धीरे २ सब शरीरमें फैल जाते हैं इनको मिटानेके लिये नारियलका तेल या इम्लीका जल लगाना चाहिये (२२) जोडोंपर भिलावेका तेल लगाके उनपर इसीके बुगदेकी धनी देनेसे उन जोडोंपर शोथ हो जातीहै, धोखे बाज लोग तब कहतेहै कि हमारे गठिया होगई।

संख्या (३६४)

(सं०) भव्यं, भवं, भविष्यं, भावनम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	रोमफलओट	ओटफल	ओटीनिंझाड़	चालतगाछ		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Dillenia indica. D speciosa / elliptica	

स्थानः—भव्यके वृत्त बंगाल, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, ब्रह्मा और पूर्वी द्वीपमें सिलहटसे सिंघापुर तक, कमाऊ और गढवालसे, पूर्वकी ओर तक पहाडोंकी तलहटीमें और दक्खन कनारासे दक्खनकी ओर बहुत होतेहै, परंतु हिन्दुस्थानके उत्तरी या पश्चिमी मैदानोंमें कम होतेहैं।

पहिचान—यह एक साधारण ऊचाईका वृक्ष होताहै। इसकी पेंदड छोटी, खडी, और मोटी होतीहै। इसकी शाखें चौडी फैलतीहै। इसकी पेंदड की और नही डालियोंकी छाल चौथाई इंच मोटी, खरदरी, चमकदार होतीहै उसमें बहुतसी छोटी २ दरारें होतीहै। इसके पत्ते ८, १० इंच लम्बे और कटवां किनारेदार होतेहै, जबवे पुराने हो जातेहै तब करडे पड़जातेहै। इसके पत्ते वसन्त ऋतुमें नहीं गिरतेहै। इसके सुगंधदार पुष्प लगतेहैं। इसकाफल बडा होताहै उसकी मध्य रेखा ३, ४ इंच

लम्बी होतीहै उसका छिलका कडा होताहै इसकी चेपदार गिरमें बहुतसे बीज ठौर२ गडे रहतेहैं ।

फूलने फलने का समय—जेठ असाढमें इसके पुष्प लगतेहैं पौष मासमें फल पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह फल खट्टा, चरपरा और उष्ण होताहै। पका फल रुचिकारकहै (२) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसके फल के रसमें मिश्री और जल मिलाके पिलाना चाहिये (३) इसके फलके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे खांसी मिटतीहै (४) इसकी छाल और पत्ते ग्राहीहै (५) अतिसार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये (६) इसका फल सारकहै परन्तु बहुत खानेसे अतिसार हो जाताहै। यह कच्चा या उबाला हुआ दोनों रीतिसे खानेके काममें आताहै।

संख्या (३६९)

(सं०) भांडीरः, चोरकः, शंकितः, चेमक ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
—	भाट	भटोर	भटोर।	भाडीरफूलेर गाछ	भटोर	—

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
—	—	—	—	Clerodendron infortunatum. Volkameria infortunata.	—

स्थान—भांडीरके झाड हिन्दुस्थानमें दक्षिण ओर मध्य हिन्दुस्थान बंगाल, ब्रह्मा, अवध, खेडी और शालके जंगलोंमें बहुत ठौर पैदा होतेहैं।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका झाड १२ फुट ऊंचा होताहै। इसकी डालियोंपर और पत्तोंके नीचे कोमल रूएं होतेहैं, इसके पत्ते ६ से ८ इंच लम्बे और तीखे कटवा किनारेके होतेहैं। इसके लाल छींटेदार सफेद पुष्प लगतेहैं। इसके कुछ दबेहुए गोल गिरदार फलकी मध्य रेखा तिहाई इंचकी होतीहै यह पकजानेपर चमकदार और काले रंगका होजाताहै। मृगशिर से चैत्रतक इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) यह मधुर, कटु, उष्ण, तिक्त, पाकमें कटु, लघु, तीक्ष्ण और शीतलहै (२) इसके पत्ते चिरायतेकी ठौर काममें आतेहैं (३) इसके पत्तों का क्वाथ पिलानेमें वारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाताहै (४) पत्तोंके ताजे रसको घावपर लगानेसे कीडे मरतेहैं (५) दूषित वायु आदिसे पैदाहुए बहुधा बच्चों के ज्वरको रोकनेके लिये इसके पत्तोंका ताजा रस पिलाते हैं (६) इसकी छाल भी औषधिके प्रयोगमें काम आतीहै (७) इसका निचोडा हुआ ताजा रस अच्छा सारकहै (८) इस रसके पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं और पित्त बढताहै (९) गुदाके कीडे मारनेके लिये गुदामें इसकी पिचकारी लगातेहैं (१०) खुजली मिटानेके लिये इसी रसका मर्दन करतेहैं (११) दुष्ट वायु आदि से पैदाहुए ज्वरको छुडानेके लिये संखियेको इसके पत्तोंके क्वाथमें घोटके गोलियां बनाके देना चाहिये (१२) यकृत्की शिथिलता मिटानेके लिये इसके पत्तों का ताजा रस पिलातेहैं ।

-संख्या (३६६)-

(सं०) भार्गी, पद्मा, अंगारवल्ली, कासघ्नी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भाड़ंगी	भारंगी	भारंगी	भारंग	बामनहाटी	भाडंगी	गं भार्डि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
गण्डुपरगि	गण्टुभार्डि			Clerodendron serratum	

स्थान—यह हिमालयमें सतलजसे खासिया पहाड और आसाम तक और नीलगिरी, पश्चिमी घाट, दक्षिण हिन्दुस्थान और ब्रह्मामें होतीहै ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसके नीले पुष्प लगतेहैं । इसके फलकी मध्यरेखा चौथाई इंचकी होतीहै, जब वह पक जाताहै तब चमकदार काले रंगका हो जाताहै । इसके पत्ते चिकने एक ओरसे गोल और दूसरी ओरसे लम्बे, एक २ सींकपर तीन तीन और डंडीके आमने सामने

लगतेहै उनकी कोरें कटवां कगूरेदार होतीहै । भारंगीमें गंध और स्वाद नहीं होता है । वैशाखसे श्रावण तक इसके पुष्प लगतेहै ।

प्रयोग—(१) भारंगी–चरपरी, कडवी, रूक्ष, उष्ण, रोचक, पाचन, दीपन, कपेली और पचनेमें हल्कीहै (२) भारंगीका काथ पिलानेसे प्रतिश्याय और ज्वर मिटताहै (३) इसके पत्तोंको तेलमें ओटाकर लगानेसे आंखके गोले की सूजन उतर जातीहै और गीडोंका आना बन्द होजाताहै (४) भारंगी, सोंठ और धनियेंको पानीमें ओटाके पिलानेसे खाली होवड मिटतीहै (५) इसके बीजों की फकी देनेसे हल्का विरेचन होताहै (६) इनको मट्ठेमें ओटाके पिलानेसे जलंधर मिटताहै (७) इसको और सोंठको समान भाग ले, चूर्ण बनाके गर्म जल के साथ फकी देनेसे श्वास और कास मिटताहै (८) इसके चूर्णमें बराबर सोंठ मिलाकर अदरकके रसमें चटानेसे श्वासरोग मिटताहै (९) भारंगी और सोंठका काथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (१०) इसकी जड़का चावलोंके धोवन के साथ लेप करनेसे गलगंड और कुन्डरोग मिटताहै ।

संख्या (३६७)

हिन्दी–भारंगीभेद L Clerodendron siphonanthus S indica

स्थान—इसका बड़ा झाड होता है । इसकी शाखें पोली होतीहै, इसके ६ से ८ इंच लम्बे पत्ते एक सींकपर ३ से ५ तक लगतेहै वे नीचेसे चन्दनियां रंगके होतेहैं, इनका रंग पहिले सफेद होताहै और पीछे धीरे २ पलट जाताहै । इसके गहरे नीले जड़में जुडेहुए १ से ४ तक बीज लगतेहैं । उष्णकाल और वसंतमें इसके श्वेत पुष्प लगतेहै । इसके एक प्रकारका गोंद जैसा पदार्थ लगताहै ।

प्रयोग—(१) बंगालियों का यह निश्चय है कि इसकी लकड़ीको गलेमें बांधनेसे कई प्रकारके रोग नहीं होतेहै (२) इसकी जड राजयक्ष्मा, कास और गंडमालामें लाभकारी है (३) इसकी जड़के कल्क और सोंठके चूर्णको उष्ण जलमें घोलके पिलानेसे राजयक्ष्मा मिटताहै (४) फुफ्फस के रोगोंके कई काथोंमें यह मिलाई जातीहै (५) इसकी जड़के कल्क और काथ से तेल बनाके मासक्षयवाले बच्चेंके मर्दन करना चाहिये (६) इसका वृक्ष कुछ कड़वा और ग्राही होताहै (७) इसका गोंद जैसा पदार्थ उपदंश सम्बन्धी

गठियामें काम आताहै (८) इसके पत्ते और कोमल डालियोंका निचोडा हुआ रस घीमें मिलाके छत्तेदार फुन्सियोंपर लगाना चाहिये (९) जिस ज्वरमें फोडे फुन्सी होते हों उस ज्वरमें भी यहही लेप करना चाहिये (१०) इस की पोली डालियोंके छोटे टुकडों की माला बनाके बच्चोंको पहिरानेसे और इस वृक्षकी सुगंधसे ८ वें और ९ वें प्रयोगके रोग मिटतेहैं।

संख्या (३६८)

(सं०) भूतकेशः, केशी, अल्पकेशी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	भूतकेशी			भुँइकेश		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Corydalis Govaniana	

स्थान—भूतकेशी पश्चिमोत्तर हिमालय और शिमलेके पास हाटू और चोरपर होतीहै।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगते हैं।

प्रयोग—(१) भूतकेशी—ग्राही, चरपरी, कडवी, ठंढी और अग्निवर्द्धक है। (२) इसकी जड बहुत कडवी होतीहै, उसका क्वाथ पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (३) इसकी जडके ५ से १५ रती तक चूर्णकी फंकी देनेसे उपदंश मिटताहै (४) इसकी जड़के क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (५) इसकी जड़को पानीके साथ पीसके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै।

संख्या (३६९)

(सं०) भूनिम्बः, किराततिक्तः, कांडतिक्तः, कैरातः।

रवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रायतो	चिरायता	करियातु	किराईत	चिरेता	चिरायता	नेलावेमु

ाविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
लावेम्बु	नेल मेवु	क़स्बचोबा	नएनिहावंदी	Swertia Chirata. Gentiana Chirayta. Justicia	Chirata. Chire ta.

स्थान–चिरायता हिमालयमें कश्मीरसे भूटान तक और खासिया पहाड़ आदि स्थानोंमें होताहै।

प्रयोग–(१) चिरायता कड़वा, शीतल, पचनेमें हल्का, रूक्ष, वातल, सारक, बलवर्द्धक तथा ज्वर और कृमिनाशकहै (२) यह सब प्रकारके ज्वरोंमें कई रीतिसे, और ज्वर मिटाने वाली दूसरी औषधियोंके साथ, दिया जाताहै (३) चिरायतेके क्वाथमें दूसरी औषधियें सरसोंका तेल और मट्ठा डालके पकातेहैं जब सब औषधियें जलके तेल बाकी रह जाताहै तब उसको छान लेतेहैं इस तेल का मर्दन करनेसे जीर्णज्वर (जिसमें शरीर कृश होगया हो और रुधिरमें लल नहीं रहीहो) छूट जाताहै (४) सर्दी, पित्तविकार, शरीरकी दाह और सन्निपात ज्वरमें इसका प्रयोग किया जाताहै (५) कास और श्वास रोगको मिटानेके लिये चिरायतेका क्वाथ पिलाना चाहिये (६) पेटकी शूल मिटानेके लिये चिरायता और एरण्डकी जड़ औटाके पिलाना चाहिये (७) बीलगीर की फकी देके ऊपर चिरायतेका क्वाथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (८) चिरायता और नीमगिलोय बराबर ले औटाके पिलानेसे, अथवा, दोनोंको रातभर ठंढे पानीमें भिगो प्रातःकाल मल छानके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (९) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता, मन्दाग्नि और उदर्द मिटानेके लिये चिरायतेका फांट पिलाना चाहिये (१०) मंदाग्नि वालेको चिरायते का फांट पिलानेसे उसकी पाचन शक्ति बढतीहै (११) हल्के कियेहुए गंधक के तिजाबकी कुछ बूंदें या आधीसे १ रत्ती तक कुनाइनके साथ चिरायतेका हिम पिलानेसे ज्वर बहुत शीघ्रतासे छूटताहै। ये दोनों चीजें चिरायतेके हिम या फांट में मिलानेसे इनकी शक्ति बढ़ जातीहै (१२) चिरायतेको औटानेसे इसका गुण कम होजाताहै इस लिये इसको ठंढे पानीमें भिगोके देना चाहिये (१३)

चिरायते और सोंठके कल्कको पुनर्नवाके क्वाथके साथ पिलानेसे सर्वांग शोथ उतरतीहै-(१४) चिरायतेको पीस मधुमें मिला गर्मकर लेप करनेसे कुबड़ापन मिटता है ।

संख्या (३७०)

(सं०) भूर्जपत्र:, चर्मी, बहुलवल्कलः, मृदुत्वक् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलङ्गी
भोजपत्र	भोजपत्र	भोजपत्र	भूर्जपत्र	भूर्जिपत्र	भोजपत्र	भुर्जपत्रमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
भुजपत्र	भुजपत्र			Betula Bhojpattra. B Jacquemontii	The Indian birch tree Indian paper Birch

स्थान—भोजपत्रके वृक्ष हिमालयमें बहुत ऊंची २ ठौरमें और पंजाब, सिकम और भूटानमें होतेहैं ।

पहिचान—यह एक साधारण उंचाईका वृक्ष ५०-६० फुट ऊंचा होताहै । इसकी पेंदड़ खड़ी कुछ मुड़ीहुई और गुलाईमें ६–७ कहीं कहीं १०–१२ फुट होतीहै । इसकी शाखें खड़ी और डालियें लटकती हुई होतीहैं । इसके पत्ते कटवां कोरके होतेहैं उनकी बीचकी नसके दोनों ओर रूए होतेहैं । इसके स्त्री और पुरुषजातिके पुष्प अलग २ लगतेहैं । श्रावणमें इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं, चैत्र वैशाखमें नवीन आजातेहैं ।

प्रयोग—(१)यह–चरपरा, कषेला और उष्ण, होताहै (२) भूतबाधा त्रिदोष, पित्त, रुधिरविकार, कफ, कर्णरोग, मेद और विषको उतारताहै (३) भोजपत्रकी छाल वायुके विषैले कीडोंको मारतीहै (४) इसकी छालके क्वाथकी पिचकारी देनेसे कानका व्रण साफ होजाताहै (५) जहरी घावोंको शुद्ध करनेके लिये इसकी छालके क्वाथसे धोतेहैं (६) इसकी छालका हिम या फांट पिलानेसे पेटका अफारा मिटताहै (७) स्त्रियोंका आवेशका रोग मिटानेके लिये इसका प्रयोग करतेहैं ।

संख्या (३७१)

(सं०) भूस्तृणं, रोहिणः, गुच्छालः, मालातृणः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सुगंधितघास विशेष	सुगंधरोहिष	सुगंधरोम	सुगंधरोहिस	गंधतृण	गाधीघास	गुडुगुगड्डि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	मारवाळिहुल्लु			Andropogon citratus A. schoenanthus	The Lemon grass

स्थान—यह घास हिन्दुस्थानमें कई ठौर होताहै।

पहिचान—कहीं इसके पुष्प लगतेहैं और कहीं नहीं लगतेहैं।

इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै। उसमें जब तक दूसरा तेल नहीं मिलाया जावे, तब तक वह तेल पारदर्शक रहताहै। इस तेलका स्वाद चरका होताहै और उसमें नींबू जैसी सुगन्ध होतीहै।

प्रयोग—(१) स्तृण—कडुवा, चरपरा, उत्तेजक, उष्ण, रोचक, दीपन, विदाही, रूक्ष और लघुहै (२) थोड़े ज्वर में इसके पत्तोंका फांट पिलानेसे पसीने होकर ज्वर उतर जाताहै (३) इसके पत्तोंको औटाके बफारा देनसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै इस कामके लिये इसमें पोदीना मिलाया करतेहैं (४) इसको चाहके जैसे दूधमें या जलमें औटाके पिलानेसे शरीरका आलस्य मिटताहै, अर्थात् शरीर चैतन्य होजाताहै (५) इसके क्वाथकी भाफ को सूंगते रहनेसे या पेटमें पीनेसे पसीना होताहै (६) इसकी जड़ और कोमल पत्तोंको काली मिरचके साथ पीसके पिलानेसे मासिकधर्म ठीक समय पर होने लगजाताहै और मासिकधर्मके रजके जमावको मिटाने के लियेभी यहही प्रयोग करना चाहिये (७) इसके तेलकी कुछ बूंदें सौंफके अर्कमें डालके पिलानेसे आफरेकी शूल मिटतीहै (८) इसके तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गठियां आदि वायुकी पीड़ा मिटतीहै (९) इसका तेल अनड़ियोंकी वायुको निकालके उनको बलवान कर देताहै (१०) इसका क्वाथ पिलानेसे वमन और विरेचन बन्द हो जाताहै (११) इसके तेलकी कुछ बूंदें राढके क्वाथकी

साथ पिलानेसे अंतड़ियोंकी ऐंठन मिटतीहै (१२) इसका तेल स्निग्धम-लेपमें पड़ताहै (१३) बच्चेके पेटकी पीड़ा मिटानेके लिये इसका काथ पिलातेहैं (१४) दादपर इसके तेलका मर्दन करतेहैं (१५) इसके तेलसे "प्राइडो फार्मकी" दुर्गन्ध नष्ट जातीहै (१६) इसके पत्तोंका फांट पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (१७) इसके तेलको कुछ बूंदें सौंफके और पोदीनेके अर्कके साथ पिलानेसे विसूचिका मिटतीहै (१८) इसको सिरकेकी सिकंजी के साथ पिलानेसे अजीर्णसे पैदा हुई दाह मिटतीहै (१९) पसीना करानेके लिये इसके पत्तोंको दूधमें ओंटाके पिलाना चाहिये (२०) कमरकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन बहुत देर तक करना चाहिये (२१) कच्चे दूधमें इसकी बूंद डालके पिलानेसे पाकस्थलीकी दाह मिटतीहै (२२) इसके एक तोले पत्तोंको २॥ पाव औटे हुए पानीमें चार पहर भिगो ज्वरवाले बहुधा निर्मल मनुष्य को इसमें से २॥ से ५ तोले तक पिलानेसे पसीना आता है (२३) मोतीझरेवाले मनुष्यको भी यही पिलाना चाहिये।

संख्या (२७२)

(सं०) भृङ्गराजः, मार्कवः, अङ्गारकः, पितृप्रियः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जलभांगरो	भागरा भंगरा	भांगरो	माका	भीमराज	भंगरा	गुंटगलगर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
करशारकान्नि	गरगदपुप्पु			Wedelia Calendulacea. Verbesina. Calendulacea	Trailing eclipta

स्थान—जलभंगरेके गुल्म, हिन्दुस्थानमें जलके पास प्रायः सब ठौर होतेहैं।

प्रयोग—(१) जलभांगरा—कटु, तिक्त, उष्ण, रूक्ष और तीक्ष्ण है (२) खांसी, मस्तकपीड़ा, क्षय, प्रतिश्याय और त्वचाके रोगोंमें काम आता है (३) इसके पत्ते बलवर्द्धक और रक्तशोधक हैं मस्तकपीड़ा मिटानेके लिये

इसके रसकी नस्य देनी चाहिये (४) कई औषधियोंके इसके रसकी भावना दी जातीहै (५) बालोंको रंगने और बढानेके लिये इसके पत्तोंका रस लगातेहैं (६) इसके पत्तोंका रस गुदामें तीन चार बेर मलनेसे पेटके कीड़े मिटतेहैं (७) इसके और धतूरेके पत्तोंके रसमें रुई भिगो उसकी बत्ती बना, छायामें सुखा, उसको मीठे तेलमें जला काजल पाड़के बासी पानीके साथ उसका अंजन करनेसे नेत्रोंकी पलकोंका रोग मिटताहै। (८) इसके स्वरससे तेल सिद्ध करके बालोंमें लगानेसे बाल काले और कोमल रहतेहैं (९) पुष्य नक्षत्रमें इसकी जड़ हाथमें बांधनेसे चातुर्थिकज्वर छूटजाताहै (१०) इसके स्वरससे घृत सिद्ध करके पिलानेसे बिगडेहुए कंठ और स्वर सुधरतेहैं (११) इसके स्वरस और चिरमीके कल्कसे सिद्ध किये हुए तेलके मलनेसे कण्डु, दारुण, कुष्ट और मस्तकपीडा मिटतीहै (१२) इसकी जड़ और हल्दीका लगातार लेप करनेसे सूकरदंष्ट्र और विसर्परोग मिटता है (१३) इसका रस और छालीका दूध बराबर ले मिला उसको सूर्यकी धूपमें रखके उष्ण होनेपर उस की नस्य लेनेसे सूर्यावर्त मिटताहै (१४) इसके रससे व्रणको धोनेसे उपदंश मिटताहै (१५) एक महीने तक इसका स्वरस पीनेसे और उन दिनोंमें केवल दूधका आहार करनेसे बल, वीर्य और आयु बढतीहै, और रसायनका गुण होता है।

संख्या (२७३)

(सं०) केशराजः, महानीलः, नीलपुष्पः, नीलभृङ्गः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालोभँगरो- भागरो	भंगरा	भांगरो	माका	केशुरे		गंटगलिजेरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	गरहूडाम-प्पू			Eclipta alba E. prostrata.	

स्थान—केशराजके गुल्म हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं।

प्रयोग-(१) केशराजका रस पीने और लगानेसे बाल काले होजातेहैं। (२) इसका रस बच्चोंके कुछ भूरे केशोंपर अथवा सिरको मुड़वा के एक दो बेर लगानेसे केश काले हो जातेहैं इसके रसमें केशोंको काले करनेकी शक्ति है भृङ्गराजके रसमें नहींहै (३) त्वचाके पुराने रोग मिटानेके लिये इसके रस का मर्दन करना चाहिये (४) यकृत् और प्लीह बढ़जानेपर इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये (५) नये बच्चेका कफ मिटाने के लिये इसके रस की दो बूंदको ८ बूंद मधुमें मिला के चटाना चाहिये (६) इस के स्वरस में अजवायन आदि चरपरी और द्रावक चीजोंको मिलाके पिलानेसे तिल्ली आदि पेटके यन्त्रोंके बढ़ावकी रुकावट मिटजातीहै (७) मांस शिराओंकी ऐंठन मिटानें वाली जो औषधियेंहैं उन में यह मिलाके दिया जाता है (८) इसके ताजे गुल्मके कल्कको तिलके तेलमें मोटा के गजचर्म कुष्टपर लगातेहैं (९) इसकी जड़का स्वरस पिलानेसे वमन होतीहै (१०) विरेचनके लिये भी इसकी जडका स्वरस पिलातेहैं (११) इसकी जडको घिसके लेप करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं(१२) इसका पौनेचार मासे रस पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (१३) ज्वरको छुड़ाने के लिये इसका पौनेचार मासे रस पिलाना चाहिये (१४) इसकी १ तोले भर जडको पीस थोड़ा नमक मिलाके पिलाने से मूत्रकी दाह मिटतीहै (१५) इसको तेल में पीसके ललाटपर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटतीहै (१६) इसके तेलका मर्दन करनेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै (१७) इसको पीस गर्म करके लेप करनेसे शोथ उतरतीहै।

[illegible] संख्या (२७४) [illegible]

(सं०) भृङ्गाह्वा, भ्रमरा, उग्रगंधा, भृङ्गच्छली।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	भ्रमरच्छली	भमरछाल्य	भवरसाली			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	उप्पुशके			Hymenodictyon excelsum H. thyrsiflorum	

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिम हिमालयमें गढवालसे नेपालतक, छुटिया नागपुर और मध्य हिन्दुस्थानसे दक्षिण तक बहुत होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ३० से ५० फुट तक ऊंचा होताहै इसकी पेड़की गुलाई ६ से ८ फुट तक होतीहै परन्तु देश भेदसे अवध और संयुक्त प्रदेशमे इसकी उंचाई और गुलाई बहुत अधिक होती है। इसके पत्ते ६ से १२ इंच लम्बे, डंडीकी ओर से गोल और दूसरी ओर से कुछ लम्बे होते हैं। इसके कुछ हरे सफेद रंगके और सुगंध युक्त पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। कातीसे वैशाख या जेठ तक इस वृक्षके सबके सब पत्ते गिरजातेहैं।

फूलने फलने का समय—जेठ अषाढमें इसके पुष्प लगतेहै आसोजसे पोषतक इसकी डोडिया पकतीहै। इसके पत्ते और छाल रंगतके काममे आतेहैं।

प्रयोग—(१) यह-चरपरी, उष्ण, कड़वी, रोचक, और अग्निदीपकहै (२) इस वृक्षकी अंतर छाल शोषक, और सिनकोना जैसी कड़वी होती है (३) इसको ओटाके पिलानेसे तेजरा छूट जाताहै (४) बारी से आनेवाले दूसरे ज्वरोंको छुडाने के लिये इसकी अंतर छालका क्वाथ पिलाना चाहिये। (५) इसके प्रयोगसे त्रिदोष और कंठके रोग मिटतेहैं।

संख्या (३७५)

(सं०) भेंडा, चतुष्पुण्ड्र, करपर्णः, वृत्तबीज।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भिण्डी	भिण्डी	भींडा, भेंडो	रानभेंडो	भेंडा		बेंडकाया

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
बेंडै (इ)काय्	बेंडेकायि			Hibiscus esculentus. Abelmoschus e.	The edible hibiscus. Ochro of West Indies. Esculent Okra.

स्थान—भिण्डीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) यह-ग्राही, उष्ण, पिच्छल, रुचिकारक, वातल, वृष्य, बल्य,

रसमें खट्टी और पचनेमें भारीहै (२) इसका और इसके बीजोंका चेप निकाल उसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्रकी दाह मिटतीहै (३) मूत्र और वीर्य सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटानेके लिये भिण्डी और इसीके बीजोंका शर्बत बहुत उपकारीहै (४) भिण्डी-शीतल, पौष्टिक और स्निग्धहै (५) यह पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको बहुत गुणकारीहै (६) इस वृक्षका हरेक अंग परन्तु विशेष करके इसका फल उन सब रोगोंमें काम आताहै कि जिनमें दाह और तोद अर्थात् सूई चुभने जैसी पीड़ा होतीहै, जैसे दाह और कष्टके साथ मूत्रका उतरना और मूत्रकृच्छ्र आदि (७) भिण्डी या इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे दाह मिटतीहै (८) इसकी जड़मेंभी बहुत लेप निकलताहै (९) इसकी सूखी जड़के चूर्णमें मिश्री मिलाके देनेसे प्रमेह मिटताहै (१०) भिण्डीके शाक से अतिसार मिटताहै (११) इसके मूत्रवर्द्धक प्रयोगमें जलंधरमें बहुत उपकार होताहै (१२) इसकी जड़का पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढताहै (१३) कच्ची भिण्डीके चूर्णमें मिश्री मिलाकर दूधके साथ फक्की लेनेसे प्रमेह मिटताहै (१४) इसका शाक बहुत अच्छा होताहै।

संख्या (३७६)

(सं०) मकायः, महाकायः, शिखालुः, काटिंजः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मकी, मक्या	मका, भुट्टा	मकाइ	मक्का, मका		मकई	आनिपटेलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हिंतहरूमिया	गदुम मक्का	Zea Maya	Maize Zea maize Indian corn Indian corn maize

स्थान—मकी हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोई जातीहै।

इसके १०० तोले कच्चे तुकमोंको यंत्रमें दबानेसे ३ से ५ तोलेतक तेल निकलताहै। यह तेल कुछदिन पड़ा रहनेसे निर्मल हो जाताहै। इसका स्वाद

फीका होताहै और इसमें सुगंध अच्छी होतीहै न यह जल्दी बिगड़ताहै और न यह सूखताहै इस तेलके साधारण गुण जैतूनके तेलसे मिलतेहैं।

प्रयोग—(१)यह-वातल, विष्टंभी, रूक्ष, रोचक और पौष्टिकहै (२) क्षयरोगमें मकीकी रोटी पथ्यहै (३) इसके खानेसे आंतोंकी निर्बलता-मिटतीहै (४) निर्बल मनुष्य और बचोंके लिये मकीके आटेका भोजन गुणकारी है (५) भुट्टाकी राखमें नमक मिलाके फकी देनेसे कुत्ताखासी और जुखाम की खांसी मिटतीहै (६) इसकी पांच पांच रतीकी मात्रा दिनमें दो तीन वेर देना चाहिये (७) मक्याके बालोंका काथ, हिम या फांट पिलानेसे मूत्राशय के रोग और मूत्रमार्गकी दाह मिटजातीहै और मूत्र अधिक आने लगताहै (८) मकीके आटेका पुल्टिस बनाके बांधतेहै (९) मूत्राशयकी पथरी गलानेके लिये भुट्टेकी भस्मका द्रवक्षार निकालके पिलातेहैं (१०) इसके आटेका लपटा बनाके रोगीको पिलाना चाहिये यह लपटा बडा रोचक होताहै परन्तु प्रकृति मानेतो पिलाना चाहिये (११) कच्चेभुट्टे सेकके खानेसे किसी २ को तीक्ष्ण निरेच लगजाताहै (१२) मकीका तेल शरीरको पुष्ट करताहै (१३) उत्तम मकी खानेसे शरीर पुष्ट होताहै परन्तु जिसको मकी नहीं मानतीहै उसको लगातार खिलानेसे संभवहै कि अतिसार होजाताहै। इसके परमल या सेके हुए फूले रोगीको कभी नहीं खिलाना चाहिये। पश्चिमोत्तर देश, पंजाब, अवध और राजपूताने आदि कई देशोंमें मकी खानेका बडा चलनहै। हिन्दुस्थानके कई देशोंमें मकीके आटेकी रोटी बनाके खातेहैं। कई देशोंमें इसकी घाट (दलिया) बनातेहैं। कहीं गीले मकेको सेकके या उबालके खातेहै। कहीं पकीहुई मकीको सेकके दुपहरिया करतेहैं। मकीका सत्तू बनाया जाताहै। मकीकी कड़बीसे शक्कर निकाली जासकतीहै परन्तु उसके दाने नहीं पडतेहै।

संख्या (३७७)

(सं०) सकुष्ठः, वनमुद्गः, क्रमीलकः, अमृतः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोठ	मोठ	मठ	मठ, मटक्या	वनमूग	मोठ	—

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Phaseolus aconitifolius Dolichos dissectus	The aconite leaved kidney bean

स्थान—मोठ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) मोठ कषेले, मधुर, रोचक, पचनेमें लघु, ग्राही और शीतल होतेहैं। रक्तपित्त, ज्वर, दाह, वमन, कफ, रुधिरविकार, अर्श और गुल्मको मिटातेहैं और वादीको पैदा करतेहैं (२) मदाग्निमें इनकी दाल पथ्यहै (३) यह ज्वरमें भी पथ्यकी रीति पर दी जातीहै (४) इनकी जड मादक और विषैलहै (५) इनकी दाल बनाके खानेसे आध्मान होना बन्ध होजाताहै (६) इनकी दालके कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनाये जातेहैं (७) इनको सेकके भोजनके काममें लातेहैं।

संख्या (३७८)

(सं०) मज्जफलं, मायिफलं, मायिका, छिद्राफलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
माजूफल	माजूफळ	माया	मायफळ	माजूफल	माजूफल	माचकाया

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मासिक्काय्	मायूफला	अफ्स	माजू	Quercus infectoria.	The gall or dyer's oak The gall nut

स्थान—माजूफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं। ये ग्रीस, एशिया माइनर और सिरिया आदि देशोंसे हिन्दुस्थानमें आतेहैं।

प्रयोग—(१) माजूफल—बहुत ग्राही, चरपरा, उष्ण, शीतल, रूक्ष, कषेला, लघु, दीपन और विपाकमें कटुहै (२) यह वनस्पतिके क्षारोंके विषको रोकनेके लिये या उतारनेके लिये बहुत अच्छाहै (३) रुधिर को रोकने के लिये माजूफल या माजूफल और आहिफेनका मरहम बहुत अच्छाहै (४) मसूड़ों को दृढ़ करनेके लिये माजूफलका मंजन बहुत अच्छाहै (५) बल बढ़ानेवाली

ओषधियोंमें मांजूफल मिलाया जाताहै (६)बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेकेलिये मांजूफलकाप्रयोग किया जाताहै (७) अतिसार और आमातिसार मिटानेके लिये मांजूफलका प्रयोग बहुत अच्छाहै (८) मांजूफलके चूर्णको थोडे पानीमें भिगोके स्तनकी बीटलीके घावपर लगातेहै (६) इसका मरहम बादीके अर्श पर लगाया जाताहै (१०) श्वेतप्रदर और मूत्रकृच्छ्रमे मांजूफलका प्रयोग बहुत उपकारीहै (११) मांजूफल और अनारके छिलकेको पीसके बुरकानेसे कांचका निकलना बन्ध होताहै (१२) इसको सिरकेमें घिस अंगुलिके लगा उससे बच्चेके लटके-हुए कागको उठातेहै (१३) इसको कूट सिरकेमें ओटा, छान कानमें टपकाने से कानका बहना बन्ध होताहै (१४) माजूफल पीसके नाकमें फूकनेसे नक-सीर बन्ध होतीहै (१५) एक कच्चा और एक जलाहुआ मांजूफल और एक कच्ची और एक जलीहुई सुपारीको पीस छानके मजन करनेसे दांत और मसूडे दृढ हो जातेहैं (१६) माजूफल और सुपारी ओटाके कुल्ले करने से दांतों से रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (१७) मांजूफल और सुपारीको पीसके दन्तमञ्जन करनेसें दांत दृढ होतेहैं और उनसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (१८) मांजूफल और आसगन्धको पानीके साथ पीस, गर्मकर लेप करनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (१९) माजूफलकी भस्मको घावमें बुरकानेसे उसमेंसे रुधिर का निकलना बन्ध होजाताहै ।

संख्या (३७९)

(सं०) मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मजीठ	मजीठ	मजीठ	मंजिष्ठ	मंजिष्ठा	मंजीठ	मजिष्ठि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मंजिष्टि	मजिष्ट (i)	फुव्वाह	रोदक,रूनास	Rubia cordifolia. R. munjista.	The indian Madder Madder oct. Bengal madder

स्थान—मजीठ हिन्दुस्थानके पहाड़ी भागोंमें सब ठौर होतीहै ।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होतीहै ।

प्रयोग—मजीठ—मधुर, चरपरी, कषेली, गुरु, उष्ण, कडवी, और लघु है (१) यह पेटके तिल्ली आदि यंत्रोंके बढावकी रुकावटको मिटातीहै (२) मूत्राघात और मासिकधर्मकी रुकावटको मिटानेके लिये मजीठका प्रयोग करना चाहिये (३) मजीठका फल हृदयकी रुकावटको मिटाता है (४) मजीठको पीस मधुमें मिलाके लगानेसे त्वचाके पीले और दूसरी प्रकार के दाग मिटतेहैं (५) मजीठका पंचांग विषनाशकहै (६) मजीठको गलेमें बांधनेसे या घरकी छतमें लटकानेसे नजर नहीं लगतीहै (७) यह ग्राही है (८) इसका लेप करनेसे पित्तशोथ मिटतीहै (९) त्वचा के रोग और घावोंको मिटानेके लिये इसके प्रयोग किये जातेहैं (१०) मजीठ और मुलहटी को चांवलोंकी कीलोंकी काजीमें पीसके लेप करनेसे अस्थिभंगकी शोथ और दाह मिटतीहै (११) बच्चा होनेके पीछे गर्भाशयमें जो दुष्ट रुधिरादिक रह जातेहैं उनको निकालनेके लिये मजीठका क्वाथ पिलाना चाहिये (१२) मजीठको मस्तकपर बांधनेसे नजलेकी मस्तकपीडा मिटतीहै (१३) इसको पीसके मंजन करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१४) इसके एक तोले चूर्णकी फंकी देनेसे मासिकधर्मकी रुकावट मिट जातीहै (१५) मजीठ और महुवे को खटाईके साथ पीसके लेप करनेसे टूटी हुई हड्डी जुड जातीहै (१६) मधु के साथ इसका लेप करनेसे व्यंग रोग मिटताहै ।

संख्या (३८०)

(सं०) आच्छुकः, अच्छुकः, आच्छकः, रञ्जनद्रुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आल	आल	आल	आल	आचफुलेर-गाछ	कहू	—

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
—	—	—	—	Morinda citrifolia M. Tinctoria	The Indian Mulberry The Togari wood of Madras

स्थान—आलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं अर्थात् सतलज से पूर्वकी ओर और दक्षिणकी ओर सीलोन तक होते है । इसकी लकड़ी, छाल, जड़, और जडकी छालमेंसे लाल रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) आलका फल-तिल्ली आदि यन्त्रोंके बढावकी रुकावट और मासिकधर्मकी रुकावटको मिटाता हैं (२) इसके पत्तोंका लेप करनेसे क्षत और चांदी मिटतीहै (३) पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) मल बढानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जडका काथ पिलानेसे बिरेचन लगताहै (६) इसके पत्तोंके कोयलोंको ओटा छान उसपर राई बुरकाके पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (७) मसूड़ोंको दृढ करनेके लिये इसके कच्चे फलके कोयले और नमक पीसके मंजन करना चाहिये (८) अतिसार मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (९) इसका कच्चा फल शाकके काममें और पका फल खानेके काममें आताहै घावमें इसका चूर्ण भरदेनेसे उसमेंसे रुधिर का निकलना बन्ध होजाताहै ।

संख्या (३८१)

(सं०) मदनः, शल्यकः, राठः, करघाटः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मैणफल, मींडल	मैनफल	मींढोळ	गेळ, गेळा	मयनाफल	मैनफल राडा	गंगचद्दु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	गंगारेगिड	जौजमल्कै		Randia dumetorum. Posoqueria d	Dud y gardenia

स्थान—मैनफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पहिचान—इसके वृक्ष १५–२० फुट ऊंचे होतेहैं । इसकी सीधी पेदड़की गुलाई ३–४ फुटकी होती है । इसके बहुतसी पतली २ शाखें लगती हैं इसकी

छाल आध इंच मोटी कुछ भूरे श्वेत रंगकी खरदरी, सफेद छींटेदार, और स-लपड़ीहुई होती है, यह कभी २ पूरी सफेद हो जाती है। देशभेदसे इसका आकार और प्रकृति बहुत बदल जातीहै। इसके इंच अथवा डेढइंच लम्बे कठोर कांटे लगतेहै, इसके पत्ते नोंकदार और दोनों ओर से खरदरे होतेहैं, उनपर छोटे कठोर रुँए होतेहै। कुछ हरे पीले या प्रायःश्वेत रंगके सुगंधवाले, इकल्ले या दो तीन पुष्प एक२ ठौर लगते हैं। इसका एक या डेढ इंच लम्बा फल ऊपरसे साफ होताहै और पकनेपर पीला पड़ जाता है. इसके फल की गिरके बीचमें दो खाने होतेहैं, उनमें बीज रहते है।

प्रयोग— (१) मैनफल–चरपरा, उष्ण, कड़वा, वामक भेदी, लेखन लघु, रूक्ष, मधुर, शीतल, कपेला, और उष्ण वीर्यहै (२) ज्वरमें जो हड-फूटन होतीहै उसको मिटानेकेलिये मैनफलके वृक्षकी छाल की फकी देनी चाहिये और इसका लेपभी करना चाहिये (३) इसको गोवरमें मिलाके लेप करनेसे चोटकी पीडा मिटती है (४) इसको मधु में मिलाके चटानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (५) इसके फलकी छाल वामक नहींहै केवल थोडासा हृल्लास पैदा करती है (६) २ या ३ मैनफलकी गिर और बीजोंको थोड़ेसे पानीमें दस पन्द्रह मिनट पीस आठ या दस तोले जल में छानके पिलादेना चाहिये, पिलानेके पीछे प्रायः १० मिनटमें हृल्लास और वमन होने लगेंगे, उष्णजलके पिलानेसे वमनकी संख्या बढेगी। इससे अवश्य और निरुप-द्रव वमन होताहै (७) इसकी गिरकी थोड़ी मात्रा देनेसे हृल्लास होताहै (८) सूखी खांसीमें कफ पैदा करनेकेलिये इसकी थोड़ीसी गिर देनी चाहिये (९) ज्वर का वेग निर्बल होनेके पीछे इसकी थोडीसी गिरकी फकी देनेसे पसीना होके ज्वर उतर जाताहै (१०) इसकी गिरमें कुछ अफीम मिलाके देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (११) प्रयोगके लिये इसका चूर्ण बनानेकी यह रीतिहै कि मैनफलके छिलके को दूरकर गिर और बीजोंको थोडे पीस मोटे कपड़ेमें या साधारण चलनीसे छान लेना चाहिये जिससे इसके बीजोंके छिल-के अलग निकल जावें, फिर उस चूर्णको बहुत महीन पीसके महीन कपड़ेसे छान, काकदार, शीशीमें भरदेना चाहिये वमन करानेके लिये इस चूर्णकी ७॥ रतीसे २॥ मासे तककी मात्रा देनी चाहिये (१२) आमातिसार मिटानेके

लिये ७॥ रत्ती से १५ रत्ती तक देनी चाहिये (१३) हृल्लास, कफ और पसीना पैदा करनेके लिये २॥ से ५ रत्ती तक देनी चाहिये (१४) कीड़े मारनेके लिये और गर्भाशयमें से छोड़ निकालनके लिये इसकी गिरका प्रयोग किया जाता है (१५) बच्चोंके दांत आनेके समयमें अकस्मात् कोई रोग अथवा ज्वर हो जाताहै उसको मिटानेके लिये इसके मोटे चूर्णको जीभ और तालुपर लगादेना चाहिये (१६) गठियाकी शोथपर इसका लेप करनेसे शोथ बिखर जातीहै (१७) पीववाले फोड़ेपर मैनफल और रेवतचीनीका लेप करनेसे जल्दी पकके फूट जातेहै (१८) मुखदूषिका और त्वचाके दूसरे रोगोंमें इसका लेप बहुत उपकारीहै (१९) चावलोंके जलमें इसको पीसके नाभिपर लेप करनेसे शूल मिटतीहै (२०) मैनफलके चौथाई टुकडेको एक बडी इलायची के दानोंके साथ नागरवेलके पानमें रखके वारीके दिन खिलानेसे तेजरा छूट जाताहै (२१) इसको गायके दूधमें घिसके नस्य लेनेसे आधाशीशी मिटतीहै (२२) इसको कुटकीके साथ या काजीके साथ पीस नाभीपर लेप करनेसे शूल मिटती है।

संख्या (३८२)

(सं०) मधु, माक्षिकं, सारघं, क्षौद्रम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सहत	मधु, सहत	मध	मध	मधु, मउ	शहत, मधु	तेनॆ
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
तेन्	जेनुतुप्प		शहद	Mel.	Honey	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें प्रायः सबठौर होतीहै।

मधुको मनुष्य बहुधा खानेके काममें लातेहै परन्तु किसी २ देश की मधु में विष होताहै उसका कारण यहहै कि जहां विषके वृक्ष बहुत होतेहैं उनके पुष्पोंमेंसे जो मधु मक्खियां मधु एकत्र करतीहैं उसमें बहुधा विष होताहै।

प्रयोग—(१) मधु शीतल, कषेली, मधुर, लघु, दीपन, लेखन, शोधन, हृद्य और बलकारकहै (२) नवीनमधु पौष्टिक, और सारक होतीहै (३) यह एक वर्ष पीछे ग्राही हो जातीहै और पुरानी कहलातीहै (४) तीक्ष्ण पदार्थों की चरपराहट कम करनेके लिये उनमें मधु मिलाई जाती है (५) मधुका लेप करनेसे घातादिक शुद्ध हो जातेहैं (६) कास मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत किया जाताहै (७) गंडूषकी औषधियोंमें यह बहुधा मिलाई जातीहै (८) यह विषैल वायुका असर नहीं होने देतीहै (९) फलों को इसमें डाल रखनेसे वे बहुत समय तक नहीं विगड़तेहैं (१०) बकरी के कच्चे दूधमें आठवां भाग मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै जिन दिनों में यह प्रयोग किया जावे उन दिनोंमें उस रोगीको साभर नोन और लाल मिरचके बदलेमें सेंधानमक और काली मिरच, दाल रोटीमें देना चाहिये। इसको पाव भर दूधसे प्रारम्भ करके जो वह पचासके तो नित्य छटाक २ दूध और उसी प्रमाणसे मधु बढ़ाते हुए दो सेर तक बढा देवे, (११) स्थूल मनुष्यको कृश करनेके लिये उष्ण जलमें अष्टमाश मधु मिलाके पिलाना चाहिये अथवा जो औषधिया कृश करनेवाली है उनके चूर्णकी फकी देके यह पिला दिया करे (१२) ताजे कच्चे दूधमें मधु मिलाके पिलानेसे किसी २ को विरेचनके दो तीन अच्छे वेग लग जातेहैं (१३) मधुके साथ मोरपंख के चंदवे की या उसके तन्तुओंकी भस्म चटानेसे हिचकी बन्द होतीहै (१४) मधुको खाने और लगानेसे विच्छूका विष उतरताहै (१५) गिलोयके ठढे कियेहुए काथमें मधु मिलाके पिलानेसे वमन बन्द होतीहै (१६) इसको पलासके बीजों के स्वरसमें मिलाके पिलानेसे कृमिरोग मिटताहै (१७) निंब, एरंड और धतूरेके पत्तोंके अलग २ रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे कीड़े मरतेहैं (१८) इसको कांदेके रसमें मिलाके अंजन करनेसे नेत्रपीडा मिटतीहै (१९) इसके खाने और मलनेसे भिडका विष उतरताहै (२०) २ तोले मधुमें दुगुना पानी मिला ओटाकर पिलानेसे जलोदर मिट जाताहै (२१) मधुको बत्तीपर लगाके गर्भाशयके मुंह तक पहुचानेसे गर्भाशयका मल निकल जाताहै (२२) मधु को नमक और सिरकेमें मिलाके मलनेसे झाई दूर होतीहै (२३) मधु और जल मिलाकर पिलानेसे क्षयसे पैदाहुई तृषा मिटतीहै (२४) इसको सुंघाने

से तृषा मिटतीहै (२५) इसमें गायका घी मिला अंजन करनेसे शिरोत्पात रोग मिटताहै ।

संख्या (३८३)

(सं०) मधूच्छिष्ठ, सिक्थकं, मयनं, मधुशेपम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोम, मैण	मोम	मीण	मेण	मम्, मोम	मोम, सित्था	मैनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मळहि, मेळुहु	म्याण, मेणा	शमे	मोम	Cera alba. Cera plumba	White wax Yellow wax

स्थान — मोम हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होताहै पीले और सफेदके भेद से यह दो प्रकारका होताहै ।

इसको मधुके छत्तेमेंसे निकालनेकी यह रीतिहै कि छत्तेमेंसे मधु निचोडनेके पीछे उस छत्तेको ओटते हुए जलमें डाल देनेसे मोम पिघल कर जलके ऊपर तैरने लग जाताहै और उसमें जो कोई दूसरा पदार्थ मिला हुआ होताहै वह नीचे बैठ जाताहै फिर उस पानीके पात्रको अग्नि परसे उतारकर रख लेवें, जब वह ठंडा हो जाय तब मोमको पानीपरसे इकट्ठा लेवें और जबतक यह निर्मल नहीं हो जाय तबतक ऐसे करता रहे, जो उस ओटते हुए पानी में थोडा शोरेका तिज़ाब डाल दिया जाय तो मोम शीघ्रही निर्मल हो जाता है, यह मोम पीला होताहै ।

मोमको सफेद करनेकी यह रीतिहै—कि पीले मोमकी बत्तियें बना, या पतली चकियें बनाके सूर्यकी धाममें रख देनेसे उनके ऊपरका भाग सफेद हो जाताहै, फिर उसको मिला टिकडियां बनाके धूपमें रखनेसे उसके ऊपरका भाग फिर सफेद हो जाताहै, ऐसे बेर बेर करनेसे वह सब मोम सफेद हो जाताहै ।

प्रयोग—(१) मोम—स्निग्ध, मृदु, कटु, पिच्छल, मधुर, और व्रण

रोपणहै (२) घाव या कोमल त्वचा पर तीक्ष्ण पदार्थके स्पर्शसे जो चरपराहट होजातीहै वह मोमके लगानेसे अथवा उस पदार्थमें मोम मिलाके लगानेसे नहीं होतीहै (३) अतिसार और आमातिसार मिटानेवाली औषधियों में मोम मिला देनेसे उनकी शक्ति बढ जातीहै (४) मर्दनके तेल और लेपकी औषधियोंमें और गुदामें देनेकी बत्तियोंमें मोम मिलाया जाताहै (५) ५ से १० रत्तीतक मोम किसी चेपदार औषधि में मिलाके खानेके लिये देसकते है (६) स्नायु सम्बन्धी और गंठियाकी पीड़ाको मिटाने के लिये मोम के तेलका मर्दन करते है (७) मोम मृदु रेचक है (८) ७ मासे मोममें २ मासे नमक मिला, बत्ती बना, घीसे चुपडकर गुदामें देनेसे दस्त आजाताहै और वायशूल मिटजाती है, जो यह बत्ती बाहिर निकल आवेतो फिर पीछी गुदा में देदेना चाहिये।

संख्या (३८४)

(सं०) मधूकः, मधुस्रवः, गुड़पुष्पः, रोध्रपुष्पः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
महुवो	महुआ	महुडो	मोहाचावृक्ष	मउलगाछ	महुआ	इप्प, थिप्प

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
इलुप्पं	दिप्पेमर	-	-	Bassia latifolia	The butter of Mahwa tree

स्थान—मध्य हिन्दुस्थान, कांगडा, कमाउ, अवध, छुटिया नागपुरसे पश्चिमी घाटतक और बंबई अहातेके बहुतसे भागोंमें और विशेप करके गुजरातमें महुवेके वृक्ष बहुत होतेहैं। इसके पेड सूखी पथरीली जमीनमें अच्छे बढतेहैं।

पहिचान—इसके वृत्तकी ऊंचाई ४०,६० फुटकी होतीहै इसकी पेदड छोटी और गुलाईमें ६, ७ फुटकी होतीहै। इसके बहुतसी फैलीहुई शाखें होतीहैं। इसकी छाल एक दो इंच मोटी सफेद भूरी या कुछ काले रंगकी होतीहै उसमें बहुतसे सल और दरारें होतीहैं। इसकी अतर छालमेंसे दूध निकलताहै उसका

रंग लाल होताहै। इसकी डालियोंके अन्तमें ५-६ इञ्च लम्बे बहुतसे पुष्प एक ठौर लगतेहैं। माघसे चैत्रतक इसके पुराने पत्ते गिरजातेह और उनके पीछेही नवीन निकल आतेहैं। इसके कच्चे फल हरे होतेहैं और पक जानेपर ललाई लिये हुए पीले या नारजी रंगके हो जाते हैं; वे एक से दो इंच तक लम्बे और उन में एकसे ४ तक बीज निकलतेहैं, फलोंमें गिर होतीहै। पुष्प गिरजानेके पीछे प्रायः तीन महीने तक फल पका करते हैं। इसके सफेद दूधिया गोंद लगताहै। इस की छालमें से एक प्रकारका रंग निकाला जाताहै।

तेल—(१) इसके बीजोंकी गिर निकाल उसको दवाके तेल निकालतेहैं वह ठखडा तेल कहलाताहै (२) मध्य हिन्दुस्थानमें, इसकी गिरको पीस ओटा उसको कपड़े की दो तीन तहकी थैली में भरकर दवाके तेल निकाल लेतेहै। यह तेल जलाने और साबुन बनानेके काम में आता है और कभी २ उसको घीमें मिला देतेहै।

प्रयोग—(१) महुआ कषेला, कडवा, मधुर, शीतल, पौष्टिक और वीर्य्यवर्द्धकहै (२) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे कफ मिटता है (३) इसका तेल लगाने और मर्दन करनेसे मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीड़ा और त्वचाके रोग मिटतेहैं (४) इसकी खल वामकहै (५) इसकी खलका लेप करने से फोडे साफ हो जातेहै (६) इसकी मदिरा उष्ण, ग्राही, बलवर्द्धक और भूख लगानेवालीहै (७) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे बहुतसे रोग मिटतेहै (८) इनको पीसके मर्दन करनेसे बादीकी पीडा मिटतीहै (९) इसके हरे फल और कोमल छालका दूध औषधिके काममें आताहै (१०) इसकी छालका काथ ग्राही और बलवर्द्धकहै (११) इसकी छालको पीस गर्मकर लेप करनेसे गठिया की पीड़ा मिटती है (१२) इस की छाल को पीसकर मर्दन करने से पामा मिटतीहै (१३) इसकी खलके धुएँसे चूहे और कीडे मरतेहैं (१४) आतोंके कीड़ोंके सबबसे बच्चोंकी भजामेंजो बहुत खाज चला करतीहैं उसको मिटानेके लिये यह तेल लगाया जाताहै (१५) सब शरीरकी निर्बलतासे पैदा हुए नपुंसकपनको मिटानेके लिये इसके २॥ तोले पुष्पोंको पावभर दूधमें ओटाकर पिलाना चाहिये (१६) इसके सूखे पुष्पोंको ओटाके बफारा देनेसे अण्डवृद्धि मिटतीहै (१७) इसके पुष्पोंको खानेसे शरीरके पसीनेमें एक मुख्य प्रकारकी

गंध पैदा होजातीहै (१८) गायको महुवे खिलानेसे उसके दूधमें महुवेकास्वाद आताहै (१९) नीच जातिके लोग इसके पुष्पोंको ओटाके खाया करतेहै (२०) इसके पुष्पों को अधिक खानेसे भयानक वमन होने लग जातीहै (२१) इसके फल खाने के काममें आतेहै (२२) इसके पुष्पोंको कच्चे या ओटाके और उनकी मिठाई वनाके खातेहै (२३) इसके पुष्पोंसे खांड वनाई जातीहै (२४) इसकी खल और वीज खानेके काममें आतेहै (२५) ये उत्तेजक, उष्ण और पौष्टिकहैं (२६) इसके रातका अजन करनेसे शुक्ररोग मिटताहै (२७) कोल्हूसे निकालेहुए इसके वीजोंके तेलका मर्दन करनेसे वादीकी पीडा और सर्दीके रोग मिटतेहै (२८) इसके पुष्पोंसे वनायेहुए तेलका मर्दन करनेसे सर्दी और गर्मी की मस्तकपीडा मिटतीहै (२९) इसके पत्ते और टहनियोंको कूट रोटी वनाके अडकोष पर बांधनेसे उनकी शोथ उतरतीहै (३०) इसके पत्तोंके तेल लगा तपाके बांधनेसे फोडा मिटताहै (३१) इसके बीजोंकी मींगीकी वत्ती वनाकर गुदामें देनेसे वायुशूल मिटतीहै (३२) एक बीजकी आधी मींगी और २॥ कालीमिरच पीसके सुंघानेसे मिरगीमें चेत आजाताहै ।

संख्या (३८५)

जलमधुकः, मंगल्यः, दीर्घपत्रकः, गौरिकाख्यः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
महुवे का भेद	जलमहुवा	जलमहुडो	जेनमोहाचावृक्ष	जलमौल		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Bassia longifolia.	The Mawa or Mahva tree

स्थान—इस महुवेके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन और कनारामें होतेहै ।

इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै वह आधा जमाहुआ और पीत रंगका होताहै । यह तेल जलाने और साबुन वनानेके काममें आताहै और जल्दी विगड जाताहै ।

प्रयोग—(१) जलमहुवा—मधुर, वृष्य, शीतल और बलवर्द्धक है (२) इसके बीजोंकी खल बाल धोनेके काममें आतीहै (३) इस महुवेका तेल त्वचाके रोगोंके काममें आताहै (४) इसके पुष्प हल्के सारकहै (५) इसके पत्ते, छाल, छालका रस और कोमल फलका औषधिमें प्रयोग किया जाताहै (६) यह ग्राही है और अंगकी कठोरताको ढीली करताहै (७) इसमें भी उक्तमहुवे जैसे गुणहैं।

संख्या (३८६)

(सं०) मनःशिला, कुनटी, मनोगुप्ता, सुरागा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मैणसल	मैनशिल	मणशल, मणशील	मनशील	मनछाल	मनशिल	मणिशिन

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मनोशिलइ	मणिशिल			Arsenicum sulphidum	Realgar Red orpiment (Red arsenic) Disulphide of *

* arsenic, Native sulphuret of arsenic

स्थान—मैनशिल हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमें से निकलतीहै।

पहिचान—मैनशिल तीन प्रकारकी होतीहै (१) श्यमागी (२) करवीरका और (३) द्विखंडा, इनमें करवीरका सबसे उत्तम होतीहै।

इसको शुद्ध करनेकी रीति—(१) इसके छोटे २ टुकडे कर, पोटलीमें बांध, हल्दीके काथमें दोलायंत्रकी भांति एक पहरतक मदाग्निसे औटाना चाहिये। (२) पूर्वोक्त रीतिसे बकरीके मूत्रमें तीन दिन तक पचाना चाहिये। (३) जलभंगरे और अगतियेके काथमें उसी रीतिसे एक प्रहर तक पचाना चाहिये। (४) अगतियेके पत्तोंके स्वरसकी और अदरखके स्वरसकी अलग २ ७ वेर भावना देनेसे शुद्ध होजाताहै।

प्रयोग और गुण—(१) शुद्ध मैनसिल—पचनेमें भारी, सारक, उष्ण, लेखन, चरपरी, कडवी और स्निग्ध होतीहै (२) विष, श्वास, कास, भूतबाधा और रुधिरविकारको मिटातीहै और शरीरके रंगको सुधारतीहै (३)

इसको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे दाद और खुजली मिटतीहै (४) इसको सरसोंके तेलमें मिलाके लगानेसे जूंएं मरतीहैं (५) इसको घोडे की लाळमें घिसके अंजन करनेसे तन्द्रा दूर होती है (६) ३ तोले मैनसिल को महीन पीस एक सेर गौके घीमें डालके ओटावें, जब उसका धूंआं निकलना बन्ध होजावे, तब एक पात्रमें पानी भरके उसमें डाल देवें पानीके ऊपर तैरेहुए घीको उतार त्वचाके रोगोंके काममें लाना चाहिये (७) अशुद्ध मैनसिलके सेवनसे मंदाग्नि, निर्बलता, कृमिरोग, बद्धकोष्ठ, मूत्रशर्करा, पथरी और मूत्रकृच्छ्र होजाताहै ।

संख्या (३८७)

॥ (सं०) मयूरतुत्थं, वितुन्नकं, शिखिग्रीवं, मयूरकम् ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नीलोतूथो	नीलाथोथा	मोरथुथु	मोरचूक	तुँते	नीलाथोथा	मै इ)लतुत्तमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
गैलतुत्त	गैळतुत्त	तूतियाहिंदी	तुतियाहिन्दी	Capri sulphas	Sulphate of copper Copper sulphate, Blue stone, Blue stone Blue vitriol

इसको शुद्ध करनेकी रीति—बिल्ली और कबूतरकी बींट समानभाग लें, इन दोनोंके बराबर मोरतूथा और मोरतूथेका १० वां भाग सोहागा ले, सबको खरल कर, सरावसंपुटमें कपड मिट्टीसे बन्धकर, थोड़ी अग्निमें जलादेवें । ऐसे तीन आंच देकर फिर दही और दूधकी साथ अलग २ आंच देनेसे यह शुद्ध हो जाता है ।

इसकी भस्म करनेकी रीति—शुद्ध मोरतूथेमें शुद्ध गंधक और शुद्ध टकण मिला, कटहरके रसमें खरल कर, कपड मिट्टीसे सरावसंपुटमें बन्ध कर, कुक्कुटपुटमें दो तीन वेर आंच देनेसे बहुत उत्तम भस्म बन जातीहै ।

प्रयोग—(१) यह बहुत अच्छा वामकहै । खाने और लगानेके काम आताहै (२) पुराने आमातिसार और अतिसारमें मोरतूथेको १ रतीके सोलवें हिस्सेसे

आठवें हिस्से तककी मात्राहै (३) तांबेके जिन पैसोंपर काट आगयो हो उनको इमलीकी खटाईमें घंटे दो घंटे रखकर पिमीवालेके शरीरपर मर्दन करना चाहिये (४) नीलेतूथेको छाछमें बुरकाके विष खाये हुए मनुष्यको पिलानेसे वमन होकर उसका विष निकल जाताहै (५) खासी या छातीके दूसरे रोग मिटानेके लिये तांबेकी चद्दरके एक २ इन्चके सम चोरस टुकड़े कटवाके उस रोगीकी छाती और पीठपर उन टुकडोंको जमाके बाध देतेहै (६) बिगडे हुए फोडों पर तावेके वरक लगा देतेहैं और उनको कई दिनों तक लगे रहनेके लिये उनपर पट्टी बांध देतेहैं (७) नीलातूथा-संकोचक, रेचक और दाहकहै (८) यह नेत्र और त्वचाके रोगोंमें उपकारीहै और विष उतारताहै (९) शुद्ध करनेकी रीति-नीलेतूथेको घी और मधुमें खरल कर मूसमें डालके अंचदेना चाहिये, फिर उसको दही के तोड़में ३ दिन तक भिगो सुखाके खानेके लिये प्रमाणसे दिया जावेतो वमन नहीं होतीहै (१०) इसकी आधी रतीसे एक रती तक मात्रा दी जातीहै (११) इसकी अधिक मात्रा देनेसे तीव्र विष का काम देताहै (११) अफीम, धतूरा, कुचला, सिंगीमोहरा, सोमल और दूसरी चीजोंके विषको उतारनेके लिये नीलेतूथेकी २॥ रतीकी मात्रा, निवाये जलसे देनी चाहिये जो इससे आध घंटेमें असर न हो तो उतनीही मात्रा फिर देनी चाहिये (१२) ७ मासे नीलातूथा और १० मासे त्रिफलेको जो कूट कर रातभर पानीमें भिगो प्रात.काल उस जलकी पिचकारी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१३) इसको महीन पीसके घावपर बुरकानेसे रुधिरका निकलना बन्ध हो जाताहै (१४) इसके गुण—यह चरपरा, सलोना कषैला, विशद, लघु, लेखन और भेदीहै, और नेत्रोंको हितकारीहै (१५) कृमि, कंडू और विषको मिटाताहै (१६) २ रती तूतिया और १ मासे कमलगट्टे पीसके निवाये जलके साथ पिलानेसे वमन होकर विष उतर जाताहै (१७) इसका जल नेत्रमें डालनेसे शुक्र रोग मिटताहै (१८) इसको अग्निपर चढाके लोहेके दस्तेसे महीन घोट फिर उतारके दांतों पर मलनेसे दंतपीडा मिटतीहै।

संख्या-(३८८)

(सं०) मयूरशिखा, सहस्रा, शिखिनी, बर्हिचूडा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोरशिखा	मोरशिखा	मोरशिखा	मोराचीशेंडी	लालमोरगफुल	मोरशिखा	मयूरशिखि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
			हवक	Celosia Cristata	

स्थान — मोरशिखा बंगाल हिन्दुस्थानके उत्तरके भाग और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें सब ठौर पैदा होतीहै।

प्रयोग—(१) यह–लघु, शीतल, कषेली और रस और विपाकमें खट्टी होतीहै (२) इसके पुष्प ग्राहीहै (३) इनका क्वाथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (४) इनका शर्बत पिलानेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका निकलना बन्ध हो जाताहै (५) इसके बीज चरपराहट मिटानेवालेहैं (६) इसके बीजोंको घोट छानके पीनेसे मूतनेके समयकी पीड़ा मिटतीहै (७) उनके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे खांसी मिटतीहै (८) सौंफके अर्कके साथ इसके बनकी फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै (९) इसकी जड़को चांवलोंके धोवनके साथ पीने और उन दिनोंमें केवल दूध पीते रहनेसे पथरी गल जातीहै।

संख्या (३८९)

(सं०) मरिचं, श्यामं, यवनेष्टं, शिरोवृत्तम्, ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कालीमिरच	कालीमिरच	मरि (री)	मिरें	गोलमिरच	कालीमरिच	मिरियालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंगरेजी
मोळह्	मिणसु	फिलफिल अस्वद	पिलपिलेगिर्द	Capsicum awinum C frutiacens C minimum	

स्थान—सरकारके जंगलोंमें काली मिरचकी बेलें अपने आप उगतीहैं और दाक्षिण हिन्दुस्थानके उष्ण और आर्द्र भागोंमें काली मिरचकी बेलें बोई जातीहैं।

कालीमिरचोंको पूरी पके पहिले ही तोडके सुखा देतेहैं ये पूरी पक जानेसे इनका चरपराहट कम होजाताहै जब इनका रंग हरेसे लाल होने लगे तब जान लेना चाहिये कि अब ये तोडनेके लायक होगईहैं, तब इनको तोडके सूर्यकी धूपमें अथवा मदअग्निसे सुखालेतेहैं। इन कालीमिरचोंको जलके साथ पत्थर पर रगडनेसे इनका छिलका उतरके सफेद निकल आतीहैं तब इनको सफेद मिरचे कहतेहैं, सफेद मिरच कोई दूसरी चीज नहींहै।

प्रयोग—(१) यह चरपरी, तीक्ष्ण, दीपन, पित्तकारक, उष्ण, रूक्ष और पेटकी पीडा मिटानेवालीहै (२) विषमज्वर, अर्श और मन्दाग्निमें काम आतीहै (३) मस्तकमें किसी ठौरके बाल उडजातेहैं तो उस ठौरपर कालीमिरचका लेप करतेहैं (४) कालीमिरचका लेप करनेसे गांठ बिखरजातीहैं (५) पेटके यन्त्रोंके बहावकी रुकावट मिटानेकेलिये कालीमिरचकी फकी देतेहैं (६) जहर उतारनेकेलिये कालीमिरचके चूर्णको घीमें मिलाके पिलाना चाहिये (७) स्नायुजालकी निर्बलता मिटानेकेलिये कालीमिरचका प्रयोग करतेहैं (८) हाथ पैर या और किसी अंगकी शून्यता मिटानेकेलिये कालीमिरचका लेप करतेहैं (९) कालीमिरचके क्वाथसे गडूष (कुल्ले) या इसके चूर्णसे दंतमञ्जन करनेसे दांतोंकी पीडा मिटतीहै (१०) कालीमिरच और खीराककडी के बीज जलके साथ पीस छानके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) विषैले जीवोंके काटनेसे जो मनुष्य मूर्छित होगया हो उसको चैतन्य करनेकेलिये कालीमिरचके चूर्णकी नस्य देना अथवा इसके चूर्णको उसके मुहमें बुरकाना चाहिये (१२) विसूचिकामें शरीरकी शिथिलता मिटानेकेलिये कालीमिरचके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (१३) ज्वरके पीछेकी निर्बलता, भ्रम, मूर्छा और आमाशयकी पीडा (जो मदाग्नि और आध्मानमें होजातीहै) उसको मिटानेकेलिये कालीमिरच बहुत अच्छीहै (१४) दुष्ट वायु आदिसे उत्पन्न ज्वरकी वारीको रोकनेकेलिये और नीचेके अर्द्धांग और गठिया सम्बन्धी रोगोंको मिटानेकेलिये इसका प्रयोग बहुत गुणकारीहै (१५) गलरोगमें गलेकी नशोंकी शिथिलता, अर्श और त्वचाके कई रोग मिटानेकेलिये कालीमिरचका लेप करना चाहिये (१६) कफसे मस्तकके भारीपनको मिटानेके लिये काली मिरचकी नस्य देनी चाहिये (१७) शूल और

विशूचिकामें कालीमिरचका काथ पिलाना चाहिये (१८) २॥ रत्तीसे १॥ मासे तक कालीमिरचका चूर्ण उत्तेजक है, पेटकी शूल मिटाताहै और वायुसे आनेवाले बुखारको रोकताहै (१९) साधारण निर्बलताको मिटानेकेलिये और गुदाके बाहिर निकलनेको बन्ध करनेके लिये कालीमिरचका प्रयोग बहुत अच्छाहै (२०) जब विशूचिकाके वमन - विरेचनादि सब बन्ध होजावें और पेटमें आध्मान होजावे उस समयमें काली मिरचका अष्टमाश तथा इससेभी अधिक शेष क्वाथ करके पिलाना चाहिये (२१) कालीमिरचका लेप करनेसे शोथ मिटतीहै (२२ दांतो के मंजन में काली मिरचभी मिलाई जाती है (२३) इसको पीसके घीके साथ मर्दन करनेसे उदर्द रोग मिटताहै (२४) फोडे फुन्सियों पर कालीमिरचका लेप करना चाहिये (२५) अम्लपित्त मिटानेकेलिये कालीमिरचका प्रयोग बहुत अच्छा है (२६) मन्दाग्नि में आध्मानको मिटानेके लिये हींग, कालीमिरच और कपूरकी गोली बनाके देना चाहिये (२७) इसको घीमें घिसके नाकमें टपकानेसे आधाशीशी मिटतीहै (२८) कालीमिरचको घोड़ेकी लालमें घिसकर अंजन करनेसे अधिक निद्राका आना बन्धहोताहै (२९) इनको थूकमें घिसके आंजनेसे नेत्रपीडा मिटतीहै (३०) २१ कालीमिरच और २१ नीमके पत्तोंको महीन वस्त्रमें पोटली बाध आधसेर पानीमें ओटा ६ तोले रखके दोनों समय पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (३१) इसके चूर्णको गुड और दहीके साथ खिलानेसे पीनस रोग मिटताहै । परन्तु इसके खानेके समय घी युक्त गेहूंकी रोटीका पथ्य देना और रात्रिको सोते समय ठंढा पानी पिलाना हितकारीहै (३२) ७ कालीमिरचें थोडे पानीसे निगलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (३३) १२ काली मिरच और शिरपके पत्ते घोट छानके पीनेसे उदरपीडा मिटतीहै (३४) इसके चूर्णको मधु और शकर के साथ चाटनेसे श्वास, कास और कफ मिटताहै (३५) दहीके तोडमें काली मिरचको घिसके अंजन करनेसे रतोधा मिटतीहै (३६) भागरेके रस अथवा चावलोके पानीकी साथ इनको पीसके लेप करनेसे आधा शीशी मिटतीहै ।

संख्या (३६०)

(म०) रक्तमरिचं कटुवीरा, पित्तकारिणी, ज्वालामरिचम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
लालमिरच	लालमिरच	मरची	मिरची	लंकामरिच	लालमरच	मिरपकाय

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
मुलाकायु	मेणिशिन काय	फिलफिलअह्मर	पिलपिलसुर्ख	[illegible]	[illegible]

स्थान— लाल मिरच हिन्दुस्थानमे सब ठौर बोई जातीहै।

यह लम्बाई, गुलाई और रंगके कारणसे सात प्रकारकी होतीहै पहाडपर पैदाहुई मिरच बहुत चरपरी होतीहै।

प्रयोग—(१) लाल मिरच खानेसे बिगडीहुई वायु और जलका असर कम होताहै (२) यह मिरच उत्तेजकहै (३) इसकी गुडमे गोली बनाके देनेसे पेटका शूल मिटताहै (४) कत्थे और बादामके गोंदके साथ इसकी गोली बनाके देनेसे गवैये और व्याख्यान देनेवालोंका स्वरभंग मिटताहै (५) इसके हिम फांट या क्वाथके कुल्ले करनेसे गलेके बिगडेहुए घाव (चाहे वहीं हुए हों चाहे दूसरे स्थानके सम्बन्धसे हुए हों) मिट जातेहैं (६) इसकी और हींगकी गोली बनाके देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (७) छोटे छोडोंकी हल्की मोंजिशको यह गोली मिटा देतीहै (८) यह गोली उत्तेजक है (९) आमाशयकी निर्बलता मिटानेवाली, जितनी कडवी, बलवर्द्धक और उत्तेजक चीजेंहै उनमे लाल मिरच मिला देनेसे उनकी शक्ति बढ जातीहै (१०) लालमिरच, हींग और बचकी गोलियां बनाके विसूचिकामें देतेहैं (११) मूत्रकृच्छ्रवालोंको लालमिरचसे बचना चाहिये (१२) सर्पके काटेहुए का अचेतपन मिटानेके लिये लालमिरचको महीन पीसकर उसके मुहमे बुरकाना चाहिये (१३) विषूचिकामें अफीम और सकीहुई हींगकी गोली देके उपर लालमिरचका क्वाथ पिलाना चाहिये (१४) इसके हिम फांट या क्वाथ के कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (१५) बीज निकालीहुई मिरच (मिरच के

फ़ुंतरे) कोई हानि नहीं करतीहै (१६) इसके बीज बहुत दाह करतेहैं (१७) मिरचको पीसके कुत्तेके दशपर लेप करतेहैं (१८) तीन पान ओटतेहुए पानीमें १। तोले लालमिरच डाल, ठंढा कर छानके कुल्ले करानेसे तीव्र मुखपाक मिटता है (१९) कंपवायु मिटानेकेलिये सवा मासे लालमिरचकी गोली बनाके देनी चाहिये (२०) विषूचिकामें लालमिरच, कपूर और सेकी हुई हींगकी गोली देनी चाहिये (२१) काग या तालुकी छत लटक जावे तो लाल मिरचको कुछ देरतक मुखमें रखके मुंहका पानी झार देना चाहिये (२२) लालमिरच, रेवतचीनी और सोंठको बराबर ले गोलिया बनाके खिलानेसे मंदाग्नि मिटती है (२३) बद्धकोष्ठवालेको ये गोलियें लाभकारी है। और इन गोलियों से आंतो मे उत्तेजना पैदा होतीहै (२४) रक्तातिसार मिटानेके लिये इसके बीजोंके तेलकी १० बूंदें २ मासे शकरमें मिलाके फकी देना चाहिये (२५) उष्णकालमें शरीरपर जो फुन्सिया होतीहै उनपर यह तेल लगाना चाहिये (२६) पित्तसे जिसकी भूख बंध होगई हो उसको शक्तिके अनुसार इसकी ५ से ३० बूंद तक शकर में डालके फकी देनी चाहिये (२७) विच्छूके दशपर जो ठंढी हवा या ठंढा पानी अच्छा लगता हो तो उसपर इसतेलके लगानेसे शान्ति होतीहै (२८) ईशरवोलकी ३ मासे भुस्सीपर इस तेलकी ५ से १० बूंदें डालके फकी देनेसे पित्तका मूत्र कृच्छ्र मिटता है (२९) इसके एक बीजकी मोममें गोली बनाके विषूचिकामें देनेसे लाभ होताहै (३०) इसके २० तोले बीजोंमेसे २, ३ तोले तेल निकलताहै ।



संख्या (३६१)

Latin Capsicum frutescens Eng. Spur papper Cayenne pepper Goat Pepper Chillies The shrubby capsicum

स्थान—लालमिरचकी यह जातिभी हिन्दुस्थानमे सब ठौर बोई जातीहै। परन्तु बहुधा बंगाल ओडिसा और मद्रासकी वालू रेतकी हल्की पृथ्वीमें शीतकालमें बोई जातीहै । जब यह पकजातीहै तब इसका रंग चमकीला लाल होजाताहै । यह सबसे बडी होतीहै ।

प्रयोग—(१) ज्वर मिटानेवाली औषधियोंमे लालमिरच मिलाके देने-

से पानीजरा और नारीका ज्वर छूट जाताहै (२) इसको आकडेके दूधमें खरल कर गोलिया बनाके देनेसे जलंधर मिटताहै (३) हीग और गुडके साथ गोलियां बनाके देनेसे पेटका दर्द मिटताहै (४) सेकके धोई हुई भंग और लाल मिरच बराबर ले, महीन पीस, दुगुने गुडमें गोलिया बना, एक २ मासे भर गोलिया, तीन तीन घंटेके अंतरसे शीतज्वरके आनेके पहिले, तीन वेर देनेसे ज्वर छूटताहै (५) छोटे जाडोंकी सूजन, मंदाग्नि और विसूचिकामें इसका प्रयोग बहुत उपकारीहै (६) इसके बीजोंके बहुत महीन पाच पाच रती चूरणकी २॥ तोले गर्म जलके साथ दिनमें दो तीन वेर फकी देनेसे हाथ पैरोंकी कंपवायु मिटतीहै (७) इनको तिल्लीके तेलमें जला छान उस तेलको मर्दन करनेसे छोटे जोडोंकी सूजन उतरतीहै ।

संख्या (३९२)

Latin Capsicum minimum C fastigiatum Eng Bird's eye chilli

स्थान— यह जातिभी हिन्दुस्थानभरमें बोई जातीहै, परन्तु बहुत नहीं।

पहिचान—यह आकारमें छोटी होतीहै और पहिली संख्याकी मिरचसे बहुत मिलतीहै। इसके बीज छोटे, मिरच सीधी, प्रायः गोल और पकने पर पीली होजातीहै ।

प्रयोग—(१) २॥ तोले लाल मिरच और २॥ तोले नमक, इन दोनोंको पीस, ओटतेहुए सवा पाव पानीमें डाल देवे जब ठंढा होजावे तब उसमें सवा पाव सिरका मिलाके छान लेवे इसमेंसे १। तोले हर चोथे घंटे पिलानेसे जवान मनुष्यके गलेकी पीडासे पैदाहुआ ज्वर छूट जाताहै (२) इसकी मात्रा बच्चोंकी आयुके अनुसार तथा रोगकी प्रबलताके अनुसार न्यूनाधिक कर देनी चाहिये (३) गले सम्बन्धी और स्वर सम्बन्धी रोगोंमें इसके कुल्ले करनेसे बहुत लाभ होताहै (४) यह मिरच तीव्र उत्तेजकहै (५) निरंतर रहनेवाले पैत्तिक ज्वरकी वमनको रोकनेके लिये इसके चूर्णको सिरकेकी सिकंजी और पेपरामिंट के साथ पिलाना चाहिये (६) शब्दवाहिनी शिराओं के शिथिल होजानेसे जो आवाजका भारीपन, स्वरभंग या गलेके दूसरे रोग

मिटानेके लिये इन्हीं रोगोंकी दूसरी आपत्तियोंमें मिरचका-मिला ओटाके उस काथसे कुल्ले कराने चाहिये (७) राईके साथ इस मिरचको पीस, इसका पलस्तर बनाके लगानेसे राईका गुण बहुत बढ जाताहै, (८) मंदाग्नि, कामलासहित ज्वर और कभी २ अतिसार और अर्शमें भी इसका प्रयोग किया जाताहै।

संख्या (३९२)

(सं०) मरुवकः, फणिज्झकः, मरुत्तकः, प्रस्थपुष्पः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तिलंगी
मरवा	मरुवा	मरवा	मरवा, मर्वा	गंधतुलसी	मरुआ	मरवमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
मरुवा	मरवा	मरजन, नाग मरजन, गोश		Origanum mar-rana / marjorana	The sweet Marjoram

स्थान—मरुवेके वृक्ष बहुधा हिन्दुस्थानके बागोंमें बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) यह चरपरा, उष्ण, रसमें और पाकमें चरपरा, पचनेमें लघु, रेचक, कडवा, रूक्ष, दीपन, हृद्य और पाचक है। अग्निको बढाताहै। वृश्चिकादिविष, कफ, वात, कृमि, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर, कंडू, अरुचि, श्वास, शोथ, हृद्रोग, दांतकी गाठ, आध्मान शूल, मंदाग्नि, रक्तदोष, मिलावेकी शोथको मिटाताहै इसके बीज ग्राही हैं (२) इसके बीजोंकी फंकी लेनेसे शूल मिटती है (३) मरजनकी चूर्णी और इसके पत्तोंकी फंकी लेनेसे शूल मिटता, (४) इसके पंचांगकी चूर्णी उत्तेजक है (५) आमातिसारकी शूल मिटानेके लिये इसके बीजोंके काथका बफारा देना चाहिये (६) इसको पीसके अंडकोशपर बांधनेसे उनकी सूजन और पीडा मिटतीहै (७) इसके रसका लेप करनेसे वातपीडा मिटतीहै। इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तैल निकाला जाताहै जो सुगंधके काममें आताहै।

संख्या (३६४)

(सं०) मर्यादवल्लि मर्यादा, सागग, मन्मथा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	मग्जादवेल	मर्जादवेल्य	मर्यादवेल			

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				[illegible]	

स्थान—मर्यादवल्लीकी वेलें पश्चिमके किनारे समुद्रके पास होतीहैं॥

परिचय—इसकी बडी बेल होतीहै, इसके पत्ते कचनारके पत्तोंके जैसे दो दो जुडे हुए होतेहैं। इसके लाल रंगके पुष्प लगतेहै।

प्रयोग—(१) यह शीतल, ग्राही, नारक, पचनेमें भारी और अन्तमें उष्ण होताहै। नाडी पैदा करतीहै। विषूचिका, आम, शूल और वमन को मिटातीहै (२) इसके पत्ते गठिया पर बांधे जातेहैं (३) पेटकी शूल मिटाने के लिये इसके पत्तो पर एरंड का तेल चुपड गर्म करके बांधना चाहिये, (४) जलधर वाले के मूत्रशुद्धि करनेके लिये इसके पत्तोंका अर्क पिलाना चाहिये और उनका पीस गर्म करके उसके पेटपर लेप करना चाहिये (५) इसके प्रयोग से स्त्री गर्भको धारण करतीहै॥

संख्या (३६५)

(सं०) मल्लिका, तृणशून्य, भूपदी, शीतभीरु।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोतियो	बेलमोतिया	वेल्य डोलर	वटमोगरा	मलिकाफूल रगाछ	मोतिया	मल्लेपुव्वु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मल्लिहई	मल्लिगे			Jasminum sambac J. Zambac	

स्थान—मोतिया हिन्दुस्थानके बागोंमें वोया जाताहै।

पहिचान—इसका झाड बहुधा वृक्षोंके आश्रय रहताहै इसकी प्रकृति वेलडी जैसी होतीहै, इसके २--३ इंच लम्बे पत्ते डंडीके आमने सामने लगतेहैं, वे अण्डाकार और कुछ लम्बे होतेहैं। चैत्र वैशाखमें इसके सुगंधवाले सफेद पुष्प लगतेहैं इसके पुष्पोंसे तेल बनातेहैं जिसमें बहुत सुगंध होतीहै।

प्रयोग—(१) इसके पुष्पोंको पीस टिकिया बनाके दिन में एक दो वेर स्त्रीके स्तनोंपर बांधनेसे दुग्धका संचार बन्ध होजाताहै। किसी २ के एक दिन और किसी २ के तीन दिन बांधने पडतेहैं (२) सूखे पत्तोंको पानीमें भिगो पुल्टिस बांधनेसे पुराना और बहुत समयमें अच्छा होनेवाला व्रण मिटताहै (३) अपने आप उगीहुई मल्लिकाके जडका काथ करके पिलानेसे स्त्रियों का कष्टसे मासिकधर्म होना मिटताहै (४) इसके पुष्पोंका शर्वत पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (५) इसके काथसे आंखोंको धोनेसे अथवा इसके अर्क की बूंदे आखमें डालनेसे ज्योतिकी निर्वलता मिटतीहै (६) इसके काथके गडूष करनेसे मुखपाक मिटताहै।

संख्या (३९६)

(सं०) मसूरः, रागदालिः, मंगल्यः, ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलङ्गी
मसूर	मसूर	मसूर	मसूरा	मसूरि	मसूर	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		अदस्	मरजूमक	Lens esculenta Ervum L	The Lentil

स्थान—मसूर शीतकालमें सब हिन्दुस्थानमें वोया जाताहै।

प्रयाग—(१) मसूर–मधुर, शीतल, ग्राही, रूक्ष, लघु, कपेला और विशदहै (२) बिगड़ेहुए और वहुत समयमें अच्छे होनेवाले व्रणको साफ

करनेके लिये ममूरका लेप करना चाहिये, या उसका पुल्टिस बनाके बाधना चाहिये (३) आतोके रोग मिटानेके लिये मसूरका सेवन करना चाहिये (४) चेचक निकालनेके पीछे जो फोडे हुआ करतेहै उनके ऊपर मसूरकी फलीका लेप करना चाहिये या इसका पुल्टिस बनाके बाधना चाहिये (५) यह उष्ण है और इसका लगातार कई दिना तक सेवन करनेसे उष्माके कारण शरीर पर फोडे फुन्सी होने लगजातेहै (६) मसूरकी भसमका मंजन करनेसे दात साफ रहतेहै (७) इसके पत्तोको औटाके गरारा करनेसे कठकी सूजन मिटती है (८) मसूरको जला भसके दूधमें मिलाकर नित्य दोनों समय लगानेसे असाध्य घाव भर जाताहै (९) मसूर और अनारकी छाल औटा, पीसके लगानेसे गर्मीसे पैदाहुई अण्डकोपकी सूजन मिटतीहै (१०) इसके काथसे अगुलियोको धोनेसे उनकी खुजली मिटतीहै (११) इसके तुसोंकी धूनी देनेसे उवरके रोग मिटतेहै (१२) इसके काथमें बीलगिरको सिजोके खानेसे सग्रहणी मिटतीहै (१३) इसकी दालको निवाये पानीसे पीसके लेप करनेसे पैरोंकी दाह मिटतीहै (१४) इसको दूधसे पीस उसमे घी डालके मुखपर मलनेसे मुखकी कान्ति बढतीहै (१५) मसूरकी राख और सफेद कत्था दोनों बराबर ले, पीसके बुरकानेसे मुखके छाले मिटतेहै (१६) मसूर और अनार की छालको पीसके लगानेसे नाडीव्रण मिटताहै (१७) मसूर को सिरके में औटा अर्द्धोष्ण लेप करनेसे पीठ और कटिकी पीडा मिटतीहै (१८) मसूर को नीबूके रसके साथ पीस, लेप करने या मलनेसे मुखकी झाई मिटतीहै (१९) मसूर और खरबूजाके बीजोकी मीगी, दोनों बराबर ले, पीसके उबटना करनेसे शरीरका रग लाल और चमकदार होजाताहै (२०) मसूरके काथ और बीलगिरसे घृत सिद्ध करके सेवन करानेसे संग्रहणी मिटतीहै (२१) घीके साथ मसूरका लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै (२२) इसके आटेका उबटना करनेसे शरीरका रंग सुधरताहै (२३) मसूरका एक दाना और नीमके दो पत्तोंको मेषकी संक्रान्तिके दिन खानेसे एक वर्ष तक विषका भय नहीं रहता है (२४) पुराने और स्वाभाविक बद्धकोष्ठको मिटानेके लिये मसूरका सेवन कराना चाहिये । (२५) १०० तोले मसूरमें ५८॥ तोले मैदा, सवा तोले तेल, और पौने बारह तोले पानी होताहै ।

संख्या (२६७)

(सं०) माखान्न, पानीयफलं, मखान्नं, पद्मबीजाभम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
फूलमखाना	मखाना	मखाणा	मखाणे	माखना	फूलमखाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Euryale ferox E. Indies	The gorgon fruit

स्थान—मखाने के वृक्ष पूर्वी बंगाल, आसाम, मनीपुर, अवध और कश्मीर आदि देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्ष की शाखा नहीं होती है । ये मीठे पानी के बडे तालावों में होते हैं । इसके पत्ते गोल और नोंक या कांटेदार होते हैं जिनकी मध्यरेखा दो से तीन फुटतक होतीहै । इसके पत्ते पानीपर तैरते रहतेहैं । इसके पुष्प नीले, गहरे नीले, नाफरमानी, या चमकीले लाल रंगके होतेहैं । इसके फल गोल, कांटेदार, नारंगी जितने बड़े और पकने पीछे वे कई ठौर से फूल जाते हैं, क्योंकि इसके बीज भीतर बडे होजाते हैं । इसके बीज मटर जितने बडे और काले रंगके होतेहैं इनको चने या धानीकी जैसे उष्णरेतसे सेक लेतेहैं । इनको मारवाड़ी में फूलमखाने कहते हैं ये फलहारमें और खानेके काममें आतेहैं ।

प्रयोग—(१) फूलमखाने—ग्राही, बल्य, विष्टम्भी, वृष्य रूक्ष, शीतल, मीठे, कषैले, तिक्त और गुरुहैं (२) इनको घीमें तलके खिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) इनकी खीरपर सालममिश्रीका चूर्ण बुरकाके खिलानेसे प्रमेह मिटताहै (४) ये पचनेमें हल्केहैं, इसलिये मंदाग्निवाले रोगीको इनका पथ्य देना चाहिये (५) रोग छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटाने के लिये इनका सेवन कराना चाहिये (६) ये कफ और वातको पैदा करतेहैं (७) रक्तपित्त और दाहको मिटातेहैं और गर्भ स्थापन करतेहैं ।

संख्या (३९८)

(सं०) माडः, ध्वजवृक्षः, वितानकः, मद्यद्रुमः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	माड	मींड	भेर्लिमाड			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
				Caryota urens	Hill plam Sago palm Torn leaved caryota

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमी घाट पर महाबलेश्वर तक, ब्रह्मा, बंगाल, ओडीसा और सिकममें बहुत होतेहै ॥

प्रयोग—(१) यह-शीतल, चरपरा, रोचक और कषेलाहै । तृषा और श्रमको मिटाताहै । पित्त, दाह, बादी और कफको पैदा करताहै (२) इसकी ताजी ताडीका एक गिलास प्रातःकाल पीने से बद्धकोष्ठ मिटताहै (३) इसके फलको पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (४) इस वृक्षमें से ताड़ी निकलतीहै जिसकी मदिरा बनाई जातीहै ।

संख्या (३९९)

(सं०) माणिक्यं, पद्मरागः, रत्नराट्, शोणरत्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
माणक	मानिक	माणयक चुनी	माणिक	मानिक		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
---	---	याकूत		Rubinus	Ruby

गुण—(१) माणक-मधुर, स्निग्ध, रसायन, दीपन और वृष्यहै । कफ, भूतबाधा, वात, पित्त, व्रण और क्षयको मिटाताहै ।

संख्या (४००)

(सं०) माधवी, वासन्ती, अतिमुक्ता, चन्द्रवल्ली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	माधवी	माधवीलता	मधुमाधवी	माधवीलता	माधवी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Hiptage madablata Gaertneraracemosa	Clustered hiptage

स्थान—माधवीकी वेलें हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतीहै इसकी वेल वहुधा शालके वृक्षपर चढतीहै ।

पहिचान—इसके ४—६ इंच लम्बे और अण्डेके आकारके चिकने पत्ते लगतेहै। इसके पौन इंच लम्बे सफेद और पीले रंगके सुन्दर पुष्प लगतेहै। वैशाखमें इसके फल लगतेहै ।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहै (२) इसका अर्क पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहै (३) खुजली मिटानेकेलिये इसके अर्कका लेप करना चाहिये (४) इसके पंचांगका तेल बनाके मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (५) इसके पत्तोंको औटाके पिलानेसे श्वास मिटताहै ।

संख्या (४०१)

(सं०) फूलकंदक, स्थूलकंदः, महापत्रः, महच्छदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मानपात	मानकंद		मानकंद	मानकचु		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Alocasia indica Arum folleum	

स्थान—मानपात बंगालमें होताहै, परन्तु हिन्दुस्थानमें सब बागोंमें लगाया जाताहै। इसके वृक्ष ढीली पृथ्वीमें या राख भरेहुए गढ्ढेमें लगाये जावेंतो बहुत अच्छे बढतेहैं।

प्रयोग—(१) मानकन्द-शीतल, चरपरा, मीठा, गुरु और पाकमें लघु है (२) यह सर्वांग जलमयशोथ में काम आता है (३) इसके पत्तोंकी सूखी डडियोंको पीस उनका आटा निकाल उसको चावलोंके आटेकी साथ इतना ओटावें कि उसका सब पानी जल जावे तब उसको उक्त शोथवाले रोगीको खानेकेलिये देवे और इसके सिवाय उसको और कुछ खानेको न देवे (४) इसका कद हलुका सारकहै (५) इसके प्रयोगसे सूत्रकी वृद्धि होतीहै (६) इसके खानेसे बद्धकोष्ठकी प्रकृति मिटजातीहै (७) अर्शवालेकेलिये इसका सेवन बहुत उपकारीहै (८) इसके कंदको जला पीस मधुके साथ लगानेसे बच्चोंके मुहके सफेद छाले मिटतेहैं (९) इसके पत्तोंकी डडिया जो २—३ फुट लम्बी होतीहै, और कुछ महीनोंकेलिये निर्दूषित पडी रहतीहै, उनको बंगाली लोग इस रीतिसे खानेके काममें बहुत लातेहै कि इसके कंद और पत्तोंकी डंडियोंके कडे छिलकेको दूरकर उनकी गिरको पानीमें ओटाके उस पानीको निकाल देतेहैं, नहीं तो गले और तालूमें काटे होजातेहैं (१०) निर्बल मनुष्योंके लिये इसकी पुरानी सूखी डडियोंके आटेका भोजन बहुत उपकारी है। इसका आटा अरारूट और सागूदानेका बहुत अच्छा प्रतिनिधि (बदला) है। यह आटा पचनेमें चावलोंसे हल्काहै। जिस सर्वांग जलमय शोथवाले रोगीको खानेके लिये अन्न छुडाके केवल दूध देते रहनेसे दूधही पचताहै और अन्न पचना बन्द हो जाताहै उसको इस कदके आटेका पथ्य खानेका अभ्यास करानेसे उसको पीछा अन्न पचने लग जाताहै (११) मंदाग्निवाले के लिये कद और डडियोंके आटेका पथ्य बनाके खिलाना बहुत उपकारीहै क्योंकि यह पचनेमें हल्का, मास बढानेवाला, चेप और रसदार होताहै (१२) मानकंदका चूर्ण एक भाग और चांवल दो भागकी दूध और जलमें खीर बनाके खिलानेसे वातोदरकी शोथ उतरतीहै (१३) इस कंदके क्वाथ और कल्कसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे तीनों दोषोंकी शोथ उतरतीहै।

संख्या (४०२).

(सं०) मालती, गंधभद्रा, मधुमल्ली, सुगंधा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मालती	मालती	मालती	मालती	गंधमालती	मालती	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Aganosma caryophyllata Dc bifes. C.	

स्थान-मालती बंगालके नीचेके भाग दक्षिण प्रायद्वीप और बहुतसे पहाडी भागोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१) मालती-उष्ण, रेचक और बलवर्द्धकहै (२) कफ, पित्त रुधिरविकार, त्वग्दोष, कृमि, कुष्ठ, व्रण, शोथ, कानका बहना और मुखपाकको मिटातीहै (३) इसके पत्ते कफ और पित्तको मिटातेहैं (४) इसके पुष्प नेत्रोंको हितकारीहै (५) रुधिर शुद्ध करनेकेलिये इसका प्रयोग करना चाहिये (६) यह पित्तविकारको मिटानेवालीहै (७) इसके पुष्पोंके चूर्णमें ६ मासे शक्कर मिलाकर फकी देनेसे मासिकधर्म में प्रमाणसे अधिक रुधिरका निकलना बन्ध होताहै ।

संख्या (४०३)

(सं०) माषः, कुरुविन्दः, वृषाकरः, पित्र्यः ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
उड़द	उड़द	अड़द	उड़ीद	माषकलाइ	माह	मिनुमुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
उड़ंदु	उद्दु			Phaseolus mungo. Var Radiatus I Roxt urghl.	kidney bean

स्थान—उडदोंकी खेती हिंदुस्थानमें सब ठौर होतीहै ।

पहिचान—उडद दो प्रकारके होतेहैं, एक काले, जो वर्षा ऋतुके प्रारम्भमें बोये जातेहैं और सावन भादोंमें पकतेहैं। दूसरे हरे रंगके जिनको कचिये उडद कहतेहैं ये भी वर्षाके प्रारम्भमें बोये जातेहैं और आसोज तिमें पकतेहैं। कचिये उडदोंको कभी कहीं वसंत ऋतुमें बोतेहैं अर्थात् माघमें तेहैं और वैशाखमें काटतेहैं। १०० तोले उडदोंमें ५६ तोले मैदा और सवा तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) उडद-स्निग्ध, पचनेमें भारी, रस और विपाकमें मधुर, रोचक, उष्ण, शुक्रल, तृप्ति और बलकारक, बृहण, शोषक, वृष्य, वातनाशक, कफ और पित्तकारकहैं (२) उडदोंको सोंठके साथ औटाके पिलानेसे अर्द्धांग वात मिटतीहै (३) एरंडकी जडकी छालके साथ उडदोंको औटाके पिलानेसे गठिया मिटतीहै (४) एक रत्ती सफेद चिरमीके चूर्णको इनके क्वाथ में बुरकाके पिलानेसे स्नायुजालकी शक्ति बढतीहै (५) वादी मिटानेवाले कई तेलोंकी औषधियोंमें उडद मिलाके जो तेल बनाये जातेहैं—उन तेलोंके मर्दनसे गठिया, जुडे हुए घुटने और कडे पडे हुए कंधे आदिकी वादीकी पीडा मिटती है। (६) इसकी जड मादकहै (७) इसका क्वाथ पिलानेसे हड फूटन मिटतीहै (८) पीपवाले फोडोंपर इनका पुल्टिस बांधतेहैं (९) इनकी दाल रांधकर खानेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (१०) उडदोंको रातरूर पित्तशोथमें बांधना चाहिये (११) विषूचिकाकी प्रवृत्तिके दिनोंमें बंगालवाले उडदकी दाल खाना ठीक समझतेहैं क्योंकि वे इसको ठंढी और लघु (तुरंत पचनेवाली) मानतेहैं परंतु आयुर्वेदमें इनको उष्ण और गुरु लिखतेहैं देशभेदसे गुणोंमें यह अंतर हो सकाहै (१२) इनकी दाल, मोगर, रोटी, पापड आदि कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनतेहैं (१३) तालुपर इनके आटेका लेप करनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१४) हल्दी, शणकी छाल और इनके चूर्णका धूम्रपान करनेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१५) इनके आटेके वडे तलके मक्खनके साथ ७ दिन तक खानेसे अर्दितरोग मिटताहै (१६) इनके स्वरसकी नस्य देनेसे अवबाहुक रोग मिटताहै (१७) इनका हुकेमें धरके तमाखूकी भांति इनका धुआं पीनेसे हिचकी मिटतीहै।

संख्या (४०४)

(सं०) माषपर्णी, महासहा, कांबोजी, हयपुच्छी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	बनउर्दी	अड्दवेल	रानउड़ीद	माषानी	जंगलीमाह	कारुमिनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
काडुलदु	काडुदु				—

गुण—(१) यह वृष्य, कड़वी, बलवर्द्धक पौष्टिक, शीतल, रूक्ष, मधुर, ग्राही और कफवर्द्धकहै (२) रुधिरविकार, त्रिदोष, ज्वर, पित्त, रक्तपित्त, क्षय, कास, शोष और दाहको मिटातीहै।

संख्या (४०५)

(सं०) मिश्रेया, मधुरा, छत्रा, तृषापहा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सौंफ	सौंफ	वरियाळी	बडीशोप	मौरीगाछ	सौंफ	सोपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सोंपु	सोपु			Foeniculum vulgare F. Panmorium	Fennel

स्थान—सौंफ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै।

प्रयोग—(१) सौंफका हिम पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटतीहै (२) सौंफको घीमें तल मिश्रीके साथ दरगजके फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै (३) इसका फांट पिलानेसे पेटकी शूल और बच्चोंका अजीर्ण मिटताहै (४) पेटकी शूल मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें इसके तेलकी १५ बूंदें डालके पिलानेसे उदरशूल मिटतीहै (५) इसके और बीलागिरके चूर्णकी फकी लेनेसे

अतिसार मिटताहै (६) यह उत्तेजक, चरपरी और उत्तमगंधवालीहै (७) इसकी जडका क्वाथ पिलानेसे विरेक होताहै (८) इसके पत्तोंका रस या फांट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (९) ७ मासे सोंफमें बराबर शकर मिलाके सोते समय फकी लेनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै (१०) ७ मासे सोंफको घी में सेक उसमें बराबर मिश्री मिला, चूर्ण बनाके ठंढे जलके साथ फकी देनेसे कफका अतिसार मिटताहै (११) इसके प्रयोगसे उदरकी सर्दी और निर्बलता मिटतीहै (१२) १०० तोले सोंफमेंसे ३ तोले तेल निकलताहै वह उडनेवाला पीले रंगका और अच्छी सुगंधवाला होताहै ।

संख्या (४०६)

(सं०) मुकूलकं, पिस्तं, दन्तीफलसमाकृतिः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पिस्ता	पिस्ते	पस्ता	पिस्ते	पेस्तागाछ	पिस्ता	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Pistacia vera. Fistal Bonatale	The Pistachio nut.

स्थान – पिस्तेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नही होतेहै, ये अफगानिस्थान और परसियासे आतेहैं । इस वृक्षके एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ लगताहै इसके पत्ते रंगतके काममें आतेहै । १०० तोले पिस्तोंमेंसे ६० तोले गाढा हरे रंगका मीठा और सुगंधयुक्त तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) पिस्ते पाचक, उष्ण, मांसादिककी न्यूनताको पूर्ण करनेवाले, बलवर्द्धक और पुरुषार्थ बढानेवालेहै (२) इनका तेल चीजोंकी चरपराहट मिटानेकेलिये काममें आताहै (३) इनके तेलका सेवन करनेसे रुधिरमें जो किसी तत्वकी न्यूनता होतीहै वह मिटजातीहै (४) इसकी छालके चूर्णकी फकी देनेसे अजीर्ण मिटताहै (५) इसकी छालके चूर्णको घी और शकरकी साथ खानेसे बल बढताहै (६) पिस्ते, हुल्लास और वमनकोरोकतेहैं ।

संख्या (४०७)

(सं०) मुचुकुंदः, हरिवल्लभः, रक्तप्रसवः, प्रतिविष्णुकः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुचकुंद	मुचकुंद	मुचकुंद	मुचकुंद वृक्ष	मुचकुंद		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंगरेजी
				Pterospermum suberifolium P canescens	

स्थान— मुचकुन्दके वृक्ष उत्तरी सर्कार और कर्णाटकमें बहुत होतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह चरपरा, उष्ण और कडवाहै । स्वरभंग, कफ, कास, त्वचाके रोग, शोथ, मस्तकपीडा, त्रिदोष, रक्तपित्त, व्रण और पावको मिटाताहै (२) इसके पुष्पोंको चावलोंकी काजीके साथ पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (३) इसके केवल पुष्पोंका लेप मस्तकपीडाको मिटाताहै (४) इसके पुष्पोंके चूर्णका घी और शक्करके साथ हलुवा बना नित्य एक तोला खानेसे अर्शसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (५) इसके पुष्पोंको पानीमें भिगोके मलनेसे पानी गाढा होजाताहै ।

संख्या (४०८)

(सं०) मुण्डी, श्रावणी, भिक्षुः, परिव्राजी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोरखमुंडी	गोरखमुंडी	गोरखमुंडी	बरसबोंडी	मुडीरी	गोरखमुडी	बोड्तरमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
करन्दै	बोड्तिर			Sphæranthus indicus S Mollis.	

स्थान—गोरखमुण्डी=सूखीहुई नाडियोंमें हुआ करतीहै ।

यह छोटी बडीके भेदसे दोप्रकारकी होतीहै ।

प्रयोग-(१) गोरखमुडी-कडवी, विपाकमें चरपरी, उष्ण वीर्य, मधुर, पचनेमें लघु, कषेली, भेदक, बल और बुद्धिवर्द्धकहै (२) पेटके कीड़े निकालनेकेलिये इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (३) इसकी जड़को औटाके पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (४) इसके पुष्पोंके प्रयोगसे रुधिर शुद्ध होताहै (५) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे बल बढताहै (६) इसकी छालके चूर्णको छाछके साथ पिलानेसे अर्श मिटताहै (७) इसकी जडके कल्कको पानीमें घोल उसमें तिल्लीका तेल मिलाके औटावे जब सब पानी छीज जावे तब तेलको छानकर रख छोडे, इस तेलको इन्द्री पर मर्दन करके नागरवेलका पान बांधनेसे और उसकी १० से ३० बूंदतक पानपर लगाके दिनमें दो तीन बेर खानेसे नपुंसकता मिटतीहै (८) इसकी जडको छायामें सुखा चूर्ण बना उसमें बराबर शकर मिलाकर ७ मासेकी मात्रा नित्य खानेसे अथवा गो दुग्धके साथ फकी लेनेसे नेत्रोंके बहुत से रोग मिटतेहै (९) इसकी एक तोले जडको पीस छाछके साथ छानके पिलानेसे गुल्म रोग मिटताहै (१०) इसकी जडको इसीके रससे पीसके लेप करनेसे गडमाला मिटतीहै (११) इसका ४ तोला रस पीनेसे गंडमाला मिटतीहै (१२) इसके और कुटकीके चूर्णको मधु और घीके साथ चटानेसे वातरक्त मिटताहै (१३) इसके रससे घृत सिद्ध करके लगानेसे विपादिका आदि त्वग्दोष मिटतेहैं (१४) एक भाग मुंडी और आधा भाग समुद्रसोख, इनका चूर्ण बना एक मासे से ६ मासे तककी मात्रा लेनेसे सफेद कुष्ठ मिटताहै (१५) इसके ८ मासे चूर्णकी गर्म जलके साथ फकी देनेसे सन्निपात मिटतीहै (१६) बकरीके दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे पेटकी वादी मिटतीहै (१७) इसके और लौंगके चूर्णकी फकी लेनेसे कंपवायु मिटतीहै (१८) इसके चूर्णको गौके दहीके साथ लेनेसे अर्श मिटताहै (१९) बकरीके दहीके साथ देनेसे मृतवत्सा-रोग मिटताहै (२०) नीमके रस के साथ लेनेसे नपुंसकता मिटतीहै (२१) शकरके साथ लेनेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (२२) वासी पानीके साथ लेनेसे भगंदर और रक्तपित्त मिटताहै (२३) इसके चूर्णको घृतके साथ चाटनेसे बल बढताहै (२४) वासी पानीसे इसके चूर्णकी फकी लेनसे भाम और तेजरा मिटताहै (२५)

गायकी छाछके साथ इसका सेवन करनेसे नित्यज्वर छूटताहै, (२६) खांडके साथ लेनेसे जलंधर मिटताहै (२७) खोपरेके साथ लेनेसे कई प्रकारके रोग मिटतेहैं (२८) सालममिश्रीके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होताहै (२९) जीरेके साथ लेनेसे दाह मिटतीहै (३०) कालीमिरचके साथ लेनेसे ज्वर छूटताहै (३१) काली बकरीके दूधके साथ लेनेसे तेजरा छूटताहै (३२) गायके दूधके साथ लेनेसे चित्तभ्रम मिटताहै और बुद्धि बढतीहै (३३) धनियाके साथ लेनेसे आंखका रूला मिटताहै (३४) गायके दूधके साथ लेनेसे प्रमेह मिटताहै (३५) इसको और जायफलके चूर्णको बकरीके दूधके साथ लेनेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (३६) सोंठके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होताहै (३७) एरंडके तेलके साथ देनेसे जलंधर मिटताहै (३८) कपूरके साथ इसके चूर्णको लेनेसे अर्श मिटताहै (३९) अलसीके साथ देनेसे खून रोग मिटताहै (४०) नींबूके रसके साथ देनेसे मिरगी मिटतीहै (४१) गोमूत्रके साथ लेनेसे पेटकी पीडा मिटतीहै (४२) घृतके साथ लेनेसे अतिसार मिटताहै (४३) जायफलके साथ लेनेसे नपुंसकता मिटतीहै (४४) नेत्र नहीं दुखतेहों तब इसकी २० बुंदियोंको एक दिनमें निगलनेसे एक वर्ष तक और ४० निगलनेसे दो वर्ष तक नेत्रपीडा नहीं होतीहै ।

संख्या (४०९)

(सं०) मुद्गः, सूपश्रेष्ठः, हरितः, लोभ्यः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
मूंग	मूंग	मग	हिरवेमूग	मुंग	मुगी	पच्चपेसाल

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पच्चपेयर	हेसरु	माष	माष	Phaseolus Mungo, P. Max	Green gram

स्थान—ये हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं और अपने आपभी उग-

तेहैं। बङ्गालमें ३ प्रकारके मूंग होतेहैं (१) सोन मूंग (पीले), (२) कृष्ण मूंग (काले), (३) हरित् मूंग (हरे)। परन्तु श्वेत और रक्त दो प्रकारके जो और लिखेहैं, वे इधर नहीं मिलतेहैं १०० तोले मूंगोंमें ५४। तोले मैदा और २॥ तोले तेलहै।

प्रयोग—(१) मूंग-मधुर, कषैले, कफ और पित्तनाशक, शीतल, लघु और दीपनहै (२) हरे मूंग रोगीके लिये पथ्यहै और नीरोगता बढानेवाले है। इनकी दाल ज्वरमें पथ्यहै। यह ठंढी, लघु और ग्राहीहै (३) मात्र कठिन रोगोंसे मुक्त होनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये इनकी दालकी झोली पिलानी चाहिये (४) इससे नेत्रोंकी ज्योति बलवान होतीहै (५) हरे मूंगों का आटा साबुनका काम देताहै और इसका उद्वर्त्तन (पीठी) करनेसे त्वचा स्निग्ध और कोमल होजातीहै (६) मूंगोंको मुंहमें चाबके लगानेसे नाड़ी-व्रण (नासूर) मिटताहै (७) मूंग और साठी चावलोंको पीस गर्मकर स्तनोंपर लेप करनेसे दूधका जमाव विखरताहै (८) मूंगोंको जला, पीसके मलनेसे बहुत पसीनेका आना बन्ध होताहै (९) मूग और मुलहटीका यूष बनाके पिलानेसे पित्तज्वर शान्त होताहै (१०) सिकेहुए मूंग और चावलोंकी कीलोंका क्वाथ बना उसमें सहत और शकर डालके पीनेसे अतिसार मिटताहै (११) यह क्वाथ वमन, दाह और ज्वरको मिटाताहै (१२) मूंगोंको पीस घीके साथ लेप करनेसे विसर्परोग मिटताहै (१३) इनका और चनेका पानी पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै (१४) इनकी फलियोंका शाक बनाया जाताहै। भोजन के लिये मूंगोंके कई प्रकारके पदार्थ, जैसे, रोटी, पापड, मोगर, मसालेदार बड़िया इत्यादि बनाये जातेहैं।

संख्या (४१०)

(सं०) मुद्गपर्णी, क्षुद्रसहा, शिखी, मार्जारगन्धिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	मुगवन	अडनाउ-मगवेल्य	रानमुग	मुगानी	मुंगवन	पिल्लपेसर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
सीरपयर	किरिहेसरु		०	Phaseolus tirlobus Dollchos tribolatus.	The t..relobed kidney bean

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै और बिन बोई भी होतीहै।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, रूक्ष, कड़वी, स्वादिष्ट, वीर्यवर्द्धनेवाली, ग्राही, हल्की और नेत्रोंको हितकारक है। कास, शोष, क्षय, वातरक्त, ज्वर, त्रिदोष, संग्रहणी, कृमि, अतिसार, कफ, अर्श और पित्तको मिटातीहै (२) रक्तको रोकतीहै (३) विषमज्वरके लिये इसका काथ पिलातेहै (४) इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी देनेसे बल बढताहै (५) बूरेके साथ इसकी फकी देनेसे कलेजेका धडकना कम पडजाताहै (६) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे नेत्रोंकी निर्बलता मिटतीहै। यह नीरोगता बढानेकेलिये बहुत उत्तम पदार्थहै। इसको नीचजाति के लोग भोजनके काममें बहुत लातेहै।

संख्या (४११)

(सं०) मुषली, गोधापदी, तालमूली, हेमपुष्पी,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मूसली	सफेदमुषली	धोळीमूशळी	पांढरीमुसळी	तालमूली	सुफदमूसली	नेलत‌ाटिगड्डा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
निलप्पन ङिकलग्	नेलताळगड्डे	मूसलीअबियज	मुशलीसपेद	—	

स्थान—सफेद मूसली हिन्दुस्थान केबहुतसे अधिक उष्ण भागोंमें पैदा होतीहै।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होतीहै एक सफेद और दूसरी काली होतीहै। इसके बोयेहुए पेडके बारह महीने पुष्प लगते रहतेहैं।

प्रयोग—(१) मुषली-रस और विपाकमें मधुर, वृष्य, उष्णवीर्य, बृंहण

ी, शीतल, पिच्छल, भारी, पौष्टिक, अग्नि और बलवर्द्धकहै (२) मू-
का अवलेह बनाके दिनमें दो बेर, चार चार मासे चटानेसे बल बढ़ताहै
) इसके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाके ८ मासेकी फकी दिनमें एक बेर
ऊपर दूध पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (४) दो वर्षके पुराने पेड़की जडा
निकाल, जलसे धो, उनके महीन तन्तुओंको तोड़कर लकड़ीके चक्कूसे
२ टुकड़ेकर, छायामें सुखाकर काममें लाना चाहिये (५) इसके एक तोले
में बराबर मिश्री मिला उसमें चन्दनके तेलकी १० बूंद डालके कचे दूधके
उसकी दो बेरमें फक्की लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (६) इसके या का-
सलीके रसमें बराबर तेल डालकर औटावे, जब रस छीजके तेल मात्र रह
, तब उसको ठंढाकर, कानमें डालनेसे कर्णरोग मिटतेहै (७) इसको व
र दूधमें औटाके सब दूध छिजा देवे, फिर सुखा पीस चूर्ण बना उसमें
बर शक्कर मिलाकर, २ तोलेकी फक्की लेकर, ऊपर गायका दूध पीनेसे
र पुष्ट होताहै (८) कांजीके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे तेजरा
ाहै (९) इसके चूर्णको छाछ अथवा चांवलोंके धोवनके साथ सेवन क-
े संग्रहणी मिटतीहै (१०) इसके नवीन कंदके चूर्णमें भैंसका मक्खन
ाकर उसको धानकी राशीमें सात दिन तक गडा रखकर कर्णपाली
वालेके काममें लाना चाहिये (११) यह–रक्तशोधक, मूत्र और पुरुषार्थ
कहै। अर्श, निर्बलता, नपुंसकता, श्वास, कास, कामला, अतिसार, शूल,
कृच्छ्र, और चरपराहटको मिटातीहै।

संख्या (४१२)

(सं०) कृष्णमुषली।

...ावंडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
...मूशली	कालीमुषली	काळीमुशळी	काळीमुसळी	तालमूली	स्याहमूसली	

...विड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
—		मुस-लीआवियज	मुशलीस्याह	Curculigo orchioides Hypoxis O	

स्थान—काली मुपली हिमालयमें यमुनासे काशिया पहाड़ तक, टन सरीम और केपकमोरिनके दक्षिण तक होतीहै।

प्रयोग—(१) यह ग्राही, उष्ण और रूक्षहै। मस्तकपीड़ा, चक्कर, ज्वर, कामला और बहिरापन आदि रोगोंको मिटातीहै (२) यह विषनाशक है (३) इसके प्रयोगसे सर्पका विष उतरताहै (४) इसके चूर्णमें मिश्री मिलाके फकी लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै (५) तुलसीके रसके साथ इसकी फकी लेनेसे या उसमें मिलाके चटानेसे बुक्ककी पीडा मिटतीहै (६) स्त्रीका स्मरण करनेसे जिसका वीर्य निकल जाताहै उसको रोकनेके लिये इसके चूर्णको बंगके साथ देना चाहिये (७) इसकी जडकी छालको छायामें सुखा, पानमें रखके खानेसे श्वास मिटताहै (८) इसका पाक बनाके खानेसे नपुंसकता मिटतीहै (९) जायफलके साथ इसकी फकी देनेसे मूत्रातिसार मिटताहै (१०) दालचीनी के साथ इसकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (११) पागल कुत्तेके विष को उतारनेके लिये इसको पीपलके साथ देना चाहिये, और इसको पीपलके साथ पीसके कुत्तेके दंशपर लेप भी करना चाहिये।

संख्या (४१३)

(सं०) मुष्ककः, मोचकः, जटालः, गोलीढः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोखा	मोखा	मरखो	मोखा	घंटापारुल	घटापाटली	मोक्कमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	मोके			Schrebera swietenioides	

स्थान—मोखाके वृक्ष कमाऊके पहाड़पर, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहै।

पहचान—इसका वृक्ष ३०-४० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेडड़ खडी,

सीधी और गुलाईमें ४-५ फुटकी होतीहै, इसके बहुतसी डालिया होतीहैं। इसकी छाल खाखी रंगकी होतीहै, बहुत महीनों तक इसके एकभी पत्ता नहीं रहताहै, चैत्र वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकलतेहैं और एक सींक पर ३-४ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं। इसकी छोटी डालियें भूरे रंगकी होतीहै। रात्रीके समयमें इसके पुष्पोंकी सुगध अधिक आतीहै। इसकी डोडी दो इंच लम्बी और ऊपरसे खरदरी होतीहै। उस पर उठे हुए कुछ सफेद दाग होतेहैं और वह डालीके लटकती रहतीहै। माघसे चैत्र तक इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग-(१)मोखा-चरपरा, खट्टा, रोचक, पाचक, ग्राही, उष्ण, सलौना और कडवा होताहै और प्लीह, गुल्म, उदररोग, विष, कफ, वात, मेद, बस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, खुजली और कृमिको मिटाताहै (२) इसके पुष्प त्रिदोष और कुष्ठको मिटातेहैं (३) इसके फल अग्निको बढानेवाले, भेदक और रोचकहैं (४) गुल्म, प्रमेह, अर्श, पांडुरोग, शुक्रदोष और उदर रोगको मिटातेहैं (५) इसका गोंद अत्यंत वीर्यवर्द्धकहै, (६) यह गोंद शोष, पित्त और वादीको मिटाताहै।

संख्या (४१४)

(सं०) मुस्तकः, गाङ्गेयं, कुरुविन्दः, अब्भ्रनामकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोथा	मोथा	मोथ्य,मोथ	मोथ	मुता	माथा	तुङ्गमुस्तेरु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कोरक्कडङ्ग	कोन्नारि			Cyperus ro un lus Hexasta hyos	

स्थान-मोथा हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होताहै।

प्रयोग-(१)मोथा-चरपरा, शीतल, ग्राही, कडवा, दीपन, पाचन, पसीने लानेवाला, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहै (२) अदरक और मोथेको पीस मधुके साथ १० रती चटानेसे आमातिसार मिटताहै (३) ताजे मोथेको पीसकर

स्त्रीके स्तनों पर लेप करनेसे दूध बढताहै (४) दूधकी लस्सीके साथ मोथेके चूर्णकी फक्की देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) इसको गुडमें गोली बना तिलोंके क्काथके साथ देनेसे स्त्रियोंका मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै (६) बिच्छूके दंशपर इसका दोषानुसार ठण्ढा या उष्ण लेप करतेहै (७) फैलनेवाले फोड़े पर इसका चूर्ण बुरकातेहै (८) सर्दीकी पीडा मिटानेकेलिये इसको जलमें पीस उष्ण करके लेप करतेहै (९) जलंधरमें अधिक मूत्रवृद्धि करनेकेलिये इसका प्रयोग करतेहै (१०) इसके चूर्णकी अधिक मात्रा देनेसे पेटके कीड़े मरतेहै (११) अजीर्ण मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ इसको मिलाके देतेहै (१२) इसका क्काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (१३) इसको दूधमें ओटाके पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै (१४) इसका और गिलोयका क्काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (१५) पसीना लानेकेलिये मोथेके ताजे कंदको ओटाके बफारा देना चाहिये (१६) मोथे और पित्तपापडेका क्काथ या फांट पिलानेसे शीतज्वर छूटताहै और पाचक शक्ति बढ़तीहै (१७) इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै, जो सुगंधके काममें आताहै। मोथा—रंगतमें सुगंध देनेकेलिये काममें आताहै। तर जमीनमें पैदा हुआ मोथा काममें लाना चाहिये।

———०———

संख्या (४१५).

(सं०) नागरमुस्ता, कच्छरुहा, नागरोत्था, पिण्डमुस्ता।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
नागरमोथा	नागरमोथा	नागरमोथ्य	नागरमोथ	नागरमुता	नागरमोथा	नागमुस्तेलु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	कोचारीभेद	सोद	मुश्कजमीन	Cyperus scarlosus. C. pertenuis	

स्थान—नागरमोथा—बंगाल, अवध आदि देशोंकी आर्द्र पृथ्वीमें होताहै। यह पंजाबमें बहुतही कम होताहै। मोथेकी अपेक्षा नागरमोथेकी उत्पत्ति बहुत कमहै।

पहिचान—नागरमोथा दो प्रकारका होताहै, एक भारी और अधिक सुगंधवाला, दूसरा–हल्का और कम सुगंधवाला।

प्रयोग(१)नागरमोथा चरपरा, कडवा, कषेला और शीतलहै। अतिसार, पित्तज्वर, दाह, तृष्णा, अरुचि और हृदय और आमाशयके रोगोको मिटाताहै (२) यह बाल धोनेके काममें आताहै (३) इसके प्रयोगसे पसीना आताहै और मूत्रवृद्धि होताहै (४) यह ग्राहीहै और इसका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (५) मूत्रकृच्छ्रवालेको इसका काथ पिलातेहै (६) इसका और उशवेका काथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै (७) ज्वरमें पसीना लानेकेलिये इसका काथ पिलातेहै (८) इसको पीने और लगानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (९) नागरमोथा मुंहमें रखनेसे गले या पेटमेसे जोंक बाहिर निकल आतीहै (१०) इसका खानेसे वमन बन्ध होतीहै (११) एक भाग दूध और तीन भाग जलमें एक तोला नागरमोथा ओटाके जल छिजो केवल दूध रहे तब छान ठंढा करके पिलानेसे आम और शूल मिटतीहै (१२) इसका फांट पिलानेसे तृषा और जीमचलाना मिटताहै (१३) इसकी उत्तर दिशाकी ओरकी जडको शुभ दिनमें उपाड उसको पीसके बचेवाली एक रंगकी गौके दूधके साथ पिलानेसे मिरगीका आना बन्ध होजाताहै (१४) इसके काथसे धोनेसे मुहका रंग सुधरताहै।

संख्या (४१६)

(सं०) भद्रमुस्तक, मेघाख्यं, भद्रमुस्ता, ग्रन्थिला।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोथीविशय (रेह)	भद्रमोथा	भद्रमोथ	भद्रमोथ	भादलामुत्ता		तुगगड्डा

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
कोरै (इ)	भद्रमुस्ता			Cyperus minimus C bulbosus	

स्थान—भद्रमोथा सिन्ध, मदरास्र और सीलोनमें समुद्रके किनारे सूखे रेतीले घासके जंगलोंमें होताहै।

प्रयोग—(१) भद्रमोथा–कपेला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, ग्राही, खट्टा और अग्निदीप्त करनेवालाहै। पित्त, कफ, अतिसार, रुधिरविकार, ज्वर, अरुचि, तृषा और कृमिरोगको मिटाताहै और शरीरको पुष्ट करताहै (२) इसको जलमें घिस गुनगुना कर पिलानेसे जीका मचलाना और तृषा मिटतीहै (३) कालके दिनोंमें इसकी जडको सेक या उबाल कर खातेहैं जब ये सेके जातेहैं तब इनका स्वाद आलू जैसा होजाताहै (४) यह खुराककी एक बहुत उत्तम वस्तुहै। यह कंद बहुत छोटा होताहै और खानेमें बडा स्वादिष्ट लगताहै। कई आदमी इसको धूपमें सुखाकर आटा पीसके रोटी बनाके खातेहैं।



संख्या (४१७)

(सं०) मूर्वा, मोरटा, तेजनी, गोकर्णी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुरायली	चूर्णहार	मूर्वो	मोरवेल	मुर्वा	चूरनहार	चागाजट्टुपाकु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वेलिपरित्ति	हेग्गोरिटिगे			Clematis triloia.	The bow string hemp Sweet marjoran

स्थान—मुर्हरीकी बेलें हिन्दुस्थानके पूर्वके किनारे, ऊपर बंगालसे मद्रास तक कारोमण्डलके किनारे और दंडीगल जिले आदिमें बहुत होतीहै।

प्रयोग—(१) यह कपेली, कडवी, स्वादिष्ट, उष्ण, भारी, विपाकमें कड़वी और सारकहै (२) त्रिदोष, रुधिरविकार, मेद, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, वमन, मुखशोष, भ्रम, कंडू, तृषा, हृद्रोग और विषमज्वरको मिटातीहै (३) इसका कंद कृमिराग और विषनाशकहै (४) इसकी जड स्वादमें कुछ उष्ण और उत्तम सुगंधवाली होतीहै (५) क्षयरोगमें इसकी जडका पाक बनाके खिलाना चाहिये (६) पुरानी खांसीमें इसकी जडके ४ मासे चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये (७) इसकी कोमल कोंपलोंका रस पिलानेसे बच्चेके गलेका

कफ निकल जाताहै (८) इसकी जड़ और पत्तोंका रस पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै।

संख्या (४१८)

(सं०) मूलकं, हरित्पर्णं, नीलकंठं, महाकंदः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मूली	मूली	मूळा	मुळा	मूला	मूली	पेद्दमुल्लगि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मुल्लागि	हेम्पुल्लगि	हुजूल	तुर्ब	Raphanus sativus	Radish

स्थान—मूली हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै। यह शीतकालमें पैदा होतीहै परंतु पहाड़ोंमें १२ महीने रहतीहै। जल और पृथ्वीके कारणसे मूलीका आकार और स्वाद बदल जाताहै।

मूली और मूलीके बीजोंमेसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै उसकी सुगंध अच्छी नहीं होतीहै, इसके बीजोंका तेल सफेद रंगका और पानीसे भारी होताहै। मूली और मूलीके बीजोंका तेल जलाने और भोजनके पदार्थ बनानेके काममें आताहै। मूलीके बीजोंके तेलमें गंधक बहुत होताहै।

प्रयोग—(१) कच्चीमूली रोचक, उष्ण, पाचक और पचनेमें हल्कीहै (२) मूलीके बीज मूत्रवर्द्धक और सारकहैं और मूत्राशयकी पथरीको गलाते है (३) इसके बीजोंकी फकी देनेसे मासिकधर्ममें रज बहुत निकलताहै अथवा मासिकधर्मकी रुकावट मिट जातीहै (४) मूत्रसम्बन्धी और उपदंश सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये मूलीका सेवन करतेहैं (५) मूलीके ताजे पत्तोंके रस में वेही गुणहैं जो इसके बीजोंमेंहैं (६) मूली उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहै, शर्करास्मरी, और पेटकी शूलको मिटातीहै (७) इसके बीज औषधियोंकी चरपराहटको कम करतेहैं (८) ये वामक नहींहै तबभी इसके बीजोंकी पूरी मात्रा बेर २ देनेसे कभी २ वमन होने लग जातीहै (९) मूलीका रस चिनग और

कष्टसे मूत्र उतरनेको मिटाताहै (१०) इसका रस पिलानेसे मूत्राशय में जो पथरी होतीहै वह गलने लग जातीहै (११) वृक्कमें जो मूत्रका पैदा होना बन्ध होजाताहै उसको फिरसे पैदा करनेके लिये इसका रस पिलाना चाहिये (१२) इसके सूखे बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे चिनग मिट जातीहै और मूतनेके समय कष्टका होना बन्ध होजाताहै (१३) भूख और पाचन शक्ति बढानेके लिये भोजनके पहिले मूली खाना चाहिये (१४) मूलीके बीजोंको पानीके साथ पीस कपडेमें छानके पिलाना चाहिये और मूलीको दरगच कपड में दबा रस निकाल के काममें लाना चाहिये। इसकी मात्रा ३॥ तोले से ७॥ तोले तकहै जिस कामके लिये यह दिया जावे वह जबतक न हो तबतक २४ घंटोंमें चार वेर देना चाहिये (१५) पौने चार मासेसे ७॥ मासे तक बीजोंकी मात्रा दी जातीहै (१६) मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये ३॥ मासे बीज काममें लाने चाहिये (१७) रक्तार्शका रक्त बन्द करनके लिये मूली खिलानी चाहिये (१८) आमाशय की शूल मिटानेके लिये मूलीके स्वरसमें नोन, मिरच डालके पिलाना चाहिये (१९) मूली कच्ची खाई जातीहै। इसका शाक और अचारभी बनाया जाताहै (२०) सूखी मूलीको ओटाके पिलानेसे श्वास और हिचकी मिटतीहै (२१) इसके बीजोंको आधी झाडके खारके पानी से पीसके लेप करने से श्वेत कुष्ट मिटताहै (२२) मूलीके बीजोंको कूट गर्म जलके साथ खानेसे आवाज खुलतीहै (२३) इसके पत्तोंको छायामें सुखा पीस छान बराबर बूरा मिलाके ४० दिनतक लगातार फकी लेनेसे बवासीर मिटताहै (२४) इसके पत्ते गर्म करके पागल कुत्तेके दंशपर बांधतेहै (२५) इसके बीजोंको तेलमें ओटाके इन्द्रीपर मर्दन करनेसे उसकी शिथिलता मिटतीहै (२६) मूलीके पत्तोंके ३ तोले रसमें एक तोला तेल सिद्ध करके कानमें टपकानेसे कर्णपीडा मिटतीहै (२७) इसके बीजोंको बकरीके दूधके साथ पीसके लेप करने से कंठमाला मिटतीहै (२८) इसके टुकडेके नोन लगाकर दंशपर रखनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२९) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे जलंधर मिटताहै (३०) सिरकेमें डाला हुआ इसका अचार खाने से कामला रोग मिटताहै (३१) इसके पत्तोंके ४ तोले रसके साथ ३ तोले अजमोदकी फकी देनेसे पथरी गल जातीहै (३२) इसके बीजोंको नींबूके रसमें पीस गोलियां बनाके

लगानेसे दाद मिटताहै (३३) जो बहुधा मूली खाया करतेहैं उनके बिच्छूके विषका असर कम होताहै (३४) मूलीकी फलीको मारवाडी भाषामें मोगरी कहतेहैं और जो फली आधगज लम्बी होजातीहै उसको जयपुरके प्रान्तमें सांगरी कहतेहैं । मूली, मूलीकीगांदल, पत्ते, मोगरी और सांगरीका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (४१९)

(सं०) मृगनाभिः, मृगमदः, वेधमुख्या, कस्तूरी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तुरि	मृगनाभि	कस्तूरी	कस्तूरि

द्राविडी	कार्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कस्तूरि	कस्तूरि	मिस्क	मुश्क	Moschus	Musk

प्रयोग-(१) कस्तूरी-कडवी, चरपरी, सलोनी, उष्ण, शुक्रल, पचनेमें भारी, वृष्य, बहुत उत्तेजक और पुरुषार्थ बढानेवालीहै (२) यह मदज्वर, पुरानी खांसी, निर्बलता और नपुंसकताको मिटाती है (३) घाउटे मिटानेके लिये पानमें रखके कस्तूरी खिलानी चाहिये (४) मोतीजरे, पानीजरे और निर्बलता सम्बन्धी दूसरे रोगोंको मिटानेकेलिये कस्तूरीका प्रयोग करना चाहिये (५) श्वास वालेको अदरकके रसमें कस्तूरी देनी चाहिये (६) मक्खनके साथ कस्तूरी देनेसे कुत्ताखांसी मिटतीहै (७) इसको मालकांगनीके तेलमें चटाने से अपस्मार मिटता है (८) शतावरीके घृतपर कस्तूरी बुरकाके पिलानेसे कंपवायु मिटतीहै ।

संख्या (४२०)

(सं०) लताकस्तूरिका, कस्तूरीलतिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मुश्कदाना	मुश्कदाना	लताकस्तुरी	मुसकदाणा	लताकस्तुरि	मुसकदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		मुश्कदाना		Hibiscu Abelmoschus A moschatus	Musk mallow

स्थान—लताकस्तूरी हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतीहै ।

पहिचान—इसके बीज सुगंधयुक्त, चरपरे और वृक्कके आकारवाले होते हैं । इनको चुगटीमें मलनेसे इनमें तीक्ष्ण गंध उत्पन्न होजाती है । इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ६॥ तोले सुगंधयुक्त तत्व और राल जैसा पदार्थ निकलताहै ।

प्रयोग—(१) लताकस्तूरी–मधुर, वृष्य, शीतल, कडवी, तीक्ष्ण और पचनेमें हल्कीहै । इसके बीज–शीतल, रूक्ष, बलवर्द्धक और पेटकी पीडा मिटानेवालेहैं (२) इसकी जड और पत्तोंका चेप निकालके मूत्रकृच्छ्रवाले रोगीको पिलाना चाहिये (३) इसके बीज उत्तेजक और बाइटे मिटानेवाले हैं (४) स्नायुजालकी निर्बलता, स्त्रियोंका आवेशका रोग, थोड़ी मंदाग्नि आदि रोगोंमें यह काममें आतीहै (५) इसके ताजे पत्तोंका रस पिलाने से ज्वर छूटता है (६) इसके रस में मधु मिलाके पिलाने से सूखी खांसी मिटतीहै (७) खांसी मिटानेकेलिये इसके पंचाग को पीस पुल्टिस बनाके छातीपर बांधना चाहिये (८) औषधिका चरपरापन मिटानेके लिये इसके बीजोंका चेप अच्छाहै (९) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसकी जडका चेप पिलाना चाहिये (१०) इसके पंचांगका धूम्रपान करानेसे स्वरभंग मिटताहै (११) इसके बीजोंको चूसनेसे गलेका सूखना मिट जाताहै (१२) खाडको साफ करनेके लिये इसके पत्ते काममें आतेहैं ।



संख्या (४२१)

(सं०) मेथी, मेथिका, पीतबीजा, बहुपत्रिका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तेलङ्गी
मेथी	मेथी	मेथी	मेथी	मेति	मेथी	मेतुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लटिन	अंग्रेज़ी
वेंदियं	मेंत्या	हुलबह	शमवलीद फरीकह	Trigonella Foenum graecum	The fenugreek or fenugreec

स्थान—मेथी–हिन्दुस्थानके बहुत से भागोंमें बोई जातीहै।

प्रयोग—(१) मेथी–चरपरी, उष्ण, रसमें कडवी, दीपन, रूक्ष, रोचक, हृद्य, वातनाशक और पचनेमें हल्कीहै (२) यह मदाग्नि और पेटकी शूल मिटातीहै, पुरुषार्थ और बल बढातीहै (३) बालक होनेके पीछे स्त्रियोंका अतिसार मिटानेके लिये मेथीदानेको घी से चुपड सेकके फकी देतेहैं (४) गुडमें मेथीका पाक बनाके खिलानेसे गठिया मिटतीहै (५) मेथीके पत्ते और मेथीदाने उष्ण, रूक्ष, फोडेको पकानेवाले, सारक और मूत्रवर्द्धकहैं (६) कष्टसे मासिक धर्म होनेको अथवा मासिकधर्मके समय रजके कम निकलनेको मिटातीहै (७) जलंधर पुराना, कास, तिल्ली और यकृत्की अनुचित वृद्धिको घटातीहै (८) इसके पत्तोंका पुल्टिस बाधनेसे बाहिर और भीतरकी शोथ उतरतीहै (९) अग्निसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये मेथीके पत्तोंका लेप करना चाहिये (१०) इसका लेप करनेसे बालोंका गिरना बन्द होजाताहै (११) मेथीदानेका तेल कई प्रयोगोंमें काम आता है (१२) मेथीदानेको सेक, उनका क्वाथ करके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१३) मेथीदानेका बफारा देनेसे नाडीकी पीडा मिटतीहै (१४) इनको गुडके साथ ओटाके पिलानेसे पेटकी शूल और आध्मान मिटताहै (१५) मेथीदानेका लपटा बनाके चटानेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (१६) इसके पत्तोंका ठंढा लेप करनेसे दाह मिटतीहै (१७) पत्तोंको दवाईकी तरह घोट छानके पिलानेसे अन्तरदाह मिटतीहै (१८) पत्तोंके स्वरसमें संधानमक मिलाके पिलानेसे विरेचनके एक दो वेग होकर पित्तके विकार मिटजातेहैं (१९) मेथीदानेका लपटा उत्तेजक और बलवर्द्धकहै (२०) मेथीदानेको दूधमें ओटाके पिलानेसे अर्शका रुधिर बन्द होताहै (२१)

मेथीके पत्तोंको घीमें तलके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै (२२) पत्तोंका पुल्टिस बनाके बाधनेसे चोटकी सूजन उतरतीहै (२३) मेथीदानेके आटेका उद्वर्तन (पीटी) करनेसे शरीरका रंग सुधरताहै (२४) मेथीदानेका क्वाथ पिलानेसे अर्श मिटताहै (२५) इसको दूधमें पीस छान गुनगुना करके कान में टपकानेसे कानसे पीपका बहना वन्ध होताहै (२६) मेथीदाने और जौके आटेको सिरकेके साथ पीस गालों पर पतला लेप करनेसे सूजन उतरतीहै (२७) मेथीदाने और असालूको पीसके लेप करनेसे वद बैठ जातीहै (२८) मेथीदानेके काथमें शहद मिलाकर पीनेसे छातीके पुराने रोग मिटतेहैं (२९) मेथीदानेका कढीमें छोंकन देतेहै और अचार आदिके मसालेमें डालतेहैं। इस के बीजोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै। १०० तोले मेथीदानेमें से ६ तोले गाढा तेल निकलताहै।

संख्या (४२२)

(सं०) वनमेथी, तिक्तशाका, स्वर्णपुष्पी, शेलुका,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मेथी	वनमेथी	रानी मेथी	रान मेथी	वनमेति		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Melilotus parviflora Trifolium indicum	

स्थान-वनमेथी—बम्बई, बंगाल अहाता, संयुक्त प्रदेश, राजपूताना और पंजाब आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै।

प्रयोग-(१) आंतोंके उपद्रवमें बहुधा बच्चोंके अतिसारमें, इसका लेपटा बनाके पिलातेहैं।

संख्या (४२३)

(सं०) मेषशृङ्गी, अजशृङ्गी, विषाणी, मेषवल्ली ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मींढासिंगी	मेढासिंगी	मढाशिंग	मेढशिंगी	मेढाशिंगे	मेढासिंही	चिटिमुटि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वट्टिरुप्पि	कुरुटगे			Gymmema sylvestre Periploca sylvestris	

स्थान—मेढाशिंगी—मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें कोंकनसे ट्रावनकोर तक होतीहै ।

प्रयोग—(१) सर्पके काटे हुए मनुष्यको इसकी जड़का क्वाथ पिलातेहैं (२) इसकी जडको घिसके सर्पके दंशपर लगातेहैं (३) इसके पत्तोंको चाबके चूसनेसे जीभ ऐसी होजातीहै कि उसको मिठासका ज्ञान नहीं रहताहै और जबतक इसके पत्तोंका जीभ पर पूरा असर न हो तब तक जीभ पर नोन जैसा स्वाद बना रहताहै, इसमे जीभको किसी पदार्थके कड्वापनकाभी ज्ञान नहीं होताहै । जो कुनैन आदि कडवी चीजभी खिलाई जावे तो उसका स्वाद मिट्टी जैसा आताहै, अर्थात् इससे जिह्वाको किसी रसका ज्ञान नहीं रहताहै ।

संख्या (४२४)

(सं०) मौक्तिकं, मुक्ता, शौक्तिक, अम्भः सारम् ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोती	मोती	मोती	मोती	मुक्ता	मोती	मुत्यमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मुत्तु	मुत्तु	लोलो	मरवारीद		Pearl

प्रयोग—(१) ये मधुर और शीतल होतेहैं, नेत्ररोग, विष, राजयक्ष्मा कफ, पित्त, क्षय, कास, श्वास, मंदाग्नि, दाह और निर्बलताको मिटातेहैं ॥

वल वीर्य और आयुर्दाको वढातेहैं और शरीरको पुष्ट करतेहैं। अम्लपित्तमें इनका प्रयोग कियाजाताहै (२) इनको पीसके अजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (३) जब ये सीपमें गर्भकी तौरपर रहतेहै तब इनका लेप करनेसे कोढ मिटजाताहै (४) इनको पीसके कुचलेके साथ देनेसे कंपवायु मिटतीहै (५) इनको सोनेके वर्कके साथ चटानेसे हृदय का अधिक धडकना मिट जाताहै (६) इनको गिलोय सतके साथ चटानेसे पित्तविकार मिटतेहै (७) इनको हीरादिक्खनके साथ चटानेसे तथा इलायचीके अर्कके साथ देनेसे रक्तस्राव मिटताहै ।

संख्या (४२५)

(सं०) यक्षद्रुमः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गरजन तेल	गरजन तेल	गर्जन	गर्जन	गर्जन		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
				Dipterocarpus turbinatus D laevis	Kenyin oil

स्थान—गरजनके वृक्ष पूर्वी बंगाल, चटगांव, ब्रह्मा और सिंगापुर आदि कई स्थानोंमें होतेहै ।

पहिचान—हिन्दुस्थानमें यह सबसे ऊँचा वृक्षहै इसकी ऊंचाई प्रायः२५० फुटतक होतीहै इसकी पेदडकी गुलाई १५ से २५ फुटतक होतीहै। इस वृक्ष के पत्ते पतझडमें नहीं गिरतेहै ।

गरजनका तेल कई प्रकारका होताहै। इसका गाढेसे गाढा तेल मधु जैसा और पतलेसे पतला तेल तेल जैसा होताहै। गाढे तेलका रंग पीलापन लिये हुए भूरा और पतले तेलका रंग थोडा भूरा, लाल, ललाई लिये हुए भूरा या चन्दानिया होताहै। इनमें पतला कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंगका तेल सबसे अच्छा होताहै।

प्रयोग—(१) नवीन और पुराने मूत्रकृच्छ्र में इसके तेलकी १० से ३० तक बूंदें दूध चावलोंके मांड, या पतले लपटेमें, अथवा किसी चेपदार चीजमें डालके दिनमें दो तीन वेर देना चाहिये (२) कई प्रकारके कोढों में इसका प्रयोग इस रीतिसे करना चाहिये कि प्रातःकाल उठकर शरीरपर जहां जहां दाग हों उनको सूखी मिट्टीसे खूब रगड़ना चाहिये, पीछे ७ बजे इसके तेलका दूधिया पानी बना, उसको पिलाकर सब शरीर पर दो घंटे तक इसके तेलका मर्दन करना चाहिये, फिर भोजन करके दुपहर पीछे ३ बजे उक्त दूधिया पानी पिलाके वैसेही दो घंटे तक इसके तेलका सब शरीर पर मर्दन करना चाहिये। जो इसके पीनेसे अधिक विरेचन होजाय तो इसकी मात्रा कम कर देनी चाहिये। इसके लगानेकी औरभी कई रीतियाहैं परन्तु सबसे उत्तम रीति यहीहै जो ऊपर लिख आयेहै। यह मर्दन चट्टोंको साफ करनेके लिये साबुन और भुस्से से अच्छाहै इस प्रयोगमें जो दूधिया पानी बनाके नहींभी पिलाया-जावे तबभी रोगी निरोग हो जाताहै। यह इकल्ला काम नहीं देवेतो इसके पौने चार मासे तेलमें चालमुगरेके तेलकी ५ से १० बूंद तक मिलाके देना चाहिये (३) इसके तेलका दूधिया पानी बनानेकी यह रीतिहै कि बंबूलके गोंद को पानीमें गला उसमें इस तेलको मिलाके खूब हिलानेसे पानीके रूप हो जाताहै अथवा इसके तेलमें बराबर चूनेका पानी मिलाके हिलानेसे दूधिया पानी बन जाताहै। यह लेप करनेके काममें आताहै अथवा सवा सवा तोले दूधिया पानी दिनमें दो तीन वेर पिलाना चाहिये (४) एक तोले गरजनके तेलमें ३ तोले चूनेका पानी मिलाके त्वचाके पुराने रोगों पर और कोढपर लगाना चाहिये (५) यह तेल कृमि सम्बन्धी कुष्ठमें बहुत उपकारी है (६) चर्म दल कुष्ठ पर इसका मर्दन करनेमें बहुत लाभ होताहै (७) इस तेलमें रस कपूर और गंधक मिलाके मर्दन करनेसे दाद मिटताहै (८) इस तेलके लगानेसे फोडे फुन्सी मिटतेहैं (९) त्वचाके सब रोगोंमें इस तेलका प्रयोग किया जाताहै, परन्तु जिन लाल चाठोंपर सफेद छिलकोंके पुड़तके पुड़त जम जातेहैं या जो सफेद चाठे होतेहैं, उनपर इस तेलके मर्दनसे बहुत लाभ होताहै। केवल इसी तेलके मर्दन करनेसे ये दोनों रोग मिटभी जातेहैं। (१०) इस तेलके लगानेसे खुजली मिटतीहै (११) कुष्ठरोगके प्रारम्भमें

इस तेलको पिलाने और लगानेसे उसका बढना रुक जाताहै और बढी हुई हालतमेंभी लगाने और पिलानेसे उसकी शान्ति हो जातीहै (१२) वीर्य्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंमेंसे किसी प्रकारके उपद्रववाले बहावको रोकनेके लिये इसको चनेके पानीके साथ लगाना और पिलाना चाहिये ।

संख्या (४२६)

(सं०) यमानी, दीपकः, दीप्य, उग्रगंधा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अजवाण	अजवान	अजमा	ओंवा	यउयान यॉयान्	अजवाइन	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		कमूनेमुलूकी	ननख्वाह जीनान	Carum Copticum, Ligusticum Ajowan	Lovage Bishop's weed Ajava seeds

स्थान—अजवान हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै ।

इसका तेल निकालनेकी यह रीतिहै कि इसको पानीमें ओटानेसे, अथवा भभकेमें इसका अर्क खींचनेसे उस अर्कके ऊपर इसका २५ वां भाग तेल निकल आताहै और उसी अर्कपर एक पदार्थ आके जम जाताहै उसको अजवाइन के फूल कहतेहै ।

प्रयोग—(१) अजवायन उष्ण, तीक्ष्ण, दीपन, पाचन, रोचक, चरपरी, कडवी, पचनेमें हल्की, हृद्य और सारकहै (२) इसके तेलकी दो बूंदें नागरवेलके पानमें लगाके खानेसे मन्दाग्नि मिटतीहै और आवश्यकता होवे तो इसकी मात्रा बढा देनी चाहिये (३) दालचीनीके एक मासे चूर्णमें इसके तेलकी बूंदें डालकर फकी देनेसे शूल मिटतीहै (४) १॥ मासे लशुनाष्टकमें इसके तेलकी बूंदें डालके फकी देनेसे अजीर्णसे पैदाहुई त्रिषूचिका मिटती है (५) अजवानके एक या दो रती फूल सौंफके अर्कके साथ देनेसे अफारा मिटताहै और इसीमें सौंफके तेलकी ५ बूंदें डालके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (६) इसके फूल और इसका तेल मिलाकर मर्दन करनेसे बांइटे मिट-

तेहैं (७) विषूचिकासे पैदाहुई शरीरकी शिथिलताको मिटानेके लिये इसका अर्क पिलाना चाहिये (८) इसके साथ दूसरा उत्तेजक अर्क मिलाके पिलाने से अधिक लाभ होताहै (९) इसका अर्क पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१०) पेटका अफारा मिटानेके लिये इसका अर्क पिलातेहैं (११) विसूचिकाके प्रारम्भमें इसका अर्क पिलातेहैं (१२) १॥ मासे अजवाइनको आगपर गर्मकर मलमलके कपडेमें ढीली बांधके सूंघनेसे छींकें आकर और नाक बहकर मस्तकका भारीपन मिटकर प्रतिश्यायका वेग कम हो जाताहै (१३) ३ मासेसे ६ मासे तक अजवाइनमें एक या १॥ मासे काला नमक मिलाके उष्ण जलके साथ फक्की देनेसे अफारा मिटताहै (१४) इसको और सोंठको चार पहर भिगो पीस छान गर्मकर नमक डालके पिलानेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (१५) अजवायन, कालीमिरच और नमकको पीस गर्म जलके साथ प्रातःकाल फक्की देनेसे पेटकी शूल, अफारा और मन्दाग्नि मिटतीहै (१६) लवे बच्चेके पेटकी शूल मिटानेके लिये और चैतन्य रखनेके लिये इसका अर्क पिलातेहैं (१७) गठिया मिटानेवाली औषधियोंमें अजवान अवश्य मिलाना चाहिये (१८) लवे बच्चेकी उल्टी और दस्त मिटानेके लिये उसकी माके दूध के साथ अजवान देनी चाहिये (१९) अजवानकी फक्की लेनेसे आलस्य मिटताहै (२०) मदकारी पदार्थोंके सेवनका स्वभाव और कामोन्माद मिटानेके लिये अजवाइन खिलाया करतेहैं (२१) अजवानको पानमें रख चाव २ के पीके निगलनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (२२) आवश्यकता अनुसार इसकी फक्की देनेसे, या हिम, फांट या क्वाथ बनाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै (२३) ३ मासे अजवानकी नित्य फक्की लेनेसे कोयले या मिट्टी खानेका स्वभाव छूट जाताहै (२४) इसके तेलका मर्दन करनेसे जोडोंकी पीडा मिटतीहै (२५) घी, खांड या पुराने गुडके साथ इसके मोदक बनाके खानेसे क्षुधा और पाचन शक्ति बढ़तीहै (२६) जितनी अजवान खा सके उतनी दोनों समय खिलाने से तिल्ली कम होजातीहै (२७) अजवानको पीस छान शहदमें मिलाके लेप करनेसे पादतलकी पीडा मिटतीहै (२८) जो औषधियें अपने बुरे स्वादसे खाली होजड या पेटमें मरोडी (मठोठी) पैदा करतीहैं, उनमें अजवान मिलाके देनेसे उनके ये दोनों उपद्रव मिटजातेहैं ।

संख्या (४२७)

(सं०) पारसीकयमानी, तुरुष्का मदकारिणी, यावनी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खुरासाणी अजवाण	खुरासानी अजवायन	खुरासाणी अजमा	खुरासनी ओंवा	खोरासानी यमानी	खुरासानी अजवाइन	खुरासानिवामु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कुरोशानि वोम	खुरासानि वोम	सेरालवज	तुख्मेबंग	Hyoscyamus niger	Henbane.

स्थान—खुरासानी अजवायनके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे गढवाल तक होतेहैं।

प्रयोग—(१) यह उष्ण, पाचक, रूक्ष, पचनेमें भारी, ग्राही, चरपरी, मादक, मूर्छा पैदा करनेवाली और पीडा मिटानेवालीहै (२) रक्तपित्तकी शोथ, गठिया, छोटे जोडोंकी सूजन और दुखती हुई आंख पर इसका लेप करना चाहिये (३) इसको रालके साथ पीसके दुखते हुए दांतकी खोखलमें रखना चाहिये (४) गर्भाशयकी पीडा मिटानेकेलिये इसकी वत्ती बनाके योनीमें रखना चाहिये (५) इसके रसकी या इसके बीजोंको १६ गुने जलमें औटा एक भाग रख छान उसकी बूंदें आंखमें डालनेसे आंखकी पीडा मिटतीहै (६) यह उत्तेजक, ग्राही और पाचनशक्ति बढानेवालीहै (७) इसके पंचांगमेंसे पत्ते, हरीटहनियें और बीज औषधिके प्रयोगमें आतेहैं (८) इसके पत्तोंका टिंचर बनाके उसकी २० से ६० बूंद तक देनी चाहिये। और उनका सार २॥ से ५ रत्ती तक देना चाहिये (९) उन्मादके वेग, निद्रानाश और स्नायु सम्बन्धि शिथिलता मिटानेकेलिये इसका प्रयोग करतेहैं (१०) कास और श्वासके प्रारम्भमें इसका प्रयोग किया जाताहै (११) यह सारकहै (१२) इसकी गुडमें गोली बनाके देनेसे पेटकी वायुकी पीडा मिटतीहै (१३) वीर्य्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटानेकेलिये इसका प्रयोग करतेहैं (१४) स्नायु पीडा, पेशियोंकी सूजन, फोड़ोंकी दाह और अर्श पर

सका लेप करना चाहिये (१५) इसका तेल बनाके मर्दन करनेसे बाइटे मि-
तेई (१६) प्रातःकालके समय पहिले थोडा गुड खिलाके फिर इसकी फकी
ासी पानीके साथ देनेसे पेटके कीडे निकलजातेहैं ।

संख्या (४२८)

(सं०) वनयमानी ।

ारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
		छुवारीअजमाद	किरामणीओंवा	वनयमान		

्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Seseli indicum Ligusticum indicum	

स्थान—वनयमानी हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१)-यह-कटु, तिक्त, उष्ण, दीपन, लघु, और वृष्यहै। त्रिदोष, अजीर्ण, कृमि शूल और आमका नाश करतीहै (२) इसकी फकी लेनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै (३) आंतोंके कीडे मारनेकेलिये वनयमानीका प्रयोग बहुत अच्छाहै (४) इसकी मात्रा सवामासेसे ३॥ मासे तकहै (५) यह उत्तेजकहै और आमाशयकी पीडाको मिटातीहै ।

संख्या (४२९)

(सं०) यवः, मेध्यः, सितशूकः, कंचुकी ।

ारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जो	जौ, जव	जव	जव, यव	यव	जौ	यवलु

्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यव	यव	श्यईर	जओ	Hordeum hexastichum	Barley

स्थान—हिन्दुस्थानमें इनकी खेती होती है । १०० तोले जवोंमेंसे ६३ तोले मैदा निकलतीहै । इनमें तेल बहुत कम निकलताहै ।

प्रयोग—(१) ये-कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, सारक, मृदु, विपाक में चरपरे, पचनेमें भारी और रूक्ष है बुद्धि, अग्नि, वात, बल, कान्ति और मल को बढ़ातेहै, रक्त और पित्तको सुधारते है । ये अभिष्यंदी नहीं है (२) स्वरभंग, कंठ और त्वचाके रोग, कफ, पित्त, मेद, पीनस, श्वास, कास, उरुस्तंभ तृषा, प्रमेह और दाहको मिटातेहै । व्रणवालेके लिये पथ्यहै और औषधियोंकी चरपराहट मिटातेहै (३) ये शीघ्रतासे पचजानेके कारण रोगियोंके पथ्यमें बहुत काम आतेहै (४) जिसके पेटमें मन्दाग्निसे पीडा रहतीहो उसको जवोंका लपटा पिलातेहै (५) इनके पत्तोंकी भस्मके पानीका बनाया हुआ शर्बत ठंढा होताहै (६) इनके पंचांगकी भस्मका जल अजीर्णमें पिलातेहैं (७) इनके आटेको पानीमें घोलकर मस्तकपर लेप करनेसे उसकी पित्तकी पीड़ा मिटतीहै (८) इनकी और गेंहूकी भुस्सीको ओटाके कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (९) इनको कूट पानीमें भिगो देवें जब पानी नितर जावे तब उस नितरेहुए पानीको गुनगुना करके गरारा करनेसे कंठकी सूजन उतरतीहै (१०) इनकी पतली खिचडी बना उसमें मधु मिला, ठढी करके खानेसे ज्वर, छर्दि, पित्तशूल दाह और तृषामें बहुत लाभ होताहै ।

संख्या (४३०)

(सं०) यवक्षारः, पाक्यः, यवजः, यवाग्रजः ।

मारवाडी	हिन्दी	गजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जोखार	जवाखार	जवखार	जवखार	यवक्षार	जौंखार	यवक्षारमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
यवक्षार	यवक्षार				Carbonate of Potash

प्रयोग—(१) यवक्षार-शीतल, स्निग्ध, पचनेमें हल्का, सूक्ष्म, सारक,

चरपरा और अग्नि दीपकहै (२) हरड़की छालके चूर्णमें यवक्षार मिला, मधुके साथ चटानेसे अम्लपित्त मिटताहै (३) जोखार और मिश्रीको सौंफके अर्क के साथ पिलानेसे मूत्रका विरेचन होताहै (४) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे विष जैसे उपद्रव पैदा करताहै (५) ३ मासे सोंठके चूर्णमें १॥ मासे जोखार मिला गर्मजलके साथ फक्की देनेसे पेटकी पीडा मिटतीहै (६) हरड़के २ मासे चूर्णमें १ मासा जोखार मिला उष्ण जलके साथ फक्की देनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (७) हरड़ और रोहीडेकी ६–६ मासे छालका क्वाथ कर उसमें ५ पीपलका चूर्ण और ३ मासे जोखार डालके पीनेसे तिल्ली और गुल्म मिटताहै (८) ३ मासे जोखार और ६ मासे मिश्रीको पाव दूध और पाव पानीकी लस्सीके साथ लेनेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (९) जवखारमें बराबर मिश्री मिलाके लेनेसे सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र मिटतेहैं (१०) ३ से ७ मासे जोखार दहीमें मिलाके खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ।

संख्या (४३१)

(सं०) यशदं, रीतिहेतुः श्वेतपटलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जस्त	जस्त	जसत	जसत	दस्ता	जसद	तुत्तसत्तु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
सत्त,, तुत्त				Zincum	Zinc

स्थान–यह मद्रास, बंगाल, राजपूताना और पंजाब आदि कई स्थानोंमें खानोंसे निकलताहै ।

जस्ता शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि–इसको गला २ के गायके दूधमें २१ बेर बुझानेसे शुद्ध हो जाताहै ।

इसकी भस्म करने की रीति—चूल्हेपर मिट्टीका खपरा चढा उसमें जस्तको गला, नीमकी लकडीके घोटेसे घोटने २ भस्म होजाय, तब अग्निपर

से नीचे उतार, कपड़छानकर, जिन जला हुआ रहा होवेतो उसको फिर वैसे ही उक्त रीतिसे जला, कपड़ छानकर लेवे, जब सब भस्म कपड छान हो जावे तब उसको पत्थरकी खरलमें डाल त्रिफलाके क्वाथ, गवारपाठे और जलभंगरे के रसमें खरलकर, टिकडी बना, सराव संपुटमें रख, कपड़ मिट्टीसे बन्धकर, गजपुटमें रखकर आंच देवे, ऐसे एक एक औषधिके रस तथा क्वाथकी बत्तीस बत्तीस भावना और गजपुटकी आंच देवे, पीछे सब औषधियोंको मिलाके उनके रसकी एक भावना और एक गजपुटकी अंच देकर, फिर पंचामृतकी एक भावना और गजपुटकी अंचदे खरलमें घोट शीशीमें भरकर रखदेवें। इसकी मात्रा ४रतीकी है।

प्रयोग—(१) इसकी भस्म–कपेली कडवी और शीतलहै। कफ, पित्त, प्रमेह, पांडु और श्वास रोगको मिटातीहै और नेत्रोंको बहुत हितकारीहै (२) इस को पानमें रखकर खानेसे पित्त और कफके प्रमेह मिटतेहैं (३) अरणीकी जडकी छालके चूर्णके साथ खानेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (४) तज, पत्रज, और छोटी इलायचीके दानेके चूर्णके साथ खानेसे त्रिदोष मिटताहै (५) चांवलोंके धोवनके जल (तन्दुलोदक) में छुहारेको घिस उसपर इसकी भस्म बुरकाके पिलानेसे पित्त ज्वर छूटताहै (६) अजवान और लोंगके चूर्णके साथ देनेसे शीतज्वर छूटताहै (७) अदरकके ६ मासे रसको गर्मकर ठंढा होने पर उसमें ६ मासे मधु मिला इसकी भस्म बुरकाके चाटनेसे श्वास रोग मिटताहै (८) मुनक्काके साथ देनेसे रुधिर बढताहै (९) पुराने घृतके साथ इसका अंजन करनेसे आंखोंके पित्तके रोग मिटते हैं (१०) इसके फूलोंको घीमें मिलाकर गर्मीके फोड़े फुन्सी और रगडकी चांदीपर लगाते हैं (११) बच्चोंके कानोंके पीछे या नीचे जो चांदी पड जातीहै अथवा हाथ पैरोंकी संधिमें जो चांदी पड़ जातीहै उसपर इसके फूल बुरकातेहैं (१२) सरसोंके तेलके साथ इसका लेप करनेसे पित्तकी सूजन उतरतीहै (१३) चन्दनके तेल के साथ इसकी भस्म देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१४) गोखरू के शर्बतके साथ देनेसे मूत्र अधिक और शुद्ध हो जाताहै (१५) कौंचबीज और मिश्री के साथ देनेसे प्रमेह मिटताहै (१६) हीरा दक्खनके साथ देने से रक्तार्शका रुधिर बन्ध होताहै (१७) बीलके मुरब्बे या शर्बतके साथ देनेसे रक्तातिसार मिटताहै।

संख्या (४३२)

(सं०) खर्परीतुत्थं, रसकं, चक्षुष्यं, अमृतोत्पन्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खपरयो	खपरिया	खापरियु	कलखापरी	खापर	खपरिला	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		तूतिया	सगफ्सरी	Zinci sulphidum	Impure calamine Black jack Zinc ore

खपरियेको शुद्ध करनेकी रीति—इसके छोटे २ टुकड़े कर कपड़े की पोटलीमें बांध गोमूत्रमें ७ दिन तक दोलायंत्रमें पचानेसे शुद्ध हो जाताहै ।

प्रयोग—(१) यह–चरपरा, सलौना, कपेला, वामक, पचनेमें हल्का, लेखन, शीतल, भेदन करनेवाला और नेत्रोंको हितकारीहै । कफ, पित्त, विष, रुधिरविकार, कुष्ठ, प्रमेह, क्षय, जीर्णज्वर, पाडु, शोथ, गुल्म, योनीरोग, रक्त गुल्म, प्रदर, सोमरोग, अर्श, अतिसार और कईको मिटाताहै (२) अशुद्ध खपरियेका सेवन करनेसे विशेष करके वमन और चक्कर आतेहैं ।

संख्या (४३३)

(सं०) यष्टिमधु, मधुयष्टिका, मधुस्रवा, मधुकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मलहटी	मुलहटी	जेठीमध	ज्येष्ठीमध	यष्टिमधु	मुलहठी	यष्टिमधुकमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
अतिमधुर	अतिमधुरा	असलुस्सूस	बेखेमहक	Glycyrrhiza glabra	Liquorice root

परिचान—मुलहटीकी जड़ लम्बी और गोल होतीहै, उसमें कई शाखें फूटतीहैं, और उसकी गुलाई १ से २॥ या ३ इंच तक होतीहै, यह खरदरी

और लचकदार होतीहै, इसका बाहिरका भाग कुछ सफेदी लियेहुए भूरा होता है और भीतरका भाग पीला होताहै, इसका स्वाद मीठा, कुछ चरपरा और कड़वा होताहै, यह चेपदार होतीहै, इसकी गंध अच्छी नहीं होतीहै। इसको छील के काममें लानी चाहिये।

प्रयोग—(१) यह औषधियोंकी चरपराहट मिटानेवाली, पचनेमें भारी, वृष्य, रोचक, शीतल और मीठी होतीहै (२) पित्तशोथ, कफ, गलेका भारीपन, कुत्ताखासी और तृषा आदि रोगोंको मिटातीहै (३) लाल चन्दनके साथ इसको घिसके लगाने से दाह मिटतीहै (४) क्वाथ, तेल और घी बनाने की कई औषधियोंमें यह मिलाई जातीहै (५) यह उष्ण, रूक्ष, फोडेको पकानेवाली, मूत्रवर्द्धक और रेचकहै विगडेहुए दोषको सुधारतीहै और श्वास, खांसी और मासिकधर्मके कष्टको मिटातीहै (६) बादीकी शूल को मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (७) नेत्रोंकी ज्योतिको बलवान करनेके लिये इसके क्वाथसे आंखोंको धोनी चाहिये (८) सिरमें जलीहुई ठौरपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (९) इसका पुल्टिस बांधनेसे पैर या कांखकी दुर्गंध मिटतीहै (१०) इसका क्वाथ पिलानेसे श्वासकी नलिका साफ हो जातीहै (११) इसके पंचागमेंसे इसके बीजोंमें सबसे अधिक गुणहै (१२) मुंहके छाले मिटानेकेलिये मुहलटीको मुंहमें रखना चाहिये (१३) रूक्ष खांसीमें कफ पैदा करनेकेलिये मुहलटीके सतको मधुके साथ चटाना चाहिये (१४) इसको पानीसे पीस उसमें रूईका फोया भिगोके नेत्रों पर बांधनेसे नेत्रोंकी ललाई मिटतीहै (१५) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (१६) इसको सुंघानेसे तृषा मिटतीहै।

संख्या (४३४)

(सं०) यावनालः, शिखरी, वृत्ततण्डुलः, चेत्रेक्षुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जुवार	ज्वार, ज्वारी	जुवार	जोंधळें	जुयार	ज्वार	जोंनलु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शोलं	जोळा	जुरंत	गावरसइन्दी	Sorghum vulgare Holcus sorghum	The Indian or great millet-Guinea corn

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत बोई जातीहै ।

प्रयोग—(१) सफेद जुवार—मीठी, बल कारक, वृष्य और रोचकहै त्रिदोष, गुल्म, अर्श और व्रणोंको मिटातीहै (२) लाल जवार—कषैली, उष्ण, ग्राही और विदाही होतीहै (३) यह वादीको मिटातीहै और सूजन पैदा करतीहै (४) शरद् ऋतुमें पैदा होनेवाली जवार—पिच्छिल, पचनेमें भारी, शीतल, मधुर, वृष्य और बलवर्द्धकहै और शरीरको पुष्ट करतीहै (५) जुवारकी गर्म रोटीको दहीमें चूर कर ढक रक्खें जब बिलकुल ठंढी होजावे तब खिला- आमातिसार मिटताहै (६) रात्रीमें इसके आटेकी रबड़ी बना रक्खे प्रातःकाल उसमें कुछ सफेद जीरा और छाछ मिला कर पीनेसे अंतरदाह मिटताहै (७) इसकी फूली ठंढी और कफ बढानेवाली और खानेके काममें आतीहै ।

संख्या (४३५)

(सं०) यूथिका, गणिका, अम्बष्ठा, यूथी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जूही	जूही	जुई	चतजुई	जुई, युइ	जूही	नदिवट्ट

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Jasminum auriculatum	

गुण—(१) जूही—मधुर, शीतल, कड़वी, विपाकमें चरपरी, पचनेमें हल्की, कषैली, हृदयको बल देनेवाली, वात और कफ पैदा करनेवालीहै, । पित्त, दाह, तृषा, कई प्रकारके त्वचाके रोग, रुधिरविकार, मुख, दंत, नेत्र और मस्तकके रोग, विष और शर्करास्मरीको मिटातीहै ।

संख्या (४३६)

(सं०) स्वर्णयूथिका, स्वर्णयूथी, हेमपुष्पी, मनोहरा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनजूही	पीलीजूही	पीळीजुई	पिवळीजुई	स्वर्णजुइ	स्वर्णजुही	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी

स्थान—सोनजूही हिमालयमें कश्मीरसे नैपालतक, दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनमें होतीहै और हिन्दुस्थानके सब बागोंमें बोई जातीहै। इसकी जड़में से पीला रंग निकाला जाताहै। इसके पुष्पोंसे सुगंधित तेल बनाया जाताहै

प्रयोग—(१) इसकी जड़का लेप करनेसे दाद मिटतेहैं (२) इसका दूधिया रस या इसकी छालमें छेद करनेसे जो दूध निकलताहै उसको पुराने नासूर और बिगडी हुइ हड्डी पर या खराब जख्मोंके किनारे पर लगाना चाहिये (३) इसके पुष्पोंको पीसके मलनेसे योनीका ढीलापन मिटताहै।

संख्या (४३७)

(सं०) रक्तरंगा रागगर्भा, रंजका, नखरंजनी, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलङ्गी
मेंहदी	मेहदी	मेदी	मेंदि	मेहदी	मेंदि	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हिन्ना		Lawsonia alba L. inermis	Henna

स्थान—मैंहदी हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै और कहीं २ अपने आपभी उगतीहै।

पहिचान—इसका झाड़ ६-७ फुट ऊंचा होताहै, इसके पत्ते-चमक-

दार होतेहैं । इसकी छोटी टहनियां गोल नहीं होतीहैं । इसके कुछ हरे पीले रंगके बहुत सुगंध युक्त पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं । इसके १२ महीनेही पुष्प लगते रहतेहैं । इसके पत्ते रंगतके काममें आतेहैं ।

प्रयोग—(१) निर्बल मनुष्योंको मेंहदीके पुष्प सुघातेहैं और ललाट पर उनका लेप करतेहैं (२) इसके पत्तोंको पीसके फोड़ों पर लेप करतेहैं (३) इसके क्वाथके कुल्ले करनेसे मुखके छाले मिटतेहैं (४) पित्तशोथ और अग्नि दग्धपर मेंहदीके क्वाथमें भिगोया हुआ कपड़ा रखना चाहिये (५) मस्तककी पीड़ा मिटानेकेलिये मेंहदीको तेलमें पीसके लगाना चाहिये (६) जिसको शीतला निकलीहो उसके पैरोंके तलवों पर इसका लेप करनेसे उसका असर आखों पर नहीं होताहै (७) नख और केशोंपर मेंहदी लगानेसे वे अच्छे बढतेहैं (८) मेंहदीके लेपमें घाव भरनेकी शक्ति बहुत अच्छीहै (९) कामला और तिल्लीवालेको इसकी छालके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (१०) इसकी छाल का हिम पिलाने से पथरी मिटती है (११) कोढ और औषधि नहीं माननेवाले त्वचाके रोगमें इसकी छालका क्वाथ पिलाना चाहिये (१२) मस्तकके रोगोंमें मेंहदीके बीजोंको मधुके साथ चटाना चाहिये (१३) इसके पुष्पोंका क्वाथ पिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (१४) इसके पुष्पोंके लेपको उष्ण करके चोटपर लगाना चाहिये (१५) इसके पुष्पोंको तकियेमें भरके रोगीके सिरके नीचे रखनेसे उसको नींद आजातीहै (१६) इसके पुष्पोंको पीसके चोटपर लगातेहैं (१७) इसके पीले और तीव्र गंधवाले पुष्प, पत्ते, और कोमल टहनियों का सार निकालकर, उसकी दो मासेकी मात्रा कुष्ठी और शरीरकी प्रकृति बिगड़े हुए मनुष्योंको दिनमें दोवेर देनी चाहिये (१८) पत्तोंके स्वरसमें थोड़ा पानी मिलाके प्रमेहवालेको पिलाना चाहिये (१९) सर्दी और गर्मीके वेगमें इसके पत्तोंका स्वरस दूधमें मिलाके पिलाना चाहिये (२०) पैरोंकी दाहमें मेंहदीके पत्तोंका लेप करना चाहिये जो दूसरी औषधिया पैरोंकी दाह नहीं मिटासकें तो इसका लेप तो अवश्यही थोड़ा बहुत गुण करेगा । इसके लेपकी यह रीतिहै कि ताजे पत्तोंको सिरकेके साथ पीस पुल्टिसकी तरह पैरोंके तलवोंपर बांधना चाहिये (२१) गठियाके तीव्र वेग को मिटानेकेलिये मेंहदीके ताजे पत्तोंको महीन पीस, रात्रिको सोनेके समय उस

ठौरपर गाढा लेप करना चाहिये, जबतक गाठिया नहीं मिटे, तबतक लगातार लेप करते रहना चाहिये (२२) इसके पत्ते हरड़की छाल और कत्थेको ४ पहर भिगो, मल छानके, मूत्रकृच्छ्रवालेके पिचकारी देनी चाहिये (२३) इसके ताजे पत्तोंको नींबूके रसमें घोटके पैरोंके तलवोंमें लेप करनेसे उनकी दाह मिटतीहै (२४) ताजे पत्तोंको पीस उनका पुल्टिस बनाके बांधनेसे सूजन और पीडा मिटतीहै (२५) नये भरे हुए घावकी चमडीको मजबूत करनेके लिये उसपर इसके ताजे पत्तोंकी टिकड़ी बाधनी चाहिये (२६) मसूडोंके असाध्य रोगवालेको इसके पत्तोंके क्वाथके कुल्ले कराने चाहिये (२७) सब प्रकारके फोडे फुन्सियोंको इसके क्वाथसे धोनेसे बडा लाभ होताहै (२८) इसके बीजोंकी फकी देनेसे प्रलाप मिटताहै (२९) गीले या सूखे पत्तोंको पानीमें पीसके शरीरपर लगानेसे शरीरकी चमचमाहट मिटतीहै (३०) इसके पत्तोंको जो कूट कर रातभर पानीमें भिगो, उनका नितरा हुआ जल प्रातःकाल ७ दिनतक पिलानेसे कामलारोग मिटताहै (३१) इसके पत्तोंको मुंहमें रखने और चाबनेसे वादीका मुखपाक मिटताहै (३२) इसके पुष्पोंको पीसकर मस्तकपर लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीडा मिटतीहै (३३) मेंहदीको पानीमें भिगो उस पानीके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (३४) इसके और एरंडके पत्तोंको पीस गुनगुना कर घुटनोंपर लेप करनेसे उनकी पीड़ा मिटतीहै (३५) इसके १॥ तोले पत्तोंको रातभर ऐसे पानीमें भिगो प्रातःकाल मल छान उसमें थोडा बूरा डालके नित्य ४० दिनतक पीनेसे कुष्ठ मिटताहै (३६) इसके पत्तोंको साबुनके पानीके साथ पीसकर सफेद बालोंपर लगानेसे वे काले होजातेहैं (३७) इसके ४॥ मासे बीजोंको मधुके साथ चटानेसे मस्तक पुष्ट होताहै (३८) पत्तोंको साबुनके साथ पीसके लगानेसे घुटनेके जोड़की पीड़ा मिटतीहै (३९) फटेहुए हाथ पैरों पर मेंहदी लगाना चाहिये (४०) अग्निसे कम जलनेपर अर्थात् छाला न उठा हो तो उसपर मेंहदी लगाना चाहिये (४१) इसके आधसेर पत्तोंको सेर पानीमें ओटा, आधा पानी रख छान उसमें आध सेर तिलोंका तेल डालकर ओटावे जब तेल सिद्ध होजावे तब उतार लेवे । इसका मर्दन करनेसे जोड़ोंकी पीडा मिटतीहै (४२) इसके पत्तोंका मस्तकपर लेप करनेसे आधा शीशी मिटतीहै (४३) इसके

बीज, शोषक और ग्राहीहै । इसके पुष्पोंका इत्र खींचा जाताहै। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै ।

संख्या (४३८)

(सं०) रक्तवल्ली ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पित्ती	रगतसेहडो	ग्वडेनल	रक्तपित्त		यर्रचिरतली

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी
सुरलपट्टे	पैपलीचक्का			Ventilago madraspatana V bracteata	

स्थान—रक्तवल्ली पश्चिम प्रायद्वीपमें कोकनसे दक्षिणकी ओर होतीहै ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका बडा झाड होताहै वह बेलकी भांति वृक्ष पर चढताहै । इसके छोटे पत्ते चिकने होतेहैं। शीतकालमें इसके पुष्प लगतेहैं। इसके एकप्रकारका गोंद लगताहै। इसकी जडकी छालमें से लाल रंग निकालाजाताहै।

प्रयोग—(१) पेट और आमाशय की पीडा मिटानेके लिये इसकी जडकी छाल काममें आतीहै (२) यह बलवर्द्धक और उत्तेजकहै (३) इसका सेवन करने से मंदाग्नि निर्बलता और हल्का ज्वर मिट जाताहै (४) इसकी मात्रा दो मासेसे ४॥ मासे तक कीहै (५) इसको कुनैनकी ठौर भी देतेहैं (६) इसकी छालको महीन पीस तिलोंके तेलमें मिलाके लगानेसे पामा और त्वचाके दूसरे कई रोग मिटतेहैं ।

संख्या (४३९)

(सं०) रजत, तार, शुभ्र, चन्द्रहासम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चादी	चादी	रुपुं	रुपुं	रूपा	चांदी	वेंडि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेजी
वल्लि	वेल्लि	फिज्जांह	सीम नुकरांह	Argontum	Silver

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंसे निकलतीहै।

बिना शोधी हुई चांदी की भस्मका सेवन करनेसे पांडु, खुजली, गलग्रह, बद्धकोष्ठ और मस्तकशूल आदि कई प्रकारके रोग पैदा होतेहै और बल और वीर्य्यका नाश होताहै। इसकी भस्म करते समय जो कची रहजाय उसका सेवन करने से दाह, मलकी गाठ और प्रमेह आदि कईप्रकारके रोग पैदा होतेहै। और बलवीर्यका नाश होताहै।

इसको शोधनेकी रीति—(१) इसके पतले २ पत्र करा उनको अग्निमें लालकर अगस्तिके पत्तोंके रसमें बुझावें, ऐसे तीन बेर बुझानेसे यह शुद्ध हो जातीहै। (२) रीति—इसके पत्रोंको अग्निमें लाल कर करके इमली और दाखोंके अलग अलग रसमें तीन २ बेर बुझाने से शुद्ध हो जातीहै।

इसकी भस्म बनानेकी रीति—एक तोले शुद्ध हरतालको नीबूके रस या और किसी खटाईमें एक पहर खरलकर उसको शुद्ध की हुई चांदीके तीन तोले पत्रों पर लेपकर देवे, फिर सुवर्ण भस्म बनानेकी रीतिके अनुसार सरावसम्पुटमें बन्धकर ३० जंगली कंडोंकी आंच देदेवे। जब वह बिलकुल ठंढी हो जावे, तब उसको निकाल, फिर पूर्वोक्त रीतिसे १४ बेर आंच देनेसे चांदी की उत्तम भस्म हो जातीहै। इसको रूपरस कहतेहै। इसकी मात्रा ४ रत्ती तककीहै।

प्रयोग—(१) इसकी भस्म कपेली और मधुर होतीहै। मन्दाग्नि, पाडु, क्षय, पित्त और कफके रोग, विष, प्रमेह, नेत्ररोग, मदात्यय, अपस्मार, शूल, प्लीह, ज्वर, यकृत् के रोग, शोथ, कास, त्रिदोष आदि कई रोगोंको अलग २ अनुपानमें मिटातीहै। (२) मिश्रीके साथ रूप रसका सेवन करनेसे दाह मिट-

तीहै (३) त्रिफलेके साथ सेवन करनेसे वात पित्तके विकार मिटतेहैं (४) स्ना-युजालकी शक्ति बढानेवाली औषधियोंमें चांदीके वर्क मिलाये जातेहैं (५) उष्ण ऋतुमें हृदय का बल बढानेके लिये मुरब्बेके आवलेपर चांदीके वर्क लगाकर खातेहैं (६) शरीर की साधारण निर्बलता मिटानेके लिये चांदी के वर्कोंको मक्खन और मिश्रीके साथ खातेहैं।

संख्या (४४०)

(सं०) रजनीगन्धा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गुलशब्बा	गुलशब्बा		गुलचेरी	रजनिगंधा	गुलशब्बी	नेलसेम्पेंग

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Polianthes tuberosa	

स्थान—गुलशब्बा हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें बोया जाताहै।

पहिचान—इसके पुष्पोंमें बहुत उत्तम सुगंध होतीहै।

प्रयोग—(१) गुलशब्बा—रूक्ष, उष्ण, मूत्रवर्द्धक और वामकहै (२) इसके कंदको सुखा पीस दूधके साथ फंकी देनेसे, अथवा उसकी ठंढाईकी जैसे पीसके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३) इसको हलदीके साथ पीस, मक्खन में मिलाके लगानेसे नये बच्चेकी लाल फुन्सियां (अलाइया) मिटतीहैं (४) इसको दूबके रसमें पीसके गाठोंपर लेप करतेहैं (५) इसके पुष्पोंका इत्र निकाला जाताहै।

संख्या (४४१)

(सं०) रतनजोत।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रतनजोत	रतनजोत				रतनजोत	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Onosma echioides O. hispida	

स्थान—रतनजोत हिमालयमें कश्मीरसे कमाऊं तक होतीहै।

प्रयोग—(१) त्वचाके ऊपर कई प्रकारके फोडे फुन्सियों पर इसकी जडका लेप करतेहैं (२) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै (३) इसके पुष्प उत्तेजकहै (४) इनको औटाके पिलानेसे हृदय के रोग मिटतेहैं (५) इनको तेलमें औटाके उस तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटती है (६) रतनजोतको पीसके नाकमें टपकानेसे मिरगीवालेकी मूर्च्छा मिटती है। इसकी जडमेंसे लाल रग निकाला जाताहै।



संख्या (४४२)

(सं०) रसाञ्जनं, रसगर्भं, रसोद्भूतं, रसाग्रजम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रसोत	रसोत	रसवती	रसाञ्जन	रसाजन	रसौत,रस	रसाञ्जनमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हुजुज	रसोत	Extractum berberis	Extract of Barberry

प्रयोग—(१) रसोत बनानेकी रीति—दारूहल्दीकी जोकूटकी हुई जडोंको पानीमें बहुत धीरे २ औटावे, जब पानी गाढा पड जावे, तब छानकर फिर उसको वालुयंत्रमें बहुत मन्दे आंचसे गोली बनने लायक गाढा करके उतार लेवे (२) बच्चोंको रेच करानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है (३) आंख दुखतीहो, और उसमें गीड बहुत आतेहों, तो उसपर रसोतका लेप करना चाहिये (४) रसोत और अफीमको नींबूके रसमें सिजोकर, आंख की पीडा मिटानेके लिये बाहिर २ लेप करना चाहिये (५) देरीसे अच्छे

होनेवाले फोडोंके ऊपर रसोतका लेप करना चाहिये (६) रसोत, अफीम और फिटकड़ीका लेप करनेसे आखकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (७) पौने दो दो मासे रसोतको पानीमें घोल २ के दिनमें ३-४ बेर पिलानेसे ज्वर छूटता है (८) इससे क्षुधा और पाचन शक्ति वढतीहै, और पेटके ऊपर के भागमें एक प्रकारकी सुहावनी उष्णता प्रतीत होतीहै (९) इसके लेनेसे मल ढीला हो जाताहै (१०) इसके सेवनके समयमें शरीर निरंतर आर्द्रसा बना रहताहै (११) एक भाग रसोत, एक भाग फुलाई हुई फिटकड़ी, और एकसे आधा भाग अफीम, इन सबको नींबूके रसमें अग्निपर गाढा करके, भंवारे और पपोटोंपर लेप करनेसे आखकी पीड़ा मिटती है (१२) रसोतकी ५ रती से १५ रतीतक मात्रा देनेसे रक्तार्शका रुधिर वन्ध हो जाताहै (१३) नीमके काथका बफारा आंखके लगाकर फिर उसपर इसका लेप करना चाहिये। (१४) २॥ रतीसे ७॥ रतीतक रसोतको मक्खनके साथ चटानेसे रक्तार्शका रुधिर वन्ध होताहै (१५) ४ मासे रसोतको १० तोले पानीमें गलाके अर्श को धोना चाहिये (१६) रसोत और कपूरको मक्खनमें मिलाके गर्मीके फोड़े फुन्सियों पर लगानेसे उनकी दाह मिटतीहै और वे आपभी मिट जातेहैं (१७) वृद्ध मनुष्योंके हल्के ज्वरको मिटानेके लिये और उनके शरीर में बल वढानेके लिये रसोत का प्रयोग बहुत अच्छाहै (१८) इसको नींबूके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे मुखपाक मिटताहै (१९) इसकी भस्म सुघानेसे नकसीर वन्ध हो जातीहै (२०) रसोत और हाथी दातकी भस्मको स्त्रीके दूधमें पीसकर लगानेसे बाल उग आतेहै (२१) रसोतको स्त्रीके दूध और मधुमें मिलाकर कानमें डालनेसे उसमेंसे पूयका वहना वन्ध हो जाताहै (२२) इसको पिलाने और लगानेसे बच्चोंकी गुदाका पकना वन्ध हो जाताहै (२३) रसोतको मधुमें मिलाकर अजन करनेसे मस्तकपीडा और नेत्रके रोग मिटतेहै (२४) रसोत, लाल चावलोंकी जड और मधुको चावलोंके धोवनमें मिलाके पीनेसे रक्त प्रदर मिटताहै।

संख्या (४४३)

(सं०) राजमापः, महामापः, चपलः, चवलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चँवला	लाविया चँवरा	चोळा, चोल	अळसुदा	वरवटी	रवाह	अलसंदुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कारामणि		फ़िरीका	लोबिया	Vigna catiang Dolichos sinensis	The Cholee of India Tom cok of China

स्थान—चँवले हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

चँवले—श्वेत, लाल और काले रंगके भेदसे तीन प्रकारके और छोटे बड़े के भेदसेभी दो प्रकारके होतेहैं, सफेद रंगके बड़े चँवलोंको "डालरचँवले" कहतेहैं। १०० तोले चँवलोंमेंसे ५६॥ तोले मैदा, सवा तोले तेल, और १२॥ तोले पानी निकलताहै।

प्रयोग—(१) चँवले-ठंढे, रूक्ष, पचनेमें भारी, मधुर, कषेले, शरीर तृप्तिकारक, वातल, रोचक, स्त्रियोंके दुग्धवर्द्धक, सारक, विशद, मल को बढ़ानेवाले, और वीर्य्य, मेद और कफको शोषण करनेवाले, रक्त पित्त और आमको मिटानेवालेहैं। साबित चँवलोंका या इनकी दाल और कच्ची फलियोंका शाक बनाया जाताहै। चँवलोंकी दाल और इनके आटेसे भोजन के कई प्रकारके पदार्थ बनातेहैं।

संख्या (४४४)

(सं०) राजावर्त्तः, नृपावर्तः, आवर्तकः, आवर्तमणिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लाजवर्द	लाजिवर्द			राजावर्त्त	लाजवर्द	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Lapis lazuli	

सरल और नीलके भेदसे राजावर्त दो प्रकारका होताहै जिसमें नीला भाग अधिक और श्वेत, चमकीलाभाग कम होवे और तोलमें भारी होवे वह उत्तम होताहै।

इसको शुद्ध करनेकी रीति—इसको महीन पीस विजौरेके रसमें खरलकर फिर अम्लवर्ग अर्थात् खट्टे पदार्थोंके रसमें, फिर अद्रकके रसमें खरलकर गर्म जलसे धोकर खटाई आदि निकाल देनेसे शुद्ध होजाताहै।

प्रयोग—(१) शुद्ध कियाहुआ राजवर्त—चरपरा, कडवा, शीतल, ग्राही और चित्त प्रसन्न करनेवालाहै। पित्त, वमन, प्रमेह और हिचकी को मिटाता है (२) फोडे फुन्सियोंपर इसका लेप करतेहै (३) जुलाफा आदि दूसरी विरेचन की औषधियोंमें इसको मिलातेहै।

संख्या (४४५)।

(सं०) राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राई	राई	राई	मोहरी	राइसरिषा	राई, अरयो	आवालु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कडुहू	सासुवे	खरदल	सर्षफ	Brassica Juncea Sinapis J	The Rai or Indian mustard

स्थान—राई हिन्दुस्थानमें बहुत और बोई जातीहै।

प्रयोग—(१) राई—उष्ण, अत्यन्त तीक्ष्ण, चरपरी, कडवी, कुछ रूक्ष और अग्निवर्द्धक है (२) वायुकी पीडापर कई प्रकारसे राईका लेप किया जाताहै। इसके लेपकी यह रीतिहै कि केवल राईको महीन पीस उसमें थोडी चीनी शकर डाल, थोडेसे पानीके साथ उसको ऐसी महीन पीसे कि उसमें चेप पैदा होजावे पीछे एक मलमलका कपडा गीलाकर उसको खूब निचोड़ उसपर उसका लेपकर जहा दर्द हो वहा उस कपडेको राईको वाहिरकी ओर रखके चिपका देवे और ऊपरसे उसको सेक देवे, जब बहुत जलने लगे तब

उस पट्टीको उतार लेवे। अथवा राई और पापडको पीसकर उसका लेप करे (३) गठियाकी सूजनपर इसका लेप बहुत उपकारी है (४) स्नायु पीडा मिटानेके लिये इसका लेप करना चाहिये (५) राईमें लहसन मिलाके लेप करनेसे अधिक लाभ होताहै (६) राईकी फकी लेनेसे पाचनशक्ति बढती है (७) राईका आटा करके पानीमें ओटानेसे उसमेंसे तेल निकल आताहै (८) राईके तेलमें वायुनाशक औषधियोंको ओटा छान उसका मर्दन करनेसे बाँइटे मिटतेहैं (९) एरंडके पत्तोंको इसके तेलसे चुपड अग्नि पर तपाके बांधनेसे शरीर में जमा हुआ रुधिर बिखर जाताहै (१०) इसके चूर्णमें बूरा मिलाकर फकी लेनेसे मुँहसे लाळका गिरना बन्ध होताहै (११) इसका तेल कानमें डालनेसे बहिरापन और लगानेसे फोडे फुन्सी मिटतेहै (१२) राईको पीस कर मंजन करनेसे दांत साफ और दृढ रहतेहै (१३) इसको पीस कर सुंघानेसे मिरगीका वेग दूर होताहै (१४) राई और कलोंजी पीसके सुंघानेसे कंठमें चिपटी हुई जोंक गिर जातीहै (१५) इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै।

संख्या (४४६)

(सं०) कृष्णराजिका, कृष्णिका, सुतीक्ष्णः क्षवकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राईभेद	काली राई	काली राई	काळी तिरी	कृष्णराइ	कालीराई	अवलो

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कडयो	बिलेपसिवे			Brassica nigra Sinapis n	The black or true mustard

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै।

१०० तोले राईमेंसे २२ तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) इसका पुल्टिस पीड़ा मिटाने और छाला उठानेकेलिये बाधा जाताहै (२) पित्त शोथपर इसका पुल्टिस बहुत लाभ कारी है परन्तु चमडी लाल होजानेके पीछे इसके पलस्तरको उतार लेना चाहिये, नहीं तो

वहा पर बहुत दुखदाई छाले होजातेहैं (३) इसका लेप करनेसे गठिया का दर्द मिटताहै (४) राईके आटेको पानीमें घोलके पिलानेसे शीघ्र और निरुपद्रव वमन होतीहै (५) अगर प्रमाणसे लिया जायतो राई या राईका आटा पाचक मसालाहै (६) राईको साबित निगलनेसे सारकपनका काम करतीहै (७) बद्धकोष्ठके कारणसे पैदा हुई मंदाग्निको मिटानेकेलिये राईकी फकी देतेहैं (८) इसके ताजे शुद्ध तेलका मर्दन करनेसे शरीरका आलस्य मिटताहै (९) गलेकी हल्की सूजन पर इस तेलका मर्दन किया जाताहै (१०) शरीरके भीतर जहां रुधिर आदि जम जावे वहां इस तेलका मर्दन करके सेक देना चाहिये (११) इस तेलका मर्दन करनेसे रड्डोंकी पुरानी सूजन उतर जातीहै (१२) इसका तेल खानेके काममें भी आताहै (१३) स्नान करनेके पहिले शरीर पर इसका मर्दन करनेसे अधिक पसीना होना बन्ध होताहै और सूर्यकी किरणोंकी तीक्ष्णता और लूका असर नहीं होताहै (१४) बच्चेके शरीरपर इसका मर्दन करके उसको कुछ देरतक धूपमें बैठा रखनेसे उसकी त्वचामें तेज गर्मी सहनेकी शक्ति होजातीहै (१५) भोजनके पदार्थ बनानेमें इस तेलको बहुधा घीकी ठौर काममें लातेहैं (१६) भोजन करनेके पीछे इसकी कुछ बूंदें पीनेसे पाचनशक्ति बढतीहै (१७) कुछ पित्त और मूत्रवृद्धि करनेकेलिये इसको पिलाना चाहिये (१८) इस तेलमें कपूर मिला के मर्दन करनेसे गठियामें बहुत लाभ होताहै (१९) पैरोंमें और नाकके ऊपर इस तेलका मर्दन करनेसे मस्तककी सर्दी और मलेरियाच एक रातमें मिटजाताहै (२०) बच्चोंकी छातीपर इसका मर्दन करनेसे खांसीके विकार मिटतेहैं (२१) गलेके साधारण रोगमें इसका मर्दन करना उपकारीहै (२२) जुकामके कारणसे तेज ज्वर होनेपर पैरों पर इसका मर्दन करना तुरंत आराम दिखलाताहै (२३) नाकपर मर्दन करनेसे नाकका बहना तुरंत बन्ध होजाताहै (२४) कपासके पान और राईको पीसकर लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (२५) राई और हींगके चूर्णकी फकी देनेसे मरा हुआ बालक गर्भमेंसे बाहिर निकलजाताहै (२६) राई और सहिंजनेकी छालको गायकी छाछके साथ पीसके लेप करनेसे वातशूल मिटतीहै (२७) राई और नोसादरको पीस कर घरमें डालनेसे सांप भग जाताहै (२८) सर्पका विष

उतारनेकेलिये बहुतसी राई खिलानी चाहिये (२६) राई और बकरी की मेंगनीको पीस, केश उपाडकर, उस ठौर पर लगानेसे केश देरसे उगते है (३०) पेटमें जमे हुए रुधिर आदिके विकारको मिटानेकेलिये ८ मासे राईको पानीके साथ पीसकर पिलानी चाहिये (३१) जिह्वाका रसाज्ञान मिटानेकेलिये राई आदि तीक्ष्ण औषधि चबाना चाहिये (३२) राई और कबूतरकी बीटको पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (३३) राईको सिरकेके साथ पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै (३४) राई और सेंधनमकको ओटाकर कुल्ले करानेसे कंठ में चिपटी हुई जोंक निकल जातीहै (३५) राईको गर्म जलके साथ पीसके लेप करनेसे काखोलाई मिटतीहै (३६) इसका लेप करनेसे बद बिखर जातीहै (३७) आधी कच्ची और आधी सेकी हुई राईको पीस कडवे तेलमें मिलाकर लगानेसे गंज मिटतीहै।

संख्या (४४७)

(सं०) रामफलं, अग्रिमा, कृष्णबीजं, लवनी

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रामफल	लवनी एनोना	रामफळ	रामफळ	लोना	रामफल	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Anona reticulata	The bullock's heart or true custard apple of the West Indies.

स्थान—रामफलके वृक्ष बंगाल, दक्षिण हिन्दुस्थान आदि और कई भागोंमें बोये जातेहै।

—फूलने फलने का समय—इसके फल वर्षा ऋतुके अंतमें पकतेहै, वे खानेके काममें आतेहै।

प्रयोग—(१) रामफल कपेला, मीठा और खट्टाहै। कफ और बादीको बढाताहै। रुचि, दाह, तृषा, पित्त, श्रम और क्षुधाको मिटाताहै (२) इसकी छाल बहुत ग्राहीहै, और बलवर्द्धक औषधियोंमें मिलाई जातीहै (३) इसका

फल आमातिसार मिटानेके लिये काममें आताहै (४) इसके फल खिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं। इसके कच्चे सूखे फलमेंसे काला रंग निकलताहै। इसके ताजे पत्तोंमेंसे एक प्रकारकी नील निकलतीहै।

संख्या (४४८)

(सं०) रास्ना, रस्या, सुगंधिमूला, युक्तरसा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राठकांपान	रास्ना	रासना	रासना	रास्ना	जतर रहसन	सन्नरास्ना

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
सन्नहुम्पराष्ट	सन्नराश्मे			Vanda Roxburghii Cymbidium tessellodes	

स्थान—रास्ना दक्षिण हिन्दुस्थानके, बंगाल और कोकन देश आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै। दो, तीन वृक्षोंकी जडोंको रास्नाके काममें लातेहै।

प्रयोग—(१) रासना—कडवी पचनेमें भारी, उष्ण और पाचकहै। आम, वातरक्त, विष, श्वास, कास, विषमज्वर, शोफ, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, कंपवायु, उदररोग और सब प्रकारकी वादीको मिटातीहै (२) वातव्याधि मिटानेके लिये जो तेल बनाये जातेहैं उनमें रास्ना अवश्य मिलाई जातीहै (३) इससे बनाया हुआ तेल स्नायुजालके रोगोंको मिटाताहै (४) उपदंश सम्बन्धी उपद्रव मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करने से ज्वरकी दाह कम होतीहै (६) इसके पत्तोंका रस कानमें डालनेसे उसकी खुजली और बहना बन्ध होताहै (७) इसको उशबेकी ठौर भी काम में लातेहैं।

संख्या (४४९)

(सं०) रुदन्ती, चणपत्री, रोमाञ्चिका, सञ्जीवनी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाला	पंजाबी	तैलङ्गी
रुद्रवन्ती	लाणा	पलियो	रुदंती	रुदन्ती		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Cressa cretica	

स्थान—रुद्रवंती बहुधा हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें समुद्रकी तट के पास २ मुलतान, सिन्ध, गुजरात, कारोमण्डलके किनारे और सीलोनमें होतीहै। वर्षाऋतु पूरी होनेके पीछे यह खेतोंमें उगतीहै।

पहिचान—इसका छोटा खडा झाड़ होताहै, इसके चने जैसे खट्टे पत्ते लगतेहैं, शिशिर ऋतुमें इसमेंसे पानीकी बूंदे टपकने लगतीहैं, जब यह वृक्ष वृद्ध होजाताहै तब इसपर सफेद रुँए पैदा होजातेहैं।

प्रयोग—(१) रुदंती कषेली, चरपरी, कड़वी और उष्ण होतीहै क्षय, कृमि, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहको मिटातीहै (२) यह रसायनी और बलवर्द्धकहै (३) इसके क्वाथसे सूखी खांसी मिट जातीहै।

संख्या (४५०)

(सं०) रुद्राक्षः, अमरः, तृणमेरुः, पुष्पचामरः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्षगाछ	रुदराछ	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Flaco-corpus Ganitrus	Utrasum bead tree

स्थान—रुद्राक्षके वृक्ष नेपाल, आसाम और कोकन घाटपर बहुत होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष बड़ा होताहै इसकी टहनियों पर प्रायः ६ इंच लम्बे पत्ते बारी२ से लगतेहैं, उनकी कोरें कुछ कटीहुई होतीहैं। छोटे पत्तों पर

बहुत हल्के रेशमीन रुंए होतेहैं, पत्ते बडे होनेपर दोनों ओरसे चिकने होजातेहैं इसके फलमें पांच खाने होतेहैं और उन हरेकमें एक एक बीज रहताहै।

फूलने,फलनेका समय—यह शीतकालमें फूलताहै और वंसतऋतु इसके फल पकतेहै।

गुण—(१) रुद्राक्ष-खट्टा, उष्ण और रोचक होताहै। वादी, कफ, मस्तक पीडा और भूतबाधाको मिटाताहै।

संख्या (४५१)

(सं०) रोहिणी, सुलोमा, मांसरोहा, सदामांसी।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रोहन	रोहिणी	रोहण	रोहिणी	रोहन	रोहिणी	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		बकम	बकम	Soymida febrifuga swietenia	The Indian red wood Bastard Ceda

स्थान—रोहनके वृक्ष पश्चिमोत्तर, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें दक्षिणकी ओर ट्रैवनकोर और सीलोन तक और राजपूताना, आदि देशोंमें भी होतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ७०—८० फुट ऊंचा होताहै। इसकी पेडकी गुलाई ७, ८ फुट होतीहै और छाल धुंधले रंगकी और बहुत खरदरी होतीहै। इसके ६ से १२ इंच लम्बे पत्तोंके तीनसे छैतक जोडे लगतेहैं। इसके कुछ हरे और सफेद रंगके पुष्प लगतेहैं। इसके चिकनी और एक दो इंच लम्बी डांडी लगतीहै वह पकने पर काली पड जातीहै। इसके पुराने पत्ते गिरनेके पहिले ही चैत्र वैशाखमें नवीन पत्ते आजातेहैं।

फूलने,फलनेका समय—चैत्र वैशाख में यह फूलतीहै और अषाढ श्रावणमें इसके बीज पककर गिरजातेहैं।

इसकी गहरी लाल छालमेंसे चेपदार गोंद और राल जैसा सफेद रंगका एक पदार्थ निकलताहै। इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै॥

प्रयोग—(१) रोहिणी—शीतल, कषेली, और कृमिनाशकहै (२) इसकी छाल ग्राहीहै और बारीसे आनेवाले वेगको मिटातीहै (३) १ तोले से १॥ तोलेतक इसकी छालका चूर्ण रात दिनमें देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाताहै परन्तु अधिक मात्रा देनेसे स्नायुजालमें विकार पैदा होके पहिले चक्कर आने लगतेहैं और अन्तमें मूर्छा होजातीहै (४) अतिसार और आमातिसार मिटानेकेलिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (५) इसकी छालके क्वाथके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (६) योनीके व्रण मिटानेकेलिये उनको इसकी छालके क्वाथसे धोतेहैं (७) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे अथवा इसकी छालका पुल्टिस बांधनेसे गठियोंकी सूजन उतरतीहै ।

संख्या (४५२)

(सं०) रोहिषतृण, पौर, सौगन्धिक, देवजग्धकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रोहिसेघास	गंधेजघास	रोश (स)	रोहिषगवत	रामकपूर	गाधीघास	ध्यामकु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	कामचिह्नल्लु			Andropogon schoenanthus A. Martini	The Ginamum grass, Rusa oil grass

स्थान—रोहिसका घास संयुक्त प्रदेश, पंजाब, दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थानमें बहुत होताहै। पंजाबमें रोहिसका घास दो प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—(१) रोहिसघास—कषेला, कडवा, पाकमें चरपरा, स्निग्ध, उष्ण और मधुरहै (२) इसके तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गठिया मिटतीहै (३) शिरमें इसको लगानेसे गंज मिटतीहै (४) स्नायुजालकी पीडा मिटानेकेलिये इसका मर्दन करतेहैं (५) इसका फांट पिलानेसे पेटकी पीडा मिटतीहै (६) इसका तेल गुलाबके तेलमें मिलाया जाताहै (७) नलिका यंत्रसे इसका तेल निकालतेहैं वह ठंढा और ग्राही होताहै (८) इस तेलका

मर्दन करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (९) इसका क्काथ पिलानेसे ज्वर छूट-जाताहै (१०) फाल्गुन और चैत्रमें इसकी जड़ें खोदी जातीहैं। उनमें कुछ मसाले मिला, अर्क निकालके पिलानेसे अजीर्ण मिटताहै (११) इसका क्काथ पिलानेसे प्रतिश्याय (जुकाम) मिटताहै (१२) ज्वरमें पसीने लानेकेलिये रोहिसा और चाइको बराबरले औटाके पिलाना चाहिये (१३) हाथ पैरोंकी शून्यता मिटानेकेलिये इसके तेलका मर्दन उत्तेजकहै।

संख्या (७५१)

(सं०) रोहीतकः, रोही, प्लीहशत्रुः, दाडिमपुष्पकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रोहिड़ा	रोहेड़ा	रोहिडो	रक्तरोहिडा	रोढा, रयना	रुहेड़ा	मुलुमोदुगचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	यरडमलु-मुत्तलु			Tecoma undulata Bignonia undulata	

स्थान—रोहेडेके वृक्ष सिन्ध, पंजाब, गुजरात, खानदेश, कानपुर और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष बहुत बडा नहीं होताहै। प्रायः १०—१५ फुट ऊंचा होताहै। परन्तु जो जमीन इसको मानतीहै, वहां खात और जल आदि इसको भली भांति दिया जावे तो यह ३०—४० फुट ऊंचा बढ जाताहै। तब इसकी पेड़की ऊंचाई १२—१५ फुट और गुलाई ५—८ फुटकी होजातीहै। इसकी छाल चौथाईसे आध इंच मोटी, कुछ ललाई युक्त, भूरे या धुधले सफेद रंगकी और खरदरी होतीहै। इसकी डालियोंके अन्तके भाग जमीनकी ओर झुके रहतेहैं। इसकी नवीन डालिया सफेद रंगकी होतीहैं। इसके पत्ते बहुधा एक दूसरेके सामने लगतेहैं, ये रूप और आकारमें बहुत पलटते रहतेहैं, इन पर बहुत छोटे २ रूंए होतेहैं, पुराने पत्ते कुछ खरदरे हो जातेहैं। छोटी शाखाओंके अन्तमें विना सुगंधवाले, चमकीले और नारंजी रंगके १५ २० अच्छे बड़े पुष्प लगतेहैं। इसके ६ से ८ इंच लम्बी, मुडी हुई फलिया लगतीहैं। इसके

पत्ते सबके सब नहीं गिरतेहै। पोष और माहमें इसके नवीन पत्ते आतेहै इसके एक प्रकारका भूरा गोंद लगताहै।

फूलने फलने का समय—फागुन और चैत्रमें यह भूरा फूल जाता है; वैशाखसे अषाढ तक इसके फल पक जातेहै।

प्रयोग—(१) रोहेड़ा—चरपरा, स्निग्ध, कषेला, कडवा, सारक और शीतलहै (२) इसकी छोटी टहनियोंकी छालका काथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै। (३) रक्तष्ठीवी सन्निपात (जिसको मारवाडी भाषामें गुजराती रोग कहतेहैं) मिटाने वाली औषधियोंमें इसकी छाल मिलाई जातीहै। (४) इसकी और हरड़की छालके गौमूत्रकी भावना देकर उनके चूर्णकी फकी देनेसे तिल्ली आदि उदरके रोग मिटतेहै (५) इसकी छालका घी बनाकर खानेसे तिल्ली मिटती है (६) इसकी जड़के कल्कमें मधु और मिश्री मिलाकर खानेसे श्वेत और रक्त दोनों प्रकारके प्रदर मिटतेहै।

संख्या (४५४)

(सं०) लकुचः, स्थूलस्कंध, क्षुद्रपनसः, डहुः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बंडहर	बंडहर(ल)	लकुच	क्षुद्रफणस	डहुयागाछ	बंडहल	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Artocarpus Lakoocha	

स्थान—बडहरके वृक्ष कमाऊ, सिक्कम, पूर्वी बङ्गाल, पश्चिमीघाट और सीलोन आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ५०—६० फुट होतीहै। इसकी छोटी पेड़की गुलाई बड़ी होतीहै, इसकी छाल आध इंच मोटी हल्के या धुंधले सफेद रंगकी और खरदरी होतीहै, उसमें नालियें या दरारें नहीं होतीहैं। इसकी छोटी डालियों और पत्तोंके नीचे कोमल भूरे रंगके रूए होतेहै। पत्तोंके

ऊपरका भाग चिकना होताहै, इसका फल बेडोल और कुछ गोल होताहै, यह पकनेपर पीले रंगका हो जाता है। इसकी मध्य रेखा ३-४ इंचकी होती है।

फूलने फलने का समय—फागुनमें इसके पुष्प लगतेहै।

प्रयोग—(१) इसका कच्चा फल—उष्ण, पचनेमें भारी, अफारा पैदा करनेवाला, वीर्य्य और अग्निका नाश करनेवाला, और नेत्रोंको हानिकारक है। (२) इसका पका हुआ फल—मधुर, खट्टा, रोचक, हृप्य, अग्निवर्द्धक विष्टंभी और वात पित्त नाशकहै और कफ और अग्निको बढ़ाताहै यह खानेके काममें आताहै। इसकी छालको सुपारीकी ठौर खातेहैं। इसके फल का शाक बनातेहैं। इसकी जड़ और लकडीमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै॥

संख्या (४५५)

(सं०) लज्जालुः, रक्तपादी, शमीपत्रा, संकोचनी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलंगी
कजालू	लजालू लज्जावती	रिशामणी	लाजाळू सकोरणा	लाजुकलता	छुईमुई	अण गुदामर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लौटिन	अंग्रेजी
तोहाम्बाटि	मुट्टिदमुत्तिग			Mimosa pudica M sensitum	The sensitive plant

स्थान—लज्जालूके छोटे-बूटे हिन्दुस्थानके उष्ण प्रदेशोंमें होतेहैं। ये दक्षिण हिन्दुस्थानके कुछ भागोंमें सड़कके किनारे बहुत होतेहैं अर्थात् खेतके खेत लगे रहतेहै॥

प्रयोग—(१) लजालू—शीतल, कड़वी, कपेली, और चरपरी होतीहै (२) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पथरी गलजातीहै (३) इसके पचांगके तोले भर तक चूर्णको दूधमें पिलानेसे अर्श मिटतेहै (४) इसकी जड़को घिसके लेप करनेसे नासूर मिटताहै (५) यह सूजन को बिखेरतीहै, रुधिरको शुद्ध करतीहै, और पित्तके रोगोंको मिटातीहै (६) नासूर पर इसके रसका लेप क-

रतेहैं (७) किसी विशेष समयमें इसका संग्रह करना चाहिये और इसके प्रयोगभी विशेष रीति और युक्तिसे करने चाहियें। इसके प्रयोगके पहिले सप्ताहमें ज्वर और सब प्रकारके पित्तविकार मिटतेहै। दूसरे सप्ताहमें अर्श और कामला आदि रोग मिटतेहैं। तीसरे सप्ताहमें कोढ़, फोलें और उपदंश आदि रोग मिटतेहै (८) इसके पत्तोंका लेप करनेसे मूत्रातिसार मिटताहै। (९) इसकी जड़को गलेमें बांधनेसे खांसी मिटतीहै (१०) इसके पत्तोंके रसमें कपड़ेको भिगोके नासूर पर पट्टी बांधनी चाहिये (११) इसका रस पिलानेसे अपचि और गंडमाला मिटतीहै (१२) लज्जालू और आसगंधकी जड़ पीसके लेप करनेसे स्तनोंका ढीलापन मिटताहै।

संख्या (४५६)

(सं०) लवंगं, ग्रहणीहरं, देवकुसुमं, श्रीसंज्ञम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लोंग	लोंग	लवींग	लवंग	लवंग	लोंग	लवंगमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
लवग किराम्ब	लवग	करनफल	मेखक	Caryophyllus aramaticus Lngenia caryophyllala	Cloves

स्थान—लोंग पहिले मुलका टापूमें पैदा होतेथे, अब हिन्दुस्थानके दक्षिणके भागमें बोये जाने लगे है। लोंगके वृक्षके हरेक भागमेंसे तेल निकलताहै। भभकेमें लोंगोंका अर्क निकालनेसे उसके साथ इनका सुगंधित तेल निकलजाताहै। उसका कुछ पीला रंग होताहै, उसमें लोंगों जैसा स्वाद और वैसी ही बहुत तीक्ष्ण सुगंध होतीहै। १०० तोले लोंगोंमें १६ से २० तोले तक तेल निकलताहै।

प्रयोग (१) लवंग-चरपरा, कडवा, शीतल, दीपन, पाचन, रोचक रस और विपाकमें मधुर, स्निग्ध, तीक्ष्ण, उष्ण और पचनेमें लघु है (२) सवा रती लोंग और सवा रती जुलाफा की गोली बनाके देनेसे बद्धकोष्ठ

मिटताहै (३) लौंगको पीस मिश्रीकी चाशनीमें मिलाके चटानेसे गर्भवती स्त्री की रीती होवक मिटतीहै (४) लौंगोंको ठण्डे पानीमें पीसके पिलानेसे तृषा मिटतीहै (५) लौंग और चिरायता दोनों बराबर ले ठण्डे पानीमें पीसके पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै और ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै (६) इसमें दालचीनीका चूर्ण बुरकाके पीनेसे पाचनशक्ति बढतीहै और साधारण निर्बलता मिटतीहै (७) लौंगका तेल गठिया की पीड़ा पर लगाया जाताहै (८) यह तेल ललाट पर लगानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (९) इसको दांत के लगानेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१०) लौंग उष्ण और रूक्षहैं (११) इनको जलमें पीस गर्मकर ललाट और कनपटियों पर लेप करनेसे मस्तककी स्नायुपीड़ा मिटतीहै (१२) इनको मुखमें रखनेसे मुख और श्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (१३) लौंग, आककी चोफुली और काले नोंनकी गोली बना मुखके मुखमें चूसनेसे श्वास तथा श्वास नलिका सम्बन्धी रोग मिटते हैं (१४) लौंग, दालचीनी और मिश्रीकी फकी देनेसे पाचनशक्ति बढतीहै (१५) लौंगको मुखमें रखनेसे बहुत चिकना कफ छूटने लग जाताहै (१६) इनसे शरीरकी शिथिलता मिटतीहै (१७) ताम्बेके पात्रमें लौंगको पीस मधु मिलाके अंजन करनेसे नेत्रके श्वेत भागके रोग मिटतेहैं (१८) इनको ठण्डे पानीमें घोट छान बूरा डालके पिलानेसे हृदयकी दाह मिटतीहै (१९) इनको दीपककी लोयमें सेककर या जलाकर खानेसे गलेकी दाह मिटतीहै (२०) इनको सेककर या इनकी भस्म मधुके साथ चटानेसे कुत्ताखांसी मिटतीहै (२१) बहुतसे लौंग एक साथ खानेसे जिह्वाकी स्वादशक्ति नष्ट हो जातीहै (२२) दो लौंग और ४ रत्ती अफीमको पानीके साथ पीस गर्मकर ललाट पर लेप करनेसे नजलेकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२३) लौंग और हल्दीका लेप करनेसे गुहांजनी मिटतीहै (२४) लौंग और हरडके काथ पर सेंधानमक बुरकाके पिलानेसे अजीर्ण मिटताहै और विरेच होताहै (२५) इनको पानीके साथ पीस छान निवाये करके पिलानेसे तृषा और जीमचलाना मिटताहै (२६) इनको पीसकर तालू पर लेप करनेसे प्रतिश्याय मिटताहै (२७) लौंगऔर हल्दीको पीसके लगानेसे नासूर मिटताहै।

संख्या (४५७)

(सं०) लवली, सुगन्धमूला, स्कंधफला, कोमलवल्कला

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	हरफारेवड़ी	खाटीआमली	हरपररेवड़ा	नोयाल फल	हरफारेवड़ी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Phyllanthus distichus Cicca disticha	

स्थान—इसके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थानके बागोंमें बहुत लगाये जातेहैं।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—यह एक छोटा सुंदर वृक्षहै इसके पत्ते कसौंदीके पत्तोंके जैसे होतेहैं। उष्णकालके प्रारम्भमें इसके छोटे २ बहुतसे लाल रंगके पुष्प आने लगतेहैं, उनके पीछे गिरदार फल लगतेहैं। इसके फल गूलरके फलकी जैसे डालीके चिपे रहतेहैं उनका स्वाद खट्टा होताहै।

प्रयोग—(१) इसके फल ग्राही, कषैले, रोचक, खट्टे, कडवे, रूक्ष, विशद, सुगंधयुक्त, मीठे और पचनेमें हल्केहैं। कफपित्त, वातपित्त, शर्कराश्मरी और अर्शको मिटातेहैं (२) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की देनेसे या क्वाथ करके पीनेसे या इसके बीजोंके चूर्णकी फक्की देनेसे तीव्र विरेचन लगताहै (३) इसके कच्चे और पके फल खानेके काममें आतेहैं। इनका अचार और मुरब्बा बनाया जाताहै।

संख्या (४५८)

(सं०) लशुन, महौषध, रसोनकः, महाकन्दः

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लसण	लहशन	लसण	लसन	लशुन, लसन	थोम	वेल्लुल्लि

द्राविड़ी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वल्लुल्लि	वेलुल्लि	सूम	सीर	Allium Sativum	Garlic

स्थान—लहशन हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) लहशन स्निग्ध, उष्ण, वृष्य, बल्य, रोचक, पाचन, सारक, रस और विपाकमें चरपरा, तीक्ष्ण, मधुर, पचनेमें भारी, पिच्छल और वातनाशकहै (२) इसके बीजोंमेंसे साफ, सफेद और पारदर्शक तेल निकलताहै (३) लहशनको भी दबाकर तेल निकालतेहैं उस तेलके मर्दनसे शरीर उत्तेजित होजाताहै (४) शीतज्वरके शीतको मिटानेके लिये इसके तेलकी मात्रा देतेहैं (५) इसका लेप करनेसे चमडी लाल हो जातीहै (६) इसके संयोगसे बेर २ आनेवाला ज्वर छूटताहै (७) लहशनका मुरब्बा खिलानेसे गठिया मिटतीहै (८) इसके अर्कका कानके बाहिर लेप करनेसे बहिरापन और कानकी पीडा मिटतीहै (९) मूत्राशयकी निर्बलतासे पैदाहुई मूत्रकी रुकावटको मिटानेके लिये इसका पुल्टिस बांधतेहैं (१०) इसको कूट भभकेमें डाल के इसका तेल निकालतेहैं उसको साफ करनेसे उसमें कोई रंग नहीं रहताहै। लहशन में जितने गुणहैं वे सब इस तेलकेहैं (११) लहशन खानेवाले शरीरमेंसे निकलनेवाले पसीने आदि हरेक मलमें उसकी गंध आने लगतीहै (१२) इसको सिरकेमें भिगोकर खानेसे दुखते हुए गलेकी ढीली पडी हुई रगोंका संकोच होजाताहै और शब्द वाहिनी नाडियोंका ढीलापन मिटजाताहै (१३) श्वास रोगवालेको लहशन बहुत लाभदायकहै (१४) इसकी चटनी बनाके खानेसे शूल युक्त अफारा मिटताहै (१५) गठिया और स्नायुपीडा होनेसे बचनेकेलिये वादीकी प्रकृतिवालेको शीतकालमें लहशन खिलाना चाहिये (१६) छाला उठाने केलिये इसका पुल्टिस बहुत देरतक बांधे रहतेहैं (१७) इसके खानेसे कई प्रकारकी मंदाग्नि मिटतीहै (१८) कांदेके जैसे यहभी शरीरके स्वास्थ्यको ठीक रखताहै (१९) यह खांसीको अवश्य मिटाताहै (२०) राईके तेलमें इसको तलकर उस तेलके लगानेसे खुजली मिटतीहै (२१) जिस फोडेमें कीडे पड जातेहैं उस पर यह तेल लगाया जाताहै (२२) चोट और मुरड पर इसका रस और नोंन लगातेहैं या लहशनकी गुलीको नोंनके साथ पीस पुल्टिस बनाके बांधतेहैं (२३) लहशनके पास सांप नहीं आताहै (२४) इसका पुल्टिस बांधनेसे गठिया मिटतीहै (२५) बच्चेकी छाती पर इसका तेल मर्दन करनेसे खांसी मिटतीहै (२६) इसकी एक दो गुलीको सवा तोले

तिल्लीके तेलमें तल कर उसकी एक दो बूंदें कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता है (२७) चढे हुए या लटके हुए कागपर इसका अर्क लगातेहै (२८) कुत्ता धांसीवाले बालकको इसकी छिली हुई गुलियोंकी माला करके पहिनातेहैं (२९) श्वासवालेको उष्ण जलके साथ इसका रस पिलातेहैं (३०) इसका लगातार खाते रहना गठियावालेको लाभकारीहै (३१) नारियलके या राईके तेलमें इसकी गुलियोंको तल कर उसका मर्दन करनेसे खुजली या कृमि सम्बन्धी त्वचाके रोग मिटतेहै (३२) इसका रस लगानेसे जूं और लीखें मरतीहै (३३) इसकी गुलीको धो पीस कनपटी पर लगानेसे आधाशीशी और दूसरे प्रकारके मस्तकरोग मिटतेहै (३४) इसके तेलका मर्दन करनेसे गठिया और त्वचाकी शून्यता मिटतीहै (३५) इसकी धूनीसे भिड भाग जातेहै (३६) इसका पाक बनाके खानेसे लकवा मिटताहै (३७) लहशन और नोन पीसके दंशपर लगानेसे विच्छूका विष उतरताहै (३८) इसके खानेसे वायुशूलकी पीड़ा मिटतीहै (३९) जिह्वाका रसाज्ञानमें लहशन आदि तेज औषधिया चबानी चाहिये (४०) बहुत लहशन खानेसे पागल कुत्तेका और सर्पका विष उतरताहै (४१) जोंकके डंक पकजाने पर इसको पीसके लगाना चाहिये (४२) लहशनको सिरकेमें पीसके कुत्तेके दंशपर लगानेसे उसका विष उतरताहै (४३) सूखा लहशन और अमचूर पीसके मलनेसे विच्छूका विष उतरताहै (४४) लहशनके एक तोले रसमें गायका एक तोला घी मिलाकर पिलानेसे आमवात मिटतीहै (४५) इसके कल्कको तलके साथ खानेसे अर्दित वायु और विषम ज्वर मिटताहै (४६) इसके कल्क और स्वरससे सिद्ध किये हुए तेलका सेवन करनेसे वातके रोग मिटतेहैं (४७) इसको पीसके लेप करनेसे विद्रधी मिटतीहै।

संख्या (४५६)

(सं०) लाक्षा, अलक्तः, द्रुमामयः, जतुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लाख	लाख	लाख	लाख	लाहा, गाला	लाख	लक, लेका

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
अरक	अरगु			Coccus lacca	Lac

स्थान—हिन्दुस्थानमें ४०-४५ वृक्षोंके लाख लगतीहै।

प्रयोग-(१) लाख—शीतल, स्निग्ध, कुपेली, पचनेमें हल्की और कड़वी, होतीहै। शरीरकी कान्ति और बलको बढातीहै। कफ, वातरक्त, हिचकी, कास, ज्वर, उरःक्षत, व्रण, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, विष, रक्तविकार, विषमज्वर, शोथ, नासारोग, त्वग्दोष, दाह और कफ पित्तको मिटातीहै और टूटी हुई हड्डीको जोडतीहै (२) यह कई प्रकारके तेल बनानेकी औषधियोंमें मिलाई जातीहै (३) यकृत् रोग, जलंधर और फोडे आदिकेलिये इसका प्रयोग किया जाताहै (४) नारूकी सूजन मिटानेकेलिये लाख और देशी साबुनको पीसगर्म करके लेप करना चाहिये (५) लाख और शकरकी फकी देनेसे कफके साथ रुधिरका आना और मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का निकलना बन्ध होजाताहै (६) लाखके चूर्णको मधु और दूधमें मिलाके पिलानेसे रक्तपित्त मिटताहै (७) लाखके चूर्णको घृतके साथ चाटनेसे रक्तप्रदर मिटताहै (८) घी, मधु और दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे शोष रोगसे पैदा हुई वमन मिटतीहै (९) दूधके साथ इसकी नस्य लेनेसे हिचकी मिटतीहै (१०) बकरीके दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे रक्तपित्त मिटताहै (११) लाख, हरड और नीलका लेप करनेसे पादंदारी मिटतीहै (१२) इसका पानी बना उसमें मधु मिलाकर पिलानेसे रुधिरकी वमन बन्द होतीहै। लाख रंगतके काममें आतीहै।

संख्या (४६०)

(सं०) लामज्जकं, इष्टिकापथिकं, अवदाहेष्टम्, दीर्घमूलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लामज्जक	पीलोनालो	पीलोनाळो	पीतवाळा	लामज्ज-कतृण		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		इजखर	गोरग्याह	Audropogon laniger A Iwerancusa	The Juncus odoratus & Herba schoenanthi of Pharmacists.

स्थान—लामज्जकके पेड़ हिमालयके नीचेके भाग, संयुक्तप्रदेश, पंजाब, और सिन्धमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) लामज्जक–शीतल, कड़वा, मीठा, पाचक, स्तंभन और और पचनेमें हल्का होताहै। त्रिदोष, त्वग्दोष, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह, रक्तपित्त, तृषा, श्रम, मूर्छा, ज्वर, शूल, वमन, व्रण, विष और विसर्पको मिटाताहै (२) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका हिम या फांट पिलातेहैं (३) इसका क्वाथ पिलानेसे खांसी मिटतीहै (४) बच्चोंकी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (५) इसका क्वाथ उत्तेजकहै और पसीना लाके छोड़े जाड़ोंकी पीड़ा और गठियाको मिटाताहै और ज्वरको उतारताहै (६) चंदनके साथ इसका लेप करनेसे दाह मिटताहै।

संख्या (४६१)

(सं०) लोध्रः, गालवः, रोध्रः, तिरीटः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लोद	लोध	कोदर	लोध्रवृक्ष	लोधगाछ	लोधर	लोद्दुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	लोध्र			Symplocas racemosa S nervosa	The lodh or lode tree

स्थान—लोधके वृक्ष–बङ्गाल और आसाम आदि देशोंके जङ्गल और छोटे पहाड़ोंमें, कासिया पहाड़, सिकम, नैपाल और पश्चिमी घाटमें होतेहैं।

पहिचान—इसकी ऊचाई २० फुट होतीहै। इसकी छाल खरदरी, बहुत छिद्र युक्त और सफेद रंगकी होतीहै। इसके पत्ते ३ से ६ इंच लम्बे अण्डे

के आकारके और कंगूरेदार होतेहैं। इसके सुगन्ध युक्त पीले पुष्प लगतेहैं। इसके प्रायः आध इंच लम्बा गोल फल लगताहै इसकी कठोर गुठलीमें एकसे तीन तक खाने और उनमें एक या दो बीज होतेहैं। इसके फल पक कर बैंजनी-रंगके हो जातेहैं। इसकी छाल और पत्तों मेंसे रंग निकालतेहैं।

फूलने फलने का समय—आसोजसे मार्गशीर्ष तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं और वैशाखमें फल लगतेहैं।

प्रयोग—(१) लोद ग्राही, पचनेमें हल्की, शीतल और कफघ्नीहै (२) यह आतोंकी शिकायत, नेत्ररोग और फोड़ोंके काममें आतीहै (३) इसके क्वाथके कुल्ले करनेसे मसूढ़ोंका ढीलापन मिटताहै और उनमेंसे रुधिर का बहना बन्ध हो जाताहै (४) दिनमें दो तीन वेर ४, ५ दिन तक सवा सवा मासे लोदकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे गर्भाशय की शिथिलतासे पैदा हुआ रक्तप्रदर मिटताहै (५) कलाओं (झिल्लियों) के ढीलेपनको मिटानेके लिये लोद बहुत उपकारीहै (६) इसके चूर्णको घीके साथ गर्म कर उसका सेक करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं (७) आठवें महीनेमें गर्भ गिरनेके उपद्रवको मिटाने के लिये लोद और पीपलके चूर्णको सहतमें चटाना या दूधके साथ फकी देना चाहिये (८) इसके कल्कका लेप करनेसे स्तनोंकी पीडा मिटतीहै (९) लोद, जीरा और भुनी हुई फिटकड़ीको पीस, ग्वारपाठेके गूदेमें मिला, कपडेमें पाटली बांध उसको पानीमें भिगो भिगो के नेत्रों पर फेरनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै (१०) इसके चूर्णको कानमें बुरकानेसे उसका बहना बन्द होताहै।

संख्या (४६२)

(सं०) पट्टिकालोध्रः, क्रमुकः, बृहद्दलः, शीर्णपत्रः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पठाणी लोद	पठानी लोद	पठाणी लोदर	पट्टी लोध	पट्टियालोध	पठानीलोद्र	वेल्ललोद्दुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	चिक्कीलोध्र			Symplocos crataegoides	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हसीलुब नुलजावी	हसनलब्बा	Styrax Benzoin	Benzoin tree

स्थान—लोबानके वृक्ष मलाया, आर्चीपिलेगोमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) श्वास और राजयक्ष्मा रोगमें लोबान बहुत उपकारीहै (२) इसकी धूनी निगलनेसे श्वास और राजयक्ष्मा रोग मिटतेहैं (३) ३॥ रतीसे २। मासे तक लोबान देनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (४) इसका लेप उत्तेजक है (५) यह दूषित वायुका असर नहीं होने देताहै (६) इसकी धूनीसे हवा शुद्ध होतीहै (७) इसके प्रयोगसे मूत्राशयकी सूजन उतरतीहै (८) इसकी धूनीसे मूर्छा मिटतीहै (९) इसका पाक बनाके खानेसे उदरका बल और पाचनशक्ति बढ़तीहै, जो इसके पाकको खट्टा करना हो तो उसमें नींबूका रस जितना चाहिये उतना डाल देवें (१०) लोबानको पीसके मालिश करने और तपानेसे सर्दीकी वातपीड़ा मिटतीहै (११) १०० तोले लोबानमें से १४ से १८ तोले तक लोबानके फूल निकलतेहैं।

संख्या (४६५)

(सं०) लोह, अय, शस्त्रक, कालायस ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लोह	लोह	लोढु	लोखंड	लोहा	लोहा	इनमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
इरुम्बु	कब्बिण	हदीद	आहन	Ferrum	Iron

हिन्दुस्थानमें लोह नईप्रकारका होताहै इसमें सबमें उत्तम कान्त लोह होताहै, उससे नीचे तीक्ष्ण होताहै, औषधिके प्रयोगमें बहुधा तीक्ष्ण लोह काम आताहै।

इसके शुद्ध करनेकी रीतिः—१६ तोले त्रिफलेको, आठ गुणे जलमें औटा, चौथाई रह जाने पर उसको, छान २४ तोले तीक्ष्ण लोहके पतले २ पत्रों को अग्निमें लाल कर २ के उसमें ७ वेर बुझाना चाहिये।

लोहभस्म बनानेकी रीति (१) उक्त प्रकारसे शुद्ध किये हुए लोहे का चूर तीन भाग, शुद्ध पारा एक भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, इन सबमें पाहिले पारे और गंधककी कजली कर, उसमें लोह चूर मिलाकर, ग्वाँरपाठेके रससे दो पहर तक खरल कर, तांबेके पात्रमें भर, उस पर एरंडके पत्ते बांधकर धूपमें रख देवें, जब वह अच्छा उष्ण होजावे तब उसको धानकी राशीमें ३ दिन तक गाड देवे, चौथे दिन निकाल कर काममें लावे। इस प्रकारसे बहुत उत्तम लोह भस्म बन जाती है। इस भस्मको सोमामृत लोहभस्म कहते हैं (२) लोहके चूरको ७ वेर दाडिमके पत्तोंके रसमें खरल करके धूपमें सुखा दिया करे। फिर उसके गज पुटकी आंच देके स्वांग शीतल होने पर निकाल फिर उसीके रसमें उक्त प्रकारसे आंच देवे जबतक कज्जल जैसा महीन न होवे तबतक पुट दिया करे, और खरल किया करे। इसीप्रकारसे बहुतसी औषधियोंके पुट और आंच देनेसे लोहभस्ममें कई रोगोंको नाश करनेकी शक्ति होजाती है। शुद्ध लोहसारके गुण—यह कृमि रोग, पाण्डु, वायु, वीर्यकी क्षीणता, पित्त-विकार, शरीरका मोटापन, अर्शरोग, संग्रहणी, कफ, शोथ, प्रमेह, गुल्म, प्लीह, विष, आमवात, कुष्ठ केशोंकी सफेदी, शरीरकी चमडीमें सल पड़ जाना, वातरक्त, कामला और क्षय आदि रोगोंको मिटाताहै, बल, पुरुषार्थ और दृष्टिको बढाताहै और रसायनहै॥

प्रयोग—(१) अशुद्ध लोहके सेवनसे नपुंसकता, कुष्ठ, हृद्रोग, शूल, अश्मरी, हृल्लास आदि बहुतसे रोग उत्पन्न होतेहैं। इससे एक प्रकारका मद होजाताहै। शरीर निर्बल और हृदय में रोग पैदा होने लगजातेहैं (२) थोडी औषधिसे अथवा थोडे पुटोंसे अथवा गंधक और पारेके बिना भस्म करनेसे जो लोह कच्चा रहजाताहै उसके सेवन करनेसे आयुर्दाका नाश होताहै (३) इसके सेवनसे जो उपद्रव होतेहैं उनको मिटानेकेलिये अगस्तके रसमें वायविडिंगको पीसके चटाना और उसी रसका लेप शरीर पर करके बहुत देरतक धूपमें बिठा रखना चाहिये (४) लोह भस्म सेवन करनेवालेको पेठा

कोहला, तिलोंका तेल, उडद, राई, मदिरा, खटाई, मच्छी, वृन्ताक, करेले आदि पदार्थ नहीं खाने चाहिये और कसरत नही करनी चाहिये (५) हींग और घृतके साथ लोहसार देनेसे शूल मिटतीहै (६) मधु और पीपल के साथ देनेसे पुराना ज्वर छूटताहै (७) घृत और लहशनके साथ इसकी भस्मका सेवन करनेसे वादी मिटतीहै (८) सोंठ, मिरच, पीपल और मधु के साथमें चटानेसे श्वास मिटताहै (९) कालीमिरचके साथ पानमें रखकर खानेसे ठंढका लगना बन्ध होजाताहै (१०) त्रिफला और मिश्रीके साथ फकी लेनेसे प्रमेह मिटताहै (११) अद्रकके रस और मधुके साथ चटानेसे खांसी मिटतीहै (१२) घीके साथ चटानेसे वादी मिटतीहै (१३) मधुके साथ चटानेसे पित्त मिटताहै (१४) अद्रकके रसके साथ चटानेसे पित्त और कफ मिटताहै (१५) निर्गुंडीके रसके साथ लेनेसे शीत और वात मिटतीहै (१६) सोंठके साथ लेनेसे वादी मिटतीहै (१७) मिश्रीके साथ लेनेसे पित्त मिटताहै (१८) तज, पत्रज, इलायची और पीपलके साथ चटानेसे कफ मिटताहै (१९) त्रिफलाके साथ देनेसे सन्धिगत रोग मिटतेहैं (२०) वली और पलित रोगको मिटानेकेलिये त्रिफलेके साथ देना चाहिये (२१) पारे और गंधककी कजली पीपल और मधुके साथ चटानेसे कफ रोग मिटतेहैं (२२) मिश्री और चातुर्जातकके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै (२३) साटेकी जड़के चूर्णके साथ फकी देकर गायका दूध पिलानेसे बल बढताहै (२४) साटेके रसके साथ चटानेसे पाडुरोग मिटताहै (२५) हलदी, पीपल और मधुके साथ चटानेसे २० प्रकारके प्रमेह मिटतेहै (२६) शिलाजीतके साथ चटानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२७) अडूसा, पीपल, मुनक्का और मधुके साथ चटानेसे ५ प्रकारके कास मिटतेहैं (२८) मंदाग्नि मिटानेकेलिये पानमें रखकर खाना चाहिये (२९) मधु और घृतके साथ चटानेसे पाण्डु और कामला मिटताहै (३०) इसकी और नागरमोथेके चूर्णकी खैरके काथके साथ फकी लेनेसे हलीमक रोग मिटताहै (३१) खदिरसारके साथ इसकी नस्य लेने से नकसीर बन्ध होतीहै (३२) इसको सात राततक गोमूत्रमें भिगो, सुखाके दूधके साथ देनेसे पांडुरोग मिटताहै (३३) इसको मधुके साथ चाटनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३४) लोहा बुझाया हुआ पानी पीनेसे आंतों के घाव भरते है और उदरका बल बढताहै (३५) लोहे की अंगूठी बनाकर पहिरनेसे पथरी मिटतीहै ॥

संख्या (४६६)

(सं०) मंडूरं, लोहकिट्टं, शिंघाणं, लोहमलं, सिंहाणम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कीटी, मडूर	मडूर	लोढानु किट्ट	लोह कीट	मडूर	लोहेका मैल	चिट्टमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
किट्ट	लोहकिट्ट			Ferri peroxidum	Rust or impure red oxide of iron Iron rust

लोहेको तीचण अग्निमें धौंकने से जो उसमेंसे एक प्रकारका पदार्थ (कीट) निकलताहै उसको मडूर कहतेहैं। यह जिस प्रकारके लोहेमेंसे निकला हो उसमें वैसेही, गुण होतहै। जो भारी, चिकना, ठोस तोडनेपर अंजन जैसा और जिसमें बहुत गड्ढे न हों वह उत्तम मडूर गिना जाताहै। कमसे कम १०० वर्षका पुराना मडूर औषधिके प्रयोगके काममें लाना चाहिये, लोहेसे निकाले पीछे जो ८० वर्ष तक पृथ्वीमें पड़ा रहा हो वह मध्यमें गिना जाता है और साठ वर्षका अधम गिना जाताहै। साठसे कम वर्षोंका मंडूर विष तुल्य गिना जाताहै।

(१) इसको शुद्ध और भस्म करनेकी यह रीतिहै कि १०० या सौसे अधिक वर्षोंका मंडूर लेकर उसको बहेडेकी लकड़ीके कोयलोंमें लालकर गोमूत्रमें बुझावे, ऐसे सात वेर बुझानेके पीछे उसको महीन पीस उससे दुगुने त्रिफलेको आठ गुने जलमें औटा चौथाई रह जाने पर उसको छान, उस क्वाथ में मडूर को खरल कर, टिकिया बना, सुखा, सराव संपुटमें कपड मिट्टीसे बन्ध कर, गजपुट की आचमें फूंक देना चाहिये। फिर स्वांगशीतल होने के पीछे उसको निकालके देखना चाहिये जो वह टिकिया कठोर हो तो फिर उसी रसमें खरलकर उक्त रीतिसे आच देना चाहिये, जबतक वह टिकिया चुकटीसे पिसनेके लायक नहीं हो जाय तबतक उक्त रीतिसे आच देते रहना चाहिये (२) मंडूरको महीन पीस लोहेकी कढाईमें डाल, आठ गुने गो मूत्रमें पचावे, जब वह गोमूत्र सूख जाय तब उसको महीन पीसकर फिर वैसेही

उक्त गोमूत्रमें पचावे, ऐसे सात वेर पचानेके पीछे उसकी टिकिया बनाकर गजपुटकी आंचमें जला लेवे, यह जबतक चुकटीसे पिसने लायक न हो तब तक उक्त रीतिसे आंच देते रहना चाहिये।

प्रयोग—(१) यह–कपेला और शीतल होताहै पांडु, शोथ, हलीमक, कामला और कुम्भ कामला को मिटाताहै (२) गोमूत्रमें पचाकर भस्म किये हुए मंडूरको गुडके साथ देनेसे पांडुरोग मिटताहै (३) घी और मधुके साथ इसका सेवन करने से पांडु, शोथ और मंदाग्नि मिटतीहै (४) प्रथम रीतिसे बनाये हुए मंडूरको मधुके साथ चटाने से कुम्भकामला और पांडुरोग मिटताहै (५) मृत्तिका के पात्रमें भैंसके मूत्रमें एक महीनेतक मडूर को पडा रखकर गजपुटमें उसकी भस्म बनाकर मधुके साथ सेवन करनेसे गलगण्ड मिटताहै।



संख्या (४६७)

(सं०.)-वङ्ग, रङ्ग, त्रपु, पिच्चटम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वग, कथीर	राग, रागा	कलई, कथीर	कथिल	रागा, राङ्	रागा	वंगमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
वग	तगर	रिसास अर्नियज	अरजीज्	Stannum	Tin

स्थान—वंग–हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंसे निकलताहै।

पहिचान—वंग दो प्रकार का होताहै। एक खनिज और दूसरा मिश्रक। इनमें खनिज श्रेष्ठ है इसका दूसरा नाम खुरकहै। यह सफेद, कोमल, स्निग्ध, जल्दी गलनेवाला, भारी और निःशब्द अर्थात् इसको मरोडने या कूटनेसे शब्द नहीं होताहै। मिश्रकका कुछ नीला रंग होताहै।

यह—तिक्त, लौणिया सारक, पतला करनेवाला और कुछ पित्त बढानेवाला होताहै। पाण्डुरोग कृमिरोग और वादीको मिटाताहै।

इसको शोधनेकी-पहिली रीति--वंग को गला २ के तेल, छाछ, कांजी, गोमूत्र, कुलित्थके क्वाथ और आकड़ेके दूधमें तीन २ बेर बुझाना चाहिये, और जो एक २ पदार्थमें सात २ बेर बुझाया जावे तो बहुतही उत्तमहै। दूसरी रीति-अथवा सम्भालूके रसमें हल्दी डाल उसमें तीन बेर बुझाना चाहिये। इसको शुद्ध करनेकी और भी कई रीतेंहै परन्तु विस्तारके भयसे नहीं लिखी।

वंग भस्म करनेकी रीति-(१) शुद्ध वंगको मिट्टीके खप्पर (ठीकरे) में चूल्हे पर चढा के गलावे। पीछे इसका चतुर्थांश अपामार्ग के पंचाग का चूर्ण लेके उसमें थोडा २ डालता जाय और नीमके घोटेसे घोटता जाय और खप्परके नीचे तीव्र अग्नि बनी रक्खे। जब घोटते २ उस सबकी भस्म होजाय तब चूल्हेमें से लकड़ियां निकालके चूल्हेमें अग्नि रहने देवे और खप्परको ऊपरही पडा रक्खे जब वह स्वाग शीतल होजाय तब उसको खप्परमेंसे निकाल, उष्ण जलसे धो डाले जिसमे अपामार्ग और नीमकी भस्म उसमेंसे निकल जावे और केवल वंग भस्म उसमें रह जावे। इसमें रहस्य यह है कि जिस रोगको मिटाना हो उस रोगको मिटानेवाली औषधियोंसे वंग भस्म बनावे अथवा ५, १० रोग मिटानेवाली औषधियोंसे वंग भस्म बनावे तो वह वंग भस्म उन रोगोंको अवश्य मिटावेगी। पीछे इस भस्मको आवश्यकरोगकी औषधिके रस अथवा क्वाथमें खरल कर टिकिया बना सुखा शरावसम्पुटमें कपड़ मिट्टीसे बन्धकर गजपुटकी आच देवे जब बिलकुल ठण्ढा होजाय तब निकाल कर उक्त रीति से केवल एक औषधिके अथवा जितनी औषधियोंसे जलाया हो, उन सबके रस या क्वाथ मे खरल कर, उक्त रीति से २५ आच दे कर खरल करके धर रक्खे। इस वंग भस्मसे बालकसे वृद्धतक कभी किसीके कोई विकार नहीं होगा।

रीति—(२) वंगके पतले २ पत्र कराके उनके छोटे २ टुकडे कतर मिट्टीके तवेपर आवश्यक औषधिको बिछा उसपर उन टुकडोंको कुछ कुछ चोडे बिखेर उन पर उसी औषधिका एक अगुलका तह देदेना चाहिये, ऐसे आवश्यकताके अनुसार उनके ५, ६ तह लगा गज भर ओंडे पौन गजमें जंगली कंडे भर, उन पर उस तवको रखकर उसके ऊपर फिर कंडे लगाके आग

लगादेवे जब वह स्वाग शीतल होजावे, तब ऊपरके कंडोंकी थानीको हटा उस तवेको निकालके, उसमें जो वंगकी कतरण जलकर फूली जैसी होजातीहै उसको उस औषधिकी वानीमेंसे निकालकर फिर उसके उक्त रीतिसे गजपुट के २५, ३० आच देनेमे बडी उत्तम भस्म होजातीहै इसको वनानेके पीछे कमसे कम एक वर्ष पाहिले नहीं खाना चाहिये। वंग भस्म वनानेकी और भी कई रीतियां है ॥

प्रयोग और गुण—(१) यह कास, श्वास, गुल्म, पीनस, प्रमेह, भ्रम, कफ, क्षय, पाण्डु, शूल, वमन, प्रदर, कृमि, मन्दाग्नि आदि अनेक रोगों को पृथक् पृथक् अनुपानो से मिटाती है (२) कपूरके साथ मुखकी दुर्गंध मिटातीहै (३) जायफलके साथ शरीरको पुष्ट करतीहै (४) तुलसीके साथ प्रमेहको मिटातीहै (५) घृतके साथ पाण्डु रोगको० (६) सोहागेके साथ गुल्मको० (७) हल्दीके साथ ऊर्ध्वश्वास और रक्तपित्तको० (८) मिश्रीके साथ पित्तको० (९) पीपलके साथ मन्दाग्निको० (१०) चम्पाके स्वरसके साथ श्वासकी दुर्गधको० (११) नीबूके रसके साथ देहकी दाहको० (१२) सुपारीके साथ अजीर्णको० (१३) मक्खनके साथ हड्डीकी निर्बलताको० (१४) दूधके साथ वीर्य्यकी कमीको० (१५) विजियाके साथ वीर्यके जल्दी निकल जानेको० (१६) लहशनके साथ वादीकी पीडाको० (१७) समुद्रफल अथवा निर्गुडीके साथ कुष्ठको० (१८) लौंगकी टोपियोंके साथ वमन को० (१९) गिलोयके स्वरस और मधुके साथ सब प्रकारके प्रमेहको मिटातीहै (२०) ब्राह्मीके साथ बुद्धिको बढ़ातीहै (२१) कस्तूरीके साथ वीर्यको बढ़ातीहै (२२) मधुके साथ बल बढ़ातीहै ॥

संख्या (४६८)

(सं०) वचा, शतपर्विका, षड्ग्रन्था, उग्रगन्धा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वच	सफेदवच	घोडा वज	वेखंड	वच	वच	वस, वस

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वशम्बु	वजे	वज	अगरेतुर्की	Acorus calamus	The sweet flag.

स्थान—वचके पेड़ हिन्दुस्थान में गीली और दल २ की जगहमें बोये जातेहैं विशेष करके मनीपुर और नागा हिल्समें बहुधा खेतोंकी बाड़ोंपर होतीहै।

पहिचान—इसके पत्तोंमें से एक प्रकारका तेल निकालतेहैं उसको बाजोंके मसालेमें डालतेहैं। इसकी जड़को ओटानेसे उसमेंसे गहरे पीले रंगका तेल निकलताहै उसमें इसकी जड़ जैसी तीव्रगंध आतीहै, उसका स्वाद चरपरा, कड़वा और कपूर जैसा होताहै।

प्रयोग—(१) वच-कड़वी, चरपरी, उष्ण, वामक, दीपन, रोचक और बुद्धिवर्द्धकहै (२) इसके चूर्णकी थोडी मात्रा देनेसे पेटकी पीड़ा और अफारा मिटताहै (३) अर्शकी पीडा मिटानेके लिये वच, भांग और अजवान इन तीनोंको बराबर लेके इनकी धूनी देतेहैं (४) बच्चोंके आमातिसार में वच बहुत उपकारीहै (५) २॥ तोले वचको ३५ तोले जलमें ओटा छान उसमें से २॥, २॥ तोले काथ दिनमें तीनवेर पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (६) ऐसेही इसका हिम या फांट बनाके ढाई २ तोले दिनमें तीन बेर पिलानेसे पेटका अफारा और शूल मिटतीहै (७) वचको पानीमें घिसके पिलानेसे बच्चोंके जुकामकी खासी मिटतीहै (८) इसको मुखमें रखनेसे एक प्रकारकी उष्णता प्रतीत होतीहै और मुखमें बहुतसा पानी छूट जाताहै (९) इसको चिरायतेके साथ ओटाकर पिलानेसे बार २ आनेवाला ज्वर छूटताहै (१०) इसके कपड़छान किये हुए ५ रती चूर्णको निवाये दूधमें डाल के पिलानेसे चीठा कफ ढीला पड़ जाताहै और गलेका दर्द मिट जाताहै (११) इसकी जड़ को जो कूट कर काथ बनाके २॥ या ३॥ तोलेकी मात्रा पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१२) मंदाग्नि मिटानेवाली औषधियों के साथ इसको मिलाके देनेसे भूख बढतीहै (१३) वमन करानेके लिये वचके २ से ७॥ मासे चूर्णकी मात्रा देनी चाहिये (१४) श्वास रोग मिटानेके लिये पहिले इसकी एकसे सवा मासे तक मात्रा देनी चाहिये, फिर पांच पाच रतीकी

मात्रा हर दूसरे तीसरे घंटेमें देनी चाहिये (१५) बचेको, माके दूधमें, बच घिसके पिलानेसे उसका कफ और ज्वर मिटताहै (१६) जुकामकी खांसी और ज्वरको मिटानेके लिये एक भाग वचको २० भाग पानीमें ओटाके या भिगोके देना चाहिये, इसमें मुलहठी मिला देनेसे अधिक लाभ होताहै (१७) बच्चोंका शूल युक्त अफारा मिटानेके लिये पेटपर बचका लेप करतेहैं (१८) वचके कोयलेको एरंडके तेल या खोपरेके तेलमें पीसके बच्चेके पेटपर लेप करनेसे शूल युक्त अफारा मिटताहै (१९) वचको कुछ जला पीस उसकी एक रतीसे ५ रती तक मात्रा देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै और बल बढताहै (२०) इसको सेकी हुई हींगके साथ देनेसे पेटके कीड़े निकल जातेहैं (२१) इसके हिम, फांट या क्वाथको छिडकनेसे उस जगहके कीड़े भग जातेहैं (२२) इसके कोयलेकी १० रती भस्मको पानीमें घोल कर पिलानेसे जमालगोटेका असर मिट जाताहै इसलिये इसको जमालगोटेका दर्पनाशक कहतेहैं (२३) इसके चूर्णकी सवा मासेसे २॥ मासे तककी मात्राहै (२४) २॥ तोले वचको २५ तोले पानीमें ओटाके उसकी २॥ तोलेसे ५ तोले तककी मात्रा देनेसे पेटकी शूल और अफारा मिटताहै और कीडे मर जातेहैं (२५) इसको ऊनी कपडोंमें रखनेसे कीडे नहीं लगतेहैं (२६) इसकी राख पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटताहै (२७) इसको काजूगुलीके तेलमें पीसके लेप करनेसे गठिया और चोटकी सूजन मिटतीहै (२८) इसकी २॥ रती तककी मात्रा उत्तेजकहै (२९) ललाटपर इसका लेप करनेसे मस्तककी पीड़ा मिटतीहै (३०) नाकपर मालिश करनेसे जुकामकी खांसी और उससे पैदा होनेवाला तीव्र ज्वर रुक जाताहै (३१) कई प्रकारके ज्वर छुडानेके लिये इसको कुनैनके साथ देतेहैं (३२) आमाजीर्णवालेको उल्टी करानेके लिये उष्ण जलमें नमक और वचका चूर्ण डालके पिलाना चाहिये (३३) १० मासे वचका पाक बूरेके साथ पाक बनाके नित्य तोला भर खानेसे भूलरोग मिटताहै (३४) वच और सोंठके बराबर चूर्णको मधुमें मिला नित्य दोनो वक्त एक२ तोले चटानेसे अर्दित रोग मिटाताहै, इसके सेवनके समय शहदका पानी पिलाना चाहिये (३५) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे पुराना अपस्मार मिटाताहै (३६) इसके और पीपलके चूर्णको मधु या नीमके तेलके साथ सुंघानेसे, गलगंडादि

रोग मिटतेहै (३७) वच और पीपलके चूर्णको सुंघानेसे सूर्यावर्त्त मिटताहै (३८) बालक होनेके पीछे गर्भाशयकी पीडा मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलातेहैं (३९) वच, हरड और घृतकी धूप देनेसे विषमज्वर छूटताहै (४०) इसके चूर्णको कांजीके साथ पिलानेसे वमन बन्ध हो जातीहै (४१) इसको और सरसोंको पीसकर लेप करनेसे सोई उतरतीहै (४२) इसके चूर्णकी वस्त्रमें पोटली बांधकर सुंघानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (४३) घृत, दूध या जलके साथ एक महीने तक वचके चूर्णका सेवन करनेसे मनुष्यकी धारणाशक्ति बहुत बढ़ जातीहै ।

संख्या (४६६)

(सं०) वटः, न्यग्रोधः, जटालः, विटपी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बड़	बड़, बर	बड़	वट, वड़	वड़गाछ	बरगद	मर्रि, (र्रीर) पाल्लु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
आल पाल	आलदमर			Ficus bengalensis	The banyan tree

स्थान—बड़का वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर होताहै ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ७० से १०० फुटतक होतीहै। इसकी पेड़की साधारण गुलाई २५, ३० फुटकी, होतीहै । इसके घेरकी मध्य रेखा २०० से ३०० फुटतक होतीहै इसकी शाखें बहुत फैलतीहै-उनमेंसे बहुतसी पतली जटा निकलके जमीनतक पहुंच जातीहै वेही समय पाकर पेड़ बनजातीहैं । इसकी डालीके अन्तमें दोनों ओर बारी २ से पत्ते लगतेहैं । इसके फलकी मध्य रेखा आध इचकी होतीहै। फल साफ रूपदार और पकनेपर लाल रंग का होजाताहै । फाल्गुन चैत्रमें इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके फल पकजातेहैं ।

प्रयोग—(१) बड़—शीतल, ग्राही, मधुर, रूक्ष, पचनेमें भारी और

कपेलाहै (२) इसका दूध पीड़ा और चोटपर लगाया जाताहै (३) गठिया की सूजनपर इसका लेप करनेसे पीड़ा मिटतीहै (४) इसकी छालका काथ पीनेसे वल वढताहै और मधु प्रमेह मिटताहै (५) पैरकी पगथली फट जानेपर इसका दूध लगाना चाहिये (६) दांत और मसूड़ोंके रोगोंमें बडकी छालके काथके कुल्ले कराने चाहिये (७) वडका दूध लगानेसे डाढकी पीड़ा मिटतीहै (८) इसके बीज ठंढे और वल वढानेवालेहैं (९) इसके पत्तोंका पुल्टिस बनाके पीपदार फोडोंपर बाधना चाहिये। जब वे फोडे पककर पीले पडजावें तब इसके पत्तोंको चावलोंके साथ ओटाके वफारा देना चाहिये (१०) इसकी जडकी छालको पीस ठंढाईकी रीतपर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) इसकी नरम डालियोंका फांट पिलानेसे रक्तकी वमन वन्ध होतीहै (१२) इसकी जटाके अंकुरोंको घोट छानके पिलानेसे औषधिको नहीं माननेवाली वमन मिटतीहै (१३) इसके काथ या रसको गाढा कर उसमें पुष्टाईकी औषधियां मिलाके खिलानेसे वीर्यकी क्षीणता और मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१४) इसकी कची कलियें ग्राही है और अतिसार मिटताहै (१५) आमातिसार मिटानेकेलिये वडका दूध ३ मासे प्रातःकाल पिलाना चाहिये (१६) इसके दूधका लेप करनेसे कमरकी पीडा मिटतीहै (१७) इसका दूध दो बतासेमें नित्य भरकर तीन दिनतक प्रातःकाल खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१८) इसकी कोमल कोंपलोंको छायामें सुखा, पीस उसमें बराबर बूरा मिलाकर दूधकी लस्सीके साथ नित्य प्रातःकाल फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१९) कंठमालापर वडका दूध लगाना चाहिये (२०) इसकी छालका चूर्ण दांतोंके नीचे रखनेसे दंतपीडा मिटतीहै (२१) इसके फलोंको छायामें सुखा पीस गायके दूधके साथ फकी लेनेसे वीर्य गाढा होजाताहै (२२) इसके पत्तोंको जला उस भस्मको पानमें रखकर खानेसे उपदंश मिटताहै (२३) इसकी कोंपलोंको गायके दहीके साथ पीसकर अग्निदग्ध पर लगाना चाहिये (२४) इसका दूध बिवाईमें भरनेसे उसका घाव भर जाताहै (२५) इसके दूधमें सांपकी कांचलीकी राख मिला उसमें रूई भिगो कर उसको नासूरमें १० दिन रखनेसे व्रण भरजाताहै (२६) इसके पत्तो के कल्कमें मधु और शक्कर मिलाके खानेसे रक्त पित्त मिटता है

(२७) इसका दूध नेत्रमें भरनेसे जाला दूर होजाताहै (२८) इसका दूध नाभिमें भरने और उसके आस पास लगानेसे अतिसार मिटताहै (२९) इसकी जटाकी राख खिलानेसे वमन वन्ध होताहै (३०) इसकी कोंपले और गूलरकी छालके चूर्णमें बराबर बूरा मिलाकर एक तोलेकी फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे वीर्यका पतलापन मिटताहै।

संख्या (४७०)

(सं०) वटपत्री, गोधावती, ऐरावती, श्यामा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	बड़वती	वड़वती	वटपत्री	पातरकुचा	वटपत्री	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंगरेजी
				Zizyphus Z. trinervia	

स्थान—वटपत्रीके वृक्ष बंगाल, भूटान और पश्चिम मायद्वीपमें होतेहैं।

प्रयोग—(१) यह—कपेली, उष्ण, मधुर और बलकारकहै। योनी और मूत्रके रोग, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पथरी, मूत्राघात और भगंदरको मिटातीहै (२) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे उपदंश सम्बन्धी पुराने रोग मिटतेहैं (३) शरीरको पोषण करनेवाले दूषित पदार्थोंके सेवनसे जो शरीरकी प्रकृति बिगड़ जातीहै उस दशामें रुधिर शुद्ध करनेकेलिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलातेहैं।

संख्या (४७१)

(सं०) वंदाकः, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वादा	वदा	बादो	बांदागुल	बॉंदड़ा	वादा	वदनिक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शाखळाशि,	वदनिके			Loranthus longifolius L. bicolor	

स्थान—वन्दाकका वृक्ष जम्बूसे भूटानतक, गंगाजीके जंगलोंमें अवध से आसामतक, और दक्षिणकी ओर ट्रावनकोर और सीलोनतक होतेहैं।

पहिचान—इसके मोटे पत्ते बहुधा एक दूसरेके सामने लगतेहैं। वे आकार और स्वरूपमें बहुत बदल जातेहैं। इसके डेढ दो इंच लम्बे बड़े पुष्पोंका नीचेका भाग लाल और ऊपरका हरा होताहै। इसके फल तिहाईसे आधे इंच लम्बे और गिरदार होतेहैं और उनकी गुठलीके चारों ओर गाढा चेपदार पदार्थ लगा रहताहै।

फूलने फलनेका समय—इसके बहुधा कार्तीसे जेठतक पुष्प लगा करतेहैं, परन्तु कई ठौर बारह महीने ही पुष्प लगा करतेहैं। इसके, वृक्ष तीन प्रकारके होतेहैं। "अकैकिया" महुवा, कचनार, चारोली (चिरौंजी) तेंदू "फीकस" कपीत्था, आम, नीम, बकाइन, शहतूत "भूनस" सेव, नासपाती, मांजूफल, "राद लेरा" आदि दूसरे कई वृक्षोंपर उगतेहैं। जब कोई पखेरू इसके फलकी गुठलीको निगलकर किसी वृक्षके ऊपर बीट करता है उस बीट में वह गुठली निकलके उस वृक्षके चिपक जातीहै तब वहीं इसका वृक्ष उगजाताहै। यह जिस वृक्षपर उगताहै उस वृक्षके सब रसको धीरे २ चूस लेताहै और उस वृक्षकी जिस शाखापर यह लगताहै, वह शाखा पहिले सूख जातीहै पीछे उसके पासकी दूसरी शाखा सूख जातीहै ऐसे क्रमसे सब शाखा सूखकर अन्तमें यह वृक्ष जडतक सूख जाताहै और उस सूखे पेड़की लकड़ी ईंधनके सिवाय और दूसरे काममें नहीं आतीहै।

गुण—(१) वंदाक—शीतल, कड़वा, कषेला, रसमें मीठा, ग्राही, वृष्य, रसायन, व्रणरोपण, तथा कफ, वात, पित्त, श्रम, रुधिरविकार और विषको हरनेवाला है (२) इस वृक्षकी एक जात जो (फैलकटा) होती है उसकी छाल सुपारीकी ठौर काममें आतीहै।

संख्या (४७२)

(सं०) वरुणः, कुमारकः, अश्मरीघ्नः, तिक्तशाकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बरणो	वरना, (णा)	वरणो	थायवरणा	वरुणगाछ	वरना	उलिमिरि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	उलिमिरिच मेल			Crataeva eligiosa Capparis trifoliata	

स्थान—वरणेके वृक्ष रावीके पूर्वकी ओर, आसामतक, मनी पुर, मध्य और दक्षिण-हिन्दुस्थान, बंगाल, बुंदेलखंड और राजपूताना आदि कई देशों में होतेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ३०, ४० फुट होतीहै इसके पेड़की गुलाई ६ फुट होतीहै। इसकी छाल धुंधले सफेद रंगकी साफ और चिकनी होतीहै। इसकी डालियोंके अन्तमें तीन २ पत्तोंकी सींकें लगतीहैं। इसके सफेद रंगके बड़े पुष्प लगतेहैं इसका फल सेवकी बराबर और गोल होताहै उसकी पीली गिरमें चौथाई इंच लम्बे बहुतसे बीज होतेहैं और उसका छिलका कठोर और खरदरा होताहै, उस पर कुछ सफेद बहुतसे दाग होतेहैं। जबतक इसके पुष्प निकलतेहैं तबतक पुराने पत्ते लगे रहतेहैं। इसके पुष्प निकलनेके साथ और उनके निकले पीछे तक नवीन पत्ते निकलते रहतेहैं।

फूलने-फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें यह वृक्ष फूलताहै।

प्रयोग—(१) वरना—कपैला, मधुर, कड़वा, चरपरा, रूक्ष, पचनेमें लघु, उष्ण, स्निग्ध, दीपन और भेदकहै (२) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे पैरोंके तलवोंकी दाह मिटतीहै और उष्ण करके लेप करनेसे पैरोंकी शोथ उतरतीहै (३) इसके पत्तोंके ६ मासेसे तीन तोले रसमें सुपारीके पत्तों का रस और घी मिलाके पिलानेसे गठिया मिटतीहै (४) इसके पत्तोंका धूंआं पेटमें पीके नाकके द्वारा निकालनेसे नाकके हाडका सड़ना या उस हाडका फोड़ा मिटजाताहै (५) इसके पत्ते और छालको पीस पोटलीमें बांध तपाकर सेकनेसे गठिया मिट

तीहै (६) इसकी पेदड या जड़की छालका काथ पिलानेसे शर्करारमरी मिटती (७) इसकी १० तोले छालको १५ छटांक जलमें ओटावें, जब १० छटां रह जाय, तब ठंढा हो जानेपर छान उसमेंसे ५ तोलेसे १० तोले तककी मात्र देनेसे मूत्रसम्बन्धी कई रोग मिटतेहै (८) इसके ताजे पत्तोंको सिरके, नीं के रस या उष्ण जलके साथ पीसके राईकी भांति लगानेसे, ५ से १५ मिन में पूरा असर होनेपर वहांकी चमड़ी लाल हो जातीहै और यह लेप अधिक समय तक चमड़ीपर लगा रहनेसे छाला होने लगजाताहै (९) इसकी जड़ की ताजी छालकाभी यही प्रभाव है (१०) इसकी छालके काथपर पीपल धुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (११) इसकी छाल और किरमालेकी गिर को ओटाके पीनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१२) इसके फल और छालका लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (१३) छालके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है (१४) रुधिरविकारके जिन २ रोगोंमें सारसपरेला काम आताहै उनमें यह भी काम आताहै (१५) इसकी जडके काथमें इसीका कल्क मिलाके पिलानेसे पथरी मिटतीहै (१६) इसकी छालके काथमें जवखार मिलाके पिलानेसे कफसे पैदा हुई पथरी मिटतीहै (१७) इसके काथमें गुड़ मिलाके पिलानेसे बस्ति शूल और पथरी मिटतीहै (१८) इसके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे गंडमाला मिटतीहै।

संख्या (४७३)

(सं०) वबुरः, युगलाक्ष ; कटालुः; पंक्तिबीजः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बल्यो, बवल	बबूर, बंबूल	बावळ	बाभूळ	बावुलागाछ	किकर	तुम्मचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वेलमार	गोब्बलि (लि	उम्मुगीला	मुगीला	Acacia arabica Mimosa a	Indian gum Arabic tree Acacia tree Babool tree

७ स्थान—बबूलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं और अपने आपभी उगतेहैं।

८ पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ४०, ६० फुटकी होतीहै। इसकी पेड़ १०, १५ फुट ऊंची और बहुत सीधी नहीं होतीहै उस पेड़की गुलाई ५, ६ फुटसे, १०, १२ फुटतक होतीहै। इसकी शाखें फैली हुई होतीहैं। इसकी छाल मोटी, धुंधले भूरे या प्रायः काले रंगकी होतीहै उसमें छोटी २ दरारें छालके आरपार निकलजातीहैं। इसकी डालियोंके आधेसे दो इंच लम्बी सीधी चिकनी बहुधा कुछ सफेद रंगकी और बहुधा चमकीले भूरे रंगकी अणीदार तीखी शूलोंके बहुतसे जोड़े लगतेहैं। इसके इमली जैसे २०, ३० पत्तोंके जोड़ एक सींकपर लगतेहैं। इसके सुनहरी पीले रंगके पुष्प गोल घुंडीके आकारके लगतेहैं पुष्प खिलने पर उसमें से महीन रूंए निकलके फैल जातेहैं। इसकी पातड़ी ६ इंच लम्बी, चपटी और खानेदार होतीहै, उसके हरेक खानेमें एक२ बीज होताहै। कची पातड़ीमें बहुत चेप निकलताहै और यह पकने पर सफेद रंगकी हो जातीहै। इसके सबके सब पत्ते कभी नहीं खिरतेहैं। फागुन और चैत्रमें नये पत्ते निकल आतेहैं। फागुन और चैत्रके महीनेमें इस वृक्षमेंसे सफेद और लाल गोंद निकलताहै उनमें लालको ठीक नहीं समझतेहैं।

९ प्रयोग—(१) बबूल कषैला, उष्ण, स्निग्ध, कड़वा, ग्राही, शीतल और कफनाशकहै, (२) इसके गोंदको घीमें तल उसका पाक बनाके प्रसूति स्त्रियोंको देनेसे बल बढ़ताहै और पुरुषोंको खिलानेसे वीर्य बढताहै (३) इसके गोंदका पानी पिलानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (४) इसकी पातड़ीकी छाल और बादामके छिलके की राखमें नमक मिला मंजन करने दांतों की पीड़ा मिटतीहै, (५) इसके गोंदके पानीको पिलानेसे और आंतोंका दर्द मिटताहै (६) इसके गोंदमें अफीम मिलाकर देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (७) इसके गोंदको पानीमें उसकी पिचकारी देनेसे मूत्राशयकी सूजन और सुजाककी जलन और पी जातीहै (८) इसकी छालके हिम या काथके कुल्ले करनेसे साधारण पारेका मुखपाक मसूड़ोंसे रुधिरका बहना और गलेकी पीड़ा नर्म पत्तोंको पीस रस निकाल कर आंखमें टपकानेसे अथवा

कर बांधनेसे आंखकी पीडा और सूजन मिटतीहै (१०) नर्म पत्तोंको शक्कर और काली मिरचके साथ अथवा अनारके पत्तोंके साथ पीस छानकर पिलानेसे सुजाक मिटताहै (११) कोमल पत्तोंको कालीमिरच और शक्करके साथ पीस छानके पिलानेसे आमाशयमें से रुधिरका बहना बन्द होताहै (१२) इसके कोमल पत्तोंको घीमें तलकर बांधनेसे आखोंकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (१३) इसकी छाल अत्यन्त शोषकहै (१४) इसकी छालके काथकी पिचकारी देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (१५) इसी काथमें फिटकड़ी डालके पिचकारी देनेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (१६) छालका काथ पिलाने और उसकी पिचकारी देनेसे श्वेत और रक्तप्रदर मिटताहै (१७) इसकी और आमके वृक्षकी छाल प्रत्येक ६-६ मासे लेकर ढाई पाव पानीमें आध घंटे ओटा छानके कुल्ले करानेसे पारेका मुखपाक मिटताहै (१८) छालके चूर्ण को बुरकानेसे होठोंके छाले और उपदंश मिटताहै और सर्पके दंश पर बुरकानेसे विष उतरताहै (१९) इसकी पातड़ियोंका चूर्ण शोषकहै और दस्त बन्द करताहै (२०) नवीन कोंपलोंके साथ अफीम मिलाकर खिलानेसे विशेषकर बच्चोंका अतिसार और आमातिसार मिटताहै (२१) इसके पत्ते और छाल और बडकी छालके हिमसे कुल्ले करनेसे गलेका रोग मिटताहै (२२) इसकी छालके काथसे धोनेसे निर्बलताके कारणसे गर्भाशय और कांचका बाहिर निकलना बन्द होताहै और गुदा और गर्भाशयके दूसरे रोग भी मिटतेहै (२३) इसके गोंदके सेवनसे मधुप्रमेह मिटताहै क्योंकि इसके गोंदकी शक्कर नहीं बनतीहै (२४) बंबूलकी छाल और बीजोंको जलाकर उसका मंजन करनेसे दांत दृढ होतेहैं (२५) पेट और आंतोंकी दाह मिटाने के लिये इसके गोंदका लेप पिलाना चाहिये (२६) छालके क्वाथके कुल्ले करनेसे दांतोंका सडना मिटताहै (२७) इसके ७॥ मासे कोमल पत्तोंको पीस छानकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२८) इसकी कोमल फलियों (पातडियों) मेंसे एक प्रकारका सार निकाला जाताहै वह भारी और कठोर होता है और "अकेकिया" के नामसे मिलताहै, उसकी सुगंध बहुत अच्छी होतीहै। इसके टुकडेमें होके रोशनीकी तरफ देखनेसे वह टुकडा बोतली नीले रंगकी दीखताहै और साबित काले रंगका दीखताहै (२९) कोमल पत्तोंको घीमें

तल, आंखके पपोटोंपर बांधनेसे आंखके श्वेत भागमें जो बहुत दिनोंसे रुधिर जमा हो विखर जाताहै (३०) इसकी कच्ची कलियोंको छायामें सुखा कूट छान, घीमें तल, शक्कर मिलाकर तोलेभर दोनों समय लेनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राशयके रोग मिटतेहै (३१) इसके गीले या सूखे काटे, आधसेर पानीमें ओटा, आधा रख, उसमें मधु मिलाके पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (३२) सेर पत्तोंको ४ सेर पानीमें ओटा चौथाई रख कर नित्य दोनों समय पलकों पर पतला २ लेप करनेसे वांफनीका गलना मिटताहै (३३) इसकी कोंपलोंको पीसकर पीने और मलनेसे मुखपाक मिटताहै (३४) इसकी कोंपलें, छाल, फलिया और गोंद, ये सब बराबर २ ले, कपड छानकर, उसमें बराबर बूरा मिला एक तोले प्रमाण नित्य फक्की लेनेसे वीर्यका पतलापन और स्वप्नदोष मिटताहै (३५) इसके पुष्पोंके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाकर एक तोलेकी फक्की नित्य लेनेसे पीलिया मिटताहै (३६) इसकी छालके काथसे उपदंशकी टाकीको धोना चाहिये (३७) इसकी छायामें सदैव बैठा रहनेसे शरीर दुबला होजाताहै (३८) इसके पत्ते, जीरे और स्याहजीरेको पीसके एक तोलेकी फक्की रात्रीके समय देनेसे कफातिसार मिटताहै (३९) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (४०) इसके पत्तोंको पीस मर्दन कर, फिर हरडके चूर्णका मर्दन करके स्नान करनेसे बहुत पसीना होना बन्ध होजाताहै (४१) इसके बीजोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे टूटी हुई हड्डी जुड जातीहै (४२) बीजोंके चूर्णको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे स्नायुक मिटताहै (४३) इसके १॥ मासे गोंदके चूर्णकी फक्की नित्य १० दिन तक लेनेसे अतिसार मिटताहै (४४) इसकी एक तोले कोंपल और एक तोले गोखरू इन दोनोंका चेप निकालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४५) इसकी २ तोले छालका हिम नित्य पीनेसे कुष्ठ मिटताहै (४६) इसके सूखे पत्तोंको पीसकर हाथ पैरों पर मलनेसे पुस्तवाय मिटतीहै (४७) इसका भुना हुआ गोंद साढे चार मासे और गेरू साढे चार मासे इनको पीसके प्रातःकाल फक्की देनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै (४८) इस चूर्णके सेवन करनेसे या उसका लेप करनेसे उपदंश मिटताहै ॥

संख्या (४७४)

(सं०) वंशः, वेणुः, त्वक्सारः, तृणध्वजः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बाम	बांस	वाश (स)	वेळू, बांबू	वास, बाश	बांस	वेदुरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मुंगिल	बिदेरु	कसब	नएकवीर	Bambusa arundinacea B orientalis	The spriny bamboo Bamboo cane

स्थान—यह बांस मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान संयुक्त प्रदेश और बङ्गालमें बहुत ठौर लगाया जाताहै।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ८०,९० फुटकी होतीहै। यह ३२ वर्षका होनेके पीछे इसके पुष्प लगतेहैं। एक वीडेमें १० से १०० तक बांस होतेहैं। इनके जोड़की गांठोंकी मध्य रेखा ४ से ६ इंचकी होतीहै, इसमें छोटा छिद्र होताहै, इसके दृढ, तीखे, मुड़वां एक एक या दो दो या तीन तीन कांटे लगते हैं उनमें डालीपर बीचका कांटा बड़ा होताहै। इसके पत्ते ४ से ८ इंच लम्बे, एक तिहाई से दो तिहाई इंच चौड़े पतले नोकदार ऊपरसे साफ और नीचेसे रूंएदार होतेहैं। विड़लेके एक साथ पुष्प आजातेहैं और पुष्पोंके साथ बहुधा थोड़े पत्तेभी निकलतेहैं। इस बांसमेंसे वंसलोचन निकलताहै।

प्रयोग—(१) यह सारक, मधुर, छेदन, कसैला कुछ कडवा, शीतल, और खट्टाहै (२) इसके पत्ते या कोंपलोंका क्वाथ पिलानेसे रजोधर्म यथोचित होने लगताहै (३) इसके कोमल पत्ते, काली मिरच और सांभरे नोंन को पीसके फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (४) इसकी कोमल कोंपलोंको पीसके फोडेपर पुल्टिस बांधनेसे उसके कीडे निकल जातेहैं परन्तु पहिले इसका थोड़ासा रस कीडोंपर डालकर पीछे पुल्टिस बांधना चाहिये (५) कोढ, ज्वर और रुधिरकी वमनमें यह बांस काममें आताहै (६) इसकी जड़का क्वाथ पिलानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (७) इसकी छालके क्वाथ में मधु मिलाके

पिलानेसे कोठेमें रक्तके भर जानेसे उत्पन्न हुई दाह मिटतीहै (८) अकाल पड़ जानेपर इसके बीज और अंकुरोंको गरीब लोग खानेके काममें लातेहैं।

संख्या (४७५)

(सं०) वंशभद्रः।

Latin	Daendrocalamus strictus	Bambusa stricta	The male bamboo

स्थान—यह बास हिन्दुस्थानमें सैयाओर होताहै विशेषकर उत्तर, मध्य-हिन्दुस्थान, आबू, बंगाल, और हिमालयकी तराईमें बहुत होताहै।

पहिचान—पंजाबमें यह बांस २०, ४० दक्षिण हिन्दुस्थनमें ३०, ५० ब्रह्माके सूके पहाडोंमें २०, ४०' और आर्द्र स्थानोंमें २१०० फुट ऊंचा बढ़ जाताहै। वर्षा ऋतुके प्रारम्भमें थोड़े सप्ताहमें इस बांसकी पेदड़ पूरी लम्बी बढ़ जातीहै, बैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकलतेहैं वे चमकीले हरे रंगके होतेहैं शीतकालमें इसके पुराने पत्ते पीले पड़ जातेहैं, आर्द्रभूमिमें जो इस जातिके बांस होतेहैं वे १२ महीने हरे रहतेहैं. इसकी टहनियां थोड़ी पोली या बिलकुल ठोस होतीहैं, इसकी पेदडके नीचेका भाग (बहुधा—कई भांतिसे मुड़ा हुआ होताहै) इसकी पुरानी डालियोंके पत्ते बहुधा गिरजातेहैं ऊपरकी डालियां चारों तर्फ फैली रहतीहैं, बहुधा नीची झुकी रहतीहै। इसकी फलियें एकसे डेढ फुट लम्बी होतीहैं उनकी मध्यरेखा २ से ३ इंच होतीहैं पत्ते दोनों ओरसे रूएदार और खरदरे होतेहैं, उनका आकार बहुत बदल जाताहै मझौले आकारके पत्ते ३ से ८ इंच लम्बे चौथाईसे एक इंच चौड़े होतेहैं हर वर्ष इसके हरेक बेड़में एक या थोड़े बांसों पर पुष्प आया करतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका प्रायः ५ तोले क्वाथ पिलानेसे बच्चा होनेके समय बहुत पीडा नहीं भोगनी पड़तीहै। इसके पत्तोंका १ तोले अर्क या चूर्णभी प्रायो इसी काममें आताहै (२) बांसकी गांठों या जोड़ोंके काथसे बच्चा होनेके समय बहुत दुख नहीं उठाना पड़ताहै. (३) इसके पत्तोंके चूर्णसे खांसी मिटतीहै (४) पत्तोंके काथसे स्नान करानेसे रोग छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै (५) गर्भाशयमेंसे आवलको निकालनेकेलिये इसके पत्तोंकी फकी देनी चाहिये।

संख्या (४७६)

(सं०) वंशरोचना, तुगाक्षीरी, वंशक्षीरी, वंशलोचना ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वशलोचन	वशलोचन	वशलोचन	वंशलोचनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वशलोचन	वशलोचना	तबाशीर	तबाशीर		Bamboomanna

बाजारमें दो प्रकारका वंशलोचन मिलताहै । एक सुनहरी झांईदार नीले रङ्गका और दूसरा सफेद रङ्गका, परन्तु ऐसा जान पड़ताहै कि यह पहिला ही सूख जाने पर सफेद हो जाताहै और इसको एक बेर जलमें डबोकर पीछा निकाल लेनेसे इसका रङ्ग वैसाही हो जाताहै जैसा कि ऊपर वर्णन कियाहै ।

प्रयोग—(१) वंशलोचन मधुर, शीतल, रूक्ष, कपेला, ग्राही, उत्तेजक, विषनाशक, वृष्य, बल्य और बृंहणहै । श्वास सम्बन्धीरोग तृषा, ज्वर, अर्द्धांग अफारा कामला और फेफड़ेके रोगोंको मिटाताहै (२) ज्वरमें तृषा मिटानेके लिये मधुके साथ इसको चटाना चाहिये (३) इसकी २॥ से १ मासे तककी मात्रा देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (४) मधुके साथ इसका लेप करनेसे मुखपाक मिटताहै (५) गोखरू, वशलोचन और मिश्रीके चूर्णकी फकी कच्चे दूधके साथ देनेसे मूत्रकी दाह मिटतीहै (६) साधारण विषको उतारनेके लिये इसको मधुके साथ चटाना चाहिये (७) पुराने ज्वरको मिटानेके लिये इसको गिलोयके काथके साथ देना चाहिये (८) इसको मधुके साथ चटानेसे बालकका श्वास कास मिटताहै (९) मधु और मिश्रीके साथ इसका सेवन करनेसे रक्तपित्त मिटताहै ।

संख्या (४७७)

(सं०) वसुकः, पाशुपतः, एकाष्ठीलः, वसुः, वकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सफेदवसु	रातीवसु	पादरीवसु	वामनागाछ		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					The red Nerinjy of Madras

स्थान— वसुकके वृक्ष हिन्दुस्थानके जङ्गलोंमें बहुत ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) यह कटु, तिक्त, उष्ण, दीपन और पाकमें शीतल होताहै । अजीर्ण, वात और गुल्मको मिटाताहै (२) इस वृक्षका रस मूत्रवर्द्धक है (३) इसके रसमें जल मिलाके गडूष करनेसे शीताद रोग मिटताहै (४) इसके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होके उपदंशके पुराने रोग मिट जातेहैं (५) श्वेतवसुक रसायनहै (६) इसके पत्ते बहुत रूक्ष होतेहैं। कफ, वायु, मदाग्नि, गुल्म, प्लीह और शूलरोगको मिटातेहैं ।

संख्या (४७८)

(सं०) वाकुची, अवल्गुजः, कालमेषी, कृष्णफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बावची	बावची वकुची	बापची बाबची	बावची	सोमराज हाकुच	बावची	बावचिविंत्तुलु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कार्पोहअरिशि		तुख्मरेहां	स्याहसफर	Psoralea corylifolia Trifolium unifolium	The purple fleabane

स्थान—बावचीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर होते हैं ।

इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) इसके बीज रूक्ष और उष्ण हैं कोई २ आचार्य्य इनको शीतल और रूक्ष मानतेहैं (२) ये सारक, उत्तेजक और पुरुषार्थ बढ़ानेवाले हैं (३) रक्तविकार से जो कुष्ठ और त्वचाके रोग होतेहैं उनको मिटानेके

लिये इसके केवल बीजोंकी या उनको मिटानेवाली दूसरी चीजोंके साथ फकी दी जातीहै या उनपर इसके बीजोंका लेप करतेहैं (४) इसके बीजोंकी फकी देके ऊपर चिरायतेका अर्क पिलानेसे ज्वर छूटताहै (५) इसकी फकी देके ऊपर नीमका रस और मध पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (६) इसके पत्ते और गिलोयको पानीमें भिगो मल छानकर पिलानेमें मूत्रवृद्धि होतीहै (७) अजवायनके अर्कके साथ बावचीकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (८) तिल्ली आदि अङ्गोंके बढावकी रुकावट मिटानेके लिये बावचीका प्रयोग अच्छाहै (९) बावचीके तेलको श्वेतकुष्ठ पर कुछ दिनों तक लगानेमें सफेद चट्ठ लाल हो जातेहैं। या उनपर फुन्सियां हो जातीहैं उनको वैसीकी वैसीही रहने देना चाहिये अर्थात् फोडना या मलना नहीं चाहिये, । वे सूखके काले दाग हो जातेहैं, और उनके आस पासकी ठौर, और वैसेही उन सफेद चट्ठोंके किनारे काले पडने लगतेहैं अन्तमें वे सब आपसमें मिल जातेहैं और तमाम सफेद चट्ठोंका रंग सादी चमडी जैसा हो जाताहै (१०) इसके लगानेसे ताजे चट्ठ बढनेसे रुक जातेहैं किसी २ के इस तेलका असर थोडे दिन तक ही रहताहै (११) इसके लेपसे पिटिका मिटतीहै (१२) बावची एक भाग, और नमक डेढ भाग ले कूटकर नित्य फकी लेनेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै, इसके सेवनके दिनोंमें चनेकी रोटीके सिवाय और कुछ नहीं खाना चाहिये (१३) बावचीको तीन दिन तक दहीमें भिगो सुखा आतसी शीशीमें उसका तेल निकाल उसमें थोड़ा नोसादर मिलाकर कुष्ठके दागको खुजला कर लगानेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै (१४) बावचीको २१ दिन तक उष्ण जलके साथ पीनेसे सफेद कुष्ठ मिटताहै परन्तु इसके सेवनके समय केवल दूध पीना चाहिये ।

संख्या (४७९)

(सं०) वाताम:, वातादः, नेत्रोपमफलं, वातवैरी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बिदाम	बदाम चादाम	बदाम	बदाम	बादाम	बादाम	बादामु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वादम	बदाम	लोज	बादाम	Prunus Amygdalus communis	Almond

स्थान—इसके वृक्ष काश्मीर, पंजाब, अफगानिस्थान, और पर्सिया में होतेहैं।

बादामकी कई जातेहैं उन हरेकके गुण लैटिन नामोंके नीचे पृथक् २ लिखतेहैं बादाम मीठे और कड़वे दो प्रकारके होतेहैं।

मीठे बादाम दो प्रकारके होतेहैं एक पतले छिलकेके उनको "कागजी" कहते हैं। दूसरे मोटे छिलकेके उनको "ठरड" बादाम कहतेहैं।

इसके वृक्षकी साधारण ऊंचाई होतीहै। इसके कोमल पत्ते हल्के हरे रंगके होतेहैं पूरे बढ जाने पर वे हल्के सफेद रंगके हो जातेहैं और पतझड़में गिर जातेहैं। ये कंगूरे दार और कुछ लम्बे होतेहैं इसके लाल छींटेदार सफेद पुष्प इकट्ठे या दो दो लगतेहैं। इसका फल मखमली या रूएदार होताहै, इसका छिलका सूखा होताहै और जब पक जाताहै उसको दूर करनेसे भीतर बादाम निकलताहै जो आंखके आकारका होताहै, उसमें खोखले सल और छोटे २ छेद होतेहैं उस छिलकेको फोड़नेसे इसमेंसे बादामकी गुली निकलतीहै।

इसकी गुलीमेंसे आधेसे कुछ कम तेल निकलताहै।

इसके तेलमें तिल्ली, खस खस और सरसोंका तेल मिला दिया करतेहैं। कड़वे बादामकी मींगीमेंसे तेल निकालके पीछे उसकी १०० तोले खल को केवल पानी तथा पानी और नमकमें डालके अर्क खेंचतेहैं इसमेंसे ६ मासे से तोले भर तेल तैरने लग जाताहै, यह तेल बहुत विष युक्त होताहै इसको काममें लानेमें बड़ी सावधानी रखनी चाहिये।

इत्र निकालनेमें बादामके तेलका भाता दिया जाताहै।

प्रयोग—(१) बादाम—उष्ण, स्निग्ध पचनेमें भारी, वातनाशक और वीर्यवर्द्धकहै (२) बादामके छिलकोंकी राखसे दांतोंका मंजन करतेहैं (३) मस्सों और मुंहके छालोंपर इसके कच्चे फलकी गुलीको पीसकर लेप करतेहैं (४) कड़वे बादाम कष्ट और साफ करनेवालेहैं और बहुतसे रोगोंमें खाने

और लगानेके काममें आतेहैं (५) बादामकी मींगीको सिरकेके साथ पीसके लगानेसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (६) इसके तेलसे कज्जल पाड़के अंजन करनेसे दृष्टि बलवान होतीहै (७) इसके प्रयोगसे मूत्राशयमें पथरी गल जातीहै (८) ये यकृत् और तिल्लीके रसके बढावकी रुकावटको मिटा देतेहैं (९) कडवे बादामको पीस शिर पर लेप करनेसे लीखें मरतीहैं (१०) इसकी बत्ती बनाके योनीमें रखनेसे मासिकधर्महोतेसमयकी पीड़ा मिट जातीहै (११) इसका पुल्टिस बांधनेसे फोड़ेकी खुजली और दाह मिटताहै (१२) छाले और खुजली मिटानेकेलिये, कडवे बादामको पीस कर लेप करतेहै (१३) इसकी जड़का लेप करनेसे सूजन बिखर जातीहै (१४) इसकी जड़का क्वाथ पीनेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै (१५) इस फलका रस शकरके साथ पिलानेसे खांसी मिटतीहै (१६) बादामोंको अंजीरके साथ खिलानेसे हलका विरेचन होताहै और आंतोंकी पीड़ा मिटतीहै (१७) बादामका पुराना तेल मलनेसे बाल गिरजातेहैं।

संख्या (४८०)

(सं०) बातामभेदः ॥ (६)

L. Canarium commune. Eng. Java almond.

स्थान—इस बादामके वृक्ष बंगालमें बोये जातेहैं।

(१) यन्त्रमें दबाकर इसके फलोंमेंसे आधा जमा हुआ तेल निकाला जाता है वह खोपरेके तेल जैसा दीखताहै और स्वादिष्ट होताहै।

(२) इसकी छालमेंसे बहुतसा निर्मल तेल निकलताहै, उसमें चरपरी सुगंध आतीहै और वह जमकर मक्खन जैसा होजाताहै इसके एक प्रकारका राल जैसा गोंद लगताहै।

प्रयोग—(१) शिथिल घावोंपर इसके गोंदका लेप कियाजाताहै (२) इसका तेल बादामके तेलकी ठौर काममें आसकताहै (३) औषधिकी चरपराहट कम करनेकेलिये उसमें बादामका तेल मिला देतेहैं (४) इसके ताजे फलोंको खानेसे या लगातार खाते रहनेसे अतिसारका रोग होजाताहै

(५) कई देशोंके मनुष्य इसके ताजे तेलको खानेके काममें लातेहै । इसके फलके आटेकी रोटी बनाई जातीहै ॥

संख्या (४८१)

(सं०) वातामभेदः (२)

Latin Hydnocarpus venenata H inebrians

स्थान—इस बादामके वृक्ष सीलोनमें नदियोंके किनारे और मलवार टिनेवल्ली, और ट्रावानकोरमें भी होतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै, वह मक्खन जैसा गाढा होताहै और चालमुगरेके तेलकी ठौर काममें आसकताहै (२) खुजलीके रोगोंमें और विशेष करके कोढपर इस तेलका मर्दन किया जाताहै (३) इसके बीजोंको खानेसे चक्कर आने लगतेहैं क्योंकि इनमें विषहै ।

संख्या (४८२)

(सं०) वातामभेद (३)

Latin Terminalia Catappa T Badamia Eng Indian almond

स्थान—इस बादामके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानसे सीलोन तक हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान—इसका ८० फुट ऊंचा बड़ा वृक्ष होताहै । इसके पत्ते पतझडकी ऋतुमें गिरजातेहैं । इसके एक प्रकारका धुंधले रङ्गका गोंद लगताहै, इसकी छाल और पत्तोंमें से रङ्ग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) यह बादाम नीरोगता बढानेवाला शरीर पुष्ट करनेवाला और स्वादिष्टहै (२) इसकी छाल ग्राही और संकोचकहै जैसे (४७६) संख्याके बादामकी मींगी और तेल काममें आतेहै वैसेही इसकी गुली और तेल काममें आते हैं (३) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (४) इस अर्कमें कालानोंन मिलाके पिलानेसे पेटकीशूल मिटतीहै (५) खुजली, कोढ और त्वचाके दूसरे रोगों पर लगानेके लिये इसके कोमल पत्तोंके स्वरससे

एक प्रकारका प्रलेप बनातेहैं (६) इसकी गुलीको सरसोंके तेलके साथ, पीसके लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (७) इस बादामकी गुलीका स्वाद, असली बादामकी गुली जैसा होताह । इसकी गुलीमें से आधा तेल निकलताहै वह स्वाद और रङ्गमें उक्त बादामके तेल जैसा होताहै, परन्तु यह तेल जल्दी नहीं बिगडताहै ।

संख्या (४८३)

(मं०) वनबादाम (४)

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अरंडकबिदाम	जंगलीबादाम	बदामकडव	रानबादाम		बादामकडवे	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		लोजसहराई	बादामदश्ती	Hydnocarpus Wightiana H. inebrians	

स्थान—इस जंगली-बादामके—वृक्ष—पश्चिम—मायद्वीपमें—कानकानमें—समुद्रके किनारे२ के पहाडोंमें होतेहैं । इसकी १०० तोले गिरीको यन्त्रमें दबानेसे अथवा पानीमें ओटानेसे ४२ तोले तेल निकलताहै यह तेल स्वादमें फीका और रङ्गमें सफेद होताहै ।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंको पीसकर लेप करनेसे त्वचा और नेत्रके रोग मिटते हैं (२) इसके कल्कको कपडे पर लगाके घाव और फोडों पर उसकी चकृतियें लगातेहैं (३) इसके तेलको बराबर मुगलाई एरंडका तेल, गंधक, कपूर और नींबूका रस मिलाके खुजलीकी फुन्सियों पर लगातेहैं (४) इसका तेल, चूनेका पानी मिलाके गर्म जल आदिसे जले हुए मस्तक पर लेप करतेहैं (५) कोढरोगवालेको दो मासे तेल पिलाना चाहिये (६) छिलके सहित एरंडके बीज पीस इस तेलमें मिला पामा पर लेप करतेहैं । इसके बीजोंमें औषधि सम्बन्धी जो गुणहैं वे सब इसके तेलके कारणसेहैं

(७)-इसका तेल गठिया, मोच, चोट, गृध्रसी, छातीके रोग, खैन, नेत्र और त्वचाके कई प्रकारके रोगोंमें काम आताहै (८) कोढ, त्वचासम्बन्धी रोग, सब शरीरमें फैले हुए उपदंशके रोग और पुरानी गठियामें इस तेलकी १५ बूंदोंसे ७॥ मासे तककी मात्रा देनी चाहिये। इस तेलका सेवन सावधानीसे करना चाहिये। क्योंकि इससे कभी २ आमाशय और आंतोंमें खुजली और दाह पैदा होके वमन और विरेचन होने लगजाताहै।



संख्या (४८४)

(सं०) वास्तूकं, क्षारपत्रं, वस्तुकं, शाकराजः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वथुवो	बथुवा	टाको, चील	चाकवत वठवा	वेतोशाक	बथुआ	चक्रवर्त्तीकूर

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
चक्रवर्त्तीकीरै	चक्रवर्त्ती-सोप्पु	कत्फ		Chenopodium album C viride	The white goose foot

स्थान—बथुवा हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें खेतोंमें बोया जाताहै और जो, गेहूंके खेतोंमें अपने आपभी उगताहै।

बथुवा दो प्रकारका होताहै एक बड़ा "नदबथुवा" बोया जाताहै, और दूसरा छोटा "चील बथुवा" जो गेहूंके खेतोंमें अपने आप उगताहै।

प्रयोग—(१) बथुवा—रोचक, दीपन, पाचन, पचनेमें हल्का, सारक सलौना, विष्टंभी, रसमें मधुर, स्निग्ध, विपाकमें भारी और कृमिनाशक है (२) तिल्ली और पित्तके रोगोंमें बथुवेका शाक बहुत उपकारीहै (३) बथुवेका अर्क निकाल उसमें नमक डालके पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं (४) बथुवेके स्वरसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) बथुवेका शाक खिलानेसे अर्श मिटताहै क्योंकि यह सारकहै (६) पेटके यंत्रोंके रसके बहावकी रुकावट मिटानेके लिये बथुवेके स्वरसमें कालीमिरच और नमक मिलाके पिलाना चाहिये (७) इसके १॥ तोले बीजोंको आधसेर पानीमें

ओटा आधा रत्ल छानके पिलानेसे बालक होनेके समय स्त्री कष्टसे छूट जाती है (८) इसके पत्ते और तमाखूके पुष्पोंको बांट घीमें मिलाकर लगानेसे नाडीव्रण मिट जाताहै (९) इसके बीजोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै (१०) गर्भ गिरनेके पीछे इसके बीजोंका क्वाथ पिलाना गुणदायक है (११) इसके पत्तोंका शाक, रायता आदि बनाके खानेके काम में लातेहै ।

संख्या (४८५)

(सं०) विकंकतः, स्रुवावृक्षः, ग्रन्थिल., व्याघ्रपात् ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	कंटाई	वहेकळ	गुलबोंटी	बोंचफल वइचिगाछ	कुकोया	मुलुवेलाम

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वक्लवेळग	मुल्लुब्याल			Flacourtia Ramontchi F. sopida	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके सूखे पहाडोंमें होतेहै ।

पहिचान—इसका बहुधा छोटा झाड़ होताहै परन्तु जो इसको खात जल आदि सावधानी से दिये जावे तो यह साधारण ऊचाई का वृक्ष होजाताहै । इसकी छोटी पेदडकी गुलाई ४,५ फुटकी होतीहै इसकी शाखें फैली हुई और कांटेदार होतीहैं।डालीके अन्तमें कांटे लगतेहैं।इसकी पेदडकी छाल हल्के या धुंधले, सफेद या प्रायः काले रङ्गकी और कुछ खरदरी होती है । इसकी डालियों पर पत्ते बारी२ से लगतेहै वे आकारमें कई भांतिके होते है और वे नीचेसे रूंएदार और ऊपरसे चिकने होतेहैं, इसके कुछ हरे पीले रङ्गके छोटे पुष्प लगतेहै । इसका आध इंच लम्बा फल धुंधले, लाल या काले रङ्गका होताहै इसमें ८ से १६ तक बीज दो तहमें होतेहै अर्थात् एकके ऊपर दूसरा तह होताहै । पौष और माघमें इसके पत्ते गिर जातेहैं और फागुनमें

नवीन पत्ते निकल आतेहैं परन्तु बहुधा जेठमें निकलतेहै, छोटे पत्ते पहिले लाल रङ्गके होतेहै परन्तु पीछे हल्के हरे रङ्गके हो जातेहै ।

फूलने फलनेका समय—यह वृक्ष कार्तिकसे फागुन तक फूलताहै इसके फल वैशाख ज्येष्ठमें पकतेहै ।

प्रयोग—(१) यह-अत्यन्त उष्ण, कषेला, शीतल, दीपन, पाचन, पचनेमें हलका और विपाकमें मधुरहै (२) शीतलाकी फुन्सियोंको नवें, दसवें दिन इसके कांटोंसे फोड़तेहैं (३) बच्चा होनेके पीछे जलयुक्त वायुके स्पर्शसे अथवा शीतल वायुके स्पर्शसे गठियाकी जो पीडा हो जातीहै उसको मिटाने के लिये इसके बीज और हल्दीको पीसके सब शरीर पर मर्दन करना चाहिये (४) विषूचिका मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें इसका गोंद मिलाके देना चाहिये (५) बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी और शिरप की छालको पीसके शरीरपर लेप करना चाहिये (६) इसका फल-मीठा, भूख लगानेवाला और पाचक है यह शाक खानेके काममें आताहै ।

संख्या (४८६)

(सं०) विजया, अजया, भृङ्गा, मातुलानी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भाग, बूटी	भाग, भग	भाग्य, भाग	भाग, गाजा	सिद्धि	भाग	भगि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कंजा	भगि	किन्नब	फल्कतान	Cannabis sativa C Indica	Hemp Indian hemp

स्थान—चरस, गांजा, पत्ती, बीज और तन्तुओंके लिये भंग-हिन्दुस्थान में सब ठौर थोड़ी या बहुत बोई जातीहैं और अपने आप भी उगतीहै।

पहिचान—इसके पके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै अर्थात् १०० तोले बीजोंको यंत्रमें दबानेसे २५ से ३४ तोले तक तेल निकलताहै उसका रङ्ग पहले कुछ हरा या भूरास लिये हुए पीला होताहै परन्तु, जब हवा लग

जातीहै तो उसका रङ्ग उक्त गहरे रङ्गका हो जाताहै। भंगका अर्क खेंचनेसे उसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै वह अर्कके ऊपर तैरता रहताहै उसमें भंगके जैसी सुगंध आतीहै और उसका रंग कहरुवे जैसा होताहै। कभी२ उस तेलमें कंदके जैसे छोटे२ बहुतसे टुकडे जम जातेहैं।

प्रयोग—(१) भंग–तीक्ष्ण, उष्ण, कडवी, ग्राही, पाचक, लघु, दीपन, रोचक और मोहकारकहै (२) धनुस्तंभ और विषूचिकामें इसका प्रयोग बहुत उपकारीहै। क्योंकि इससे अन्तमें न भूख बन्ध होतीहै और न बद्धकोष्ठ होताहै जैसे कि बहुधा अहिफेनकेप्रयोगसे हो जाताहै इसका असर भी वैसाही होताहै जैसा कि अहिफेनका०(३) भंगके पत्तोंकी सवामासेकी मात्रा देनेसे शरीरकी पीडा और बांइटे मिटतेहैं और मूत्रवृद्धि होतीहै (४) तीव्र आमातिसार मिटानेके लिये सोंफके अर्कके साथ भंगकी फकी देनी चाहिये (५) इसके ताजे पत्तोंका कल्क बना कुछ उष्ण कर आंखके ऊपर बांधनेसे आखकी पीडा और दीपक आदिकी ज्योतिका नहीं सहना मिट जाताहै (६) इसके पत्तोंको दूधमें रांधकर अर्श पर उनका पुल्टिस बांधतेहै (७) इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै (८)सेकीहुई भंगको धो, महीन पीसके मधुके साथ चटानेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (९) भंग और कालीमिरचके चूर्णकी गुडमें गोली बनाके देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (१०) इसकी अधिक मात्रा देनेसे पहिले चित्त कुछ प्रसन्न होता है पीछे सब इन्द्रियां शिथिल होजाती हैं (११) गांजेका लगातार बहुत समय तक सेवन करनेसे मनुष्य बहुधा विक्षिप्त होजाता है (१२) जिन दशाओंमें अहिफेन निद्रा नहीं ला सकताहै उन दशाओंमें भंगका प्रयोग बहुत अच्छाहै क्योंकि इसके प्रयोगसे हृल्लास, बद्धकोष्ठ और मस्तकपीड़ा नहीं होतीहै (१३) कफकी मस्तक पीडाको रोकनेके लिये भंगका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१४) तेज पागलपनकी बेचेनी, कुत्ताखांसी, श्वास, मूत्राघात और कष्टसे मासिकधर्म होनेमें इसका सेवन करनेसे बहुत लाभ होताहै (१५) इलायची और लोंग आदिके साथ भंगको पीसके चटानेसे शरीरकी पीडा मिटतीहै (१६) कालीमिरच और भंगके चूर्णको शहद-के साथ चटानेसे भूख बढतीहै (१७) पुरुषार्थ बढानेवाले कई पाक और गोलियोंमें यह एक मुख्य पदार्थहै (१८) यह मस्तिष्ककी शिथिलताको मिटातीहै मनके विचार

बढातीहै और ध्यानमें मन बहुत लगातीहै। इसके नशेमें यह दूषणहै कि कई तरहके विचार मनमें पैदा होतेहैं और मिटते जातेहैं और विना कारणही हँसी आजातीहैं (१९) बच्चोंका अतिसार और अजीर्ण मिटानेके लिये उनको मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें कुछ भंग मिला देनी चाहिये (२०) भंग के पत्तोंका सार निकालके औषधिके प्रयोग में लाना चाहिये (२१) श्वास और धनुस्तंभ मिटानेके लिये घीमें सेकीहुई एक रतीके अष्टमांशसे एक रती तक भंगमें कालीमिरच और मिश्री मिलाके देनी चाहिये (२२) आमातिसार और पुराने अतिसारको मिटानेके लिये भङ्ग और पोश्तके दानोंका प्रयोग करना चाहिये (२३) स्त्रियोंके आवेशके रोगमें हींगके साथ भङ्ग देना चाहिये (२४) इसके गीले पत्तोंका पुल्टिस अण्डकोशकी सूजनपर बांधना चाहिये और सूखी भङ्गको ओटाकर बफारा देना चाहिये (२५) आवेशके रोगोंमें यह बहुत काम देतीहै और पुरानी शूलको मिटातीहै। भंगका आध रती सूखा सार हींग के साथ देना चाहिये (२६) शीतज्वर मिटानेके लिये पीसीहुई मासेभर भंगकी दो मासे गुडमें चार गोली बनाकर ठंढ लगनेका प्रारम्भ होनेके पहिले दो २ घंटेके अंतरसे चारों गोलियोंको दे देना चाहिये (२७) जिसके मूत्र की रुकावट नहीं रहतीहै उसको भंगका पाक खिलाना चाहिये (२८) भंगको पानीमें घोट छान कर पिलानेसे वृक्क पर प्रभाव होनेसे मूत्रवृद्धि बहुत होतीहै (२९) इसकी सूखी कोमल टहनियों और पुष्पोंको शकर और कालीमिरच के साथ देनेसे आमातिसार मिटताहै यदि आवश्यकता होतो इसमें अहिफेन मिलाके देना चाहिये (३०) भंग और खीरेकी मींगीकी ठंढाई पीस छानके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३१) गांजा पीनेके व्यसनवाले मनुष्य बहुधा फुप्फुसके रोग, जलंधर और सर्वांग जलमय शोथ इत्यादि रोग होके मरतेहैं (३२) इसके पत्तोंको महीन पीसके सूंघनेसे मस्तिष्क साफ हो जाता (३३) इसके पत्तोंके स्वरसका लेप करनेसे मस्तककी भुस्सी (खोरी) मिट जातीहै और कीड़े मर जातेहैं (३४) इसके स्वरसको कानमें डालनेसे कीड़े मरतेहै और कानकी पीडा मिट जातीहै (३५) इसके पत्तोंके चूर्णको ताजे घाव और जख्म पर बुरकानेसे उनमें अंकुर जल्दी आने लगताहै (३६) स्नायुपीड़ा, पित्त शोथ और एक प्रकार की शोथ जो मुह पर होतीहै और

आस पास फैलती जातीहै उसपर भंगके पंचागका लेप करतेहैं (३७) भंगके पत्तोंकी मात्रा ३ मासे तक और आवश्यकतानुसार न्यूनाधिक भी दीजातीहै (३८) उत्तम गांजेके सारकी एक रत्तीकी मात्रा देनेसे मूत्रनालीमें पिचकी पथरीकी पीड़ाका होना मिटताहै (३९) इसके पत्तोंका अर्क गर्म करके कानमें डालनेसे गर्मी और सर्दीकी मस्तकपीडा मिटतीहै (४०) पानीमें भंगको भिगो के उस पानीमें अण्डकोषोंको थोड़ी देर रखने और उसके फोकको उनपर बांधनेसे गर्मीसे उत्पन्न हुई अण्डकोषोंकी सूजन उतरतीहै (४१) भंगकी जड़ गलेमें बांधनेसे ज्वर छूटताहै (४२) इसको सायङ्कालको नूंत आवे फिर दूसरे दिन प्रातःकालके समय इसकी जड लाकर सिरमें बांधनेसे भूतज्वर छूटता है (४३) भंगको सेककर मधुके साथ चटानेसे नष्ट हुई निद्रा फिर आने लग जातीहै (४४) इसके पत्तोंके रसमें बत्ती भिगोकर कानमें रखनेसे उसकी पीड़ा मिटतीहै (४५) इसके बीजोंको पीस मोममें मिलाकर खिलानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (४६) जो मनुष्य नित्य अफीम खाया करताहै वह यदि भगकी अधिक मात्रा लेलेवे तो उसको हानिकार नहीं होतीहै (४७) भग पीनेवालेको इसके नशेसे ऐसा विचार आताहैकि मैं ऊपर चढ़ा चला जाताहूं और नशेके समय जो २ बातें होतीहैं उन सबको भूलता जाताहै और उसके मनके विचार ऐसे बढ़तेहैं कि देखनेवाले ऐसा बिचार करने लगतेहैंकि उसके ऊपर कोई देवी आवेश होगयाहै (४८) इसके बीजोंको सेक पीस आटेमें मिला रोटी बनाके खातेहैं (४९) भंगको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि भंगको दूधमें ओटा पानीसे धो साफ करके काममें लाना चाहिये (५०) यह यकृत्के सिवाय और अंगोंमेंसे अपने २ द्रवके निकासको रोकतीहै ॥

संख्या (४८७)

(सं०) विडङ्गः चित्रतण्डुला, अमोघा, क्रमिघ्न ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वायविडग	वायविडंग	वावडिंग	वावडिंग	विडंग	वाविडंग	वायविलङ्ग

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वायविलङ्ग	वायविलंग			Embelia ribes L glandulifera	Babreng

स्थान—वायविडगकी बेलें हिन्दुस्थानके पहाडी भागोंमें अर्थात् मध्य हिमालयसें सीलोन और सिंघाणुर तक बहुत होतींहै।

पहिचान—इसके पत्ते २,३ इंच लम्बे ऊपरसे चमकदार, नीचेसे चन्दनिया, आकारमें अंडे जैसे और कुछ लम्बे होतेहै, इसके कुछ हरे पीले रंग के पुष्प और काले रंगके छोटे फल लगतेहै, जब वे सूख जातेहै तब उन पर सल पडजातेहैं उनमें एक २ बीज निकलताहै उसमें गर्म मसाले जैसी सुगंध होतीहै और उसका स्वाद कुछ चरपरा होताहै।

प्रयोग—(१) वायविडंग वरुची, चरपरी, उष्ण, रोचक, हल्की, रूक्ष, कीडे मारनेवाली और बलवर्द्धकहै (२) पेट और आमाशयकी बादी की पीड़ाको मिटातीहै (३) हृदके रोगोंमें वायविडंगका प्रयोग कियाजाताहै (४) वायविडंगके दो तोले महीन चूर्णको आध पाव मट्ठेमें मिलाके प्रातःकाल पिलानेसे पेटके कीडे मरतेहैं (५) दाद मिटानेवाले और त्वचाके दूसरे रोग मिटानेवाले लेपोंमें वायविडग मिलाई जातीहै (६) दूधमें वायविडंगके दाने डाल गर्म कर, छान, छोटे बच्चेको पिलानेसे उसका पेट फूलना बन्ध होजाताहै (७) रात्रिको सोते समय एक तोले वायविडंगके चूर्ण को मक्खन निकाले हुए दूधके साथ देके फिर प्रातःकाल एरंडका तेल पिलानेसे पेटकी पिटाटें निकल जातीहैं (८) सवा तोले वायविडंगके चूर्णको दहीमें मिलाके प्रातःकाल भोजनके पहिले लेनेसे पिटाटें निकल जातीहै (९) वायविडगका तमाखूके साथ धूम्रपान करनेसे पेट और आमाशयकी बादीकी पीड़ा मिटतीहै (१०) इसके चूर्णकी फकी लेनेसे साधारण मन्दाग्नि मिटतीहै (११) इसका फेन निकालके लगाने या मलनेसे होटोंका फटना मिटताहै (१२) इसके काथमें इसीका चूर्ण बुरकाके पीनेसे कीड़े मरतेहैं (१३) इसके आधे या एक तोले चूर्णको मधुके साथ चटानेसे कृमिरोग मिटताहै।

संख्या (४८८)

(सं०) विडंगभेदः ।

Latin Embelia Robusta E Basal

स्थान—इसके वृक्ष या झाड़ हिमालयमें यमुनासे पूर्वकी ओर बंगाल तक और दक्षिणकी ओर सीलोन तक होतेहैं ।

पहिचान—इसका बड़ा झाड़ या छोटा वृक्ष होताहै जो पृथ्वी, जल आदिक कारणसे आकारमें बहुत बदलजाताहै । इसकी छोटी शाखाओं पर और पत्तोंके नीचे लोहेके जंग जैसे रंगके रूँए होतेहैं, इसके पत्ते दो चार इंच लम्बे और कुछ गोल होतेहै इसके कुछ हरे रंगके सफेद पुष्प लगतेहै । इसके छोटे गोल फलकी मध्य रेखा प्रायः एक इंचके छठे भाग लम्बी होतीहै इसकी छोटी, खड़ी पेदड़ और छोटी शाखाओं पर जले हुए, गोल या रेखा जैसे, धब्बे होतेहैं ।

फूलने फलने का समय—आसोजसे फागुन तक इसके फल पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके बीज कृमिनाशक हैं (२) इनकी फकी लेनेसे अर्श मिटतेहैं (३) इसके कोमल पत्ते और सोंठके काथके गंडूप करनेसे गले के छाले मिटतेहै (४) इसकी जड़की सूखी छालका मंजन करनेसे दंतपीडा मिटतीहै (५) इसके बीजोंके चूरणको मक्खनमें मिलाके ललाटपर लेप करनेसे पार्श्वशूल मिटतीहै (६) ये पेटकी बादी और बाइटोंको मिटातेहैं (७) ओड़ीसामें इसके फल खाने के काममें आते है । इनको कालीमिरचोंमें मिलाके बेच देतेहै ।

संख्या (४८९)

(सं०) विदारी, इक्षुगंधा, क्षीरशुक्ला, स्वादुक्ला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बिदारीकंद	विदारीकंद	भोंकोलुं	भुंय कोहळा	भूंइ कुमडा	बिल्लैयाकंद	तेल्लनेलगुम्मुडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लॅटिन	अंग्रेज़ी
	विळनेल, गुम्मड			Ipomaea digitata Batatas paniculata	

स्थान—विदारीकंद हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें बङ्गाल और आसामसे सीलोन तक होताहै।

पहिचान—वर्षाऋतुमें इसके बैंजनी पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) विदारीकंद-मधुर, शीतल, स्निग्ध, भारी, बृंहण, बल्य और वीर्यवर्द्धकहै (२) इसकी बड़ी जड रुधिरको शुद्ध करनेवाली चरपराहट मिटानेवाली और दूध बढानेवालीहै (३) विदारीकंदके चूर्ण की फक्की दूधके साथ देनेसे स्त्रियोंके दूध बढताहै (४) विदारीकंदके १ मासे चूर्णको मधुके साथ चटानेसे बच्चेकी निर्बलता मिटतीहै (५) विदारीकंद और पीपलका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे बच्चोंकी पाचनशक्ति बढतीहै (६) बालक का शरीर पुष्ट करनेके लिये विदारीकंदके चूर्णको भुनकाम मिलाके देना चाहिये (७) विदारीकंदके चूर्णको घी, खांडके साथ चटानेसे स्त्रियोंके मासिक धर्ममें रजका अधिक जाना बन्ध हो जाताहै (८) विदारीकंदके चूर्णको घीमें सेक, शक्कर मिलाकर उसकी फक्की देके ऊपरसे दूध पिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै (९) तिल्लीवालेको इसके चूर्णकी फक्की देनी चाहिये (१०) इससे रिरेच होताहै (११) यकृत् बढजानेमें इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होताहै (१२) इसके रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे पित्तशूल मिटताहै (१३) इसको दूधके साथ पीस, रस निकाल, उसमें शक्कर मिलाकर पिलानेसे स्त्रीके दूध बढताहै (१४) इसके रसमें दूध डाल औटाके पिलानेसे या इसके रसमें भैंसका घी मिलाके पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै (१५) इसके चूर्णके इसीके स्वरसकी भावना देकर घृत और मधुके साथ सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढताहै (१६) निवाये दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी नित्य लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै और बुढापा जल्दी नहीं आताहै।

स्थान—यह हिन्दुस्थानके वहुतसे भागोंमें वहुधा वोई जातीहैं ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसकी वेल वर्षाऋतुमें उगती है और फूलती फलतीहै । यह फलनेके पीछे सूखजातीहै । इसके पत्ते गहरे हरे रंगके होतेहैं । जबतक इसका फल कच्चा रहताहै तवतक हरे रंगका रहताहै और जव वह पक जाताहै तव गिरदार चिकना, लाल रंगका और दो, ढाई इंच लम्वा और स्वादमें मीठा होजाताहै । इसके पत्ते रंगतके काममें आतेहै ।

प्रयोग—(१) विम्विका (कन्दूरी) के फल—पचनेमें भारी, मधुर, शीतल और लेखन होतेहै मलको स्तंभन करतेहैं, पेटमें वायु और स्त्रियोंके दूध वढातेहैं । अरुचि, पित्त, रुधिरविकार, श्वास, सूजन, दाह और कासको मिटातेहैं बुद्धिका नाश करतेहैं (२) इसके पुष्पकंडू, पित्त और कामलाको मिटातेहैं (३) इसके पत्तोंका शाक शीतल, मधुर, पचनेमें हल्का, ग्राही, कपैला, कडवा, पाकमें चरपरा और वातलहै कफ और पित्तको मिटाताहै (४) इसकी जड शीतल और धातु वढानेवालीहै प्रमेह, हाथोंकी दाह, भँवल और वमनको मिटातीहै (५) वहुमूत्रकी चिकित्साकी रसादिक औषधियोंके इसकी जडके स्वरसकी भावना देतेहैं । उनकी नित्य प्रातःकाल एक गोली देके ऊपरसे इसका १ तोला स्वरस पिलादिया करतेहैं (६) जब इसकी जड़को काटतेहै तो उसमेंसे कुछ चेपदार रस निकलताहै वह सूखने पर कुछ लाल गोंद जैसा जम जाताहै । यह वहुत ग्राहीहै परन्तु फल जैसा कड़वा नहीं होताहै (७) इसकी जड़की छालके दो मासे चूर्णकी फंकी देने से अच्छा विरेचन होताहै (८) इसके पत्तोंको घीके साथ पीसके घावों पर लेप करतेहैं (९) छालों पर इसके पत्तोंको वाधतेहैं या उनका लेप करतेहै (१०) इसके पत्तोंका स्वरस मूत्रकृच्छ्रवालेको पिलातेहैं (११) जिह्वाके ऊपरके घाव मिटानेके लिये इसके हरे फलको चूसतेहैं (१२) इसके हरे फलका शाक वनाके खातेहैं । पके हुए फल कमही खानेके काममें आतेहैं ।

संख्या (४९२)

(सं०) विल्वः, श्रीफल., मालूरः, लक्ष्मीफलः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बीलो, बील	बेल	बिलीवीली	बेलफल	बेल	बेल	मारेडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
बिल्वं	बिलपत्रि	सफरजले हिन्दी	नारवा	Aegle marmelos Craldera M'	The Bael or Bel fruit-tree -The Bengal quince

स्थान—बीलके वृक्ष जेलम से आसाम तक, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, अवध, बिहार, बंगाल और ब्रह्मा आदि देशोंमें होतेहैं और कहीं २ जंगलके जंगल खड़ेहैं।

पहिचान—इसकी उंचाई ३५ फुटकी और इसकी छोटी खड़ी पेड़की गुलाई ७ फुटकी होतीहै इसके थोड़ी शाख लगतीहैं डालियों के अंत बहुधा लटके हुए रहतेहैं। इसकी पेड़की और बड़ी डालियोंकी छाल आध या पौन इंच मोटी, साफ कुछ नीले, सफेद रङ्गकी होतीहै। फागुन चैतमें इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं और चैत वैशाखमें नवीन निकल आतेहैं। इसके १-१॥ इंच लम्बे सीधे, दृढ और तीखे कांटे लगतेहैं इसकी डाली पर एक २ सींक पर तीन २ और किसी२ के पांच पत्ते लगतेहैं, इसके मधु जैसी गंधवाले कुछ हरे श्वेत रंगके पुष्प लगतेहैं। इसका फल कुछ गोल और उसकी मध्य रेखा २ से ५ इंचकी होतीहै और उसका छिलका कठोर, चिकना, सफेद या पीले रङ्गका और उसमें गिर नारंजी रंगकी होतीहै। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने-फलनेका समय—वैशाखमें यह वृक्ष फूलताहै, और आसोज कातीमें इसके फल पकते हैं। इसके फलके छिलकेमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) बील-मधुर, कषेला, रूक्ष, उष्ण, ग्राही, गुरु, कड़वा, चरपरा, अग्निवर्द्धक और पाचक होताहै (२) बीलके कच्चे फलकी गिरीको ७ दिनतक तिल्लीके तेलमें रखकर स्नान करनेके पहिले शरीरपर उस तेलका मर्दन करनेसे पैरके तलवोंकी जलन मिटजातीहै (३) बीलका फल—प्रतिश्याय और अतिसार

में बहुत उपकारीहै परन्तु तीव्र आमातिसारमें इतना गुण नहीं करताहै (४) कच्चे-फलका क्वाथ पिलानेसे पुराना अतिसार मिटताहै, यदि इसमें अफीम मिला दिया जायतो इसका गुण अधिक बढ जाताहै (५) इसके कच्चे फल के गूदेको सेककर मिश्रीके साथ खिलानेसे पुराना अतिसार और आमातिसार मिटताहै (६) इसके पक्के फलका शर्बत स्वादिष्ट होताहै परन्तु पचनेमें भारी होताहै इससे पित्त बिगड़के खट्टी डकारें आने लगतीहै और हृदयमें दाह हो जातीहै (७)इसके पक्के फलकी गिरको खांडके साथ खातेहै (८) बील गिरका मुरब्बा बनाया जाताहै और उसके खानेसे पित्तातिसार मिटताहै (९) बीलगिरको बहुत दिनों तक खाते रहनेसे अर्शरोग होजाताहै परंतु उसको शकरके साथ खानेसे वह रोग नहीं होताहै (१०) तीक्ष्ण रोगोंमें बीलगिरका चूर्ण और पुराने रोगोंमें इसका शर्बत बहुत लाभकारी है (११) तीक्ष्ण आमातिसारमें इसके चूर्णकी बहुत अधिक मात्रा देनी चाहिये, इसका पहिला उत्तम गुण यहहै कि इससे रुधिर तुरंत बन्ध हो जाताहै, और दस्त में मल आने लगताहै। इसका ऐसा प्रभाव प्रतीत होताहै कि यह दस्तकी हालत पलट देताहै और उनके वेगकी संख्या कम नहीं करता, वेगकी संख्या कम करनेके लिये इसमें कुछ अफीमका योग करना चाहिये (१२) शीत ज्वर, व्रणादिकका ज्वर और जिस ज्वरका कारण निश्चय न हो उन सब ज्वरोंको मिटानेके लिये बीलगिरके चूर्णकी फकी देनी चाहिये। इससे ज्वरका न्यूनाधिक वेग कम हो जाताहै (१३) आमातिसारमें इसके चूर्णकी सवामासेसे चार मासे तककी मात्रा दिनमें तीन चार बेर या ६ बेर देनी चाहिये और दूसरे रोगोंके लिये ५ रत्तीसे सवा मासे तककी मात्रा देनी चाहिये और इसके शर्बतकी ८ से १६ या २४ मासे तक मात्रा दिनमें तीन चार बेर देनी चाहिये (१४) बीलगिर, आमकी गुठली, कत्था, ईसबगोलकी भुस्सी, बिदामकी गुली और शकरकी फकी, पुराने अतिसार और आमातिसारमें बहुत उपकारीहै (१५) पके ताजे फलकी गिर चेपदार, ग्राही और कुछ खट्टी होतीहै। यह अतिसारमें बहुत गुणकारीहै (१६) सूखे फलका चूर्ण या क्वाथ इसकी ठौर काममें ला सकतेहैं (१७) इस का चूर्ण अरारूटके साथ बच्चोंके पेटकी शिकायतोंमें बहुत उपकारीहै (१८) जिस संग्रहणी या अतिसारमें मसूड़ोंका रोग होजाया करताहै उसमें इसका द्रव सत्व

अच्छा काम देताहै(१९) इसकी पकी गिरमें ग्राहीपनकी शक्ति बहुत कम होतीहै और कच्ची गिर पूरी ग्राहीहै। इसके कच्चे साबित फलको थोडा सेक उसमेंसे प्रायःआधा या तृतीयांश भाग एक मनुष्यको एक दिनमें एक वेर खिलाना चाहिये। इसको सेकनेसे इसकी गिर नर्म और पचनेमें बहुत हल्की हो जातीहै (२०) कच्चे फलकी गिरको बनार धूपमें सुखा कुछ शक्करके साथ ओटा छानके पिलाना चाहिये। उक्त दोनों क्रम हल्के ग्राही, मरोडोंको मिटानेवाले, नीरोगता बढानेवाले, वेगोंकी संख्या और मवाद्को अवश्य धीरे२ कम करनेवाले और पुराने अतिसार और आमातिसारको मिटानेवालेहै (२१) इसके पके हुए फलका शर्बत हल्का सारक और ठण्डा होताहै और उसमें थोड़ा दही या इमली और शक्कर मिलानेसे कुछ खटास आजाताहै और उसकी ठण्ढेपन और सारकपनकी शक्ति बढ जातीहै (२२) ताजे फलके गूदेको पीस दूधके साथ छान उसमें शीतल मिरचका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै, मूत्रवृद्धि होतीहै, और मैजोत्पादक इन्द्रियोंकी झिल्ली सुकड़ जातीहै (२३) बीलके कच्चे साबित फलको भोभलमें कुछ सेक छिलके सहित कूट, उसमें चाहिये जितना जल और ताडकी थोड़ी मिश्री मिला छानके पिलानेसे पुराना आमातिसार मिटताहै (२४) बीलगिरका सार बनानेकी यह रीतिहै कि बीलकी कच्ची गिर ६ रती पलासका गोंद एक रती खाँड २ रती इनको पीस जलकी साथ छान और मंद २ आंचसे ओटावे जब वह चाटने लायक या गाढा हो जाय तब उतार लेवे। इसको छोटे बच्चेके पुराने अतिसारमें देनेसे बड़ा लाभ होताहै (२५) कच्चे फलकी गिरका अचार और मुरब्बा बनातेहै जो बहुधा अतिसार और आमातिसारवालेको दिया जाताहै (२६) विसूचिका और दस्तोंकी बीमारी फैलनेके समयमें पके फलका शर्बत काममें लाना बहुत अच्छाहै (२७) कच्चे फलको सेक उसकी गिरको छानके सार बना लेवे। यह सार अतिसार और आमातिसारको मिटाताहै (२८) इसका पका हुआ ताजाफल अच्छा सारकहै (२९) इसकी जड विषैल सांपके विषको उतारतीहै (३०) बद्धकोष्ठकी प्रकृतिवालेको इसकी जडकी २॥ तोले छालको २५ तोले जलमें ओटाके उसमें से २॥ या ५ तोला देना चाहिये (३१) इसका पका हुआ फल कुछ मीठा, नीरोगता बढानेवाला, शरीरको पुष्ट करनेवाला, स्वादिष्ट है और

सब प्रकारके मनुष्योंके खानेके काममें आताहै (३२) इसके पके हुए फलके गूदेको पानीमें छान थोड़ी इम्ली और शक्कर मिलानेसे वह मधुर, ठण्ठा और खट्टा पानक बनजाताहै (३३) इसके पत्तोंको बिदून पानीके पीस, टिकिया बनाके खराब फोड़ोंपर बांधतेहैं (३४) इसके पत्तोंका ताज़ा रस हल्का सारकहै ज्वर और प्रतिश्यायमें दिया जाताहै (३५) इसके पत्तोंके काथसे ज्वर और सूखी खांसी मिटतीहै (३६) इसके द्रवसारकी पिचरकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३७) इसकी पकीहुई गिरका गाढा कियाहुआ शर्बत बहुत अच्छा और सच्चा सारक है यह प्रभाव पैदा करनेकेलिये ५ तोले शर्बतमें ५ तोले दूध मिलाना चाहिये शर्बत ऐसा गाढा होना चाहिये जो चम्मचसे खाया जावे, पीनेके लायक नहीं होवे (३८) इस शर्बतमें बराबर दूध मिलाकर मरोड़ोंके असाध्य रोगमें पिलाना चाहिये (३९) पके हुए फलकी ताजी गिर सारक होतीहै, परंतु सूखनेपर कुछ ग्राही होजातीहै (४०) कच्चे बीलकी धूपमें सुखाईहुई गिर पाचक, पेटकी शूल मिटानेवाली और गुदाकी त्रिवलीकी झिल्लीका बल बढ़ानेवालीहै। जब इसका सेवन कियाजावे तब भोजनका समय बदल देना चाहिये और भोजनकी मात्रा घटादेनी चाहिये (४१) मन्दाग्नि और ज्वर मिटानेकेलिये इसका पक्का फल अच्छाहै (४२) अतिसार और आमातिसार बन्ध होनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेकेलिये प्रातःकालके समय बीलका मुरब्बा भोजनके साथ खिलाना चाहिये (४३) इसकी जड़की छालके काथसे छोड़ छोड़के आनेवाला ज्वर छूटता है (४४) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे हृदयका नियमसे अधिक फड़कना और पागलपन मिटजाताहै (४५) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधनेसे आंखका दुखना और अधिक गीडोंका आना मिटताहै (४६) इसके कच्चे फलको सेक उसकी एक तोले गिरमें शकर मिलाके खिलानेसे संग्रहणी मिटतीहै (४७) इसको गुडके साथ खानेसे रक्तातिसार मिटताहै (४८) इसकी और आमकी गुठलीकी गिरमें शकर और मधु मिलाकर चटानेसे वमन और अतिसार मिटताहै (४९) कच्चे फलकी गिरी और तिल बराबर लें, कल्क बना, उसमें दही और स्नेह पदार्थ मिलाकर खिलानेसे प्रवाहिका मिटतीहै (५०) इसके पत्तोंके रसका मर्दन करनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटतीहै (५१) इसकी छालके काथमें मधु मिलाकर

पिलानेसे त्रिदोषकी वमन बन्द होतीहै (५२) इसके फलकी गिरको पीस चांवलोंके पानीके साथ पिलानेसे गर्भवती स्त्रीकी वमन बन्ध होजातीहै (५३) बीलगिर और (अरणी) का क्वाथ ठण्डा करके पिलानेसे गर्भवतीके वात-रोग मिटतेहै (५४) इसके फलकी गिरका अर्क पिलानेसे अतिसार मिटताहै (५५) बीलगिर और कत्था बराबर ले पीसके देनेसे अतिसार मिटताहै (५६) इसके पत्तोंके रसमें कालीमिरचका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे पाण्डुशोथ, बद्धकोष्ठ, अर्श और कामलारोग मिटताहै (५७) बीलगिरको गोमूत्रसे पीस, उससे जल और दूधके साथ तेलबना कर कानमें डालनेसे बधिरता मिटतीहै।

संख्या (४६३)

(सं०) विशल्यकृत्, आचरद्प्रियः, आस्फोतः, भूपलाशः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
				आयापाती हापरमाली		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Vallaris Heynei V Dichotoma	

स्थान—यह बहुधा हिन्दुस्थानके बागोंमें बोया जाताहै। दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थान, बंगाल, ब्रह्मा, सीलोन, सीलहट और हिमालयमें कमाऊं और गंगाके पश्चिमतक पैदा होताहै।

पहिचान—इसका वृक्षपर चढनेवाला बडा झाड होताहै। इसकी छाल खाखी रंगकी और चीकनी होतीहै। इसकी डंडीके दोनों ओर आमने सामने अंडेके आकारके लम्बे पत्ते लगतेहैं। इसके सुगंध युक्त, श्वेत रंगके पुष्प लगतेहैं। इसके कुछ लम्बा बड़ा फल लगताहै उसमें दो खानें होतीहैं उनमें लम्बे और रूँएदार वक्कलसे बीज होतेहै।

फूलने फलनेका समय—यह मार्गशीर्षसे चैत्रतक फूलताहै।

प्रयोग—(१) इसका दूध घाव और पुराने फोडोंकी चांदियोंपर लगाया जाताहै (२) भगंदरपर इसका लेप किया जाताहै (३) इसका रस लगानेसे चमडी जलजातीहै (४) पुराने घाव और हड्डियोंको बिगाड़नेवाले फोड़े और विशालीपर इसका दूधिया रस लगाया जाताहै (५) इसके लगानेसे शोथ घटके घाव जल्दी भरनेकी सूरत बनजातीहै।

संख्या (४६४)

(सं०) विषं, वत्सनाभः, कालकूटं, रक्तशृङ्गिकम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सींगीमोरो	बचनाग	बछनाग	बचनाग	विष	सिंगियाविष	वसनाभि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वस्सनाभि	वत्सनाभि	बीष	बिचनाग	Acenitum ferex	Indian aconite

स्थान—बचनाग हिमालयमे सिकमसे गढ़वाल तक होताहै। यह २ से ५ इंच लम्बा और ऊपरकी तरफ आध से डेढ इंच चौडा होताहै, इसकी जडही बचनागहै, दूसरोंकी जड इसकी प्रतिनिधिमे या धोखेमें देदेतेहैं। दक्षिण हिन्दुस्थानमें यह कई प्रकारका मिलताहै, जैसे, सफेद, लाल, काला और मीठा, इनमेंसे सफेद और लालको खानेकी औषधियोंके काममें लातेहैं।

इसको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि इसके छोटे छोटे टुकड़ोंको एक थैली में बांध, दूधमें अधर लटकाके आध घंटे तक अच्छी आंच देवे। ऐसे ७ वेर ओटानेसे इसका विष कम हो जाताहै। शुद्ध किये हुए बचनागकी एक रती के ४० वें हिस्सेसे ३२ वें हिस्से तककी मात्रा देनी चाहिये।

प्रयोग—(१) बचनाग—अत्यन्त मधुर, चरपरा, कड़वा, कषैला, उष्ण, व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मदकारी, रसायन, रूक्ष, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, विशद लघु, पुष्टिकारक और बलवर्द्धकहै। इसमें दूधिया बचनागसे गुण

अधिकहै (२) दूधिया विषकी अपेक्षा इसमें विष अधिकहै इसलिये इसको लेपादिकके काममें लाना चाहिये (३) यह उत्तेजकहै और दिलकी हरकतको कम करताहै । (४) ज्वर और स्नायुसम्बन्धी मस्तकके रोगोंमें उपकारीहै (५) गलरोग, मंदाग्नि और गठियाको मिटाताहै (६) स्नायुपीडा और फोडे फुन्सियों पर इसका लेप करतेहै (७) इसके प्रयोगसे जीर्णज्वर छूट जाताहै, (८) गठिया और छोटे जोडोंकी सूजन पर इसके तेलका मर्दन करतेहैं । ९) हृदयके बढे हुए धड़कनेको घटानेके लिये यह दिया जाताहै, (१०) वातघ्न औषधियोंके साथ गठिया की पीडा मिटानेके लिये इसकी मात्रा देतेहैं (११) दालचीनी, गंधक, सोहागा और दूसरी चरपरी सुगंधित चीजोंके साथ इसकी बहुत थोडी मात्रा देनेसे बार २ आनेवाला ज्वर छूट जाताहै (१२) स्नायु और पट्ठे सम्बन्धी गठियामें इसका लेप करतेहै (१३)शरीरका बल बढ़ानेके लिये और बारीसे आनेवाले वेगको रोकनेके लिये इसका एक रतीके ८० वें भाग से ६० वें भाग तक देना चाहिये (१४) यह पुरुषार्थ बढाताहै (१५) इसका तेल निकाला जाताहै, जो वादीकी पीडामें मर्दन के काममें आताहै (१६) ज्वरमें बद्धकोष्ठवालेको बचनाग देतेहै (१७) रसकपूर और हिंगुलू के साथ इसकी दस्तावर गोलियां बनातेहैं (१८) इसकी ताजी जडकी बहुत कम मात्रा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१९) हृदय का धड़कना, कम करनेके लिये और स्नायुजालकी शक्ति बढानेके लिये बहुत थोड़ी मात्रा देनेसे यह बहुत गुणकारीहै परन्तु अधिक मात्रा देनेसे तीव्र विषका काम देताहै (२०) यह मूत्रातिसार और मधु प्रमेहमें बहुत उपकारी है। जिस दिनसे इसको लेनेका प्रारम्भ किया जाताहै, उसी दिनसे मूत्रका तोल और उसी प्रमाण से उसका मिठास कम होने लगताहै (२१) यह स्वतः वीर्य निकल जानेको बहुत रोकताहै और पक्षाघात और कुष्ठमें बड़ा उपकारी है। यह अपना प्रभाव दिखानेमें चूकता नहीहै दूसरा ललाई लिया हुआ सफेद बचनाग भी ऐसा ही गुणकारीहै। एक तोले सफेद या लाल जातिके बचनागमें ७ तोले अरारूट या गेहूका आटा मिलाके खरलमें खूब महीन घोट कर एक से तीन रती तक की मात्रा धीरे धीरे बढाना चाहिये और दिनमें तीन बेर देना चाहिये (२२) सांप और बिच्छूका विष उतारनेके

लिये उत्तेजक औषधियों के साथ इसकी कुछ अधिक मात्रा देनी चाहिये (२३) जो कूट किये हुए ढाई तोले वचनागको अलसीके आधसेर तेलमें ओटाकर उस तेलका मर्दन करनेसे मात्र प्रकारकी वादीकी पीड़ा मिटतीहै और खासी और श्वास मिटानेके लिये भी इसी तेलको पानपर थोड़ासा लगाके खिलातेहैं (२४) जिसके मूत्रकी शंका न रुकती हो उसको वचनाग सेवन करानाचाहिये (२५) ज्वरकी उष्मा कम करनेके लिये यह वहुत उपकारीहै (२६) इसको नींबूके रसके साथ पीस लेप करनेसे गडमाला मिटतीहै (२७) इसका लेप करनेसे विच्छूका विष उतरताहै (२८) इसको मनुष्यके मूत्रमें पीस, अचेत मनुष्यको चैतन्य करनेके लिये उसके मस्तकके केश मुंडवा, पछने लगाके मलना चाहिये।

संख्या (४६९)

(सं०) विषभेदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दूधियो मी मीमोरो	दूधिया बछनाग	दूधियो बछनाग				विमनाभि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेज़ी
		बीष		Aconitum Napellus	This is the true Monk's hood of wolfe's bane - Aconite

स्थान—दूधिया वचनाग मनीपुरके उत्तरमें, आसामके आस पास और हिमालयमें वहुत ऊंचा पैदा होताहै।

पहिचान—यह चार प्रकारका होताहै।

प्रयोग—(१) लू की गर्मी कम करनेके लिये इसकी बहुत कम मात्रा देनी चाहिये (२) फेफड़ेके रोग अर्थात् गुजराती रोगमें इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होताहै (३) मुखकी स्नायुसम्बन्धी पीड़ामें इसका लेप करतेहैं।

संख्या (४९६)

विषमडलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	पिंडार	नागदमनी	नागदडन	नागदौन		लद्गनिार यन चेट्ट

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
विषमुगिल				Crinum asiaticum C toxicarium	

स्थान—विषमडलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) इसके रसदार कुछ कडवे पत्तोंको (जो प्रायः दो इंच चौड़े और तीन फुट लम्बे होतेहैं) कूटकर थोड़े एरंडके तेलमें मिलाके लगानेसे विषैली अथवा दूसरे प्रकारकी पित्तशोथ (जो अंगुली या अंगूठेके अंतके पेरवेमें होतीहै) मिट जातीहै (२) इसके पत्तोंका अर्क कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (३) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे वमन होतीहै (४) इसकी जड़को चूंस थोडासा रस निगलनेमें वमन होतीहै (५) इसकी साढे सात मासेसे सवा तोले तक ताजी जड या शाखाको महीन पीस उसका अर्क निकालके पिलानेसें थोडा देर पीछे वमन होतीहै (६) इसकी थोड़ी मात्रासे हुल्लास और पसीना होताहै । इसके प्रयोगसे कोई उपद्रव नहीं होताहै (७) कतरके सुखाये हुए कंदके चूर्णकी फंकी देनेसे वमन होतीहै परन्तु गीले कंद से सूखे कंदकी मात्रा दुगुनी लेनी चाहिये (८) इसके शर्बतमें ताजेपोधे जितने गुणहैं (९) इसके पत्तों पर सरसोंका या नारियलका तेल चुपड़कर सूजी हुई जोड़ों पर बांधना चाहिये (१०) इसके पत्तोंको अग्निपर तपा हथेलीमें मल, उनका अर्क लेप करनेसे धादीकी कानमें निचोड़ देनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (११) इसके पत्तोंके रसका पीड़ा मिटतीहै ।

संख्या (३९७)

(सं०) वीजपूरः, फलपूरः, रुचकः, मातुलुङ्कः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बिजारो	बिजौरा	बीजोरा(रु)	महाळुंग	टावालेवुरगाछ	बेजोरानिंबु	नारदव्य

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
कडारानार्तकाय्	मादिळहणु	उत्रज,उत्रुज		Citrus medica	The citron Centaf tree Adam's apple Citrus

स्थान—बिजौरा हिन्दुस्थान के उष्ण और आर्द्र देशोंमें बहुत बोया जाताहै इस वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

(१) इसका तेल निकालनेकी यह रीतिहै कि इसके पुष्पोंका भभकेमें अर्क निकालनेसे उसके साथ बहुत सुगन्धयुक्त तेल निकल आताहै (२) विजौरेके छिलकेमेंसे भी ऐसेही या किसी यंत्र (सांचे) में दवाकर तेल निकालतेहै।

प्रयोग—(१) विजौरा खट्टा, रसमें मधुर, दीपन, पचनेमें हलका, रोचक, उष्ण और तीक्ष्णहै (२) विजौरेका छिलका उष्ण, रूक्ष और बलवर्द्धकहै (३) इसकी गिरी रूक्ष और शीतलहै (४) इसके बीज, पत्ते और पुष्प उष्ण और रूक्षहै (५) इसका रस चित्त प्रसन्न करनेवाला है (६) विष खाये हुए मनुष्यको इसका फल खिलानेसे उसकी आंतों पर ऐसा भारी प्रभाव होजाताहै कि जिससे विष बाहिर निकल जाताहै (७) इसके सेवनसे श्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (८) इसके फलका अर्क खचके पिलानेसे शरीर शिथिल होजाताहै (९) इसके छिलकेका अचार बनाके खानेसे मसूड़ोंका असाध्य रोग मिटताहै (१०) आमातिसार मिटानेकेलिये इसका अचार खिलातेहै (११) इसके ८० बीजोंकी गिर निकाल उसमें ५ तोले शकर मिलाकर खानेसे हिचकी मिटतीहै (१२) इसके ४० बीजोंकी गिरीमें दुगुना गुड़ मिला, गोली बनाके, मासिकधर्मके दिनोंमें तीन दिन तक खिलानेसे गर्भ रहताहै। इसमें दूध चावलोंका पथ्य देना चाहिये (१३) ४० बीजोंकी गिरको

इण्डके साथ खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१४) इसके २१ बीजोंकी गिर बा लकको खिलानेसे दांत जल्दी निकल आतेहै (१५) ८० बीजोंकी गिर और २० मासे पीपलको पीस गोलिया बना २१ दिन तक खानेसे श्वास मिटताहै (१६) १०० बीजोंकी गिर और १०० कालीमिरचको खरलकर नीबूके रसके साथ पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहै (१७) ६ बीजोंकी गिर और ४ मासे सोंठको सवातीन तोले अदरकके रसमें खरल कर गोलिया बनाके खिलानेसे अफारा मिटताहै (१८) ५० बीजोंकी गिर और ५० पीपलको सवातीन तोले घृतमें ४८ दिन तक पीनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (१९) इसकी केसर और सेंधेनमकको मधुके साथ चटानेसे जीभ तालु और गलेका सूखना मिटताहै (२०) इसकी जड या पुष्पोंको पीसकर चावलोंके धोवनके साथ पिलानेसे नकसीर बन्द होतीहै (२१) इसकी जड, चावलोंकी खीलें, सैंधेनमक और पीपलके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे वमन बन्ध होतीहै (२२) इसके रसमें कालानमक और मधु मिलाके पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (२३) इसकी केसरमें बराबर सेंधानमक या मधु मिलाकर एक तोले भर खानेसे मुखकी विसरता मिटतीहै (२४) इसके रसमें मधु मिलाकर पीनेसे दाह मिटताहै (२५) इस के रस में गुड़ मिला के पीनेसे कफ और वातकी शूल मिटताहै (२६) इसके रसमें दूध और मधु मिलाकर पिलानेसे पार्श्व, हृदय, वस्ति और कोष्ठ इन सबकी वातशूल मिटतीहै (२७) इसके रसमें सेंधानमक मिलाके पिलानेसे पथरी मिटतीहै (२८) इसकी केसरको काजीके साथ पीसके लेप करनसे मसूरिका पक जातीहै (२९) इसकी केसरका रस कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै (३०) इसकी जड़ और मुलहटीको मधु और घृतमें मिलाकर चटानेसे बालक सुखसे पैदा होजाताहै (३१) बिजोरे का अवलेह चटानेसे उदरके रोग और वादीका उन्माद मिटताहै।

संख्या (४६८)

(सं०) मधुकर्कटी, मधुबीजपूर, मधूली, महाफला।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
		पापैयो	गोडमहालुग	बातांविलेवु	मिट्ठानिंबू	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
			लीमूनेशरबती	-Citrus Var 4 Limetta C nobilis	The sweet lime of India

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोया जाताहै, विशेषकरके दक्षिण हिन्दुस्थान और नीलगिरी पहाड़में होताहै।

प्रयोग—(१) ज्वरकी घबराहट मिटानेकेलिये इसकी केसर खिलातेहैं (२) इसके प्रयोगसे कामला रोग मिटताहै (३) इसका ताजा फल खानेके काममें आताहै। इसका अचार और मुरब्बा बनातेहैं।

संख्या (४६६)

(सं०) वीरवृक्षः, अश्मरोहरः, वीरतरः, वृहद्वातः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
(अजमेर में) खैड़ी	विलग्रन्तर वरवल	वेलतरु	वेलतूर	वीरतरु		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Dichrosta Chyse mimosa C	

स्थान—खैडीके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान, पश्चिम और मध्य हिन्दुस्थान, राजपूताना, मद्रास अहाता और सीलोनके सूखे पथरीले पहाड़ोंमें होतेहैं। गंगाके किनारे फतेहगढ़ तक, जैपुरके पास और टाटगढ़के पास मेरवाड़ेके डूंगरोंमें भी होतेहैं।

पहिचान-(१) इसका झाड़ या छोटा वृक्ष होताहै, इसके सीधे, दृढ़ और तीखे कांटे लगतेहैं। इसके छोटे पत्तोंके १२ से १५ जोड़े लगतेहैं। इसके ऊपरके उपजाऊ पुष्प पीले रंगके और नीचेके वंजड़ पुष्प सफेद, बैंजनी या गुलाबी

रंगके होतेहैं। इसके २ से ८ फलियोंके गुच्छे लगतेहैं। वे फलियां २, ३ इंच लम्बी, चौथाई इंच चौड़ी और विना क्रम मुडी हुई होतीहै। १ फलीमें १०, १५ बीज निकलतेहैं। इसमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाताहै।

उष्णकालमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग-(१)यह-चरपरा, उष्ण, पचनेमें कडवा, ग्राही, और अग्निवर्द्धकहै। मूत्रकृच्छ, पथरी, सधियोंकीशूल, योनी रोग और मूत्राघातको मिटाताहै (२) इसकी नर्म टहनियोंको कूट पीसके दुखती हुई आखपर लेप करतेहैं।

संख्या (४००)

बूई ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बूई			कपूर मधुरा	चय	बूई कल्लन	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Aerua lanata Achyranthes lanata	

स्थान—बूई हिन्दुस्थानके बहुतसे जगलोंमें होतीहै।

इसके पुष्पोंमें मीठी गंध आतीहै।

प्रयोग—(१) ललाट पर इसकी जडका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२) एक थैलीमें बूईकी कलियें भर कर उसको पैरके नीचे बिछी हुई रखनेसे पैरकी फूटनी मिटतीहै (३) चूहोंको इसके बीज अतिप्रियहै।

संख्या (४०१)

(सं०) वृक्षाम्लं, फलाम्लकं, तिन्तिडीकं, चुक्राम्लम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
डांसरया	विषाम्बिल		आमटे	तेंतुल	डासरा रमाकदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Garcinia indica G purpurea	

प्रयोग-(१) पकेहुए डासरे-खट्टे, पचनेमें भारी, ग्राही, चरपरे, कपेले, लघु, उष्ण, रोचक, दीपन, रूक्ष, कफ और वातवर्द्धक और कृमिनाशकहै। तृषा, संग्रहणी, गुल्म, शूल, हृद्रोग और अर्श को मिटातेहैं (२) इसके कच्चे फलका स्वाद खट्टा होताहै और पके हुएका खटमीठा होताहै।

संख्या (५०२)

(सं०) वृद्धदारकः, छागलांत्री, जुंगा, अतरुणदारुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बिधायरो	विधारा	वरधारो	वरधारा	विद्धडक	भिधरा	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Gmelina asiatica G parvifolia Rourea santaloid	

स्थान—विधारा-दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनके जंगलोंमें होताहै और बंगालमें बोया जाताहै।

पहिचान—इसका बडा झाड होताहै। इसके बहुतसी शाखें फूटतीहैं। इसकी छोटी डालियोंके कांटे लगतेहैं। इसकी डालियोंके अन्तमें पीले पुष्प लगतेहैं। इसके आध इंच लम्बा फल लगताहै।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीने पुष्प लगते रहतेहैं।

प्रयोग—(१) यह चरपरा, कडवा, कपेला, उष्ण, रसायन और सारकहै (२) गठिया और स्नायुजालके रोगमिटानेकेलिये विधारेका प्रयोग किया जाताहै (३) विधारेमें चेप बहुत होताहै (४) इसके प्रयोग से रुधिर शुद्ध होताहै (५) शरीरकी बिगडी हुई प्रकृतिको सुधारनेकेलिये दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (६) इसके पत्तोंको पानीमें

भिगोनेसे पानी गाढा होजाताहै उसमें मिश्री डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र अथवा वैसेही दूसरे रोग मिटतेहै (७) मूत्राशयकी दाह और प्रतिश्याय मिटानेकेलिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (८) शतावरके साथ विधारेका काथ करके पिलानेसे गठिया मिटतीहै (९) त्रिफला और विधारेका काथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै (१०) इसके चूर्णको काजीके साथ पीनेसे श्लीपद मिटताहै (११) इसकी जडके चूर्णक शतावरीके स्वरसकी ७ भावना देकर उसमेंसे एक तोले भर घृतके साथ नित्य १ महीने तक चाटनेसे स्मरणशक्ति और बुद्धि बढतीहै (१२) दूसरी औषधियोंसे भी पानी जमकर गाढा होजाताहै परन्तु उसको हिलानेसे ढीला पड जाताहै इससे जमाया हुआ पानी ढीला नहीं पडताहै ।

संख्या (५०३)

(सं०) वृन्ताकः, निद्रालुः, शाकश्रेष्ठा, नीलफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बैंगण	बैंगन, भटा	वताकटी	वांगें, वांगी	वेगुनगाछ	बैंगन	--

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
--		बाजजान	बादजान	Salanum melongena. S. Esculentum	Egg plant Brinjal

स्थान—बैंगन हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान—बैंगन ४ प्रकारके होतेहै, इसके पत्ते जहरी होतेहैं ।

प्रयोग—(१) बैंगन मीठा, चरपरा, कडवा, उष्ण, पचनेमें चरपरा, सलौना, दीपन, रोचक और पचनेमें हल्का है । वीर्य्य, रुधिर और हृदय के बल को बढाता है (२) ज्वर, वात, कफ, हृल्लास, कास और अरुचिको मिटाताहै (३) कच्चा बैंगन कफ और पित्तको मिटाताहै (४) पक्का बैंगन पित्तको बढाता है और पचनेमें भारी है (५) बैंगनका भुरता पचनेमें बहुत हल्का और दीपन है । कफ, मेद और बादीको मिटाताहै (६) बैंगनका शाक

प्रयोग—(१) यह कषेली, शीतल, कडवी और चरपरीहै। कफ, वात, पित्त, दाह, अर्श, शोथ, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, अतिसार, रुधिरविकार, योनीरोग, तृषा, व्रण, प्रमेह, रक्तपित्त, कुष्ठ, और विषका नाश करतीहै (२) इसके अंकुर सलोने पचनेमें हल्के, चरपरे और उष्णहै कफ और वातको मिटातेहै (३) इसके पत्ते भेदक, कषेले, पचनेमें हल्के, शीतल, कडवे, चरपरे और वातलहैं (४) रुधिरविकार और कफ पित्तको मिटातेहैं (५) इसके बीज कषेले, मीठे, खट्टे, रूक्ष और पित्त बढानेवालेहै। रुधिरविकार और कफको मिटातेहै। इसके फलकी गिर और छोटी कोमल डालिया खानेके काममें आतीहैं।



संख्या (५०६)

(सं०) जलवेतसः, वानीरः, नादेयः, परिव्याधः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जलवेत	जलवेत	जलवेतस	जलवेतस	जलवेत	जलवेत	प०ब्रह०रे

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी
नीरवजि	नीरवजि			Calamus fasciculatus	

स्थान—जल वेतके वृक्ष बंगाल, ओडीसा, चटगांव और ब्रह्मा आदि देशोंमें होतेहै।

पहिचान—जलवेत छोटी अवस्थामें खडी रहतीहै और जब बढ जाती है तब आश्रय ढूंढनेके लिये झुककर, वृक्ष और झाडियों पर चढतीहै।

प्रयोग—(१) यह शीतल, कडवी, कषेली, वातल, ग्राही और रूक्ष होतीहै व्रणको शुद्ध करतीहै। पित्त, रुधिरविकार, व्रण और कफको मिटातीहै



संख्या (५०७)

(सं०) वैडूर्यं, केतुरत्नं, विदूरजं, अभ्ररोहम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लहसणियो	लहसुनिया	लसणियो	वैडूर्यरत्न	वैडूर्य	लहसुनिया	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					Cat's eye

गुण-(१) लहसुनिया-उष्ण और खट्टा होताहै। रक्तपित्त, पैत्तिकशूल, गुल्म, उदररोग और कफ वातको मिटाताहै। बुद्धि, आयु, बल और अग्निको बढाताहै और रसायन है।

संख्या (५०८)

(सं०) बोलं, गंधरसं, व्रणारि., रक्तापहम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बीजाबोल	बीजाबोल	हिराबोल	बोळ	गंधरस	बीजाबोल	बोलमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
करियपोळ	मूसाम्बर	मुर्र, मुर		Balsamodendron myrrha	Myrrh

स्थान—बीजाबोलके वृक्ष हिन्दुस्थानके पश्चिमभागमें पैदा होतेहै।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, दीपन, पाचन, मधुर, चरपरा और कडवा है (२) पुराने निगडेहुए और देरीसे भरनेवाले फोडोंको इसके क्राथसे धोने चाहियें (३) मुख और मसूडोंके छालोंको मिटानेके लिये इसको मुंहमें रखना चाहिये (४) इसके कुल्ले करनेसे गलेके छाले और पीडा मिटतीहै (५) इससे सूखी खांसी तर होजाती है (६) वृद्ध मनुष्योंका श्वास मिटानेके लिये इसका प्रयोग अच्छाहै (७) आंतोंके कीडे मारनेके लिये इसको एरंडके तेलके साथ देना चाहिये (८) इसका लेप करनेसे ठण्डी गाठें विखर जातीहै (९) इसको स्त्रीके या गधीके दूधमें गलाके आंखमें डालनेसे आंखकी पीडा मिटतीहै और गीड आना बन्द होजाताहै (१०) अपस्मार मिटानेवाली औ-

पथियोंमें इसको मिलानेसे उनकी शक्ति बढ़जातीहै (११) शोरेके हल्के तिजाव में इसको मिलाकर लगानेसे पुराने बिगडे हुए फोड़े मिटतेहैं (१२) श्वासन लिकाके बिगडेहुए द्रवके निकासको रोकनेकेलिये इसकी फकी देनी चाहिये (१३) बीजाबोलको गुड़में मिलाकर देनेसे स्त्रियों के दूध बढ़ता है (१४) इसका लेप करनेसे अंडकोषकी सूजन उतर जातीहै (१५) यह उष्ण और रूक्षहै (१६) इसको गुलाबके गुलकंदमें मिलाके देनेसे ढीलेमलके एक दो वेग होजातेहैं (१७) सोंठके साथ फकी देनेसे मन्दाग्नि मिटतीहै (१८) इसको मिट्टीके बरतनमें पानीके साथ घिस लपटे जैसा गाढा करके चटानेसे पेटका अफारा मिटताहै (१९) चिरायतेके अर्कके साथ इसकी फकी देनेसे ज्वर छूटताहै (२०) इसको और हल्दीको घी और मधुमें मिलाकर चटानेसे हलीमक रोग मिटताहै (२१) तिलोंके काथके साथ इसकी फकी देनेसे स्त्रियोंका कष्टसे मासिकधर्म होना मिटजाताहै (२२) इलायची, वंशलोचन और बोलको मधुके साथ चटानेसे शरीरकी निर्बलता मिटतीहै (२३) ४ मासे बीजाबोलको रात भर पानीमें भिगो उसके नितरे हुए पानीमें थोड़ी मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (२४) इसको सिरकेमें पीसकर मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (२५) बीजाबोल और लोंग बराबर ले, महीन पीस वस्त्रमें बांधके गर्भाशयके मुंह तक पहुंचानेसे गर्भाशय शुद्ध होजाताहै ।

संख्या (५०९)

(सं०) व्रीहिः, तण्डुलः, शालिः, षष्टिकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चांवल	चांवल	चोखा	साळ	आशुधान्य	चांवल	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		उरुज	बिरज	Oryza Sativa	Rice

स्थान—चावल हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं ।

चांवल कई प्रकारके होतेहैं ।

प्रयोग—(१) जियादे गर्मी पड़नेसे विना समयमें पके हुए नये चावलोंको खानेके काममें लानेसे मंदाग्नि होकर विषूचिका होनेका बडा भारी भयहै । जैसेकि नये चांवलोंको खानेसे सन् १८१७ ई० में बड़ी भारी विसूचिका फैली थी, इसके पहिले भी हिन्दुस्थानमें विसूचिकाका रोग होताथा, परंतु इसके पीछे प्रतिवर्ष यह रोग फैलने लग गया । नये चांवल रोग पैदा करतेहैं इसलिये पुराने चावल भोजनके काममें लाने चाहियें (२) बंबईके पास जल युक्त स्थानोंमें जो विना बोये चावल पैदा होतेहै उनको देवभात कहतेहैं, ये औषधि के प्रयोगमें काम आतेहैं (३) रोगी और निर्बल मनुष्यको चांवलोंका पथ्य दिया जाताहै (४) भुस्सी समेत चांवलोंको भिगोके सेक लेवे । पीछे उनको कूट, भुस्से से अलग कर दहीके साथ खिलानेसे आमातिसार मिटता है (५) चांवलोंका मांड ज्वरमें और पित्तशोथमें बडी शान्ति करनेवालाहै (६) मूत्राघात और उसी प्रकारके रोगोंमें चांवलोंके माड में शकर मिलाके पिलाना चाहिये (७) मांडमें नींबूका रस और शकर मिलाके अथवा और कोई रोचक चीज मिलाके खिलाने और पिलानेसे अरुचि मिटतीहै (८) गुदामें माडकी पिचकारी देनेसे आंतोंकी पीड़ा मिटतीहै (९) चांवलोंका पुल्टिस अलसी जितना काम देताहै (१०) जौके औटाये हुए जलकी ठौर चांवलोंका मांड दे सकतेहैं (११) अतिसार मिटानेके लिये चांवलोंका माड पिलाना चाहिये (१२) चावलोंको तरबूजमें भर उसका मुंह बन्द कर ७ दिनतक पड़ा रखकर उसमेंसे चांवल निकाल सुखा पीसके पीठी करनेसे मुखकी झाई मिटतीहै (१३) चावलोंको घीके साथ पीस कर लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै (१४) चावलोंके आटेके थूहरके दूध की भावना दे उसके पूए निकालके ७ दिनतक खानेसे उदर रोग मिटतेहैं ।

संख्या (५१०)

(सं०) शंखः, महानादः, पावनध्वनिः, कंबुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शख	शख	शख	शखो	शाङ्, शख	शंख	शखमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
शख	शख				Conch or Monosalve shell

दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्तके भेदसे शंख दो प्रकारके होतेहैं, दक्षिणावर्त्त शंख बहुत कम मिलताहै, इसलिये वामावर्त्त शंखही औषधियोंके काममें आताहै, निर्मल और चन्द्रमाके समान उज्ज्वल चमकदार शंख औषधियोंके काम में लाना चाहिये।

शंखको शुद्ध करनेकी रीति यहहै कि इसके छोटे २ टुकडे कर पोटलीमें बांध एक हंडीमें खटाई और कांजी भर उसके बीचमें उस पोटलीको लटका उस के नीचे चार पहर तक मंद अग्नि देना चाहिये। पीछे उसमेंसे निकाल उष्ण जलसे धो सुखाके रख छोडना चाहिये।

शंख भस्म बनानेकी रीति–शंखको अग्निमें लाल कर २ नींबूके रसमें बुझाना चाहिये, जबतक वह बिखरके टुकडे २ न हो जाय तबतक बुझाते रहना चाहिये, पीछे एक सकोरेमें गवारपाठेकी गिरके बीचमें उसको रख उसका मुंह कपड़ मिट्टीसे बन्ध कर, सुखा, गजपुटकी अग्निमें भस्म कर लेना चाहिये।

प्रयोग–(१) शंख भस्म–सलोनी, शीतल, और ग्राही होतीहै, संग्रहणी, नेत्रका फूला, पेटकी पीडा और मुखपरकी जवानीकी फुंसियोंको मिटातीहै (२) शंख भस्म और सैंधानमक बराबर ले शहदमें मिलाकर एक टंककी मात्रा देनेसे संग्रहणी मिटतीहै (३) शंखभस्मकी मात्रा उष्ण जलके साथ देनेसे पंक्तिशूल मिटतीहै (४) इसका शहदके साथ अंजन करनेसे अर्जुन रोग मिटताहै (५) शंख चूर्ण और मूलीकी भस्मका लेप करनेसे कफकी ग्रन्थी और अर्बुद मिटताहै।

———o———

संख्या (५११)

(सं०) शंखजीरकं, कम्बुजीरः, श्लक्ष्णजीरः, श्लक्ष्णमृदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पीयोंभाटो पत्रनपक्र	सेंगजराहत	शंखजीरु	शखजीरें		सेलखडी	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		हजरुल् एरावी	संगेज्राहत	Silicate of magnesia	Soap stone

प्रयोग—(१) यह शीतलहै । दाह और रुधिरस्रावको मिटाताहैं (२) इसका लेप करनेसे शोथ, विसर्प, कक्षा के रोग और रक्तविकार मिटते है (३) इसकी फ़की लेनेसे व्रण और दाह मिटतीहैं ।

संख्या (५१२)

(सं०) शंखपुष्पी, कंबुपुष्पी, शंखाह्वा, शंखमालिनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शखापूली	शंखाहुली	शखावली	शखोली	शखहुलुइ	कौडियाली	शखपुष्पि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	गुब्बाच्चि			E. Frolvulus alsinoides E. hirsutus	

स्थान—शंखाहुली हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतीहै ।

प्रयोग—(१) शंखाहुली-उष्ण तीक्ष्ण, सारक, कषेली, चरपरी, शीतल, पाचक, मनके रोगोंको हरनेवाली, रुधिर शुद्ध करनेवाली, स्मरणशक्ति और बल बढानेवालीहै (२) दूधके साथ इसकी फंकी देनेसे स्नायुजालकी शक्ति बढ़तीहै (३) इसका घी बनाके खिलानेसे पागलपन मिटताहै (४) इस के योगसे कई प्रकारके घी बनाकर पीनेसे अपस्मार मिटताहै (५) इसका २॥ तोला ताजा रस पिलानेसे सब प्रकारके उन्माद रोग मिटतेहै (६)

इसके पंचांगको ठंडाईकी तरह पीस दूधमें छानकर पिलानेसे स्नायुजालकी निर्बलता मिटतीहै (७) दूधके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (८) इसको औटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (९) इसके ८ मासे स्वरसमे बराबर मिरचका चूर्ण और मधु मिलाकर पिलानेसे वमन बन्ध हो जाताहै (१०) दूधके साथ इसका सेवन करनेसे कई प्रकारके रोग मिटतेहैं (११) इसकी जडको कंठमें बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (१२) इस की जडके क्वाथसे बच्चोंका सतत ज्वर छूट जाताहै (१३) इसके पत्तोंकी बीड़ी बनाके पीनेसे कास और श्वास मिटताहै (१४) यह भीतरके अर्शको मिटातीहै ।

संख्या (५१३)

(सं०) शठी, द्राविडकः, कर्चूरकः, कल्पकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कचूर	कचूर	कचूरो	कचोरा	गंधशठी	नरकचूर	गंट्ला कचोरमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
——	गटकचोरा	जरम्बात	इरकुलकाफूर	Curcuma zedoaria C. Zeram	The long & the round zedoary

स्थान—कचूर हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें बोया जाताहै ।

प्रयोग-(१) कचूर—कड़वा, चरपरा, उष्ण, लघु, रोचक, दीपन, सुगन्धयुक्त और उत्तेजक होताहै और पेटकी बादीकी पीडा मिटाताहै (२) इसके चूर्ण की फक्की लेनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (३) चोट और मोचपर इसका लेप किया जाताहै (४) मुखका चिप चिपाट मिटानेके लिये इसको चूसतेहैं (५) बच्चा होनेके बाद स्त्रियोंकी निर्बलता मिटानेके लिये जो पाकादि बनातेहैं उनमें कचूर मिलाया जाताहै (६) सर्दी या अतिश्याय मिटानेके लिये कचूर पीपल और दालचीनीके क्वाथमें मधु मिलाके पिलातेहैं (७) शरीरकी बादी की पीड़ा मिटानेके लिये इसका लेप करतेहैं (८) इसका क्वाथ पिलानेसे

पेटकी बादीकी पीडा मिटतीहै (९) इसको फिटकरीके साथ पानीमें पीसके सन्धियोंकी चोट और चोटसे नीलपड जाने पर लेप करतेहै (१०) खासी और कफको मिटानेके लिये इसके छोटे २ टुकडोंको मुखमें रखके चूसना चाहिये (११) सूखी खासी मिटानेके लिये इसके पौने चार मासे चूर्णकी फक्की देनी चाहिये (१२) कचूर-ठंढा, औषधिकी तीक्ष्णताको कम करनेवाला और बल बढानेवालाहै (१३) गलेका कफ मिटानेके लिये गवैया लोग कचूरको चूसा करतेहै (१४) अपशब्दकी नलीके ऊपरके भागकी और मल की दाहको मिटानेके लिये इसको जलमें पीसकर पिलाना चाहिये (१५) काली मिरच, मुलहटी और मिश्रीके साथ कचूरको ओटाके पिलानेसे कफ और श्वासकी नलिकाके रोग मिटतेहैं (१६) विपूचिकामें इसका काथ पिलातेहैं (१७) इसका गुनगुना लेप लगाकर ऊपर पान बाधनेसे अडकोप की सर्दीकी सूजन उतर जातीहै (१८) इसको दातोंमें रखनेसे दातोंमें रोग नहीं होताहै (१९) इसकी मूग प्रमाण गोलिया बनाके २-३ गोली देनेसे हृल्लास और वमन मिटतीहै (२०) इसको पीसकर लगानेसे मुहासे मिटतेहैं इसकी जड हल्दी जैसी पीली होतीहै ।

संख्या (५१४)

(सं०) शणः, माल्यपुष्प०, वमनः, त्वक्सारः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सण	शन	शण, सण	ताग	शनगाछ	सणी	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Crotolaria juncea C. tenuifolia	Sunn or sun hemp Indian hemp False Brown or Flax hemp

स्थान—सनके उच हिमालयसे सीलोन तक हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) सण-खट्टी, कपेली और उष्ण होतीहै (२) वात, कफ और आलस्यको मिटातीहै (३) यह वामक और आमनाशकहै (४) जिग

के समयपर बालक होनेमें पीडा, अधिक हो, और विलम्ब हो, उसको इसका सेवन करानी चाहिये (५) इसके सेवनसे मलकी रुकावट मिटतीहै (६) जमेहुए रुधिरपर इसका लेप करनेसे बिखर जाताहै (७) इसके पुष्प प्रदर और रक्तविकारको मिटातेहैं (८) रुधिर शुद्ध करनेके लिये सनके बीजोंको प्रयोग करतेहैं (९) इसके बीजोंको पीस कर बुरकानेसे कांचका निकलना बन्ध होताहै (१०) इसकी छाल, उडद और हल्दीके चूर्णका धुंआ पिलानेमें श्वास, उर्ध्ववात, कास, गल रोग और सब प्रकारकी हिचकी मिटतीहै (११) इसके बीज और गेहूंका आटा बराबर २ ले, उनको बराबर घीमें पकाके, गुड़के साथ ३ तीन दिन तक खिलानेसे स्नायुक (नारू) मिटताहै।

संख्या (५५४)

(सं०) शणपुष्पी, शणघण्टिका, पीतपुष्पी, स्थूलफला,।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वनशण	शणहुली	शणपुष्पी	खुळखुळ	झनझनियां	छोटीशण	जनुमु, गोगुरु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
जणप	सणबुगिड			Crotalaria verrucosa	

स्थान—शणपुष्पीके पौधे हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें होतेहैं।

यह पोधा २—३ फुट ऊंचा होताहै, इसके नील पीले और श्वेत पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) यह—कडवी, कपेली, और वामकहै। अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, सन्निपात, और कंठ, मुख, हृदय और पित्तके रोगोंको मिटातीहै (२) इसकेबीज शीतल, ग्राही और पचनेमें भारी होतेहैं (३) इसके पत्तोंका रस मुंहमे लार गिरनेको कम करताहै (४) इसके पत्तोंका रस मर्दन करनेसे खुजली और पीपवाली पीले रंगकी फुन्सिया (जो बहुधा हाथ पेरोंमें इकट्ठी छत्तेके छत्ते होतीहैं) मिट जातीहै (५) इसके पत्तोंका रस पि-

खानेसे फुन्सिया और खुजली मिटतीहै अथवा इसकी कोमल शाखाओंका रस मर्दन करनेसे और पिलानेसेभी रक्त रोग मिटतेहैं ।

संख्या (५१६)

(सं०) शतपुष्पा, शताह्वा, कारवी, शताची ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोषा, सुवो	सोया	शुवादाणा	बाळंतशोप	शुल्फा	सोयेकेबीज	सदाप

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन्	अंग्रेज़ी
शतकुप्पे (इ)	सदाप	शबित		Peucedanum graveolens P Sona	Dill

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै ।

इसके १० तोले बीजोंमेंसे ३ या ४ तोले सुगन्धित तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) सोया-हल्का, तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, उष्ण और अग्निदीपन है (२) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़ गर्म करके फोड़े फुन्सियों पर बांधनेसे वे जल्दी पक जातेहैं (३) पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके बीजोंका क्वाथ करके पिलातेहैं (४) सोंठके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे अजीर्ण और मन्दाग्नि मिटतीहै (५) गुडके साथ आटाके पिलानेसे स्त्रियों की पेटकी पीड़ा मिटतीहै (६) इसका पाक बनाके खानेसे या इसके चूर्ण में मिश्री मिलाके दूधके साथ फकी लेनेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ताहै (७) बालक होनेके पीछे स्त्रियोंको इसका हिम या फांट पिलानेसे हृदयको लाभ होताहै (८) इसके चूर्णमें मिश्री मिला, दूधकी लस्सीके साथ फकी लेनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (९) तिल या तिलकी जड़के क्वाथके साथ इसके बीजोंके चूर्णको फकी देनेसे स्रोतोंका अवरोध मिट जाताहै (१०) इसके बीजोंको इंद्रोलीके साथ पीस गर्मकर लेप करनेसे गांठ बिखर जातीहै (११) इसकी भस्मके बुरकानेसे पुराने घाव भर जातेहैं (१२) यह दोषोंको पचानेवाला और बद्धकोष्ठको मिटानेवालाहै (१३) इसके शाकको सिरके नीचे रखनेसे

वात, पित्त, दाह और शोपको मिटातीहै (४) जवारकी शक्करके गुण—यह कुछ उष्ण, कड़वी, बहुत पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रोचक और सार होतीहै। दाह, वात, पित्त और रुधिरविकारको मिटातीहै (५) जवारकी शक्कर—ठण्डी, दीपन और रेचक होतीहै, पित्तको कम करतीहै, और ज्वरको मिटातीहै। गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीण और वृद्ध मनुष्यको इससे विरेचन करानेसे कोई उपद्रव नहीं होताहै। (६) मधुशर्कराके गुण—यह पचनेमें भारी, शीतल, रूक्ष, कषेली, छेदक, पाकमें मधुर और वीर्यवर्द्धक होती है। वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृषा और पित्त कफको मिटातीहै। (७) पुष्प शर्कराके गुण—यह स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको मिटानेवालीहै।

संख्या (५२२)

(सं०) शल्लकी, महेरुणा, कुंदुरुकी, सुरभिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सेळो	सालई	सालेडा	सालई	शलइ	सलई	अडुग

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	आनेव्याल			Boswellia serrata B thurife a	Indian Olibanum tree

पहिचान—इस वृक्षकी उंचाई ३० फुटकी और पेड़की गुलाई ५–६ फुटकी होतीहै, इसकी छाल प्रायः आध इंच मोटी होतीहै। यह जबतक ताजी रहतीहै तबतक रसदार रहतीहै, यह बहुधा कुछ हरे, खाखी, रंगकी होतीहै, फागुन चैतके आस पास इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं, और जेठमें नवीन पत्ते आजातेहैं, इसकी कोमल डालियें और पत्ते रूएदार होतेहैं। इसकी डालियोंके अन्तमें ८–१५ इंच लम्बी पत्तोंकी सींकें लगतीहैं। उनके ८ से १५ जोड़े पत्तोंके लगतेहै वे आमने सामने या कुछ अन्तरसे लगा करतेहैं। इसके श्वेत

रंगके पुष्प लगतेहैं। इसके नीमके पत्तों जैसे पत्ते लगतेहैं और तिखूंटे पीले फल लगतेहैं।

फूलने फलनेका समय—जब इसके पत्ते गिरजातेहैं तब पुष्प निकलने लगतेहैं कभी पुराने पत्ते गिरनेके पहिले और कभी नवीन पत्ते निकलनेके पीछे पुष्प निकलतेहैं।

गुण—(१) यह कषेली, शीतल, मधुर, कडवी और शरीरको पुष्ट करनेवालीहै। कफ, पित्तातिसार, रक्तपित्त, व्रण, रुधिरविकार, वात, पित्त, कफ, अर्श, पकातिसार और कुष्ठको मिटातीहै (२) इसके फल और पुष्प, कुष्ठ अरुचि, कफ और वातार्शको मिटातेहैं (३) इसके गोंदको कुन्दरुगोंद कहतेहैं उसके प्रयोग कुन्दरुके साथ लिखेहैं।

संख्या (५२३)

(सं०) शाकः, क्रकचपत्रः, खरपत्रः, श्रेष्ठकाष्ठः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सागवान	सागवान	शाग, साग	सागवान	शेगुनगाछ	सागौन	टेक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	त्याग			Tectona grandis	Teak The teak tree

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमोत्तर प्रदेश, दक्षिण और मध्यहिन्दुस्थान, बंगाल, आसाम, सिकम, मनीपुर, ओडीसा और झांसी आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष बहुत ऊंचा होताहै इसकी ६० से ८० फुट उचाई पर शाखा फूटने लगतीहै। इसके स्कंध (पेदड़) की गुलाई १० से २५ फुट तक होतीहै, सागवानके पत्तेको पहिचाननेके लिये उसको थोडा रगड़ के उस ठौर अपने मुंहका थूंक लगाके रगडतेहैं जो वह लाल होजाय तो पत्ता सागवानका है नहीं तो और किसीका है। इसकी लडकी की दरारोंमें

एक प्रकारका श्वेत द्रव जम जाताहै वह पानमें चूनेकी ठौर काममें आताहै, शुष्क और उष्ण ठौरमें, कार्ती, मँगशिर, या पौषके प्रारम्भमें इसके पत्ते गिर जातेहै। जो वृक्ष आर्द्रभूमिमें होतेहै उनके पत्ते माघ फागुन तक नहीं गिरतेहै वैशाखमें इसके नवीन पत्ते आजातेहै इसकी छोटी शाखें चोखूंटी होतीहै और उनके कूटोंके वीचमें नलियें होतीहै। इसके पत्ते दो तीन फुट लम्बे होतेहै, वे ऊपरसे खरदरे और नीचेसे सफेद रुंएदार होतेहैं, इसके सफेद रंगके पुष्प लगतेहै। इसके फलकी मध्य रेखा आध इंच लम्बी होतीहै, और फलमें १-२ या ३-४ वीज निकलतेहै। इसके बीजकी खोखल ५ खानेकी दीखतीहै।

फूलने फलनेका समय-अषाढ श्रावणमें यह वृक्ष फूलताहै कातीसे पौष तक इसके फल पकतेहै। इसके बीजोंको पौषमें डालियों परसे ही उतारके एकत्र कर लेने चाहिये। इसकी लकडीको ओटानेसे राल जैसा एक प्रकारका पदार्थ निकलताहै, इसके पत्तोंमेंसे लाल या पीला रंग निकलता है। इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका गाढा तेल निकलताहै।

प्रयोग-(१) शाक-(सागवान) कपेला, शीतल, और रक्तपित्त-नाशक है (२) इसकी लकड़ीको घिसकर लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (३) पित्तशोथको वखेरनेके लिये इसकी लकडीको घिसके लेप करना चाहिये (४) पित्तबढ़नेसे जो मंदाग्नि होकर आमाशयमें दाह हो जातीहै उसको मिटानेके लिये इसके चूर्णकी साढे पाच मासेसे लेके १२॥ मासे तककी फकी देनी चाहिये (५) इसकी लकडीके कोयलेको पोस्तके पानीमें बुझा पीसके लेप करनेसे पपोटोंकी सोई उतरतीहै (६) आंखोंकी ज्योति बढ़ानेके लिये उक्त लेप करतेहै (७) इसकी छालके चूर्णकी फकी अतिसारको मिटातीहै (८) इसके फलोंमेंसे गाढा और सुगंधवाला तेल निकलताहै उस तेलके लगानेसे मस्तकमें बाल उगजातेहै (९) शरीरपर इसका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (१०) इसकी छालका हिम पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै (११) इलायची, वंशलोचन, मिश्री और इसकी छालके चूर्णकी दूधके साथ फकी देनेसे बल बढताहै (१२) इसकी लकड़ीको जलमें घिसकर लगानेसे भिलावेके तेलसे अथवा काजूगुलीके छिलकेके तेलसे पैदाहुई

दाह युक्त शोथ मिटजातीहै (१३) इसके फलको पीस पुल्टिस बनाके इन्द्रीके पासके बालोंपर बांधनेसे मूत तुरंत उतर जाताहै (१४) भारवाही चौपायों के घाव पर इसके राल जैसे गोंदका लेप करनेसे उनमें कीडे नहीं पडतेहैं।

—:*:—

संख्या (५२४)

(सं०) शाखोटः, पिशाचद्रुः, धूकावासः, क्षीरनाशनः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सहोडा(रा)	साहोडा	साहोडा	शेउडागाछ	सहोडा	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Streblus asper Trophus aspera	

स्थान—शाखोटके वृक्ष हिन्दुस्थानके जागल देशोंके अधिक शुष्कभागों में रुहेलखण्डसे पूर्व और दक्षिणकी ओर टैवनकोर तक बहुत होतेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊचाई २० फुटकी होतीहै। इसकी छाल आध इंच मोटी, सफेद, कुछ हरी, श्वेत भूरे रंगकी, चिकनी होतीहै और पुरानी होनेपर खरदरी होजातीहै। इसकी अंतर छालमें दूध निकलताहै। इसके पत्ते कुछ गोल दोनों ओरसे खरदरे और २–४ इंच लम्बे होतेहैं उनपर छोटी २ उठीहुई बूंदें होतीहैं, इसके पुरुष और स्त्री जातिके पुष्प अलग २ लगतेहैं, इसके पीले रंगका फल लगताहै उसमें एक बीज निकलताहै। स्त्री जातिके वृक्षोंकी अपेक्षा पुरुष जातिके वृक्ष बहुत होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—पोषसे फागुन तक इसके पुष्प लगतेहैं वैशाखसे अषाढ तक इसके फल पक जातेहैं।

प्रयोग—(१) सहोडा—रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतिसारको मिटाताहै (२) इसकी छालको ओटाके पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै (३) घेलगिर और इसकी छालको ओटाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (४) इसकी छालके क्वाथमें एरंडका तेल डालकर पिलानेसे

मिटताहै (५) इसका दूधिया रस बिवाई में लगानेसे उसका घाव मिल जाताहै (६) फोड़े फुन्सी या घावोंपर इसका दूधिया रस लगानेसे दुर्गंध या विष युक्त हवा का असर नहीं होताहै (७) बिगड़े हुए घाव या ऐसे घाव जो हड्डीतक पहुंच गये हों उनपर इसकी जडका लेप करतेहैं (८) इसकी जड़को घिसके सापके दंशपर लेप करतेहै (९) इसकी सूखी जड़के २॥ से ४ रत्ती तक चूर्णकी फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै (१०) पेशियोंकी सूजनपर इसके रसका लेप करते हैं (११) इसकी टहनियां दांतुन के काममें आतीहै (१२) इसके दूधिया रसका जामन देनेसे दूध बहुत शीघ्रतासे जम जाताहै और उसका दहीभी गाढ़ा रहताहै (१३) दक्षिण हिन्दुस्थानके लोग अपने घरोंको बिजलीसे बचानेकेलिये चैत बैशाखमें इसकी टहनियोंको काटके छप्परमें और उनके चारों ओर जमादेतेहैं (१४) इसकी छालको कांजीके साथ पीस, उसमें घी मिलाकर लेप करनेसे वातशोथ मिटताहै (१५) इसके पत्तोंके रसमें पारा मिलाकर नाभिके आस पास मलनेसे वायु शूल मिटतीहै ।



संख्या (५२५)

(सं०) शालपर्णी, एकमूला, अंशुमती, ध्रुवा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सरिवन	समेरवो	साळवण	शालपान	सरिवन	मुय्यकुोन्ना

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
	मूरुयलहोन्न			Desmodium gangeticum Hedysarum g.	

स्थान—शालपर्णी हिन्दुस्थानके छोटे २ पहाड़ और जंगलोंमें सब ठौर होतीहै ।

पहिचान-इसका छोटा क्षुप होताहै । एक २ डंडी पर तीन २ पत्ते लगतेहैं । इसके बहुतसी छोटी २ फलियां लगतीहैं ।

प्रयोग-(१) यह -कड़वी, पचनेमें भारी, उष्ण, मीठी और रसायनी, है वीर्य और धातुको बढातीहै, विषमज्वर, वादी, प्रमेह, अर्श, शोथ, दाह, ज्वर, श्वास, विष, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, कास, अतिसार और कृत्रिम विषको मिटातीहै (२) यह दशमूलकी औषधियोंमें है। इसकी जडको ओटा के पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (३) चिरायतेके साथ इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे ज्वर छटताहै (४) नाभि, बस्ति और भग पर इसकी जडका लेप करनेसे मूढ गर्भ बाहिर निकल आताहै।

संख्या (५२६)

(सं०) शाल्मली, रक्तपुष्पा, तूलवृक्षः, मोचा।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेमलसामनो	सेमल(र)	शेमळो	काटसावर	शिमुलगाछ	सेमर	मुझमूरगा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
यलवंगर	यलवड़मर			Bombax malabaricum Salmalia malabarica	Silk cotton tree

स्थान—सेमलके वृक्ष हिन्दुस्थानके राजपूताना आदि अधिक उष्ण जंगलोंमें होतेहैं।

पहिचान—सेमलका बडा भारी वृक्ष होताहै। इसकी ऊंचाई १५० फुट और इसकी पेड़की गुलाई ४० फुटकी होतीहै, यह सीधी होतीहै। इसकी और पुरानी डालियोंकी छाल, सफेद और खाकी रंगकी होतीहै। उसमें आरपार खड़ी दरारें होतीहैं। इसकी डालियों पर काली नोकके आध इंच लम्बे बहुतसे कांटे लगतेहैं। इसके ५, ७ पत्ते लगतेहैं। इसके पुष्प बडे और किरमची रंगके होतेहैं। इनकी पंखड़िया मोटी होतीहैं। काती मॅगशिरमें इसके पत्ते गिरजातेहैं। और चैत्रतक पीछे नहीं आतेहैं।

फूलने फलनेका समय—माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगतेहैं। चैत वैशाखमें इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग-(१) सेमल-मधुर, पिच्छिल, शीतल, कषेला, हल्का, स्निग्ध, वृष्य और बल्यहै (२) इसका गोंद ग्राहीहै, अतिसार मिटाताहै और पुष्टाई की औषधियोंमें काम आताहै (३) इसके गोंदको दूधमें डालके पीनेसे बल बढताहै (४) इसके सूखे पुष्प, पोस्तके दाने और बूरा इन सबको दूधमें ओटा गाढा कर आठ आठ मासेकी मात्रा दिनमें तीन वेर देनेसे रक्तपित्त और रक्तार्श मिटताहै (५) इसकी जड़को ओटाकर पिलानेसे बल बढताहै (६) इसकी जड़को सामलेका मूशला कहतेहैं। वह उत्तेजकहै (७) इसकी अधिक मात्रा देनेसे वमन होतीहै (८) इसकी छोटी जड़ोंको छायामें सुखाकर उसका पाक बनाके खाने से पुरुषार्थ बढताहै और नपुंसकता मिटतीहै (९) सवा मासेसे दो मासे तक मोचरसमें बराबर शक्कर मिलाकर फक्की देनेसे बच्चोंका अतिसार मिटता है (१०) छोटे वृक्षकी जड़की अन्तकी नोकोंको पीसकर दूध मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै और उनके चूर्णकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटताहै (११) इसके पत्तोंका कल्क बांधनेसे पेशियोंकी सूजन मिटतीहै (१२) रसोतको गला छान उसपर मोचरस बुरकाके पिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है (१३) इसके ३, ४ बीज निगलनेसे शीतला कम निकलतीहै अथवा बिलकुल ही नहीं निकलतीहै (१४) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे सुरा प्रमेह मिटताहै (१५) इसके पुष्पोंको रातभर पानीमें भिगो मल छान उसमें राईका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे प्लीह मिटताहै (१६) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुमें मिलाकर चाटनेसे रक्त पित्त मिटताहै (१७) इसके कांटोंको दूधके साथ पीसके लेप करनेसे मुखकी कांति बढतीहै।

संख्या (५२७)

(सं०) मोचरसः, पिच्छः, शाल्मलीवेष्टः, मोचस्रावः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोचरस	मोचरस	मोचरस	मोचरस	मोचरस	मोचरस	बूरगुबंक

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
लवपिशिन्	यलवन्हह.गी-नु				Gum of silk cotton tree

मोचरस शामलाका गोंद होताहै।

प्रयोग-(१) सेमलका गोंद-कपेला, ग्राही, शीतल, मधुर, रसायन, स्निग्ध, पचनेमें भारी, आयुर्दाको स्थिर करनेवाला तथा बल, बुद्धि, वीर्य और धातुको बढानेवाला, शरीरका रंग उज्ज्वल करनेवाला, गर्भस्थापक और कफकारक है (२) वात, अतिसार, प्रवाहिका, रुधिरविकार, पित्त, दाह, आमातिसार और रक्तातिसारको मिटाताहै (३) एक महीने तक इसका सेवन करनेसे पारेके विकार मिटतेहै (४) मोचरस और समुद्रफेनको खरलकर लेप करनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटतीहै (५) कई मनुष्य मोचरसको और सुपारीके पुष्प काममें लातेहैं।

संख्या (४२८)

(सं०) श्वेतशाल्मली।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सफेदसांमलो	सफेदसेमर	धोलोशेमलो	पांढरासावर	श्वेतशिमुल	सफेदसिम्बल	तेल्लबूरगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेल्लियलव	बिळीमुल्लुबूरगा			Eriodendron anfractuosum Bombax pentandrum	The white cotton tree Kapok floss

स्थान—सफेद सेमलके वृक्ष हिन्दुस्थान और सीलोनके उष्ण भागोंके जंगलोंमें बहुत होतेहैं।

पहिचान—यह एक सीधी पेड़का ऊंचा वृक्ष होताहै, जब यह छोटा होताहै तब इसके कांटे लगा करतेहैं। इसके मैले सफेद पुष्प लगतेहैं वे लाल पुष्पके सेमलके पुष्पोंसे बहुत छोटे होतेहै। इसका फल कुछ बडा, जियादा धुंधले रंगका और गोल होताहै। कोनेदार नहीं होता, माघके महीनेमें इसके पत्ते गिर जातेहैं। इसके धुंधले लाल रंगका गोंद लगताहै।

फूलने फलने का समय—इसके पत्ते गिरनेके पीछेही पुष्प लग जातेहैं और वैशाखमें फल पकतेहैं।
इसके बीजोंमेंसे तेल निकलताहै वह अच्छे लाल या धुंधले, भूरे रंगका होताहै।

प्रयोग—(१) इसका गोंद ग्राहीहै (२) इसकी फंकी देनेसे अतिसार मिटताहै (३) इसकी रुई अधिक ठण्ढी और लचलची होतीहै इसलिये रो[ई]के तकिये आदिमें भराई जातीहै और औषधिके काममें आतीहै (४) इसके सूखे कच्चे फल औषधिके काममें आतेहैं। अत्तार लोग इसके फलोंके बदलेमें दूसरे वृक्षोंके फल देदिया करतेहैं, जिनमे कई विषैल फल होतेहैं। इसलिये उनको वृक्षके नीचेकी पृथ्वी परसे एकत्र करलेना चाहिये। लाल सेमलके फलसे इनमें गुण कुछ कम होताहै (५) इसके कच्चे फल ग्राही और चरपराहट मिटानेवालेहैं (६) इसकी जड़को भी सेमलका मूशला कहतेहैं। लाल पुष्पके सेमलकी जड़से इसकी जडमें गुण अधिकहै। इसकी जडको कतर, छायामें सुखा, पीस, उसमें इसकी छालका रस और शक्कर मिलाके खातेहैं। इसके पत्ते और बीज औषधिके प्रयोगमें आतेहैं (७) जब बच्चेके मूत्रकी शंका नहीं रुकतीहो तो उसको इसके गोंदकी फंकी देनी चाहिये (८) इसके छोटे वृक्षकी जड़का काथ पिलानेसे पुराना अतिसार और आमातिसार मिटताहै (९) इसका काथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होकर जलंधर और सर्वांग जलमय शोथ मिटजातीहै (१०) इसके एक तोले कोमल पत्तोंको जलके साथ पीस छान, उसको पीके ऊपरसे मक्खन निकाला हुआ दूध पीवे, ऐसे ३, ४ दिन तक प्रातःकाल पीनेसे नवीन मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) इसके छोटे या कच्चे फलोंका शाक बनाया जाताहै।

संख्या (५२९)

(सं०) शिरीषः, भण्डिलः, मृदुपुष्पः, शुकप्रियः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सिरस	सिरस	शरडो	शिरस	शिरीषगाछ	सिरस	दिरसेनमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंगेज़ी
काड्वाडई	बागेमर	सुल्तानुल् अश्जार	दरख्तेजक-रिया	Albizzia Lebbek Acacia sirissa	The siris tree

स्थान—शिरपके पेड़ हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं और अपने आप भी उगतेहैं।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ४० से ६० फुटकी होतीहै। इसकी पेदड़ छोटी होतीहै। उसकी छाल आध इंच मोटी और धुंधले या कुछ भूरे रंगकी और उसमें बहुतसी छोटी बड़ी दरारें होतीहैं। इसके २ से ८ तक जोड़े लम्बे और चौड़े पत्तोंके लगतेहैं। पत्तोंकी बिचली सींकके दोनों ओरके भाग बराबर नहीं होतेहैं। इसके सुगंधयुक्त सफेद पुष्प लगतेहैं, इसकी फलिया ८ से १२ इंच लम्बी दो इंच चौडी और पतली, इनके पीले रंगकी होतीहै जिनमें ८ से १२ तक बीज निकलतेहैं। उष्णकालमें इसके कुछ पत्ते गिर जातेहैं और फागुन, चैतमें नये आजातेहैं।

चैत वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं परन्तु दूसरे समयमें भी लगतेहैं। भादुवेमें इसकी फलियां पकतीहै वे शीतकाल और उष्णकालमें वृक्ष पर ही लगी रहतीहै। इसके बंबूलके गोंद जैसा एक प्रकारका गोंद लगताहै वह पानीमें गल जाताहै। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) सिरस-मधुर, शीतल, कड़वा, कपेला, और पचनेमें, हल्काहै त्रिदोष, विसर्प, कास, व्रण, विष, स्वेद, त्वग्दोष, आमा, कुष्ठ और कंडू को मिटाता है। इसके बीज आखके अंजनकी औषधियों में डाले जाते है (२) इसका तेल कोढमें लगाया जाताहै (३) नेत्रकी पीडामें इसकी छालका लेप करते हैं (४) इसके पुष्प ठण्डे हैं (५) गर्मीके फोड़े, फुन्सी और पित्तशोथपर इनका लेप करतेहैं (६) विषैले जीवोंके दंशपर इसके पुष्पोंका लेप करतेहैं (७) इसके ६ मासे बीजोंको पीसके फक्की देनेसे गडमालाकी पेशियोंकी सूजन उतरतीहै (८) बीजोंको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे गंडमालाकी सूजन उतरतीहै (९) इसकी जडकी छालके चूर्णका मंजन करनेसे पके हुए मसूडोंका रोग मिटताहै

और दात दृढ़ हो जातेहै (१०) पत्तोंका लेप करनेसे आंखके गोलेकी सूजन मिटतीहै और पीप बन्ध हो जाताहै (११) दूधकी लस्सीमें इसके तेलकी बूंदें डालके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१२) इसके बीजोंके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै (१३) इसके तेलका लेप करनेसे अर्श मिटताहै (१४) इसके पत्तोंके कल्कको पानीमें छान मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१५) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे जलंधरवालेकी सूजन उतर जातीहै (१६) इसके बीजोंको पानीके साथ पीस, पोटली बांध जिस ओर मस्तक पीड़ा हो उसी ओरके नाकके छिद्रमें २॥ बूंदें टपकानेसे मस्तक पीडा मिटतीहै (१७) इसके पत्तोंके रसका अंजन करनेसे नेत्र पीडा मिटतीहै (१८) इसके गोंद, और काली मिरचको पीसकर मंजन करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१९) इसके बीजोंके तेलके लगानेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै (२०) इसके डेढ तोले पत्ते और दो मासे काली मिरचको पीसके ४० दिन पीनेसे कुष्ठ मिट जाताहै (२१) पुराने शिरसकी पेडड़ और जड़की छाल, बीज और पुष्पोंको एक चम्मच गोमूत्रके साथ एक दिनमें ३ वेर पिलानेसे विष उतर जाताहै (२२) मिथुन की संक्रांतिमें इसकी ७ मासे छालको पीसकर चांवलोंके धोवनके पानीके साथ ३ दिन पीनेसे एक वर्षतक सर्पादिक का विष नहीं चढताहै (२३) इसके बीज और काली मिरच बराबर ले बकरीके मूत्रमें पीसकर अंजन करनेसे सन्निपातकी मूर्च्छा मिटतीहै (२४) इसकी छालके चूर्णको १०० वेर धोये हुए घीमें मिलाकर लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै (२५) इसकी जड और बीजके चूर्णकी नस्य देनेसे सूर्यावर्त मिटताहै (२६) इसके और करंजके बीजोंको पीसकर अंजन करनेसे नेत्ररोग, उन्माद और अपस्मार मिटतेहैं (२७) इसके पत्ते या पुष्पोंके रसकी सफेद मिरचोंके सातदिनतक भावना देकर, सर्प काटे हुए मनुष्यको ने मिरचें खिलानेसे या उसके उनका अंजन करनेसे विष उतर जाताहै (२८) इसके बीजोंको थूहरके दूधमें पीसके लेप करनेसे मेंडकके दंशका विष उतरताहै (२९) इसके और आमके पत्तोंके रसको गुनगुनाकर कानमें टपकानेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै (३०) इसके बीजोंको महीन पीसकर सुंघानेसे बन्ध जुकाम मिटताहै (३१) इसकी छालको ओटाकर कुल्ले करनेसे दतपीडा मिटतीहै (३२) इसके पत्तोंके रसमें कपड़ा भिगो, सुखा,

ऐसे तीन बेर भिगो, सुखाकर, उसकी बत्ती बनाके चमेलीके तेलमें जला, काजल पाड़ कर उसका अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (३१) इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे अडकोषोंकी खुजली मिटतीहै ।

संख्या (५३०)

(सं०) पीतशिरीषः ।

L, Albizzia odoratissima Mimosa o

स्थान—पीली शिरसके वृक्ष सिन्धु नदीसे पूर्व बङ्गाल, आसाम, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि बहुत देशोंमें होतेहै । इसके गहरा भूरा फीका और पानीमें गलनेवाला गोंद लगताहै । इसकी छालमेंसे रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) इसकी छालका लेप करनेसे कुष्ठ मिटताहै (२) पुराने और कठोर फोड़ेपर इसका लेप करतेहै (३) इसके पत्तोंको घृतमें तलके खिलानेसे कफ मिटताहै (४) इसकी सूखी छालको पीसके बुरकानेसे घाव भर जाताहै (५) इसके, सम्भालूके और सहिंजनेके पत्तोंको पानीमें ओटाके बफारा देने और उनको बांधनेसे सन्धिकी वातपीडा मिटतीहै (६) इसकी छाल और काले तिलोंको बराबरले सिरकेमें पीसके मुखपर मलनेसे कालापन मिटताहै (७) इसके बीजोंकी माला बनाके बच्चोंके गलेमें पहिरानेसे उनके दांत आनेके समय कष्ट नहीं होताहै ।

संख्या (५३१)

(सं०) शिलाजतु, शैलनिर्यासं, अश्मजं, अश्मलाक्षा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सलाजीत	शिलाजीत	शिलाजित	शिलाजित	शिलाजित्	शिलाजीत	शिलाजतु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शिलाजित	सिलाजितु			Asphaltum punjabinum Bitumen judaicum	Jews s pitch Asphaltum

उत्पत्ति स्थान—जिन२ पहाडोंमें शिलाजीत होताहै, वे पहाड़ उष्ण-कालकी अत्यन्त ऊष्मासे बहुत तप जानेके कारणसे एक प्रकारका लाख या गोंद जैसा पदार्थ छोड़तेहै, उसको शिलाजीत कहतेहै। सोने, चांदी, तांबे और लोहके भेदसे शिलाजीत चार प्रकारका होताहै (१) सोनेके शिलाजीतका रंग गुडहलके पुष्प जैसा लाल होताहै (२) चादीके शिलाजीत श्वेत होताहै (३) तांबेका शिलाजीत मोरके कंठके रंग जैसा होताहै (४) लोहेका एक, गिद्धकी पांख जैसा होताहै वह सबमें उत्तम गिना जाताहै। दूसरा गोमूत्र जैसी गंधवाला और काला होताहै। तीसरा, गूगल जैसा होताहै।

शिलाजीत बनाने और शुद्ध करनेकी रीति–(१) जहां शिलाजीत निकलता हो, वहांके पत्थरका टुकडा ले उसके बहुत छोटे २ टुकडे कर, उष्णजलमें एक या दो पहर तक भिगो रक्खे, पीछे उनको मलकर निर्मल जेठा निकालके मृत्तिकाके पात्रमें भरकर धूपमें रख देवे, जब उसका मैल नीचे बैठ जावे, तब उस नितरे हुए पानीको मृत्तिकाके दूसरे पात्रमें लेलवे। ऐसे दो महीने तक धूपमें रख२ कर पलटते रहनेसे निर्मल शिलाजीत होजाताहै। इसकी नीचेकी तलछटको भी ऐसेही शुद्ध करनेसे उसमें जो कुछ शिलाजीत रह गया हो, वह निकल आवेगा और नीचे केवल मैल रह जावेगा, इस निर्मल शिलाजीतको मंदाग्नि पर चढाके, गोली बनानेके लायक गाढा कर लेना चाहिये (२) वेचनेवाले जो शिलाजीत लातेहै, उसको लोहेके पात्रमें डाल दुगुने उष्णजलमें भिगोकर धूपमें रख देना चाहिये जब वह सब गलकर पानी जैसा होजावे दूसरे पात्रमें अफीमके जेठेकी भांति उसका चोवा टपका लेना चाहिये। ऐसे करते २ जब इसके नीचे कुछ भी मैल नहीं रहे और केवल जेठाही रह जावे, तब उसको उक्त रीतिसे गाढा कर लेवे, इस प्रकार से निकाले हुए शिलाजीतको गोदुग्ध, त्रिफलाके काथ और जल भंगरेके स्वरसमें अलग २ एक२ दिन खरल कर धूपमें सुखा लेनेसे शुद्ध हो जाताहै (३) लोहेके शिलाजीतको केवल जलसे धोनेसे शुद्ध हो जाताहै (४) नीमकी अंतर छालके काथमें शिलाजीतको भिगो कसूंबेके जेठेकी भांति टपका कर मंदाग्निसे गाढा कर लेना चाहिये (५) अथवा गिलोयके काथमें इसी रीतिसे शुद्ध कर लेना चाहिये। शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा यह है कि निर्धूम अग्निमें रखनेसे उस-

की निर्धूम लोय उठने लगतीहै। अथवा थोड़ासा टुकडा पानीमें डालनेसे जो वह तैरता रहै तो उस टुकडेमें से कुछ पिलास लिये हुए काले रंगके धारवे पानीके पेंदे तक चले जातेहै जबतक वह टुकडा नहीं गलजाताहै तबतक उसी प्रकारके धारवे उसमेंसे निकलते रहतेहै, जब वह पेंद बैठ जाताहै तो उसमें से धारवे निकलके पानी के ऊपर तक चले आतेहै।

(१) धातु भेदसे शिला जीतके गुण—सोनेका शिलाजीत-कड़वा, मधुर, चरपरा, शीतल और विपाकमें चरपरा होताहै वात और पित्तके रोगोंको मिटाताहै (२) चांदीका शिलाजीत-शीतल, चरपरा और विपाकमें मधुर होताहै-कफ और पित्तके रोगोंको मिटाताहै (३) तांबेका शिलाजीत-तीक्ष्ण और उष्ण होताहै और कफके रोगोंको मिटाताहै (४) लोहेका शिलाजीत-हरेक रोगोंको मिटाताहै। यह तीन प्रकारकाहै। जिनमें एक, गिद्धकी पांख जैसा होताहै। यह कड़वा, सलोना, विपाकमें चरपरा और शीत वीर्य होताहै, यह सबमें उत्तम गिना जाताहै (५) दूसारा, गोमूत्र जैसी गंध वाला और काला होताहै। यह स्निग्ध, मृदु तथा पचनेमें भारी, कडवा, कषैला और शीतल होताहै (६) तीसरा-गूगल जैसा होताहै। यह कड़वा, सलोना, विपाकमें कटु और शीतवीर्य होताहै (७) शुद्ध शिलाजीत-चरपरा, कड़वा, उष्ण, विपाकमें चरपरा और रसायनहै। कंपवायु, प्रमेह, पथरी, मूत्रशर्करा, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, क्षय, श्वास, वात, अर्श, पांडु, अपस्मार, उन्माद, शोफ, कुष्ठ, उदररोग और कृमि रोगको मिटाताहै (८) एक मासे शिलाजीतको पीपल और इलायचीके साथ लेनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात मिटताहै (९) इसको त्रिफला और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (१०) इसको मधुके साथ चाटनेसे शुक्रज मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (११) गोमूत्रमें शिलाजीत मिलाके पीनेसे कुम्भकामला मिटताहै (१२) गिलोयके काथसे शुद्ध किये हुए शिलाजीतका सेवन करनेसे पंचकर्मसे शुद्ध हुए मनुष्य का वातरक्त मिटताहै (१३) इसको शक्कर युक्त दूधके साथ २१ दिन तक लेनेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटतेहै (१४) इसको शक्कर और कपूरके साथ लेनेसे मूत्रजठर और मूत्रातीत मिटताहै (१५) इसको मधुके साथ चाटनेसे प्रमेह मिटताहै।

संख्या (५३२)

(सं०) शिवलिंगी, आपस्तम्भिनी, चंडा, चित्रफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शिवलिंगी	शिवलिंगी	शिवळिंगी	शिवलिंगी	शिवलिंगिनी		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Bryonia lacinios^a	The Bryony

स्थान—इसकी बेलें हिमालयसे सीलोन तक सब ठौर होतीहै।

पहिचान—शिवलिंगीकी बेल होतीहै । इसके तीन २ पत्ते लगतेहै। इसके कच्चे फल गोल और हरे रंगके होते है । वे पकजाने पर कुछ लाल होजाते है। उनके ऊपर श्वेतचित्र होते हैं, इसके फलोंमें गोंद जैसा चेप निकलता है । उसचेप के भीतर कुछ चपटे बीज रहते है। उनके दोनों ओर जलेरी सहित शिवलिंग के आकार का चिन्ह रहता है ।

गुण—(१) शिवलिंगी–तिक्त, सारक, बलवर्द्धक, चरपरी, उष्ण दुर्गंधयुक्त और रसायन है और सिध्मरोग को मिटाती है (२) यह पारे को बांधती है (३) इसके बीज बहुत वामक हैं (४) इसके पत्तों को उबाल के उनका शाक बनाते है । इसके फल पकजानेके पीछे इसको औषधि के काम में लाना चाहिये ।

संख्या (५३३)

(सं०) शिंशपा, कृष्णसारा, पिच्छिला, भस्मगर्भा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलङ्गी
सीसम	सीसम	शीशम	शिसवा	शिशुगाछ	सीसम	इरुवुड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शिशपा	अगरुगिड			Dalbergia sissoo	The sissoo, The black wood Rosewood

स्थान—सीसम के वृक्ष हिन्दुस्थान में सर्व ठौर उगते हैं। ये बहुधा नदियों के किनारे वालूरेत या कंकरीली जमीन में बहुत होते हैं, ये हल्की जमीनमें अच्छे बढ़तेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ६० फुट या इससे कुछ अधिक ऊंचा होजाताहै, इसकी पेदड़ सीधी नहीं होतीहै और उसकी गुलाई ६ से १२ फुट तक होतीहै। इसकी छोटी शाखें लटकतीहुई और रुंएदार होतीहैं। इसकी पेदड़की छाल एक इंच तक मोटी भूरे या कुछ पीलास लियेहुए भूरेरंगकी होतीहै और उसकी पुरानी दरारें ऊंडी पड़कर एक दूसरीसे मिलजातीहैं। इसके पत्ते पुराने होनेपर कुछ लाल भूरे रंगके होजातेहैं। पत्ते गोल और नोकदार होतेहैं वे मार्गशीर्ष से गिरने लगतेहैं जो माघ या फागुन तक गिरते रहतेहैं। फिर नये पत्ते निकलने लगतेहैं, जो चैत वैशाख तक निकल चुकतेहैं। पूरे बढ़ेहुए पत्ते अच्छे साफ हरे रंगके होतेहैं, इसके कुछ चन्दनियां सफेद रंगके पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। इसकी फलियां बहुत पतली और चपटी होतीहैं। उनमें छोटे २ दो तीन चपटे बीज निकलतेहैं। इसकी लकड़ी बड़ी दृढ होतीहै। उसके बाहिरका भाग सफेद और भीतरका कुछ ललाई लियेहुए काले रंगका होताहै।

फूलने फलनेका समय—फागुन से जेठ तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं। कभी २ इसके अषाढ से आसोज तक दुवारा पुष्प लगतेहैं। कार्ती से माघ तक इसके बीज पकते रहतेहैं। इसकी लकड़ी और बीजोंमेंसे तेल निकालाजाताहै जो औषधिके काममें आताहै।

प्रयोग—(१) सीसम–चरपरा, कड़वा, कषेला, उष्ण, वीर्य, और अग्निवर्द्धक है (२) इसकी लकड़ीका बुरादा रक्तशोधकहै–(३) इसकी जड़ शोषकहै (४) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं इसके बुरादेके काथमें भी यही गुणहैं (५) इसका तेल त्वग्दोषमें काम आताहै (६) कोढ़में भी इसके पत्तोंका या बुरादेका काथ पिलातेहैं (७) इसके प

र्तोंके लुआब को मीठे तेलमें मिलाकर छिली हुई या रगड़ आई हुई चमड़ी पर लगानेसे शान्ति रहतीहै (८) मूत्रकृच्छ्रकी अत्यन्त पीड़ामें इसके पत्तोंका काथ पिलातेहै (९) सुगंधित और चरपरी औषधियोंके साथ इसकी छालकी गोलियां बनाके विसूचिकामें देतेहैं (१०) इसके पत्ते या बुरादेका काथ पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै (११) इसके बुरादेका शर्बत बनाके पिलानेसे रुधिरविकार मिटताहै (१२) इसका काथ पिलानेसे वसा प्रमेह मिटताहै (१३) इसके १० मासे बुरादेको आध पाव पानीमें ओटा आधा रख छान उसमें इसका शर्बत मिलाकर नित्य पीवे, ऐसे ४० दिन तक पीनेमें कोढ मिटताहै (१४) इसके पाव बुरादेको तीन सेर पानीमें रात दिन भिगो, औटा, आधा रखके छान लेवे, फिर उसमें तीन पाव बूरा डालके शर्बत बनालेवे यह शर्बत रक्तशोधकहै (१५) इसके पत्तोंको गर्म करके बांधने और उनके काथसे धोनेसे स्तन शोथ उतर जाताहै।

संख्या (५३४)

(सं०) शुक्तम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सिरको	सिरका				सिरका	पुळ्ळनील, मिडुद

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेजी
		खल	सिरकाह	Actum	Vinegar

स्थान—हिन्दुस्थानमें कई प्रकारके सिरके बनाये जातेहैं, और वे सब औषधिके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१) सिरमें जमे हुए दूषित पदार्थको निकालनेके लिये सिरकेको मीठे तेल या जलमें मिलाकर लगाना चाहिये (२) लू की दाह मिटानेके लिये सिरकेको मीठे तेल या जलमें मिलाकर शरीरपर मर्दन करना चाहिये (३) ईंटके टुकडेको गर्मकर सिरकेमें बुझाके सूंघनेसे मतिरयाय मिटताहै

(४) इसका वफारा देनेसे ज्वरकी उष्मा कम हो जातीहै (५) सिरकेके लेप या वफारेसे बाहिर के कीड़े और खिलाने पिलानेसे भीतरके कीड़े मर जातेहैं (६) कानमें सिरकेका वफारा देनेसे कानकी शूल और बहिरापन मिटताहै (७) मंदाग्निके कारणसे जो श्वासमें दुर्गंध हो जातीहै उसको मिटानेके लिये सिरकेमें नोंन डालके पिलातेहै (८) सिरकेमें नोन और फिटकड़ी डालके लगानेसे या कुल्ले करानेसे ममूड़ोंमेंसे रुधिरका वहना बंद हो जाताहै (९) सिरकेको उष्णजलमें मिलाके कुल्ले करानेसे गलेके घाव या छाले मिटतेहै (१०) ठण्डे जलमें सिरका मिलाके पिलानेसे दाह और तृषा मिटतीहै (११) अंगूरी सिरकेमें नोंन मिलाके पागल कुत्तेके दश पर लगातेहै (१२) सिरकेको हल्का करके अग्निदग्धपर या उष्णजल आदिसे जो छाले हो जातेहै उनपर लगातेहै (१३) सिरकेमें गंधक पीसके लेप करनेसे गठिया और छोटे जोड़ोंकी शोथ उतर जातीहै (१४) सिरकेमें मीठा तेल मिलाके कड़ी पड़ी हुई जोड़ों पर और गठियापर लगातेहै (१५) पुरुषार्थ बढानेके लिये सिरकेका कुछ दिनतक लगातार सेवन करना चाहियें (१६) सिरकेमें सोहागेको पीसकर दाद पर लगातेहैं (१७) ताडकी ताड़ीका बनाया हुआ सिरका बहुत दुखदाई हिचकीको रोकताहै (१८) ताड़ीके सिरकेको चर्मदल कुष्ठपर मर्दन करना चाहियें (१९) महुवेके सिरकेको जलमें मिलाके पिलानेसे विषूचिकाकी तृषा कम पड़तीहै। सांठेका सिरकाभी इसी काममें आताहै (२०) थोड़ी लाल मिरच पीस सिरकेमें मिलाकर कुल्ले करनेसे गलेकी पीडा मिटतीहै (२१) बालक होनेके पीछे रक्त बन्ध करनेके लिये १ तोले सिरका पिलाना चाहिये। परन्तु जबतक आंवल नहीं निकल जाय तब तक नहीं पिलाना चाहिये क्योंकि इसके पिलानेसे गर्भाशयसे मवादका बहना बन्ध हो जानेसे कदाचित् आंवल भीतरही रह जातीहै (२२) मेद रोगको मिटानेके लिये सिरकेका प्रयोग बहुत अच्छाहै (२३) महुवेका सिरका पिलानेसे पसीना आताहै (२४) सिरकेको शिरपर मलनें और कानोंमें डालनेसे कानमें भिनभिनाहट और नाना प्रकारके शब्द होना मिट जाताहै (२५) सिरकेमें गुलाब जल मिलाके कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (२६) सिरकेमें शहद मिलाके मलनेसे मसूड़ोंके रोग मिटतेहैं (२७) सिरका पिलानेसे जलंधर मिटताहै (२८)

सिरकेमें राई मिलाकर कुल्ले करनेसे कंठकी सूजन मिटतीहै (२९) सिरकेको चूनेमें मिलाकर मस्तकके घावोंपर लगानेसे रुधिर बन्ध होजाताहै (३०) बालक का काग लटक आने पर मुलतानी मिट्टीको सिरकेमें मिलाकर तालू पर रखना चाहिये अथवा सिरकेमें माजूफलको घिस तर्जनी अंगुलिके लगाकर उससे कागको उठाना चाहिये (३१) बालूरेतमें सिरका मिला उसको गर्मकर पोटली बाधके पेटपर सेक करनेसे उदरपीडा मिटतीहै (३२) सिरका पिलानेसे तृषा मिटतीहै (३३) सिरकेमें कपूर मिलाकर लगानेसे बिच्छू का विष उतरताहै (३४) सिरकेमें मधु और कूट मिलाकर मलनेसे विच्छूका विष उतरताहै (३५) कांजीमें वस्त्र भिगोके ओढानेसे दाह मिटतीहै।

संख्या (५३५)

(सं०) शुक्तिः, मुक्ताप्रसूः, मुक्तास्फोटः, महाशुक्तिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सीपडी	मोती कीसीप	मोतीनी छीप	मोत्यार्चीशिंप	झिनुक	सीप	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					Oyster shell Bivalve shell

स्थान—सीप—समुद्र, नदी, और तलाव आदि जलाशयोंमें होतीहै।

सीप दो प्रकारकी होतीहै, एक मोतीकी और दूसरी जलकी–सीप को शुद्ध करने और भस्म बनानेकी रीति—शंखको शुद्धकरनेकी जो रीतिहै उसी रीतिसे इसको शुद्ध करलेना चाहिये। जैसे कोडीकी भस्म बनानेकी रीति लिखीहै वैसेही इसकी भस्म बनाना चाहिये।

प्रयोग—(१) इसकी भस्म—ठण्डीहै। रक्त पित्त और ज्वरका नाश करतीहै (२) मोतीकी सीप—चरपरी, स्निग्ध, मधुर, रोचक और बहुत दीपन होतीहै। श्वास हृद्रोग और शूलको मिटातीहै (३) जलकी सीप—चरपरी, स्निग्ध, दीपन, रोचक, पाचक और बलवर्द्धकहै। गुल्म, शूल, और

विषके दोषोंको मिटातीहै (४) इसकी भस्मको अदरकके रसमें घोट, चने बराबर गोलियां बनाके, २ गोली नित्य देनेसे श्वास और कास मिटताहै (५) इसकी भस्मसे दांतोंको मलनेसे उनकी पीड़ा मिटतीहै और निर्मल होजातेहैं (६) इसकी भस्मका अंजन करनेसे पलकोंकी खुजली और नेत्रपीड़ा मिटतीहै (७) इसकी भस्मको सिरकेमें मिलाकर मलनेसे मस्से और तिल मिटतेहैं (८) सीपको पीसके नित्य दो बेर भगमें मलनेसे उसका ढीलापन मिटताहै (९) इसको पीस कर नाभिके आस पास लेप करनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१०) बच्चेके गलेमें सीप लटकानेसे दांत निकलनेका कष्ट नहीं भोगना पड़ताहै (११) सीपको सिरकेमें घिसकर कानोंकी लोरों पर लेप करनेसे जुकामकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै ।

संख्या (४३६)

(सं०) शुंठी, महौषधं, विश्वं, नागरम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सूंठ	सोंठ	सु (सुं) ठ	सुठ	शुंठि	सुंड	सोंठि

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शुंकु	शोंठि ओणशुंठि	ज़नजबील-यानिस	जनजबीलखुश्क		Dry ginger

प्रयोग—(१) सोंठ—रोचक, पाचक, चरपरी, हल्की, स्निग्ध, उष्ण वीर्य्य, वृष्य, हृद्य, पाकमें मधुर, सारक, अग्निदीपन और वीर्य्यवर्द्धक है। (२) बकरीके दूधके साथ सोंठके १॥ मासा चूर्णकी फकी देनेसे गर्भवती स्त्रीका विषमज्वर छूटताहै (३) इसको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे आधाशीशीकी पीड़ा मिटतीहै (४) इसके कल्कको बकरीके दूधमें मिलाकर नस्य देनेसे कई प्रकारके दोषोंसे पैदाहुई मस्तकशूल मिटतीहै (५) सोंठ और नीमके पत्ते या निंबोलीको पीस, कुछ गर्मकर, उसमें थोडा सेंधा नमक डाल टिकिया बनाके नेत्रों पर बांधनेसे खुजली, पीडा और सूजन मिटजातीहै (६) इसका

गुनगुना क्वाथ पीनेसे हृद्रोग मिटताहै (७) इसके १ तोले चूर्णको कांजीके साथ नित्य पीनेसे आमवात मिटतीहै (८) इसके चूर्णकी नित्य फकी खानेसे बादीके रोग मिटतेहैं (९) सोंठ और गिलोयका क्वाथ बनाकर पीनेसे बहुत दिनोंकी आमवात मिटतीहै (१०) इसके चूर्णको गुडमें मिलाकर नियमपूर्वक सेवन करनेसे अग्निदीपन होताहै (११) सोंठ और बीलका क्वाथ पिलानेसे वमन और विसूचिका मिटतीहै। इस क्वाथमें कायफल मिलानेसे अधिक गुण करताहै (१२) सोंठ और हरडके कल्कको खिलाकर गर्मजल पिलानेसे श्वास और हिचकी मिटतीहै (१३) सोंठ, आंवले और पीपलके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे हिचकी मिटतीहै (१४) सोंठके चूर्णकी फकी देके गर्म किया हुआ छालीका दूध पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (१५) सोंठ और सेंधे नमकको महीन पीसके सुंघानेसे पक्षाघात मिटताहै (१६) सोंठको पानीमें घिस, उसकी २-३ बूंद नेत्रमें टपकानेसे नेत्रपीडा मिटतीहै (१७) इसका पाक बनाके खानेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै (१८) सोंठको एरंडके तेलमें घिसकर गुनगुना लेप करनेसे सर्दीकी मस्तकपीडा मिटतीहै (१९) बच्छनागका विष उतारनेके लिये सोंठ खिलाना चाहिये (२०) ४ मासे सोंठका क्वाथ करके पिलानेसे मंदाग्नि उदररोग और जलके दोष मिटतेहैं (२१) सोंठ और जोखारकी गर्म जलके साथ फकी लेनेसे कई देशोंके जल पीनेसे पैदाहुए जलके दोष मिटतेहैं (२२) सोंठ और शक्करकी फकी देनेसे हिचकी बन्द होतीहै (२३) सोंठ और धनियेका क्वाथ पिलानेसे आमाजीर्ण मिटताहै (२४) सोंठ और एरंडकी जड़को ओटाकर पिलानेसे बादी और सर्दीकी पीडा मिटतीहै (२५) सोंठ, कायफल और असगंधको पीसकर मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै (२६) पावभर सोंठमें एक तोला पारा मिला, खरलकर, मर्दन करनेसे रांधनवाय वाय मिटतीहै (२७) कच्चे बीलकी गिर और सोंठको गुड़में मिलाकर छाछके साथ पीनेसे संग्रहणी मिटतीहै (२८) सोंठके कल्कसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे ज्वर, कास, संग्रहणी, प्लीह और पांडुरोग मिटताहै (२९) सोंठके क्वाथमें एरंडका तेल मिलाके पीनेसे वस्ति, कुक्षि, और कमरकी शूल मिटतीहै (३०) सोंठ और गोखरूका क्वाथ प्रातः काल नित्य

पीनेसे आमवात और कटिशूल मिटताहै। इसी क्काथमें जोखार मिलाके पिलानेसे मूत्र-कृच्छ्र मिटताहै (२१) गोमूत्रके साथ इसके चूर्णकी फकी खानेसे श्लीपदरोग मिटताहै।

संख्या (५३७)

(सं०) शूरणः, अर्शोघ्नः, दुर्नामारिः, कंदूलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सूरण	सूरण	सुरण	सूरण	ओल	जिमीकंद	सूर्णगड्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
क्लिगी	सूर्णगड्डः		जिमींकंद	Amorphophallus campanulatus Arum campanuletum	

स्थान—सूरण हिन्दुस्थान और सीलोनमें बहुत बोया जाताहै।

प्रयोग—(१) सूरण—दीपन, रूक्ष, कसेला, चरपरा, विष्टंभी, रोचक, पाचक, लघु और विशदहै। गुल्म, प्लीह, कफ और अर्शको मिटाताहै और खजली पैदा करताहै (२) इसका गूदा और बीज जलन पैदा करतेहैं, परंतु गठिया पर लगानेसे उसकी पीड़ा मिट जातीहै—(३) सूरण का अचार उष्ण और वायुनाशक है (४) ताजा सूरण बहुत उत्तेजक और कफकारक है (५) सूरण पर गार लपेट आगमें भून, नमक और तेल मिलाके काममें खानेसे अर्श मिटताहै (६) सूरणका शाक पौष्टिकहै (७) सूरणको इम्लीके पत्ते और धानके तुषोंके साथ उबाल, धोकर, शाक बनाके खिलानेसे रक्तार्श मिटताहै (८) कच्चा कंद खानेसे जिह्वा पर काटे पड़ जातेहैं, इसलिये इसको पकाते समय इसमें इम्ली डाली जातीहै (९) इसके टुकडोंको पानीमें खूब उबाल कर खोपरेके साथ खानेसे रक्तार्श मिटताहै (१०) इसका पुल्टिस बांधनेसे बिच्छूका और दूसरे विषैले कीडोंका विष उतरताहै (११) इसके लगानेसे आंतरकी गूमड़ी और पीडा मिटतीहै (१२) इसके टुकडोंको पुटपाकमें पका-कर खानेसे अर्श मिटताहै (१३) इसके टुकडोंको छायामें सुखा चूर्ण बना-कर १६ मासेकी नित्य प्रातःकाल फकी लेनेसे अर्श मिटताहै (१४)

सूरण कंदमें आटे जैसा बहुतसा पदार्थ होताहै, उसमें तीव्र, विष- युक्त, रस होताहै, उसको धोकर या तपाकर निकाल दिया करतेहैं । इस कंदका, शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (५३८)

(सं०) शृङ्गाटकं, जलफलं, जलवल्ली, शृङ्गरुहः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शिंघाडा	सिंघाडा	शिंगोड़ा	शिंगाडे	शिंगाडे	सिंघाड़ा	दुम्पगड्ड

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
---				Trapa bispinosa. T quadrispinosa	Water caltrap. The singhara nut

स्थान—सिंघाडे हिन्दुस्थान और सीलोनके तालाव, और झील, आदि जलाशयोंमें हुआ करतेहैं ।

प्रयोग—(१) सिंघाडे–शीतल, मधुर, गुरु, वृष्य, ग्राही, रुचिकारक, कषैले और शुक्रल हैं । ये पित्तके रोगोंमें बहुत उपकारीहैं (२) सिंघाडेके सेवनसे अतिसार मिटताहै (३) सिंघाडेकी बेलको पीसकर लेप करनेसे दाह मिटतीहै (४) सिंघाडेके आटेकी रोटी बनाके खानेसे रक्तप्रदर मिटताहै (५) सिंघाड़ेके एक तोले चूर्णकी फकी नित्य लेनेसे मूत्रातिसार मिटताहै, या इसके आटेकी दूधके साथ फकी लेनेसे या उसका हलुवा बनाके खानेसे वीर्य बढ़ताहै और पुष्ट होताहै (७) पुष्टाईकी औषधियोंमें सिंघाडेका आटा मिलाया जाताहै । सिंघाडेमें मैदा बहुत निकलतीहै और उसकी गुलाल बनाई जातीहै । सिंघाड़ेको कच्चा, या उबालके खातेहैं ।

संख्या (५३९)

(सं०) शैलेयं, शिलोद्भवं, स्थविरं, शिलापुष्पम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलङ्गी
छड़छड़ीलो,	भूरि छरीला	पथरफुल	दकड़फूल	शैलज,	छैलछलीरा	रातिपुव्वु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
कल्पाशि	कल्लहुव्वु	उशनाह	दोवालाह	Parmelia kamtschadalis P perlata P perforta	Lichens.

स्थान—छड़ीला हिमालय और नीलगिरी आदि कई पहाड़ोंमें होताहै ।

प्रयोग—(१) छड़ीला,—शीतल, हृद्य, लघु, कड़वा, चरपरा, रोचक, ग्राही, बल बढ़ानेवाला, रेचक और कृमिनाशकहै (२) छडीला औषधियोंकी चरपराहट मिटाताहै और ज्वरको छुडाताहै (३) कुत्तेका विष उतानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै (४) कामला रोगमें यह बहुत उपकारीहै (५) इसके सेवनसे मंदाग्नि मिटतीहै (६) फुफ्फुस सम्बन्धी रोगोंमें इसका सेवन बहुत उपकारीहै (७) इसकी धूनीसे मस्तकपीडा मिटतीहै (८) इसके चूर्णकी नस्य लेनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (९) यह सारकहै और व्रणादिकको सुखा देताहै (१०) मासिकधर्ममें कष्टसे रजका निकलना, वमन, पथरी, नाकसे गाढे पीपका निकलना, यकृत, गर्भाशय और आमाशयकी पीड़ामें यह काम आताहै (११) साधारण पीड़ा, मुहसे लाल गिरना, गले और दांतोंके रोगको मिटाताहै (१२) पित्तकी मस्तकपीडामें इसका लेप करतेहै (१३) इसको पानीमें ओटा पीस पुल्टिस बनाके हृद्य, पृष्ठ वंश और कमर पर बांधनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै ।

संख्या (५४०)

(सं०) शेवालं, शैवलं, जलनीली, हटपर्णी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलंगी
काजी, काई	काई, सिवार	शेवाल	शेवाळे	शेहाला	काई	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लॅटिन
				(1) Blyxa octandra Vallisneria; (2) Ceratophyllum submersum (3) Vallisneria spiralis V. spiraloides.

स्थान—यह तालावोंमें और वहुधा बहते जलमें बहुत होतीहै। तीन आचार्योंने शैवालके अलग अलग तीन लॅटिन नाम लिखेहैं इसलिये यह निश्चय नहीं है कि कोनसा नाम ठीकहै।

प्रयोग—(१) यह—शीतल, कडवी, मधुर, सारक, रूक्ष, मलोनी, पचनेमें हल्की और स्निग्ध होतीहै (२) तृषा, रक्तपित्त, ज्वर शोष, दाह और व्रणको मिटातीहै (३) काईको एक मिट्टीके ठीकरेमें भर चूल्हेपर चढा उसकी भस्मकर उसमें वरावर बुरा मिलाकर चार मासे नित्य लेनेसे वीर्यका पतलापन और प्रमेह मिटताहै (४) काईको निचो उसका पानी निकालके इन्द्रीके छिद्रमें टपकानेसे घाव भर जाताहै।

संख्या (९४१)

(सं०) शोभाञ्जनः, शिग्रुः, हरितशाकः, शाकपत्रः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलङ्गी
सहिंजणो	सहिंजना	सरगवो	शेवगा	सजिना	सोहजना	मुनग, मुनगा,

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लॅटिन	अंग्रेज़ी
मुरगे,	नुगे			Moringa pterygosperma Hyperanthera Moringa	The horse Radish tree

स्थान—सहिंजनेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं। और अपने आपभी उगतेहैं।

पहिचान—इसका वृक्ष २० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेड़ सीधी और गुलाईमें ४–५ फुटकी होतीहै इसके बड़ी २ थोडी शाखें लगतीहैं इसकी छाल कोमल और भूरे रंगकी होतीहै उसमें गहरी दरारें होतीहैं। इसके पत्ते आकारमें

इम्लीके पत्तों जैसे होतेहैं, परन्तु लम्बाई चौडाईमें उनसे कुछ बडे होतेहैं । व सींकके दोनों और आमने सामने लगतेहैं। इसके सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं, जिनमें मधु जैसी तीव्र गंध आतीहै। इसके ६ से १० इंच लम्बी लटकती हुई फलियें लगतींहैं। मृगशिर पोषमें इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं और फागुन चैतमें नये निकल आतेहैं।

फूलने फलनेका समय—पोष से चैततक इसके पुष्प लगतेहैं। फागुन और चैतके महीनेमें इसके लम्बी लम्बी फलियें लगतीहैं। चैतके पीछेतक इसकी फलियां पकती रहतीहैं जबतक वे नहीं तोडी जावे तबतक वृक्ष परही लटकती रहतीहैं। इसके बीजोंको सफेद मिरच कहतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै, इसकी लकडीमेंसे नीला रंग निकाला जाताहै, इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ३६ तोले स्वच्छ निर्मल सफेद तेल निकलताहै, यह तेल नबिगडता नहीहै, इसमें सुगंध और स्वाद नहीं होताहै।

प्रयोग—(१) सहिंजना—चरपरा, तीक्ष्ण, उष्ण, मधुर, लघु, दीपन, रोचक, रूक्ष, दाहकारक, सलौना, कडवा, ग्राही, हृद्य, शुक्रवर्द्धक और पाकमें चरपरा है (२) इसकी जड चरपरी, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धक है (३) जलंधर, तिल्ली, यकृत, भीतरकी सूजन, और पथरी आदिके रोगोंमें इसकी जडकी छालका क्वाथ या ताजा रस पिलातेहैं (४) सोजिश मिटानेके लिये इसकी छालका लेप करतेहै या उसके क्वाथको गाढा करके लेप करतेहैं (५) इसके ताजे रसको कानमें डालनेसे कानकी पीडा मिटतीहै (६) सहिंजनेका गोंद कानमें बुरकानेसे कानका पीप बन्ध होजाताहै (७) इसके पुष्प उष्ण और रूक्षहै (८) ये ठण्डे दोषोंको निकालतेहैं और इनका लेप करनेसे सूजन मिटतीहै (९) इनको पीसकर मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै(१०) इनको औटाकर पिलानेसे पित्तका निकास बढाताहै (११) इसकी जडके रसको दूधके साथ पिलानेसे शर्करास्मरी मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै (१२) इसकी जडके रसमें सोंठ डालके पिलानेसे पाचनशक्ति बढतीहै (१३) अदरकका रस और इसकी जडका रस दोनोंको मिलाकर पिलानेसे श्वास मिटताहै (१४) इसकी जडका पुल्टिस बांधनेसे सोजिश उतर जातीहै परंतु त्वचामें बहुत दाह और पीडा होतीहै (१५) इसकी फलीका शाक खानेमें

आंतोंमें कीड़े नहीं पडतेहै (१६) इसके छोटे पेडकी जड़का काथ पिलानेसे पुरानी गठिया, अर्द्धांग और जलंधर मिटताहै (१७) इसके बीजोंको यंत्रमें दबाके तेल निकालतेहैं उस तेलका मर्दन करनेसे छोटे जोडोंकी सूजन और गठियाकी तीव्रपीड़ा मिटतीहै (१८) इसकी सवा मासे ताजी जड़को ओटाके पिलानेसे ठहर २ के आनेवाला ज्वर छूट जाताहै। अपस्मार और स्त्रियोंके अवेशके रोगमें भी यही क्राथ पिलातेहैं (१९) इसकी ताजी जड सरसों और अदरकको पीसकर लेप करनेसे गठिया मिटतीहै (२०) तिल्ली और मंदाग्नि वालेको इन तीनोंकी गोलियां बनाके खिलातेहैं (२१) यकृत्, तिल्ली, रुधिर के बहनेवाली नसोंकी पीडा, धनुस्तंभ, स्नायुकी निर्बलता, किसी अंगका शून्यपन, पीपवाली फुन्सियां, शरीरपरके दाग और कोढमें इसके फलका सेवन करना बहुत लाभकारीहै (२२) मुख और गलेके छाले मिटानेके लिये इसकी जड़के काथसे कुल्ले करने चाहिये (२३) इसका गोंद मुखमें रखनेसे दांतका सड़ना बन्ध हो जाताहै (२४) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे वांइटे मिटतेहैं (२५) जङ्गली सहिंजनेकी छाल चित्रककी जड कबूतरकी और मुर्गेकी बींटका नारूपर लेप करतेहैं (२६) बोये हुए सहिंजनके पत्तोंका ४ तोले रस वमन करानेकेलिये पिलातेहैं (२७) सहिंजनेकी सवा तोले छालका काथ पिलानेसे ओड गर्भाशयसे बाहिर निकल जातीहै (२८) ओड निकालनेकेलिये इसकी जडका प्रयोगभी करतेहै (२९) इसकी जड़को पानीमें भिगोके ओटानेसे तेल निकल जाताहै, उसमें बहुत दुर्गंध और चरपराहट होतीहै (३०) बच्चोंका यकृत् बढ जाने पर इसकी जडका लेप करतेहै (३१) गला पड़ जानेसे जो स्वर भंग होजाताहै उसको मिटानेकेलिये इसकी ताजी जड़के काथके कुल्ले करातेहैं (३२) गिल्टियोंकी सूजन बिखेरनेकेलिये बहुधा इसके गोंदका लेप करतेहैं (३३) इसके पुष्प बलवर्द्धकहैं इनके काथसे प्रतिश्याय मिटताहै (३४) इसके पत्ते, थोडा लहसन, एक टुकडा हल्दीका, थोड़ा नमक और काली मिरच पीसके पिलानेसे बावले कुत्तेका विष उतरताहै। इन सब चीजोंका पीसकर उसके दंशपर लेप करनेसे ५, ६ दिनमें उसका घाव भर जाताहै, पित्त शोथ उतर जातीहै और ज्वर छूटजाताहै (३५) इसके पुष्पोंको दूधमें ओटाकर पीनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (३६) गठियाकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसकी जड़का लेप

करतेहैं (३७) इसकी जड़की या वृक्षकी छालको पानीमें पीस, टिकिया बनाके बांधनेसे छाला होजाता है (३८) इसकी छालमें कुछ हींग और सोंठ मिला जलके साथ पीसकर गोलियां बना, दो मासेकी मात्रा दिनमें २, ३ बेर देनेसे पेटकी बादीकी पीड़ा, शूल और अफारा मिटताहै (३९) इसके पत्ते और कलिया उष्णहैं (४०) इसके गोंदका लेप करनेसे गठियाकी सूजन मिटतीहै (४१) इसकी जड़का हिम या फांट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके जलंधर मिटता है (४२) इसके पत्तोंके रसमें कालीमिरचको पीसकर लेप करनेसे मस्तक की शूल मिटतीहै (४३) इसके बीज और पोखरमूलको देनेसे बालकोंके पेटके कीड़े मरतेहैं (४४) इसके बीज, जड और सेंधे नमकको काजीके साथ पीसकर लेप करनेसे स्नायुक पीड़ा मिटतीहैं (४५) इसके पत्तोंको पानीके साथ पीस, गर्म कर, लेप करनेसे सर्दीकी या अन्य प्रकारकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (४६) इसके पत्तोंके रसमें थोडी मधु मिलाकर नेत्र पर लेप करनेसे नेत्रके गोलेकी पित्तशोथ मिटती है (४७) इसकी नरम डालियोंके रसमें मधु मिलाकर नेत्रोंमें टपकानेसे रतोंधा मिटताहै (४८) इसके एक तोले गोंदको नित्य दहीके साथ ७ दिन तक खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (४९) इसके पत्तोंको पानीके साथ पीस, गर्मकर गुन-गुना लेप करनेसे वायुकी पीड़ा मिटतीहै (५०) इसकी छालके क्वाथमें गुड मिलाकर पिलानेसे आवल जल्दी गिर जातीहै (५१) इसके बीजोंको महीन पीस, गायके घी और मधुमें मिला बत्ती बनाकर ऋतुधर्मके पीछे यानिमें रखनेसे गर्भ धारण होनेकी शक्ति जाती रहतीहै (५२) इसके बीजोंको महीन पीस उसका गुन-गुना लेप करनेसे घुटनोंकी पुरानी पीड़ा मिटतीहै (५३) इसके पत्तोंको बराबर तेलके साथ पीस, चोट या मोचकी पीड़ा पर लेप कर, धूपमें बैठनेसे उस ठौरकी पीड़ा मिटतीहै (५४) इसकी छाल और राईको पीसकर लेप करनेसे कान के नीचेकी सूजन मिटतीहै (५५) इसकी जड़की छाल और आकके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे अर्श मिटताहै (५६) इसके और कासमर्दके पत्तोंका चूर्ण बनाके पिलानेसे हिचकी मिटतीहै (५७) इसकी जड़की छालको पीस-कर लेप करनेसे स्नायु रोग मिटताहै (५८) इसके पत्तोंको भिगोकर खानेसे छातीकी पीड़ा मिटताहै (५९) इसकी जड़के कल्कको सरसोंके तेलमें औटा

और बैलोंकी पीठके घावपर लेप करतेहैं (६) जडकी छालके काथको गाढा करके लेप करनेसे गठियाकी सूजन उतरतीहै (७) इसकी जड़की छालके चूर्ण और काथसे बहुत पसीना आता है । परन्तु उनमें रोग मिटानेकी शक्ति कमहै (८) इसकी जडकी छालके चूर्णकी फकी लेनसे गठियाकी तेज पीड़ा मिटतीहै (९) इसकी छालका और कुटजकी छालका रस मिलाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै ।

संख्या (५४४)

(सं०) अरलुः, कटंगः, प्रियजीव, कुटंनटः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	अरलु, टेंटु	अरडूशो	पिंवळाटेंटू			

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Ailanthus excelsa	

स्थान—अरलूके वृक्ष संयुक्तप्रदेश, विहार, पश्चिमी—मायद्वीप, कर्नाटक, बम्बई, कैरा, पंचमहल, गुजरात और राजपूताना आदि देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ६०, ८० फुट होतीहै, इसकी छाल सफेद होतीहै, इसके पत्तोंकी डालयें ८ से १२ इंच लम्बी और कभी कभी दो तीन फुट लम्बी हो जातीहैं । इसके पत्ते गहरी कटी हुई कोरोंके कंगूरेदार होतेहैं । उनके ८ से १४ जोडे एक सींकके ऊपर प्रायः आमने सामने लगतेहैं इनके पुष्प कुछ पीले रंगके होतेहैं । शीतकालके पहिले भागमें इसके सब पत्ते गिर जातेहैं, फागुन चैतमें नवीन आजातेहैं ।

फूलने फलने का समय—चैत वैशाखमें यह वृक्ष फूलताहै इसके लाल गोंद लगताहै ।

प्रयोग—(१) अरलू रूक्ष, अग्नि और बलवर्द्धक, कपेला, शीतल और कड़वाई (२) इसकी छालके चूर्णकी फकी लेनेसे मंदाग्नि मिटती है

(३) निर्बलतामें आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देतेहैं (४) इसकी फकी लेनेसे निर्बलता और खासी मिटतीहै (५) इसके चूर्णको अदरकके रस और मधुके साथ चटानेसे श्वास मिटताहै (६) इसकी छालको ठण्ढे या गर्म पानीमें चार पहर भिगो मल छानकर दिनमें दो वेर पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (७) सूखे कफको निकालनेके लिये इसके काथमें मधु मिलाकर पिलाना चाहिये (८) इसकी ३ मासे छाल और तीन मासे सोंठको औटाकर पिलानेसे बाइट और आक्षेप वायु मिटतीहै (९) बालक होनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये इसकी छाल और पत्तोंको काममें लातेहैं (१०) इसके गोंदके चूर्णको थोडा २ दूधके साथ पिलानेसे आमातिसार और खांसी मिटतीहै (११) इसके गोंदको दहीके साथ देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटताहै (१२) इसकी छाल बहुत कड़वी होतीहै॥

संख्या (५४५)

(सं०) श्रीवल्ली, शिववल्ली, कंटवल्ली, कटुफला।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सीकाकाई	सीकाकाई	सीकेकाई	शिकेकाई	कांटाभेंड		शिकाया

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
चिकाकायि	सीगेयवल्ली			Acacia concinna	

स्थान—सीकाकाईके पेड़ दक्षिण, मालवा, राजपूताना, बंगाल और अवध आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका बडा झाड होताहै। इसकी शाखाओंमें तीखे और मुडे हुए कांटे और २ लगे रहतेहैं। इसके पुष्पोंकी कलिया मंजनी रंगकी होती हैं। पुष्प पीले रंगके होतेहैं, इसकी फलियां मोटी, गिरदार और सीधी, ३, ४ या ५ इंच लम्बी, पौन या एक इंच चौडी और बीजोंके बीच बीचमें चिपी हुई होतीहैं।

फूलने फलने का समय—फागुन से अषाढ़ तक वर्षा ऋतुमें यह वृक्ष फूलताहै, शीतकालके आरंभमें इसके फल पक जातेहैं। इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकलताहै। हल्दी और इसके पत्तोंको मिलाकर बहुत सुंदर नीला रंग निकालतेहैं।

प्रयोग—(१) पित्तकी वमन मिटानेके लिये, इसके कोमल पत्ते, कुछ नमक, इम्ली और कुछ लाल मिरचोंको पीसकर चटनी बनाके खातेहैं (२) इस चटनीको रोटीके साथ खानेसे अरुचि मिटतीहै (३) इस चटनीके खानेसे विरेचनके एक या दो अच्छे वेग हो जातेहैं और उनमें पित्त निकलताहै (४) इससे अपशब्द और डकारकी दुर्गंध मिटतीहै (५) इसके पत्तोंको जलमें भिगो छानकर पिलानेसे हल्का विरेचन लगताहै (६) इसके कोमल पत्तोंको ओटाकर पिलानेसे हल्का विरेचन होताहै (७) इसकी फलियों को ओटाके पिलाने से दूषित वायु आदि से पैदा हुआ ज्वर छूट जाताहै (८) कोमल पत्तों का हिम या फाट पिलाने से आफरा मिटताहै (९) कोमल पत्तोंको पीस गर्मकर पेटपर लेप करनेसे आफरा मिटताहै और हल्के दस्त लगतेहैं (१०) इसकी फलियोंको पीसकर लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं (११) फोड़ोंको साफ करनेके लिये भी इनका लेप करतेहैं (१२) पेटमें तिल्ली आदि अंगोंमेंसे जो उनके रसका बहना बन्ध होजाताहै उनकी रुकावटको मिटानेके लिये इसके कोमल पत्तोंका काथ पिलातेहैं (१३) इसकी फलीके चूर्णकी फकी देनेसे सूखी खासी मिटतीहै (१४) इसकी फली हल्की, रेचक, वामक और हल्लास पैदा करनेवाली है। फलीकी रेचक शक्ति सोनामुखीसे अच्छीहै। परन्तु इसकी गंध और स्वादसे हल्लास पैदा होजाताहै। इसकी रेचक शक्ति बढानेके लिये इसकी साथ कोई क्षार मिलादेना चाहिये (१५) कामलारोग जो हृदयकी रुकावटसे नहीं पैदा हुआ हो, वह इसकी फलीसे वमन करानेसे मिटजाताहै (१६) सवा तोले सीकाकाई को ढाईपाव पानीमें ओटाकर उससेशिरको धोनेसे बाल अच्छे बढतेहैं, और शिरमें खोरा जमना बन्ध होजाताहै (१७) इसकी थोडी मात्रा देनेसे बल बढताहै और अधिक मात्रा लगातार देनेसे वमन और विरेचन होने लगतेहैं। (१८) इसकी फली—केश और कपडे धोनेके काममें आतीहै।

संख्या (५४६)

(सं०) श्लेष्मान्तकः, शेलुः, उद्दाल, घहुवारक ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लेसवो	लिसोडा(रा)	गुंदो	शेलवट	बालता	लिसूडा	चेन्ननेक्कर (।)
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
नरिविलि	चेसंकायि		सपिस्ता	Cordia myxa		Sebesten.

स्थान—लिसोडेके वृक्ष चनावसे आसाम तक, खासिया पहाड, बंगाल, ब्रह्मा, सिन्ध, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—गूंदे दो प्रकारके होतेहैं । एकतो वहहै कि जिसके बडा फल लगताहै उसको राय गूंदा कहतेहैं । और दूसरा छोटे फलका, उसको कठगूंदा कहतेहैं । यह वृक्ष ३०,४० फुट ऊंचा होताहै इसकी पेदड छोटी सीधी या कुछ २ मुड़ी हुई होतीहै । इसकी गुलाई ४-६ फुट होतीहै । इसके फैलीहुई और ऊंची बहुतसी शाखें होतीहैं । इसकी छोटी शाखें कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंगकी होतीहैं । इसकी छाल एक इंच मोटी, हल्के भूरे रंगकी, खरदरी और कभी २ कुछ काले रंगकी होतीहै । इसके छोटे पत्ते चिकने होतेहैं जो पूरे बढनेपर थोड़े बहुत खरदरे होजातेहैं, इसके सफेद रंगके पुष्पोंके गुच्छे और हरे रंगके फलोंके झूमके लगतेहैं । इसके फल पकजानेपर कुछ लाल भूरे रंगके होजातेहैं । उनका छिलका मोटा होता है और चेपदार पदार्थसे भराहुआ होताहै । इसकी गुठलीमें एक या दो खाने होतेहैं उनमें मींगी होतीहै । चैतमें इसके पत्ते गिर जातेहैं और थोड़े दिनों पीछे नवीन निकल आतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—फागुन और चैतमें इसके पुष्प लगतेहैं वैशाख, से अषाढ तक फल पकजातेहैं । इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै । इसके हरे पत्ते और गूदेका रस रंगतके काममें आताहै । इसकी मींगीमेंसे तेल निकला-जाताहै वह सूंघने और लगानेके काममें आताहै ।

प्रयोग—(१) लेसवा—मीठा, कषैला, कड़वा, चरपरा, पाचक, स्निग्ध और पित्तको शांत करनेवालाहै (२) इसके फलका चेप ओषधियोंकी चरपराहटको कम कर देताहै (३) छातीके रोग और सूखी खांसी मिटानेके लिये इसके फलका काथ पिलातेहैं (४) फलोंके चेपमें मिश्री डालकर पीनेसे मूत्राशय और मूत्रनाली की दाह मिटताहै (५) इसके काथके कुल्ले करनेसे मसूड़े दृढ हो जातेहैं (६) पित्तके रोगोंमें मृदु विरेच करानेके लिये गूंदेका बहुतसा काथ पिलातेहैं (७) गूदेकी मींगीको पीसकर लेप करनेसे दाद मिटताहै (८) इसके पत्तोंको फोडेपर बांधतेहैं (९) मस्तकपीड़ा मिटानेके लिये, मस्तक पर गूंदेके पत्ते बांधने चाहिये (१०) गूंदेकी छालका रस और नारियलके तेलको मिलाकर पिलानेसे पेटके मरोडे मिटतेहैं (११) इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे खुजली मिटतीहै (१२) छालको ओटाकर पिलानेसे ज्वर छूटताहै (१३) छालके चूर्णकी फकी देनेसे बल बढ़ताहै (१४) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़, उनको तपाकर पेटपर बाधनेसे वादीसे कठोर पड़ा हुआ पेट ढीला पड़ जाताहै (१५) गूदेकी छालको पानीमें भिगो मल छानकर पिलानेसे पथरी मिटतीहै (१६) गूंदेकी छालके हिममें मिश्री डालकर पीनेसे मूत्रकी दाह मिटतीहै (१७) गूंदेकी छालका काथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (१८) इसका पकाहुआ फल मीठा, स्निग्ध, पचनेमें भारी, विष्टंभी, शीतल और चरपराहट मिटानेवालाहै (१९) इसके कोमल पत्तोंका १ तोला चेप निकाल, उसमें बूरा मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार मिटताहै (२०) इसकी कोंपलोंको पीस, गोलियां बनाके देनेसे अतिसार मिटताहै (२१) इसके कोमल पत्तोंको अग्नि पर तपाकर १० दिन तक बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै (२२) यह पित्त, खांसी, ज्वर और प्यासको मिटाताहै (२३) इसका लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२४) गूंदा मुहमें रखनेसे जीभका फटना बंध होजाताहै (२५) गूंदाको घी से चुपड़, उसपर गूंदेकी भस्म बुरकानेसे उसका निकलना बन्ध होजाताहै (२६) इसके एक तोले पत्ते और १५ काली मिरचको पीस छानके पिलानेसे बावले कुत्तेका विष उतरताहै। पके हुए गूंदे खानेके काममें आतेहैं, कच्चे गूंदेका अचार बनातेहैं।

संख्या (५४७)

(सं०) लघुश्लेष्मांतकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गूदा	छोटागूदा	नहानुगूदो	न्हानभोंकर	छोटोबहुयार	-	चेलनक्करा

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
शिरुनरिवि-लि				Cordia obliqua C. Wallichii	

स्थान—छोटे गूंदेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।

प्रयोग—(१) सूखी खासी मिटानेकेलिये गूंदेका काथ करके पिलातेहैं (२) गुठली निकाले हुए गूंदेको सुखा चूर्ण बनाके फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (३) फुप्फुसके रोगमें गूंदेका सेवन अधिक लाभकारीहै (४) गूंदेके कच्चे फलमें एकप्रकारका गोंद होताहै वह मूत्रकृच्छ्रमें काम आताहै (५) इसके पत्तोंकी राखको घीमें मिलाकर लगानेसे घाव भरजाताहै (६) इसके पत्तोंको गर्मकर बद पर बांधनेसे बद बैठजातीहै ॥ अकालके समयमें गूंदेके फल और पुष्प खानेके काममें आतेहैं ॥

संख्या (५४८)

(सं०) (लघुश्लेष्मांतकभेद) मुक्ताफलः, बिन्दुफल, पक्करक्तफल ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गूदी	गोंदी	गुंदी	गोंदनी	-	गूंदी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Cordia Rothii C. angustifolia	

स्थान—यह संयुक्त प्रदेश (मध्य) और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताने आदि देशोंमें होतीहै।

पहचान—गूंदीका वृक्ष—३०, ४० फुट ऊंचा होताहै। इसकी पेड़ छोटी होतीहै और उसकी गुलाई ३-५ फुट तक होतीहै। इसकी शाखें फैली हुई और उनके अन्तका भाग बहुधा झुका हुआ रहताहै। इसकी पेड़की छाल मोटी, हल्के या गहर भूरे रंगकी होतीहै, यह बहुत नहीं तड़कतीहै। इसके पत्ते खरदरे होतेहै। इसके छोटे सफेद पुष्पोंके और छोटे-२ हरे फलोंके गुच्छे लगतेहै, जब फल पक जातेहै तब हल्के सिंदूरी रंगके होजातेहै वे चेपदार पदार्थसे भरे रहतेहै उनमें एक बीज होताहै। माघ फागुनमें इसके नवीन पत्ते आतेहै इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै।

फूलने फलने का समय—चैतसे जेठ तक इसके पुष्प लगतेहै। वर्षा ऋतुमें फल पकतेहै।

प्रयोग—(१) गूंदी मीठी, कुछ शीतल, कृमिनाशक और वातलहै (२) इसकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) मुखपाक मिटानेके लिये इसकी छालके काथसे कुल्ले करतेहै (४) गूंदीके पत्तोंको काली मिरचके साथ घोट छान कर पीनेसे धातु पुष्ट होतीहै (५) इसकी २ वर्षकी जड़ जमीनके नीचेसे निकाल उसका टुकड़ा मुंहमें रखनेसे पित्तके विकारसे पड़ा हुआ गला खुल जाताहै (६) गूंदीके रसमें मिश्री मिलाके पीनेसे अथवा इसके पत्तोंके चूर्णकी शकरके साथ फंकी लेनेसे धातु पुष्ट होतीहै, परन्तु विशेष खानेसे बादी बढ़ जातीहै (७) सूखी गूंदीके चूर्णसे शक्कर साफ करतेहै। पके हुए फल खानेके काममें आतेहै।

संख्या (५७६)

(सं०) षड्भुजा, दशाङ्गुलं, खर्बूजं, षड्रेखा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खरबूजो	खरबूजा	खरबूज	खरबूज	खर्मूजा	खरबूजा	मोलाम्पण्डु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मोलापळ	कर्बुज	बित्तिख	खरपुज़ाह	Cucumis melo	Melon The sweet melon

स्थान—खरबूजे बहुधा नदियोंमें और उनके किनारे बालू रेतमें बोये जातेहैं। खरबूजेके बीजोंमेंसे मीठा और खानेके लायक तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) पका हुआ खरबूजा-स्निग्ध, मीठा, शीतल, पचनेमें भारी, मूत्रवर्द्धक, तृप्तिकारक, हृष्य, बल्य, कोष्ठ शुद्धिकारक, और पौष्टिकहै (२) खरबूजेके बीज ठण्डे होतेहैं और इनकी मींगी कई प्रकारके पाकोंमें पड़तीहै (३) इसकी मींगीका सेवन करनेसे शरीर पुष्ट होताहै (४) इसकी मींगीको मिश्री और कालीमिरचके साथ पीसकर पीनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (५) इसकी मींगीको कच्चे दूधके साथ पीसकर पीनेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै (६) मींगीको जलके साथ पीस, उसमें चन्दनके तेलकी १५-या २० बूंद डालकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (७) इसकी मींगीका दूधिया रस बना, उसमें जोखार और कलमीशोरा मिलाके पिलानेसे वृक्कमें मूत्र पैदा होने लग जाताहै (८) खरबूजेकी और खीराकी मींगीको कालीमिरचके साथ घोट छान मिश्री मिलाकर पिलानेसे हृदय और शरीरमें ठण्डाई होजातीहै (९) इसकी मींगीको पीस गर्मकर बच्चोंके पेट पर लेप करनेसे अफ़ारा उतर जाताहै (१०) खरबूजे खानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (११) खरबूजा खिलानेसे बच्चोंके वे फोड़े मिटतेहैं कि जिनपर खरूंट आके खुजली चला करतीहै (१२) खरबूजे खानेसे गुदामें खजलीका चलना और रुधिर निकलना बन्द होजाताहै (१३) बच्चा होनेके पीछे गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसके छिलकोंको सौंफके अर्कमें पीसके पिलाना चाहिये (१४) इसके बीजोंको धूपमें सुखाकर बोतलमें भर मजबूत काक लगा देवे कि जिसमें हवा नहीं लग सके। जिन दिनोंमें खरबूजे नहीं मिलें उन दिनोंमें इन बीजोंके काममें लानेसे उतनाही लाभ होजाताहै कि जितना खरबूजेसे।

संख्या (५५०)

(सं०) सप्तपर्णः विशालत्वक्, शारदः, विषमच्छदः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	छतिवन	सप्तपर्ण	सातविण	छातिमगाछ	सतौना	एडाकुल

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	एल्लेग			Alstonia Scholaris Teluless S	Commercially known as Dita Bark

स्थान-यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै। हिमालयमें जमुनासे पूर्व की ओर और बंगाल और दक्षिण हिन्दुस्थानमें बहुत होताहै।

पहिचान—यह वृक्ष ४० से ६० और कहीं ८० से ६० फुट ऊंचा होताहै और जल्दी बढ़ताहै। इसकी पेड़ लम्बी और शाखें फैली हुई होतीहैं। इसकी छाल काली, भूरी और खरदरी होतीहै परन्तु तड़कती नहींहै। इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे चमकदार और नीचेकी ओरसे चन्दनिया रंगके ४ से ८ इंच लम्बे और थोड़े चौड़े होतेहैं। इसके पुष्प कुछ हरे श्वेत रंगके होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—मंगशिरसे फागुन तक इसके पुष्प लगते रहतेहैं, जेठमें फल लगतेहैं।

प्रयोग—(१) सप्तपर्ण-कषैला, उष्ण, कड़वा, सारक, स्निग्ध, हृद्य और दीपन होताहै (२) इसके दूधिया रसको फोड़ों पर लगातेहैं (३) इसके दूधिया रसमें तेल मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द मिटताहै (४) इसकी छालका क्वाथ वारीसे आनेवाले ज्वरको रोकताहै (५) इसकी छालके क्वाथ पर अतीस बुरकाके पिलानेसे पुराना अतिसार मिटताहै (६) इसकी छाल और सौंफकी औटाके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (७) इसकी छालके क्वाथके साथ वायविडंगकी फंकी देनेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (८) त्रिफला और इसकी छालको औटा छान ठण्ढी कर मधु मिलाकर पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै (९) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये और पाचन शक्ति बढ़ानेके लिये इसकी छालके क्वाथमें पीपल बुरकाके पिलाना चाहिये (१०)

इसकी छालका सत गुणमें उत्तम कुनैनके बराबर होताहै (११) जिन बिगडे हुए व्रणोंमें दुर्गन्धियुक्त पूय निकलता हो तो इसके कोमल पत्तोंको अग्निपर तपा पीस पुल्टिस बनाकर उनपर बांधना चाहिये (१२) इसका क्वाथ पीनेसे सांद्रप्रमेह मिटताहै (१३) दूधके साथ इसके पत्तोंके कल्कका लेप करनेसे दुष्ट व्रण मिटतेहैं।

संख्या (५५१)

समुद्रपात।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
घावबेल	समुद्रपात		समुद्रशोस	गुगुली		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Argyreia speciosa Lettsomia nervosa	The elephant creeper

स्थान—समुद्रपातकी बेल हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतीहै।

पहिचान—यह बहुत बड़ी बेल होतीहै। इसकी शाखा और पत्तोंके नीचे सफेद कोमल रेशमीन रुंए होतेहैं। इसके पत्ते ४ से १२ इंच लम्बे नागरबेलके पान जैसे नोकदार होतेहैं और प्रायः उतनेही चौड़े होतेहैं। इसके गहरे गुलाबी रंगके पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। इसके बीजोंमेंसे तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) दूधके साथ इसकी जड़के चूर्णकी फंकी देनेसे घुटनेकी झिल्लीकी पीड़ा या सूजन मिटतीहै (२) गांठ या फोड़ेको पकानेके लिये इसके पत्तोंको रुंएकी ओरसे बांधना चाहिये (३) गांठ या फोड़ेको बिखेरनेके लिये पत्तोंको उलटे बांधतेहैं (४) इसकी जड़को औटा छान ठण्डाकर उसमें मधु मिलाकर पिलानेसे रक्त शुद्ध होताहै (५) इसके स्वरसमें सिरका मिलाकर शरीर पर मर्दन करनेसे मेदका भाग कम होजाता है (६) इसकी जड़को औटाकर पीनेसे गठिया मिटतीहै (७) इसके रसका लेप करनेसे बच्चोंके, पुराने दादकी जातिके फोड़े मिटतेहैं (८) इसके पत्तोंका पुल्टिस बांध-

नेसे सूजन बिखर जातीहै (१०८) इसकी जड़के चूर्णकी २॥ रत्तीसे सवा मासे तककी मात्रा देनेसे गठिया मिटतीहै (११०) स्नायुक पर इसके पत्तोंका सुल्टिस बांधतेहैं (१११) इसका अर्क, तिल्लीका तेल और सोयेके बीजोंको एकत्र पीसकर लेप करनेसे खुजली और बच्चोंके त्वचाके दूसरे रोग मिटतेहैं (११२) बिगडे हुए फोडे, नाडीव्रण और लम्बे घावों पर इसके पत्तोंको ऊपरकी ओरसे बांधनेसे वे साफ होजातेहैं और उनमेंसे साफ पीप निकलने लगताहै, जब वे फोड़े शुद्ध होजावें तब उनपर पत्तोंको उल्टे बांध देना चाहिये (११३) इसकी जड़के चूर्णकी १॥ मासे तककी फंकी देके ऊपर दूध पिलानेसे स्नायु-जालकी शक्ति बढ़तीहै।

संख्या (५५२)

(सं०) समुद्रफलम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
समदरफल	समुद्रफल	समंदरफल	समुद्रफल	समुद्रफल		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Barringtonia acutangula	

स्थान—इसके वृक्ष मदरासके पूर्व, अवध, बंगाल, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतेहैं। नदियोंके किनारे दल २ में और बहुधा तर जमीनमें होतेहैं।

परिचय—यह वृक्ष ३० फुट तक ऊंचा होताहै। इसकी पेड़ छोटी और उसकी गुलाई ५ फुटकी होतीहै। इसकी शाखें मुड़ी हुई फैली हुई और बड़ी २ होतीहैं। इसकी छाल कुछ भूरी कालीसी और एक इंच मोटी होतीहै। इसके पत्ते फागुन चैत्रमें गिरकर उन्हीं दिनोंमें फिर नये आजातेहैं। इसके पुष्प लाल रंगके होतेहैं। इसका फल लगभग एक इंच या कुछ अधिक लम्बा होताहै उसमें तिराखा बहुत निकलताहै। इसकी छाल रंगनेके काममें आतीहै।

फूलने फलनेका समय-वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं । भादवे और आसोजमें फल पकतेहैं । (४९)

प्रयोग-(१) पत्तोंको उल्टी करानेके और कफ निकालनेके लिये इसके थोडेसे बीजोंको पीस अदरकके रसके साथ पिलाने चाहिये । इसकामके लिये बहुत उपयोगीहै (२) पत्तोंका स्वरस पिलानेसे अतिसार मिटताहै (३) फलको पीसकर सुंघानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (४) सोंठ और इसके फलको पीसकर मर्दन करनेसे बहुत पसीना आना बन्ध होजाताहै (५) इसके फलको मालकांगनीके साथ पीसके लेप करनेसे चमड़ीके दाग मिटकर साफ होजातेहैं (६) ज्वरमें स्नायुपीडाको मिटानेके लिये इसके फलके चूर्णका मर्दन करना चाहिये (७) इसकी जड कड़वीहै और कुनैन जैसा काम देतीहै (८) इसके चूर्णसे शरीरकी दाह मिटतीहै (९) मुनकाके साथ लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (१०) इसके फलको पानीमें पीसकर पिलानेसे वमन होतीहै (११) इसके फलकी फकी देनेसे अजीर्णसे तथा आमाजीर्णसे पैदाहुई पेटकी शूल मिटतीहै (१२) इसके बीजोंको पीस गर्मकर लेप करनेसे नेत्रपीडा मिटतीहै (१३) ठंडी हवासे पैदाहुई पीडाको मिटानेके लिये इन्द्रायणके फलको या ऐसेही गुणवाली दूसरी औषधियोंके साथ इसका लेप करना चाहिये (१४) बच्चोंकी छातीमें जो सर्दीसे जमा हो जाताहै उसको वमन कराके निकालनेके लिये इसके थोडेसे बीज पीसकर पिलाने चाहिये (१५) इसके फलकी मींगी और सांद्रानेको पीसकर मक्खनके साथ चटानेसे अतिसार मिटताहै (१६) इसके फलोंको औटाकर पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (१७) इसकी जड शीतल, तिक्त और सारकहै (१८) इसके फल बहुत तिक्त, सुगंधयुक्त, रुक्ष, उत्तेजक और वामकहै (१९) इसके पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाकर पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (२०) इसकी मींगीको पानीमें घिसकर जो पीडा दहनी ओर हो तो बाएं ओर और बाएं ओर हो तो दहनी ओरके नथनेमें टपकानेसे मस्तक पीडा मिटतीहै जो इससे छिपाईका डर होतो स्त्रीके दूधमें घिसकर टपकाना चाहिये (२१) फलकी मींगीको बकरीके मूत्रमें घिसकर नेत्र में अंजन करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं (२२) फलकी मींगीको स्त्रीके दूधमें घिसकर नाकमें टपकानेसे नजलेकी पीडा मिटतीहै और मस्तकसे मवाद निकल

जाताहै (२३) इसके फलके चूर्णको गगेरनके रसमें मिलाके कानमें ७ दिन डालनेसे बहिरापन मिटताहै (२४) इसके फलको भांगरके रसके साथ ७ से १४ दिन तक खानेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै (२५) इसके फलको बकरीके मूत्रमें घिसकर अंजन करनेसे फूला कटताहै (२६) इसके फलकी बकरीके मूत्रके साथ नस्य देनेसे आधाशीशी मिटतीहै (२७) इसको अजवायनके साथ खानेसे पेटकी शूल मिटतीहै और एकांतरा छूटताहै (२८) खुरासानी अजवाइनके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे रक्तपित्त मिटताहै (२९) इसके फलको बकरीके मूत्रके साथ पीस नस्य देनेसे मूर्छा मिटतीहै (३०) गुडके साथ ३ दिन तक खिलानेसे मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै (३१) पीपलके साथ खानेसे शूल मिटतीहै (३२) नींबूके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (३३) पानीके साथ पीसकर ८४ दिन तक मस्तकपर लेप करनेसे ८४ दिनमें केश काले होजातेहैं (३४) इसका फल और आककी जडकी नस्य देनेसे उन्माद मिटताहै (३५) तूंबीकी गिरके रसके साथ पीसकर २१ दिन तक लेप करनेसे इन्द्री मोटी होतीहै (३६) हरडके साथ लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (३७) इसको मधुके साथ लेनेसे श्वास रोग मिटताहै (३८) घीके साथ मलनेसे पसीना बन्द होताहै (३९) हल्दीके साथ खानेसे पित्तविकार मिटतेहैं (४०) अदरकके रसके साथ खानेसे पेटकी पीडा मिटतीहै (४१) छालीके मूत्रमें घिसके अंजन करनेसे नेत्रोंका झरना बन्द होताहै (४२) हिंगोटेके रसके साथ पीसके लगानेसे काखोलाई मिटतीहै (४३) मधुमें मिलाके लगानेसे तलवारका घाव भर जाताहै (४४) जलभंगरेके रसके साथ लेनेसे कामला रोग मिटताहै (४५) गुडके साथ लेनेसे पेटकी पीडा मिटतीहै (४६) दहीके साथ लेनेसे नाभ (धरन) ठिकाने आजातीहै (४७) पानीमें पीसकर लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (४८) इसको महीन पीसकर दोनों नेत्रोंमें अंजन करनेसे सर्पका विष उतरताहै (४९) इसको दहीके साथ खिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (५०) एक भाग समुद्र फल और दो भाग पीपलको जला एक मासेकी मात्रा पानीमें रखकर खानेसे श्वास रोग मिटताहै (५१) बकरीके मूत्रके साथ घिसकर अंजन करनेसे रतौंधा मिटताहै और बाफनी आजातीहै (५२) गुड और

राकरके साथ देनेसे पेटके कीड़े मरजातेहैं (५३) अगस्त्याके रसके साथ देनेसे नपुंसकता मिटतीहै (५४) गधेके मूत्रमें घिसके अंजन करनेसे भूत प्रेतका आवेश मिटताहै (५५) अकलकरेके साथ २१ दिन तक लेनेसे पेटकी पीडा मिटतीहै (५६) काले धतूरेके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे वायशूल मिटतीहै (५७) आककी जड़के साथ पीसके लेप करनेसे कमरकी पीड़ा मिटतीहै (५८) आककी जड़ और समंदर फलको घिसकर नस्य देनेसे सन्निपात दूर होताहै (५९) सफेद आककी जड और समंदर फलको पीसके नस्य देनेसे सर्प और बिच्छूका विष उतरताहै (६०) इसको बचके साथ देनेसे पित्तविकार मिटतेहै (६१) भैसके गोबरके रसके साथ देनेसे रक्तप्रदर मिटताहै (६२) भांगके रसके साथ देनेसे पित्त मिटताहै (६३) भागरेके रसके साथ देनेसे वायगोला मिटताहै (६४) तुलसी और लोंगके साथ देनेसे ज्वर छूटताहै (६५) बकरीके मूत्रके साथ देनेसे अजीर्ण मिटताहै (६६) नींबूके रसके साथ अंजन करनेसे आंखका दूखना मिटताहै (६७) सुंठीके रसके साथ देनेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै (६८) मिरच और काले धतूरेके रसके साथ देनेसे अर्श मिटतेहैं (६९) गायके दूधके साथ खिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै (७०) गोघृतके साथ घिसकर लगानेसे कंठमाला मिटतीहै (७१) थूहरके दूधके साथ लगानेसे सर्पका विष उतरताहै (७२) लहशनके साथ लगानेसे पित्तकी भमल मिटतीहै (७३) निर्गुडीके रसके साथ घिसकर अंजन करनेसे फूला कटताहै (७४) मधुके साथ कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता है (७५) गायकी छाछके साथ महीने तक खानेसे प्लीहरोग मिटताहै (७६) हींगके साथ देनेसे पेटके कीड़े मरतेहै (७७) हरढके साथ पीसकर लगानेसे दाद मिटताहै (७८) पानीमें घिसकर मूलद्वार पर लगानेसे अफारा मिटता है (७९) चार मासे कमलगट्टे, ४ मासे पोखर मूल और समन्दर फलको चांवलोंके पानीके साथ पिलानेसे वमन, मिटतीहै (८०) गोड़ेकी लीदके रसमें इसको और समुद्र झागको पीसकर कानोंमें डालनेसे बहिरापन मिटताहै (८१) चारमासे दाख, घोडेके नख और समुद्रफलको घोडेके मूत्रमें खरलकर अंजन करनेसे पटल और जाला दूर होताहै (८२) ढाककी जडकी छाल ४ मासे, नागरमोथा ४ मासे गजपीपल ६ मासे और समन्दरफल ४

मासे इन सबको पीसकर गायके दूधके साथ ३ दिन लेनेसे वन्ध्यापन मिटताहै।

संख्या (५५३)

(सं०) समुद्रफेनः, हिराडीरः, अब्धिकफः, सुफेनम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
समदर झाग	समुद्रफेन	समुद्रफीण	समुद्रफेण	समुद्रफेन	समुद्रझाग	समुद्रपनुरुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
फड़लनोरे	समुद्रनोरे			Sepia officinalis	Cutle fishbone

प्रयोग—(१) यह–शीतल, कषेला, लेखन, सारक, पचनेमें हलका, और रोचकहै विष, पित्तविकार, नेत्र और कानके रोगोंको मिटाताहै (२) समुद्र फेनको केवल या बिनौलेक तेलमें पीसके लगानेसे नेत्रका जाला मिटता है (३) मधु को ओटा गाढाकर उसमें समुद्रफेन मिला उसमें बत्ती भिगोके नासूरमें रखनेसे वह भर जाताहै (४) समुद्रझागको गुलाबके तेलमें मिलाकर मलनेसे मुखकी झाई दूर होतीहै (५) इसको और हरड़की मींगीको पीस योनीमें रखनेसे ढीलापन मिटताहै (६) इसका चूर्ण कानमें डालनेसे कानसे पूयका बहना बन्ध होताहै (७) इसको और शकरको पीसकर अंजन करनेसे अर्जुन रोग मिटताहै (८) समुद्रफेन और नरकचूर जलमें पीसकर उबटना करनेसे मुहांसे मिटतेहैं (९) समुद्रफेनकी भस्म बना सिरकेमें मिलाके लगानेसे बालोंका निकलना बन्ध होताहै ।

संख्या (५५४)

(सं०) सरलः, पीतद्रुः, पूतिकाष्ठम्, पीतवृक्षः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सरल, चीड	देवदारु	सरळ	सरलगाछ		सरल, देवदारु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	देवदारु			Pinus Longifolia,	The longleaved or three leaved Pine

स्थान—सरलके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानके कमाऊं ब्रिटिस गढवाल नैनीताल और रानी खेत आदि बहुतसे भागोंमें और हिमालयमें सिन्ध नदी से भूटान तक होतेहैं।

पहिचान—सरलका वृक्ष ७० फुट और कहीं कहीं १०० से ११० फुट ऊंचा हो जाताहै। इसकी पेढड लम्बी और सीधी होतीहै उसकी गुलाई ५, ७ फुट और कहीं कहीं १०,१२ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते बहुधा २, ३ वर्ष तक नहीं गिरतेहैं जब बहुत पुराने हो जातेहैं तब वैशाख जेठमें गिरतेहैं इसकी शाखें इसकी पेढडकी और ऊंची बढतीहै जिससे गोल शिर बन जाताहै। इसके ९ से १२ इंच लम्बे तीन २ पत्ते लगतेहैं कभी कभी इससेभी अधिक लम्बे होजातेहैं।

फूलने फलने का समय—माघसे चैत तक इसके पुष्प लगते हैं वर्ष सवा वर्षमें इसके फल या डोडे पकतेहैं, चैत वैशाखमें वे फट जातेहैं, और उनमेंसे बीज निकल पडतेहैं परन्तु वे वृक्षपरही लगे रह जातेहैं जिससे वसंत ऋतुमें वृक्षके ऊपर बहुतसे खाली डोडे दीखने लगतेहै। इस वृक्षमेंसे गंधाबेरजा निकाला जाताहै अर्थात् इसकी सवा छः सेर लकड़ीके टुकड़ोंमेंसे सेर भर बेरजा निकलताहै। इसकी छाल और पत्तोंके कोयले रंगतके काममें आतेहै। गंधे बेरजेमेंसे तेल निकाला जाताहै सात छटांक गंधे बेरजेमेंसे छटांक भर तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) सरल–रस और पाकमें चरपरा, कड़वा, उष्ण, रूक्ष, मीठा, हल्का, स्निग्ध, और कान्तिवर्द्धकहै (२) इसकी लकड़ी उत्तेजक और पसीने लानेवालीहै। शरीरकी दाह कफ, निर्बलतासे मूर्च्छा, फोड़े फुन्सी आदि रोगोंमें उनकी ओषधियोंके साथ काममें आतीहै (३) गधे बिरोजेके तेलसे पुराना सुजाक मिटताहै (४) मूत्र सम्बन्धी अंगोंके रोग, पुरानी खासी, किसी अंगसे रुधिरका बहना, गठिया और ज्वर आदि रोगोंमें

गंधाविरोजा काम आताहै (५) तिल्ली और शीतज्वरमें ४ से ८ मासे तक गंधाविरोजा देतेहैं (६) गंधेविरोजेको किसी गांठ या दूसरी गिल्टियोंकी सूजनपर लगानेसे उसको पकने नहीं देता और बिखेर देताहै (७) इसको खिलानेसे यह वीर्य्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंकी झिल्लियोंपर अपना असर करताहै इसलिये मूत्रकृच्छ्रका यह बहुत अच्छा उपायहै। ३॥ मासेसे ११ मासे तक गंधेविरोजेका किसी चेपदार चीजके साथ द्रव बनाकर दिनमें चार वेर देना चाहिये। जैसेकि यह गाढा होताहै तो इसको धीरे २ अच्छी तरह किसी चेपदार चीजमें मिलाना चाहिये (८) गंधेविरोजा विशेष करके फोडेके लिये बहुत उत्तेजकहै (९) पकेहुए और पीपदार फोड़े और गाठोंके ऊपर इसका लेप बहुत उपकारीहै (१०) पकनेवाली सूजनको बिखेरनेके लिये चीडकी लकड़ीके टुकड़ोंका काथ पिलाना चाहिये (११) गंधेविरोजे की धूनी कई वेर देनेसे मासिक धर्म फिर होने लग जाताहै (१२) कहीं २ के मनुष्य इसके फलोंको खानेके काममें लातेहैं परन्तु न उनका स्वाद अच्छा है और न वे शरीरका पोषण करनेवालेहैं।

संख्या (५५५)

(सं०) सर्जकः, अजकर्ण, मरिचपत्रकः, पीतफलः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	बडाशाल	रालनु झाड़	सर्जवृक्ष		सर्जराल	शालमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वेल्लेकुन्तारिक	सज्जरदगर			Vateria indica V. Malabarica	The white dammer Piney Varnish or Indian Copal

स्थान—चन्द्रसके वृक्ष पश्चिमी प्रायः द्वीपमें कनारेसे ट्रावनकोर-तक होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष बड़ा होताहै, इसके पत्ते बारह महीने लगे रहतेहैं। इसके वृक्षमेंसे राल जैसा एक पदार्थ निकलताहै।

इसके बीजोंमेंसे बहुतसा गाढा तेल इस रीतिसे निकाला जाताहै कि बीजोंको साफ कर सेकके पीस लेतेहैं पीसेहुए पाच सेर बीजोंको वारहसेर पानीमें इतने समय तक औटावें कि तेल पानी पर तैरने लगजावे तब उसको पानी परसे उतार फिर उन बीजोंके आटे और जलको खूब हिलादेवें और आठ पहर तक पड़ा रक्खें, कई लोग घीके बदलेमें इसको बेच देतेहैं ।

प्रयोग—(१) चन्द्रसकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै-(२) तेल और मोमको मंद आंच पर गलाकर उसमें चन्द्रस मिला मरहम बनाके, फोड़े फुन्सी पर लगातेंहै (३) इसके तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गाठिया मिटतीहै (४) दूसरे कई प्रकारके रोग कि जिनमें पीड़ा हुआ करतीहै, इसके तेलके मर्दन करनेसे मिटतेहै (५) चन्द्रस और बुरेका धुंआ लेनेसे सर्दगर्मीका जुकाम मिटताहै (६) चन्द्रसको मलनेसे दातोंसे रुधिरका निकलना बन्द होजाताहै (७) इसकी छालके चूर्णमें कपासके फलका रस और मधु मिलाकर कानमें डालनेसे कर्णस्राव मिटताहै ।

संख्या (५५६)

(सं०) सर्पाक्षी, फणिहंत्री, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सरहटी	नकुलकंद	मुगुसकादा	पानशिउली	सरहटी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Ophiorrhiza mangos	The mongoose plant

स्थान—सरहटीके गुल्म खासिया पहाड़ आसाम पश्चिम मायद्वीप और सीलोन आदि बहुतसे देशोंमें होतेहै ।

प्रयोग—(१) इसका पचांग कडवा होताहै परन्तु जड बहुतही कड़वी होतीहै यह आमाशयकी शूल मिटानेके लिये दीजातीहै (२) इसके पचागका सवा तोले काथ पिलानेसे सर्प का विष उतरताहै साप और नोलेकी लड़ाईमें

जब नोलेको सर्प काटखाताहै तब वह नोल उसका विष उतारनेके लिये इस सरहटीको खाताहै (३) पानीजंन और दुष्ट वायु आदिसे पैदाहुए कई रोग को मिटानेके लिये इसका काथ पिलाया जाताहै (४) पागल कुत्तेके काटे हुए रोगीको इसका काथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जडको घिसकर सर्पके दंश पर लगाना चाहिये (६) इसकी जडको चंद्रग्रहणमें निमत्रण दे दूसरे दिन लाकर कालेसूतसे वाम कानमें बाधनेसे एकांतरा छूट जाताहै और दक्षिण कानमें बांधनेसे द्व्याहिक ज्वर छूटजाताहै (७) श्मशानमें पैदा हुई सरहटी की जडको रविवारके दिन लाकर उसको घीमें घिसकर ललाट पर तिलक करनेसे एकाहिकज्वर छूटताहै (८) इसकी जडको लाल सूतमें बांधकर कमरमें बांधनेसे अतिसार मिटताहै ।

संख्या (५५७)

(सं०) सर्वजया ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सभाजय		देवकेली	सर्वजया	हकीक	गुरिगेंजाचेट्टु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कुन्द्रमनी-चाहि				Canna indica	Indian shot

स्थान—सर्वजया हिन्दुस्थान और सीलोनमें प्रायः सबठौर बागोंमें लगाई जातीहै ।

पहिचान—इसके पत्ते बड़े और कठौर होतेहैं । इसके बीज काले चमकदार, शख्त, और मटर जैसे गोल होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीनेही पुष्प आते रहतेहै ।

प्रयोग—(१) ज्वरमें पसीना लानेकेलिये इसकी जडका काथ पिलाते है (२) इसकी जडको पीसकर ठंढाईकी तरह पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (३) मूत्रवृद्धि होनेसे जलंधर मिटताहै (४) इसकी जड़ चरपरी और उत्तेजकहै

(५) विपैल घासके खानेसे जब चौपायोंका पेट फूल जाताहै तो उनको इसकी जड़के टुकड़े और कालीमिरचोंका चावलोंके धोवनके पानीके साथ औटाके पिलातेहै (६) हृदयकी निर्बलता मिटानेकेलिये इसके बीजोंका मयोग करतेह (७) इसके बीजोंका लेप करनेसे घाव भरजाताहै (८) इसकी जड़को काट कर पानीमें भिगो देतेहै पीछे उसको मल छान कर कुछ समय तक रख छोडतेहै जब पानी नितर कर गाद नीचे बैठ जातीहै तब उस पानीको निकाल देतेहै और गादको सुखा पीसकर रोटी बनाके निर्बल मनुष्यको खिलातेहै क्योंकि इससे उसको खट्टी डकारें नहीं आतीं और जल्दीसे पचजातीहै । इसकी जड़में मैदा होतीहै इसलिये उसको पकाकर खातेहैं ।

सख्या (५५८)

(सं०) सर्षप., कटुस्नेह., तन्तुभ, कदम्बकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सरसों	सरसों	सरसव	शिरष	सारेषा	सरों	आवालु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कडुह	सासुवे	खदले अबयज	सिप दान सुफीद	Brassicacampestris Var. I Dichotoma Sinapis dichotoma	Kali sarson

एक मन सरसोंमेंसे तेरह सेर तेल निकलताहै इसके तेलको गन्धकके तिजाब और पानीके साथ औटानेसे शुद्ध होजाताहै ।

प्रयोग—(१) सरसों—रस और पाकमें चरपरी, हृद्य, कड़वी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निवर्द्धक, और कुछ रूक्षहै । वात, कफ, कण्ड, कुष्ठ, शूल, कृमि, ग्रहपीडा और पीडाको मिटातीहै (२) इसके तेलमें कपूर मिलाके मर्दन करनेसे पेशी सम्बन्धी गठिया मिटतीहै (३) मन्या स्तंभ और बादीसे अकड़े हुए अंगपर इसका मर्दन करना बहुत उपकारीहै (४) सरसोंके तेलका सब शरीर पर मर्दन करके स्नान करनेसे त्वचा शीतल, कठोर और नीरोग होजातीहै (५) सरसोंको पीस गर्मपानीमें मिला पुल्टिस बनाके बांधनेसे बादी

के रोग मिटतेहैं (६) इसके तलका मर्दन करनेसे वात पित्त ज्वरमें बहुत लाभ होताहै (७) बच्चोंकी खासी मिटानेकेलिये उनकी छाती पर इसके तेलका मर्दन करना चाहिये (८) सरसोंको पीस मधुके साथ चटानेसे कफकी खांसी मिटतीहै (९) यह-उग्र गंधवाली और दीपनहै पित्त और रक्तपित्त को पैदा करती है (१०) सरसों पीसकर मासिकधर्म के स्नानके पीछे तीन दिन तक उसका शोफा बनाकर भगमें रखनेसे गर्भ धारण होताहै (११) सरसोंको दूधमें ओटावे जब सब दूध जल जावे तब सुखा पीसकर उबटना करनेसे शरीरका रंग गोरा होजाताहै (१२) आकके दूधमें रूई भिगो छायामें सुखा बत्ती बनाकर उससे सरसोंके तेलमें काजल पाड़के लगानेसे नाडी व्रण मिटताहै (१३) इसके तेलका मर्दन करनेसे जृंभाका वेग मिटताहै (१४) इसके तेलमें आकके पत्तोंका रस और हल्दीका कल्क डालकर ओटावे जब तेल सिद्ध होजावे तब उतार छानके लगानेसे पामा और विचर्चिका मिटतीहै (१५) सरसोंका तेल कानमें डालनेसे कानके कीड़े मरते जातेहैं (१६) इसके तेलको पेट पर मलनेसे तिल्ली कम होजातीहै (१७) सरसों और बचको पीसके लेप करनेसे शोथ उतर जातीहै (१८) सरसों, नीमके पत्ते और भिलावेको सराव संपुटमें बंध कर जला छालीके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अपची मिटतीहै (१९) सरसोंको गोमूत्रके साथ पीस गर्मकर लेप करनेसे श्लीपद मिटताहै (२०) इसके तेलको कानमें डालनेसे वादीकी कर्णशूल मिटतीहै ।

संख्या (५५९)

(सं०) साजकः, अग्रधान्यं, नीलकणा, वर्जरी, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बाजरा	बाजरा	बाजरो	बाजरी		बाजरी	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		जावरस	गावरस	Pennisetum typhordium Panicum spicatum	The Bulrush, Cumboo, or spiked millet Millet

स्थान—बाजरा हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होताहै। बाजरेकी डंडीकी [illegible] रंगतके काममें आतीहै। १०० तोले बाजरेमेंसे ७१॥ तोले मैदा और [illegible] तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग-(१) बाजरा-उष्ण, रूक्ष, और दुर्जरहै। पित्त, अग्नि और बलको बढाताहै। पित्त प्रकृतिवालेके वीर्यको पतला करदेताहै। कफ और वातको मिटाताहै (२) बाजरेके फुंगी जो सिट्टेके ऊपर लगतीहै उसकी एक मासेकी गुडमें गोली बनाकर खिलानेसे बावले कुत्तेका विष उतरताहै।

संख्या (५६०)

(सं०) श्वेतसारिवा, काष्ठशारिवा, शारदा, गोधी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोरीसर	अनतमूल	धोलीउपलसरी	पाढरीकावली	शुक्लासारिवा		मामेन

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Hemidesmus indicus Asclepias psendosarsa	Indian sarasparilla

स्थान—सारिवा उत्तर-हिन्दुस्थानमें बादासे अवध और सिक्कम तक और दाक्षिणमें ट्रावनकोर और सीलोन तक होतीहै।

पहिचान—यह-वृक्षके लपटनेवाला झाड होताहै, इसके पत्तोंके नीचें लोहके जगके रंगके रुए होतेहै, डंडी पर इसके पत्ते आमने सामने लगतेहैं। वे कुछ लम्बे होतेहै। इसके छोटे सफेद रंगके पुष्प लगतेहै उनमें गंध नहीं आतीहै। इसके फल दो तीन इंच लम्बे होतेहैं उनमें लम्बे २ बीज होतेहै। [illegible] नकी जड पर लम्बे बालोंका गुच्छा रहताहै। इसकी जड लम्बी चली जातीहै और उसमें कोईसी ठौर शाखा फूटतीहै। इसकी लम्बी जडोंकी पूलियें बंधी हुई विकतीहै।

प्रयोग—(१) श्वेत सारिवा-शीतल, मधुर, पचनेमें भारी, स्निग्ध, कटुरवी, शुक्रल और सुगन्धित होतीहै। इसकी जड़ रुधिरशोधक और बलवर्द्धकहै

(२) मंदाग्नि, त्वचाके रोग, उपदंश और श्वेतप्रदरमें इसका प्रयोग किया जाताहै (३) सारक औषधियोंके साथ भी इसका प्रयोग किया जाताहै (४) इसकी जडके चूर्णकी गायके दूधके साथ फकी देनेसे पथरी और पीडासे मूत्रका उतरना बन्ध होजाताहै (५) सफेद जीरा और इसका काथ पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाताहै और पित्तकी तेजी मिटजातीहै (६) फोडे फुन्सी, गंडमाला, और उपदंश सम्बन्धी रोग मिटानेके लिये, इसका ७॥ तोले से १० तोले तक काथ दिनमें तीन वेर पिलाना चाहिये (७) बच्चोंके मुंहके सफेद छालोंको मिटानेके लिये इसकी जड़को पीस मधुके साथ लगातेहैं। अथवा इसकी सूखी छालको पीस मक्खनमें तल रात दिनमें १ मासे से ३॥ मासे तक चटादेना चाहिये (८) आखमें छोटी २ लाल फुन्सियां होजातीहैं उनके ऊपर इसका दूधिया रस लगातेहैं (९) इसकी छोटी जड़को केलेके पत्तेमें लपेट पुटपाक कर, पत्तेमेंसे निकाल, जीरे और शकरके साथ पीस, घीमें मिलाके चटानेसे वीर्य्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंके रोग मिटतेहैं (१०) इसकी जड़का लेप करनेसे सूजन उतरतीहै (११) इसकी जड़ सारसपरेलेकी ठौर काममें आतीहै। इसकी ताजी जड काममें लानी चाहिये। पुरानी होनेसे और सूख जानेसे इसका गुण कम होजाताहै (१२) शरीरकी निर्बलता मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छाहै (१३) इसके साथ कंटालीको ओटाकर पिलानेसे पुरानी खांसी मिटतीहै (१४) इसके काथके साथ अतीसकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (१५) बच्चोंका रुधिर शुद्ध करके निर्बलता मिटानेके लिये अनंतमूलको दूध और शकरके साथ ओटाके पिलाना चाहिये (१६) अनंतमूल और हींगका चूर्ण खिलानेसे वमन बन्ध होजातीहै (१७) इसके पत्तोंको पीसकर दांतोंमें दबानेसे दांतोंके कीड़े निकलजातेहैं (१८) इसकी जड़का प्रयोग करनेसे व्रणशुद्ध होजाताहै ।

संख्या (५६१)

(सं०) कृष्णसारिवा, श्यामा, अनन्ता, कृष्णमूली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लीमर	करियासाउ	कालीउपलमरी	कालीकावली	श्यामालता	करिय्यामाऊ	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Ichnocarpus frutescens Echites f	

स्थान—सारिवा पश्चिम हिमालयमें सिरमोरसे नैपाल तक, गंगाके ऊपरके मैदानोंसे बंगाल, आसाम, और सिलहट तक, दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन पश्चिमोत्तर हिमालय और शिमले आदि कई उष्ण प्रान्तोंमें होतीहै।

प्रयोग—(१) कालीसर-शीतल, वृष्य, मधुर, स्निग्ध, शुक्रल और लघुहै। दोनों सारिवाओंके गुणोंमें कुछ विशेष अन्तर नहींहै (२) इसकी जड़ रक्तशोधक और बलवर्द्धकहै और सारसापरेलाकी ठौर काममें आतीहै (३) इसके डंठल और पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) इसकी ५ तोले जड़को ढाई पाव पानीमें ओटा कर उसमेंसे ५, ७॥ तोले काथ पर पीपल बुरकाके दिनमें दो बेर पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (५) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाकर पिलानेसे त्वचाके रोग मिटतेहै (६) इसकी जड़को चोपचीनीके साथ ओटाकर पिलानेसे उपदंश मिटताहै (७) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाकर पीनेसे नेत्रोंका शुक्र रोग मिटताहै।

संख्या (५६२)

(सं०) सिद्धेश्वरः, सिद्धाख्य., सिद्धनाथः, कृष्णचूडा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गुलतुर्रा	गुलतुर्रा	संधेशरो	गुलतुर्रा	कृष्णचूडा		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Caesalpinia pulcherima Poinciana f	

स्थान—कृष्ण चूडाके वृक्ष हिन्दुस्थानमें हरेक बागमें लगाये जातेहैं।

पहिचान—इसके बारह महीने पुष्प लगते रहतेहै। यह लाल और पीले पुष्पोंके भेदसे दो प्रकारका होताहै। इसका झाड बड़ा होताहै इसके कहीं २ काटे लगतेहै, इसकी एक सींक पर ५—१० जोड़े पत्तोंके लगतेहै, इसके लम्बी पतली चपटी फालियें लगतीहै।

प्रयोग—(१) यह-शीतल, स्निग्ध, कड़वा और कषैला होताहै (२) इसके पत्तोंको पीसकर लगानेसे गाठ और नासूर मिटताहै (३) यह त्रिदोषनाशकहै (४) इसके पत्ते, पुष्प, और बीज औषधिके प्रयोगमें आतेहैं।

संख्या (५६३)

(सं०) सिन्दूरं, गणेशभूषणं, श्रृङ्गारकं, नागजम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सिंदूर	सिंदूर	सिंदूर	शेंदूर	सिन्दूर	सिन्दूर	चेंदिरमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
सिन्दूर	सिन्दूर			Plumbi oxydum rubrum	Minium Read lead.

प्रयोग—(१) यह उष्ण है, विसर्प, कुष्ठ, कंडू और विषको मिटाताहै (२) टूटीहुई हड्डीको जोडताहै, व्रणको शुद्ध करताहै और भर देताहै।

संख्या (५६४)

(सं०) सिन्दूरी, रक्तबीजा, करच्छदा, रक्तपुष्पा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सिन्दूरपुष्पी	सिंदूरिया	सिंदूरी	शेंदरी	सिन्दूरपुष्पी	लटकण जाफर	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	सिंदूरी			Bixa Orellana	Ornottoc, Ornett

स्थान—सिन्दूरी हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै ।

पहिचान—यह-सफेद और गुलाबी या पियाजी रंगके पुष्पोंके कारण से दो प्रकारकी होतीहै । इसका वृक्ष छोटा होताहै इसके शाखें थोडी लगतीहै।

फूलने फलनेका समय—उष्णकालमें इसके पुष्प लगतेहै शीतकालमें इसके फल पकतेहै । इसके फलके गूदेमें से लाल या नारंजी रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—(१) यह-शोषक और कुछ रेचकहै और आमातिसार और वृक्कके रोगोंकी बहुत अच्छी औषधिहै (२) इसके फलकी गिर ग्राहीहै (३) इसके बीज हृदयको हितकारी, ग्राही और ज्वर मिटानेवालेहै ।

संख्या (५६५)

(सं०) सीताफलं, गंडगात्रं, कृष्णबीजं, आतृप्यम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सीताफल	सीताफल	सीताफल	सीताफल	आतागाछ	शरीफा	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		शरीफा	काज	Anona squamosa	Custard apple

स्थान—सीताफलके वृक्ष बंगाल, संयुक्त प्रदेश, राजपूताना, पंजाब, मध्य हिन्दुस्थान, बुन्देलखण्ड, कमाऊं, दक्षिण, सिन्ध, पंचमहल और बम्बई, आदि प्रदेशोंमें बोये जातेहै और अपने आपभी पैदा होतेहै ।

पहिचान—इसका झाड या छोटा वृक्ष होताहै, पेड़ सीधी और छोटी होतीहै, इसके पत्ते लम्बे, कुछ चौडे और तीखे होतेहैं । ये वसंतमें सबके सब

नहीं गिरतेहैं, और फागुन तक नये आजातेहैं। इसके एक ठौर, एक या दो पुष्प लगतेहैं, इसकी मध्य रेखा २ से ४ इंच तक लम्बी होतीहै, इसके फल का रंग कुछ पीलास लिये हुए हरा होताहै। इसके बीज-लम्बे, काले या कुछ भूरे रंगके होतेहै। वे गिरमें गडे हुए रहतेहैं।

फूलने फलनेका समय—ग्रीष्मऋतुमें इसके पुष्प लगतेहैं। आषाढसे आसोज तक इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) सीताफल,-मधुर, शीतल, हृद्य, वातल, पौष्टिक, बल वर्द्धक और पित्तनाशकहै (२) इसके पके हुए फलको कूट नमक मिलाके बांधनेसे दुष्ट वायु, जल, और पृथ्वीसे पैदा हुई गांठ जल्दी पकतीहै (३) इसके बीजोंका लेप करनेसे कीड़े मरतेहैं (४) इसके कच्चे फलको सुखा पीस चनेके आटेमें मिलाकर खिलानेसे या लेप करनेसे कीड़े मरतेहैं (५) इसके पत्तोंके हिम या फाटसे गुदा धोनेसे बच्चोंकी कांचका निकलना बन्ध होजाताहै (६) इसकी जड़ बहुत भारी रेचकहै (७) तेज आमातिसारमें इसके चूर्णकी फकी देतेहै (८) इसके बीजोंको पीसकर गर्भाशयके मुख पर लगानेसे बालक सुखसे पैदा होजाताहै (९) इसके पत्तोंकी टिकिया बनाकर बांधनेसे स्नायुक बाहिर निकल आताहै (१०) इसके गीले पत्तोंको पीस टिकड़ी बनाके बिगडे हुए फोडों पर बांधतेहै (११) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे जूएं लीखें आदि कीड़े मरतेहैं (१२) इसके पत्ते, तमाखू और बिन बुझे हुए चूनेको पीसकर जिन घावोंमें कीडे पड जातेहैं उन पर लेप करतेहै (१३) इसके फलसे मन्दाग्नि मिटतीहै (१४) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (१५) ज्वर छुड़ानेकेलिये इसकी छालका क्वाथ पिलातेहै (१६) गांठको जल्दी पकानेकेलिये इसके ताजे पत्तोंको पीस लुगदी बनाके बांधतेहै (१७) इसके बीजोंकी मींगीको पीस कपड़ेकी बत्तीमें रख जलाकर उसका धुंआ नाकमें पहुंचानेसे मिरगीके समय लाभ होताहै (१८) सीताफलके बीजोंको पीसकर शिरमें लगानेसे जूएं लीखें मर जातीहै (१९) इसके बीज और बेरीके पत्तोंको बराबर ले पीस बालोंकी जडमें मल कर ४ घड़ी पीछे अर्द्धोष्ण जलसे धोडालनेसे बाल लम्बे बढ़ने लग जातेहैं।

संख्या (५६६)

(सं०) सीसकं, नागं, यवनेष्टं, भुजङ्गमम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
सीसो	सीसा	शीसु	सिसें	सीसा	शीशा	सीसमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
करुनाह	सीसा	रिसासेअस्वद	सुरबस्याह	Plumbum	Lead

परीक्षा—सीसा दो प्रकारका होताहै एक कुमार और दूसरा समल, इनमें कुमार उत्तम होताहै वह रसादिक के काममें आताहै। जो सीसा गलनेसे बहुत पतला हो जाय, तोलमें भारी; काटनेमें बहुत उज्ज्वल और बाहिरसे काला हो वह उत्तम होताहै।

इसको शुद्ध करने की रीति—(१) इस सीसेको गला गलाके आकके दूधमें तीन वेर बुझानेसे यह शुद्ध हो जाताहै (२) अथवा खैरके कोयलोंकी अग्निसे इसको गला २ के त्रिफलेके काथमें सातवेर बुझाना चाहिये (३) अथवा ग्वारपाठेके रसमें ७ वेर बुझाना चाहिये (४) अथवा हाथीके मूत्रमें ७ वेर बुझाना चाहिये।

नागेश्वर बनानेकी रीति—(१) १ सेर सीसेको मृत्तिकाके पात्रमें गलाके इम्ली और पीपलकी पाव अंतर छालका चूर्ण उसपर थोड़ा २ बुरकाता जाय और लोहेकी कड्छीसे रगडता जाय, ऐसे करते २ जब उसकी भस्म हो जाय, तब उसकी बराबर शुद्ध मैनसिल ले, दोनोंको कांजीसे खूब घोट, टिकिया बना, सुखा, उनको सराव सपुटमें कपड कमिट्टीसे बन्दकर, गज भर गढेमें जङ्गली कंडोंकी आंच देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय, तब निकाल कर, उसके उक्त रीतिसे ६० आंच देनेसे उत्तम भस्म होतीहै (२) शुद्ध सीसेके मैनसिलको नागरवेलके पानमें खरल कर, उस सीसेके पतले सुखा, सराव संपुटमें कपड मिट्टीसे बंधकर, गजपुटमें धरके ५

तल होजानेपर निकाल, फिर बराबर मैनसिल ले, नागरवेलके पानके रसमें खरल कर, टिकिया बनाके उक्त रीतिसे गजपुटकी आंचमें फूंक लेवे इसी भांति ३२ बेर आंच देनेसे उत्तम नागेश्वर बन जाताहै। नागेश्वर बनानेकी और भी कई रीतेंहैं। (१) विना शुद्ध किये हुए सीसेकी भस्मका सेवन करनेसे कुष्ठ, अरुचि, गुल्म, पाण्डु, क्षय, कफ, रक्तविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी, शूल, भगंदर और प्रमेह आदि रोग पैदा होतेहै (२) शुद्ध कियेहुए सीसेकी भस्मके सेवनसे क्षय, वातविकार, गुल्म, पाण्डु, भ्रम, कृमिरोग, कफ, शूल, प्रमेह, कास, संग्रहणी, अर्श, मंदाग्नि, जलके विकार और आमवात आदि कई रोग मिटतेहै। अलग अलग अनुपानके साथ इसका सेवन करनेसे हरेक रोग मिटतेहैं (३) गिलोयके स्वरस और मधुके साथ अथवा हल्दी आवळे और मधुके साथ दो रती नित्य लेनेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटतेहैं।

संख्या (५६७)

(सं०) सुधामुली, अमृतोत्था, वीरकन्दः, प्राणदा।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सालममिश्री	सालममिश्री		सालमिश्री	सालममिछरी	सालम	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		खमियुस्सालब		Eulophia campestris	Salep

स्थान—सालम-मिश्री, अवध, रुहेलखण्ड, गङ्गाका अंतरवेद, पंजाब, सिरोही और राजपूतानेके पश्चिमके भागमें होतीहै।

प्रयोग—(१) सालममिश्री-मीठी, कषैली, उष्णवीर्य्य, विपाकमें भारी और रसायनहै (२) शरीरको सुखानेवाले क्षय रोग आदि दूसरे रोगोंमें बहुत हितकारीहै और शरीरको पुष्ट करतीहै (३) बच्चेकी माको इसकी कांजी करके पिलानेसे बच्चा पुष्ट होताहै (४) शर्कराश्मरी मिटानेके लिये

इसका प्रयोग करना चाहिये (५) मिश्रीके साथ इसकी फक्की देनेसे वीर्यकी क्षीणता मिटतीहै (६) पुष्टाईकी औषधियोंके साथ इसका अवलेह बनाकर चटानेसे पुरुषार्थ बढताहै और नपुंसकता मिटतीहै (७) इसको पीस दूधमें ओटाके पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (८) सालममिश्री—पचनेमें हल्कीहै । यह खानेके काममें भी आतीहै ।

संख्या (५६८)

(सं०) सुधामूली भेदः । हिं० एक प्रकारकी सालममिश्री

E Salep

स्थान—सालममिश्री की यह जात योरुप और उत्तर एशियामें होतीहै । गीली सालममिश्रीकी सुगंध वीर्य जैसी होतीहै । पंजेकी सालम सबसे अच्छी होतीहै । आलुओंको सुखा पीस छान उस आटेको गोंदके पानीसे ओसनकर उसके सालम जैसे दाने बना डालतेहैं, उनको नकली सालम कहतेहैं।

प्रयोग—(१) सालम मिश्री ४० गुने पानीको चेपदार कर देतीहै अगर इसमें थोडासा सोहागा डाल दिया जाय तो वह जल औरभी गाढा हो जाताहै । सालम मिश्रीमें शकर होतीहै (२) गीली सालम मिश्रीमें उड़नेवाला तेल होताहै (३) नपुंसकता मिटानेके लिये इसके कई प्रकारके योग बनातेहैं (४) गीली सालममिश्रीको मुट्ठीमें रखनेसे एक प्रकारकी नपुंसकता मिटतीहै (५) स्नायुजालकी निर्बलता मिटानेके लिये सूखी सालममिश्रीके चूर्णकी फक्की देना चाहिये (६) स्नायुजालका बल बढानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ इसका प्रयोग किया जाताहै। पक्षाघातमें इसका प्रयोग बहुत किया जाता है (७) लौंग, जायफल, आदि चीजोंके साथ इसको दूधमें मिलाकर पिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै ।

संख्या (५६९)

(सं०) सुवर्चिका, सूर्यक्षारः, तद्दिणरस, तार्क्ष्यः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कलमीसोरो	शोरा	सुरोखार	सोरा		शोरा	सूराकारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कम्पियुप्पु	काङ्गिउप्पु	अबक़र	श्योरा	Potassium nitras P Nitrate	Saltpetre Nitre

प्रयोग–(१) शोरा–तीक्ष्ण, अत्यंत उष्ण, रेचक, चरपरा, कड़वा, अग्निको दीपन करनेवाला, सलौना, सूक्ष्म, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राही, और वातनाशकहै (२) कलमीशोरा बहुधा वृक्कमेंसे निकलताहै। यह अपने मार्गमें झिल्लीको उत्तेजित करनेके कारणसे मूत्रवृद्धि करताहै (३) इसमें पसीना लानेकी शक्तिहै इसलिये इससे ज्वरकी ऊष्मा कम होजातीहै (४) मूत्रकृच्छ्र और पथरीके रोगोंमें शोरेका प्रयोग करना चाहिये (५) शिरमें जो एक प्रकारका स्नायुका रोग होताहै उसको मिटानेके लिये शोरेका पानी शिरपर डालतेहै (६) ५ से ६ रत्ती शोरा बार २ पिलानेसे तृषा और ऊष्मा कम होजातीहै (७) रक्तकी चालकी तेजीको कम करनेके लिये भी ऐसे ही पिलाया जाताहै (८) इसको दूधके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (९) यह जहरीली छूतको मिटाताहै (१०) इसको कड़वे तेलमें जलाकर मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै (११) शोरा और सफेद कत्था पीसकर बुरकानेसे मुंहके छाले मिटतेहैं (१२) एक मासे शोरा और एक मासे राईको पीस, उसमें बराबर बूरा मिला, दो मात्राकर, दो दिन प्रातःकाल देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१३) शुद्ध कलमीशोरेमें रंगत आनावे जितनी हल्दी मिलाकर अंजन करनेसे जाला, नाखूना आदि नेत्ररोग मिटतेहै और नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै (१४) इसको शिरकेमें पीसकर कनपटी पर लेप करनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१५) शोरेमें कपड़ा भिगोकर नाभिके नीचे रखनेसे बन्ध हुआ मूत्र उतरने लगजाताहै (१६) २ से १० मासे तक शोरा भोजन किये पहिले खिलानेसे मरा हुआ बालक गर्भाशयमेंसे निकलजाताहै। शोरा रंगतके काम में आताहै।

संख्या (५७०)

(सं०) सुवर्णम्, कनकम्, हिरण्यम्, हेमम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनो	सोना	सोना	सोने	सोना	सोन्ना	बगारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
तगं	स्वर्ण,चिन्न	ज़हब	जर, तिला	Aurum	Gold

(१) सुवर्णको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि चिन्ह वल्मीक मृत्तिका (उदेईके बाबलेकी मिट्टी) धूमसा, सोना गेरू, ईंट और नमक इन सबको पीस जमेरीके रसमें या कांजी के साथ सुवर्णके पतले पत्रों पर लेप करदेवे, पीछे उनको निर्वात स्थानमें २० छाणोंके बीचमें जुदे २ धर कर आंच लगादेवे। जब ठण्ढे होजावें तब निकाल खटाईके जलसे धोकर, कसौटी पर परीक्षा करे, जबतक कसौटी पर उत्तम सुवर्ण जैसा कस न आवे तबतक इसी प्रकारसे उसका शोधन करे (२) अथवा सुवर्णको गला २ कर कचनारके रसमें तीन वेर बुझा देनेसे सुवर्ण शुद्ध होजाताहै।

सुवर्ण भस्म बनानेकी रीति—शुद्ध सुवर्णके महीन पत्र करा उनमें दुगुना पारा मिला नींबूके रसके साथ घोट उसकी गोली बनाके या टिकडी बनावे, उस टिकड़ीके बराबर शुद्ध आमलासार गंधक पीस सरावेमें उस गंधकको टिकड़ी के ऊपर नीचे रख कपडमिट्टीसे बन्द कर, सुखा ३० छाणेकी आंच दे, ठंढा होने पर सरावेमेंसे उस सुवर्णको निकाल नींबूके रसमें खरल कर टिकिया बनाके सुखादेवे, पीछे उससे दुगुना शुद्ध गंधक उसके ऊपर नीचे देकर सरावसम्पुटमें बन्द कर उक्त रीतिसे आंच देवे। इस प्रकार १४ आंच देनेसे सुवर्णकी निरुत्थभस्म होजातीहै। इस भस्मको खानेकेलिये काममें लाना चाहिये।

जबतक सुवर्ण भस्मका सेवन करे तब तक ऐसे अन्न और शाकादिक कि जिनका नाम ककारसे प्रारंभहो, (जैसे कोद्रव, ककोड़ी आदि), उनका

त्याग रक्खे । सुवर्ण भस्म सेवन करनेके पीछे जो इन पदार्थोंका सदैवकेलिये त्याग रक्खे तो सुवर्णके गुण बहुत समय तक ठहरतेहै ।

प्रयोग—(१) सुवर्ण भस्म-कषेली, तिक्त, शीतल और मधुरहै । इसके सेवनसे आयुर्दा, कान्ती, पराक्रम, विषयशक्ति, भोजनकी रुचि, और क्षुधा बढ़तीहै । श्वास, कास, क्षय, वात, पित्त, प्रमेह, संग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, देहका दुबलापन, विष, उन्माद, रक्तपित्त, अपस्मार, शूल और नेत्र रोग आदि कई प्रकारके रोग मिटतेहै । रोगी मनुष्य सुवर्ण भस्मका सेवन करे तो उसके रोग नष्ट होजातेहै, और नीरोग मनुष्य इसका सेवन करे तो उसकी आयुर्दा बढ़तीहै । अशुद्ध सुवर्णकी भस्मका, या सुवर्ण भस्म बनाते समयमें वह कच्चा रहगया हो तो उसका सेवन करनेसे मनुष्यके बल और वीर्य नष्ट हो जातेहै और शरीरमें कई प्रकारके रोग पैदा होजातेहैं इसलिये सुवर्ण को शुद्ध करके उसकी भस्म बनाना चाहिये (२) जल भंगरेके रसके साथ सुवर्णभस्मका सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (३) दूधके साथ लेनेसे बल बढताहै (४) साटेकी जडके साथ देनेसे नेत्र रोग मिटतेहै (५) घृतके साथ देनेसे आयु बढतीहै (६) केसरके साथ देनेसे कान्ति बढतीहै (७) दूधके साथ देनेसे राजयक्ष्माकी शुष्क खासी मिटतीहै (८) निर्विषीके साथ देनेसे विष उतरताहै (९) सोंठ, लोंग और मिर्चोंके साथ देनेसे त्रिदोषका उन्माद मिटताहै (१०) आवले और मधुके साथ चटानेसे क्षय सम्बन्धी शोष रोग मिटताहै (११) शंखपुष्पीके साथ सुवर्णभस्मका सेवन करनेसे आयु बढ़तीहै (१२) विदारी कंदके चूर्णके साथ सेवन करनेसे वीर्यमें बालक पैदा करनेकी शक्ति बढ़तीहै (१३) इसकी भस्मको इलायची, वंशलोचन और मधुके साथ चटानेसे पराक्रम बढताहै (१४) सुवर्णके वरक या भस्मको बच के चूर्ण और मधुके साथ चटानेसे स्मरण शक्ति बढतीहै (१५) ज्वरघ्न औषधियोंके साथ सुवर्ण भस्म देनेसे ज्वर छूटताहै (१६) अरडूसेके पत्ते और मधुके साथ चटानेसे राजयक्ष्मा (खैनरोग) मिटताहै (१७) ब्राह्मी, शंखाहोली और मधुके साथ चटानेसे उन्माद मिटताहै (१८) कौंचबीज आदि पुष्टाईकी औषधियोंके साथ सेवन करनेसे नपुंसकता मिटतीहै (१९) सुवर्णभस्मकी मात्रा दो रती तकहै । सुवर्णभस्मको बच, शंखाहुली और मधुके साथ बालकको

चटानेसे बल, बुद्धि और आयु बढतीहै और शरीर पुष्ट होताहै (२०) सोनेके वरकोंके साधारण गुण ये सब प्रकारके विष, शूल, अम्लपित्त, हृदयकी निर्बलता, हृद्रोग, शरीरका दुबलापन, क्षय, व्रण, मदाग्नि, हिचकी, आनाह, कफ और वातरोग आदि कईप्रकारके रोगोंको अलग २ अनुपानके साथ मिटातेहै (२१) सोनेके वरकों को शहदके साथ चटानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहै परन्तु एक दो वरकसे काम नहीं चलता, इसलिये जबतक विष नहीं उतरे तबतक थोडे २ समयके अन्तरसे चटाते रहना चाहिये (२२) मक्खन और मिश्रीके साथ सोनेके वरक चटानेसे पित्तके रोग मिटतेहै (२३) स्नायुजालको बलवान् करनेके लिये वरक काममें आतेहैं (२४) सूर्यके देखनेसे जिसकी दृष्टि विदग्ध होगई हो तो घीके साथ सुवर्ण घिसकर आंखमें अंजन करना चाहिये ।

संख्या (५७१)

(सं०) सुवर्णमाक्षिकम्, ताप्यम्, मधुधातुः, तापीजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनमक्खी	सोनामाखी	सोनामाखी	सोनामुखी	स्वर्णमाक्षिक	सोनेमह	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		मरकशीशा		Ferri sulphuretum	Iron sulphide or sulphuret of iron

स्थान—सुवर्णमाक्षिक हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमेंसे निकलतीहै ।

पहिचान—कुछ काले रंगके पत्थरमें पीतलके रंगकी एक धातु होतीहै उसको सोनमक्खी कहतेहै, जिसमें पत्थर कम हो, और यह धातु अधिक हो, वैसे टुकडे लेने चाहिये । जो सफेदी लिये हुए पीतलके रंगके कुछ घिसे हुए धातुके टुकडे होतेहै, और जिनमें पत्थरका मिलाप नहीं होताहै उसको रूपामक्खी कहतेहै । इसको यहा लिखनेका यह प्रयोजनहै कि औषधियां बेचनेवाले बहुधा रूपामक्खीको सोनमक्खीकी ठौर दे दिया करतेहै और अनजान लोग

उसको निर्मल और चमकदार देखकर मोल लेलिया करतेहैं ।

सोनमक्खीको शोधनेकी रीति-(१) तीनभाग सोनमक्खीमें एकभाग सैंधानमक मिलाकर नीबूं और बिजोरेके रसके साथ लोहके पात्रमें इतने समय तक खरल करे कि जबतक वह लाल न होजाय। (२) सोनमक्खीको गला२ कर एरंडके तेल, बिजोरे और केलेकी जड़के रस और त्रिफलेके क्वाथ आदि प्रत्येकमें सात सात बेर बुझावे (३) सहिंजनेकी जड़को पीस उसको अगस्तिके पत्तोंके रसमें घोल उसमें सोनमक्खीको सातबेर बुझावे अथवा नीबूंके रसमें सातबेर बुझानेसे सुवर्णमाक्षिक शुद्ध होजातीहै ।

(१) सुवर्णमाक्षिककी भस्म करनेकी रीतिः-शुद्ध सोनमक्खीको पीस मिट्टीके खप्परमें डाल, चूल्हे पर चढाकर उसके नीचे आंच जलावे और उसमें नींबूका रस डालकर लोहेकी कुडछीसे हिलावे ज्यों २ रस जलताजावे त्यों २ उसमें रस डालता जाय और हिलाता जाय जब उसका रंग लाल होजाय तब नींबूका रस डालना, हिलाना और आंच देना बन्ध करदेवे, जब स्वाग शीतल होजावे तब उसको काममें लाना चाहिये ।

(२) रीति-महीन पीसी हुई सोनमक्खी तीनभाग सैंधानमक एक भाग ले दोनोंको लोहेकी कढ़ाईमें डाल, चूल्हे पर चढाकर उसमें नींबू अथवा बिजौरेका रस डालकर लोहेके डंडेसे घोटता रहे और तीक्ष्णाग्नि देता रहै जब लाल होजाय तब उतार लेवे और स्वांग शीतल होजाने पर काममें लावे ।

प्रयोग—(१) स्वर्णमाक्षिक-तिक्त, और मधुरहै । प्रमेह, अर्श, क्षय, कुष्ठ, कफ और पित्तके रोग, पाडु, कामला, विष और हलीमक आदि कई रोगोंको मिटतीहै (२) इसकी भस्मको मधुके साथ चटानेसे अथवा गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे पित्त प्रमेह मिटताहै (३) अतीसके चूर्णके साथ देनेसे ज्वर छूटताहै (४) पीपल और मधुके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (५) सोंठके साथ देनेसे अतिसार मिटताहै (६) मधुके साथ इसका अंजन करनेसे नेत्रका शुक्ररोग मिटताहै (७) अशुद्ध सोनमक्खीका सेवन करनेसे मंदाग्नि, अफारा, नेत्ररोग, कुष्ठ, खैन और कृमिरोग आदि बहुतसी व्याधिया पैदा होतींहैं।

सख्या (४७२)

(सं०) सूर्यावर्त्ता, रविप्रीता, रविकान्ता, सौरी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हुलहुल	हुलहुल	सूर्यमुखीफुल	तिलवण	हुडहुडिया		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Gynandropsis pentaphylla (Cleome p	

स्थान—सूर्यावर्त्त हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें बहुत होताहै ।

ताजी हुल हुल को कूट अर्थात् दरगच कर जल के साथ उस का अर्क खेंचनेसे उसका तेल निकल आताहै, इस तेलमें लहसन या राई के तेल के जैसे गुण होतेहै ।

प्रयोग—(१) ब्रह्म सुवर्चला–उष्ण, लघु, कषेली, सारक और चरपरी है (२) इसके पत्तोंके काथकी ६ तोलेकी मात्रा दिनमें दो वेर देनेसे वांइंट मिटतेहै-(३) पानीजरेका ज्वर छुडानेके लिये बीजोंके काथकी उतनी ही मात्रा देनी चाहिये (४) छाला उठानेके लिये इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधा जाताहै । उस छालेमेंसे बहुतसा मवाद वह निकलताहै (५) इसके बीजोंके चूर्ण की शक्करके साथ फकी देनेसे आंतोंके कीड़े बाहिर निकल जातेहै (६) बीजोंका लेप करनेसे दाह मिटतीहै (७) कानके भीतरकी सूजन और पीडा मिटानेके लिये इसके केवल पत्तोंका विना जलसे निकाला हुआ रस कान में डालना चाहिये (८) फोडेके ऊपर इसके पत्ते बांधनेसे उसकी सूजन विखर जातीहै । इसके पत्तोंको सिरके या नींबूके रस या उष्ण जलमें बांटकर लेप या पुल्टिस बनाके बांधना चाहिये (९) इसकी जड़का काथ पिलानेसे हल्का ज्वर छूट जाताहै (१०) दो मासेसे चार मासे तक इसके बीजोंके चूर्णमें बराबर शक्कर मिलाकर, उसकी फकी प्रभात और संध्याके समय दो दिन तक देकर, तीसरे दिन प्रभातके समय एरंडके तेलकी मात्रा देनी चाहिये, इससे कृमि मरतेहैं. बच्चोंको आयुके अनुसार २॥ से १० रती तककी मात्रा देनी चाहिये

(११) इसके पत्तोंके रसको गुनगुनाकर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (१२) श्वास सम्बन्धी नालिकाके रोगोंको मिटानेके लिये इसके पत्तों का स्वरस पिलातेहैं (१३) इसके पत्तोंका रस रेचकहै (१४) इसके पत्तोंको ठंढाईकी तरह घोट छानकर पीनेसे और उनका फोक बांधनेसे उपदंश मिटताहै (१५) इसके पत्ते और काली मिरच प्रत्येक बराबर ले, पीस, काली मिरचके बराबर गोलियां बनाकर एक एक गोली तीन दिन तक देनेसे शीतज्वर छूट जाताहै (१६) इसकी जड कानमें बांधनेसे भूतज्वर छूटताहै (१७) इसके पत्ते और लहशनको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे गलगंड फूट जाता है और बहकरके साफ हो जाताहै (१८) इसके १७ मासे बीजोंको पीस कर खिलानेसे सब प्रकारके विप उतरतेहै (१९) इसके रसमें सैधानमक, मधु और कड़वा तेल मिला, उष्णकर कानमें डालनेसे कानकी शूल मिटतीहै। इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या (४७३)

(सं०) सेवम्, सिवितिकाफलम, सेविफलम्, मुष्टिप्रमाणवदरम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेव	सेव	शेव, सेव	सेवफ़ल	सेउफल	सेब	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		तुफ्फाह	सेब	Pyrus Malus, P, Communis	Apple

स्थान—सेवके वृक्ष हिमालय, पंजाब, सिन्ध, संयुक्त प्रदेश, मध्य हिन्दुस्थान और दक्षिण आदि देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै इसके पत्तोंके नीचेके अन्त का भाग सफेद रुएदार होताहै, इसके पुष्पोंका रंग सफेद होताहै और उनमें लाल छींट होतेहैं । इसके फलका रंग हरा पीला और लाल होताहै, इसके कच्चे फलका स्वाद खट्टा या फीका होताहै और पकने पर मीठा होजाताहै ।

फूलने फलने का समय—फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगतेहैं अषाढसे भादों तक फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) सेव–ठंढी, रस और पाकमें मीठी, रोचक और पचनेमें भारी होतीहै, वात और पित्तको मिटातीहै और नीरोगताको बढातीहै (२) अन्य फलोंकी अपेक्षा इसका फल सुगमतासे पचताहै यह–वीर्य और कफको बढातीहै (३) इसके खानेसे शरीर पुष्ट होताहै और रुधिर शुद्ध होजाताहै (४) सेव खानेसे मुखका स्वाद सुधरताहै गलेकी पीडा मिटतीहै, और मस्तिष्ककी शक्ति बढतीहै क्योंकि इसमें फासफोरिक एसिडका तत्व अधिकहै (५) अफीम खाने या मदिरा पीनेका–व्यसन छुडानेके लिये–इसका प्रयोग अच्छाहै (६) निद्रा नाशवाले को सेव खिलाना चाहिये (७) हृदकी पीडावालेको सेव खिलाना लाभकारीहै (८) पोस्तके क्वाथमें सेवका शर्वत मिलाकर पीनेसे रक्तातिसार मिटता है (९) सेवके रसमें आधी मिश्री डालकर शर्वत बनातेहैं। शर्वतकी २ तोलेकी मात्रा देनी चाहिये (१०) इसके पानी में ४ रती कपूर मिलाकर पिलानेसे विच्छूका विष उतरताहै जो इससे न उतरे तो आध २ घंटेके अन्तरसे २-३ वेर पिलाना चाहिये (११) सेवका फल खानेके काम में आताहै (१२) इसका मुरब्बा बनातेहैं (१३) इसका मुरब्बा खानेसे हृदय और मस्तिष्कका बल बढताहै (१४) इसके शर्वतमें ब्राह्मीका चूर्ण मिलाके चटानेसे पित्तोन्माद मिटताहै (१५) पित्तातिसार मिटानेके लिये इसका मुरब्बा खिलाना चाहिये (१६) पके हुए सेवके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे सूखी खासी और मूर्च्छा मिटतीहै (१७) कच्चे सेवके रसमें सैंधा नमक मिलाकर पिलानेसे वमन बन्द होतीहै (१८) इसके टुकडेको मुहमें रखनेसे तृषा मिटतीहै (१९) इसको पीसके लेप करनेसे आखकी पित्तकी पीड़ा मिटतीहै (२०) जो सेव नहीं मिले तो इस की ठौर बीहको काममें लाना चाहिये (२१) कच्ची सेव ग्राहीहै और अतिसारको मिटातीहै (२२) इसके पत्तोंको ओटाकर पिलानेसे विच्छूका विष उतरताहै (२३) बहुत सेवके खानेसे जो उपद्रव हो जातेहैं उनको मिटानेके लिये गुलकंद खिलाना चाहिये अथवा दालचीनी शहदमें चटाना चाहिये।

संख्या (५७४)

(सं०) सैंधवं, नादेयं, सिन्धुजं, मणिमन्थम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सेंधोलूण	सींधानोंन	सिंधालूण	शेंधेलोण	सैधवलवण	सैधानमक	सैधवलवणमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
सैधवलवण	सैधवलवण			Sodu chloridum Chloride of sodium	Rock or Bay salt

यह नमक सफेद और गुलाबी रंगके भेदसे दो प्रकारका होताहै । इसको लाहोरी नमक भी कहतेहै ।

प्रयोग—(१) यह–पाचन, दीपन, रोचक स्निग्ध, सूक्ष्म, पचनेमें हल्का, विपाकमें मधुर, हृदय और नेत्रोंको हितकारीहै । त्रिदोष, व्रण, और विबंधको मिटाताहै और पुरुषार्थको बढाताहै (२) इसको गुदामें रखनेसे बद्धकोष्ठ और मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (३) इसकी सलाई बनाकर नेत्रोंमें फेरनेसे जाला कटताहै (४) इसमें दुगनी मिश्री मिला पीस कज्जल बनाके अंजन करनेसे मोतियाबिन्द और जाला आदि मिटजाताहै (५) श्वास रोग मिटानेके लिये पहिले दिन दो मासे सैधानमक पीसकर सोते समय शहदकी साथ चाटे, ऐसे नित्य आध २ मासे बढाते हुए ६ मासे तक बढालेवे इसके ऊपर पानी न पीवे, जो तृषा लगे तो कुछ गुनगुना पानी पीना चाहिये (६) ८ मासे सैंधानमकको तीन तोले गौ घृतके साथ चटानेसे सर्पका विष उतरताहै (७) सैंधे नमकको पानीमें मिलाकर नस्य लेनेसे हिचकी बन्ध होजातीहै (८) घृतमें सैंधा नमक मिलाके पीनेसे वातसे पैदा हुई वमन मिटतीहै (९) मधुके साथ सैंधानमकका अंजन करनेसे नेत्रका शुक्ररोग मिटताहै (१०) इसका अंजन करनेसे दांतोंका कुदपन मिटताहै (११) गायका गोबर और नोंन मिलाके लेप करनेसे जलंधर कम होजाताहै (१२) नोंन और सफेद बूरा बराबर लेके फक्की लेनेसे चोटकी पीडा मिटतीहै (१३) नोंन और मुर्दासिंगको पीसकर लेप करनेसे बन्दरके विषकी शान्ति होतीहै (१४) सैंधा नोंन और हरडके

चूर्णकी नित्य फंकी लेनेसे अग्निदीपन होतीहै (१५) ८ मासे सेंधे नमकको तोले गौ घृतमें मिलाकर चटानेसे विषैले जीवोंका विष उतरताहै।

संख्या (५७५)

(सं०) सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरा, द्विजप्रिया।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोमलता	सोमलता	सोमलता	सोमवल्ली	सोमलता	सोमलता	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लटिन	अंग्रेजी
				Sarcostemma brevistigma Asclepias acida	The Moon plant

इसके सिवाय तीन जातिके सोम और मिलतेहैं उनको भी हिन्दुस्थानवाले इन्ही नामोंसे पुकारतेहैं अपने २ अलग देशी नाम नहींहैं।

प्रयोग—(१) सोमलता–कडवी, चरपरी, रसायनी, शीतल, और मीठीहै। त्रिदोष, पित्तदाह, तृषा और शोथको मिटातीहै (२) गन्नोंके खेतमें जो सफेद कीड़े लगजातेहैं, उनको मारनेके लिये सोमलताको काममें लानेकी यह रीतिहै, कि इसकी टहनियोंकी पूली बनाके, उसके भीतर एक डाटके भरी हुई नमककी थैली बांधके, कुएकी मोरीमें रखदेतेहैं, कि जिसमें होके खेतमें पानी जाया करताहै (थैलीको नमकसे गाढी भरके दृढ बांधनेका प्रयोजन यहहै कि वह नमक धीरे २ गलजावे) उस पानीसे कीड़े मरजातेहैं और खेतीको हानि नहीं पहुंचतीहै (३) इसके पौधेमें बहुतसा दूधिया रस निकलताहै वह तृषा कम करनेके लिये पिलाया जाताहै।

संख्या (५७६)

(सं०) सौराष्ट्री, सुराष्ट्रजा, काची, स्तुत्या।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोपीचन्दन	गोपीचन्दन	गोपीचन्दन	गोपीचन्दन		सोरटामट्टी	सौराष्ट्रिकम्

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
					Silicate of alumina

गुण—(१) गोपीचन्दन-शीतल और दाहनाशकहै। व्रण, विष, विसर्प, रुधिर विकार, पित्त, कफ और प्रदररोगको मिटाताहै (२) इसका पेटपर लेप करनेसे गिरता हुआ गर्भ स्थिर होजाताहै (३) इसको पानीमें छान शकर मिलाकर पीनेसे प्रदर मिटताहै (४) फोड़े फुन्सी पर इसका लेप करतेहैं।

संख्या (५७७)

(सं०) सौवर्चलं, रुचकं, हृद्यगंधकं, कृष्णलवणम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सुचललूण	कालानोंन	सचल(ळ)	सचळलोण	सचललवण	कालानमक	नल्लअट्टुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सूरुतउप्पु	सूरुतउप्पु			Unaqua sodium chloride	

गुण—(१) यह चरपरा, उष्ण, रेचक, पचनेमें हल्का, दीपन, और विशद होताहै। विबंध, आनाह, शूल, गुल्म, कृमि, आमकी शूल और अरुचि को मिटाताहै।

संख्या (५७८)

(सं०) स्नुही, सुधा, समन्तदुग्धा, सेहुण्डः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
थोर	थुहर	कटालोथोर	निवडुंग	मनसागाछ	दण्डेथोहर	जेमुडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कल्लिमर	कल्लिमर			Euphorbia nerii folia E. ligularia E. Tirucalli	Milk hedge Milk bush or Indian tree spurge

स्थान—दंडाथुहरके वृक्ष हिन्दुस्थान और बंगाल आदि कई देशोंमें होतेहैं।

परिचान—इसकी ऊंचाई २० फुटकी होतीहै, इसकी पेड़की मध्यरेखा एक फुटकी होतीहै। वसंत ऋतुमें इसके पत्ते गिर जातेहै, फागुन और चैतमें नये पत्ते निकल आतेहैं। इसके हरेक भागमें दूध होताहै।

इसको ओटानेसे गोंद निकलताहै।

फूलने फलने का समय-माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगतेहै।

प्रयोग-(१) थुहर-चरपरा, कड़वा, उष्ण, तीक्ष्ण, दीपन, सारक, और गुरुहै (२) इसका दूधिया रस या इसके दूधमें दूसरी औषधियोंको भिगोके खिलाने पिलानेसे विरेचन होताहै। इसका दूध-उष्णवीर्य्य, स्निग्ध, रसमें चरपरा और लघुहै—कुष्ठ, गुल्म, और उदररोग वालेके लिये इसका विरेचन बहुत उत्तमहै (३) हर्ड़, पीपल और निसोत आदि रेचक औषधियोंको इसके दूधमें भिगोके खिलानेसे तीव्र विरेचन होके जलंधर, सूजन और अफारा मिटताहै (४) इसकी जड़को काली मिरचके साथ पिलानेसे और दंशपर लेप करनेसे सर्प का विष उतरताहै (५) इसका दूध लगानेसे मस्से और त्वचाके फोड़े फुन्सी मिटतेहैं (६) जिस मनुष्यको पागल कुत्ता काटा हो उस के बहकनेके पहिले थूहरके डंडेकी गिरी और अदरकको मिलाकर देनेसे उसका विष उतरताहै (७) थूहरके रसकी कुछ बूंदें कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै (८) थूहर के रसमें चिराकके काजलको खरल करके अंजन करने से आखका दुखना और गीड आना बन्ध हो जाताहै (९) इसके अन्तके कोमल डंडोंको आगमें गर्मकर उनका रस निकाल उसमें गुड़ मिलाके पिलाने से बच्चेको वमन और विरेचन होकर खांसी मिटतीहै (१०) इसको मक्खन या घीमें मिलाकर विगडे हुए फोडोंपर लगाना चाहिये (११) खुजली मिटानेके लिये थूहरके रसको घीमें मिलाके मर्दन करना चाहिये (१२) पेशियों की सूजन पर इसका दूध लगानेसे सूजन विखर जातीहै।-और पकती नहीं है (१३) इसका दूध हिलते हुए दांत पर लगानेसे वह दांत सहजसे गिर जाताहै। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि इसका दूध दूसरे दांतके नहीं लग जाय (१४) थूहरका खार बनाके खिलानेसे कफ और श्वास मिटताहै

(१५) थूहरके दूध और पियाजके अर्कमें महीन कपड़ेको तीन तर भिगो २ और सुखा २ के अलसीके तेलमें ८ पहर रक्खे इन्द्रीका शिर बचाकर उसपर मक्खन लगाके उस कपडकी पट्टी इन्द्रीपर ४ घड़ी तक बंधी रख कर खोल डालनेसे इन्द्री पुष्ट होतीहै जो आवश्यकता हो तो फिर भी ऐसेही उसकी पट्टी बाधे और रात समय कपड़ेको अलसीके तेलमें भीगा रक्खे (१६) इसकी जडको लाल सूतसे कमरमें बाधनेसे अतिसार मिटताहै (१७) हल्दीके चूर्णके इसके दूधकी कई बेर भावना देकर उसको बाधनेसे भगंदर और अर्श मिटतेहै।

संख्या (५७६)

(सं०) कन्थारी, दुर्धर्षा, दुष्प्रवेशा, तीक्ष्णकंटका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नागफनीथार	नागफनी थूहर	हाथलोथोर	फडींचेनि वडुंग	फनिमनसा	नागफनी	नागजमडू

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लटिन	अंग्रेजी
शप्पातकल्लि	पापासकल्लि			Opuntia Dillenii Cactus indicus	The prickly pear

स्थान—नागफना थूहर हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर पैदा होताहै।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई १०—१५ फुट होतीहै। इसके पत्ते जिनको पंजा कहतेहैं ६ से ८ फुट लम्बे होतेहै। इसके लाल छोटोके पीले पुष्प लगते है, वे केवल दिनमें खुलतेहै रात्रिमें नहीं खुलतेहै।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंको कूट पुल्टिस बनाके बाधनेसे दाह और पित्त शोथ मिटतीहै (२) कूकरघासीवालेको इसका फल सेकके खिलाना चाहिये (३) इसके फलका शर्बत दिनमें तीन चार बेर पोने चार २ मासे पिलानेसे पित्तकी थैलीमेंसे पित्तका निकास बढ़ताहै (४) इसके दूधकी १० बूंद शक्करमें मिलाके देनेसे विरेचन होताहै (५) इसका पक्का फल खानेसे मूत्रका रंग लाल होजाताहै (६) इसके फलके पौने चार मासे शर्बतमें

चन्दनका तेलमें १५ बूंद डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (७) फोड़ेको जल्दी पकानेकेलिये इसके पत्ते गर्म करके उसपर बांधना चाहिये (८) इसके पत्तेका गूदा आखपर थापनेसे आखका दुखना मिटताहै (९) इसके पत्तोंके पुल्टिसको गर्म करके थापनेसे मसूडोंके असाध्य रोग मिटतेहै (१०) इसके दूधका विरेचन देतेहै (११) स्नायुक पर इसके पत्तोंकी गिरका पुल्टिस थापतेहै (१२) इसका फल मोतीजैसा होताहै वह शान्ति पैदा करने वाला और खाने के काममें आताहै ।

संख्या (५८०)

(सं०) त्रिधारस्नुही, त्र्यस्त्रः, धारास्नुही ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
तिधारोथोर	तिधाराथूहर	तरधारोथोर	तिधारीनिवडुग			मूडधारजमुडु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
मुकोणक्कळि	मूरुमूलेकाळ्ळि	जक़्कूमहिंदी		Euphorbia antiquorum	

स्थान—तिधारा थूहर हिन्दुस्थानके सूखे पहाडोंमें कई ठौर मिलताहै ।

पहिचान—इसकी त्रिखूटी त्रिधारी और पचधारी डालियां होतीहैं इसके बहुत छोटे पत्ते लगतेहैं, किसीके नहीं भी लगतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसका दूध पिलानेसे विरेचन होके कमरका दर्द मिटताहै (२) गांठियाकी पीडा मिटानेकेलिये इसको सूजन पर लगाना चाहिये (३) इसके दूधमें रूईका फोया भिगो उसको घीमें जला कर दाढमें रखनेसे उसका दर्द मिटताहै (४) इसके दूधको किसी औषधिके साथ खिलाने पिलानेसे तीक्ष्ण विरेचन होके जलंधर मिटताहै (५) इसके दूधमें तैल सिद्ध करके कानमें डालनेसे बहिरापन मिटताहै (६) स्नायुक पीड़ा मिटानेकेलिये इसके दूधका लेप करतेहै (७) इसकी जड और हींगको पीस कर पेट पर लेप करनेसे बच्चेकी आंतोंके भीतरके कीडे मरजातेहै (८) इसकी जडकी

छालको ओटाकर पिलानेसे विरेचन होताहै (९) इसकी टहनियोंको ओटाके पिलानेसे छोटे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (१०) इसके रसमें अरडूसेके पत्तोंको पीस छोटी गोली बनाके चूसनेसे खासी मिटतीहै (११) इसके ताजे रसका लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै (१२) इसके ताजे रसमें फुलाया हुआ सोहागा और नमक मिलाके लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटतीहै, और सूजन उतरतीहै (१३) विरेचनकेलिये इसके दूधकी बहुत थोड़ी मात्रा देनी चाहिये (१४) सर्प का विष उतरनेकेलिये भी इसका प्रयोग किया जाताहै (१५) जिस घरकी छत पर तिधारी थुहरके गमले पड़े रहतेहैं उस पर बिजली नहीं गिरतीहै ।

संख्या (५८१)

(सं०) सातला, ससला, भूरिफेना, विदुला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
एकजात कोथोर	सातला	साथेर	निवडुंगाचे-भेद	*		सम्बरेनु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	नीरुवाक्ष				Marjoram

स्थान—सातला, हिमालय में कश्मीर से सिक्कम तक और शिमले में होताहै ।

प्रयोग—सातला—लघु, तिक्त, तीक्ष्ण, कषेला, सारक, रेचक, शीतल और पाकमें चरपराहै (२) इसमेंसे एक प्रकारका उडनेवाला तेल निकलता है, वह—सुगंध युक्त, उत्तेजक और बलवर्द्धक होताहै । इस तेलकी ५ बूंद १॥ मासे गुडमें मिलाके खिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (३) आमकी गुठलीको सेक उसकी गिरके दो मासे चूर्णमें इसके तेलकी ५ बूंद डालके देनेसे साधारण अतिसार मिटताहै (४) एक रती सेकी हुई हींगको इसके साथ चटानेसे स्त्रियोंके आवेशके रोगका वेग मिटताहै (५) इसके तेलका मर्दन करनेसे

* मनसाविशेष, बडिलसोनुली

पुरानी गठिया मिटतीहै (६) इसके तेलमें फोया तर करके डाढमें रखनेसे डा-
ढकी पीडा मिटतीहै (७) इसकी बूंदे कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै
(८) इसको बालों पर लगानेसे बाल बढतेहै । इसके पत्तोंका शाक बनाया
जाताहै ।

संख्या (५८२)

(सं०) स्फटिका, दृढरङ्गा, शुभ्रा, रंगदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
फिटकड़ी	फिटकडी	फटकी	फुटकी	फट्किरि	फिटकिरी	पटिकारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पटिकार	पटिकार	ज़ाज, शिब	ज़ाफसफेद	Hydrargyrum sulphuratum	Alum Vitriol white

स्थान—फिटकड़ी,—बिहार, कच्छ और पंजाबमें बनतीहै ।
यह सफेद, पीली, लाल, गुलाबी और कालेरंगकी होतीहै । इसको बनाते
समय इसमें जिस प्रकारका मल रह जाताहै उसी प्रकारके रंगकी होजातीहै ।
प्रयोग—(१) फिटकडी,—कडवी, चरपरी, कषेली, खट्टी, लेखन, ग्रा-
हीणी, स्निग्ध और उष्णहै । कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विष दोष, मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष,
प्रमेह, वमन और विसूचिका को मिटातीहै (२) इसको फुलाकर सुंघानेसे
नकसीर बन्द होजातीहै (३) इसका मंजन करनेसे सड़ेहुए दांतोंकी
पीडा मिटतीहै (४) पानीको शुद्ध करनेके लिये इसकी डली उसमें रख दे-
तेहैं (५) इसके कुल्ले करनेसे गलेकी गांठें मिटतीहैं (६) फुलाई हुई फिट-
कड़ीका लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (७) नाभ टलजानेके बाद जो नाभि
में फोड़ा हो जावे तो जलाई हुई फिटकड़ीका उसपर लेप करनेसे लगानेसे जल्दी
मिट जाताहै (८) फुलाई हुई एक मासे फिटकडीमें तीन मासे बूरा मिलाकर ४
पुडी बनावें, दो २ घंटेके अंतरसे एक एक पुड़ी देनेसे छातीमेंसे रुधिरका आना
बन्द हो जाताहै (९) गर्भपात होनेके पीछे गर्भाशयमेंसे दूषित रक्त आदि

को पूरा निकालनेके लिये और रुधिर बन्ध करनेके लिये, फिटकड़ीका प्रयोग इस प्रकारसे करना चाहिये, कि फिटकड़ीको महीन पीसकर, मलमलकी थैली में एक अखरोट या बड़ी गोली जितनी पोटली बना उसके एक डोरा बांध, पोटलीको गर्भाशयके मुंहके पास चौबीस घंटे तक रख देवे, जो उस समयमें वहां खुजली और दाह नहीं होवे तो उस पोटलीको फिर २४ घंटे तक रहने देवे, इससे जितना उपद्रवी रुधिर आदि मल होगा, वह गर्भाशयमेंसे निकलके योनीके मुख तक भर जायगा, उसको सुगमतासे निकालदेवे (१०) फिटकड़ी और बंबूलकी छालके काथकी पिचकारी देनेसे आमातिसार मिटताहै (११) नींबूके रसके साथ फुलाई हुई फिटकड़ीका लेप करनेसे आंखकी पीड़ा मिटतीहै (१२) कुचाधांसीके लिये फुलाई हुई फिटकड़ीकी ५ से १० रती तककी मात्रा दिन में तीन वेर देना चाहिये (१३) डाईरती फिटकड़ीकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (१४) अफीमके साथ फिटकड़ीकी फकी देनेसे पुराना अतिसार मिटताहै (१५) दो रती फिटकड़ीको ढाई तोले गुलाब जलमें पीसके कुछ बूंदे आखेंमें डालनेसे आंखकी ललाई और गीडोंका बहुत आना मिटताहै (१६) पावभर मीठे दहीमें एक मासे फिटकड़ी डालके खिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै। इसके खानेकी यह रीतिहै कि पाहिले दहीमें एक ठौर फिटकड़ी डाल के उसके ऊपर थोडासा दही ढककर फिटकड़ी सहित दहीको एक ग्रासमें खाकर फिर बाकीका दही ऊपरसे चाटजावे और गेहूंकी अलूणी रोटी और दालमें सैंधा नमक और कालीमिरच डालकर खावे (१७) फुलाई हुई फिटकड़ीकी एक मासे तककी फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१८) एक तोलेभर फिटकड़ीको सेर भर जलमें ओटाके कुल्ले करानेसे मुंहसे लालका गिरना बन्ध होताहै (१९) मुखपाक मिटानेके लिये फिटकड़ी और चमेलीके पत्तोंको ओटाकर कुल्ले कराने चाहियें (२०) भुनी हुई फिटकड़ी और गेरू, दोनों बराबर ले, उसमें दुगुनी मिश्री मिला, ७ मासेकी फकी गायके दूधके साथ लेनेसे सुजाक मिटताहै (२१) ७ मासे फिटकड़ीको जलमें पीसकर पिलानेसे सर्पका विष उतरताहै (२२) थूहरकी लकड़ीको पोलीकर उसमें फिटकडी भर, कपड़ मिट्टीसे बन्धकर कंडोंकी आगमें जला, स्वांगशीतल होनेपर निकाल उसमेंसे दो रतीकी मात्रा पानमें रखकर देनेसे श्वास

और कास मिटताहै (२३) फिटकडीको फुला उसमें बराबर माजूफलका चूर्ण मिलाकर बुरकानेसे मुंहके छाले मिटतेहैं (२४) एक मासे फिटकड़ी दो मासे अलसीको बाट पोटली बना पानीमें भिगो २ कर नेत्रों पर फेरनेसे नेत्रपीड़ा मिटनीहै (२५) दो भाग फिटकड़ी और एक भाग नोंनको पीस-कर मंजन करनेसे दांत दृढ होतेहैं (२६) एक तोले फिटकड़ी और ६ मासे मोचरसको आधसेर पानीमें ओटा आधा पानी रखके कुल्ले करनेसे दांतोकी पीड़ा मिटतीहै और दांत दृढ होतेहै (२७) घावके मुर्दार मासपर फुलाई हुई फिटकड़ी बुरकानेसे घाव भर जाताहै (२८) फिटकड़ीको कमरमें बांध-नेसे वीर्य स्तंभन होताहै (२९) भुनी हुई फिटकडीमें बरावर मिश्रीका चूर्ण मिलाके एक से ६ मासे तक फकी देनेसे कफ और श्वास मिटताहै (३०) भुनी हुई फिटकड़ी और पीलाबोल बराबर ले मधुके साथ बत्ती बनाकर कानमें रखनेसे कर्णपीड़ा मिटतीहै (३१) एक तोले फिटकड़ीको ॥ तोले घीमें भूने जब वह घीमें जम जावे तब ऊपरके घीको लेकर उस घीका खाड और मैदाके साथ हलुवा बनाकर उसमें उस फिटकड़ीको रखके तीन दिन खिलानेसे चोट और शरीरमें रुधिरका जमाव बिखर जाताहै (३२) फिटकड़ीको पानीकेसाथ पीसकर मलनेसे बगल गंध मिटतीहै (३३) योनी में इसके पानी की पिच-कारी देनेसे प्रदर और उसका ढीलापन मिटताहै ।

संख्या (५८३)

(सं०) स्वर्जिकः, सुखार्जिकः, सुखवर्चकः, स्वर्जिक्षारः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
साजी	सज्जी	साजीखार	सज्जीखार	साजिमाटी	सज्जी	सज्जिक्षारमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
सज्जीकारं	सज्जीखार	कला, किलि	अजगार शखार		Barilla. Carbonate of soda

सज्जी दो प्रकारसे बनतीहै एक वह है कि जहां पृथ्वी फूल जातीहै वहां की मिट्टीमेंसे सज्जी निकाली जातीहै । (२) कई वृक्षोंकी भस्मीमेंसे सज्जी

निकाली जातीहै ।

प्रयोग—(१) सज्जी—चरपरी, उष्ण, तीक्ष्ण, गुल्मनाशक, और अग्निवर्द्धकहै कृमिरोग, आध्मान, उदरकी वातपीडा खट्टी डकारें और अम्लपित्तको मिटातीहै (२) साजीखार और जौखार बराबर ले पानीसे पीस पीपवाले फोड़े पर लेप करनेसे उसका मुंह खुल जाताहै (३) सज्जीको महीन पीस मधुके साथ मलनेसे बिच्छूका विष उतरताहै (४) सज्जी और चूनेकी कलीको बराबर ले पीसके श्वेत दागपर लगावे जब सूखजाय तब गाढे वस्त्रसे छील फिर दूसरी बेर लगावे ऐसे कई वेर लगानेसे उस जगहकी त्वचा अलग होके वहां एक दाग पैदा होगा उसपर मीठा तेल मलनेसे वहांकी चमड़ी अपने रंगकी होजातीहै (५) काच ढालते वक्त जो मैल पीछे रहजाताहै उसको बागड खार कहतेहैं इसीको साफ करनेके पीछे सूरतीखार कहतेहैं । यह खार कृमिरोग, आध्मान, उदरकी वात पीडा, मिटाताहै ।

संख्या (५८४)

(सं०) स्वर्णक्षीरी, पटुपर्णी, हैमवती, पीतदुग्धा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	कर्नाटकी
सत्यानाशी	सत्यानाशी	दारुडी	पिसोळा	सोने खिरुइ	सत्यानासी	बिक्कणिकयभेद

द्राविड़ी	तैलंगी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Argemone mexicana.	The Mexican or prickly poppy

स्थान—सत्यानासीके क्षुप बंगालसे पंजाब तक, पंचमहल और मारवाड़ आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसका २-३ फुट ऊंचा क्षुप कटेलीकी जातका होताहै । इसके पत्ते फल और शाखा आदि सब अंग पर कांटे होतेहैं, इसका पत्ता या टहनी तोड़नेसे पीला दूध निकलताहै । इसके पीले रंगके पुष्प लगतेहैं । इसका फल एक या डेढ इंच लम्बा होताहै, उसमें काले बीज निकलतेहैं । इसकी जड़को मारवाडीमें "चोक" कहतेहैं ।

इसके बीजोंमें से एक प्रकारका पीला, साफ, और पारदर्शक तेल निकलताहै। इसको खुला पड़ा रखनेसे यह उड जाताहै, बीजोंमेसे जब तेल निकाला जाताहै तब गदला होता है कुछ दिन पड़ा रहनेसे उसके नीचे सफेद गाद बैठ जातीहै और तेल नितर कर साफ और चमकदार होजाताहै, इसकी गंधसे कुछ जी मचलाताहै। परन्तु बहुत बुरी दुर्गंध नहीं आतीहै। इसका स्वाद कुछ चरपरा होताहै। इस तेलकी परीक्षा यहहै कि इसमें शोरेका तेज तिजाब मिलानेसे इस तेलमें नारंजियां लाल रंग पैदा होजाताहै। यह तेल जलानेके काममें भी आताहै।

प्रयोग—(१) इसके पंचांगका हिम या फांट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (२) मूत्रनालीकी दाह मिटानेके लिये इसका फांट पिलातेहै (३) (४) रगड़से छिली हुई चमड़ी पर इसका हिम लगानेसे घाव भर जाताहै (५) इसके बीज अहिफेनकी अपेक्षा अधिक मादक, नींद लानेवाले, अचेत करनेवाले और वामकहै (६) आमाशयकी या अंतड़ियोंकी शूल मिटानेके लिये इसके तेलकी २० से ६० बूंदें तक खांडमें डालके देना चाहिये। इससे शूल आदि बंद होकर रोगीको बहुत अच्छी निद्रा आजातीहै (७) इस तेलकी इस मात्रासे मल खुल जातेहै अर्थात् बद्धकोष्ठ मिटजाताहै (८) आमातिसारमें मलका रेच होनेके लिये इसके तेलकी २० से ६० तक बूंदें खाडमें डालके फका देतेहै (९) किसी २ को १५ से ३० बूंदेंही सारक हो जातीहै। बाजारमें इसका असली तेल नहीं मिलनेसे उसका असर ऐसा नहीं होताहै (१०) इसके पंचांगको कूटकर अर्क निकालतेहैं वह सारक होताहै (११) इसका दूध या रस देरीसे अच्छे होनेवाले व्रणोंको अच्छा करताहै (१२) तिलोंके तेलमें सत्यानाशीका तेल मिला उससे बनाया हुआ पदार्थ भोजन करनेसे विसूचिकाके जैसे वमन और विरेचन होने लग जातेहै (१३) इसके बीजोंकी ४ मासेसे ६ मासे तक फकी देनेसे श्वासका रोग बढने नहीं पाताहै (१४) श्वास रोग मिटानेके लिये इसके तेलकी बूंदें खाडमें डालकर फकी देनी चाहिये (१५) इसके असली ताजे तेलकी २५ बूंदोंसे और पुरानेकी ३५ बूंदोंसे विरेचनके ५ से १०—१२ वेग हो जातेहै। जुलाफा, रेवंद चीनी और एरंडके तेलसे यह तेल विरेचनके लिये इस वास्ते अच्छाहै कि

इसकी मात्रा बहुत थोड़ीहै और जमाल गोटेके तेलसेभी यह तेल इस वास्ते अच्छाहै कि जमाल गोटेके तेलका स्वाद चरपरा, जीमचलानेवाला और बुरा होताहै। इसके स्वादमें ये दोष नहींहैं। विरेचनके लिये इसका तेल देनेमें दो दोषहैं। पहिला यहहै कि इससे सब मनुष्योंको विरेचनके वेग बराबर नहीं होतेहैं, किसीको ३—४ ही होतेहैं और किसीको १५—१३ हो जातेहैं। इसका दूसरा दोष यहहै कि इसके असरके प्रारम्भमें ही वमन हो जातीहै परन्तु बहुत भारी नहीं होती, कि जैसे जमाल गोटेके तेलसे, अथवा और किसी विरेचनसे, जैसे बहुत दु ख दायक उपद्रव और निर्बलता हो जातीहै वैसे उपद्रव और निर्बलता इससे नहीं होतीहै (१६) इसके पीले रसको घीके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (१७) इसके तेलकी ३० बूंदें मासे भर सोंठके साथ देनेसे शूल मिटतीहै (१८) इसका अर्क लगानेसे उपदंशकी टांकियां, पांव और खुजली आदि रोग मिटतेहैं (१९) इसकी जड़ (चोक) के ४ मासे चूर्णकी फक्की देनेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै (२०) बिना अग्निसे निकाले हुए इसके तेल और इसके पीले अर्कका गुन खुजलीमें एकसा होताहै (२१) इसका अर्क लगानेसे बिगडे हुए पुराने फोडे साफ हो जातेहैं (२२) इसके अर्कको आखमें लगाने में बडी सावधानी रखनी चाहिये (२३) इसका तेल लगानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (२४) जिस चर्म रोगमें फुन्सियां होके फैलती जातीहैं उनके भी इस तेलको लगानेसे लाभ होताहै (२५) सांभरे नोनमें इस तेलकी बूंदें डालकर जलभरके रोगीको फक्की देतेहैं (२६) गिलोय के रसमें इसके तेलकी बूंदें डालके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै।

संख्या (५८५)

(सं०) स्वर्णपत्री, कल्याणी, स्वर्णमुखी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
सनाय सोनामुखी	सनाय		सोनामुखी	सोनामुखी	सनामक्की सरना,	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
—		सना	सना	Cassia angustifelia C lanceolata	Senna; Country senna Indian or Tinnerelly senna

स्थान—सनायके वृक्ष सिन्ध, गुजरात, पंजाब, दक्षिण हिन्दुस्थान, संयुक्त प्रदेश और बंबई आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान—इसकी एक सींकके ५ से ८ तक जोड़े पत्तोंके लगतेहैं। इसके पत्तोंका आकार इम्लीके पत्तों जैसा होताहै परंतु लम्बाई और चौड़ाई में ये उनसे कुछ बड़े होतेहैं। इसकी फलिया लम्बी, थोड़ी चौड़ी और कुछ मुड़ी हुई और दोनों ओर गोल किनारोंकी होतीहैं। इसके पत्ते साबित, साफ, कुछ चमकदार, पीलापन लिये हुए हरे या पीले और बहुत सुगंधवाले होतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी न्यूनाधिक मात्रा लेनेसे साधारण और तीक्ष्ण विरेचन होताहै। अलग्जेंड्रियन सोनामुखी टिनेवल्ली सोनामुखीसे अधिक गुणकारीहै और टिन्नावली को अरब और मकाऊसे अधिक गुणकारीहै (२) इसका क्वाथादिक लेनेसे जो पेटमें ऐंठन, मरोड़ी और दाह पैदा होतीहै उसको मिटानेके लिये उनमें बादामका तेल डाल देतेहै। अथवा सनायके पत्तोंको पानेमें रख चाबके निगलजानेसे उक्त उपद्रव नहीं होतेहैं (३) सनायके २॥ तोले पत्ते जौकूटकी हुई सोंठ और लोंग हरेक ३॥। मासेको ओटते हुए २५ तोले पानी में एक घंटे भिगो मल छानकर ३॥। तोलेसे ५ तोले तक बद्धकोष्ठवालेको पिलानेसे निरुपद्रव और उत्तम रेच होताहै। बच्चेकी आयु और बल देखके इसकी आधी या कम मात्रा देनी चाहिये (४) ज्वरमें इसका काथ पिलातेहैं (५) सनायका हिम, फांट या काथ पीनेके पीछे २० या ३० मिनटमें मूत्र लाल या सुनहरी होजाताहै (६) नये बच्चेको रेच करानेके लिये उसको दूध पिलानेवाली धायको सोनामुखी किसी रीतिसे देनेसे उसके दूधपर असर होके बच्चेको जुल्लाब लग जाताहै (७) इसके हिम, फांट या काथको पिचकारी द्वारा रुधिरमें मिला देने विरेचन होताहै (८) इसका विरेचन लेनेसे शरीर सम्बन्धी उपद्रव मिटतेहैं (९) इसका हिम पीनेसे आम बहुत निकलतीहै और पेटमें ऐंठन बहुत होतीहै (१०) पेटकी आम

निकालनेके लिये सोनामुखीका हिम, फाट या काथ पिलाना चाहिये (११) इसके हल्लास पैदा करनेवाले स्वाद और गुनसे आंतोंमें मरोठी और कुछ दार पैदा होनेके कारणसे बहुतसे मनुष्य इसको काममें कम लातेहैं। इसके साबित साफ चमकदार चन्दनियां हरे या पीले और भारी सुगंधवाले पत्ते काममें लाने चाहियें (१२) सोनामुखीको खाडके साथ लेनेसे पित्त मिटताहै (१३) गुड़के साथ देनेसे निर्बलता मिटतीहै (१४) शक्करके साथ देनेसे वीर्य वृद्धि होतीहै (१५) घृतके साथ देनेसे नीरोगता वढतीहै (१६) नोनके साथ लेनेसे मस्तिष्क के रोग मिटतेहै (१७) तक्रके साथ लेनेसे ज्वर मिटताहै (१८) बकरीके दूधके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होताहै (१९) लरड़ीके दूधके साथ देनेसे पुरुषार्थ बढताहै (२०) ऊटनीके दूधके साथ लेनेसे मस्तककी वायु पीडा मिटतीहै (२१) आमलीके पत्तोंके रसके साथ लेनेसे शीताग मिटताहै (२२) लवंगके साथ लेनेसे ऊर्द्ध्वश्वास मिटताहै (२३) गायके घीके साथ लेनेसे पुरुषार्थ बढताहै (२४) जलभंगरेके रसके साथ लेनेसे केश काले होतेहैं (२५) छालीके मूत्रके साथ देनेसे पेटकी शोथ उतरतीहै (२६) ढाकके रसके साथ लेनेसे मुखकी दुर्गंध मिटतीहै (२७) काली बकरीके दहीके साथ लेनेसे विष उतरताहै (२८) अनारदानेके रसके साथ लेनेसे छातीकी रुकावट (हूजा) मिटताहै (२९) आंवलोंके रसके साथ लेनेसे कोढ और जलंधर मिटताहै (३०) अदरकके रसके साथ लेनेसे अजीर्ण मिटताहै (३१) पीपलकी छालके साथ खिलानेसे स्त्री की छोड गिरजातीहै (३२) दाखके रसके साथ लेनेसे नेत्रों की ज्योति वढतीहै (३३) जंगली आवलोंके रसके साथ लेनेसे ऊर्द्ध्वश्वास मिटताहै (३४) निर्गुंडीके रसके साथ देनेसे वाय और चित्तभ्रम मिटताहै (३५) नीमके पत्तोंके रसके साथ देनेसे श्वेत कोढ मिटताहै (३६) बचके साथ खानेसे वाय गोला मिटताहै (३७) पीपलके साथ लेनेसे शीताग मिटताहै (३८) खाडके पानीसे या बिजौरेके रसके साथ लेनेसे क्षुधा बढतीहै (३९) अनारके रसके साथ लेनेसे दाह मिटतीहै (४०) खाड और सोंठके साथ देनेसे वादी मिटतीहै (४१) ताजी कच्ची आमलीके रसके साथ देनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै।

संख्या (४८६).

हजारदाना ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	छोटीदूधी			दूदिया	हजारदाना	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		फाशरा	हजारफिशा	Euphorbia thymifolia L. foliata	

स्थान—हजारदाना हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होताहै।

प्रयोग (१) इसके पंचांगका रस तीव्र, रेचकहै (२) इसके सूखे पत्ते और बीज सुगंधयुक्त चरपरे और ग्राहीहै (३) बच्चोंके अतिसार और आमातिसारमें मट्ठेके साथ पत्तोंके चूर्णको देतेहै (४) यह—उत्तेजक और सारकहै (५) इसके अर्कका लेप करनेसे दाह मिटताहै (६) इसकी डंडी और पुष्पोंका रस तीव्र विरेचकहै (७) इसके गीले पंचांगको पीसके घावपर लेप करतेहैं (८) बच्चोंके पेटके कीडे मारनेके लिये और अतिसार मिटानेकेलिये इसके पत्ते और बीजोंकी फकी देतेहैं (९) इसकी जड़को घोट छानकर पिलानेसे श्वेत और रक्तप्रदर मिटतेहैं।

संख्या (४८७)

हरमल ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ईसबद	हरमल	इसपा	हरमल	इसबंद	इसबंद लाहौरी	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		हुरमुल	इसबद	Peganum Harmala	

स्थान—हरमलके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानमें सिन्ध पंजाब और

कश्मीरसे दहली आगरा दक्षिण-हिन्दुस्थानके पश्चिम भाग तक होतेहैं ।

पहिचान—यह गुल्म १॥ से ३ फुट ऊंचा होताहै इसके बीजोंमेंसे लाल रंग निकालाजाताहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) हरमल—रुधिर शुद्ध करनेवाला, पुरुषार्थ और दुग्ध-बढानेवालाहै (२) पित्तके रोगोंमें इसका प्रयोग बहुत लाभकारीहै (३) इसके बीजोंको पानीमें इतनी देर तक ओटावे कि उनका क्वाथ गाढा होजावे तब उसको छान तिल्लीका तेल और मधु मिलाकर सर्दीसे पैदा हुए पक्षाघात और कमरकी स्नायुपीड़ा पर मर्दन करतेहैं (४) इसके बीज मादक और विषैलेहैं (५) इनके प्रयोगसे ज्वर छूटताहै (६) इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे गठिया मिटतीहै (७) इसकी जड़को पीस सरसोंके तेलके साथ बालों पर लगानेसे जूएं लीखें मरतीहैं (८) इसके पत्तोंके काथसे मासिकधर्म्म शुद्ध होने लगताहै (९) इसके पत्तोंका क्राथ पिलानेसे आंतोंके कीडे मरतेहैं (१०) इसके पंचांगमें इसके बीज अधिक गुणकारीहैं । ये—बाइटे और बादीकी पीड़ा को मिटातेहैं, इनसे हल्लास और वमन होतीहै (११) श्वास हिचकी स्त्रियोंके आवेशका रोग, गठिया, मूत्राशय और पित्तकी पथरी, शूल, कामला, कष्टसे मासिकधर्म्मका होना और स्नायुपीड़ा इन सब रोगोंमें इसके बीजोंका यथोचित प्रयोग करनेसे मिटतेहैं और इनसे निद्रा आतीहै (१२) इसके बीजोंको कपड़ छानकर शीशीमें बन्ध करके धर रक्खे उसमें से २ मासेसे धीरे २ बढाते हुए ७॥ मासे तक आवश्यकतानुसार बढावे इतनी मात्रा बढानेसे हल्लास और वमन होने लगजातीहै (१३) रोगीके पास इसकी धूनी देनेसे दृष्टिदोष और भूतादिकके आवेशका भय नहीं रहता है (१४) इसका क्राथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (१५) विषूचिकावालेके पास इसके पंचागकी धूनी देतेहैं (१६) जिन व्रणोंमें पीड़ा हुआ करती हो उनके और उपदंशके व्रणोंके इसके बीजों की धूनी देनी चाहिये (१७) इसके बीजोंकी धूनीसे हवा शुद्ध होतीहै (१८) जिस मकानमें घाववाला रोगी सोता हो उसमें बहुधा इसके बीजोंको जलाना चाहिये (१९) इसके बीजोंको तेलमें जला उस तेलको छानकर घावपर लगातेहैं ॥

संख्या (५८८)

(सं०) हरितालं, आलं, नटमण्डनं, पीतकम्

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हरताल	हरताल	हड़ताल	हरताल(ळ)	हरिताल	हड़ताल	हरिदळमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
अरिदळ	हरिदाल	अरनीख		Yellow sulphidum arsenicum	Orpiment Yellow arsenic Yellow sulphide of arsenic

पहिचान—हरताल आठ प्रकारकी होतीहै, उनमें से तीन प्रकारकी हरताल यहा मिलतीहै (१) गोदंती (२) तबकिया और (३) मिटिया, इनमें से तबकिया और गोदंती औषधी के प्रयोगके काम में आती है, गोदंती हरताल कुछ गुगली सफेद रंगकी होतीहै और उसके अभ्रकके जैसे पत्रे होतेहैं (२) तबकिया हरताल—चमकदार पीले रगकी होतीहै, इसके भी पत्र होतेहैं परन्तु वैसे पीले नहीं होते जैसे कि अभ्रक और गोदंतीके होतेहै।

हरताल को शुद्ध करने की रीति—हरतालके छोटे छोटे टुकड़े कर कपड़ेकी थैलीमें बन्धकर कांजीके बीचमें लटकाके एक पहर तक स्वेदन करना चाहिये, फिर इसी रीतिसे पेठेके रस अथवा इसके काथ, तिलोंके तेल, और त्रिफलाके काथमें क्रमसे हरकमें एक एक पहर तक स्वेदन कर पीछे गायके दूधमें चार पहर तक स्वेदन करना चाहिये।

हरताल भस्म करने की रीति-(१) शुद्ध की हुई हरतालको साटे के रसमें एक दिन खरलकर टिकिया बनाके सुखा लेवें, फिर साटेकी राखसे एक हंडीको आधीभर उसमें हरतालकी टिकिया रखकर उसपर फिर साटेकी राख मुहतक हांडके भर देवें। उसके ५ दिन तक लगातार आंच लगावें जब स्वांग शीतल हो जाय तब उस टिकियाको निकालके काममें लावें। (२) शुद्ध हरतालको पीपलकी जड़की अतर छालके काथमें खरलकर टिकिया बना सुखा पीपलकी राखके बीचमें हांडीमें रखके ५ दिन तक लगातार आंच देनेसे भस्म हो जातीहै।

मानक रस बनाने की रीति-(१) हरतालके टुकड़ोंको अभ्रकके पत्रपर बिछा ऊपर दूसरा पत्र देकर उसको कोयलोंकी अग्नि पर रख उसके ऊपरभी कोयलोंकी अग्नि रख देवे और थोड़ा दवा देवे, जब उसमेंसे पीला धुआं निकलने लगे और हरताल पिगलके सब ठौरसे लाल रंगकी होजावे तब अग्निमेंसे भोडलके पत्रोंको निकाल उनपर जमी हुई हरताल खुरच लेवे। इसका रंग माणिक जैसा लाल हो जाताहै। (२) अथवा कपड़ मिट्टी की हुई कच्ची शीशी में हरतालके टुकड़े भर कर कोयलोंकी आचके बीचमें रख देवे, जब उसमेंसे पीला धुआं निकलने लगे तो उसके रूई की डाट देदेवे और थोड़ी २ देरमें लोहेकी सलाईसे जाच लेवे कि जबतक सब हरताल पिघलकर लाल रंगकी न हो जावे तबतक उसको आंच में रहनें देवे जब सब हरताल पिघल कर लाल रंगकीहो जावे तब उसशीशी को अग्निमेंसे निकाल फोड़के उसको निकाल करें काममें लावे। हरताल भस्मकी परीक्षा यहहै कि लोहेकी पत्तीको अग्निमें लाल कर उस पर हरताल भस्मको डालकर देखे जो उसमेंसे धुआं निकले तो मानना कि हरताल भस्म कच्ची रह गई और जो धूआं न निकले तो जानना कि हरताल भस्म अच्छी होगई। निर्धूम हरताल भस्म काममें लाना चाहिये।

प्रयोग-- (१) अशुद्ध हरतालके दोष-अशुद्ध हरतालके सेवनसे आयुर्दा घटतीहै, कफ और वात सम्बन्धी रोग, प्रमेह, दाह, छाले, शरीरका संकोच आदि कई रोग पैदा होतेहैं (२) शुद्ध हरतालके सेवनसे कांति और वीर्य बढताहै, कुष्ठ आदि त्वचाके रोग, कफ, खांसी और श्वास आदि कई रोग मिटतेहै (३) यह कटु स्निग्ध, उष्ण और कषैलीहै (४) आध चांवल से एक रत्ती तक हरताल भस्मको आंबा हल्दीके साथ देनेसे अपस्मार मिटता है (५) इसको समुद्रफलके साथ देनेसे जलंधर मिटताहै (६) चित्रालके रसके साथ देने से भगंदर मिटताहै (७) मधुके साथ चटानेसे उपदंश मिटताहै (८) चोबचीनीके चूर्ण और मधुके साथ चटाने से गठिया मिटतीहै (९) गिलोयके काथके साथ देने से वातरक्त मिटताहै (१०) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (११) आधी रत्तीसे एक रत्ती या डेढ रत्ती तक माणक रस पानमें रखकर खिलानेसे शीत ज्वर का आना बन्ध हो जाताहै (१२) इलायची, वंशलोचन और माणक रसको मधुके साथ

चटाने से कफ और कास मिटताहै (१३) कूठ और मधुके साथ माणकरस चटानेसे श्वास मिटताहै (१४) पीपल और मधुके साथ माणक रस चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१५) सोंठ और जायफलके घासेके साथ देनेसे अतिसार मिटताहै (१६) हरतालको गोमूत्रमें पीसकर कानमें डालनेसे कानकी दुर्गन्ध मिटतीहै और कीडे मरतेहैं (१७) हरताल और हींगको साठी चावलोंके पानीमें पीसकर लेप करनेसे विच्छूका विष उतरताहै (१८) आठ मासे हल्दी के साथ एक रती हरताल-भस्म लेनेसे उभरा हुआ कोढ मिटताहै (१९) ८ मासे हरड और ८ मासे वायविडंगके साथ हरताल भस्म देनेसे सफ़ेद कुष्ठ मिटताहै (२०) ८ आठ मासे बापची और ८ मासे सोहागेके साथ इसकी एक रती मात्रा लेनेसे कोढ मिटताहै (२१) आठ मासे अडूसा और ४ मासे बचके साथ इसको लेनेसे पांडुरोग मिटताहै (२२) पोइके रसके साथ इसको लेनेसे भगंदर मिटताहै (२३) ४ मासे शंखाहोलीके साथ इसकी भस्म लेनेसे अपस्मार मिटताहै (२४) हरतालका तेल बनानेकी रीति–एक सेर हरताल के टुकडोंको कपडेकी थैलीमें बांधकर ५ सेर तेलमें चारपहर तक मंदाग्निसे औटावे पीछे उस थैलीमेंसे पाव भर हरताल निकाल महीन पीसकर या उसी तेलके साथ खरल करके उस तेलमें डालकर उसको काचकी शीशीमें भरकर खाम लगाके धूपमें २१ दिन तक रख छोडे इस तेलके लगानेसे खुजली, पाव, फोडे, फुन्सी और दाद आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं (२५) पाव भर तेलको अग्नि पर चढा जब वह लाल होजाय तब उसमें आधपाव दरदरी हुई हरताल थोडी २ डालके लकडी से हिलावे जब तेल हरा होकर जलने लगे तब ढक देनेसे उसकी ज्वाला बुझ जातीहै फिर इसी भांति ७ बेर उसको उघाडे और जल उठे तब ढक देवे फिर उसको ठंढा होनेपर शीशीमें भरके रख छोडे इस तेलको खुजली आदि त्वचाके रोगों पर मलकर थोडी देरतक धूपमें बैठ जाय और गर्म पानीसे स्नान करले।

संख्या (५८६)

(सं०) हरिद्रा, पीतिका, गौरी, दीर्घरागा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हलदी	हलदी	हल्दर	हळ्द	हरिद्रा	हलदी	पसुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
मंजल	अरिसिन	उरूकुस्सुफ	जदचोबाह	Curcuma longa	Turmeric

स्थान—इसके पौधे हिन्दुस्थानमें बहुतसे पहाड़, जंगल और खेतोंमें बोये जातेहैं।

इसमेंसे पीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) हलदी—कपेली, कड़वी, रूखी, उष्ण, उत्तेजक और शोधनी होतीहै पांडु, पीनस, प्रमेह, अपची, पिल्ल, त्वग्दोष कंडु, कुष्ठ और कृमिरोगको मिटातीहै (२) सूजन और रगड़पर इसका लेप किया जाताहै (३) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका खाने पीनेका प्रयोग किया जाताहै (४) जोंकके डंकका रुधिर बंध करनेके लिये उस पर हलदीका चूर्ण डुरकातेहैं (५) हल्दीकी ताजी गांठमेंसे रस निकालकर पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं (६) हल्दीके क्वाथको गाढा करके शिरपर लेप करनेसे जुकाम मिटताहै (७) आंखों पर लेप करनेसे ललाई फूट जातीहै और पीप बन्ध होजाताहै (८) इसके पुष्पोंको पीसकर लेप करनेसे दाद और त्वचाके कृमिसंबन्धी रोग मिट जातेहैं (९) हल्दीका धूआं नाकमें चढ़ानेसे जमा हुआ पानी आदि दुष्ट पदार्थ बहके प्रतिश्याय मिटजाताहै (१०) इसमेंसे बहुत सुगंधयुक्त तेल निकलताहै वह उत्तेजक होताहै (११) हलदीके २ मासे चूर्णकी फकी देनेसे खांसी मिटतीहै (१२) बिच्छूके दंशपर हलदीकी धूनी देने और तपानेसे विष उतरताहै (१३) भंवल, चक्कर और मस्तकपीड़ा मिटानेकेलिये ताजी हलदीको पीस मस्तक और ललाटपर लेप करतेहैं (१४) इसका ताजा रस ठंढाहै (१५) नाकमें हलदीकी भांगली देनेसे स्त्रियोंके आवेशका वेग मिटताहै (१६) फिटकड़ीका बीसवा भाग हलदी ले दोनोंको पीसके बुरकानेसे कानका बहना बन्ध होजाताहै (१७) हलदी और चूनेको रगड़के घावपर लेप करतेहैं इससे दाहसहित शोथ बिखर जातीहै

और पीडा मिटजातीहै (१८) इसका लेप करनेसे या इसके क्काथादिकसे धोनेसे घावके कीड़े मरजातेहैं (१९) प्रतिश्यायके प्रारम्भमें भोंगलीद्वारा हलदीका धूआं रातको नाकसे पीकर कुछ घंटोतक उसके ऊपर जलआदि कोई पदार्थ नहीं पीनाचाहिये. इससे प्रतिश्याय तुरत मिटजाताहै (२०) निवाये दूधपर हलदी और कालीमिरचका चूर्ण बुरकाके पीनेसे ज्वरसहित प्रतिश्याय मिटताहै (२१) खुजलीआदि त्वचाके दूसरे रोगोंमें हलदीका लेप करना चाहिये (२२) कपड़ेको हलदीके पानीमें रंगकर दूखतीहुई आखके सामने लटकताहुआ बांधतेहैं (२३) यकृत्के रोगोंमें हलदीका प्रयोग किया जाताहै (२४) एक तोले हलदीके चूर्णको चार तोले दहीके साथ चटानेसे कामला रोग मिटताहै (२५) हलदी और ऊटके मेंगनोंको ओटाकर उस क्काथको गाढा करके लेप करनेसे अंडकोषकी सूजन उतरतीहै (२६) घावपर हलदी बुरकानेसे वह जल्दी भरताहै (२७) हलदीको पानीके साथ पीसकर जो पीडा दहनी ओर हो तो बाईओर और बांई ओर हो तो दहनीओरके कानमें टपकानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (२८) हलदीको महीन पीस कपड़ेमें धरकर जिस दातमें पीडा होती हो उस दातके नीचे रखनेसे दंतपीडा मिटती है (२९) बत्तीपर हलदी और घीका लेपकर उसको गर्भाशयके मुंहतक पहुचानेसे गर्भाशयकी सूजन उतरतीहै (३०) हलदी और तिलोंकी खलको पीसकर लगानेसे मकड़ीका विष उतरताहै (३१) गुड़ डाले हुए सोंठके क्काथ पर हलदीका चूरण बुरकाके पीनेसे मदू शर्करा मिटतीहै (३२) हल्दी और दारुहलदीका क्काथ पीनेसे पिष्ट प्रमेह मिटताहै (३३) इसके क्काथ या कल्कमें ८ तोला गोमूत्र मिलाकर पिलानेसे पामा मिटतीहै (३४) हलदीकी गुड़में गोली बनाकर गोमूत्रके साथ लेनेसे श्लीपद, कुष्ठ और दाद मिटतेहै (३५) सूतके डोरेके हलदीके रस और थूहरके दूधकी सात २ भाविना देकर उससे अर्शको गाढा बांधनेसे खिर जाताहै (३६) साढे तीन मासे हलदी और एक मासे सज्जीको पीसकर छोटे बेरको बराबर गोलियां बना दोनों समय एक २ गोली खानेसे खासी मिटतीहै (३७) हलदी और आंवले दोनों समान भाग ले पीस छान उसमें बराबर बूरा मिला कर एक तोले फकी नित्य पानीके साथ ७ दिन तक देनेसे नया मूत्रकृच्छ्र मिटताहै (३८) हल्दी और तिलोंको पीस मुखपर मलने से मुखकी झाई दूर होतीहै ।

संख्या (५६०)

(सं०) कर्पूरहरिद्रा, सुरभिदारुः, आम्रगन्धा, पद्मपत्रा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आंबाहलदी	आंबाहलदी	आंबाहळदर	आंबेहळद	आमआदा	+	कस्तूरिपसुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कस्तूरिमजल	*			Curcuma Amada	Mango ginger

स्थान—आम्बाहलदी बङ्गालमें बहुत होतीहै।

पहिचान—जब इसकी गांठ ताजी होतीहै तो उसमें कैरी जैसी गंध आतीहै।

फूलने फलने का समय—वर्षाऋतुके पिछले आधे भागमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) आम्बा हल्दी–शीतल, वृष्य, वातल, मीठी, कड़वी, रोचक, लघु दीपन और सारकहै (२) इसका लेप उस रोगमें किया जाताहै कि जिसमें चमड़ी मोटी पड जातीहै उसका रंग पलट जाताहै और खुजली बहुत चलतीहै (३) इसकी ३॥ मासेसे ७॥ मासे तक फकी देनेसे पेटका अफारा मिटताहै (४) काले नमकके साथ इसकी फकी देनेसे पेटका दर्द मिटताहै (५) इसकी सोंठके साथ फकी देनेसे पाचनशक्ति बढतीहै (६) रगड़ और मोचपर इस का लेप करतेहैं (७) नमकके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे सूखी खांसी मिटतीहै (८) इसको तेलमें ओटाकर गठियापर लेप करतेहैं (९) इसके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे सूखी खासी मिटतीहै (१०) सोंठ और जायफलके साथ इसका घिसकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै (११) भिलावेके धूंएसे पैदा हुई सूजनको मिटानेकेलिये आंबाहलदी साठीचावल और दूबको बासी पानीके साथ पीसकर मलना चाहिये।

* अंबियाहलदी + कस्तूरिआरिसिन

संख्या (५६१)

(सं०) दारुहरिद्रा, कटंकटेरी, पर्जन्या, पचंपचा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दारूहलदी	दारूहलदी	दारुहळ्दर	दारुहळद	दारुहरिद्रा	दारुहलदी	मानुपमुपु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंगरेज़ी
मरमजल(ळ	मरदश्रानीसिन			Berberis aristata	Barberry

स्थान—दारुहल्दीके वृक्ष हिमालयमें भूटानसे कनावार तक और नीलगिरी और सीलोन आदि देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका झाड़ सीधा काटेदार होताहै। इसकी जड और शाखाओंमसे पीला रंग निकाला जाताहै। इसके बीजोंमेंसे तैल निकाला जाताहै।

फूलने फलने का समय-चैत वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—(१) दारुहळदी-कडवी, चरपरी, सूखी, उष्ण और व्रणनाशकहै (२) बचोंको इसके फलका ठढा विरेचन दियाजाताहै (३) इसकी टहनियोंको ओटाके पिलानेसे पसीना और विरेचन होके गठियाकी पीडा मिटजातीहै (४) इसकी जड़का सूखा सत्र बच्चोंको विरेचनके लिये बहुत दिया करतेहैं (५) दूखती हुई आंख पर इसके सत्व का लेप करतेहैं (६) सूर्यके देखनेसे जो आंखकी ज्योति घटजाया करतीहै वह इसके लेपसे ठीक हो जातीहै (७) इसकी जडकी छालमें बहुतसा कड़वा सत्व होताहै इसलिये बारीसे आनेवाले ज्वरको छुटानेके लिये काममें आतीहै (८) यह विसर्गी और अविसर्गी ज्वरकी बहुत उत्तम औषधिहै (९) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये इसकी जडके छालके चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये (१०) इसकी जडकी छालको गुड़के साथ ओटाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै (११)इसकी जडकी छाल और सांठ बराबर ले चूर्ण बनाके दिनमें दो तीन वेर फकी देनेसे अतिसार मिटताहै (१२) इसके फलके काथके गडूप करानेसे शीताद रोग मिटताहै (१३) इसकी जड़में भी इसकी

जड़की छालके समान गुणहै। ज्वरको रोकने और उतारनेमें यह कुनैनकी बरा बरहै (१४) इसके प्रयोग से शोथयुक्त ज्वर छूटताहै (१५) निरंतर रहने वाले ज्वरमें-इसका क्वाथ पिलानेसे। वह ज्वर उतर २ के आने लगताहै और अन्तमें उसका आना बन्द होजाताहै इसको लगातार देनेसे न तो स्नायुकी जडमें किसी प्रकारका दबाव पहुंचताहै और न आमाशय, आंतें, मस्तिष्क और सुननेकी इंद्रियोंमें कोई प्रकारका विकार होताहै जैसे कि कुनैनके लगातार देनेसे होजाया करताहै (१६) इसका २-२ तोला क्वाथ, ज्वरकी बारीके दिन २,३ घंटेके अंतरसे दिनमें दो तीन वेर देनेसे बहुत पसीना आके ज्वर छूटजाताहै। अथवा जलके साथ इसकी जडके चूर्णकी दो वेर फकी लेनेसे भी ऐसाही गुण होताहै। ज्वरकी बारीके बीचके दिनोंमें और ज्वर छूटनेके पीछे ४–५ दिन तक इसका चूर्ण या क्वाथ थोडा २ लेते रहना चाहिये (१७) दूषित वायु आदिसे जो ज्वर हुआ हो, अथवा जंगलका ज्वर हो और जो कुनैन संखिये आदिके प्रयोगसे न छूटताहो वह इसका चूर्ण या क्वाथ देनेसे छूटजाताहै। इसकी टहनियों में ज्वर छुड़ानेकी वैसीही शक्तिहै कि जैसी इसकी जड़मेंहै। इसका क्वाथ बनाने की यह रीतिहै, कि इसकी १५ तोले जड़को दरदरा करके एकसेर ६ छटांकजलमें मंद आंचसे ओटावे, जब १० छटांक रहजावे, तब उसमेंसे ५ तोले से १५ तोले तक पिलाना चाहिये (१८) इसका सत (रसोत) बनानेकी यह रीतिहै कि इसकी जडको कूट पानीमें आठपहर तक भिगोकर मुंह बन्द किये हुए बरतनमें मंद आंचसे ओटावे, जब उसका क्वाथ गाढा होजाय तब उसको मलकर छानलेवे, फिर उस छने हुए क्वाथको बालूके यंत्रपर चढ़ाके, मंद आंचसे उसको बहुत गाढ़ा करके उतारलेवे। इसको रसोत कहतेहै। रसोत और अफीमको नीबूके रसमें घिसकर लेप करनेसे आंखकीपीडा मिटतीहै (१९) भरे नीगले फोडेपर रसोतका लेप करतेहै (२०) जिसकी तिल्ली या यकृत् बढगया हो उसको इसकी जड़की छालका क्वाथ पिलाना चाहिये (२१) इसके फांटमें मधु मिलाकर प्रातःकाल पिलानेसे कामला रोग मिटताहै (२२) इसके क्वाथमें गोमूत्र मिलाकर पीनेसे अंडवृद्धि मिटतीहै (२३) कपीले और इससे सिद्ध कियेहुए तेलके लगानेसे व्रण जल्दी भरतेहै (२४) आंवलोंके रसमें इसका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र मिटताहै।

———०———

संख्या (५९२)

(सं०) वनहरिद्रा, शोली, वनारिष्टा, शोलिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जंगलीहलदी	वनहलदी	वनहळदर	रानहळद	वनहरिद्रा	जंगलीहलदी	अड़विपसुपु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
		जदवार		Curacuma aromatica C Zedoaria	Wild turmeric Cochin Turmeric YellowZedoary

स्थान—जंगली हल्दी बहुधा बंगालमें होतीहै ।

पहिचान—उष्णकालमें इसके नवीन पत्ते और पुष्प लगतेहैं। इसके पुष्पोंमें बड़ी सुगंध होतीहै। यह हलदी रंगतके काममें आतीहै। पहिले इसकी अबीर बनाई जातीथी ।

प्रयोग—(१) जंगली हल्दी–चरपरी, कड़वी, अग्निदीपन, और मीठीहै (२) मोच और रगडपर दूसरी औषधियोंके साथ इसका लेप करतेहैं (३) तबकिया हरताल, कूठ और अजवानके साथ इसकी गोली बनाके देनेसे सर्पका विष उतरताहै (४) खुजली और गातकी फुन्सियों पर इसका लेप करतेहैं (५) लोहवानके साथ इसको पीस उष्णकर ललाटपर लेप करनेसे मस्तक-पीडा मिटतीहै (६) इसको पीस गर्मकर ललाटपर लेप करनेसे स्नायुसम्बन्धी मस्तकपीडा मिटतीहै (७) इसका धूँआं पीनेसे पेटकीपीड़ा मिटतीहै ।

संख्या (५९३)

(सं०) हरिद्रुः, कदम्बकः, पीतकाष्ठः, सुराह्व. ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	हलदिवा	हळदरवो	हळदिवावृक्ष			

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				Adina cordifolia Nauclea c	

स्थान—हलदियाके वृक्ष बहुत करके हिन्दुस्थानके तर देशोंमें होतेहै। जैसेकि रतनागिरके जंगलोंमें, कोकनदेशके थाना जिलेमें, सूरत, बरोदा, मैसोर और मध्य हिन्दुस्थानके जंगलोंमें बहुत होतेहैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ८० फुटकी और कहीं२ इससे भी अधिक होतीहै। इसकी पेदड सीधी और लम्बी होतीहै। उसकी गुलाई १० से १८ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते हल्के हरे रंगके होतेहैं। इसकी छाल १–२ इंच मोटी भूरे रंगकी और खरदरी होतीहै, इसमें खड़ी तेड़े (दरारें) चलतीहैं, आड़ी नहीं चलतीहै। अन्तर छाल कुछ ललाई लिये हुए कुछ भूरे रंगकी धब्बे और चूंसेदार होतीहै। चैत वैशाख में इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं और जेठ तक नये निकल आतेहै। इसके कोमल पत्तोंको बहुधा कीड़े खा जाया करतेहैं जिससे यह नंगा हो जाताहै, बरसातमें फिर नये पत्ते आजातेहैं। इसके पत्ते ४ से ८ इंच लम्बे और प्रायः इतने ही चौड़े होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—जेठ अषाढ में या कुछ और भी देरीसे इसके पुष्प लगतेहैं। मृगशिरसे फाल्गुन तक फल पकतेहै।

प्रयोग—(१) हलदुवा रस और विपाक में कटु, उष्णवीर्य, कषेला लघु, शीतल, कड़वा, मङ्गलकारक और बलवर्द्धकहै। पित्त, कफ, त्वचाके रोग, वमन और व्रणको मिटाताहै और कान्तिको बढाताहै (२) इसकी छोटी कलियों को काली मिरचके साथ पीसके सूंघने से मस्तक की तीव्र पीड़ा मिटतीहै।

संख्या (५६४)

(सं०) हरीतकी, चेतकी, अमृता, विजया।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हरड़	हरडा,हर्ड	हरडे	हिरड़ा	हरीतकी	हड़ हरड	करकाय्

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
कडुक्काय्	अरळेकाय्	अहलीलज़	हलैलाह	Terminalia Chebula T reticulata	The chebulic or black myrobalan

स्थान–हरडेके वृक्ष हिन्दुस्थानके उत्तरमें कमाऊसे बगाल तक दक्षिण में मद्रास विभाग, कोयंबटूर, कनारा, पूर्वी पश्चिमी घाट, गजाम, गोदावरी की तलहटी, सतपुडा पहाड़ गुजरात और बम्बई विभागोंमें घाटोंके पास ऊंचे जङ्गलोंमें होतेहै ।

पहिचान–इसके वृक्षकी ऊचाई ८० से १०० फुट तक होतीहै । इसकी पेदड लम्बी और सीधी होतीहै, इसकी गुलाई ८ से १२ फुट तक होतीहै । इसकी छोटी शाखें निकलते हुए पत्ते और छोटे कोमल पत्तों पर लम्बे कोमल चमकते हुए लोहेके जङ्गके या मोरचेके रङ्गके और कभी २ रुपहरी रङ्गके रूएं होतेहैं । इसके अलग थोडी २ दूर पर अडूसे के पत्ते जैसे तथा धावडेके पत्तों जैसे ३ से ८ इंच लम्बे पत्ते लगतेहैं, वे माघ फागुनमें गिर जातेहै और चैतमें नये आ जातेहैं । इसके पुष्प थोडे सफेद या पीले रङ्गके होतेहैं, उनमें बहुत दुर्गंध आतीहै । इसका फल १-१॥ इंच लम्बा, जिसके न्यूनाधिक स्पष्ट ५ रेखा होतीहैं और छोटा फल, जो जितना बडा होताहै । इसके पेडोंके बहुतसा गोंद लगताहै जो बराड़ के जिलेमें इकट्ठा किया जाताहै ।

फूलने फलनेका समय—पत्ते निकलने के थोडे दिन पीछे पुष्प लगते हैं पौषसे फागुन तक इसके फल निकलतेहैं ।

हरडेकी मींगीमेंसे स्वच्छ पारदर्शक और प्रायः सफेद रंगका पतला तेल निकलताहै । आचार्योंने मत भेदसे हरड़ ५, ६ या ७ प्रकारकी लिखीहै ।

प्रयोग—(१) हरड़–कषैली, खट्टी, कड़वी, चरपरी, हृद्य, योगवाही, रसायनी, अग्निदीपन, सारक, लेखन, पचनेमें लघु, नेत्रोंको हितकारी, स्मृतिकारक, बल, बुद्धि और आयुर्वर्द्धक है (२) बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये सोते समयमें हरडका मुरब्बा खिलाना चाहिये (३) इसकी मींगीको घिना सेकी हुई खातेह (४) मदाग्नि और आमातिसार मिटानेके लिये हरडका मुरब्बा बहुत उत्तम पदार्थहै (५) हरड़को जो कूट कर चिलम में भरके पिलानेसे श्वास के बेगकी शान्ति होतीहै (६) फैले हुए घावको इसके काथसे धोनेसे वह सिमिट जाताहै (७) इसको थोडे पानीके साथ घिस उसमें क्षारोदक और अलसीका तेल बराबर मिलाकर अग्निसे जले हुए या उष्ण जलादि से जले

हुए व्रणपर लेप करनेसे वे व्रण बहुत शीघ्रतासे अच्छे होजातेहैं, परंतु केवल चारोदक और अलसीका तेल मिलाके लगानेसे इतनी शीघ्रतासे अच्छे नहीं होतेहैं (८) हरड, सनाय और गुलाबके गुलकंदकी गोलियां बनाके खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै (९) हरडको रातभर पानीमें भिगो उस पानीसे आंख धोनेसे आंख बहुत ठण्ठी हो जातीहै (१०) इसके चूर्णका मंजन करनेसे दांत साफ और नीरोग रहतेहैं (११) हरडकी भस्मको मक्खनमें मिलाके घावपर लेप करतेहैं (१२) ६ हरड और १॥ मासे दालचीनी या लोंगको १० तोले जलमें १० मिनट तक ओटा छानकर, प्रातःकाल पिलानेसे अच्छा विरेचन लग जाताहै (१३) इसके पत्तोंके ऊपर एक प्रकारके फफोलेसे उठ जातेहैं उनको बच्चोंको देनेसे अतिसार मिटताहै (१४) इसके पत्तोंके २॥ तोले फफोले २॥ तोले दालचीनी १। तोले कत्था और १। तोले जायफल इन सबका चूर्ण बनाकर उसमेंसे ५ रत्तीसे १। मासे तककी मात्रा जवान आदमीको देनेसे अतिसार मिटताहै (१५) इसको और कत्थेको चूसनेसे दांत दृढ होतेहैं (१६) पकी हुई हरड कभी कभी खानेके काममें आतीहै । यह रक्त शोषकहै । कच्ची हरडको मारवाडी भाषामें "जंगी हरड" कहतेहैं । जिस हरडका औषधिमें प्रयोग किया जाय वह ताजी चिकनी और भारी पानीमें डूबनेवाली छोटी गुठलीवाली और जियादा छालवाली होनी चाहिये (१७) हरड सारकहै । पेटकी शूल, ज्वर, कफ, श्वास, मूत्रसम्बंधीरोग, अर्श आंतोंके कीडे, पुराना, अतिसार, बद्धकोष्ठ, आध्मान, वमन, त्वचाकेरोग, हिचकी, तिल्ली, जलधर, हृदय और यकृत्के रोगोंमें हरडका प्रयोग किया जाताहै (१८) आयु बढानेकेलिये रसायनके प्रयोगोंमें हरड मुख्यहै । रसायनकी रीतपर केवल हरड का प्रयोग करनेसे आयु बढतीहै (१९) जंगी हरड विरेचनके काममें बहुत आतीहै, इससे दाह और आंतोंमें ऐंठन आदि कोई उपद्रव नहीं होतेहैं (२०) पित्तकी प्रकृति या स्वाभाविक बद्धकोष्ठवाले और जो मलका थोड़ा सारकपन चाहतेहैं उनकेलिये जंगी हरड बहुत अच्छीहै (२१) पित्त, कफ और बिगडे हुए पित्तको निकालनेके लिये पकीहुई हरडका विरेचन बहुत अच्छाहै (२२) कच्ची हरड शोषक और सारकहै (२३) अतिसार और आमातिसार मिटानेकेलिये इसी कामकी दूसरी औषधियोंमें कच्ची हरड मिलाकर देनी चाहिये (२४) इसके लेप

में संकोचक और शोषक शक्तिहै (२५) ७॥ मासेसे १। तोलेतक हरड़की छाल
और थोड़ी कलौंजीके फांट या काथमें मधु या मिश्री मिलाकर देनेसे अच्छा
विरेचन होताहै (२६) हरड़के काथकी पिचकारी देनेसे अर्श और योनीस्राव
मिटताहै (२७) हरड़की गुठलीको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे आधा
शीशी मिटतीहै (२८) इसकी छालको पीसकर अंजन करनेसे नेत्रोंसे पानी
का बहना बन्ध होताहै (२९) हरड़के काथसे सिद्ध किये हुए घीका सेवन
करनेसे मद और मूर्च्छा मिटतीहै (३०) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे
वमन, रक्तपित्त, शूल और अतिसार मिटताहै (३१) इसके चूर्णके अडूसेके
स्वरसकी ७ भावना देके मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै (३२) मधु
के साथ इसका चूर्ण चटानेसे विषमज्वर छूटताहै (३३) इसके चूर्णमें घरा-
घर मिश्री मिलाकर सेवन करनेसे पाचनशक्ति बढतीहै (३४) हरड, बहेड़ा,
आंवला, एक २ भाग और मिश्री तीन भाग ले, पीस, गुलपजलसे गोलियां
बनाके ७ मासेकी मात्रा देनेसे अर्श मिटताहै (३५) इसकी मींगीको पानीमें
२० पहरतक घोट गोली बनाके अंजन करते रहनेसे मोतियाबिन्द पैदा नहीं
होताहै (३६) हरडके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे सब प्रकारके मुखरोग
मिटतेहै (३७) हरडको लोहेके पात्रमें हलदीके रसमें घोटकर नखपर बार २
लेप करनेसे चिप्परोग मिटजाताहै (३८) हरडको मुनक्काके साथ खानेसे
अम्लपित्त मिटताहै (३९) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे अथवा गुड
के साथ गोली बनाके खिलानेसे अम्लपित्त मिटताहै (४०) हरडको गोमूत्रमें पकाकर
खिलानेसे शोथ और पांडुरोग मिटताहै (४१) हरडको एरंडके तेलमें पकाकर
७ दिनतक पीनेसे श्लीपदरोग मिटताहै (४२) जवाहरड़ सेंधानमकको एरंडके तेल
और गोमूत्रमें पकाकर उष्ण जलके साथ उसकी फकी लेनेसे पुरानी अंडवृद्धि मिट-
तीहै (४३) हरड़के चूर्णको मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (४४) हरडको
गोमूत्रके साथ पीसकर पीनेसे श्लीपद रोग मिटताहै (४५) इसके चूर्णको एरंड
के तेलमें मिलाकर चाटनेसे गृध्रसी और अंडवृद्धि मिटतीहै (४६) ३—४
जवा हरडकी दुगुने गुडमें गोली बना उसको खाकर ऊपर गिलोयका काथ
पीनेसे बहुत बढा हुआ वातरक्त मिटताहै (४७) १० नग बड़ी हरड़की
छालको जो कूटकर जलमें भिगो तीन दिन धूपमें रख देवे, चौथे दिन उसको

मलछान; उसमें फिर ११ नग बडी हरड़की छाल डालकर तीन दिन धूपमें रख छानकर उसमें आधसेर बूरा डाल शर्बत बनाके पीनेसे मस्तकपीड़ा और पित्तके विकार मिटतेहैं ।

संख्या (४६५)

(सं०) हबुषा, हपुषा, वपुषा, विस्ता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हाऊबोर	हाउबेर	होश	लघुया थोरशेरणी	हवूषफल	हाऊबेर	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	हवुबेर	अरअर	ओरस	Juniperus communis J nana	The juniper

स्थान—इसके वृक्ष हिमालय के पश्चिमोत्तर भागमें कमऊंसे पश्चिमकी ओर होतेहैं ।

पहिचान—यह ६-७ फुट ऊंचा वृक्ष होताहै, इसकी पेड़की गुलाई डेढ दो फुटकी होतीहै, और यूरोपमें यह ३०-४० फुट ऊंचा होताहै उसके पेड़की गुलाई४-५ फुटकी होतीहै। इसकी छाल कुछ सफेद भूरे रङ्गकी होतीहै इसकी छोटी शाखा सुगंधयुक्त होतीहै इसका फल मीठा और सुगंधयुक्त होताहै इसके पत्ते कुछ भूरे हरे रंगके होतेहै इसके छोटे २ फल लगतेहैं उनमें बहुधा तीन २ बीज निकलतेहै जब इसके फल पूरे बड़े होजातेहैं और नहीं पकतेहैं तबतक उनमें बहुत तेल रहताहै जब वे पकजातेहैं तो उस तेलका राल जैसा पदार्थ बनजाताहै जो बहुत हल्के पीले रंगका होताहै और उसमें फल जैसी बहुत तीव्र गंध होतीहै ।

इसकी लकडी और पके फलोंमेंसे राल जैसा पदार्थ निकलताहै १०० तोले हाउबेरको पानीमें भिगो उनका अर्क खेंचनेसे ६ मासे से ११ तोले तक उड़नेवाला तेल निकलताहै इसकी लकड़ी और कोमल टहनियोंमेंसे भी उड़नेवाला तेल निकलताहै ।

इसके फल गोल, गहरे, कुछ बैंजनी काले रंगके और मटर जितने बडे होतेहैं। उनमें तेलके सिवाय एक औरभी पदार्थ होताहै उसको अंग्रेजीमें "ग्लूकोस" कहतेहैं । १०० तोले बीजोंमेंसे ३२ तोले नहीं उडने वाला तेल निकलताहै । जब हाउबेरको तोड़तेहै तो उसमें से उत्तम और चरपरी सुगंध आतीहै । हाऊबेरका स्वाद कुछ उष्ण, कुछ गर्म मसाले जैसा, कुछ और मीठा कुछ ताडपीन जैसा होताहै । इसके फल और तेलके गुण ये है ।

प्रयोग—(१) हाउबेर—चरपरा, कडुआ, उष्ण, भारी, अग्निदीपन और कपेलाहै । ये दोनों पेटकी बादीकी पीड़ा मिटानेवाले, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धकहैं (२) इसका तेल वृक्कको बहुत उत्तेजित करताहै, इसलिये सावधानी के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये क्योंकि इसकी अधिक मात्रा देनेसे वृक्कमें सोजिश और मूत्र करते समय पीड़ा हो जातीहै । (३) जो जलंधर वृक्कके रोगसे नहो, अर्थात् यकृत् और हृदयके रोगसे हो उसको मिटाने के लिये मूत्र वृद्धि करने के लिये इसके तेलकी एक से चार बूंद तक देनी चाहिये (४) मूत्रकृच्छ्र, पुराना मूत्रकृच्छ्र, श्वेतप्रदर और कुछ त्वचा सम्बन्धी रोगोंके पीप को रोकने के लिये इसके तेलका प्रयोग किया जाताहै (५) त्वचा के रोग मिटाने के लिये इसका साबुन बहुत अच्छाहै (६) इसके फल मूत्रवर्द्धक और उत्तेजक है (७) मूत्रकृच्छ्र मिटानेकेलिये इसके फलके चूर्णकी फकी देनी चाहिये ।

संख्या (५६६)

(सं०) हंसपदी, रक्तपादी, त्रिपादिका, कीटमाता ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हंसराज	हंसपगी	हंसराज	लाललाजा लुभद	गोयालेलता	कीटमाफ्का	हंसपादि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
	हंसपादी	बरम्यावशा	परस्यावशा	A venustum Adiantum lunalatum	Trauing colnenia

स्थान—हंसराज हिन्दुस्थानमें तरीकी जगहमें बहुत ठौर होताहै, हिन्दुस्थानके उष्ण विभागोंमें सर्दीके दिनोंमें सूखे हुए चांवलोंके खेतमें उगताहै और वर्षाऋतुके प्रारम्भमें सूख जाताहै। इसकी डंडी काली होनेके कारण गुजराती वाले इसको "कालो हंसराज" कहते हैं।

प्रयोग—(१) हंसराज-शीतल, भारी, चरपरा, उष्ण, और रसायन है (२) बच्चोंको घूंटीकी साथ देनेसे ज्वर छूट जाताहै (३) इसके पत्तोंको जलमें पीस बूरा मिलाके पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) इसके पत्तोंको सोना-गेरूकी साथ पानीमें पीसकर लेप करनेसे मुखकी पित्त शोथ जो मस्तककी ओर बढती हो मिटजातीहै (५) अंतर दाह मिटानेके लिये इसका २॥ से ५ तोले तक क्वाथ पिलातेहैं (६) इसके पत्तोंके स्वरसका लेप करनेसे मस्तककी ओर बढनेवाली मुखकी पित्त शोथ मिटतीहै (७) सूखे हंसराजका पंचांग और दानामेथीको महीन पीस गर्म करके लेप करनेसे फोड़े फुन्सी जल्दी पक जातेहैं (८) इसके ताजे पत्तोंको पीस गठियाकी शोथ पर लेप करतेहैं (९) इसकी अधिक मात्रा वमन लातीहै (१०) इसका क्वाथ पिलानेसे खांसीसे पैदाहुई छातीकी पीडा मिटतीहै (११) बावले कुत्तेका विष उतारनेके लिये भी इसका प्रयोग किया जाताहै (१२) इसका लेप करनेसे तथा इसका तेल बनाके लगानेसे मस्तकके बाल नहीं खिरतेहै, अथवा इसकी राख बालोंमें लगानेसे भी वही गुन होताहै (१३) विदग्ध अर्थात् बिगडे हुए पित्तको सुधारनेके लिये इसका शर्बत पिलातेहैं (१४) इसको जलमें ओटाके बफारा देनेसे ज्वरका वेग कम होजाताहै (१५) इसके शर्बतमें इलायची और वंशलोचन बुरकाके पिलानेसे ज्वरके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै (१६) इसके पत्तोंको पीस गर्म कर लेप करनेसे कई प्रकारकी पुरानी गाठें मिटतीहैं (१७) इसके पत्तोंके गुनगुने लेपसे गाठ बिखर जातीहै (१८) यह ग्राही, ज्वरनाशक, बलवर्द्धक और सूखी खांसी मिटानेवाला, मूत्रवर्द्धक और मासिक धर्मको शुद्ध करने वालाहै। इसका स्वाद सुगंध युक्त और चरपरा होताहै (१९) इसको पीसकर चोट आदि पर लेप करतेहै (२०) इसका क्वाथ पिलानेसे पेटके भीतरके यंत्रोंके प्रवाहकी रुकावट मिटतीहै (२१) इसके पत्तोंको पीस गर्मकर

लेप करनेसे गिल्टियोंकी सूजन बिखर जातीहै (२२) इसके क्वाथमें मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै (२३) इसके पत्तोंको पीस तेलमें लुपरी करके सेकनेसे छातीकी पीड़ा मिटतीहै।

संख्या (५९७)

(सं०) हस्तिशुंडी, श्रीहस्तिनी, शुंडी, धूसरपत्रिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	हाथीशुंडा	हस्तिशुडी	हस्तिशुंडी	हाथिशुँडा		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी
				Heliotropium Indicum Tiaridium	

स्थान--हस्तिशुंडाके छोटे पौधे हिन्दुस्थानमें सबठौर और विशेष करके गीली जगहमें होतेहैं।

प्रयोग-(१) यह-रसमें चरपरी और उष्णवीर्यहै (२) इसके पत्तोंका चूर्ण २ मासेसे १० मासेतक ज्वर छुडानेके लिये दिया जाताहै (३) मसूड़ोंकी सूजन या छाले मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसका लेप करतेहैं (४) मुंहके ऊपरकी फुन्सियां मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसका लेप करना चाहिये (५) इसके पत्तोंके रसका लेप करनेसे घाव और फोडे साफ होजातेहैं और जल्दी भरजातेहैं (६) इसके पत्तोंके रसको एरंडके तेलमें डाल औटाके बिच्छूके दंशपर लगानेसे विष उतरताहै (७) पागल कुत्तेके विषको उतारनेके लिये तेलका प्रयोग बहुत उपकारीहै।

संख्या (५९८)

(सं०) हिंगुः रामठम्, वाह्लीकम्, सूपधूपनम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हींग	हींग	हिंग बघारणी	हिंग	हिंगु हिङ्	हिंग हींग	इङ्गुव

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेज़ी
पिरुगाय	हिङ्गु	हिल्तीत	अंगुज़ा	Ferula alliacea F. assafoetida	Assafoetida

स्थान—हींगके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं। हींग दो प्रकारकी होतीहै एक हींग दूसरा हींगड़ा।

पहिचान–इसका झाड़ २, ४ फुट ऊंचा होताहै। इसकी जड़के प्रारम्भके भागकी मध्य रेखा प्रायः दो इंचकी होतीहै, इसका गोंद वसंतमें इकट्ठा किया जाता है।

प्रयोग—(१) हींग–उष्ण, पाचक, रोचक, तीक्ष्ण, सारक, लघु, चरपरी, हृद्य, स्निग्ध, रस और विपाकमें चरपरी, दीपन, कृमिनाशक और पित्तवर्द्धकहै। पेटकी पीड़ा, शूल, विसूचिका और वांइटोंको मिटातीहै हींगको सेककर काममें लाना चाहिये (२) इसका नित्य सेवन करनेसे दुष्ट वायु आदिसे पैदा हुआ ज्वर नहीं आताहै (३) हींग–पुरुषार्थ बढानेवाली और निद्रालाने वालीहै (४) इसके फल उत्तेजकहैं (५) बच्चोंकी खांसी और गुजराती रोगमें हींगसे बड़ा उपकार होताहै (६) हींग और गुड़की गोली बनाके देनेसे अफारा मिटताहै (७) मंदाग्नि मिटानेवाली औषधियोंमें सेकीहुई हींग मिलाई जातीहै (८) वमन करानेके लिये हींगका प्रयोग किया जाताहै (९) एरण्डके रसमें हींग डालके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (१०) ललाट पर इसका लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै (११) इसका मंजन करनेसे दांतोंका बिगड़ना बन्ध होजाताहै (१२) जिसके नारू अधिक निकला करतेहैं उसको २॥ रत्तीसे साढे सात रत्तीतक हींगकी गोली बनाके खिलातेहैं, या जलके साथ पिलातेहैं (१३) सोंठ, हींग और सेंधेनमककी फक्की गर्मजलके साथ देनेसे अजीर्ण मिटताहै (१४) अफीम और दूसरे पदार्थोंके विषको उतारनेकेलिये हींगसे वमन करातेहैं (१५) हींगका जल बनाके सुंघानेसे आधाशीशी मिटतीहै (१६) हींग और अफीमकी गोली बिगड़े हुए दांतकी खोखलमें धरतेहैं (१७) विसूचिकाके प्रारम्भमें हींग, कपूर, कालीमिरच और अफीमकी गोलियां बनाके देतेहैं। परन्तु जब विसूचिकाके लक्षण

बहुत बढजावे तब बिना अफीमकी गोली देना चाहिये (१८) बच्चा होनेके पीछे गर्भाशयमें जो दुष्ट मल रहजाताहै उसको निकालनेकेलिये सेकीहुइ हींग लहसन और ताड़का गुड़, इनकी गोली बनाके प्रातःकाल नित्य देना चाहिये (१९) तिल्लीके रोगमें बहुत दिनोंतक विरेचनकी जो औषधियां दीजातीहैं उनकी चरपराहट मिटानेकेलिये उनमे हींग मिलादेतेहैं (२०) इसका अंजन करनेसे धुंध मिटतीहै (२१) इसके खानेसे बादी मिटतीहै (२२) सौंफके अर्कमें थोड़ी हींग मिलाकर संन्यासरोगवालेके कंठोंमें डालनेसे लाभ होताहै (२३) हींग गलेमें लटकानेसे मिरगी नहीं आतीहै (२४) हींग को सिरकेमें पीस, गर्म करके लेप करनेसे "गुहांजनी" बाफनीमें जो फुन्सी होतीहै, मिटजातीहै (२५) बालक होने के समय थोड़ी २ हींग खिलाने से प्रसव सुख से होजाताहै (२६) २ मासे हींगको २—३ बेरमें खिलानेसे अफीमका विष उतरताहै (२७) इसका धूंआ पिलानेसे हिचकी बन्द होतीहै (२८) इसका अंजन करनेसे कामला रोग मिटताहै (२९) हींग और उडद के चूर्णका धूंआ पिलानेसे ५ प्रकारकी हिचकी बन्द होतीहै (३०) हींग-और सैंधेनमकको तेल और गोमूत्रमें ओटाकर नाभी पर लेप करनेसे पीड़ायुक्त शूल मिटतीहै (३१) शुद्ध हींगका घृतके साथ सेवन करनेसे मल्लशूल मिटतीहै (३२) हींग और हरतालको नींबूके रसके साथ पीसकर लगानेसे बिच्छूका विष उतरताहै (३३) हींगको सिरकेमें घोट गुन गुना करके लेप करनेसे नासूर मिटताहै (३४) हींगको मधुमें मिला जीरेके समान गोली बनाकर इन्द्रीके छिद्रमें रखनेसे वीर्य स्तंभन होताहै और अपने-आप वीर्यका गिरना बन्द होजाताहै (३५) हींगको जलमें पीसकर अग्नि दग्ध पर लगाना चाहिये (३६) २ मासे हींग और ४ नग बिदामकी मींगीको पीसकर पिलानेसे हिचकी बन्ध होतीहै (३७) ६ तोले मोठके आटेमें थोड़ी हींग मिलाकर पुल्टिस बांधनेसे नारू निकल जाताहै (३८) दो मासे हींग और दो मासे नोंनको सेरभर पानीमें ओटा आध पाव रखके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै ।

संख्या (५९९)

(मारवाड़ी) हींगड़ा-

Latin Ferula foetida F Scorodosma.

स्थान—हींगड़ेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं।

इसका पोधा ४—५ फुट ऊंचा होताहै।

प्रयोग—(१) वाइट मिटानेकेलिये हींगड़ेका तेल बनाके मर्दन करना चाहिये (२) हींगड़ा उत्तेजकहै और हींगकी ठौर काममें आताहै।

इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै। इसकी टहनीके भीतरका सफेद भाग शाकके काममें आताहै।

संख्या (६००)

(सं०) नाडीहिंगु, हिंगुनाड़िका, जन्तुका, रामठी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
डीकामाली	डीकामाली	डीकामारी	डिकेमाली			चिनकारिंगुवे

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
डिक्कामल्लि	डिक्कामल्लि			Gardenia arborea. gummifera	DeLamalli gum Gummy gardinia

स्थान—डीकामालीके वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें और सतपुड़ा पहाड़से दक्षिणकी ओरके देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका बड़ा झाड़ होताहै उसके कांटे नहीं होतेहै। इसके पुराने पत्ते खरदरे होजातेहै इसकी कलियोंके राल जैसा पदार्थ लगताहै वर्षाऋतुमें इसके नवीन पत्ते आने लगतेहै इसकी छोटी डालियें खरदरी और कुछ लाल होतीहैं इसकी लकडी सफेद और कठोर होतीहै। इसका फल एक या डेढ इंच लम्बा होताहै, उसके ऊपर उठी हुई बहुतसी धारियां होतीहै, इसकी गुलीमें ४—५ खाने होतेहैं।

फूलने फलनेका समय--फाल्गुन चैतमें इसके पुष्प लगतेहैं । डीका-माली एक वृक्षका गोंदहै ।

प्रयोग—(१) डीकामाली–चरपरी, उष्ण, तीक्ष्ण और दीपनहै कफ, वात, आनाह, मलस्तंभको मिटातीहै (२) डीकामालीको तेलमें पिघलाके ललाटपर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (३) स्नायुक (नहरुवे , की पीडामें एक रतीसे एक मासे तक डीकामालीकी फकी देनी चाहिये (४) ३ मासे डीकामालीको ओटाके पिलानेसे पसीना आताहै (५) २ मासे डीकामाली और ३ मासे अरडूसेका क्वाथ करके पिलानसे सूखी खांसी मिटतीहै (६) बच्चोंके दांत आनेके समयमें उनके मसूड़ोंपर डीकामाली मलनेसे दांत जल्दी निकल जातेहैं (७) इसका क्वाथ बनाके पिलानेसे बच्चोंकी आंतोंके कीड़े मर जातेहैं या निकल जातेहैं (८) इसके चूर्णको बच्चेकी गुदामें रखनेसे वहाके कीड़े मर जातेहैं (९) इसके क्वाथसे पुराने घावको धोनेसे उसके कीड़े मर जातेहै (१०) मंदाग्निमें इसके चूर्णकी ४ मासेकी मात्रा देनी चाहिये (११) इसके चूर्णको काले नमकके साथ देनेसे अफारा उतरताहै (१२) इसको एरंडके तेलमें पिघलाके मर्दन करनेसे बाइटे और रगोंकी खिचावट मिटतीहै (१३) डीकामाली बहुत तेज होतीहै इसवास्ते इसकी मात्रा बहुत कम देना चाहिये। इसका क्वाथ पीनेसे बाइटे और पेटकी, बादीकी पीड़ा मिटतीहै (१४) इसका लेप करनेसे दुर्गंध युक्त हवाका असर नहीं होताहै (१५) स्त्रियोंके आवेशका रोग और बादीकी मंदाग्निके रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाताहै (१६) बिगड़े हुए और जिनका चमड़ा शख्त होगया हो ऐसे घावों पर इसका लेप करतेहैं (१७) घाव पर मक्खी नहीं बैठतीहै । इसके लिये एक तोले डीकामालीको १ तोले कड़वे तेलमें जला, छान उसकी पिचकारी देनेसे मूत्रकी जलन मिटतीहै (१८) इसका फल खानेके काममें आताहै ।

संख्या (६०१)

(सं०) हिंगुलम, दरदम, म्लेच्छम, रसोद्भवम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हींगलू	हिंगलू	हिंगलो	हिंगूल	हिंगुल	शिंगरफ	इंगलीकमु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
जातिलिंग	हिंगुल	ज़ंजफर शजरफ	शंगरफ़	Hydrargyri sulphuretum.	Cinnabar Redsul phuret of mercury Verumilion

स्थान—पारे और गंधक के योगसे हींगलू बनताहै, यह तीन प्रकारका होताहै (१) चर्मार (२) शुकतुण्डक और हंसपाद, इनमें हंसपाद सबसे उत्तमहै और इसकी परीक्षा यह है कि यह बहुत कठोर नहीं होता, इसकी सींकें चुकटी से टूट जातीहैं, और तोलमें दूसरे हींगलूसे भारी होताहै ।

हिंगलू शोधनकी रीति–(१) इसके छोटे २ टुकड़े कर नींबूके रसमें भिगोके सुखा लेना चाहिये, ऐसे सात बेर करने से हींगलू शुद्ध हो जाताहै (२) इसी रीति से अद्रक के रसकी सात बेर भावना देनेसे शुद्ध हो जाताहै (३) सेर भर हिंगलू के छोटे २ टुकड़ोंको कपड़ेकी थैलीमें बन्धकर, भेड़के आठ सेर दूधमें अधर लटकाके धीमी आच देवे जब वह दूध छीज के आधा रहजाय तब उस थैलीमेंसे निकाल उसे उष्ण जलसे धोडाले, फिर इसी रीतिसे आठ २ सेर दूधमें सातवेर पकानेसे हिंगलू शुद्ध होजाताहै, पीछे उस थैलीमेंसे हिंगलूके टुकड़ोंको निकाल केवल जलमें ओटाके साफ़ करलेवें इसलियेकि उनमेंसे दूधका भाग निकलजावे, नहीं तो कुछ दिनों पीछे उनमेंसे दूध और घीकी गंध आने लग जातीहै । ऐसे शुद्ध किया हुआ हिंगलू औषधिके काममें लानेसे कोई प्रकारका विकार नहीं करताहै (४) इसकी शक्ति बढानेकी यह रीतिहै कि हिङ्गलूके २ तोले भरके ५ टुकड़ोंको एक गाढे साफ कपड़ेमें सींकर बड़े बैगनके बीचमें रखकर उस बैंगनपर कपड़ मिट्टी देके जंगली कंडोंकी इतनी आगे देवे कि वह बैगन अच्छी तरहसे पक जावे और ऊपरसे कुछ जलभी जावे, जब वह स्वांग शीतल हो जाय तब उस बैगनमेंसे उस पोटलीको निकाल फिर दूसरे बैगनमें धरकर उक्त रीतिसे आच देवे ऐसे १०० वेर आंच देकर तैयार करलेवे जो इसकी शक्ति और भी अधिक बढानी

होवेतो उक्तरीतिसे उस पोटलीको एक २ तसतूवेमें रख २ के १०० आंच दे-देवे। फिर उक्त रीतिसे कादेमें रख २ के या जो एक कादेमें नहीं मावेतो तीन, चार कादों की लुगदीमें रख २ क १०० आच देदवे। ऐसे सिद्ध किये हुए हिंगलूकी आधेसे एक चावल तक की मात्रा बहुत सावधानी और विचारके साथ देना चाहिये, यह अलग २ अनुपान से हरेक रोगको मिटाताहै।

शुद्ध हिंगलूके गुण—यह कडवा, कषेला और चरपरा होता है। नेत्र-रोग, हल्लास, कुष्ठ ज्वर, कामला, प्लीह, आमवात आदि बहुतसे रोग और वात, पित्त, कफको मिटाताहै। पुरुषार्थ और पाचनशक्ति बढाताहै (२) अशुद्ध हींगलूके दोष—विना शोधे हुए हिंगलू को खानेके काम में लाने से कुष्ठ, नपुंसकता, क्लम, भ्रम, मोह आदि कई रोग पैदा हो जातेहै, इसलिये इसको बहुत अच्छी तरह शोधना चाहिये (३) शुद्ध किये हुए हंसराज हींगलुके १॥ मासे टुकडोंको चोतह कपड़ेमे सीकर उस पोटली को अलूणे आदपा व आटे की वाटी के बीच में रखकर, उसको मद २ आंच पर सेक, उसमेंसे पोटलीको निकाल उस वाटीको खिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै और जैसे २ भूख बढतीजाय वैसेही कुछ घृतकी मात्रा बढानी चाहिये (४) इस पोटलीको दूधके बीचमें लटका, उसके नीचे एक पहर तक बहुत मद आच दे, उस पोटलीको निकाल उस दूधको रोगीकी शक्तिके अनुसार १ से ४ वेरमें पिलानेसे मंदाग्नि और अतिसार मिटताहै। इस दूधमें हलदी बुरकाके पिला-नेसे, श्वासरोग मिटताहै (६) चोपचीनीकी फकी देकर ऊपर यह दूध पिला-नेसे गठिया मिटतीहै (७) बादी मिटानेवाली औषधियोंमे इसको मिला अद्रकके रसमें खरलकर मिरचके बराबर गोलियां बना रक्खे, रोगीकी शक्ति के अनुसार १ से ४ तक गोली देनेसे वादीके कई प्रकारके रोग मिटतेहै (८) शुद्ध हिंगलू और शुद्ध बच्छनागको बराबरले धतूरके रसमें पीस छोटी २ गो-लिया बनाके आधेरतीसे १ रती तक देनेसे वात और कफ सम्बन्धी ज्वर छूटता है जो इससे तृषा और ऊष्मा अधिक बढजावे तो दूध पिलाना चाहिये (९) अलग २ अनुपानके साथ देनेसे इससे कई रोग मिटतेहै शुद्ध हिंगलू और शुद्ध सोमल बराबर ले बांझ करलेकी बेलके रसमें खरलकर सुखा लेवे, फेर

हीरेको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि हीरेको कुलथ और कोदोंके काथमें दोलायंत्रमें सात दिनतक स्वेदन करना चाहिये, अथवा हीरेको तपा २ के गधेके मूत्रमें २१ बेर बुझाना चाहिये।

हीरेकी भस्म बनानेकी रीति-(१) हींग और सैंधे नमकको कुलथोंके काथमें मिला, हीरेको २१ बेर गर्म कर २ के, उसमें बुझानेसे भस्म होजातीहै (२) मेंढेका सींग, सर्पकी हड्डी, कछुवेकी खोपडी, खरगोशके दांत और अमल बेत, इन सबको थूहरके दूधमें पीस, लुगदी बना, उसमें हीरेको रखकर, उसके धोंकनीकी आंच देनेसे हीरेकी भस्म हो जातीहै।

प्रयोग—(१) हीरा-षट् रसयुक्त और सर्वरोगनाशकहै। हीरेकी भस्मकी मात्रा आधी रत्ती तककीहै। इसकी भस्मके सेवनसे शोष, क्षय, भगंदर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग, शोथ आदि कई रोग और वात पित्त और कफ के दोष मिटतेहै। शरीरकी कान्ति, आयु, वीर्य और पुरुषार्थ बढताहै शरीर पुष्ट होताहै और जिस रोगकी जो औषधिहै उस रोगकी उस औषधि के साथमें हीरेकी भस्म देनेसे उसी रोगको मिटातीहै (२) खैरकी छालके साथ हीरेकी भस्मका सेवन करनेसे कुष्ठ मिटताहै (३) अडूसे के चूर्ण के साथ चटानेसे कफ और खांसी मिटतीहै (४) अद्रक के रस और मधुके साथ चटानेसे श्वास रोग मिटताहै (५) शक्करके साथ फकी देने से पित्त और दाह मिटती है (६) चिरायते के काथ के साथ देनेसे ज्वर छूटताहै (७) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (८) मक्खनके साथ चटानेसे शोषरोग मिटताहै (९) इसकी भस्म और गोखरूके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै (१०) बिदारी कंदके चूर्णमें मिलाकर फकी देनेसे जकमूत्ररोग मिटताहै (११) पीपल और शहदके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (१२) साटेकी- जडके चूर्ण और मधुके साथ चटानेसे शोथरोग मिटताहै (१३) पुष्टाईकी औषधियोंके साथ खानेसे शरीर पुष्ट होताहै। (१४) अशुद्ध हीरेके सेवन करनेसे कुष्ठ, पसलीका दर्द, पांडु, रोग, दाह, शरीरका भारीपन, राजयक्ष्मा आदि बहुतसे रोग होजातेहै।

संख्या (९०५)

(सं॰) हेमसागर. ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	जख्मेहैयात			हेमसागर		मिमामूड्

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मलेरली	लूलाहडकन गिड		जख्मेहैयात	Bryophyllum calycinum Kalanchoe pinnata	

स्थान—हेमसागर हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और तर भागोंमें सीलोन तक और बंगालमें सब ठौर पैदा होताहै ।

पहिचान--इसके पत्ते मोटे और गिरदार होतेहैं । वे जहां पृथ्वीको छूते हैं, वहीं उनके किनारोंमेंसे बीज गिरके वृक्ष लग जातेहैं ।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका लेप करनेसे बिगड़े हुए फोड़े सुधर जाते हैं (२) पित्तशोथको मिटानेकेलिये इसके पत्तोंका लेप करतेहैं (३) इसके लेपसे सूजन उतर जातीहै और चमड़ीका रंग बदलना रुक जाताहै (४) चीरे का घाव भरनेकेलिये, जो साधारण उपायहैं उनकी अपेक्षा इसके पत्तोंका लेप उस घावको बहुत शीघ्र भर देताहै (५) इसके पत्तोंका ३ मासे से एक तोलेतक स्वरस पिघले हुए दुगुने मक्खनमें मिलाकर पिलानेसे अतिसार, आमातिसार और विषूचिका मिटतीहै । पथरीवालेको भी इतनीही मात्रा देनी चाहिये (६) मोच और अग्निसे जले हुए व्रण और शरीरके ऊपरके व्रणोंपर इसके रसका लेप करना चाहिये (७) ताजे घाव और रगड़के ऊपर इसके रसका लेप करनेसे उनमेंसे रुधिर बहना बन्ध होजाताहै (८) चोटके घावपर इसके रसमें भिगोये हुए कपडेको बांधा रखनेमें वह बहुत जल्दी भर-जाताहै । दूसरी औषधियोंसे इतना जल्दी नहीं भरताहै (९) जिस घावमें

छिद्रहे होजातेहैं, उसके ऊपर इसके चूर्णको बुरकाकर. इसके पत्तोंका पुल्टिस पांधतेहै (१०) स्थानको शुद्ध करनेकेलिये इसको काममें लातेहैं । इसकी धूनीसे हवा शुद्ध होतीहै ।

वेदर्तुग्रहशीतरश्मिप्रमिते संवत्सरे वैक्रमे,
चैत्रे मास्यसित प्रसूनसमये षष्ठ्यां विधोर्वासरे ।
गङ्गापूर्वप्रसादवैद्यरचितो ग्रन्थोऽतिलाभप्रदो,
धन्वन्तर्यवतारविष्णुकृपया सम्यक् समाप्तिं गतः ॥ १ ॥
वेदऋतुग्रहचन्द्रमित, सम्वत् विक्रम भूप ।
चैत्रमासवदि पक्ष छठ, हिमकरवार अनूप ॥
पूर्ण हुआ यह ग्रन्थ शुभ, औषध गुण आगार ।
भूल चूक कछु होयसो, सज्जन लेहु सुधार ॥

इतिश्रीत्रिपाठ्युपाख्यवैद्यसुनादासात्मज--भारतधर्ममहा-
मण्डल तथायुर्वेदविद्यापीठनासिकवैद्यसभाप्राप्तायुर्वेद-
पञ्चाननोपाधिभूषितगङ्गाप्रसादवैद्यविरचितो-
ऽनुभूतचिकित्सासागरोत्तरार्धः संपूर्णः ।